

## 1. अल-फ़ातिहा

(मक्का में उतरी—आयतें 7)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. प्रशंसा अल्लाह ही के लिए  
है जो सारे संसार का रब (प्रभु,  
पालनकर्ता) है।

2. बड़ा कृपाशील, अत्यन्त  
दयावान है।

3. बदला दिए जाने के दिन का  
मालिक है।

4. हम तेरी ही बन्दगी करते हैं  
और तुझी से मदद माँगते हैं।

5. हमें सीधे मार्ग पर चला।

6. उन लोगों के मार्ग पर जो तेरे कृपापात्र हुए,

7. जो न प्रकोप के भागी हुए और न पयभ्रष्ट।



## 2. अल-बक्रा

(मदीना में उतरी— आयतें 286 )

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. अलिफ़० लाम० मीम० ।

2. वह किताब यही है,<sup>1</sup> जिसमें  
कोई सन्देह नहीं, मार्गदर्शन है डर  
रखनेवालों के लिए,

3. जो अनदेखे ईमान लाते हैं,<sup>2</sup>  
नमाज़ क़ायम करते हैं और जो  
कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से  
खर्च करते हैं;

4. और जो उसपर ईमान लाते हैं  
जो तुमपर उतरा और जो तुमसे  
पहले अवतरित हुआ है और आखिरत पर वही लोग विश्वास रखते हैं;



1. जिसका वादा किया गया था ।

2. या परोक्ष पर ईमान लाते हैं अर्थात् ईमान लाने के लिए परोक्ष को देख लेने की शर्त वे नहीं लगाते ।



5. वही लोग हैं जो अपने रब के सीधे मार्ग पर हैं और वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।

6. जिन लोगों ने कुफ़्र (इनकार) किया उनके लिए बराबर है, चाहे तुमने उन्हें सचेत किया हो या सचेत न किया हो, वे ईमान नहीं लाएंगे।

7. अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मुहर लगा दी है और उनकी आँखों पर परदा पड़ा है, और उनके लिए बड़ी यातना है।

8. कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखते हैं, हालाँकि वे ईमान नहीं रखते।

9. वे अल्लाह और ईमानवालों के साथ धोखेबाज़ी कर रहे हैं, हालाँकि धोखा वे स्वयं अपने-आपको ही दे रहे हैं, परन्तु वे इसको महसूस नहीं करते।

10. उनके दिलों में रोग था तो अल्लाह ने उनके रोग को और बढ़ा दिया और उनके झूठ बोलते रहने के कारण उनके लिए एक दुखद यातना है।

11. और जब उनसे कहा जाता है कि "ज़मीन में बिगाड़ पैदा न करो", तो कहते हैं: "हम तो केवल सुधारक हैं।"

12. जान लो! वही हैं जो बिगाड़ पैदा करते हैं, परन्तु उन्हें एहसास नहीं होता।

13. और जब उनसे कहा जाता है: "ईमान लाओ जैसे लोग ईमान लाए हैं", कहते हैं: "क्या हम ईमान लाएँ जैसे कम समझ लोग ईमान लाए हैं?" जान लो, वही कम समझ हैं परन्तु जानते नहीं।

الْبَقَرَةُ

2

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾  
 إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ  
 سَمْعِهِمْ وَعَبَدُوا بِصُلُوبِهِمْ غَسَاوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ  
 عَظِيمٌ ﴿٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَ  
 بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾ يُخَدِّعُونَ اللَّهَ وَ  
 الَّذِينَ آمَنُوا ۖ وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾  
 فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ ۖ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ  
 أَلِيمٌ ۖ ذٰلِكَ أَنَّهُمْ كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿١٠﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا  
 تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١١﴾  
 أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِن لَّا يَشْعُرُونَ ﴿١٢﴾ وَإِذَا  
 قِيلَ لَهُمُ امْكُثُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا أَنَحْنُ مُبْدِلُونَ ﴿١٣﴾  
 كَمَا أَصْنَأُ السُّفَهَاءَ ۚ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِن  
 لَّا يَشْعُرُونَ ﴿١٤﴾

سَبَّحْهُ



14. और जब ईमान लानेवालों से मिलते हैं तो कहते हैं : "हम भी ईमान लाए हैं," और जब एकांत में अपने शैतानों के पास पहुँचते हैं, तो कहते हैं : "हम तो तुम्हारे साथ हैं और यह तो हम केवल परिहास कर रहे हैं।"

15. अल्लाह उनके साथ परिहास कर रहा है और उन्हें उनकी सरकशी में ढील दिए जाता है, वे भटकते फिर रहे हैं।

16. यही वे लोग हैं, जिन्होंने मार्गदर्शन के बदले में गुमराही मोल ली, किन्तु उनके इस व्यापार ने न कोई लाभ पहुँचाया और न ही वे सीधा मार्ग पा सके।

17. उनकी मिसाल ऐसी है जैसे किसी व्यक्ति ने आग जलाई, फिर जब उसने उसके वातावरण को प्रकाशित कर दिया, तो अल्लाह ने उनका प्रकाश ही छीन लिया और उन्हें अँधेरो में छोड़ दिया जिससे उन्हें कुछ सुझाई नहीं दे रहा है।

18. वे बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं, अब वे लौटने के नहीं।

19. या (उनकी मिसाल ऐसी है) जैसे आकाश से वर्षा हो रही हो जिसके साथ अँधेरे हों और गरज और चमक भी हो, वे बिजली की कड़क के कारण मृत्यु के भय से अपने कानों में उँगलियाँ दे ले रहे हों—और अल्लाह ने तो इनकार करनेवालों को घेर रखा है।

20. मानो शीघ्र ही बिजली उनकी आँखों की रौशनी उचक लेने को है; जब भी वह उनपर चमकती हो, उसमें वे चल पड़ते हों और जब उनपर अँधेरा छा जाता हो तो खड़े हो जाते हों; अगर अल्लाह चाहता तो उनकी सुनने और

لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا بِوَرَدِ الْحُلُومِ إِلَىٰ شُطُوبِهِمْ ۚ قَالَ إِنْ كُنْتُمْ مُسْتَهْزِئِينَ ۚ اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِالَّذِينَ هُمْ فِي طَعْنِهِمْ يَعْصُونَ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَشَرُّ الْفَلَّةِ بِهَٰذِهِ فَمَا زِلْتُمْ إِلَّا زُلْفَةً وَمَلَائِكَةُ مُهْتَدِينَ ۚ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۖ فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمٍ لَا يَبْصُرُونَ ۚ ضُمُّ بَلَّغٌ عَنْهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۚ أَوْ كَصَيِّبٍ مِنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمٌ وَرَعْدٌ وَنُبُرٌ ۖ يُجْعَلُونَ أَصَابِعُهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِنَ الظُّلُمِ عَلَىٰ حَذِّ الْمَوْتِ ۚ وَاللَّهُ مُخِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ۚ يَخْطِفُ أَبْصَارَهُمْ ۚ كُلَّمَا أَضَاءَتْ لَهُمْ مَشْأَلُهُمْ ۚ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ



उनके देखने की शक्ति बिल्कुल ही छीन लेता।<sup>1</sup> निस्संदेह, अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

21. ऐ लोगो! बन्दगी करो अपने रब की जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि तुम बच सको;

22. वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आकाश को छत बनाया, और आकाश से पानी उतारा, फिर उसके द्वारा हर प्रकार की पैदावार और फल तुम्हारी रोज़ी के लिए पैदा किए, अतः जब तुम जानते हो तो अल्लाह के समकक्ष न ठहराओ।

23. और अगर उसके विषय में जो हमने अपने बन्दे पर उतारा है, तुम किसी सन्देह में हो तो उस जैसी कोई सूरा ले आओ और अल्लाह से हटकर अपने सहायकों को बुला लो जिनके आ मौजूद होने पर तुम्हें विश्वास है, यदि तुम सच्चे हो।

24. फिर अगर तुम ऐसा न कर सको और तुम कदापि नहीं कर सकते, तो डरो उस आग से जिसका ईंधन इनसान और पत्थर हैं, जो इनकार करनेवालों के लिए तैयार की गई है।

25. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें शुभ सूचना दे दो कि उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी; जब भी उनमें

الْبَقَرَةُ

الْبَقَرَةُ

وَأَبْصَارِهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ يَا أَيُّهَا  
النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ  
قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ  
فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بَنَاقًا ۖ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ  
بِهِ مِنَ الشَّجَرِ لَبَدًا ۚ قُلْ لَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا ۚ  
أَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ فَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا كُنَّا عَلَىٰ  
عِبِيدِنَا فَاتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ ۖ وَلَوْ عَزَّوَجَلَّ كُنْتُمْ  
مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا  
وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَ  
الْحِجَارَةُ ۚ أَهْدَتْ لِلْكَافِرِينَ ۝ وَلَيُبَيِّرَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَ  
عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا  
الْأَنْهَارُ ۖ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا ۖ قَالُوا  
هَٰذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۖ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا ۖ وَلَهُمْ

مَنْ

1. यहाँ दो मिसालें पेश की गई हैं, एक यहूदी मुनाफ़िकों के लिए जिनके ईमान लाने की कोई आशा न थी। दूसरी मदीना के ग़ैर यहूदी मुनाफ़िकों के लिए जिनके विषय में यह आशा थी कि वे ईमान ला सकते हैं।



से कोई फल उन्हें रोज़ी के रूप में मिलेगा, तो कहेंगे : “यह तो वही है जो पहले हमें मिला था,” और उन्हें मिलता-जुलता ही (फल) मिलेगा; उनके लिए वहाँ पाक-साफ़ पलियाँ होंगी, और वे वहाँ सदैव रहेंगे।

26. निस्संदेह अल्लाह नहीं शर्माता कि वह कोई मिसाल पेश करे चाहे वह हो मच्छर की, बल्कि उससे भी बढ़कर किसी तुच्छ चीज़ की। फिर जो ईमान लाए हैं वे तो जानते हैं कि वह उनके रब की ओर से सत्य है; रहे इनकार करनेवाले तो वे कहते हैं : “इस

मिसाल से अल्लाह का अभिप्राय क्या है?” इससे वह बहुतों को भटकने देता है और बहुतों को सीधा मार्ग दिखा देता है, मगर इससे वह केवल अवज्ञाकारियों ही को भटकने देता है।

27. जो अल्लाह की प्रतिज्ञा को उसे सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग कर देते हैं और जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है उसे काट डालते हैं, और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं, वही हैं जो घाटे में हैं।

28. तुम अल्लाह के साथ अविश्वास की नीति कैसे अपनाते हो, जबकि तुम निर्जीव थे तो उसने तुम्हें जीवित किया, फिर वही तुम्हें मौत देता है, फिर वही तुम्हें जीवित करेगा, फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है ?

29. वही तो है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन की सारी चीज़ें पैदा कीं, फिर आकाश की ओर रुख किया और ठीक तौर पर सात आकाश बनाए और वह हर चीज़ को जानता है।

30. और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि “मैं धरती में

الْقُرْآنُ

الْقُرْآنُ

فِيهَا آزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَا بَغُوصَةً ۖ فَمَا تُوْقَهُ ۚ  
فَالَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ وَلَقَدْ  
الَّذِينَ كَفَرُوا يَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۚ  
يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا ۖ وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا  
الْفَاسِقِينَ ۚ الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ  
مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَ  
يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۖ كَيْفَ  
تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَشْوَاثًا ۚ فَأَخْبَأَكُمْ فِيهِمْ أَنْ تَعْزِيكَمْ  
يَعْبُدِيكُمْ ثُمَّ أَلَّيْهِمْ تُرْجَعُونَ ۖ هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ  
فِي الْأَرْضِ جُجُوجًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ  
سَبْعَ سَمَاوَاتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ  
لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۚ قَالُوا أَتَجْعَلُ

سَبْعَ



(मनुष्य को) खलीफ़ा (सत्ताधारी) बनानेवाला हूँ।" उन्होंने कहा : "क्या उसमें उसको रखेगा, जो उसमें बिगाड़ पैदा करे और रक्तपात करे और हम तेरा गुणगान करते और तुझे पवित्र कहते हैं?" उसने कहा : "मैं जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते।"

31. उसने (अल्लाह ने) आदम को सारे नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया और कहा : "अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ।"

32. वे बोले : "पाक और महिमावान है तू ! तूने जो कुछ हमें बताया उसके सिवा हमें कोई ज्ञान नहीं। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।"

33. उसने कहा : "ऐ आदम ! उन्हें उन लोगों के नाम बताओ।" फिर जब उसने उन्हें उनके नाम बता दिए तो (अल्लाह ने) कहा : "क्या मैंने तुमसे कहा न था कि मैं आकाशों और धरती की छिपी बातों को जानता हूँ और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो।"

34. और याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि "आदम को सजदा करो" तो, उन्होंने सजदा किया सिवाय इबलीस के; उसने इनकार कर दिया और लगा बड़ा बनने और काफ़िर हो रहा।

35. और हमने कहा : "ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी पत्नी जन्नत में रहो और वहाँ जी भर बेरोक-टोक जहाँ से तुम दोनों का जी चाहे खाओ, लेकिन इस वृक्ष के पास न जाना, अन्यथा तुम ज़ालिम ठहरोगे।"

36. अन्ततः शैतान ने उन्हें वहाँ से फिसला दिया, फिर उन दोनों को वहाँ से निकलवाकर छोड़ा, जहाँ वे थे। हमने कहा कि "उतरो, तुम एक-दूसरे के शत्रु

فِيهَا مَنْ يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ، وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ فَقَالَ أَنْبِئُونِي بِأَسْمَاءِ هَؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قَالُوا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا بِمَا عَلَّمْتَنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَاءِهِمْ ۖ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُشِيرُونَ ۖ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۝ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَى ۖ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوا



होगे और तुम्हें एक समय तक धरती में ठहरना और बिलसना है।”

37. फिर आदम ने अपने रब से कुछ शब्द पा लिए, तो अल्लाह ने उसकी तौबा क़बूल कर ली; निस्संदेह वही तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

38. हमने कहा : "तुम सब यहाँ से उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरी ओर से कोई मार्गदर्शन पहुँचे, तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण किया, तो ऐसे लोगों को न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।"

[illegible]

39. और जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही आग में पड़नेवाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

40. ऐ इसराईल की संतान ! याद करो मेरे उस अनुग्रह को जो मैंने तुमपर किया था । और मेरी प्रतिज्ञा को पूरा करो, मैं तुमसे की हुई प्रतिज्ञा को पूरा करूँगा और हाँ मृड़ी से डरो ।

41. और ईमान लाओ उस चीज़ पर जो मैंने उतारी है, जो उसकी पुष्टि में है, जो तुम्हारे पास है, और सबसे पहले तुम ही उसके इनकार करनेवाले न बनो। और मेरी आयतों को थोड़ा मूल्य प्राप्त करने का साधन न बनाओ, मझसे ही तुम डरो।

42. और सत्य में असत्य का घाल-मेल न करो और जानते-बूझते सत्य को छिपाओ मत ।

43. और नमाज़ कायम करो और ज़कात दो और (मेरे समक्ष) झुकनेवालों के साथ झुको ।



44. क्या तुम लोगों को तो नेकी और एहसान का उपदेश देते हो और अपने आपको भूल जाते हो, हालाँकि तुम किताब भी पढ़ते हो? फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

45. धैर्य और नमाज़ से मदद लो, और निस्संदेह यह (नमाज़) बहुत कठिन है, किन्तु उन लोगों के लिए नहीं जिनके दिल पिघले हुए हों;

46. जो समझते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की ओर उन्हें पलटकर जाना है।

47. ऐ इसराईल की संतान! याद करो मेरे उस अनुग्रह को जो मैंने तुमपर किया था और इसे भी कि मैंने तुम्हें सारे संसार पर श्रेष्ठता प्रदान की थी;

48. और डरो उस दिन से जब न कोई किसी की ओर से कुछ तावान भरेगा और न किसी की ओर से कोई सिफ़ारिश ही क़बूल की जाएगी और न किसी की ओर से कोई फ़िदया (अर्थदण्ड) लिया जाएगा और न वे सहायता ही पा सकेंगे।

49. और याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔनियों से छुटकारा दिलाया जो तुम्हें अत्यन्त बुरी यातना देते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रहने देते थे; और इसमें तुम्हारे रब की ओर से बड़ी परीक्षा थी।

50. याद करो जब हमने तुम्हें सागर में अलग-अलग चौड़े रास्ते से ल जाकर छुटकारा दिया और फ़िरऔनियों को तुम्हारी आँखों के सामने डुबो दिया।

51. और याद करो जब हमने मूसा से चालीस रातों का वादा ठहराया तो उसके

الْبَقَرَةُ

البقرة

بِالْبَيِّنَاتِ وَتَتُوبُونَ إِلَىٰ نَفْسِكُمْ وَأَنْتُمْ تَسْتَلُونَ الْكِتَابَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ۚ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلاقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝ يٰٓبَنِي إِسْرَٰءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَلِيَّ فُضِّلْتُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝ وَأَتَقُوا أَيَّامًا لَّا تُجَازِي نَفْسُ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَمَلٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝ وَلَٰذِ يُجَازِيكُمْ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ يُدَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝ وَلَٰذِ قَرَفْنَا بِكُمْ الْبَٰحْرَ فَأَلْجَيْنَكُمْ فُلًا وَغَرَفْنَا آلَ فِرْعَوْنَ وَتَأْتُرُ تَنْظُرُونَ ۝ وَلَٰذِ وَعَدْنَا مُوسَىٰ أَلْبَعِينَ لَٰئِكَ لَتَأْتِيَٰنَّكُمُ الْعِجَالُ مِمَّنْ يَعْلَمُ

سَبَّحْ



पीछे तुम बछड़े को अपना देवता बना बैठे, तुम अत्याचारी थे।

52. फिर इसके पश्चात् भी हमने तुम्हें क्षमा किया, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

53. और याद करो जब मूसा को हमने किताब और कसौटी प्रदान की, ताकि तुम मार्ग पा सको।

54. और जब मूसा ने अपनी क्रौम से कहा : “ऐ मेरी क्रौम के लोगो ! बछड़े को देवता बनाकर तुमने अपने ऊपर जुल्म किया है, तो तुम अपने पैदा करनेवाले की ओर पलटो, अतः अपने लोगों<sup>1</sup> को स्वयं कत्ल करो। यही तुम्हारे पैदा

करनेवाले की दृष्टि में तुम्हारे लिए अच्छा है, फिर उसने तुम्हारी तौबा कबूल कर ली। निस्संदेह, वह बड़ा तौबा कबूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।”

55. और याद करो जब तुमने कहा था : “ऐ मूसा, हम तुमपर ईमान नहीं लाएँगे जब तक अल्लाह को खुल्लम-खुल्ला न देख लें।” फिर एक कड़क ने तुम्हें आ दबोचा<sup>2</sup>, तुम देखते रहे।

56. फिर तुम्हारे निर्जीव हो जाने के पश्चात् हमने तुम्हें जिला उठाया, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

57. और हमने तुमपर बादलों की छाया की और तुमपर ‘मन्न’ और ‘सलवा’ उतारा— “खाओ, जो अच्छी<sup>3</sup> पाक चीजें हमने तुम्हें प्रदान की हैं।” उन्होंने हमारा तो कुछ भी नहीं बिगाड़ा, बल्कि वे अपने ही ऊपर अत्याचार करते रहे।

الْبَكْرَةِ

الْبَكْرَةِ

وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ۝ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَإِذْ أَنْزَلْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمُوا لَكُمْ ظُلْمَنِي أَنْفُسَكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ فَتَوَبُّوا إِلَىٰ بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خُذٌ لَكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ وَإِذْ قُلْنَا لِمُوسَىٰ كُنْ تَمُوتُ لَكَ حَقٌّ نَرَاهُ اللَّهُ جَهَنَّمَ ۖ فَاخَذْنَاكَ بِالصُّبُوحَةِ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَاكَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّاءَ وَالسَّلْوَىٰ كُلًّا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَلَكَؤَامِنُهَا خَيْرٌ مِمَّا كُنتُمْ فِيهَا وَأَدْخِلُوا الْبَابَ مُجْعَدًا

مَدَن

1. अर्थात् अपने उन लोगों को जिन्होंने ऐसे अपराध किए, जिनकी सज़ा कत्ल ही है।

2. अर्थात् तुमने इस प्रकार की धृष्टता की, कि तत्काल अल्लाह के प्रकोप में ग्रस्त हो गए।



58. और जब हमने कहा था :  
“इस बस्ती में प्रवेश करो फिर  
उसमें से जहाँ से चाहो जी भर  
खाओ, और बस्ती के द्वार में  
सजदागुज़ार बनकर प्रवेश करो,  
और कहो : “छूट है ।”<sup>1</sup> हम तुम्हारी  
ख़ताओं को क्षमा कर देंगे और  
अच्छे से अच्छा काम करनेवालों पर  
हम और अधिक अनुग्रह करेंगे ।”

59. फिर जो बात उनसे कही गई  
थी ज़ालिमों ने उसे दूसरी बात से  
बदल दिया ।<sup>2</sup> अन्ततः ज़ालिमों पर  
हमने, जो अवज्ञा वे कर रहे थे उसके  
कारण, आकाश से यातना उतारी ।

60. और याद करो जब मूसा ने  
अपनी क़ौम के लिए पानी की प्रार्थना की तो हमने कहा : “चट्टान पर अपनी  
लाठी मारो”, तो उससे बारह स्रोत फूट निकले और हर गिरोह ने  
अपना-अपना घाट जान लिया—“खाओ और पियो अल्लाह का दिया और  
धरती में बिगाड़ फैलाते न फिरो ।”

61. और याद करो जब तुमने कहा था : “ऐ मूसा, हम एक ही प्रकार के खाने पर  
कदापि संतोष नहीं कर सकते, अतः हमारे लिए अपने रब से प्रार्थना करो कि वह  
हमारे वास्ते धरती की उपज से साग-पात और ककड़ियाँ और लहसुन और मसूर  
और प्याज़ निकाले ।” कहा (मूसा ने) : “क्या तुम जो घटिया चीज़ है उसको उससे  
बदलकर लेना चाहते हो जो उत्तम है ? किसी नगर में उतरो, फिर जो कुछ तुमने  
माँगा है, तुम्हें मिल जाएगा”—और उनपर अपमान और हीन दशा थोप दी गई,

وَقُولُوا حِطَّةٌ نَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ وَسَيَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ  
فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا  
عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا  
يَفْسُقُونَ ۖ وَإِذْ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا  
اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ  
عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرِبَهُمْ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ  
رِزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۖ وَإِذْ  
قُلْنَا لِمُوسَىٰ لَنْ نَصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا  
رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا ثَمَنَتْ الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا  
وَمِمَّا تَحْتِهَا وَعَنْبِيًا وَبَصِلِيًّا ۖ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ  
الَّذِي هُوَ أَكْثَرُ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۚ أَهَیْطَلُوا مَضْرًا ۚ قُلْنَا  
لَكُمْ مِمَّا سَأَلْتُمْ ۖ وَضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ الدَّلِيلَ ۚ وَالْمَسْكَنَةُ  
وَبَارِئُ يَعْصِبُ مِنَ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ

1. अर्थात् हमारा काम तुमपर बोझ डालना नहीं, बल्कि जुल्म के बोझ से तुम्हें उबारना है ।

2. अर्थात् उनकी नीति वह न रही, जो अपेक्षित थी ।



और वे अल्लाह के प्रकोप के भागी हुए। यह इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों का इनकार करते रहे और नबियों की अकारण हत्या करते थे। यह इसलिए कि उन्होंने अवज्ञा की और वे सीमा का उल्लंघन करते रहे।

62. निस्संदेह, ईमानवाले और जो यहूदी हुए और ईसाई और साबिई, जो भी अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाया और अच्छा कर्म किया तो ऐसे लोगों का उनके अपने रब के पास (अच्छा) बदला है, उनको न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे—

بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وُكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصُّبُهَىٰ ۚ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ ۖ وَآذِكُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ ثُمَّ كَوَّيْنَاهُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۖ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدُوا مِنْكُمْ فِي الشَّبْتِ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِرِينَ ۖ فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۚ قَالُوا لَا

63. और याद करो जब हमने इस हाल में कि तूर (पर्वत) को तुम्हारे ऊपर ऊँचा कर रखा था, तुमसे दृढ़ वचन लिया था : “जो चीज़ हमने तुम्हें दी है उसे मज़बूती के साथ पकड़ो और जो कुछ उसमें है उसे याद रखो ताकि तुम बच सको।”

64. फिर इसके पश्चात् भी तुम फिर गए, तो यदि अल्लाह की कृपा और उसकी दयालुता तुम पर न होती, तो तुम घाटे में पड़ गए होते।

65. और तुम उन लोगों के विषय में तो जानते ही हो जिन्होंने तुममें से ‘सब्त’<sup>1</sup> के दिन के मामले में मर्यादा का उल्लंघन किया था, तो हमने उनसे कह दिया : “बन्दर हो जाओ, धिक्कारे और फिटकारे हुए !”

66. फिर हमने इसे सामनेवालों और बाद के लोगों के लिए शिक्षा-सामग्री और डर रखनेवालों के लिए नसीहत बनाकर छोड़ा।

67. और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा : “निश्चय ही अल्लाह

1. अर्थात् सामूहिक इबादत का दिन।



तुम्हें आदेश देता है कि एक गाय ज़ब्ह करो।" कहने लगे : "क्या तुम हमसे परिहास करते हो?" उसने कहा : "मैं इससे अल्लाह की पनाह माँगता हूँ कि जाहिल बनूँ।"

68. बोले : "हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हमपर स्पष्ट कर दे कि वह (गाय) कौन-सी है?" उसने कहा : "वह कहता है कि वह ऐसी गाय है जो न बूढ़ी है, न बछिया, इनके बीच की रास है; तो जो तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है, करो।"

69. कहने लगे : "हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हमें बता दे कि उसका रंग कैसा है?" कहा : "वह कहता है कि वह गाय सुनहरी है, गहरे चटकीले रंग की कि देखनेवालों को प्रसन्न कर देती है।"

70. बोले : "हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हमें बता दे कि वह कौन-सी है, गायों का निर्धारण हमारे लिए संदिग्ध हो रहा है। यदि अल्लाह ने चाहा तो हम अवश्य पता लगा लेंगे।"

71. उसने कहा : "वह कहता है कि वह ऐसी गाय है जो सधाई हुई नहीं है कि भूमि जोतती हो, और न वह खेत को पानी देती है, ठीक-ठाक है, उसमें किसी दूसरे रंग की मिलावट नहीं है।" बोले : "अब तुमने ठीक बात बताई है।" फिर उन्होंने उसे ज़ब्ह किया, जबकि वे करना नहीं चाहते थे।

72. और याद करो जब तुमने एक व्यक्ति की हत्या कर दी, फिर उस सिलसिले में तुमने टाल-मटोल से काम लिया—जबकि जिसको तुम छिपा रहे थे, अल्लाह उसे खोल देनेवाला था।

73. —तो हमने कहा : "उसे उसके एक हिस्से से मारो।" इस प्रकार अल्लाह

النَّحْلُ  
اَسْتَعِذُّنَا هُزُوا. قَالَ اَعُوذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ  
الْجَاهِلِيْنَ. قَالُوا اِذْ لَنَا رَبُّكَ يُبَيِّنُ لَنَا مَا هِيَ. قَالَ  
اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَائِضٌ وَلَا يَكْرَهُ عَوَانُ  
بَيْنَ ذَلِكَ فَاَفْعَلُوا مَا تُؤْمَرُوْنَ. قَالُوا اِذْ لَنَا  
رَبُّكَ يُبَيِّنُ لَنَا مَا لَوْنُهَا. قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا  
بَقَرَةٌ صَفْرَاءٌ فَاقْرِ لَوْنَهَا تَسْأَلُ النَّظَرِيْنَ. قَالُوا  
اِذْ لَنَا رَبُّكَ يُبَيِّنُ لَنَا مَا هِيَ اِنْ الْبَقَرُ ثَغْبَةً عَلَيْنَا.  
وَاِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ. قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا  
بَقَرَةٌ لَا ذَلُولَ تُثْمِرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ.  
مُسَلَّمَةٌ لَا شِيَةَ فِيْهَا. قَالُوا اللّٰهُنَّ جَنَّتْ بِالْحَقِّ.  
قَدْ يَحْمِلُهَا وَمَا كَاذُوْنَ فَعَلُوْنَ. وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا  
فَاَذَرْتُمْ فِيْهَا. وَاللّٰهُ مُخِرٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ. ۝  
فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا. كَذٰلِكَ يُخَيِّلُ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۝

مَدَن



मुर्दों को जीवित करता है और तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो।

74. फिर इसके पश्चात् भी तुम्हारे दिल कठोर हो गए, तो वे पत्थरों की तरह हो गए बल्कि उनसे भी अधिक कठोर; क्योंकि कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं, और उनमें से कुछ ऐसे भी होते हैं कि फट जाते हैं तो उनमें से पानी निकलने लगता है, और उनमें से कुछ ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह के भय से गिर जाते हैं। और अल्लाह, जो कुछ तुम कर रहे हो, उससे बेखबर नहीं है।

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٤﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ وَإِنَّ مِنْ أَهْجَارَةٍ لَمَّا يَنْفَجَرُ مِنْهَا الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنْ مِنْهَا لَمَّا يَنْشَقُّ يَنْفَجَرُ مِنْهُ الْمَاءُ ۚ وَإِنْ مِنْهَا لَمَّا يَنْهِيظُ مِنْ حَشِيئَةِ اللَّهِ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٥﴾ أَفَتَعْطُمُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا بِكُمْ وَكَذَلِكَ كَانَ قَرِيبٌ مِنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ يَحْوِفُونَهُ مِنْ بَعْدِ مَا عَقِلُوا ۚ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٦﴾ وَإِذَا لَعَنُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا أَمَنُوا أَمَنَّا ۚ وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ قَالُوا أَتُحَدِّثُونَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٧﴾ أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٨﴾ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِي ۚ وَإِنْ هُمْ إِلَّا

مَزَل

75. तो क्या तुम इस लालच में हो कि वे तुम्हारी बात मान लेंगे, जबकि उनमें से कुछ लोग अल्लाह का कलाम सुनते रहे हैं, फिर उसे भली-भाँति समझ लेने के पश्चात् जान-बूझकर उसमें परिवर्तन करते रहे ?

76. और जब वे ईमान लानेवालों से मिलते हैं तो कहते हैं : "हम भी ईमान रखते हैं", और जब आपस में एक-दूसरे से एकांत में मिलते हैं तो कहते हैं : "क्या तुम उन्हें वे बातें, जो अल्लाह ने तुमपर खोलीं, बता देते हो कि वे उनके द्वारा तुम्हारे रब के यहाँ हुज्जत में तुम्हारा मुक़ाबिला करें ? तो क्या तुम समझते नहीं !"

77. क्या वे जानते नहीं कि अल्लाह वह सब कुछ जानता है, जो कुछ वे छिपाते और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं ?

78. और उनमें सामान्य बेपढ़े भी हैं जिन्हें किताब का ज्ञान नहीं है, बस कुछ कामनाओं एवं आशाओं को धर्म जानते हैं, और वे तो बस अटकल से काम लेते हैं।



79. तो विनाश और तबाही है उन लोगों के लिए जो अपने हाथों से किताब लिखते हैं फिर कहते हैं : "यह अल्लाह की ओर से है", ताकि उसके द्वारा थोड़ा मूल्य प्राप्त कर लें। तो तबाही है उनके लिए उसके कारण जो उनके हाथों ने लिखा और तबाही है उनके लिए उसके कारण जो वे कमा रहे हैं।

80. वे कहते हैं : "जहन्नम की आग हमें नहीं छू सकती, हाँ, कुछ गिने-चुने दिनों की बात और है।" कहो : "क्या तुमने अल्लाह से कोई वचन ले रखा है? फिर तो अल्लाह कदापि अपने वचन के विरुद्ध नहीं जा सकता? या तुम अल्लाह के ज़िम्मे डालकर ऐसी बात कहते हो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं?"

81. क्यों नहीं; जिसने भी कोई बदी कमाई और उसकी खताकारी ने उसे अपने घरे में ले लिया, तो ऐसे ही लोग आग (जहन्नम) में पड़नेवाले हैं; वे उसी में सदैव रहेंगे।

82. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वही जन्नतवाले हैं, वे सदैव उसी में रहेंगे।"

83. और याद करो जब इसराईल की संतान से हमने वचन लिया : "अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करोगे; और माँ-बाप के साथ और नातेदारों के साथ और अनाथों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करोगे; और यह कि लोगों से भली बात कहो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।" तो तुम फिर गए, बस तुममें बचे थोड़े ही, और तुम उपेक्षा की नीति ही अपनाए रहे।

يُظَنُّونَ ۖ قَوْلَ الَّذِينَ يَكْتُوبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ۖ  
ثُمَّ يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ  
قَوْلِيلٌ لَهُمْ مِمَّا كُتِبَتْ أَيْدِيهِمْ ۚ وَنِيلٌ لَهُمْ مِمَّا  
يَكْسِبُونَ ۚ وَقَالُوا لَنْ نَمُتَنَّا النَّازِلَ إِلَّا أَيَّامًا مَعْدُودَةً ۚ  
قُلْ اتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ ۚ  
أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۚ بَلَى مَنْ كَسَبَ  
سَيِّئَةً وَاحْتَاظَتْ بِهَا حَظِيئَتُهُ ۖ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ  
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ  
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۚ وَإِذْ  
أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ ۚ وَ  
بِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِالْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ  
وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا ۚ وَآفَقِمْوَا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۚ  
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنتُمْ مُّعْرِضُونَ ۚ



84. और याद करो जब हमने तुमसे वचन लिया : "अपने खून न बहाओगे और न अपने लोगों को अपनी बस्तियों से निकालोगे।" फिर तुमने इकरार किया और तुम स्वयं इसके गवाह हो।

85. फिर तुम वही हो कि अपने लोगों की हत्या करते हो और अपने ही एक गिरोह के लोगों को उनकी बस्तियों से निकालते हो; तुम गुनाह और ज़्यादती के साथ उनके विरुद्ध एक-दूसरे के पृष्ठपोषक बन जाते हो; और यदि वे बन्दी बनकर तुम्हारे पास आते हैं, तो उनकी रिहाई के लिए फ़िदए

(अर्थदण्ड) का लेन-देन करते हो जबकि उनको उनके घरों से निकालना ही तुमपर हराम था, तो क्या तुम किताब के एक हिस्से को मानते हो और एक को नहीं मानते? फिर तुममें जो ऐसा करें उनका बदला इसके सिवा और क्या हो सकता है कि सांसारिक जीवन में अपमान हो? और क्रियामत के दिन ऐसे लोगों को कठोर से कठोर यातना की ओर फेर दिया जाएगा। अल्लाह उससे बेखबर नहीं है जो कुछ तुम कर रहे हो।

86. यही वे लोग हैं जो आखिरत के बदले सांसारिक जीवन के खरीदार हुए, तो न उनकी यातना हल्की की जाएगी और न उन्हें कोई सहायता पहुँच सकेगी।

87. और हमने मूसा को किताब दी थी, और उसके पश्चात् आगे-पीछे निरन्तर रसूल भेजते रहे; और मरयम के बेटे ईसा को खुली-खुली निशानियाँ प्रदान की और पवित्र-आत्मा के द्वारा उसे शक्ति प्रदान की; तो यही तो हुआ कि जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास वह कुछ लेकर आया जो तुम्हारे जी को

الْبَقَرَةِ

الْبَقَرَةِ

وَاِذَا اخَذْنَا مِنْكُمْ اٰمَةً لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ  
اَنْفُسَكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ  
ثُمَّ اَنْتُمْ هٰؤُلَاءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فِرْيَقًا  
مِّنْكُمْ مِنْ دِيَارِهِمْ تَظْهَرُوْنَ عَلَيْهِم بِالْاِلَٰهِ  
وَالْعُدُوِّ اِنْ يَأْتَوْكُمْ اَسْرَى تَقْتُلُوهُمْ وَهُوَ  
مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ اَفَتَوْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ  
وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ فَمَا جَزَاءُ مَنْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ  
مِنْكُمْ اِلَّا يَخِزِّيْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَبِیَوْمِ الْقِيٰمَةِ  
يُرَدُّوْنَ اِلَى اَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ  
عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ اشْتَرَوْا الْحَيٰوةَ  
الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ فَلَا يَخَفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ  
وَلَا هُمْ يَنْصَرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَتَيْنَا مُوسٰی الْكِتٰبَ  
وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ وَاَتَيْنَا عِيسٰی ابْنَ



पसंद न था, तो तुम अकड़ बैठे, तो एक गिरोह को तो तुमने झुठलाया और एक गिरोह को क़त्ल करते रहे ?

88. वे कहते हैं : “हमारे दिलों पर तो प्राकृतिक आवरण चढ़े हैं।” नहीं, बल्कि उनके इनकार के कारण अल्लाह ने उनपर लानत की है; अतः वे ईमान थोड़े ही लाएँगे।

89. और जब उनके पास एक किताब अल्लाह की ओर से आई है जो उसकी पुष्टि करती है जो उनके पास मौजूद है—और इससे पहले तो वे न माननेवाले लोगों पर विजय पाने के इच्छुक रहे हैं—फिर जब वह चीज़ उनके पास आ गई जिसे वे पहचान भी गए हैं, तो उसका इनकार कर बैठे; तो अल्लाह की फिटकार इनकार करनेवालों पर !

90. क्या ही बुरी चीज़ है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों का सौदा किया, अर्थात् जो कुछ अल्लाह ने उतारा है उसे सरकशी और इस अप्रियता के कारण नहीं मानते कि अल्लाह अपना फ़ज़ल (कृपा) अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है क्यों उतारता है, अतः वे प्रकोप पर प्रकोप के अधिकारी हो गए हैं। और ऐसे इनकार करनेवालों के लिए अपमानजनक यातना है।

91. जब उनसे कहा जाता है : “अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसपर ईमान लाओ”, तो कहते हैं : “हम तो उसपर ईमान रखते हैं जो हमपर उतरा है,” और उसे मानने से इनकार करते हैं जो उसके पीछे है, जबकि वही सत्य है, उसकी पुष्टि करता है जो उनके पास है। कहो : “अच्छा तो इससे पहले

التّٰو

التّٰو

مَرِّمَ الْبَيْتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ. أَفَكُلَّمَا  
جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنْفُسُكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ  
فَتَقَرَّبْنَا كَذِبَتْهُمْ وَتَقَرَّبُوا تَقْتُلُونَ ۖ وَقَالُوا  
قُلُوبُنَا غُلْفٌ ۚ بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا  
مَّا يُؤْمِنُونَ ۖ وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ  
مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفِيقُونَ عَلَى  
الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ  
فَلَعَنَهُ اللَّهُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۖ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا  
أَنْفُسُهُمْ أَنْ يَكْفُرُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ بَعْدَ مَا أَنْزَلَ  
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ قَبْلَ ذَٰلِكَ  
بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۖ وَ  
إِذَا قِيلَ لَهُمْ اؤْمِنُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا تَسْمَعُونَ  
بِمَا نُنْزِلُ عَلَيْهِمْ وَلَا يَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ ۚ وَهُوَ الْحَقُّ

مُرْ



अल्लाह के पैगम्बरों की हत्या क्यों करते रहे हो, यदि तुम ईमानवाले हो?"

92. तुम्हारे पास मूसा खुली-खुली निशानियाँ लेकर आया, फिर भी उसके बाद तुम ज़ालिम बनकर बछड़े को देवता बना बैठे।

93. और याद करो जब हमने तुमसे वचन लिया, और तूर को तुम्हारे ऊपर उठाए रखा था— "जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसे मज़बूती से पकड़ो और सुनो।" वे बोले: "हमने सुना, किन्तु हमने माना नहीं।" उनके अविश्वास के कारण उनके दिलों में बछड़ा बस गया था।

कहो: "यदि तुम ईमानवाले हो, तो कितना बुरा वह कर्म है जिसका हुक्म तुम्हारा ईमान तुम्हें देता है।"

94. कहो: "यदि अल्लाह के निकट आखिरत का घर सारे इंसानों को छोड़कर केवल तुम्हारे ही लिए है, फिर तो मृत्यु की कामना करो, यदि तुम सच्चे हो।"

95. अपने हाथों इन्होंने जो कुछ आगे भेजा है उसके कारण वे कदापि उसकी कामना न करेंगे; अल्लाह तो ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है।

96. तुम उन्हें सब लोगों से बढ़कर जीवन का लोभी पाओगे, यहाँ तक कि वे इस सम्बन्ध में शिर्क करनेवालों से भी बढ़े हुए हैं। उनका तो प्रत्येक व्यक्ति यह इच्छा रखता है कि क्या ही अच्छा होता कि उसे हज़ार वर्ष की आयु मिले, जबकि यदि उसे यह आयु प्राप्त भी हो जाए, तो भी वह अपने आपको यातना से नहीं बचा सकता। अल्लाह देख रहा है, जो कुछ वे कर रहे हैं।

الْبَقَرَةِ

الْبَقَرَةِ

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ. قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ  
مِنْ قَبْلِ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَى  
بِالْبَيِّنَاتِ فَخُذُوا خُذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ  
ظَالِمُونَ ۝ وَإِذْ أَخَذْنَا مِنْ بُنْيَانِكُمْ ذُرِّيَّتًا فَقَوْمَكُمُ  
الظُّوْرَةُ خُذُوا مِمَّا آتَيْنَكُم بِقُوَّةٍ وَأَسْمِعُوا ۝ قَالُوا  
سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأَشْرِكُوا فِي ثُلُوثِ الْبَيْتِ بِكُفْرِهِمْ  
قُلْ بِشَيْءٍ يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيْمَانُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝  
قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمْ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً  
فَرِيقٌ دُونَ النَّاسِ فَأَقْبَلُوا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝  
وَلَنْ يَتِمَّتْهُ أَبَدًا إِيْمَانُكُمْ قَدْ كَفَرْتُمْ بِهِمْ ۝ وَاللَّهُ عَلِيمٌ  
بِالظَّالِمِينَ ۝ وَلَتَجِدَنَّهُمْ جَحَرَ الْغَابِ ۝ وَاللَّهُ عَلِيمٌ  
بِحَيَاتِهِ وَمَنْ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ أَنْ يُوَعِّدَهُ  
أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُرْضِيهِ ۚ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ

مَذَل

الْبَقَرَةِ



97. कहो : "जो कोई जिबरील का शत्रु हो, (तो वह अल्लाह का शत्रु है,) क्योंकि उसने तो उसे अल्लाह ही के हुक्म से तुम्हारे दिल पर उतारा है, जो उन (भविष्यवाणियों) के सर्वथा अनुकूल है जो उससे पहले से मौजूद हैं; और ईमानवालों के लिए मार्गदर्शन और शुभ-सूचना है।

98. जो कोई अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों और जिबरील और मीकाईल का शत्रु हो, तो ऐसे इनकार करनेवालों का अल्लाह शत्रु है।"

99. और हमने तुम्हारी ओर खुली-खुली आयतें उतारी हैं और उनका इनकार तो बस वही लोग करते हैं, जो उल्लंघनकारी हैं।

100. क्या यह उनकी निश्चित नीति है कि जब भी उन्होंने कोई वचन दिया तो उनके एक गिरोह ने उसे उठा फेंका? बल्कि उनमें अधिकतर ईमान ही नहीं रखते।

101. और जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक रसूल आया, जिससे उस (भविष्यवाणी) की पुष्टि हो रही है जो उनके पास थी, तो उनके एक गिरोह ने, जिन्हें किताब मिली थी, अल्लाह की किताब को अपने पीठ पीछे डाल दिया, मानो वे कुछ जानते ही नहीं।

102. और वे उस चीज़ के पीछे पड़ गए जिसे शैतान सुलैमान की बादशाही पर थोपकर पढ़ते थे—हालाँकि सुलैमान ने कोई कुफ़्र नहीं किया था, बल्कि कुफ़्र तो शैतानों ने किया था; वे लोगों को जादू सिखाते थे—और उस चीज़ में पड़ गए जो बाबिल में दोनों फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर उतारी गई थी। और वे किसी को भी सिखाते न थे जबतक कि कह न देते : "हम तो बस एक

يُعَمَّرُ وَاللَّهُ يَصِيرُ لِمَا يَعْمَلُونَ ۚ قُلْ مَنْ كَانَ  
عَدُوًّا لِّجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ  
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرًا لِلْمُؤْمِنِينَ ۝  
مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ  
وَمِيكَائِيلَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ۝ وَلَقَدْ  
أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا  
الْفَاسِقُونَ ۝ أَوْ كَلِمَاتٍ غَتَّوْا بِهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ  
مِنْهُنَّ لَآئِنَ أَكْثَرُهُمْ لَا يُوْمِنُونَ ۝ وَلَئِنِ أَجَاءَهُمْ  
رَسُولٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مَصْدِقٌ لِمَا مَعَهُمْ رَبِّدُوا  
قِيَرَتَهُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لِكُتُبِ اللَّهِ وَرَأَوْا  
ظُهُورَهُمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَاتَّبِعُوا مَا نَزَّلُوا  
الشَّيْطَانُ عَلَى مَلَكِ سُلَيْمَانَ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ  
وَلَكِنَّ الشَّيْطَانُ كَفَرًا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ الْيَحْرَجَ وَمَا



परीक्षा हैं; तो तुम कुफ़्र में न पड़ना।" तो लोग उन दोनों से वह कुछ सीखते हैं, जिसके द्वारा पति और पत्नी में अलगाव पैदा कर दें— यद्यपि वे उससे किसी को भी हानि नहीं पहुँचा सकते थे। हाँ, यह और बात है कि अल्लाह के हुक्म से किसी को हानि पहुँचनेवाली ही हो—और वह कुछ सीखते हैं जो उन्हें हानि ही पहुँचाए और उन्हें कोई लाभ न पहुँचाए। और उन्हें भली-भाँति मालूम है कि जो उसका ग्राहक बना, उसका आखिरत में कोई हिस्सा नहीं। कितनी बुरी चीज़ के बदले उन्होंने अपने प्राणों का सौदा किया, यदि वे जानते (तो ठीक मार्ग अपनाते)।

103. और यदि वे ईमान लाते और डर रखते, तो अल्लाह के यहाँ से मिलनेवाला बदला कहीं अच्छा था, यदि वे जानते (तो इसे समझ सकते)।

104. ऐ ईमान लानेवालो! 'राइना'<sup>1</sup> न कहा करो, बल्कि 'उनज़ुरना'<sup>2</sup> कहा करो और सुना करो। और इनकार करनेवालों के लिए दुखद यातना है।

105. इनकार करनेवाले नहीं चाहते, न किताबवाले और न मुशरिक (बहुदेववादी) कि तुम्हारे रब की ओर से तुमपर कोई भलाई उतरे, हालाँकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी दयालुता के लिए खास कर-ले; अल्लाह बड़ा अनुग्रह करनेवाला है।

النَّاسِ  
أَنْزَلَ عَلَى الْمَلَائِكَةِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ  
وَمَا يَعْلَمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ  
فَلَا تَكْفُرْ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ  
الْمَرْءِ وَرَوْحِهِ ۚ وَمَا هُمْ بِضَآئِرِينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا  
بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ  
وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ  
خَلَاقٍ ۚ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا  
يَعْلَمُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَآتَقُوا لِمَثُوبَةٍ ۚ فَمِنْ  
عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ لَّو كَانُوا يَعْلَمُونَ ۚ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ  
آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انظُرْنَا وَاسْمَعُوا  
وَاللَّكْفَرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ مَا يَوَدُّ الَّذِينَ  
كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ  
عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ

مَنْزِل

1. यहाँ अरबी में जो वाक्य प्रयुक्त हुआ है, तनिक हेर-फेर से इसका अर्थ कुछ से कुछ हो जाता है। इसी लिए इस शब्द को प्रयोग में लाने से रोका गया है।

2. हमपर नज़र कीजिए, या तनिक हमारा खयाल कीजिए।



106. हम जिस आयत (और निशान) को भी मिटा दें या उसे भुला देते हैं, तो उससे बेहतर लाते हैं या उस जैसा दूसरा ही। क्या तुम जानते नहीं हो कि अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है?

107. क्या तुम नहीं जानते कि आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है और अल्लाह से हटकर न तुम्हारा कोई मित्र है और न सहायक?

108. (ऐ ईमानवालो ! तुम अपने रसूल के आदर का ध्यान रखो) या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से उसी प्रकार से प्रश्न और बात करो,

जिस प्रकार इससे पहले मूसा से बात की गई है? हालाँकि जिस व्यक्ति ने ईमान के बदले इनकार की नीति अपनाई, तो वह सीधे रास्ते से भटक गया।

109. बहुत-से किताबवाले अपने भीतर की ईर्ष्या से चाहते हैं कि किसी प्रकार वे तुम्हारे ईमान लाने के बाद फेरकर तुम्हें इनकार कर देनेवाला बना दें, यद्यपि सत्य उनपर प्रकट हो चुका है, तो तुम दरगुज़र (क्षमा) से काम लो और जाने दो यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला लागू कर दे। निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

110. और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और तुम स्वयं अपने लिए जो भलाई भी पेश करोगे, उसे अल्लाह के यहाँ मौजूद पाओगे। निस्संदेह जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे देख रहा है।

الْبَقَرَةُ

الْبَقَرَةُ

مَنْ يَشَآءْ، وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝ مَا تَنْتَظِرُونَ  
أَيُّكُمْ أَوْ نُنَبِّئُهَا نَارٌ يَحْتَرِقُ فِيهَا أَوْ مِثْلُهَا ۚ أَلَمْ تَعْلَمُوا  
أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ  
اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ  
دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ أَمْ تُرِيدُونَ أَنْ  
تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا سَأَلَ مُوسَى مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ  
يَتَّبِعِلْ الْكُفْرَ بِالْإِسْلَامِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝  
وَذَكِّرْهُمْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُرِيدُونَ كُفْرًا مِنْ بَعْدِ مَا كَانُوا  
لِقَارًا ۚ حَسَدًا مِمَّنْ عِنْدَ أَنْفُسِهِمْ ۚ وَمِنْ بَعْدِ مَا  
تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهَ  
بِأَمْرٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَاقِيمُوا الصَّلَاةَ  
وَاتُوا الزَّكَاةَ ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ نَجِدْهُ  
عِنْدَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَقَالُوا

مَنْ



111. और उनका कहना है :  
“कोई व्यक्ति जन्नत में प्रवेश नहीं कर सकता सिवाय उसके जो यहूदी है या ईसाई है।”<sup>1</sup> ये उनकी अपनी निराधार कामनाएँ हैं। कहो : “यदि तुम सच्चे हो तो अपने प्रमाण पेश करो।”

112. क्यों नहीं, जिसने भी अपने-आपको अल्लाह के प्रति समर्पित कर दिया और उसका कर्म भी अच्छे से अच्छा हो तो उसका प्रतिदान उसके रब के पास है और ऐसे लोगों के लिए न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

113. यहूदियों ने कहा :

“ईसाइयों की कोई बुनियाद नहीं।” और ईसाइयों ने कहा : “यहूदियों की कोई बुनियाद नहीं।” हालाँकि वे किताब का पाठ करते हैं। इसी तरह की बात उन्होंने भी कही है जो ज्ञान से वंचित हैं। तो अल्लाह क्रियामत के दिन उनके बीच उस चीज़ के विषय में निर्णय कर देगा, जिसके विषय में वे विभेद कर रहे हैं।

114. और उससे बढ़कर अत्याचारी और कौन होगा जिसने अल्लाह की मस्जिदों को उसके नाम के स्मरण से वंचित रखा और उन्हें उजाड़ने पर उतारू रहा? ऐसे लोगों को तो बस डरते हुए ही उनमें प्रवेश करना चाहिए था। उनके लिए संसार में रुसवाई (अपमान) है और उनके लिए आखिरत में बड़ी यातना नियत है।

115. पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं, अतः जिस ओर भी तुम रुख करो

لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا أَوْ نَصْرِيًّا ۚ  
تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ  
صَادِقِينَ ۝ بَلَىٰ ۚ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ  
مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا  
هُمْ يَحْزَنُونَ ۚ وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصْرَةُ عَلَى  
شَيْءٍ ۖ وَقَالَتِ النَّصْرَةُ لَيْسَتِ الْيَهُودَ عَلَى شَيْءٍ ۖ  
وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ  
مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا  
كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسْجِدَ  
اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَطَّهُ فِي خُرَابِهِمْ ۚ أُولَٰئِكَ  
مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ ۚ لَهُمْ فِي  
الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝  
وَاللَّهُ الشَّرِيفُ الْكَرِيمُ ۚ فَآيِنَّمَا تَوَلَّوْا فَمِنْ وَجْهِ

1. अर्थात् यहूदियों की दृष्टि में केवल यहूदी ही जन्नत में प्रवेश पा सकते हैं और ईसाइयों की दृष्टि में केवल ईसाई ही जन्नत में जाएँगे।



उसी ओर अल्लाह का रुख है।  
निस्संदेह अल्लाह बड़ी समाईवाला  
(सर्वव्यापी), सर्वज्ञ है।

116. कहते हैं : अल्लाह औलाद  
रखता है— महिमावान है वह !  
(पूरब और पश्चिम ही नहीं, बल्कि)  
आकाशों और धरती में जो कुछ  
भी है, उसी का है। सभी उसके  
आज्ञाकारी हैं।

117. वह आकाशों और धरती  
का प्रथमतः पैदा करनेवाला है। वह  
तो जब किसी काम का निर्णय  
करता है, तो उसके लिए बस कह  
देता है कि “हो जा” और वह हो  
जाता है।

الْبَقَرَةِ  
اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۖ وَقَالُوا اتَّخَذَ  
اللَّهُ وَلَدًا ۚ سُبْحَنَهُ ۚ بَلْ لَمْ يَلِدْ سَمُوتٍ وَ  
الْأَرْضِ ۚ كُلُّ لَهُ قُنُوتٍ ۖ بَدِيعُ السَّمُوتِ وَ  
الْأَرْضِ ۚ وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ  
فَيَكُونُ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا  
اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ ۚ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ  
مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ ۚ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ  
لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۚ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا  
وُنَذِيرًا ۚ وَلَا تُنْفِلْ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ۚ وَلَنْ  
تَرْضَىٰ عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ  
مِلَّتَهُمْ ۚ قُلْ إِنَّ هُدَىٰ اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۚ وَلَئِنْ  
ابْتِغَيْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ  
مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا تَصِيرَ ۚ الَّذِينَ

118. जिन्हें ज्ञान नहीं, वे कहते हैं : “अल्लाह हमसे बात क्यों नहीं करता ?  
या कोई निशानी हमारे पास आ जाए।” इसी प्रकार इनसे पहले के लोग भी  
कह चुके हैं। इन सबके दिल एक जैसे हैं। हम खोल-खोलकर निशानियाँ  
उन लोगों के लिए बयान कर चुके हैं जो विश्वास करें।

119. निश्चित रूप से हमने तुम्हें हक के साथ शुभ-सूचना देनेवाला और  
डरानेवाला बनाकर भेजा। भड़कती आग में पड़नेवालों के विषय में तुमसे  
कुछ न पूछा जाएगा।

120. न यहूदी तुमसे कभी राज़ी होनेवाले हैं और न ईसाई जब तक कि तुम  
उनके पंथ पर न चलने लग जाओ। कह दो : “अल्लाह का मार्गदर्शन ही  
वास्तविक मार्गदर्शन है।” और यदि उस ज्ञान के पश्चात् जो तुम्हारे पास आ  
चुका है, तुमने उनकी इच्छाओं का अनुसरण किया, तो अल्लाह से बचानेवाला  
न तो तुम्हारा कोई मित्र होगा और न सहायक।



121. जिन लोगों को हमने किताब दी है उनमें वे लोग जो उसे उस तरह पढ़ते हैं जैसाकि उसके पढ़ने का हक़ है, वही उसपर ईमान ला रहे हैं, और जो उसका इनकार करेंगे, वही घाटे में रहनेवाले हैं।

122. ऐ इसराईल की संतान ! मेरी उस कृपा को याद करो जो मैंने तुमपर की थी और यह कि मैंने तुम्हें संसारवालों पर श्रेष्ठता प्रदान की।

123. और उस दिन से डरो, जब कोई न किसी के काम आएगा, न किसी की ओर से अर्थदण्ड

स्वीकार किया जाएगा, और न कोई सिफ़ारिश ही उसे लाभ पहुँचा सकेगी, और न उनको कोई सहायता ही पहुँच सकेगी।

124. और याद करो जब इबराहीम की उसके रब ने कुछ बातों में परीक्षा ली तो उसने उनको पूरा कर दिखाया। उसने कहा : "मैं तुझे सारे इनसानों का पेशवा बनानेवाला हूँ।" उसने निवेदन किया : "और मेरी संतान में भी।" उसने कहा : "ज़ालिम मेरे इस वादे के अन्तर्गत नहीं आ सकते।"

125. और याद करो जब हमने इस घर (काबा) को लोगों के लिए केन्द्र और शान्तिस्थल बनाया—और: "इबराहीम के स्थल में से किसी जगह को नमाज़ की जगह बना लो!"—और इबराहीम और इसमाईल को ज़िम्मेदार बनाया। "तुम मेरे इस घर को तवाफ़ करनेवालों और एतिकाफ़ करनेवालों के लिए और रुकू और सजदा करनेवालों के लिए पाक-साफ़ रखो।"

126. और याद करो जब इबराहीम ने कहा : "ऐ मेरे रब ! इसे शान्तिमय

الْبَقَرَةِ

الْبَقَرَةِ

أَتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلْكَ وَتِهِ ۚ أُولَٰئِكَ  
يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ ۖ فَأُولَٰئِكَ هُمُ  
الْخَاسِرُونَ ۚ يَذَرُونِ إِسْرَآءِيلَ أَذْكَرُوا بِنِعْمَتِي  
الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ ۖ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۚ  
وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا  
يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَلَا هُمْ  
يُنصَرُونَ ۚ وَلَٰذِ ابْتَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ رَبُّهُ بِكَلِمَاتٍ فَأَتَمَّهُنَّ  
قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا ۚ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۚ  
قَالَ لَا يَتَّخِذُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ ۚ وَلَٰذِ جَعَلْنَا  
الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا ۚ وَاتَّخِذُوا مِن  
مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ۖ وَعَهِدْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَ  
إِسْمَاعِيلَ أَن طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ  
وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ۚ وَلَٰذِ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ

مَزْلُومًا



भू-भाग बना दे और इसके उन निवासियों को फलों की रोज़ी दे जो उनमें से अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाएँ।" कहा : "और जो इनकार करेगा थोड़ा फ़ायदा तो उसे भी दूँगा, फिर उसे घसीटकर आग की यातना की ओर पहुँचा दूँगा और वह बहुत-ही बुरा ठिकाना है !"

127. और याद करो जब इबराहीम और इसमाईल इस घर की बुनियादें उठा रहे थे, (तो उन्होंने प्रार्थना की) : "ऐ हमारे रब ! हमारी ओर से इसे स्वीकार कर ले, निस्संदेह तू सुनता-जानता है।

128. ऐ हमारे रब ! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना और हमारी संतान में से अपना एक आज्ञाकारी समुदाय बना; और हमें हमारे इबादत के तरीके बता और हमारी तौबा क़बूल कर। निस्संदेह तू तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

129. ऐ हमारे रब ! उनमें उन्हीं में से एक ऐसा रसूल उठा जो उन्हें तेरी आयतें सुनाए और उनको किताब और तत्त्वदर्शिता की शिक्षा दे और उन (की आत्मा) को विकसित करे। निस्संदेह तू प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।"

130. कौन है जो इबराहीम के पंथ से मुँह मोड़े सिवाय उसके जिसने स्वयं को पतित कर लिया? और उसे तो हमने दुनिया में चुन लिया था और निस्संदेह आखिरत में उसकी गणना योग्य लोगों में होगी;

131. क्योंकि जब उससे उसके रब ने कहा : "मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो जा।" उसने कहा : "मैं सारे संसार के रब का मुस्लिम हो गया।"

هَذَا بَلَدًا آمِنًا وَارْزُقْ أَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرَاتِ مَنْ  
آمَنَ مِنْهُمْ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ  
فَأَمْتَعُهُ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُ إِلَىٰ عَذَابِ النَّارِ وَ  
يُتَسَّسُ الْمَصِيرُ ۝ قَدْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ  
مِنَ الْمَبَادِئِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ  
أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ  
لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا  
مَنَاسِكَنَا وَشَئْءَ عِلْمِنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝  
رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ  
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ  
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَمَنْ يَرْغَبْ عَنْ مِلَّةِ إِبْرَاهِيمَ  
إِلَّا مِنْ سَفَاهَةٍ تَفْسَهُ وَلَقَدْ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا  
وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَكَانَ الصَّالِحِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُ

مِثْلُ



132. और इसी की वसीयत इबराहीम ने अपने बेटों को की और याकूब ने भी (अपनी संतान को की) कि : “ऐ मेरे बेटो ! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन (धर्म) चुना है, तो इस्लाम (ईश-आज्ञापालन) के अतिरिक्त किसी और दशा में तुम्हारी मृत्यु न हो ।”<sup>1</sup>

133. (क्या तुम इबराहीम के वसीयत करते समय मौजूद थे ?) या तुम मौजूद थे जब याकूब की मृत्यु का समय आया ? जब उसने अपने बेटों से कहा : “तुम मेरे पश्चात् किसकी इबादत करोगे ?” उन्होंने कहा : “हम आपके

الرَّبِّهِ اسْلِمَ ۖ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَوَصَّىٰ بِهَا اِبْرَاهِيمَ يَزِيَّةً وَيَعْقُوبَ ۚ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللَّهَ اخْطَفَ لَكُمْ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝ اِذْ قَالَ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ ۖ اِذْ قَالَ لِيَزِيَّةً مَا تَعْبُدُونَ مِنْ بَعْدِي ۖ قَالُوا نَعْبُدُ إِلَهَكَ ۖ قَالَهُ اَبَايُكُم اِبْرَاهِيمَ ۖ لَسْتُ بِعَابِدٍ لَهُ ۚ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلكُمْ مَا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ عَنْهَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَقَالُوا كُونُوا هُودًا اَوْ نَصَارَةً تَهْتَدُوا ۚ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ قُولُوا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَا اُنْزِلَ اِلَىٰ اِبْرَاهِيمَ ۖ لَسْتُ بِعَابِدٍ لَهُ ۚ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝ وَالْاَسْبَاطُ وَمَا اُوْتِيَ مُوسٰى وَعِيسٰى وَمَا اُوْتِيَ

इष्ट-पूज्य और आपके पूर्वज इबराहीम और इसमाईल और इसहाक के इष्ट-पूज्य की बन्दगी करेंगे— जो अकेला इष्ट-पूज्य है, और हम उसी के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं ।”

134. वह एक गिरोह था जो गुज़र चुका, जो कुछ उसने कमाया वह उसका है, और जो कुछ तुमने कमाया वह तुम्हारा है । और जो कुछ वे करते रहे उसके विषय में तुमसे कोई पूछताछ न की जाएगी ।

135. वे कहते हैं : “यहूदी या ईसाई हो जाओ तो मार्ग पा लोगे ।” कहो : “नहीं, बल्कि इबराहीम का पंथ अपनाओ जो एक (अल्लाह) का हो गया था, और वह बहुदेववादियों में से न था ।”

136. कहो : “हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमारी ओर उतरी और जो इबराहीम और इसमाईल और इसहाक और याकूब और उनकी

1. अर्थात् तुम जीवन के अंतिम क्षण तक मुस्लिम (आज्ञाकारी) ही रहना ।



संतान की ओर उतरी, और जो मूसा और ईसा को मिली, और जो सभी नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान की गई। हम उनमें से किसी के बीच अन्तर नहीं करते और हम केवल उसी के आज्ञाकारी हैं।”

137. फिर यदि वे उसी तरह ईमान लाएँ जिस तरह तुम ईमान लाए हो, तो उन्होंने मार्ग पा लिया। और यदि वे मुँह मोड़ें, तो फिर वही विरोध में पड़े हुए है। अतः तुम्हारी जगह स्वयं अल्लाह उनसे निबटने के लिए काफ़ी है; वह सब कुछ सुनता, जानता है।

138. (कहो) : “अल्लाह का रंग ग्रहण करो, उसके रंग से अच्छा और किसका रंग हो सकता है? और हम तो उसी की बन्दगी करते हैं।”

139. कहो : “क्या तुम अल्लाह के विषय में हमसे झगड़ते हो, हालाँकि वही हमारा रब भी है, और तुम्हारा रब भी? और हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। और हम तो बस निरे उसी के हैं।

140. या तुम कहते हो कि इबराहीम और इसमाईल और इसहाक और याकूब और उनकी संतान सब के सब यहूदी या ईसाई थे?” कहो : “तुम अधिक जानते हो या अल्लाह? और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा, जिसके पास अल्लाह की ओर से आई हुई कोई गवाही हो, और वह उसे छिपाए? और जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह उससे बेखबर नहीं है।”

141. वह एक गिरोह था जो गुज़र चुका, जो कुछ उसने कमाया वह उसके लिए है और जो कुछ तुमने कमाया वह तुम्हारे लिए है। और तुमसे उसके विषय में न पूछा जाएगा, जो कुछ वे करते रहे हैं।

الْبَقَرَةُ

الْبَقَرَةُ

النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا تُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ  
وَنُحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝ فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهِ  
فَقَدْ اهْتَدَوْا وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ ۝  
فَسَيَكْفِيكَهُمْ اللَّهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ صِبْغَةَ  
اللَّهِ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۚ وَنُحْنُ لَهُ  
عَبِيدُونَ ۝ قُلْ أَتَحَاجُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَ  
رَبُّكُمْ ۚ وَلَنَّا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۚ وَنُحْنُ لَهُ  
مُخْلِصُونَ ۝ أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ  
وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا يَهُودًا أَوْ  
نَصْرَى ۚ قُلْ إِنَّمَا أَعْلَمُ أَمْرَ اللَّهِ ۚ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ  
كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا  
تَعْمَلُونَ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَدْ خَلَتْ لَكُمْ  
مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْلَ الْبَيْتِ وَلَا



142. मूर्ख लोग अब कहेंगे : “उन्हें उनके उस क़िबले (उपासना-दिशा) से, जिसपर वे थे, किस चीज़ ने फेर दिया ?” कहो : “पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं, वह जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखाता है।”

143. और इसी प्रकार हमने तुम्हें बीच का एक उत्तम समुदाय बनाया है, ताकि तुम सारे मनुष्यों पर गवाह हो, और रसूल तुमपर गवाह हो। और जिस (क़िबले) पर तुम रहे हो उसे तो हमने केवल इसलिए क़िबला बनाया था कि जो लोग पीठ-पीछे फिर जानेवाले हैं, उनसे हम उनको अलग जान लें जो रसूल का अनुसरण करते हैं। और यह बात बहुत भारी (अप्रिय) है, किन्तु उन लोगों के लिए नहीं जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया है। और अल्लाह ऐसा नहीं कि वह तुम्हारे ईमान को अकारथ कर दे, अल्लाह तो इनसानों के लिए अत्यन्त करुणामय, दयावान है।

144. हम आकाश में तुम्हारे मुँह की गर्दिश देख रहे हैं, तो हम अवश्य ही तुम्हें उसी क़िबले का अधिकारी बना देंगे जिसे तुम पसन्द करते हो। अतः मस्जिदे हराम (काबा) की ओर अपना रुख करो। और जहाँ कहीं भी हो अपने मुँह उसी की ओर करो— निश्चय ही जिन लोगों को किताब मिली थी वे भली-भाँति जानते हैं कि वही उनके रब की ओर से हक़ है, इसके बावजूद जो कुछ वे कर रहे हैं अल्लाह उससे बेखबर नहीं है।

النَّاسِ

النَّاسِ

سَيُخَلِّفُ اللَّهُ النَّاسَ فِي مَا وَلَّيْتُمْ عَنْ قِبَلِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا. قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ. يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا. وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَى عَقْبَيْهِ. وَمَا كَانَ لَكُمْ كِبَرَةٌ إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ. وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّكُمْ إِنَّمَا كُنْتُمْ لَرُؤُوفٍ رَحِيمِينَ ۝ قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ. فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا. فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ. وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ. وَإِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ

مَدَن



145. यदि तुम उन लोगों के पास, जिन्हें किताब दी गई थी, कोई भी निशानी ले आओ, फिर भी वे तुम्हारे क़िबले का अनुसरण नहीं करेंगे और तुम भी उनके क़िबले का अनुसरण करनेवाले नहीं हो। और वे स्वयं परस्पर एक-दूसरे के क़िबले का अनुसरण करनेवाले नहीं हैं। और यदि तुमने उस ज्ञान के पश्चात्, जो तुम्हारे पास आ चुका है, उनकी इच्छाओं का अनुसरण किया, तो निश्चय ही तुम्हारी गणना ज़ालिमों में होगी।

146. जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उसे पहचानते हैं, जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं और उनमें से कुछ सत्य को जान-बूझकर छिपा रहे हैं।

147. सत्य तुम्हारे रब की ओर से है। अतः तुम सन्देह करनेवालों में से कदापि न होना।

148. प्रत्येक की एक ही दिशा है, वह उसी की ओर मुख किए हुए है, तो तुम भलाइयों में अग्रसरता दिखाओ। जहाँ कहीं भी तुम होगे अल्लाह तुम सबको एकत्र करेगा। निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

149. और जहाँ से भी तुम निकलो, 'मस्जिदे हराम' (काबा) की ओर अपना मुँह फेर लिया करो। निस्संदेह यही तुम्हारे रब की ओर से हक़ है। जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे बेखबर नहीं है।

150. जहाँ से भी तुम निकलो, 'मस्जिदे हराम' की ओर अपना मुँह फेर लिया करो, और जहाँ कहीं भी तुम हो उसी की ओर मुँह कर लिया करो,

رَبِّهِمْ. وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝ وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَّا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ، وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ، وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ، وَلَئِنْ أَتَيْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّكَ إِذَا لَئِنَ الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ اتَّيَهُمُ الْكِتَابُ يُعْرِفُونَ كَمَا يُعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ. وَلَئِنْ قَرَيْتَهُمْ قَرِينَهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَلِكُلِّ وُجْهَةٍ هُودٌ هُوَ صَوِّبُهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۝ آيِنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمْ اللَّهُ جَمِيعًا ۝ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۝ وَإِنَّهُ لِلْحَقِّ مِنْ رَبِّكَ ۝ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ



ताकि लोगों के पास तुम्हारे खिलाफ़ कोई हुज्जत बाक़ी न रहे— सिवाय उन लोगों के जो उनमें ज़ालिम हैं, तुम उनसे न डरो, मुझसे ही डरो—और ताकि मैं तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दूँ और ताकि तुम सीधी राह चलो ।

151. जैसाकि हमने तुम्हारे बीच एक रसूल तुम्हीं में से भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता है, तुम्हें निखारता है, और तुम्हें किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) की शिक्षा देता है और तुम्हें वह कुछ सिखाता है, जो तुम जानते न थे ।

152. अतः तुम मुझे याद रखो, मैं भी तुम्हें याद रखूँगा । और मेरा आभार स्वीकार करते रहना, मेरे प्रति अकृतज्ञता न दिखलाना ।

153. ऐ ईमान लानेवालो ! धैर्य और नमाज़ से मदद प्राप्त करो । निस्संदेह अल्लाह उन लोगों के साथ है जो धैर्य और दृढ़ता से काम लेते हैं ।

154. और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे जाएँ उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वे जीवित हैं, परन्तु तुम्हें एहसास नहीं होता ।

155. और हम अवश्य ही कुछ भय से, और कुछ भूख से, और कुछ जान-माल और पैदावार की कमी से तुम्हारी परीक्षा लेंगे । और धैर्य से काम लेनेवालों को शुभ-सूचना दे दो ।

156. जो लोग उस समय, जबकि उनपर कोई मुसीबत आती है, कहते

تَكْفُرُونَ

تَكْفُرُونَ

قَوْلٍ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ. وَحَيْثُ مَا  
كُنْتُمْ قُولُوا وَجُوهَكُمْ شَطْرَهُ. إِنَّكَ لَيَكُونُ لِلنَّاسِ  
عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ذَٰلِكَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ. فَلَا  
تَخْسَوْهُمْ وَخَشَوْنِي ۚ وَلَا تَمْنُنْ عَلَيَّكُمْ وَلَعَلَّكُمْ  
تَهْتَدُونَ ۚ كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنكُمْ يَشْلُوكُ  
عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْحِكْمَ ۚ وَ  
الْحِكْمَةُ وَتُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۚ  
فَآذِكُونِي أَذْكَرُكُمْ وَأَشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ۚ  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ  
اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۚ وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ  
اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَكِن لَّا تَشْعُرُونَ ۚ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ  
بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَ  
الْأَنْفُسِ وَالْأَمْوَالِ ۚ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّابِرِينَ ۚ الَّذِينَ إِذَا

تَكْفُرُونَ

مَنْ



हैं : “निस्संदेह हम अल्लाह ही के हैं और हम उसी की ओर लौटनेवाले हैं।”

157. यही लोग हैं जिनपर उनके रब की विशेष कृपाएँ हैं और दयालुता भी; और यही लोग हैं जो सीधे मार्ग पर हैं।

158. निस्संदेह सफ़ा और मरवा अल्लाह की विशेष निशानियों में से हैं; अतः जो इस घर (काबा) का हज या उमरा करे उसके लिए इसमें कोई दोष नहीं कि वह इन दोनों (पहाड़ियों) के बीच फेरा लगाए। और जो कोई स्वेच्छा और रुचि से कोई भलाई का कार्य करे तो अल्लाह भी गुणग्राहक, सर्वज्ञ है।

159. जो लोग हमारी उतारी हुई खुली निशानियों और मार्गदर्शन को छिपाते हैं, इसके बाद कि हम उन्हें लोगों के लिए किताब में स्पष्ट कर चुके हैं; वही हैं जिन्हें अल्लाह धिक्कारता है—और सभी धिक्कारनेवाले भी उन्हें धिक्कारते हैं।

160. सिवाय उनके जिन्होंने तौबा कर ली और सुधार कर लिया, और साफ़-साफ़ बयान कर दिया, तो उनकी तौबा मैं क़बूल करूँगा; मैं बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान हूँ।

161. जिन लोगों ने कुफ़्र किया और काफ़िर (इनकार करनेवाले) ही रहकर मरे, वही हैं जिनपर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और सारे मनुष्यों की, सबकी फिटकार है।

162. इसी दशा में वे सदैव रहेंगे, न उनकी यातना हल्की की जाएगी और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी।

الْبَقَرَةُ

تَبَارَكَ

أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ ۖ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ  
 رَاجِعُونَ ۚ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَ  
 رَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْتَخِرُونَ ۝ إِنَّ الصَّفَا وَ  
 الْمَرْوَةَ مِنَ شَعَائِرِ اللَّهِ ۚ فَتَمَنَّىٰ بَيْنَ يَدَيْهِمَا  
 فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّقَهُمَا ۖ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا  
 فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا  
 أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ  
 لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۚ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ  
 الْمَلَائِكَةُ ۚ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُّوا  
 فَأُولَٰئِكَ أَثُوبٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝  
 إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارًا ۖ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ  
 لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۖ خُلِدُوا فِيهَا  
 فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۝

مَنْزِلُهُ



163. तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला पूज्य-प्रभु है, उस कृपाशील और दयावान् के अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं।

164. निस्संदेह आकाशों और धरती की संरचना में, और रात और दिन की अदला-बदली में, और उन नौकाओं में जो लोगों की लाभप्रद चीजें लेकर समुद्र (और नदी) में चलती हैं, और उस पानी में जिसे अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर जिसके द्वारा धरती को उसके निर्जीव हो जाने के पश्चात जीवित किया और उसमें हर एक (प्रकार के) जीवधारी को फैलाया और हवाओं को गर्दिश देने में और उन बादलों में जो आकाश और धरती के बीच (काम पर) नियुक्त होते हैं, उन लोगों के लिए कितनी ही निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लें।

165. कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह से हटकर दूसरों को उसके समकक्ष ठहराते हैं, उनसे ऐसा प्रेम करते हैं जैसा अल्लाह से प्रेम करना चाहिए। और कुछ ईमानवाले हैं उन्हें सबसे बढ़कर अल्लाह से प्रेम होता है। और ये अत्याचारी (बहुदेववादी) जबकि यातना देखते हैं, यदि इस तथ्य को जान लेते कि शक्ति सारी की सारी अल्लाह ही को प्राप्त है और यह कि अल्लाह अत्यन्त कठोर यातना देनेवाला है (तो इनकी नीति कुछ और होती)।

166. जब वे लोग जिनके पीछे वे चलते थे, यातना को देखकर अपने अनुयायियों से विरक्त हो जाएँगे और उनके सम्बन्ध और सम्पर्क टूट जाएँगे।

167. वे लोग जो उनके पीछे चले थे कहेंगे: “काश ! हमें एक बार (फिर संसार

كَتَبْنَا

نَسْفَتْنَا

وَالْهَكْمُ إِلَهُ وَاحِدٌ، لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ  
الْزَّجِيمُ ۚ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَ  
اِخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي  
فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ  
السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَأَخْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا  
وَهَبَ فِيهَا مِنْ كُلِّ ذَاتٍ حَيَّةٍ وَتَضْرِبُ الرِّيحُ وَ  
التَّحَابُ الْمُسْتَخْرِبِينَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا يَبْ  
لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِنْ  
دُونِ اللَّهِ أُنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ  
أُمِنُوا أَشَدَّ حُبًّا لِلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرُونَ  
الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا، وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ  
الْعَذَابِ ۝ إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا  
وَرَأَوْا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ۝ وَقَالَ

مَلَكٌ



में) लौटना होता तो जिस तरह आज ये हमसे विरक्त हो रहे हैं, हम भी इनसे विरक्त हो जाते।" इस प्रकार अल्लाह उनके लिए संताप बनाकर उन्हें उनके कर्म दिखाएगा और वे आग (जहन्नम) से निकल न सकेंगे।

168. ऐ लोगो ! धरती में जो हलाल और अच्छी-सुथरी चीज़ें हैं उन्हें खाओ और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो। निस्संदेह वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

169. वह तो बस तुम्हें बुराई और अश्लीलता पर उकसाता है और इसपर कि तुम अल्लाह पर थोपकर वे बातें कहो जो तुम नहीं जानते।

170. और जब उनसे कहा जाता है : "अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसका अनुसरण करो;" तो कहते हैं : "नहीं, बल्कि हम तो उसका अनुसरण करेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है।" क्या उस दशा में भी जबकि उनके बाप-दादा कुछ भी बुद्धि से काम न लेते रहे हों और न सीधे मार्ग पर रहे हों ?

171. इन इनकार करनेवालों की मिसाल ऐसी है जैसे कोई ऐसी चीज़ों को पुकारे जो पुकार और आवाज़ के सिवा कुछ न सुनती और समझती हो। ये बहरे हैं, गूंगे हैं, अन्ध हैं; इसलिए ये कुछ भी नहीं समझ सकते।

172. ऐ ईमान लानेवालो ! जो अच्छी-सुथरी चीज़ें हमने तुम्हें प्रदान की हैं उनमें से खाओ और अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाओ, यदि तुम उसी की बन्दगी करते हो।

الَّذِينَ اسْتَجْعَلُوا اَنْ لَّنَا كُزَّةٌ فَتَنْتَبِزَ مِنْهُمْ كَمَا تَنْبَرُ وَامَنَّا. كَذَلِكَ يُرِيهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ. وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ. يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا. وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ. إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ. إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالشُّوْءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ. وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اسْتَجْعُوا مَا أَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا. أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ. وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَنْمُو إِلَّا دَعَاءٌ وَيَدَاؤٌ. ضُمُّ بَكُمْ عَنْهُمْ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ. يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلّٰهِ



173. उसने तो तुमपर केवल मुर्दार और खून और सूअर का माँस और जिसपर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो, हराम ठहराया है। इसपर भी जो बहुत मजबूर और विवश हो जाए, वह अवज्ञा करनेवाला न हो और न सीमा से आगे बढ़नेवाला हो तो उसपर कोई गुनाह नहीं। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

174. जो लोग उस चीज़ को छिपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में से उतारी है और उसके बदले थोड़े मूल्य का सौदा करते हैं, वे तो बस आग खाकर अपने पेट भर रहे हैं; और क्रियामत के दिन अल्लाह न तो उनसे बात करेगा और न उन्हें निखारेगा; और उनके लिए दुखद यातना है।

175. यही लोग हैं जिन्होंने मार्गदर्शन के बदले पथभ्रष्टता मोल ली; और क्षमा के बदले यातना के ग्राहक बने। तो आग को सहन करने के लिए उनका उत्साह कितना बढ़ा हुआ है !

176. वह (यातना) इसलिए होगी कि अल्लाह ने तो हक के साथ किताब उतारी, किन्तु जिन लोगों ने किताब के मामले में विभेद किया वे हठ और विरोध में बहुत दूर निकल गए।

177. नेकी केवल यह नहीं है कि तुम अपने मुँह पूरब और पश्चिम की ओर कर लो, बल्कि नेकी तो उसकी नेकी है जो अल्लाह, अन्तिम दिन, फ़रिश्तों, किताब और नबियों पर ईमान लाया और माल, उसके प्रति प्रेम के बावजूद, नातेदारों, अनाथों, मुहताजों, मुसाफ़िरों और माँगनेवालों को दिया।

التوبة

التوبة

يَلْبِسُ إِن كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ - إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ  
الْمَيْتَةَ وَالْدَّمَ وَلَحْمَ الْخَيْزِرِ وَمَا فِئَ بِهِ يَغْزِي  
الشَّوْ كَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاءٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ  
عَلَيْهِ - إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ - إِنَّ الَّذِينَ  
يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ وَيُسْتَرُونَ بِهِ  
ثَمَنًا قَلِيلًا - أُولَئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا  
النَّارَ وَلَا يَكَلِمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ  
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ - أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ  
بِالْهُدَى وَالْعَذَابُ بِالْمَغْفِرَةِ - فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى  
النَّارِ - ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ تَنَزَّلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ - وَإِنَّ  
الَّذِينَ اشْتَرَوْا فِي الْكِتَابِ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ  
لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُولُوا وَجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ  
وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَ

مِيزَانٍ



और गर्दन छुड़ाने में भी, और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी और अपने वचन को ऐसे लोग पूरा करनेवाले हैं जब वचन दें; और तंगी और विशेष रूप से शारीरिक कष्टों में और लड़ाई के समय में जमनेवाले हैं, ऐसे ही लोग हैं जो सच्चे सिद्ध हुए और वही लोग डर रखनेवाले हैं।

178. ऐ ईमान लानेवालो ! मारे जानेवालों के विषय में हत्यादण्ड (क्रिसास) तुमपर अनिवार्य किया गया, स्वतंत्र-स्वतंत्र बराबर हैं और गुलाम-गुलाम बराबर हैं और औरत-औरत बराबर हैं। फिर यदि

किसी को उसके भाई की ओर से कुछ छूट मिल जाए तो सामान्य रीति का पालन करना चाहिए; और भले तरीक़े से उसे अदा करना चाहिए। यह तुम्हारे रब की ओर से एक छूट और दयालुता है। फिर इसके बाद भी जो ज़्यादा तो करे तो उसके लिए दुखद यातना है।

179. ऐ बुद्धि और समझवालो ! तुम्हारे लिए हत्यादण्ड (क्रिसास) में जीवन है, ताकि तुम बचो।

180. जब तुममें से किसी की मृत्यु का समय आ जाए, यदि वह कुछ माल छोड़ रहा हो, तो माँ-बाप और नातेदारों को भलाई की वसीयत करना तुमपर

الْبَقَرَةُ

سُورَةُ

الْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ، وَإِنَّا الْمَالُ عَلَى  
حُتْمِهِ ذُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ  
السَّبِيلِ، وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّزْقِ، وَأَقَامَ الصَّلَاةَ  
وَآتَى الزَّكَاةَ، وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا،  
وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ.  
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقْنَا، وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿١٦٧﴾  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي  
الْقَتْلِ، الْحَرْبِ بِالْحَرْبِ، وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ، وَالْأَنْثَىٰ  
بِالْأُنثَىٰ، فَمَنْ عَفَىٰ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتَّبِعْهُ  
بِالْمَعْرُوفِ، وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ، ذَلِكَ تَخْفِيفٌ  
مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ، فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ  
فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ، وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوةٌ  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٦٨﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمُ إِذَا

مِثْلُ



अनिवार्य किया गया। यह हक्क है डर रखनेवालों पर।

181. तो जो कोई उसके सुनने के पश्चात् उसे बदल डाले तो उसका गुनाह उन्हीं लोगों पर होगा जो इसे बदलेंगे। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुननेवाला और जाननेवाला है

82. फिर जिस किसी वसीयत करनेवाले को न्याय से किसी प्रकार के हटने या हक्क मारने की आशंका हो, इस कारण उनके (वारिसों के) बीच सुधार की व्यवस्था कर दे, तो उसपर कोई गुनाह नहीं। निस्संदेह अल्लाह क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

183. ऐ ईमान लानेवालो ! तुमपर रोज़े अनिवार्य किए गए, जिस प्रकार तुमसे पहले के लोगों पर किए गए थे, ताकि तुम डर रखनेवाले बन जाओ।

184. गिनती के कुछ दिनों के लिए— इसपर भी तुममें कोई बीमार हो, या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में संख्या पूरी कर ले। और जिन (बीमार और मुसाफ़िरों) को इसकी (मुहताजों को खिलाने की) सामर्थ्य हो, उनके ज़िम्मे बदले में एक मुहताज का खाना है। फिर जो अपनी खुशी से कुछ और नेकी करे तो यह उसी के लिए अच्छा है और यह कि तुम रोज़ा रखो तो तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है, यदि तुम जानो।

185. रमज़ान का महीना जिसमें कुरआन उतारा गया लोगों के मार्गदर्शन के लिए, और मार्गदर्शन और सत्य-असत्य के अन्तर के प्रमाणों के साथ। अतः तुममें जो कोई इस महीने में मौजूद हो उसे चाहिए कि उसके रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों से गिनती पूरी कर ले।

النَّفْسُ

النَّفْسُ

حَضَرَ أَحَدَكُمْ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖ الْوَصِيَّةُ  
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ۚ حَقًّا عَلَى  
الْمُتَّقِينَ ۚ فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَأَنَّى  
إِسْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۚ  
فَمَنْ خَافَ مِنْ مُوَصِّينَ جَنَفًا أَوْ أَثْنًا فَأَصْلَحَ  
بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا  
كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۚ  
أَيَّامًا مَعْدُودَاتٍ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ  
عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ  
يُطِيقُونَ فَذِيَّةً طَعَامُ مِسْكِينٍ ۚ فَمَنْ تَطَوَّءَ خَيْرًا  
فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ ۚ وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ  
تَعْلَمُونَ ۚ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ

مِائَاتٌ



अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख्ती और कठिनाई नहीं चाहता, (वह तुम्हारे लिए आसानी पैदा कर रहा है) और चाहता है कि तुम संख्या पूरी कर लो और जो सीधा मार्ग तुम्हें दिखाया गया है, उसपर अल्लाह की बड़ाई प्रकट करो और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

186. और जब तुमसे मेरे बन्दे मेरे सम्बन्ध में पूछें, तो मैं तो निकट ही हूँ, पुकारनेवाले की पुकार का उत्तर देता हूँ जब वह मुझे पुकारता है, तो उन्हें चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझपर ईमान रखें, ताकि वे सीधा मार्ग पा लें।

187. तुम्हारे लिए रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना जायज़ (वैध) हुआ। वे तुम्हारे परिधान (लिबास) हैं और तुम उनका परिधान हो। अल्लाह को मालूम हो गया कि तुम लोग अपने-आपसे कपट कर रहे थे, तो उसने तुमपर कृपा की और तुम्हें क्षमा कर दिया। तो अब तुम उनसे मिलो-जुलो और अल्लाह ने जो कुछ तुम्हारे लिए लिख रखा है, उसे तलब करो। और खाओ और पियो यहाँ तककि तुम्हें उषाकाल की सफ़ेद धारी (रात की) काली धारी से स्पष्ट दिखाई दे जाए। फिर रात तक रोज़ा पूरा करो और जब तुम मस्जिदों में 'एतकाफ़' की हालत में हो, तो तुम उनसे न मिलो। ये अल्लाह की सीमाएँ हैं। अतः इनके निकट न जाना। इस प्रकार अल्लाह अपनी आयतें लोगों के लिए

الْبَقَرَةُ

سَبْعُونَ

الْقُرْآنَ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَ  
الْفُرْقَانِ، فَمَن شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ، وَمَن  
كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ،  
يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ، وَلِتُكْمِلُوا  
الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ  
تَشْكُرُونَ ۖ وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي قُلَ إِنِّي  
قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا  
لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ۚ أَجَلٌ لَّكُمْ  
لَيْلَةُ الضِّيَامِ الرِّقْتُ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ مِّنْ لِّبَاسٍ  
لَّكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ  
كُنْتُمْ تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ  
قَالَتِ الْيَهُودُ بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَأَتَوْهُم بِمَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَكُلُوا  
وَأَشْرَبُوا حَتَّىٰ يَبَيِّنَ لَكُمْ الْحَبِيطُ الْأَبْيَضُ مِنَ

مَذَل



खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि वे डर रखनेवाले बनें।

188. और आपस में तुम एक-दूसरे के माल को अवैध रूप से न खाओ, और न उन्हें हाकिमों के आगे ले जाओ कि (हक मारकर) लोगों के कुछ माल जानते-बूझते हड़प सको।

189. वे तुमसे (प्रतिष्ठित) महीनों के विषय में पूछते हैं। कहो : “वे तो लोगों के लिए और हज के लिए नियत हैं। और यह कोई खूबी और नेकी नहीं है कि तुम घरों में उनके पीछे से आओ, बल्कि नेकी तो उसकी है जो

(अल्लाह का) डर रखे। तुम घरों में उनके दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

190. और अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो तुमसे लड़ें, किन्तु ज्यादाती न करो। निस्संदेह अल्लाह ज्यादाती करनेवालों को पसन्द नहीं करता।

191. और जहाँ कहीं उनपर क़ाबू पाओ, क़त्ल करो और उन्हें निकालो जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है, इसलिए कि फ़ितना (उत्पीड़न) क़त्ल से भी बढ़कर गम्भीर है। लेकिन मस्जिदे हराम (काबा) के निकट तुम उनसे न लड़ो जबतक कि वे स्वयं तुमसे वहाँ युद्ध न करें। अतः यदि वे तुमसे युद्ध करें तो उन्हें क़त्ल करो—ऐसे इनकारियों का ऐसा ही बदला है।

الْغَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ، ثُمَّ آتُوا الضِّيَامَ إِلَى  
الْيَيْلِ، وَلَا تَبَايَسُوا زُهْرَيْنِ، وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ فِي  
الْمَسْجِدِ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا، كَذَلِكَ  
يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ وَلَا  
تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتَذَلُّوا بِهَا إِلَى  
الْحُكَّامِ لِمَنْ تَأْكُلُوا فَرِيقًا مِنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ  
وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهْلِةِ، قُلْ هِيَ  
مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ، وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا  
الْبَيْوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مِمَّنْ أَتَى، وَأَتُوا  
الْبَيْوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا وَأَتَقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝  
وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا  
تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَأَقْتُلُوهُمْ  
حَيْثُ لَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ

مَثَل



192. फिर यदि वे बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह भी क्षमा करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

193. तुम उनसे लड़ो यहाँ तककि फ़ितना शेष न रह जाए और दीन (धर्म) अल्लाह के लिए हो जाए। अतः यदि वे बाज़ आ जाएँ तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी के विरुद्ध कोई क़दम उठाना ठीक नहीं।

194. प्रतिष्ठित महीना बराबर है प्रतिष्ठित महीने के, और समस्त प्रतिष्ठाओं का भी बराबरी का बदला है। अतः जो तुमपर ज़्यादती करे, तो जैसी ज़्यादती वह

तुमपर करे, तुम भी उसी प्रकार उससे ज़्यादती का बदला लो। और अल्लाह का डर रखो और जान लो कि अल्लाह डर रखनेवालों के साथ है।

195. और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो और अपने ही हाथों से अपने-आपको तबाही में न डालो, और अच्छे से अच्छा तरीक़ा अपनाओ। निस्संदेह अल्लाह अच्छे से अच्छा काम करनेवालों को पसन्द करता है।

196. और हज़ और उमरा जो कि अल्लाह के लिए हैं, पूरे करो। फिर यदि तुम घिर जाओ, तो जो कुरबानी उपलब्ध हो पेश कर दो। और अपने सिर न मूड़ो जब तककि कुरबानी अपने ठिकाने न पहुँच जाए, किन्तु जो व्यक्ति तुममें बीमार हो या उसके सिर में कोई तकलीफ़ हो, तो रोज़े या सदक़ा या कुरबानी

وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ، وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ  
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّى يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ، فَإِنْ قَاتَلُوكُمْ  
فَاغْتُلُوهُمْ، كَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ۖ فَإِنْ انْتَهَوْا  
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۖ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ  
فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ، فَإِنْ انْتَهَوْا فَلَا  
عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ۚ الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ  
الْحَرَامِ وَالْحُرُمَتُ قِصَاصٌ، فَمَنْ اغْتَدَى عَلَيْكُمْ  
فَاغْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اغْتَدَى عَلَيْكُمْ ۖ  
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۖ  
وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى  
التَّهْلُكَةِ ۖ وَأَحْسِنُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۖ  
وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ، فَإِنْ أُخْضِرْتُمْ فَمَا  
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّى

مَنْ



के रूप में फ़िदया देना होगा। फिर जब तुमपर से खतरा टल जाए, तो जो व्यक्ति हज तक उमरा से लाभान्वित हो, तो जो कुरबानी उपलब्ध हो पेश करे, और जिसको उपलब्ध न हो तो हज के दिनों में तीन दिन के रोज़े रखे और सात दिन के रोज़े जब तुम वापस हो, ये पूरे दस हुए। यह उसके लिए है जिसके बाल-बच्चे मस्जिदे हराम के निकट न रहते हों। अल्लाह का डर रखो और भली-भाँति जान लो कि अल्लाह कठोर दण्ड देनेवाला है।

197. हज के महीने जाने-

पहचाने और निश्चित हैं, तो जो इनमें हज करने का निश्चय करे, तो हज में न तो काम-वासना की बातें हो सकती हैं और न अवज्ञा और न लड़ाई-झगड़े की कोई बात। और जो भलाई के काम भी तुम करोगे अल्लाह उसे जानता होगा। और (ईश-भय का) पाथेय ले लो, क्योंकि सबसे उत्तम पाथेय ईश-भय है। और ऐ बुद्धि और समझवालो! मेरा डर रखो।

198. इसमें तुम्हारे लिए कोई गुनाह नहीं कि अपने रब का अनुग्रह तलब करो। फिर जब तुम अरफ़ात से चलो तो 'मशअरे हराम' (मुज्रदल्फ़ा) के निकट ठहरकर अल्लाह को याद करो, और उसे याद करो जैसाकि उसने तुम्हें बताया है, और इससे पहले तुम पथभ्रष्ट थे।

سُورَةُ

سُورَةُ

يَبْلُغُ الْهَدْيُ مَجْلَهُ، فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا  
أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ، فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ  
صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ، فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ  
إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ، فَمَنْ لَمْ  
يَجِدْ قَصِيئًا ثَلَاثًا فَإِنِ فِي الْحَجِّ وَسْعَةٌ إِذَا  
رَجَعْتُمْ، تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ، ذَلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ  
أَهْلَهُ حَاضِرِينَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ، وَاتَّقُوا اللَّهَ  
وَاَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ، الْعَجَّةُ أَشْهُرُ  
مَعْلُومَتٍ، فَمَنْ قَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَكْعَتَ  
وَلَا فُسُوقَ وَلَا حُدَالٍ فِي الْحَجِّ، وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ  
خَلْفٍ يَعْلَمُهُ اللَّهُ، وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ  
التَّقْوَى، وَاتَّقُوا يَٰأَيُّهَا الْأَبَآءُ لَيْسَ عَلَيْكُمْ  
جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا ضَلَاً مِنْ رَبِّكُمْ، فَإِذَا أَقَضْتُمْ

سُورَةُ

بَآ

وَقَدْ تَعْلَمُ اللَّهُ مَا تَفْعَلُونَ



199. इसके पश्चात् जहाँ से और सब लोग चलें, वहीं से तुम भी चलो, और अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

200. फिर जब तुम अपनी हज सम्बन्धी रीतियों को पूरा कर चुको तो अल्लाह को याद करो जैसे अपने बाप-दादा को याद करते रहे हो, बल्कि उससे भी बढ़कर याद करो। फिर लोगों में कोई तो ऐसा है जो कहता है : "हमारे रब ! हमें दुनिया में दे दे।" ऐसी हालत में आखिरत में उसका कोई हिस्सा नहीं।

مَنْ عَرَفْتُمْ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ  
وَأَذْكُرُوا كَمَا هَدَيْتُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمَنِ  
الصَّالِحِينَ ۝ ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَقَاضَ  
النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝  
فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَنَاسِكَكُمْ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ  
أَبَاءَكُمْ أَوْ أَشْدَّ ذِكْرًا فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ  
رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ  
خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي  
الدُّنْيَا خَيْرَةً وَفِي الْآخِرَةِ خَيْرَةً وَقَدْ آتَيْنَا  
النَّاسَ ۝ أُولَئِكَ لَهُمْ نُصِيبُ مِمَّا كَسَبُوا  
وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ وَأَذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامِ  
مَعْدُودَاتٍ ۚ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ  
عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ الْإِثْمُ

مَنْ

201. और उनमें कोई ऐसा है जो कहता है : "हमारे रब ! हमें प्रदान कर दुनिया में भी अच्छी दशा और आखिरत में भी अच्छी दशा, और हमें आग (जहन्नम) की यातना से बचा ले।"

202. ऐसे ही लोग हैं कि उन्होंने जो कुछ कमाया है उसकी जिन्स का हिस्सा उनके लिए नियत है। और अल्लाह जल्द ही हिसाब चुकानेवाला है।

203. और अल्लाह की याद में गिनती के ये कुछ दिन व्यतीत करो। फिर जो कोई जल्दी करके दो ही दिन में कूच करे तो इसमें उसपर कोई गुनाह नहीं। और जो ठहरा रहे तो इसमें भी उसपर कोई गुनाह नहीं। यह उसके लिए है जो अल्लाह का डर रखे। और अल्लाह का डर रखो और जान रखो कि उसी के पास तुम इकट्ठा होगे।



204. लोगों में कोई तो ऐसा है कि इस सांसारिक जीवन के विषय में उसकी बात तुम्हें बहुत भाती है, उस (खोट) के बावजूद जो उसके दिल में होती है, वह अल्लाह को गवाह ठहराता है और झगड़े में वह बड़ा हठी है।

205. और जब लौटता है, तो धरती में इसलिए दौड़-धूप करता है कि इसमें बिगाड़ पैदा करे और खेती और नस्ल को तबाह करे, जबकि अल्लाह बिगाड़ को पसन्द नहीं करता।

206. और जब उससे कहा जाता है : "अल्लाह से डर", तो अहंकार उसे और गुनाह पर जमा देता है। अतः उसके लिए तो जहन्नम ही काफ़ी है, और वह बहुत-ही बुरी शय्या है !

207. और लोगों में वह भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता के संसाधन की चाह में अपनी जान खपा देता है। अल्लाह भी अपने ऐसे बन्दों के प्रति अत्यन्त करुणाशील है।

208. ऐ ईमान लानेवालो ! तुम सब इस्लाम में दाखिल हो जाओ और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो। वह तो तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है।

209. फिर यदि तुम उन स्पष्ट दलीलों के पश्चात् भी, जो तुम्हारे पास आ चुकी हैं, फिसल गए, तो भली-भाँति जान रखो कि अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

210. क्या वे (इसराईल की सन्तान) बस इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह स्वयं बादलों की छाया में उनके सामने आ जाए और फ़रिश्ते भी,

الْبَقَرَةُ

سَبْعُونَ

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝  
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ  
الدُّنْيَا وَيُفْهِدُ اللَّهَ عَلَى مَا فِي قَلْبِهِ ۖ وَهُوَ أَلَدُّ  
الْخِصَامِ ۝ وَإِذَا كُوِّنَ فِي الْأَرْضِ يُفْسِدُ  
فِيهَا وَيُهْلِكُ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ  
الْفُسَادَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ  
بِأَلْئَامِهِ فَتَسْبِّحُ لَهُمْ ۚ وَلَيْسَ إِلَٰهًا ۚ وَمِنَ  
النَّاسِ مَنْ يُشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۚ  
وَاللَّهُ رَؤُوفٌ بِالْعَاصِينَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْخُلُوا  
فِي السِّلَاحِ كَآفَّةً ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ  
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۚ فَإِنْ زَلَلْتُمْ مِنْ بَعْدِ مَا  
جَاءَتْكُمْ الْبَيِّنَاتُ فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ  
هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلُلٍ مِّنْ

مِزَلٍ



हालाँकि बात तय कर दी गई है? मामले तो अल्लाह ही की ओर लौटते हैं।

211. इसराईल की सन्तान से पूछो, हमने उन्हें कितनी खुली-खुली निशानियाँ प्रदान कीं। और जो अल्लाह की नेमत को इसके बाद कि वह उसे पहुँच चुकी हो बदल डाले, तो निस्संदेह अल्लाह भी कठोर दण्ड देनेवाला है।

212. इनकार करनेवाले सांसारिक जीवन पर रीझे हुए हैं और ईमानवालों का उपहास करते हैं, जबकि जो लोग अल्लाह का डर रखते हैं, वे क्रियामत के दिन उनसे ऊपर होंगे। अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है।

213. सारे मनुष्य एक ही समुदाय थे (उन्होंने विभेद किया), तो अल्लाह ने नबियों को भेजा, जो शुभ-सूचना देनेवाले और डरानेवाले थे; और उनके साथ हक़ पर आधारित किताब उतारी, ताकि लोगों में उन बातों का जिनमें वे विभेद कर रहे हैं, फ़ैसला कर दे। इसमें विभेद तो बस उन्हीं लोगों ने, जिन्हें वह मिली थी, परस्पर ज़्यादती करने के लिए इसके पश्चात् किया, जबकि खुली निशानियाँ उनके पास आ चुकी थीं। अतः ईमानवालों को अल्लाह ने अपनी अनुज्ञा से उस सत्य के विषय में मार्गदर्शन किया, जिसमें उन्होंने विभेद किया था। अल्लाह जिसे चाहता है, सीधे मार्ग पर चलाता है।

النَّبِيُّ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ سَلِّ بَنِي إِسْرَءِيلَ كَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ آيَةٍ بَيِّنَةٍ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيِّينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ سَوَّانَزَلَ مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيُخَيِّمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِآذَانِهِ

مَثَل



214. क्या तुमने यह समझ रखा है कि जन्नत में प्रवेश पा जाओगे, जबकि अभी तुमपर वह सब कुछ नहीं बीता है जो तुमसे पहले के लोगों पर बीत चुका? उनपर तंगियाँ और तकलीफें आई, और उन्हें हिला मारा गया यहाँ तक कि रसूल बोल उठे और उसके साथ के ईमानवाले भी कि अल्लाह की सहायता कब आएगी? जान लो! अल्लाह की सहायता निकट है।

215. वे तुमसे पूछते हैं : "कितना खर्च करें?" कहो : "(पहले यह समझ लो कि) जो माल भी तुमने खर्च किया है, वह तो माँ-बाप, नातेदारों और अनाथों, और मुहताजों और मुसाफ़िरो के लिए खर्च हुआ है। और जो भलाई भी तुम करो, निस्संदेह अल्लाह उसे भली-भाँति जान लेगा।

216. तुमपर युद्ध अनिवार्य किया गया और वह तुम्हें अप्रिय है, और बहुत सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो। और बहुत सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और जानता अल्लाह है, और तुम नहीं जानते।"

217. वे तुमसे आदरणीय महीने में युद्ध के विषय में पूछते हैं। कहो : "उसमें लड़ना बड़ी गंभीर बात है, परन्तु अल्लाह के मार्ग से रोकना, उसके साथ अविश्वास करना, मस्जिदे हराम (काबा) से रोकना और उसके लोगों को उससे निकालना, अल्लाह की दृष्टि में इससे भी अधिक गंभीर है और फ़ितना (उत्पीड़न), रक्तपात से भी बुरा है।" और उनका बस चले तो वे तो तुमसे बराबर लड़ते रहें, ताकि तुम्हें तुम्हारे दीन (धर्म) से फेर दें। और तुममें से जो

وَاللّٰهُ يَهْدِي مَنْ يَّشَاءُ ۚ اِلٰى صِرَاطٍ مُسْتَقِيْمٍ  
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُدْخَلُوْا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُم مَّثَلُ  
الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ۚ مَسْتَهْمُ الْبَاسِ ۚ وَ  
الضَّرَآءُ ۚ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ  
اٰمَنُوْا مَعَهُ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ۚ اَلَا اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ  
قَرِيْبٌ ۚ يَنْتَلُوْكَ مَا دَا يَنْفِقُوْنَ ۚ قُلْ نَا۟فِقُوْكُمْ  
مِّنْ حَيْثُ قَلِلُوْا الدِّيْنَ ۚ اِلَّا قَرِيْبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالسَّكِيْنَ  
وَابْنِ السَّبِيْلِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ حَيْثُ قُلْنَا اللّٰهُ  
بِهِ عَلِيْمٌ ۚ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهُ لَكُمْ ۚ  
وَعَسٰى اَنْ تُكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ  
عَسٰى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۚ وَاللّٰهُ  
يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۚ يَنْتَلُوْكَ عَنِ الشَّهْرِ  
الْحَرَامِ قِتَالٌ فِيْهِ ۚ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۚ وَصَدّٰ

مِّنْ



कोई अपने दीन से फिर जाए और अविश्वासी होकर मरे, तो ऐसे ही लोग हैं जिनके कर्म दुनिया और आखिरत में नष्ट हो गए, और वही आग (जहन्नम) में पड़नेवाले हैं, वे उसी में सदैव रहेंगे।

218. रहे वे लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने अल्लाह के मार्ग में घर-बार छोड़ा और जिहाद किया, वही अल्लाह की दयालुता की आशा रखते हैं। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

219-220. तुमसे शराब और जुए के विषय में पूछते हैं। कहो : "उन दोनों चीजों में बड़ा गुनाह है, यद्यपि लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, परन्तु उनका गुनाह उनके फ़ायदे से कहीं बढ़कर है।" और वे तुमसे पूछते हैं : "कितना खर्च करें?" कहो : "जो आवश्यकता से अधिक हो।" इस प्रकार अल्लाह दुनिया और आखिरत के विषय में तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि तुम सोच-विचार करो।

और वे तुमसे अनाथों के विषय में पूछते हैं। कहो : "उनके सुधार की जो रीति भी अपनाई जाए अच्छी है। और यदि तुम उन्हें अपने साथ सम्मिलित कर लो तो वे तुम्हारे भाई-बन्धु ही हैं। और अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवाले को बनाव पैदा करनेवाले से अलग पहचानता है। और यदि अल्लाह चाहता

الْبَقَرَةُ

سَبْعِينَ

عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَكَفَرَ بِهِ وَالْمَسْجِدَ الْحَرَامَ  
وَأَخْرَاهُ أَهْلَهُ مِنْهُ أَكْبَرَ عِنْدَ اللَّهِ وَالْفِتْنَةَ  
أَكْبَرَ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّى  
يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا وَمَنْ  
يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ قُتِلَ وَهُوَ كَافِرٌ  
فَأُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ  
وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ  
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجْهَهُدُوا  
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ وَاللَّهُ  
عَفُورٌ رَحِيمٌ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ  
فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ  
مِنْ نَّفْعِهِمَا وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ  
الْعَفْوُ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ

مَزَل



तो तुमको ज़हमत (कठिनाई) में डाल देता। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

221. और मुशरिक (बहुदेववादी) स्त्रियों से विवाह न करो जब तक कि वे ईमान न लाएँ। एक ईमानवाली बांदी (दासी), मुशरिक स्त्री से कहीं उत्तम है; चाहे वह तुम्हें कितनी ही अच्छी क्यों न लगे। और न (ईमानवाली स्त्रियों का) मुशरिक पुरुषों से विवाह करो, जबतक कि वे ईमान न लाएँ। एक ईमानवाला गुलाम आज़ाद मुशरिक से कहीं उत्तम है, चाहे वह तुम्हें कितना ही अच्छा क्यों न लगे।

ऐसे लोग आग (जहन्नम) की ओर बुलाते हैं और अल्लाह अपनी अनुज्ञा से जन्नत और क्षमा की ओर बुलाता है। और वह अपनी आयतें लोगों के सामने खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि वे चेतें।

222. और वे तुमसे मासिक-धर्म के विषय में पूछते हैं। कहो : “वह एक तकलीफ़ और गन्दगी की चीज़ है। अतः मासिक-धर्म के दिनों में स्त्रियों से अलग रहो और उनके पास न जाओ, जबतक कि वे पाक-साफ़ न हो जाएँ। फिर जब वे भली-भाँति पाक-साफ़ हो जाएँ, तो जिस प्रकार अल्लाह ने तुम्हें बताया है, उनके पास आओ। निस्संदेह अल्लाह बहुत तौबा करनेवालों को पसन्द करता है और वह उन्हें पसन्द करता है जो स्वच्छता को पसन्द करते हैं।

التَّائِبِينَ

التَّائِبِينَ

تَتَذَكَّرُونَ ۖ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَيَسْأَلُونَكَ  
عَنِ الْيَتَامَىٰ ۚ قُلْ إِصْلَاحٌ لَهُمْ خَيْرٌ ۚ وَإِنْ  
تَحَايَظْتَهُمْ فَمَا خَوَّافَكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ  
الْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَغْنَيْتَكُمْ إِنْ اللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ  
وَلَا تُنكِحُوا الْمُشْرِكَةَ حَتَّىٰ تُؤْمِنَ ۚ وَلَا مَهْرٌ مُّؤَمَّنَةٍ  
خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ ۚ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنكِحُوا  
الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا ۚ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ  
مُّشْرِكٍ ۚ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۚ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى التَّارِثِ  
وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ ۚ  
وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۚ  
وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ ۚ قُلْ هُوَ أَذًى ۚ فَاعِزُّوا  
النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ ۚ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ  
يَظْهَرْنَ ۚ فَإِذَا أَتَظْهَرْنَ فَأَتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ

مَنْ



223. तुम्हारी स्त्रियाँ तुम्हारी खेती हैं। अतः जिस प्रकार चाहो तुम अपनी खेती में आओ और अपने लिए आगे भेजो; और अल्लाह से डरते रहो; और भली-भाँति जान लो कि तुम्हें उससे मिलना है; और ईमान लानेवालों को शुभ-सूचना दे दो।

224. अपने नेक और धर्मपरायण होने और लोगों के मध्य सुधारक होने के सिलसिले में अपनी क़समों के द्वारा अल्लाह को आड़ और निशाना न बनाओ कि इन कामों को छोड़ दो। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

225. अल्लाह तुम्हें तुम्हारी ऐसी क़समों पर नहीं पकड़ेगा जो यूँ ही मुँह से निकल गई हों, लेकिन उन क़समों पर वह तुम्हें अवश्य पकड़ेगा जो तुम्हारे दिल के इरादे का नतीजा हों। अल्लाह बहुत क्षमा करनेवाला, सहनशील है।

226. जो लोग अपनी स्त्रियों से अलग रहने की क़सम खा बैठें, उनके लिए चार महीने की प्रतीक्षा है। फिर यदि वे पलट आएँ, तो अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

227. और यदि वे तलाक़ ही की ठान लें, तो अल्लाह भी सुननेवाला, भली-भाँति जाननेवाला है।

228. और तलाक़ पाई हुई स्त्रियाँ तीन हैज़ (मासिक-धर्म) गुज़रने तक अपने-आप को रोके रखें, और यदि वे अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखती हैं तो उनके लिए यह वैध न होगा कि अल्लाह ने उनके गर्भाशयों में जो कुछ पैदा किया हो उसे छिपाएँ। इस बीच उनके पति, यदि सम्बन्धों को

التوبة

التوبة

اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ۝  
 نَسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ فَاَتُوا حَرْثَكُمْ اَلَيْسَ شَيْئًا  
 وَقَدْ مَوَّالًا لِّفُسْكُمْ وَاَتُوا اللَّهَ وَاَعْلَمُوا اَنَّكُمْ  
 تُلْقَوْنَ ۝ وَيُبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً  
 لِآيْمَانِكُمْ اَنْ تَبْزُوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ  
 النَّاسِ ۝ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمْ  
 بِاللِّغْوِ فِي اَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ  
 قُلُوبُكُمْ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ  
 مِنْ نِسَائِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۝ اِنْ قَاءُوا  
 قَرَانَ اللَّهِ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ اِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ  
 اِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ  
 بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ ۝ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ  
 يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ

مَتْلُ



ठीक कर लेने का इरादा रखते हों, तो वे उन्हें लौटा लेने के ज़्यादा हक़दार हैं। और उन पत्नियों के भी सामान्य नियम के अनुसार वैसे ही अधिकार हैं, जैसी उन पर ज़िम्मेदारियाँ डाली गई हैं। और पतियों को उनपर एक दर्जा प्राप्त है। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

229. तलाक़ दो बार है। फिर सामान्य नियम के अनुसार (स्त्री को) रोक लिया जाए या भले तरीक़े से विदा कर दिया जाए। और तुम्हारे लिए वैध नहीं है कि जो कुछ तुम उन्हें दे चुके हो, उसमें से कुछ ले लो, सिवाय इस स्थिति के कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की (निर्धारित) सीमाओं पर क़ायम न रह सकेंगे तो यदि तुमको यह डर हो कि वे अल्लाह की सीमाओं पर क़ायम न रहेंगे तो स्त्री जो कुछ देकर छुटकारा प्राप्त करना चाहे उसमें उन दोनों के लिए कोई गुनाह नहीं। ये अल्लाह की सीमाएँ हैं। अतः इनका उल्लंघन न करो। और जो कोई अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करे तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं।

230. (दो तलाकों के पश्चात) फिर यदि वह उसे तलाक़ दे दे, तो इसके पश्चात वह उसके लिए वैध न होगी, जबतक कि वह उसके अतिरिक्त किसी दूसरे पति से निकाह न कर ले। अतः यदि वह उसे तलाक़ दे दे तो फिर उन दोनों के लिए एक दूसरे को पलट आने में कोई गुनाह न होगा, यदि वे समझते हों कि अल्लाह की सीमाओं पर क़ायम रह सकते हैं। और ये अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाएँ हैं, जिन्हें वह उन लोगों के लिए बयान कर रहा है जो जानना चाहते हों।

الْبَقَرَةُ

سُورَةُ

يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، وَبِعَوَلْتُهُنَّ أَهَقُ  
بِرَوِّهِنَّ فِي ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْا اِصْلَاحًا، وَكُنَّ  
مِثْلُ الَّذِي عَلَيَّهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلِلزَّجَالِ عَلَيْهِنَّ  
دَرَجَةٌ، وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ الْفَلَاحُ مَرَّتَيْنِ ۝  
وَاَمْسَاكُ الْمَعْرُوْفِ اَوْ تَسِيْرُهُ اِيْخْسَانٌ وَلَا يَجِلُّ  
لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّا اَتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْئًا اِلَّا اَنْ  
يَخَافَا اَلَّا يَقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَلَّا  
يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ، فَلَا جُنَآءَ عَلَيْهِمَا فِيمَا  
اِفْتَدَتْ بِهٖ ۚ يٰۤاُولَٔئِكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۖ فَلَا تَعْتَدُوْهَا،  
وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولَٔئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝  
اِنْ طَلَّقَهَا فَلَا يَحِلُّ لَهٗ مِنْ بَعْدِ حَتّٰى تَنْكِحَ  
زَوْجًا غَيْرَهٗ ۚ اِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَآءَ عَلَيْهِمَا  
اَنْ يَتَرَاجَعَا اِنْ ظَنَّا اَنْ يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۚ وَبِذٰلِكَ

مَذٰلِكُمْ



231. और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दे दो और वे अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) को पहुँच जाएँ, तो सामान्य नियम के अनुसार उन्हें रोक लो या सामान्य नियम के अनुसार उन्हें विदा कर दो। और तुम उन्हें नुक़सान पहुँचाने के ध्येय से न रोको कि ज्यादाती करो। और जो ऐसा करेगा, तो उसने स्वयं अपने ही ऊपर जुल्म किया। और अल्लाह की आयतों को परिहास का विषय न बनाओ, और अल्लाह की कृपा जो तुमपर हुई है उसे याद रखो और उस किताब और तत्त्वदर्शिता (हिकमत) को याद रखो जो उसने तुमपर उतारी है, जिसके द्वारा वह तुम्हें नसीहत करता है। और अल्लाह का डर रखो और भली-भाँति जान लो कि अल्लाह हर चीज़ को जाननेवाला है।

232. और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दे दो और वे अपनी निर्धारित अवधि (इद्दत) को पहुँच जाएँ, तो उन्हें अपने होनेवाले दूसरे पतियों से विवाह करने से न रोको, जबकि वे सामान्य नियम के अनुसार परस्पर रज़ामन्दी से मामला तय करें। यह नसीहत तुममें से उसको की जा रही है जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखता है। यही तुम्हारे लिए ज्यादा बरकतवाला और सुथरा तरीका है। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।

233. और जो कोई पूरी अवधि तक (बच्चे को) दूध पिलवाना चाहे, तो माँ अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष तक दूध पिलाएँ। और वह जिसका बच्चा है, सामान्य नियम के अनुसार उनके खाने और उनके कपड़े का ज़िम्मेदार है। किसी पर बस उसकी अपनी समाई भर ही ज़िम्मेदारी है, न तो कोई माँ अपने

النِّسَاءُ

النِّسَاءُ

حُدُودُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۚ وَإِذَا طَلَقْتُمُ  
النِّسَاءَ فَلْيُكُنَّ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَسْكُوهُنَّ يَمْغُرُوهُنَّ  
أَوْ سَرَخُوهُنَّ يَمْغُرُوهُنَّ ۚ وَلَا تُنْكِيكُمُ هُنَّ حُرَارًا  
لِيَتَعْتَدُوا ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ  
وَلَا تَنْكِحُوا آبَاءَ اللَّهِ حُرِّمًا ۚ وَأَذْكُرُوا نِعْمَتَ  
اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ  
وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ  
اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ  
فَلْيُكُنَّ أَجَلُهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ  
أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاصُوا بَيْنَهُنَّ بِالْمَغْرُوفِ ۚ ذَلِكَ  
يُوعِظُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ  
الْآخِرِ ۚ ذَلِكَ أَزْكَى لَكُمْ وَأَظْهَرُ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ  
لَا تَعْلَمُونَ ۚ وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ

سَبْعَ



बच्चे के कारण (बच्चे के बाप को) नुक़सान पहुँचाए और न बाप अपने बच्चे के कारण (बच्चे की माँ को) नुक़सान पहुँचाए। और इसी प्रकार की ज़िम्मेदारी उसके वारिस पर भी आती है। फिर यदि दोनों पारस्परिक स्वेच्छा और परामर्श से दूध छुड़ाना चाहें तो उनपर कोई गुनाह नहीं। और यदि तुम अपनी संतान को किसी अन्य स्त्री से दूध पिलवाना चाहो तो इसमें भी तुम पर कोई गुनाह नहीं, जबकि तुमने जो कुछ बदले में देने का वादा किया हो, सामान्य नियम के अनुसार उसे चुका दो। और अल्लाह का डर रखो और भली-भाँति जान लो कि जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे देख रहा है।

حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُنْفِقَ الرِّضَاعَةَ،  
وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ،  
لَا تُكَلِّفُ نَفْسٌ إِلَّا نَفْسَهَا، وَلَا تَنْفَادَ وَالِدَةٌ  
بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَهُ بِوَلَدِهِ، وَعَلَى الْوَارِثِ  
مِثْلُ ذَلِكَ، فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا  
وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا، وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ  
تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَأَلْتُمُ  
مَّا آتَيْتُم بِالْمَعْرُوفِ، وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ  
اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ  
مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ  
أَرْبَعَةَ أَشْهُدٍ وَعَشْرًا، فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ  
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ  
بِالْمَعْرُوفِ، وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ وَلَا

234. और तुममें से जो लोग मर जाएँ और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जाएँ, तो वे पत्नियाँ अपने-आपको चार महीने और दस दिन तक रोके रखें। फिर जब वे अपनी निर्धारित अवधि (इद्दत) को पहुँच जाएँ, तो सामान्य नियम के अनुसार वे अपने लिए जो कुछ करें, उसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं। जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसकी खबर रखता है।

235. और इसमें भी तुमपर कोई गुनाह नहीं जो तुम उन औरतों को विवाह के सन्देश सांकेतिक रूप से दो या अपने मन में छिपाए रखो। अल्लाह जानता



है कि तुम उन्हें याद करोगे, परन्तु छिपकर उन्हें वचन न देना, सिवाय इसके कि सामान्य नियम के अनुसार कोई बात कह दो। और जब तक निर्धारित अवधि (इदत) पूरी न हो जाए, विवाह का नाता जोड़ने का निश्चय न करो। जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे मन की बात भी जानता है। अतः उससे सावधान रहो और यह भी जान लो कि अल्लाह अत्यन्त क्षमा करनेवाला, सहनशील है।

236. यदि तुम स्त्रियों को इस स्थिति में तलाक़ दे दो कि यह नौबत पेश न आई हो कि तुमने उन्हें हाथ लगाया हो और उनका कुछ हक्क (महर) निश्चित किया हो, तो तुमपर कोई भार नहीं। हाँ, सामान्य नियम के अनुसार उन्हें कुछ खर्च दो—समाई रखनेवाले पर उसकी अपनी हैसियत के अनुसार और तंगदस्त पर उसकी अपनी हैसियत के अनुसार अनिवार्य है—यह अच्छे लोगों पर एक हक्क है।

237. और यदि तुम उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो, किन्तु उनका महर निश्चित कर चुके हो, तो जो महर तुमने निश्चित किया है उसका आधा अदा करना होगा, यह और बात है कि वे स्वयं छोड़ दें या पुरुष जिसके हाथ में विवाह का सूत्र है, वह नर्मी से काम ले (और महर पूरा अदा कर दे)। और यह कि तुम नर्मी से काम लो तो यह परहेज़गारी से ज़्यादा क़रीब है और तुम एक-दूसरे को हक्क से बढ़कर देना न भूलो। निश्चय ही अल्लाह उसे देख

تَقُولُونَ ٥٢  
جُنَاحٌ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خُطْبَةِ النِّسَاءِ  
أَوْ الْكِنَافَةِ فِي أَنْفُسِكُمْ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ  
وَلَكِنْ لَا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا  
مَعْرُوفًا وَلَا تَعِزُّوا عُقْدَةَ الزَّكَاةِ حَتَّى  
يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي  
أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَفُوٌّ رَحِيمٌ  
لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمْسُوهُنَّ  
أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً وَمَتَّعُوهُنَّ عَلَى  
الْمُوسِمِ قَدْرَهُ وَعَلَى الْمُقْتَرِ قَدْرَهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ  
حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ وَإِنْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ  
قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً  
فَرَضْوا مَا قَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يُعْفُونَ أَوْ يُعْفُوا  
الَّذِي بَيْنَهُمَا عُقْدَةُ الزَّكَاةِ وَأَنْ تَعْفُوا

سَبَل



रहा है, जो कुछ तुम करते हो।

238. सदैव नमाज़ों की और अच्छी नमाज़ की पाबन्दी करो, और अल्लाह के आगे पूरे विनीत और शांतभाव से खड़े हुआ करो।

239. फिर यदि तुम्हें (शत्रु आदि का) भय हो, तो पैदल या सवार जिस तरह सम्भव हो नमाज़ पढ़ लो। फिर जब निश्चिन्त हो तो अल्लाह को उस प्रकार याद करो जैसाकि उसने तुम्हें सिखाया है, जिसे तुम नहीं जानते थे।

240. और तुममें से जिन लोगों की मृत्यु हो जाए और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जाएँ, अर्थात् अपनी पत्नियों के हक्क में यह वसीयत छोड़ जाएँ कि घर से निकाले बिना एक वर्ष तक उन्हें खर्च दिया जाए, तो यदि वे निकल जाएँ तो अपने लिए सामान्य नियम के अनुसार वे जो कुछ भी करें उसमें तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

241. और तलाक़ पाई हुई स्त्रियों को सामान्य नियम के अनुसार (इदत की अवधि में) खर्च भी मिलना चाहिए। यह डर रखनेवालों पर एक हक्क है।

242. इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोलकर बयान करता है, ताकि तुम समझ से काम लो।

243. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो हज़ारों की संख्या में होने पर भी मृत्यु के भय से अपने घरबार छोड़कर निकले थे? तो अल्लाह ने उनसे कहा : "मृत्यु प्राय हो जाओ तुम।" फिर उसने उन्हें जीवन प्रदान किया।

الْبَقَرَةُ

الْبَقَرَةُ

أَقْرَبُ لِلشَّقْوَى. وَلَا تَسْأُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ.  
إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ. حَفِظُوا عَلَى  
الصَّلَواتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَى. وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ.  
فَإِنْ خِفْتُمْ فِرْجَالًا أَوْ رُكْبَانًا، فَإِذَا أَمِنْتُمْ  
فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ.  
وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا  
وَصِيَّةً لِّأَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرِ  
إِحْوَاجٍ. فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا  
فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوفٍ. وَاللَّهُ عَزِيزٌ  
حَكِيمٌ. وَلِلْمُطَلَّقاتِ مَتَاعٌ بِالمَعْرُوفِ. حَقًّا  
عَلَى الْمُتَّقِينَ. كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ  
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ. وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنَحْوِهِمْ  
يُؤْتُونَ مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُؤْتُونَ مِنْ دُونِهَا. وَهُمُ الْفَاعِلُونَ.

مَنْ



अल्लाह तो लोगों के लिए उदार अनुग्राही है, किन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखलाते।

244. और अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुननेवाला, जाननेवाला है।

245. कौन है जो अल्लाह को अच्छा ऋण दे कि अल्लाह उसे उसके लिए कई गुना बढ़ा दे? और अल्लाह ही तंगी भी देता है और कुशादगी भी प्रदान करता है, और उसी की ओर तुम्हें लौटना है।

246. क्या तुमने मूसा के पश्चात् इसराईल की संतान के सरदारों को नहीं देखा, जब उन्होंने अपने एक नबी से कहा : "हमारे लिए एक सम्राट नियुक्त कर दो ताकि हम अल्लाह के मार्ग में युद्ध करें?" उसने कहा : "यदि तुम्हें लड़ाई का आदेश दिया जाए तो क्या तुम्हारे बारे में यह संभावना नहीं है कि तुम न लड़ो?" वे कहने लगे : "हम अल्लाह के मार्ग में क्यों न लड़ें, जबकि हम अपने घरों से निकाल दिए गए हैं और अपने बाल-बच्चों से भी अलग कर दिए गए हैं?"— फिर जब उनपर युद्ध अनिवार्य कर दिया गया तो उनमें से थोड़े लोगों के सिवा सब फिर गए। और अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है।—

تَقَاتِلُوا

تَقَاتِلُوا

فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَخَذَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ  
لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ  
لَا يَشْكُرُونَ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا  
أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ  
اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضْعِفُهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً  
وَاللَّهُ يُقْرِضُ وَيَبْضِطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ أَلَمْ  
تَرَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ بَنِي إِسْرَءِيلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَى  
إِذْ قَالُوا لِنَبِيِّهِمْ لَهُمْ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نَقَاتِلَ  
فِي سَبِيلِ اللَّهِ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ  
عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا  
نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أَخْرَجَنَا مِنْ دِيَارِنَا  
وَأَبْنَاءِنَا فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا  
إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ

مَنْزِل







फिर जब तालूत और ईमानवाले जो उसके साथ थे नदी पार कर गए तो कहने लगे : “आज हममें जालूत और उसकी सेनाओं का मुकाबला करने की शक्ति नहीं है।” इसपर उन लोगों ने, जो समझते थे कि उन्हें अल्लाह से मिलना है, कहा : “कितनी ही बार एक छोटी-सी टुकड़ी ने अल्लाह की अनुज्ञा से एक बड़े गिरोह पर विजय पाई है। अल्लाह तो जमनेवालों के साथ है।”

250. और जब वे जालूत और उसकी सेनाओं के मुकाबले पर आए तो कहा : “ऐ हमारे रब ! हमपर धैर्य उण्डेल दे और हमारे क़दम जमा दे और इनकार करनेवाले लोगों पर हमें विजय प्रदान कर ।”

251. अन्ततः अल्लाह की अनुज्ञा से उन्होंने उनको पराजित कर दिया और दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर दिया, और अल्लाह ने उसे राज्य और तत्त्वदर्शिता (हिकमत) प्रदान की, जो कुछ वह (दाऊद) चाहे, उससे उसको अवगत कराया । और यदि अल्लाह मनुष्यों के एक गिरोह को दूसरे गिरोह के द्वारा हटाता न रहता तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती, किन्तु अल्लाह संसारवालों के लिए उदार अनुग्राही है ।

252. ये अल्लाह की सच्ची आयतें हैं जो हम तुम्हें (सोद्देश्य) सुना रहे हैं और निश्चय ही तुम उन लोगों में से हो, जो रसूल बनाकर भेजे गए हैं ।

سَيُؤْتُونَكَ ۖ قَسِيْرٌ يُؤْمِنُ اِلَّا قَلِيْلًا مِنْهُمْ ۖ فَلَمَّا جَاوَزَا ۙ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهُ ۖ قَالُوْا لَاطٰقَةٌ لَّنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتٍ وَجُنُوْدِهِ ۚ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلْكُوْا اللّٰهَ ۖ كَمُ مِنْ فِتْنَةٍ قَلِيْلَةٍ ۚ غَلَبَتْ فِئْتُهُ كَثِيْرَةٌ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوْتٍ وَجُنُوْدِهِ ۖ قَالُوْا رَبَّنَا اَفِرْغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلٰى الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ ۖ فَهَرَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَكَتَلَ دَاوُدُ جَالُوْتَ ۚ وَاتٰهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَ الْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ مَا يَشَآءُ ۚ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلَٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلٰى الْعٰلَمِيْنَ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ تَتْلُوْهَا عَلَیْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝

سَبَّحْهُ



253. ये रसूल ऐसे हुए हैं कि इनमें हमने कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता प्रदान की। इनमें कुछ से तो अल्लाह ने बातचीत की और इनमें से कुछ को दर्जों की दृष्टि से उच्चता प्रदान की। और मरयम के बेटे ईसा को हमने खुली निशानियाँ दी और पवित्र आत्मा से उसकी सहायता की। और यदि अल्लाह चाहता तो वे लोग, जो उनके पश्चात हुए, खुली निशानियाँ पा लेने के बाद परस्पर न लड़ते। किन्तु वे विभेद में पड़ गए तो उनमें से कोई तो ईमान लाया और उनमें से किसी ने इनकार की नीति अपनाई। और यदि अल्लाह चाहता तो वे परस्पर न लड़ते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है, करता है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَنِي إِسْرَءِيلَ إِذْ قُلْنَا لِمُوسَىٰ إِنَّكَ أَنَا اللَّهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَشْيَاءِ مُتَّقِيًا ۖ فَخَلَّاهَا وَأَتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيْتَ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِينَ مِن بَعْدِهِم مِّن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنِ اخْتَلَفُوا فَمِنْهُمْ مَّنْ آمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلُوا وَلَكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ۚ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا مِنَّا زُرْقَانِ ۖ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خُلَّةَ وَلَا شَفَاعَةَ ۚ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۚ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَن ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَسِعَ كُلُّ شَيْءٍ عِلْمَهُ ۚ وَلَمْ يَلَمْزْ أَحَدًا مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَّا آمَنُوا ۚ وَخَلَّدَ اللَّهُ مَن يَشَاءُ فِي لَحْظَةٍ ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۚ

254. ऐ ईमान लानेवालो ! हमने जो कुछ तुम्हें प्रदान किया है उसमें से खर्च करो, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई क्रय-विक्रय होगा और न कोई मित्रता होगी और न कोई सिफारिश। ज़ालिम वही हैं, जिन्होंने इनकार की नीति अपनाई है।

255. अल्लाह कि जिसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं, वह जीवन्त-सत्ता है, सबको सँभालने और क़ायम रखनेवाला है। उसे न ऊँघ लगती है और न निद्रा। उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। कौन है जो उसके यहाँ उसकी अनुमति के बिना सिफारिश कर सके ? वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और वे उसके ज्ञान में से



किसी चीज़ पर हावी नहीं हो सकते, सिवाय उसके जो उसने चाहा। उसकी कुर्सी (प्रभुता) आकाशों और धरती को व्याप्त है और उनकी सुरक्षा उसके लिए तनिक भी भारी नहीं और वह उच्च, महान है।

256. धर्म के विषय में कोई ज़बरदस्ती नहीं। सही बात नासमझी की बात से अलग होकर स्पष्ट हो गई है। तो अब जो कोई बड़े हुए सरकश को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान लाए, उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं। अल्लाह सब कुछ सुनने, जाननेवाला है।

257. जो लोग ईमान लाते हैं, अल्लाह उनका रक्षक और सहायक है। वह उन्हें अँधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाता है। रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया तो उनके संरक्षक बड़े हुए सरकश हैं। वे उन्हें प्रकाश से निकालकर अँधेरों की ओर ले जाते हैं। वही आग (जहन्नम) में पड़नेवाले हैं। वे उसी में सदैव रहेंगे।

258. क्या तुमने उसको नहीं देखा, जिसने इबराहीम से उसके 'रब' के सिलसिले में झगड़ा किया था, इस कारण कि अल्लाह ने उसको राज्य दे रखा था? जब इबराहीम ने कहा: "मेरा 'रब' वह है जो जिलाता और मारता है।" उसने कहा: "मैं भी तो जिलाता और मारता हूँ।" इबराहीम ने कहा: "अच्छा तो अल्लाह सूर्य को पूरब से लाता है, तो तू उसे पश्चिम से ले आ।" इसपर

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 أَيُّدِيهِمْ وَمَا خَلَقَهُمْ، وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ  
 عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ، وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَ  
 الْأَرْضَ، وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا، وَهُوَ الْعَلِيُّ  
 الْعَظِيمُ، لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ  
 مِنَ الْغَيِّ، فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ  
 فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَى لَا انْفِصَامَ لَهَا.  
 وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ، اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا  
 يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا  
 أُولَئِكَمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ  
 إِلَى الظُّلُمَاتِ، أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا  
 خَالِدُونَ، ثُمَّ تَوَلَّى إِلَى حَاجَةِ إِبْرَاهِيمَ فِي  
 رَبِّهِ أَنْ أَشْهَدَ اللَّهُ الْمَلَكَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّي  
 الَّذِي يُعْبَى وَيُؤْمِنُ، قَالَ أَنَا أُخِي وَأُمِينُ.

مِثْلُ



वह अधर्मी चकित रह गया। अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।

259. या उस जैसे (व्यक्ति) को नहीं देखा, जिसका एक ऐसी बस्ती पर से गुज़र हुआ, जो अपनी छतों के बल गिरी हुई थी। उसने कहा : “अल्लाह इसके विनष्ट हो जाने के पश्चात इसे किस प्रकार जीवन प्रदान करेगा?” तो अल्लाह ने उसे सौ वर्ष की मृत्यु दे दी, फिर उसे उठा खड़ा किया। कहा : “तू कितनी अवधि तक इस अवस्था में रहा।” उसने कहा : “मैं एक दिन या दिन

का कुछ हिस्सा रहा।” कहा : “नहीं, बल्कि तू सौ वर्ष रहा है। अब अपने खाने और पीने की चीज़ों को देख ले, उनपर समय का कोई प्रभाव नहीं, और अपने गधे को भी देख, और यह इसलिए कह रहे हैं ताकि हम तुझे लोगों के लिए एक निशानी बना दें और हड्डियों को देख कि किस प्रकार हम उन्हें उभारते हैं, फिर, उनपर माँस चढ़ाते हैं।” तो जब वास्तविकता उसपर प्रकट हो गई तो वह पुकार उठा : “मैं जानता हूँ कि अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।”

260. और याद करो जब इबराहीम ने कहा : “ऐ मेरे रब ! मुझे दिखा दे, तू मुर्दों को कैसे जीवित करेगा?” कहा : “क्या तुझे विश्वास नहीं?” उसने कहा : “क्यों नहीं, किन्तु यह निवेदन इसलिए है कि मेरा दिल संतुष्ट हो जाए।” कहा : “अच्छा, तो चार पक्षी ले, फिर उन्हें अपने साथ भली-भाँति हिला-मिला ले, फिर उनमें से प्रत्येक को एक-एक पर्वत पर रख दे, फिर उनको पुकार, वे तेरे पास

الْبَقَرَةُ

بَقَرَةُ

قَالَ إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالسَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ  
قَاتِلَةً لَهَا مِنَ الْمَغْرِبِ قَبِضَتْ الَّتِي كَفَرَتْهُ  
اللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ أَوْ كَالَّذِي مَرَّ  
عَلَى قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا، قَالَ أَنَّى  
يُحْيِي هَذِهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا، فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةً  
عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ، قَالَ كَفَرْتُ أَيُّهَا، قَالَ لَيْسَتْ يَوْمًا  
أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ، قَالَ بَلَى لَيْسَتْ مِائَةً عَامٍ  
فَأَنْظِرْ إِلَى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ، وَانْظُرْ  
إِلَى جُنَّاحِكَ لَمْ يَجْعَلْكَ آيَةً لِلنَّاسِ وَانْظُرْ إِلَى  
الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا،  
فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ، قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ  
قَدِيرٌ ۝ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي  
الْمَوْتَةَ، قَالَ أَوْلَمْ تُؤْمِنْ، قَالَ بَلَى وَلَكِنْ

مَنْ



लपककर आएँगे। और जान ले कि अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।”

261. जो लोग अपने माल अल्लाह के मार्ग में खर्च करते हैं, उनकी उपमा ऐसी है, जैसे एक दाना हो, जिससे सात बालें निकलें और प्रत्येक बाल में सौ दाने हों। अल्लाह जिसे चाहता है बढ़ोतरी प्रदान करता है। अल्लाह बड़ी समाईवाला, जाननेवाला है।

262. जो लोग अपने माल अल्लाह के मार्ग में खर्च करते हैं, फिर खर्च करके उसका न एहसान जताते हैं और न दिल दुखाते हैं, उनका बदला उनके अपने रब के पास है। और न तो उनके लिए कोई भय होगा और न वे दुखी होंगे।

263. एक भली बात कहनी और क्षमा से काम लेना उस सदक़े से अच्छा है, जिसके पीछे दुख हो। और अल्लाह अत्यन्त निस्पृह (बेनियाज़), सहनशील है।

264. ऐ ईमानवालो ! अपने सदक़ों को एहसान जताकर और दुख देकर उस व्यक्ति की तरह नष्ट न करो जो लोगों को दिखाने के लिए अपना माल खर्च करता है और अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान नहीं रखता। तो उसकी हालत उस चट्टान जैसी है जिसपर कुछ मिट्टी पड़ी हुई थी, फिर उस पर ज़ोर की वर्षा हुई और उसे साफ़ चट्टान की दशा में छोड़ गई। ऐसे लोग

النِّسَاء

بِكَافٍ الْمَثَلِ

لِيُطْمِئِنَّ قُلُوبُكُمْ ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ  
فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ  
مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ  
أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ مَّثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ  
أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَتَتْتِ سَنِيمَ  
سَنَابِلٍ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ فَإِنَّهُ حَبَّةٌ ۚ وَاللَّهُ يُضْعِفُ  
لِمَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ  
أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يَتَذَكَّرُونَ ۖ أُولَٰئِكَ  
مَنَّا وَلَا آذَنُ ۚ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا  
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ  
وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا أَذًى ۚ وَاللَّهُ  
عَزِيزٌ حَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا  
صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ ۚ كَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ

مَنْ



अपनी कमाई कुछ भी प्राप्त नहीं करते। और अल्लाह इनकार की नीति अपनानेवालों को मार्ग नहीं दिखाता।

265. और जो लोग अपने माल अल्लाह की प्रसन्नता के संसाधनों की तलब में और अपने दिलों को जमाव प्रदान करने के कारण खर्च करते हैं उनकी हालत उस बाग़ की तरह है जो किसी अच्छी और उर्वर भूमि पर हो। उसपर घोर वर्षा हुई, तो उसमें दुगुने फल आए। फिर यदि घोर वर्षा उस पर नहीं हुई, तो फुहार ही पर्याप्त होगी। तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे देख रहा है।

266. क्या तुममें से कोई यह चाहेगा कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, जिसके नीचे नहरें बह रही हों, वहाँ उसे हर प्रकार के फल प्राप्त हों, और उसका बुढ़ापा आ गया हो और उसके बच्चे अभी कमज़ोर ही हों कि उस बाग़ पर एक आग भरा बगूला आ गया, और वह जलकर रह गया? इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे सामने आयतें खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि सोच-विचार करो।

الْقَوْمِ

تِلْكَ

مَالَهُ رِثَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ  
فَمِثْلُهُ كَمِثْلِ صَفْوَانَ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ  
وَإِبِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا لَا يَقْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ  
فَمِمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ  
وَمِثْلُ الَّذِينَ يَنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ  
اللَّهِ وَتَشْنِيتًا مِنْ أَنْفُسِهِمْ كَمِثْلِ جَنَّةٍ بَرْبُورَةٍ  
أَصَابَهَا وَابِلٌ فَاتَتْ أَكْطَافَهَا ضَعْفَيْنِ فَإِنْ لَمْ  
يُضِبْهَا وَابِلٌ فَطُلَّ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ  
أَيُّودُ أَحَدِكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِنْ نَخِيلٍ وَ  
أَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا  
مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّتُهُ  
ضَعْفَاءٌ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ  
كَذَلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ

مِثْلُ



267. ऐ ईमान लानेवालो ! अपनी कमाई की पाक और अच्छी चीज़ों में से खर्च करो और उन चीज़ों में से भी जो हमने धरती से तुम्हारे लिए निकाली हैं। और देने के लिए उसके खराब हिस्से (के देने) का इरादा न करो, जबकि तुम स्वयं उसे कभी न लोगे। यह और बात है कि उसको लेने में देखी-अनदेखी कर जाओ। और जान लो कि अल्लाह निस्पृह, प्रशंसनीय है।

268. शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और निर्लज्जता के कामों पर उभारता है, जबकि अल्लाह अपनी क्षमा और उदार कृपा का तुम्हें वचन देता है। अल्लाह बड़ी समाईवाला, सर्वज्ञ है।

269. वह जिसे चाहता है तत्त्वदर्शिता प्रदान करता है और जिसे तत्त्वदर्शिता प्राप्त हुई उसे बड़ी दौलत मिल गई। किन्तु चेतते वही हैं जो बुद्धि और समझवाले हैं।

270. और तुमने जो कुछ भी खर्च किया और जो कुछ भी नज़र (मन्नत) की हो, निस्सन्देह अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है। और अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

271. यदि तुम खुले रूप में सदक्के दो तो यह भी अच्छा है और यदि उनको छिपाकर मुहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। और यह तुम्हारे कितने ही गुनाहों को मिटा देगा। और अल्लाह को उसकी पूरी खबर है जो कुछ तुम करते हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ  
وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَلَا تَيَمَّمُوا  
الْحَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِأَخِيذِهِ إِلَّا أَنْ  
تَغِيضُوا فِيهِ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفِيرٌ حَمِيدٌ ۚ  
الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِالْفَحْشَاءِ ۚ  
وَاللَّهُ يَعِدُكُم مَغْفِرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا ۚ وَاللَّهُ  
وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۚ يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ  
يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۚ وَمَا  
يَذَكِّرُنَا إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۚ وَمِمَّا أَنْفَقْتُمْ  
مِنْ ثَمَرَاتِهِ أَوْ تَذَكَّرْتُمْ مِنْ تَذَكُّرِ قُرْآنِ اللَّهِ  
يَعْلَمُهُ ۚ وَمِمَّا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۚ إِنْ شَبَدُوا  
الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَإِنْ تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا  
الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۚ وَيَكْفُرُ عَنْكُمْ مِمَّنْ



272. उन्हें मार्ग पर ला देने का दायित्व तुमपर नहीं है, बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है। और जो कुछ भी माल तुम खर्च करोगे, वह तुम्हारे अपने ही भले के लिए होगा और तुम अल्लाह के (बताए हुए) उद्देश्य के अतिरिक्त किसी और उद्देश्य से खर्च न करो। और जो माल भी तुम खर्च करोगे, वह पूरा-पूरा तुम्हें चुका दिया जाएगा और तुम्हारा हक न मारा जाएगा।

273. यह उन मुहताजों के लिए है जो अल्लाह के मार्ग में घिर गए हैं कि धरती में (जीविकोपार्जन के लिए) कोई दौड़-धूप नहीं कर सकते। उनके स्वाभिमान के कारण अपरिचित व्यक्ति उन्हें धनवान समझता है। तुम उन्हें उनके लक्षणों से पहचान सकते हो। वे लिपटकर लोगों से नहीं माँगते। जो माल भी तुम खर्च करोगे, वह अल्लाह को ज्ञात होगा।

274. जो लोग अपने माल रात-दिन छिपे और खुले खर्च करें, उनका बदला तो उनके रब के पास है, और न उन्हें कोई भय है और न वे शोकाकुल होंगे।

275. जो लोग ब्याज खाते हैं, वे बस इस प्रकार उठते हैं जिस प्रकार वह व्यक्ति उठता है, जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो और यह इसलिए कि उनका कहना है : "व्यापार भी तो ब्याज के सदृश है", जबकि अल्लाह ने व्यापार को वैध और ब्याज को अवैध ठहराया है। अतः जिसको उसके रब

الْبَقَرَةُ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَيَاتِكُمْ. وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ لَيْسَ  
عَلَيْكَ هُدًى مِنْهُ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۝  
وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَا نَفْسِكُمْ. وَمَا تُنْفِقُونَ  
إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ. وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ  
يُؤْتِكُمْ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ۝ لِلْفُقَرَاءِ  
الَّذِينَ أُحْصِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ  
صَرْفًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ  
التَّعَقُّفِ. يَتَرَفَّعُ بِسْمِهِمْ. لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ الْمَحَافَاةَ.  
وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بِهِ عَلَيْنِمْ ۝  
الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَ  
عَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ. وَلَا خَوْفٌ  
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يُخْزَوْنَ ۝ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ  
الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِينَ يَشْتَعِبُ

مَنْ



की ओर से नसीहत पहुँची और वह बाज़ आ गया, तो जो कुछ पहले ले चुका वह उसी का रहा और मामला उसका अल्लाह के हवाले है। और जिसने फिर यही कर्म किया तो ऐसे ही लोग आग (जहन्नम) में पड़नेवाले हैं। उसमें वे सदैव रहेंगे।

276. अल्लाह ब्याज को घटाता और मिटाता है और सदकों को बढ़ाता है। और अल्लाह किसी अकृतज्ञ, हक़ मारनेवाले को पसन्द नहीं करता।

277. निस्संदेह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और नमाज़ कायम की और ज़कात दी, उनके लिए उनका बदला उनके रब के पास है, और उन्हें न कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

278. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह का डर रखो और जो कुछ ब्याज बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमानवाले हो।

279. फिर यदि तुमने ऐसा न किया तो अल्लाह और उसके रसूल से युद्ध के लिए खबरदार हो जाओ। और यदि तौबा कर लो तो अपना मूलधन लेने का तुम्हें अधिकार है। न तुम अन्याय करो और न तुम्हारे साथ अन्याय किया जाए।

280. और यदि कोई तंगी में हो तो हाथ खुलने तक मुहलत देनी होगी; और सदका कर दो, (अर्थात् मूलधन भी न लो) तो यह तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है, यदि तुम जान सको।

الْبَقَرَةُ

تِلْكَ الْأَمْثَلُ

الْقَاطِنُونَ مِنَ الْمَنِّ، ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا  
الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا  
فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَاتَّبَعْنِي فَلَا مَا  
سَلَفَ، وَأَمْرٌ إِلَى اللَّهِ، وَمَنْ عَادَ فَأُولَئِكَ  
أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ يَنْصَقُ اللَّهُ الرِّبَا  
وَيُزِيهِ الصَّدَقَاتِ، وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ۝  
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ  
وَاتَّوَا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ، وَلَا خَوْفٌ  
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا  
اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ  
مُؤْمِنِينَ ۝ فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِنَ  
اللَّهِ وَرَسُولِهِ، وَإِنْ تُبْتِغُوا فَلََكُمْ رَأْسُ أَمْوَالِكُمْ،  
لَا تَطْلُمُونَ وَلَا تَظْلَمُونَ ۝ وَإِنْ كَانَتْ ذُو

سَلَفَ



281. और उस दिन का डर रखो जबकि तुम अल्लाह की ओर लौटोगे, फिर प्रत्येक व्यक्ति को जो कुछ उसने कमाया पूरा-पूरा मिल जाएगा और उनके साथ कदापि कोई अन्याय न होगा।

282. ऐ ईमान लानेवालो ! जब किसी निश्चित अवधि के लिए आपस में ऋण का लेन-देन करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि कोई लिखनेवाला तुम्हारे बीच न्यायपूर्वक (दस्तावेज़) लिख दे। और लिखनेवाला लिखने से इनकार न करे; जिस प्रकार अल्लाह ने उसे सिखाया है,

التَّائِبِينَ

بِأَمْرِ اللَّهِ

عَسْرَةً قَنْظَرَةً إِلَى مَيْسَرَةٍ. وَأَنْ تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ. وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ. يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ إِلَى أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوهُ. وَلْيَكْتُب بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ. وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ. وَلْيَسْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا. فَإِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْطِيعُ أَنْ يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ. وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِنْ رِجَالِكُمْ. فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا

مَنْ

उसी प्रकार वह दूसरों के लिए लिखने के काम आए और बोलकर वह लिखाए जिसके ज़िम्मे हक़ की अदायगी हो। और उसे अल्लाह का, जो उसका रब है, डर रखना चाहिए और उसमें कोई कमी न करनी चाहिए। फिर यदि वह व्यक्ति जिसके ज़िम्मे हक़ की अदायगी हो, कम समझ या कमज़ोर हो या वह बोलकर न लिखा सकता हो तो उसके संरक्षक को चाहिए कि न्यायपूर्वक बोलकर लिखा दे। और अपने पुरुषों में से दो गवाहों को गवाह बना लो और यदि दो पुरुष न हों तो एक पुरुष और दो स्त्रियाँ, जिन्हें तुम गवाह के लिए पसन्द करो, गवाह हो जाएँ। (दो स्त्रियाँ इसलिए रखी गई हैं) ताकि यदि एक भूल जाए तो दूसरी उसे याद दिला दे। और गवाहों को जब बुलाया जाए तो आने से इनकार न करें। मामला चाहे छोटा हो या बड़ा एक निर्धारित अवधि तक के लिए है, तो उसे लिखने में सुस्ती से काम न लो। यह अल्लाह की दृष्टि में अधिक न्यायसंगत बात है और इससे गवाही भी अधिक ठीक रहती है। और इससे अधिक संभावना है कि तुम किसी संदेह



में नहीं पड़ोगे। हाँ, यदि कोई सौदा नब्रद हो, जिसका लेन-देन तुम आपस में कर रहे हो, तो तुम्हारे उसके न लिखने में तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। और जब आपस में क्रय-विक्रय का मामला करो तो उस समय भी गवाह कर लिया करो, और न किसी लिखनेवाले को हानि पहुँचाई जाए और न किसी गवाह को। और यदि ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए अवज्ञा की बात होगी। और अल्लाह का डर रखो। अल्लाह तुम्हें शिक्षा दे रहा है। और अल्लाह हर चीज़ को जानता है।

فَتَذَكَّرُ أَحَدَهُمَا الْآخَرَ ۚ وَلَا يَأْبَ الشَّهَادَةُ  
إِذَا مَا دُعُوا ۚ وَلَا تَسْأَلُوا أَنْ تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا  
إِلَىٰ أَجَلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ  
لِلشَّهَادَةِ ۚ وَأَذِّنْ أَلَّا تَزْنَا بِوَأ ۚ إِلَّا أَنْ تَكُونُ  
تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ  
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۚ وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ  
وَلَا يُضَارَ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ  
فَائَةٍ فَسَوْفَ بِكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَيَعْلَمُ اللَّهُ  
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ  
وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهْنِ مَقْبُوضَةً ۚ فَإِنْ أَصَحَّ  
بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ فليؤدِّ الِذِي أَذْهَبَ أَمَّا نَسْتَعْتِ  
وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ ۚ وَلَا تَكْتُبُوا الشَّهَادَةَ ۚ وَمَنْ  
يَكْتُمْهَا فَوَانهُ أَثْمٌ قَلْبُهُ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ

283. और यदि तुम किसी सफ़र में हो और किसी लिखनेवाले को न पा सको, तो गिरवी रखकर मामला करो। फिर यदि तुममें से एक-दूसरे पर भरोसा करे, तो जिस पर भरोसा किया है उसे चाहिए कि वह यह सच कर दिखाए कि वह विश्वासपात्र है और अल्लाह का, जो उसका रब है, डर रखे। और गवाही को न छिपाओ। जो उसे छिपाता है तो निश्चय ही उसका दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।



284. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। और जो कुछ तुम्हारे मन में है, यदि तुम उसे व्यक्त करो या छिपाओ, अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा। फिर वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे यातना दे। अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

285. रसूल उसपर, जो कुछ उसके रब की ओर से उसकी ओर उतरा, ईमान लाया और ईमानवाले भी, प्रत्येक, अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाया। (और उनका कहना यह है) : “हम उसके रसूलों में से किसी को दूसरे रसूलों से अलग नहीं करते।” और उनका कहना है : “हमने सुना और आज्ञाकारी हुए। हमारे रब ! हम तेरी क्षमा के इच्छुक हैं और तेरी ही ओर लौटना है।”

286. — अल्लाह किसी जीव पर बस उसकी सामर्थ्य और समाई के अनुसार ही दायित्व का भार डालता है। उसका है जो उसने कमाया और उसी पर उसका वबाल (आपदा) भी है जो उसने किया। — “हमारे रब ! यदि हम भूलें या चूक जाएँ तो हमें न पकड़ना। हमारे रब ! और हमपर ऐसा बोझ न डाल जैसा तूने हमसे पहले के लोगों पर डाला था। हमारे रब ! और हमसे वह बोझ न उठवा, जिसकी हमें शक्ति नहीं। और हमें क्षमा कर और हमें ढाँक ले, और हमपर दया कर। तू ही हमारा संरक्षक है, अतएव इनकार करनेवालों के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर।”

अल्-बक्रा

अल्-बक्रा

لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ اِنْ تُبْدُوْا  
مَا فِيْ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تَخْفَوْهُ يَحْصِبْكُمْ بِهٖ اللّٰهُ  
فَيَغْفِرْ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى  
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اَمِنَ الرَّسُوْلُ بِمَا اُنْزِلَ  
اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهِ ۚ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۚ كُلٌّ اَمِنَ بِاللّٰهِ  
وَمَلٰئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۚ لَا نَفَرِقُ بَيْنَ اَحَدٍ  
مِّنْ رُّسُلِهٖ ۚ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ  
رَبَّنَا ۚ وَالْيٰكُ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلًا  
وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا كَسَبَتْ  
رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ لَّمْ يَنْزِلْ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا  
وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَی الَّذِيْنَ  
مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ  
وَاعْفُ عَنَّا وَارْحَمْنَا ۚ اَنْتَ مَوْلَانَا  
فَاَنْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ ۝

سُورَةُ



### 3. आले इमरान

(मदीना में उतरी— आयतें 200)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० मीम०।

2. अल्लाह ही पूज्य है, उसके  
सिवा कोई पूज्य नहीं। वह जीवन्त  
है, सबको सँभालने और कायम  
रखनेवाला।

3. उसने तुमपर हक़ के साथ  
किताब उतारी जो अपने से पहले  
की (किताबों की) पुष्टि करती है,  
और उसने तौरात और इंजील  
उतारी;

4. इससे पहले लोगों के मार्गदर्शन के लिए और उसने कसौटी भी उतारी।  
निस्संदेह जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इनकार किया उनके लिए  
कठोर यातना है और अल्लाह प्रभुत्वशाली भी है और (बुराई का) बदला  
लेनेवाला भी।

5. निस्संदेह अल्लाह से कोई चीज़ न धरती में छिपी है और न आकाश  
में।

6. वही है जो गर्भाशयों में, जैसा चाहता है, तुम्हारा रूप देता है। उस  
प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी के अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं।

7. वही है जिसने तुमपर अपनी ओर से किताब उतारी, वे सुदृढ़ आयतें  
हैं जो किताबों का मूल और सारगर्भित रूप हैं और दूसरी उपलक्षित, तो  
जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है वे फ़ितना (गुमराही) की तलाश और उसके





आशय और परिणाम की चाह में उसका अनुसरण करते हैं जो उपलक्षित है। जबकि उनका परिणाम बस अल्लाह ही जानता है, और वे जो ज्ञान में पक्के हैं, वे कहते हैं : "हम उसपर ईमान लाए, हर एक हमारे रब ही की ओर से है।" और चेतते तो केवल वही हैं जो बुद्धि और समझ रखते हैं।

8. हमारे रब ! जब तू हमें सीधे मार्ग पर लगा चुका है तो इसके पश्चात हमारे दिलों में टेढ़ न पैदा कर और हमें अपने पास से दयालुता प्रदान कर। निश्चय ही तू बड़ा दाता है।

9. हमारे रब ! तू लोगों को एक दिन इकट्ठा करनेवाला है, जिसमें कोई संदेह नहीं। निस्संदेह अल्लाह अपने वचन के विरुद्ध जानेवाला नहीं है।

10. जिन लोगों ने इनकार की नीति अपनाई है अल्लाह के मुक़ाबले में तो न उनके माल उनके कुछ काम आएँगे और न उनकी संतान ही। और वही हैं जो आग (जहन्नम) का ईंधन बनकर रहेंगे।

11. जैसे फिरऔन के लोगों और उनसे पहले के लोगों का हाल हुआ। उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ लिया। और अल्लाह कठोर दण्ड देनेवाला है।

12. इनकार करनेवालों से कह दो : "शीघ्र ही तुम पराभूत होगे और जहन्नम

فِي قُلُوبِهِمْ رَيْبٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ  
الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا  
اللَّهُ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ  
كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ  
رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ  
لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَكَابُ  
رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ  
إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْلِفُ الْوَعْدَ إِنَّ الْدِّينَ كَفَرُوا  
لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ  
اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ كَذَّابٍ  
فِرْعَوْنُ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا  
فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ  
قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سَعْيُهُمْ وَمُحْشَرُونَ إِلَى



की ओर हाँके जाओगे। और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।”

13. तुम्हारे लिए उन दोनों गिरोहों में एक निशानी है जो (बद्र की) लड़ाई में एक-दूसरे के मुक़ाबिल हुए। एक गिरोह अल्लाह के मार्ग में लड़ रहा था, जबकि दूसरा विधर्मी था। ये अपनी आँखों देख रहे थे कि वे उनसे दुगुने हैं। अल्लाह अपनी सहायता से जिसे चाहता है, शक्ति प्रदान करता है। दृष्टिवान लोगों के लिए इसमें बड़ी शिक्षा-सामग्री है।

14. मनुष्यों को चाहत की चीज़ों से प्रेम शोभायमान प्रतीत होता है कि वे स्त्रियाँ, बेटे, सोने-चाँदी के ढेर और निशान लगे (चुने हुए) घोड़े हैं और चौपाए और खेती। यह सब सांसारिक जीवन की सामग्री है और अल्लाह के पास ही अच्छा ठिकाना है।

15. कहो : “क्या मैं तुम्हें इनसे उत्तम चीज़ का पता दूँ?” जो लोग अल्लाह का डर रखेंगे उनके लिए उनके रब के पास बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। वहाँ पाक-साफ़ जोड़े होंगे और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी। और अल्लाह अपने बन्दों पर नज़र रखता है।

16. ये वे लोग हैं जो कहते हैं : “हमारे रब, हम ईमान लाए हैं। अतः हमारे

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ  
جَهَنَّمَ وَيُرْسِلُ إِلَيْهَا ذُرِّيَّتَهُ قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ  
فِي فِتْنَةِ النَّصْرَةِ فَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ  
وَأُخْرَى كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُمْ مِثْلَهُمْ فِي الْعَيْنِ  
وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهِ مَن يَشَاءُ إِنَّ فِي ذَلِكَ  
لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝ رُتِبَ لِلنَّاسِ حُبُّ  
الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ  
مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَ  
الْأَنْعَامِ وَالْخَرْبِ ذَلِكَ مَتَاعُ الدُّنْيَا  
وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَاٰبِ ۝ قُلْ أَوْفُوا بِعَهْدِكُمْ  
يَخَيْرُ مِمَّنْ ذَلِكُمْ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ  
جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا  
وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ  
بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا أَمَتْنَا



गुनाहों को क्षमा कर दे और हमें आग (जहन्नम) की यातना से बचा ले।”

17. ये लोग धैर्य से काम लेनेवाले, सत्यवान और अत्यन्त आज्ञाकारी हैं, ये (अल्लाह के मार्ग में) खर्च करते और रात की अंतिम घड़ियों में क्षमा की प्रार्थनाएँ करते हैं।

18. अल्लाह ने गवाही दी कि उसके सिवा कोई पूज्य नहीं; और फ़रिश्तों ने और उन लोगों ने भी जो न्याय और संतुलन स्थापित करनेवाली एक सत्ता को जानते हैं। उस प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी के सिवा कोई पूज्य नहीं।

19. दीन (धर्म) तो अल्लाह की दृष्टि में इस्लाम ही है। जिन्हें किताब दी गई थी, उन्होंने तो इसमें इसके पश्चात् विभेद किया कि ज्ञान उनके पास आ चुका था। ऐसा उन्होंने परस्पर दुराग्रह के कारण किया। जो अल्लाह की आयतों का इनकार करेगा तो अल्लाह भी जल्द हिसाब लेनेवाला है।

20. अब यदि वे तुमसे झगड़ें तो कह दो : “मैंने और मेरे अनुयायियों ने तो अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया है।” और जिन्हें किताब मिली थी और जिनके पास किताब नहीं है, उनसे कहो : “क्या तुम भी इस्लाम को अपनाते हो?” फिर यदि वे इस्लाम को अंगीकार कर लें तो सीधा मार्ग पा गए। और यदि मुँह मोड़ें तो तुमपर केवल (संदेश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है। और अल्लाह स्वयं बन्दों को देख रहा है।

21. जो लोग अल्लाह की आयतों का इनकार करें और नबियों को नाहक़ क़त्ल करें और उन लोगों को क़त्ल करें जो न्याय के पालन करने को कहें,

فَاَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ الضُّعِفَيْنِ وَالْمُنْفِقِينَ وَالْمُتَغَيِّرِينَ ۝ وَالْمُتَغَيِّرِينَ ۝ شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۝ وَ  
الْمَلَكُوتُ ۝ وَأُولُوا الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ ۝ لَا إِلَهَ إِلَّا  
هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ اللَّهِ لَإِسلامٌ  
وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ  
مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۝ وَمَنْ يَكْفُرْ  
بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ فَإِنْ  
حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اشْتَمَعُ ۝  
وَقُلْ لِلَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ وَالْأُمِّيَّةَ ۝ أَسْلَمْتُمْ  
فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۝ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا  
عَلَيْكَ الْبَلَاءُ ۝ وَاللَّهُ بِصِغِيرِ الْعِبَادِ ۝ إِنَّ  
الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ



उनको दुखद यातना की मंगल सूचना दे दो।

22. यही लोग हैं, जिनके कर्म दुनिया और आखिरत में अकारण गए और उनका सहायक कोई भी नहीं।

23. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें ईश-ग्रंथ का एक हिस्सा प्रदान हुआ। उन्हें अल्लाह की किताब की ओर बुलाया जाता है कि वह उनके बीच निर्णय करे, फिर भी उनका एक गिरोह (उसकी) उपेक्षा करते हुए मुँह फेर लेता है?

24. यह इसलिए कि वे कहते हैं:

“आग हमें नहीं छू सकती। हाँ, कुछ गिने-चुने दिनों (के कष्टों) की बात और है।” उनकी मनघड़ंत बातों ने, जो वे घड़ते रहे हैं, उन्हें धोखे में डाल रखा है।

25. फिर क्या हाल होगा, जब हम उन्हें उस दिन इकट्ठा करेंगे, जिसके आने में कोई संदेह नहीं और प्रत्येक व्यक्ति को, जो कुछ उसने कमाया होगा, पूरा-पूरा मिल जाएगा; और उनके साथ कोई अन्याय न होगा।

26. कहो: “ऐ अल्लाह, राज्य के स्वामी! तू जिसे चाहे राज्य दे और जिससे चाहे राज्य छीन ले, और जिसे चाहे इज्जत (प्रभुत्व) प्रदान करे और जिसको चाहे अपमानित कर दे। तेरे ही हाथ में भलाई है। निस्संदेह तुझे हर

يَقْتُلُونَ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ  
مِنَ النَّاسِ قَبْلُ هُمْ يَكُونُونَ عِدَايَ الَّذِينَ  
الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ  
مِنْ تَصَدِّيقٍ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا  
مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ لِيُقْضَىٰ  
بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ فَوْثًا مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝  
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا  
مَّعْدُودَةً ۖ وَأَعْرَضُوا عَنْ مَا كَانُوا  
يَفْتَرُونَ ۝ قَلِيلٌ إِذَا جَسَعْنَاهُمْ يَوْمَ لَا  
رَيْبَ لِنُؤْيِدَ سَوْفَ قِيَتَ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا  
يُظْلَمُونَ ۝ قُلِ اللَّهُمَّ مَالِكُ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ  
مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ وَتُعِزُّ  
مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ ۚ يَدُوكَ الْخَيْرُ ۚ إِنَّكَ



चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

27. तू रात को दिन में पिरोता है और दिन को रात में पिरोता है। तू निर्जीव से सजीव को निकालता है और सजीव से निर्जीव को निकालता है। और जिसे चाहता है, बेहिसाब देता है।”

28. ईमानवालों को चाहिए कि वे ईमानवालों से हटकर इनकार करनेवालों को अपना मित्र (राज़दार) न बनाएँ, और जो ऐसा करेगा, उसका अल्लाह से कोई संबंध नहीं, क्योंकि उससे सम्बन्ध यही बात है कि तुम उनसे बचो, जिस प्रकार वे तुमसे बचते हैं।

और अल्लाह तुम्हें अपने आपसे डराता है, और अल्लाह ही की ओर लौटना है।

29. कह दो : “यदि तुम अपने दिलों की बात छिपाओ या उसे प्रकट करो, प्रत्येक दशा में अल्लाह उसे जान लेगा। और वह उसे भी जानता है, जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। और अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।”

30. जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी की हुई भलाई और अपनी की हुई बुराई को सामने मौजूद पाएगा, वह कामना करेगा कि काश ! उसके और उस दिन के बीच बहुत दूर का फ़ासला होता। और अल्लाह तुम्हें अपना भय दिलाता है, और वह अपने बन्दों के लिए अत्यन्त करुणामय है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ تُولِيهِ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ  
تُولِيهِ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمِنَ الْمَيِّتِ  
وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ  
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ لَا يَتَخَذُ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ  
أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ  
فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ ۚ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ  
نَفْسَهُ ۚ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۚ وَاللَّهُ الْوَاسِعُ ۚ  
قُلْ إِنْ تَحْفَظُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ  
يَعْلَمَهُ اللَّهُ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ  
وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ  
نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُنْخَضًّا ۖ وَمَّا عَمِلَتْ  
مِنْ سُوءٍ ۖ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا  
بَعِيدًا ۚ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۚ وَاللَّهُ زَوُّوفٌ  
بِالْعِبَادِ ۝

مَثَل

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



31. कह दो : “यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह भी तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।”

32. कह दो : “अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करो।” फिर यदि वे मुँह मोड़ें तो अल्लाह भी इनकार करनेवालों से प्रेम नहीं करता।

33. अल्लाह ने आदम, नूह, इबराहीम की संतान और इमरान की संतान को सारे संसार की अपेक्षा प्राथमिकता देकर चुना।

34. एक नस्ल के रूप में, उसमें से एक पीढ़ी, दूसरी पीढ़ी से पैदा हुई। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

35. याद करो जब इमरान की स्त्री ने कहा : “मेरे रब ! जो बच्चा मेरे पेट में है उसे मैंने हर चीज़ से छुड़ाकर भेंट स्वरूप तुझे अर्पित किया। अतः तू उसे मेरी ओर से स्वीकार कर। निस्संदेह तू सब कुछ सुनता, जानता है।”

36. फिर जब उसके यहाँ बच्ची पैदा हुई तो उसने कहा : “मेरे रब ! मेरे यहाँ तो लड़की पैदा हुई है”—अल्लाह तो जानता ही था जो कुछ उसके यहाँ पैदा हुआ था। और वह लड़का उस लड़की की तरह नहीं हो सकता—“और मैंने उसका नाम मरयम रखा है। और मैं उसे और उसकी संतान को तिरस्कृत शैतान (के उपद्रव) से सुरक्षित रखने के लिए तेरी शरण में देती हूँ।”

37. अतः उसके रब ने उसका अच्छी स्वीकृति के साथ स्वागत किया और

آل عمران

سورة آل عمران

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ  
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝  
قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ  
لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَ  
نُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝  
ذُرِّيَّتَهُ بَعْضَهَا مِنْ بَعْضٍ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝  
إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ  
مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ  
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ  
إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتَ ۖ وَ  
لَيْسَ الذَّكَرُ إِلَّا لَأُنْثَىٰ ۖ وَإِنِّي سَتِيتُهَا مَظْمُونًا  
أَعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتُهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝  
فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا

مَنْكُ



उत्तम रूप में उसे परवान चढ़ाया; और ज़क़रिया को उसका संरक्षक बनाया। जब कभी ज़क़रिया उसके पास मेहराब (इबादतगाह) में जाता, तो उसके पास कुछ रोज़ी पाता। उसने कहा : “ऐ मरयम ! ये चीज़ें तुझे कहाँ से मिलती हैं ?” उसने कहा : “यह अल्लाह के पास से है।” निस्संदेह अल्लाह जिसे चाहता है, बेहिसाब देता है।

38. वहीं ज़क़रिया ने अपने रब को पुकारा, कहा : “मेरे रब ! मुझे तू अपने पास से अच्छी संतान (अनुयायी) प्रदान कर। तू ही प्रार्थना का सुननेवाला है।”

39. तो फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी, जबकि वह मेहराब में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था : “अल्लाह, तुझे यह्या की शुभ-सूचना देता है, जो अल्लाह के एक कलिमे की पुष्टि करनेवाला, सरदार, अत्यन्त संयमी और अच्छे लोगों में से एक नबी होगा।”

40. उसने कहा : “मेरे रब ! मेरे यहाँ लड़का कैसे पैदा होगा, जबकि मुझे बुढ़ापा आ गया है और मेरी पत्नी बाँझ है ?” कहा : “इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है, करता है।”

41. उसने कहा : “मेरे रब ! मेरे लिए कोई आदेश निश्चित कर दे।” कहा : “तुम्हारे लिए आदेश यह है कि तुम लोगों से तीन दिन तक संकेत के सिवा कोई बातचीत न करो। अपने रब को बहुत अधिक याद करो और सायंकाल और

حَسَنًا، وَكُلْفَهَا زَكْرِيَّا؛ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا، قَالَ يَمْرَيْمُ أَنَّى لَكَ هَذَا، قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ، إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۖ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ، قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً، إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۖ فَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ، أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيحْيَى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ ۖ قَالَ رَبِّ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ، قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۖ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً، قَالَ آيَتُكَ إِلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمَزًا وَادْكُرُّ رَبَّكَ كَثِيرًا ۝



प्रातः समय उसकी तसबीह (महिमागान) करते रहे।”

42. और जब फ़रिश्तों ने कहा : “ऐ मरयम ! अल्लाह ने तुझे चुन लिया और तुझे पवित्रता प्रदान की और तुझे संसार की स्त्रियों के मुक़ाबले में चुन लिया।

43. ऐ मरयम ! पूरी निष्ठा के साथ अपने रब की आज्ञा का पालन करती रह, और सजदा कर और झुकनेवालों के साथ तू भी झुकती रह।”

44. यह परोक्ष की सूचनाओं में से है, जिसकी वह्य हम तुम्हारी ओर कर रहे हैं।<sup>1</sup> तुम तो उस समय उनके पास नहीं थे, जब वे अपनी क़लमों को फेंक रहे थे कि उनमें कौन मरयम का संरक्षक बने और न उस समय तुम उनके पास थे, जब वे आपस में झगड़ रहे थे।

45. और याद करो जब फ़रिश्तों ने कहा : “ऐ मरयम ! अल्लाह तुझे अपने एक कलिमे (बात) की शुभ-सूचना देता है, जिसका नाम मसीह, मरयम का बेटा, ईसा होगा। वह दुनिया और आखिरत में आबरूवाला होगा और अल्लाह के निकटवर्ती लोगों में से होगा।

46. वह लोगों से पालने में भी बात करेगा और बड़ी आयु को पहुँचकर भी। और वह नेक व्यक्ति होगा।—

47. वह बोली : “मेरे रब ! मेरे यहाँ लड़का कहाँ से होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं?” कहा : “ऐसा ही होगा, अल्लाह जो

سَبِّحْ بِالصَّبْرِ وَالْإِنْكَارِ ۖ وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ  
يَمْرُؤُا إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ  
عَلَى نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ۝ يَمْرُؤُا أَقْبَلْتِي لِرَبِّكِ  
وَأَسْجُدِي وَارْكَعِي مَعَ الرَّاكِعِينَ ۝ ذَلِكَ  
مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمَا كُنْتَ  
لَدَيْهِمْ إِذْ يَقُولُونَ أَفَلَا مَمْلُوءَةٌ أَيْمَانُكُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ  
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُخْتَصِمُونَ ۝ إِذْ قَالَتِ  
الْمَلَائِكَةُ يَمْرُؤُا إِنَّ اللَّهَ يَدْبِرُ لَكِ بِكَلِمَةٍ مِنْهُ  
اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي  
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝ وَيُكَلِّمُ  
النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝  
قَالَتِ رَبِّ أَفَى يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَنْسَسْنِي  
بَشَرٌ ۚ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ إِذَا قَضَىٰ

1. अर्थात् प्रकाशना (Revelation) के द्वारा तुम्हें सूचित कर रहे हैं।



चाहता है, पैदा करता है। जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है तो उसको बस यही कहता है 'हो जा' तो वह हो जाता है।

48. और उसको किताब, हिकमत, तौरात और इंजील का ज्ञान देगा।

49. और उसे इसराईल की संतान की ओर रसूल बनाकर भेजेगा। (वह कहेगा) कि "मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षी के रूप जैसी आकृति बनाता हूँ, फिर उसमें फूँक मारता हूँ, तो वह अल्लाह के

आदेश से उड़ने लगती है। और मैं अल्लाह के आदेश से अंधे और कोढ़ी को अच्छा कर देता हूँ और मुर्दे को जीवित कर देता हूँ। और मैं तुम्हें बता देता हूँ जो कुछ तुम खाते हो और जो कुछ अपने घरों में इकट्ठा करके रखते हो। निस्संदेह इसमें तुम्हारे लिए एक निशानी है, यदि तुम माननेवाले हो।

50. और मैं तौरात की, जो मेरे आगे है, पुष्टि करता हूँ और इसलिए आया हूँ कि तुम्हारे लिए कुछ उन चीजों को हलाल कर दूँ जो तुम्हारे लिए हaram थीं। और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ। अतः अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा का पालन करो।

51. निस्संदेह अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा रब भी, अतः तुम उसी की बन्दगी करो। यही सीधा मार्ग है।"

52. फिर जब ईसा को उनके अविश्वास और इनकार का आभास हुआ तो

أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ وَيَعْلَمُ  
الْكَتَبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۚ وَرَسُولًا  
إِلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُمْ بِآيَةٍ  
مِّن رَّبِّكُمْ ۚ أَنِّي أَخْلَقْتُ لَكُمْ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ  
الطَّيْرِ فَانْفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَ  
أُبْرِئُ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ وَأُنْخِى الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ  
وَأَنْتَبِئُكُمْ بِمَا تَأْكُلُونَ وَمِمَّا تَدْخِرُونَ ۚ فِي  
بُيُوتِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُمْ  
مُؤْمِنِينَ ۚ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ  
التَّوْرَةِ وَلِإِجْلٍ لَّكُمْ بَعْضَ الَّذِي حُزِمَ عَلَيْكُمْ  
وَجِئْتُكُمْ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَ  
أَطِيعُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ ۚ فَاعْبُدُوهُ ۚ  
هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۚ فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمْ

مَذِلًّا



उसने कहा : “कौन अल्लाह की ओर बढ़ने में मेरा सहायक होता है ?” हवारियों (साथियों) ने कहा : “हम अल्लाह के सहायक हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाए और गवाह रहिए कि हम मुस्लिम हैं।

53. हमारे खब ! तूने जो कुछ उतारा है, हम उसपर ईमान लाए और इस रसूल का अनुसरण स्वीकार किया। अतः तू हमें गवाही देनेवालों में लिख ले।”

54. और वे चाल चले तो अल्लाह ने भी उसका तोड़ दिया और अल्लाह उत्तम तोड़ करनेवाला है।

الْكَفَرُ قُلْ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ  
نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ أَمَّا يَا لُؤْلُؤُا فَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ  
رَبَّنَا أَمَّا بِمَا أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا  
مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَمَكْرُؤًا وَمَكْرًا لِلَّهِ وَاللَّهُ خَبِيرٌ  
الْمَكْرِينِ ۝ إِذْ قَالَ اللَّهُ لِيُعِينَنِي عَلَىٰ مُتَوَكِّفِكَ  
وَرَافِعِكَ إِلَىٰ مَطْهَرِكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا  
وَجَاعِلِ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا  
إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ ثُمَّ إِنِّي مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ  
بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ فَاَمَّا  
الَّذِينَ كَفَرُوا فَأَعْلَيْتُ بِهِمُ عَذَابًا شَدِيدًا فِي  
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝ وَأَمَّا  
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ  
وَاللَّهُ لَا يَجِبُ الظَّالِمِينَ ۝ ذَلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ

55. जब अल्लाह ने कहा : “ऐ ईसा ! मैं तुझे अपने कब्जे में ले लूँगा और तुझे अपनी ओर उठा लूँगा और अविश्वासियों (की कुचेष्टाओं) से तुझे पाक कर दूँगा और तेरे अनुयायियों को क्रियामत के दिन तक उन लोगों के ऊपर रखूँगा, जिन्होंने इनकार किया। फिर मेरी ओर तुम्हें लौटना है। फिर मैं तुम्हारे बीच उन चीजों का फ़ैसला कर दूँगा, जिनके विषय में तुम विभेद करते रहे हो।

56. तो जिन लोगों ने इनकार की नीति अपनाई, उन्हें दुनिया और आखिरत में कड़ी यातना दूँगा। उनका कोई सहायक न होगा।”

57. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें वह उनका पूरा-पूरा बदला देगा। अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

58. ये आयतें हैं और हिकमत (तत्त्वज्ञान) से परिपूर्ण अनुस्मारक, जो हम



तुम्हें सुना रहे हैं।

59. निस्संदेह अल्लाह की दृष्टि में ईसा की मिसाल आदम जैसी है कि उसे मिट्टी से बनाया, फिर उससे कहा : "हो जा", तो वह हो जाता है।<sup>1</sup>

60. यह हक़ तुम्हारे रब की ओर से है, तो तुम संदेह में न पड़ना।

61. अब इसके पश्चात कि तुम्हारे पास ज्ञान आ चुका है, कोई तुमसे इस विषय में कुतर्क करे तो कह दो : "आओ, हम अपने बेटों को बुला लें और तुम भी अपने बेटों को बुला लो, और हम अपनी स्त्रियों को बुला लें और तुम भी

अपनी स्त्रियों को बुला लो, और हम अपने को और तुम अपने को ले आओ, फिर मिलकर प्रार्थना करें और झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें।"

62. निस्संदेह यही सच्चा बयान है और अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। और अल्लाह ही प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

63. फिर यदि वे लोग मुँह मोड़ें तो अल्लाह फ़सादियों को भली-भाँति जानता है।

64. कहो : "ऐ किताबवालो ! आओ एक ऐसी बात की ओर जिसे हमारे और तुम्हारे बीच समान मान्यता प्राप्त है; यह कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करें और न उसके साथ किसी चीज़ को साझी ठहराएँ और न परस्पर हममें से कोई एक-दूसरे को अल्लाह से हटकर रब बनाए।" फिर यदि

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ  
عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ  
لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنَ مِنَ  
الْمُتَرَدِّينَ ۝ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا  
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَ  
أَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ  
ثُمَّ تَبْتَهِلْ فَنَجْعَلُ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ۝  
إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا  
اللَّهُ ۝ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ فَإِنْ  
تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ۝ قُلْ يَا أَهْلَ  
الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ  
أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ  
بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ ۝ فَإِنْ تَوَلَّوْا

مِنْ

1. अर्थात् किसी चीज़ की रचना के लिए अल्लाह का इरादा ही काफ़ी होता है। इस सिलसिले में वह किसी बाह्य वस्तु का मुहताज नहीं।



वे मुँह मोड़ें तो कह दो : “गवाह रहो, हम तो मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।”

65. “ऐ किताबवालो ! तुम इबराहीम के विषय में हमसे क्यों झगड़ते हो ? जबकि तौरात और इंजील तो उसके पश्चात् उतारी गई हैं, तो क्या तुम समझ से काम नहीं लेते ?

66. ये तुम लोग हो कि उसके विषय में तो वाद-विवाद कर चुके जिसका तुम्हें कुछ ज्ञान था। अब उसके विषय में क्यों वाद-विवाद करते हो, जिसके विषय में तुम्हें कुछ भी ज्ञान नहीं ? अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।”

67. इबराहीम न यहूदी था और न ईसाई, बल्कि वह तो एक ओर का होकर रहनेवाला मुस्लिम (आज्ञाकारी) था। वह कदापि मुशरिकों में से न था।

68. निस्संदेह इबराहीम से सबसे अधिक निकटता का सम्बन्ध रखनेवाले वे लोग हैं जिन्होंने उसका अनुसरण किया, और यह नबी और ईमानवाले लोग। और अल्लाह ईमानवालों का समर्थक एवं सहायक है।

69. किताबवालों में से एक गिरोह के लोगों की कामना है कि काश ! वे तुम्हें पथभ्रष्ट कर सकें, जबकि वे केवल अपने-आपको पथभ्रष्ट कर रहे हैं ! किन्तु उन्हें इसका एहसास नहीं।

70. ऐ किताबवालो ! तुम अल्लाह की आयतों का इनकार क्यों करते हो, जबकि तुम स्वयं गवाह हो ?

71. ऐ किताबवालो ! सत्य को असत्य के साथ क्यों गड़ु-मड़ु करते और

فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ التَّوْرَةُ إِلَّا نَجِيلًا ۝ أَلَا تَعْقِلُونَ ۝ هَآأَنْتُمْ هَؤُلَاءِ حَاجِّجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ قُلِمَ تَحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ إِنَّ أَوَّلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا ۚ وَاللَّهُ وَرِثَةُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَذَاتَ ظُلُمَةٍ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ يَؤْيُضِلُونَكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ۝ يَا أَهْلَ

مَنْ



जानते-बूझते सत्य को छिपाते हो ?

72. किताबवालों में से एक गिरोह कहता है : "ईमानवालों पर जो कुछ उतरा है, उसपर प्रातः काल ईमान लाओ और संध्या समय उसका इनकार कर दो, ताकि वे फिर जाएँ।

73. और तुम अपने धर्म के अनुयायियों के अतिरिक्त किसी पर विश्वास न करो।—कह दो : 'वास्तविक मार्गदर्शन तो अल्लाह का मार्गदर्शन है'—कि कहीं जो चीज़ तुम्हें प्राप्त है, उस जैसी चीज़ किसी और को प्राप्त हो जाए, या वे तुम्हारे रब के सामने तुम्हारे खिलाफ़ हुज्जत कर सकें।" कह दो : "बढ़-चढ़कर प्रदान करना तो अल्लाह के हाथ में है, जिसे चाहता है प्रदान करता है। और अल्लाह बड़ी समाईवाला, सब कुछ जाननेवाला है।

74. वह जिसे चाहता है अपनी रहमत (दयालुता) के लिए खास कर लेता है। और अल्लाह बड़ी उदारता दशनिवाला है।"

75. और किताबवालों में कोई तो ऐसा है कि यदि तुम उसके पास धन-दौलत का एक ढेर भी अमानत रख दो तो वह उसे तुम्हें लौटा देगा। और उनमें कोई ऐसा है कि यदि तुम एक दीनार भी उसकी अमानत में रखो, तो जब तककि तुम उसके सिर पर सवार न हो, वह उसे तुम्हें अदा नहीं करेगा। यह इसलिए कि वे

الْكِتَابِ لِمَ تَلِيْسُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ  
وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۚ وَقَالَتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ  
الْكِتَابِ آمِنُوا بِالَّذِي أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجِئَتْ  
الْهُدَىٰ وَآكْفَرُوا لِأَخَرَةٍ لَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۚ وَلَا تُؤْمِنُوا  
إِلَّا لِمَن نَّبَعُ دِينَكُمْ ۚ قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَىٰ اللَّهِ  
أَنْ يُؤْتِيَهُ أَحَدٌ مِّثْلُ مَا أُوتِيْتُمْ أَوْ يَحْجُوكُمْ  
عِنْدَ رَبِّكُمْ ۚ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن  
يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۚ يُخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن  
يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۚ وَمِنَ أَهْلِ الْكِتَابِ  
مَن إِنْ تَأْمَنَهُ بَقِطَ إِذْ يُؤَدِّي إِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ  
إِنْ تَأْمَنَهُ بَدِينَارٍ لَا يُؤَدِّي إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ  
عَلَيْهِ ۚ فَأَيُّ آيَةٍ لَهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي  
الْأَمْرِ شَيْءٌ سَبِيلُ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذْبَ وَهُمْ



कहते हैं : “उन लोगों के विषय में जो किताबवाले नहीं हैं हमारी कोई पकड़ नहीं।” और वे जानते-बूझते अल्लाह पर झूठ मढ़ते हैं।

76. क्यों नहीं, जो कोई अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा और डर रखेगा, तो अल्लाह भी डर रखनेवालों से प्रेम करता है।

77. रहे वे लोग जो अल्लाह की प्रतिज्ञा और अपनी कसमों का थोड़े मूल्य पर सौदा करते हैं, उनका आखिरत में कोई हिस्सा नहीं। अल्लाह न तो उनसे बात करेगा और न क्रियामत के दिन उनकी ओर देखेगा, और न ही उन्हें निखारेगा। उनके लिए तो दुखद यातना है।

78. उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो किताब पढ़ते हुए अपनी ज़बानों का इस प्रकार उलट-फेर करते हैं कि तुम समझो कि वह किताब ही में से है, जबकि वह किताब में से नहीं होता। और वे कहते हैं : “यह अल्लाह की ओर से है।” जबकि वह अल्लाह की ओर से नहीं होता। और वे जानते-बूझते झूठ गढ़कर अल्लाह पर थोपते हैं।

79. किसी मनुष्य के लिए यह संभव न था कि अल्लाह उसे किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) और पैग़म्बरी प्रदान करे और वह लोगों से कहने लगे : “तुम अल्लाह को छोड़कर मेरे उपासक बनो।” बल्कि वह तो यही कहेगा कि : “तुम रबवाले बनो, इसलिए कि तुम किताब की शिक्षा देते हो और इसलिए कि तुम स्वयं भी पढ़ते हो।”

80. और न वह तुम्हें इस बात का हुक्म देगा कि तुम फ़रिश्तों और नबियों को अपना रब बना लो। क्या वह तुम्हें अधर्म का हुक्म देगा, जबकि तुम





(उसके) आज्ञाकारी हो ?

81. और याद करो जब अल्लाह ने नबियों के संबंध में वचन लिया कि : "मैंने तुम्हें जो कुछ किताब और हिकमत प्रदान की, इसके पश्चात तुम्हारे पास कोई रसूल उसकी पुष्टि करता हुआ आए जो तुम्हारे पास मौजूद है, तो तुम अवश्य उसपर ईमान लाओगे और निश्चय ही उसकी सहायता करोगे।" कहा : "क्या तुमने इक्कार किया ? और इसपर मेरी ओर से डाली हुई ज़िम्मेदारी का बोझ उठाया ?" उन्होंने कहा : "हमने इक्कार किया।" कहा :

"अच्छा तो गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ।"

82. फिर इसके बाद जो फिर गए, तो ऐसे ही लोग अवज्ञाकारी हैं।

83. अब क्या इन लोगों को अल्लाह के दीन (धर्म) के सिवा किसी और दीन की तलब है, हालाँकि आकाशों और धरती में जो कोई भी है स्वेच्छापूर्वक या विवश होकर उसी के आगे झुका हुआ है। और उसी की ओर सबको लौटना है ?

84. कहो : "हम तो अल्लाह पर और उस चीज़ पर ईमान लाए जो हम पर उतरी है, और जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक और याकूब और उनकी संतान पर उतरी उसपर भी, और जो मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान हुई (उसपर भी हम ईमान रखते हैं)। हम उनमें से किसी को उस सम्बन्ध से अलग नहीं करते जो उनके बीच पाया जाता है, और हम उसी के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं।"

85. जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) तलब करेगा तो उसकी

الْمُؤْمِنِينَ

الْمُؤْمِنِينَ

أَيُّكُمْ بِالْكَفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۚ وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْنَاكُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ ۚ قَالَ أَأَقْرَضُكُمْ وَآخَذْتُكُمْ عَلَىٰ ذَلِكُمْ ۚ اصْرِي ۚ قَالُوا أَأَقْرَضْنَا ۚ قَالَ فَاشْهَدُوا ۚ وَأَنَا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۚ فَمَنْ تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۚ أَفَغَيَّرَ دِينَ اللَّهِ يَبْغُونَ ۚ وَلَٰكُلِّ أَسْلَمٍ مِّنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا ۚ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۚ قُلْ أَمَّا بِاللهِ وَمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۚ وَمَنْ يَبْتَغِ

مَنْزِلَ



ओर से कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा। और आखिरत में वह घाटा उठानेवालों में से होगा।

86. अल्लाह उन लोगों को कैसे मार्ग दिखाएगा, जिन्होंने अपने ईमान के पश्चात् अधर्म और इनकार की नीति अपनाई, जबकि वे स्वयं इस बात की गवाही दे चुके हैं कि यह रसूल सच्चा है और उनके पास स्पष्ट निशानियाँ भी आ चुकी हैं? अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाया करता।

87. उन लोगों का बदला यही है कि उनपर अल्लाह और फ़रिश्तों और सारे मनुष्यों की लानत है।

88. इसी दशा में वे सदैव रहेंगे, न उनकी यातना हल्की होगी और न उन्हें मुहलत ही दी जाएगी।

89. हाँ, जिन लोगों ने इसके पश्चात तौबा कर ली और अपनी नीति को सुधार लिया तो निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

90. रहे वे लोग जिन्होंने अपने ईमान के पश्चात इनकार किया और अपने इनकार में बढ़ते ही गए, उनकी तौबा कदापि स्वीकार न होगी। वास्तव में वही पथभ्रष्ट हैं।

91. निस्संदेह जिन लोगों ने इनकार किया और इनकार ही की दशा में मरे, तो उनमें किसी से धरती के बराबर सोना भी, यदि उसने प्राण-मुक्ति के लिए दिया हो, कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा। ऐसे लोगों के लिए दुखद यातना है और उनका कोई सहायक न होगा।

عَنِ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ، وَهُوَ فِي  
الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا  
كَفَرُوا بَعْدَ إِتْمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرُّسُولَ حَقٌّ وَ  
جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝  
أُولَٰئِكَ جَزَاءُهُمْ أَنْ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ  
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ  
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ  
بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ إِنَّ  
الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِتْمَانِهِمْ ثُمَّ أَزْدَادُوا كُفْرًا لَنْ  
تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ، وَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ إِنَّ  
الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ  
أَحَدِهِمْ قِيلٌ أَلْأَرْضُ ذَهَبًا وَلَوْ افْتَدَىٰ بِهِ ۚ  
أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَالَهُمْ مِنْ تَصْرِيحٍ ۝



92. तुम नेकी और वफादारी के दर्जे को नहीं पहुँच सकते, जब तककि उन चीज़ों को (अल्लाह के मार्ग में) खर्च न करो, जो तुम्हें प्रिय हैं। और जो चीज़ भी तुम खर्च करोगे, निश्चय ही अल्लाह को उसका ज्ञान होगा।

93. खाने की सारी चीज़ें इसराईल की संतान के लिए हलाल थीं, सिवाय उन चीज़ों के जिन्हें तौरात के उतरने से पहले इसराईल ने स्वयं अपने लिए हaram कर लिया था। कहो : “यदि तुम सच्चे हो तो तौरात लाओ और उसे पढ़ो।”

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ ۚ  
وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۚ  
الطَّعَامِ كَانَ جَلًا لِإِبْنِي إِسْرَآءِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ  
إِسْرَآءِيلَ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرَةُ ۚ  
قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَةِ فَاتْلَوْهَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ  
فَمَنْ أَفْثَرُ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ  
قَالُوا لَيْسَ بِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۚ قُلْ صَدَقَ اللَّهُ ۚ  
فَأْتِيعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ  
الْمُشْرِكِينَ ۚ إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي  
بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِلْعَالَمِينَ ۚ فِيهِ آيَاتٌ  
بَيِّنَاتٌ مَقَامُ إِبْرَاهِيمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا ۚ  
وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ  
سَبِيلًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ۚ

94. अब इसके पश्चात् भी जो व्यक्ति झूठी बातें अल्लाह से जोड़े, तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं।

95. कहो : “अल्लाह ने सच कहा है; अतः इबराहीम के तरीके का अनुसरण करो, जो हर ओर से कटकर एक का हो गया था और मुशरिकों में से न था।”

96. निस्संदेह इबादत के लिए पहला घर जो ‘मानव के लिए’ बनाया गया वही है जो मक्का में है, बरकतवाला और सर्वथा मार्गदर्शन, संसारवालों के लिए।

97. उसमें स्पष्ट निशानियाँ हैं, वह इबराहीम का स्थल है। और जिसने उसमें प्रवेश किया, वह निश्चिन्त हो गया। लोगों पर अल्लाह का हक्क है कि जिसको वहाँ तक पहुँचने की सामर्थ्य प्राप्त हो, वह इस घर का हज करे, और जिसने इनकार किया तो (इस इनकार से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता), अल्लाह तो सारे संसार से निरपेक्ष है।”



98. कहो : “ऐ किताबवालो ! तुम अल्लाह की आयतों का इनकार क्यों करते हो, जबकि जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह की दृष्टि में है ?”

99. कहो : “ऐ किताबवालो ! तुम ईमान लानेवालों को अल्लाह के मार्ग से क्यों रोकते हो, तुम्हें उसमें किसी टेढ़ की तलाश रहती है, जबकि तुम भली-भाँति वास्तविकता से अवगत हो और जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह उससे बेखबर नहीं है।”

100. ऐ ईमान लानेवालो ! यदि तुमने उनके किसी गिरोह की बात मान ली, जिन्हें किताब मिली थी, तो वे तुम्हारे ईमान लाने के पश्चात फिर तुम्हें अधर्मी बना देंगे।

101. अब तुम इनकार कैसे कर सकते हो, जबकि तुम्हें अल्लाह की आयतें पढ़कर सुनाई जा रही हैं और उसका रसूल तुम्हारे बीच मौजूद है ? जो कोई अल्लाह को मज्रबूती से पकड़ ले, वह सीधे मार्ग पर आ गया।

102. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह का डर रखो, जैसाकि उसका डर रखने का हक है। और तुम्हारी मृत्यु बस इस दशा में आए कि तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो।

103. और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज्रबूती से पकड़ लो और विभेद में न पड़ो। और अल्लाह की उस कृपा को याद करो जो तुमपर हुई। जब तुम आपस में एक-दूसरे के शत्रु थे तो उसने तुम्हारे दिलों को परस्पर

ال عمران

क़िताब

قُلْ يَٰ أَهْلَ الْكِتَٰبِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللّٰهِ  
وَاللّٰهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ يَٰ أَهْلَ  
الْكِتَٰبِ لِمَ تُصَدِّدُونَ عَن سَبِيلِ اللّٰهِ مَن أَمَنَ  
تَبَغُّوْهَا عِوَجًا وَأَنتُمْ شَٰهَدَآءُ ۚ وَمَا اللّٰهُ  
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ يَٰ أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا  
إِن تَطِيعُوا قُرَيْشًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَٰبَ يَرُدُّوكُم  
بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كَافِرِينَ ۝ وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَ  
أَنتُمْ تَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ آيَاتِ اللّٰهِ وَفِيكُمْ رُسُلُهُ ۚ  
وَمَن يَعْصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلَىٰ صِرَاطٍ  
مُّسْتَقِيمٍ ۝ يَٰ أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَتَّى  
تُفْقِتَهُ ۚ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُمْ مُسْلِمُونَ ۝ وَاعْصِمُوا  
مِنْهُ اللّٰهُ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ  
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَآءَ قَالَفَ بَنِي قُلُوبِكُمْ

مَثَل



जोड़ दिया और तुम उसकी कृपा से भाई-भाई बन गए। तुम आग के एक गड्ढे के किनारे खड़े थे, तो अल्लाह ने उससे तुम्हें बचा लिया। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि तुम मार्ग पा लो।

104. और तुम्हें एक ऐसे समुदाय का रूप धारण कर लेना चाहिए जो नेकी की ओर बुलाए और भलाई का आदेश दे और बुराई से रोके। यही सफलता प्राप्त करनेवाले लोग हैं।

105. तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जो विभेद में पड़ गए, और इसके पश्चात कि उनके पास खुली निशानियाँ आ चुकी थीं, वे विभेद में पड़ गए। ये वही लोग हैं, जिनके लिए बड़ी (घोर) यातना है। (यह यातना उस दिन होगी।)

106. जिस दिन कितने ही चेहरे उज्ज्वल होंगे और कितने ही चेहरे काले पड़ जाएँगे, तो जिनके चेहरे काले पड़ गए होंगे (वे सदा यातना में ग्रस्त रहेंगे। खुली निशानियाँ आने के बाद जिन्होंने विभेद किया) उनसे कहा जाएगा : “क्या तुमने ईमान के पश्चात इनकार की नीति अपनाई? तो लो, अब उस इनकार के बदले में जो तुम करते रहे हो, यातना का मज़ा चखो।”

107. रहे वे लोग जिनके चेहरे उज्ज्वल होंगे, वे अल्लाह की दयालुता की छाया में होंगे। वे उसी में सदैव रहेंगे।

108. ये अल्लाह की आयते हैं, जिन्हें हम हक़ के साथ तुम्हें सुना रहे हैं। अल्लाह संसारवालों पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं करना चाहता।

فَاصْبِرْهُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا، وَكُنْتُمْ عَلَى شَفَا حُفْرَةٍ  
مِّنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِنْهَا كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ  
آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَلَتَكُنَّ مِنْكُمْ أُمَّةٌ  
يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ  
عَنِ الْمُنْكَرِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا  
كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ  
الْبَيِّنَاتُ، وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ  
تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ فَأَمَّا الَّذِينَ  
اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكْفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ  
فَلَذُقُوا الْعَذَابَ ۖ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ وَأَمَّا  
الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَبِئْسَ رَحْمَةً اللَّهُ  
هُم فِيهَا خَالِدُونَ ۝ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ تَتْلُوهَا  
عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعَالَمِينَ ۝



109. आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का है, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटाए जाते हैं।

110. तुम एक उत्तम समुदाय हो, जो लोगों के समक्ष लाया गया है। तुम नेकी का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो। और यदि किताबवाले भी ईमान लाते तो उनके लिए यह अच्छा होता। उनमें ईमानवाले भी हैं, किन्तु उनमें अधिकतर लोग अवज्ञाकारी ही हैं।

111. थोड़ा दुख पहुँचाने के अतिरिक्त वे तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। और यदि वे तुमसे लड़ेंगे, तो तुम्हें पीठ दिखा जाएँगे, फिर उन्हें कोई सहायता भी न मिलेगी।

112. वे जहाँ कहीं भी पाए गए उनपर ज़िल्लत (अपमान) थोप दी गई। किन्तु अल्लाह की रस्सी थामें या लोगों की रस्सी, तो और बात है। वे अल्लाह के प्रकोप के पात्र हुए और उनपर दशाहीनता थोप दी गई। यह इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों का इनकार और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते रहे हैं। और यह इसलिए कि उन्होंने अवज्ञा की और सीमोल्लंघन करते रहे।

113. ये सब एक जैसे नहीं हैं। किताबवालों में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो सीधे मार्ग पर हैं और रात की घड़ियों में अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और वे

अल मائدة

अल मائدة

وَاللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۚ كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْعَدْلِ وَنَهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَوْ آمَنَ أَهْلُ الْكِتَابِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ ۚ مِنْهُمْ الْمُؤْمِنُونَ وَأَكْثَرُهُمُ الْفَاسِقُونَ ۚ لَنْ يَضُرَّكُمْ إِلَّا أَذًى ۚ وَلَنْ يُفَاقِلُوكُمْ يُولُوكُمْ الْأَذْهَارَ ثُمَّ لَا يَنْصُرُونَ ۚ ضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةَ أَيْنَ مَا تَقِفُوا إِلَّا بِحَبْلٍ مِنَ اللَّهِ وَحَبْلِ مِنَ النَّاسِ ۚ وَبَاءَ وَبَعْضٌ مِنَ اللَّهِ وَصُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۚ لَيْسُوا سَوَاءً ۚ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَائِمَةٌ يَتْلُونَ آيَاتِ اللَّهِ أَنْتَاءَ

مَلِكٍ



सजदा करते रहनेवाले हैं।

114. वे अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं और नेकी का हुक्म देते और बुराई से रोकते हैं और नेक कामों में अग्रसर रहते हैं, और वे अच्छे लोगों में से हैं।

115. जो नेकी भी वे करेंगे, उसकी अवमानना न होगी। अल्लाह डर रखनेवालों से भली-भाँति परिचित है।

116. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया, तो अल्लाह के मुक्काबले में न उनके माल उनके कुछ काम आ सकेंगे और न उनकी संतान ही। वे तो आग में जानेवाले लोग हैं, उसी में वे सदैव रहेंगे।

117. इस सांसारिक जीवन के लिए जो कुछ भी वे खर्च करते हैं, उसकी मिसाल उस वायु जैसी है जिसमें पाला हो और वह उन लोगों की खेती पर चल जाए, जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया है और उसे विनष्ट करके रख दे। अल्लाह ने उनपर कोई अत्याचार नहीं किया, अपितु वे तो स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे हैं।

118. ऐ ईमान लानेवालो ! अपनों को छोड़कर दूसरों को अपना अंतरंग मित्र न बनाओ, वे तुम्हें नुकसान पहुँचाने में कोई कमी नहीं करते। जितनी भी तुम कठिनाई में पड़ो, वही उनको प्रिय है। उनका द्वेष तो उनके मुँह से व्यक्त हो चुका है और जो कुछ उनके सीने छिपाए हुए हैं, वह तो इससे भी बढ़कर

الَّذِينَ

الَّذِينَ

الَّذِينَ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ۝ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ  
الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ  
الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ ۚ وَأُولَٰئِكَ مِنَ  
الصَّالِحِينَ ۝ وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوهُ  
وَاللَّهُ عَلَيْهِم بِالشَّقَاةِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ  
تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ  
شَيْئًا ۚ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝  
مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ  
رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا  
أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ  
أَنفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا  
بِطَاغَةَ قَوْمٍ دُونِكُمْ لَا يَأْتِيكُمُ خَبْرًا ۚ وَذُوا  
مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۚ

مَثَلُ



है। यदि तुम बुद्धि से काम लो, तो हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोलकर बयान कर दी हैं।

119. ये तो तुम हो जो उनसे प्रेम करते हो और वे तुमसे प्रेम नहीं करते, जबकि तुम समस्त किताबों पर ईमान रखते हो। और वे जब तुमसे मिलते हैं तो कहने को तो कहते हैं कि : “हम ईमान लाए हैं।” किन्तु जब वे अलग होते हैं तो तुमपर क्रोध के मारे दाँतों से उँगलियाँ काटने लगते हैं। कह दो : “तुम अपने क्रोध में आप मरो। निस्संदेह अल्लाह दिलों के भेद को जानता है।”

وَمَا تَخْفَىٰ صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ  
الآيَاتِ إِن كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ۝ هَآأَنْتُمْ أَوْلَىٰ  
تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ  
كُلِّهِ ۚ وَإِذْ الْفُؤُكُمُ قَالُوا أَمْنًا ۚ وَإِذَا حَلَكُوا عَصَا  
عَلَيْكُمْ ۚ الْأَنَامِلُ مِنَ الْغَيْظِ ۚ قُلْ مُؤْمِنُوا بِغَيْظِكُمْ ۚ  
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۚ إِن كُنتُمْ  
حَسَنَةً تَسْأَلُهُمْ ۚ وَإِنْ تُصِيبَكُمْ سَيِّئَةٌ سَيِّئَةٌ يُفْرَحُوا  
بِهَا ۚ وَإِنْ تُصِيبُوا وَتَثْقَفُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ  
شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۚ وَإِذْ عَدُوَّتُ  
مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۚ  
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۚ إِذْ هَمَّتْ طَآءِفَتٌ مِنْكُمْ  
أَنْ تَفْشَلُوا ۚ وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ  
الْمُؤْمِنُونَ ۚ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ ۚ

120. यदि तुम्हारा कोई भला होता है तो उन्हें बुरा लगता है। परन्तु यदि तुम्हें कोई अप्रिय बात पेश आती है तो उससे वे प्रसन्न हो जाते हैं। यदि तुमने धैर्य से काम लिया और (अल्लाह का) डर रखा, तो उनकी कोई चाल तुम्हें कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचा सकती। जो कुछ वे कर रहे हैं, अल्लाह ने उसे अपने घेरे में ले रखा है।

121. याद करो जब तुम सवेरे अपने घर से निकलकर ईमानवालों को युद्ध के मोर्चों पर लगा रहे थे।<sup>1</sup>—अल्लाह तो सब कुछ सुनता, जानता है।

122. जब तुम्हारे दो गिरोहों ने साहस छोड़ देना चाहा, जबकि अल्लाह उनका संरक्षक मौजूद था—और ईमानवालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

123. और बद्र में<sup>2</sup> अल्लाह तुम्हारी सहायता कर भी चुका था, जबकि तुम

1. यह बात उहुद की लड़ाई के अवसर की है।

2. बद्र की लड़ाई में।



बहुत कमजोर हालत में थे। अतः अल्लाह ही का डर रखो, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

124. जब तुम ईमानवालों से कह रहे थे : “क्या यह तुम्हारे लिए काफी नहीं है कि तुम्हारा रब तीन हजार फ़रिश्ते उतारकर तुम्हारी सहायता करे?”

125. हाँ, क्यों नहीं। यदि तुम धैर्य से काम लो और डर रखो, फिर शत्रु सहसा तुमपर चढ़ आएँ, उसी क्षण तुम्हारा रब पाँच हजार विध्वंसकारी फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करेगा।

126. अल्लाह ने तो इसे तुम्हारे लिए बस एक शुभ-सूचना बनाया और इसलिए कि तुम्हारे दिल संतुष्ट हो जाएँ—सहायता तो बस अल्लाह ही के यहाँ से आती है जो अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

127. ताकि इनकार करनेवालों के एक हिस्से को काट डाले या उन्हें बुरी तरह पराजित और अपमानित कर दे कि वे असफल होकर लौटें।

128. तुम्हें इस मामले में कोई अधिकार नहीं—चाहे वह उनकी तौबा क़बूल करे या उन्हें यातना दे, क्योंकि वे अत्याचारी हैं।

129. आकाशों और धरती में जो कुछ भी है, अल्लाह ही का है। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे यातना दे। और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

130. ऐ ईमान लानेवालो ! बढ़ोत्तरी के ध्येय से ब्याज न खाओ, जो कई

المؤمنين

لن تنالوا

أَنْتُمْ أَذِلَّةٌ، فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُشْكُرُونَ ۝

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُبَدِّلَكُمْ

رَبَّكُمْ بِثَلَاثَةِ آلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُنْزَلِينَ ۝

بَلَىٰ ۚ إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُمْ مِنْ فُورِهِمْ

هَذَا يُبَدِّلُكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ

مُسَوِّمِينَ ۝ وَمَا جَعَلَ اللَّهُ إِلَّا بَشْرًا لَكُمْ

وَلِيْتَظِمْنَ قُلُوبَكُمْ بِهِ ۚ وَمَا الْغَضُّ إِلَّا مِنْ

عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ لِيَقْطَعَ طَرَقًا مِنَ

الدِّينِ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتْهُمْ فَيَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ ۝

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ

يُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ۝ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ

وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ

مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ

مَنْ



गुना अधिक हो सकता है। और अल्लाह का डर रखो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

131. और उस आग से बचो जो इनकार करनेवालों के लिए तैयार है।

132. और अल्लाह और रसूल के आज्ञाकारी बनो, ताकि तुमपर दया की जाए।

133. और अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर बढ़ो, जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है। वह उन लोगों के लिए तैयार है जो डर रखते हैं।

134. वे लोग जो खुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में खर्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं—और अल्लाह को भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं।

135. और जिनका हाल यह है कि जब वे कोई खुला गुनाह कर बैठते हैं या अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं, तो तत्काल अल्लाह उन्हें याद आ जाता है और वे अपने गुनाहों की क्षमा चाहने लगते हैं—और अल्लाह के अतिरिक्त कौन है, जो गुनाहों को क्षमा कर सके? और जानते-बूझते वे अपने किए पर अड़े नहीं रहते।

136. उनका बदला उनके रब की ओर से क्षमादान है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। और क्या ही अच्छा

لَا يُغْنِي عَنْهُمْ

لَا يُغْنِي عَنْهُمْ

أَمْثَلًا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً ۖ وَاتَّقُوا  
اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ  
لِلْكَافِرِينَ ۝ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ  
تُرحَمُونَ ۝ وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ  
وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ ۖ أُعِدَّتْ  
لِلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يُنفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَ  
الضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ  
عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ  
إِذَا فَعَلُوا فَاجِسَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذُكِّرُوا  
اللَّهُ فَاَسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ ۖ وَمَن يَغْفِرِ  
الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا  
وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ أُولَٰئِكَ جَزَاءُ هُم مَّغْفِرَةٌ  
مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّتِ بَجْرَىٰ مِّن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

سَرَّاءِ



बदला है अच्छे कर्म करनेवालों का ।

137. तुमसे पहले (धर्मविरोधियों के साथ अल्लाह की) रीति के कितने ही नमूने गुज़र चुके हैं, तो तुम धरती में चल-फिरकर देखो कि झुठलानेवालों का क्या परिणाम हुआ है ।

138. यह लोगों के लिए स्पष्ट बयान और डर रखनेवालों के लिए मार्गदर्शन और उपदेश है ।

139. हताश न हो और दुखी न हो, यदि तुम ईमानवाले हो, तो तुम्हीं प्रभावी रहोगे ।

140. यदि तुम्हें आघात पहुँचे तो उन लोगों को भी ऐसा ही आघात पहुँच चुका है । ये युद्ध के दिन हैं, जिन्हें हम लोगों के बीच डालते ही रहते हैं और ऐसा इसलिए हुआ कि अल्लाह ईमानवालों को जान ले और तुममें से कुछ लोगों को गवाह बनाए— और अत्याचारी अल्लाह को प्रिय नहीं हैं ।

141. और ताकि अल्लाह ईमानवालों को निखार दे और इनकार करनेवालों को मिटा दे ।

142. क्या तुमने यह समझ रखा है कि जन्नत में यूँ ही प्रवेश करोगे, जबकि अल्लाह ने अभी उन्हें परखा ही नहीं जो तुममें जिहाद (सत्य-मार्ग में जानतोड़ कोशिश) करनेवाले हैं ।—और दृढ़तापूर्वक जमे रहनेवाले हैं ।

143. और तुम तो मृत्यु की कामनाएँ कर रहे थे, जब तक कि वह तुम्हारे सामने नहीं आई थी । लो, अब तो वह तुम्हारे सामने आ गई और तुमने उसे

خَلِدِينَ فِيهَا وَلَنَعْمَ أَجْرُ الْعَمِلِينَ ۖ قَدْ  
خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ  
فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۚ هَذَا  
بَيَانٌ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۚ  
وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ  
مُؤْمِنِينَ ۚ إِنْ تَسْكُرْ قُرْآنًا فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ  
قُرْآنٌ مُّثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نَذَارٌ لِّهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ  
وَلِيُعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۚ  
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۚ وَلِيُمَخِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ  
آمَنُوا وَيَسْخَعَ الْكُفْرِينَ ۚ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا  
الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ  
وَيَعْلَمَ الظَّالِمِينَ ۚ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ  
مِنْ قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ ۚ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنْتُمْ



अपनी आँखों से देख लिया।

144. मुहम्मद तो बस एक रसूल हैं। उनसे पहले भी रसूल गुजर चुके हैं। तो क्या यदि उनकी मृत्यु हो जाए या उनकी हत्या कर दी जाए तो तुम उल्टे पाँव फिर जाओगे? जो कोई उल्टे पाँव फिरेगा, वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा। और कृतज्ञ लोगों को अल्लाह बदला देगा।

145. और अल्लाह की अनुज्ञा के बिना कोई व्यक्ति मर नहीं सकता। हर व्यक्ति एक लिखित निश्चित समय का अनुपालन कर रहा है। और जो कोई दुनिया का बदला चाहेगा, उसे हम इस दुनिया में से देंगे, जो आखिरत का बदला चाहेगा, उसे हम उसमें से देंगे और जो कृतज्ञता दिखलाएँगे, उन्हें तो हम बदला देंगे ही।

146. कितने ही नबी ऐसे गुजरे हैं जिनके साथ होकर बहुत-से ईशभक्तों ने युद्ध किया, तो अल्लाह के मार्ग में जो मुसीबत उन्हें पहुँची उससे वे न तो हताश हुए और न उन्होंने कोई कमजोरी दिखाई और न ऐसा हुआ कि वे दबे हों। और अल्लाह दृढ़तापूर्वक जमे रहनेवालों से प्रेम करता है।

147. उन्होंने कुछ नहीं कहा सिवाय इसके कि "ऐ हमारे रब! तू हमारे गुनाहों को और हमारे अपने मामले में जो ज्यादाती हमसे हो गई हो, उसे क्षमा कर दे और हमारे कदम जमाए रख, और इनकार करनेवाले लोगों के मुक्काबले

لَيَسْتَأْذِنَنَّ  
تَنْظُرُونَ ۚ وَمَا مُعْتَدٍ إِلَّا رَسُولٌ ۖ قَدْ خَلَتْ  
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ أَفَلَا يَنْمَاتُ أَوْ قَتَلَ النُّفُوسَ  
عَلَىٰ أَغْقَابِكُمْ ۚ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَىٰ عَقْبَيْهِ فَلَكَ  
يُضْمَرُ اللَّهُ شَيْئًا ۚ وَسَيُجْزَى اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ۝  
وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ كَتَبْنَا  
مُؤَلًّا ۚ وَمَنْ يَرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا ۚ  
وَمَنْ يَرِدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا ۚ وَسَجَّزَى  
الشَّاكِرِينَ ۝ وَكَأَيِّنْ مِنْ نَبِيٍّ قَبْلِكَ ۚ مَعَهُ  
رِبِّيُّونَ كَثِيرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوا لِمَا أَصَابَهُمْ فِي  
سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا ۚ وَاللَّهُ  
يُحِبُّ الصَّابِرِينَ ۝ وَمَا كَانَ قَوْلُهُمْ إِلَّا أَنْ  
قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي  
أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ



में हमारी सहायता कर।”

148. अतः अल्लाह ने उन्हें दुनिया का भी बदला दिया और आखिरत का अच्छा बदला भी। और सत्कर्मों लोगों से अल्लाह प्रेम करता है।

149. ऐ ईमान लानेवालो ! यदि तुम उन लोगों के कहने पर चलोगे जिन्होंने इनकार का मार्ग अपनाया है, तो वे तुम्हें उल्टे पाँव फेर ले जाएँगे। फिर तुम घाटे में पड़ जाओगे।

150. बल्कि अल्लाह ही तुम्हारा संरक्षक है; और वह सबसे अच्छा सहायक है।

151. हम शीघ्र ही इनकार करनेवालों के दिलों में धाक बिठा देंगे, इसलिए कि उन्होंने ऐसी चीज़ों को अल्लाह का साझी ठहराया है जिनके साथ उसने कोई सनद नहीं उतारी, और उनका ठिकाना आग (जहन्नम) है। और अत्याचारियों का क्या ही बुरा ठिकाना है।

152. और अल्लाह ने तो तुम्हें अपना वादा सच्चा कर दिखाया, जबकि तुम उसकी अनुज्ञा से उन्हें क़त्ल कर रहे थे। यहाँ तककि जब तुम स्वयं ढीले पड़ गए और काम में झगड़ा डाल दिया और अवज्ञा की, जबकि अल्लाह ने तुम्हें वह चीज़ दिखा दी थी जिसकी तुम्हें चाह थी। तुममें कुछ लोग दुनिया चाहते थे और कुछ आखिरत के इच्छुक थे। फिर अल्लाह ने तुम्हें उनके मुक़ाबले से हटा दिया, ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले। फिर भी उसने तुम्हें क्षमा कर दिया,

النّज़्ज़ा

النّज़्ज़ा

الْكُفْرَيْنِ ۖ فَآثَهُمُ اللَّهُ تَوَابَ الدُّنْيَا وَ  
حَسَنَ تَوَابِ الْآخِرَةِ ۚ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا  
يُرْذَوْكُمْ عَلَىٰ أَغْقَابِكُمْ فَانْقَلِبُوا خِسِرِينَ ۝ بَلِ  
اللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ ۝ سَلِّقُوا فِي  
قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِآلِهَتِهِ  
مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانٌ ۚ وَمَا لَهُمُ الشَّارُ ۚ وَ  
بِئْسَ مَثْوًى لِلظَّالِمِينَ ۝ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ  
وَعْدَهُ إِذْ تَعَصَّوهُمْ يَازِينُ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فُشِنَتْ  
تَنَارُغْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِمَّن بَعْدَ مَا  
أُرِيكُمْ مَا تُحِبُّونَ ۚ مِنْكُمْ مَّن يُرِيدُ الدُّنْيَا وَ  
مِنْكُمْ مَّن يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَقَكُمْ عَنْهُمْ  
لِيَتَّبِعَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۚ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ

مِنْ



क्योंकि अल्लाह ईमानवालों के लिए बड़ा अनुमाही है।

153. जब तुम लोग दूर भागे चले जा रहे थे और किसी को मुड़कर देखते तक न थे और रसूल तुम्हें पुकार रहा था, जबकि वह तुम्हारी दूसरी टुकड़ी के साथ था (जो भागी नहीं), तो अल्लाह ने तुम्हें शोक पर शोक दिया, ताकि तुम्हारे हाथ से कोई चीज़ निकल जाए या तुमपर कोई मुसीबत आए तो तुम शोकाकुल न हो। और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उसकी भली-भाँति खबर रखता है।

لَا تُخَافُوا ۚ اِلٰهُكُمْ اَحَدٌ ۚ اِذْ تُصَوِّدُوْنَ وَلَا تَقُولُوْنَ  
عَلٰى اَحَدٍ ۚ وَ الرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِىْ اُخْرٰىكُمْ  
فَاَنَابَكُمْ عَنْهَا فَيَعِيْمُ لِكَيْلًا تَخْرُجُوْا عَلٰى مَا قَالَكُمْ  
وَلَا مَا اَصَابَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ ثُمَّ  
اَنْزَلَ عَلٰىكُمْ مِنْۢ بَعْدِ الْقِيَمِ اَمْنَةً نَّعَاسًا  
يَغْشٰى طَآئِفَةً مِنْكُمْ ۚ وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ  
اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ  
يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ وَّقُلْ اِنْ  
الْاَمْرُ كُلُّهُ لِلّٰهِ ۚ يُخْفُوْنَ فِىْ اَنْفُسِهِمْ مَا لَا  
يُبْدُوْنَ لَكَ ۚ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ  
شَيْءٌ مَّا قَتَلْنَا هٰهٰنَا ۚ قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِىْ بَيُوْرِكُمْ  
لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ  
وَلِيَبْتَلِ اللّٰهُ مَا فِىْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُنْخِصَ مَا

154. फिर इस शोक के पश्चात उसने तुमपर एक शान्ति उतारी— एक निद्रा, जो तुममें से कुछ लोगों को घेर रही थी और कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्हें अपने प्राणों की चिन्ता थी। वे अल्लाह के विषय में ऐसा खयाल कर रहे थे, जो सत्य के सर्वथा प्रतिकूल, अज्ञान (काल) का खयाल था। वे कहते थे : “इन मामलों में क्या हमारा भी कुछ अधिकार है?” कह दो : “मामले तो सबके सब अल्लाह के (हाथ में) हैं।” वे जो कुछ अपने दिलों में छिपाए रखते हैं, तुमपर ज़ाहिर नहीं करते। कहते हैं : “यदि इस मामले में हमारा भी कुछ अधिकार होता तो हम यहाँ मारे न जाते।” कह दो : “यदि तुम अपने घरों में भी होते, तो भी जिन लोगों का क़त्ल होना तय था, वे निकलकर अपने अंतिम शयन-स्थलों तक पहुँचकर रहते।” और यह इसलिए भी था कि जो



कुछ तुम्हारे सीनों में है, अल्लाह उसे परख ले और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे साफ़ कर दे। और अल्लाह दिलों का हाल भली-भाँति जानता है।

155. तुममें से जो लोग दोनों गिरोहों की मुठभेड़ के दिन पीठ दिखा गए, उन्हें तो शैतान ही ने उनकी कुछ कमाई (कर्म) के कारण विचलित कर दिया था। और अल्लाह तो उन्हें क्षमा कर चुका है। निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमा करनेवाला, सहनशील है।

156. ऐ ईमान लानेवालो ! उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने इनकार किया और अपने भाइयों के विषय में, जबकि वे सफ़र में गए हों या युद्ध में हों (और उनकी वहाँ मृत्यु हो जाए तो), कहते हैं : "यदि वे हमारे पास होते तो न मरते और न क़त्ल होते। (ऐसी बातें तो इसलिए होती हैं) ताकि अल्लाह उनको उनके दिलों में घर करनेवाला पछतावा और संताप बना दे। अल्लाह ही जीवन प्रदान करने और मृत्यु देनेवाला है। और तुम जो कुछ भी कर रहे हो वह अल्लाह की दृष्टि में है।

157. और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में मारे गए या मर गए, तो अल्लाह का क्षमादान और उसकी दयालुता तो उससे कहीं उत्तम है, जिसके बटोरने में वे लगे हुए हैं।

158. हाँ, यदि तुम मर गए या मारे गए, तो प्रत्येक दशा में तुम अल्लाह ही के पास इकट्ठा किए जाओगे।

159. (तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा कर दिया) तो अल्लाह की ओर

فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝  
 إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ ۖ  
 إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۚ  
 وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝  
 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا  
 وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ أَوْ  
 كَانُوا غُرَرٍ لَوْ كَانُوا عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا  
 قُتِلُوا لِيُضِلَّ اللَّهُ ذَٰلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ ۚ  
 وَاللَّهُ يُحِبُّ وَيُؤَيِّتُ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝  
 وَلَٰكِنْ قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٍ  
 مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٍ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝ وَلَٰكِنْ مُّثَّمَّ  
 أَوْ قُتِلْتُمْ لَآ إِلَى اللَّهِ تَخَشَرُونَ ۝ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ  
 اللَّهِ لَأَنْتُمْ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتُمْ قُفُلًا غَلِيظَ الْقَلْبِ

مَذَل



से ही बड़ी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिए नर्म रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो ये सब तुम्हारे पास से छँट जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो और उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो। और मामलों में उनसे परामर्श कर लिया करो। फिर जब तुम्हारे संकल्प किसी सम्मति पर सुदृढ़ हो जाएँ तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्संदेह अल्लाह को वे लोग प्रिय हैं जो उसपर भरोसा करते हैं।

160. यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे, तो कोई तुमपर प्रभावी नहीं हो सकता। और यदि वह तुम्हें छोड़ दे, तो फिर कोन है जो उसके पश्चात तुम्हारी सहायता कर सके। अतः ईमानवालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

161. यह किसी नबी के लिए संभव नहीं कि वह दिल में कीना-कपट रखे, और जो कोई कीना-कपट रखेगा तो वह क़ियामत के दिन अपने द्वेष समेत हाज़िर होगा। और प्रत्येक व्यक्ति को उसकी कमाई का पूरा-पूरा बदला दे दिया जाएगा और उनपर कुछ भी ज़ुल्म न होगा।

162. भला क्या जो व्यक्ति अल्लाह की इच्छा पर चले वह उस जैसा हो सकता है जो अल्लाह के प्रकोप का भागी हो चुका हो और जिसका ठिकाना जहन्नम है? और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।

163. अल्लाह के यहाँ उनके विभिन्न दर्जे हैं और जो कुछ वे कर रहे हैं, अल्लाह की दृष्टि में है।

164. निस्संदेह अल्लाह ने ईमानवालों पर बड़ा उपकार किया, जबकि स्वयं उन्हीं में से एक ऐसा रसूल उठाया जो उन्हें उसकी आयतें सुनाता है और उन्हें

النَّبِيِّينَ

النَّبِيِّينَ

لَا تَغْضَبُوا مِنْ حَوْلِكَ فَقَافٍ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَارِزَهُمْ فِي الْأَمْرِ، فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ. إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ۝ إِنَّ يَنْصُرْكُمْ اللَّهُ فَلَا فَالِبَ لَكُمْ، وَإِنْ يَخْذَلْكُمْ فَكُنْ ذَا الَّذِي يَنْصُرُكُمْ مِنْ بَعْدِهِ. وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ، وَمَنْ يَغْلُ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ، ثُمَّ تَوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ أَفَمَنْ أَشَبَّ بِرِضْوَانِ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ بِسَخَطٍ مِنَ اللَّهِ وَمَا لَهُ بِهِ جَهَنَّمَ، وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ هُمْ دَرَجَتٌ عِنْدَ اللَّهِ. وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝ لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْ أَنْفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ



निखारता है, और उन्हें किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) की शिक्षा देता है, अन्यथा इससे पहले वे लोग खुली गुमराही में पड़े हुए थे।

165. यह क्या कि जब तुम्हें एक मुसीबत पहुँची, जिसकी दोगुनी तुमने पहुँचाई, तो तुम कहने लगे कि “यह कहाँ से आ गई?” कह दो : “यह तो तुम्हारी अपनी ओर से है, अल्लाह को तो हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।”

166. और दोनों गिरोहों की मुठभेड़ के दिन जो कुछ तुम्हारे सामने आया वह अल्लाह ही की अनुज्ञा से आया और इसलिए कि वह जान ले कि ईमानवाले कौन हैं।

167. और इसलिए कि वह कपटाचारियों को भी जान ले जिनसे कहा गया कि “आओ, अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो या दुश्मनों को हटाओ।” उन्होंने कहा : “यदि हम जानते कि लड़ाई होगी तो हम अवश्य तुम्हारे साथ हो लेते।” उस दिन वे ईमान की अपेक्षा अधर्म के अधिक निकट थे। वे अपने मुँह से वे बातें कहते हैं, जो उनके दिलों में नहीं होतीं। और जो कुछ वे छिपाते हैं, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

168. ये वही लोग हैं जो स्वयं तो बैठे रहे और अपने भाइयों के विषय में कहने लगे : “यदि वे हमारी बात मान लेते तो मारे न जाते।” कह दो : “अच्छा, यदि तुम सच्चे हो, तो अब तुम अपने ऊपर से मृत्यु को टाल देना।”

169. तुम उन लोगों को जो अल्लाह के मार्ग में मारे गए हैं, मुर्दा न समझो,

وَالْحِكْمَةُ، وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يَضِلُّ مُبِينٍ ۖ  
 أُولَئِكَ أَصَابَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِثْلَيْهَا ۚ  
 قُلْتُمْ أَنْ هَٰذَا قُلُوبُ الْمُؤْمِنِينَ عِنْدَ أَنْفُسِكُمْ ۚ إِنَّ  
 اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ  
 الْتَقَى الْجَمْعَانِ فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ  
 وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ تَافَقُوا ۖ فَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا  
 قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ اذْهَبُوا ۚ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ  
 قِتَالًا لَّا أَتَيْنَاكُمْ ۚ هُمْ لِلْكَفِيرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ  
 مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِمْ مَا لَيْسَ  
 فِي قُلُوبِهِمْ ۚ وَاللَّهُ أَغْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ۚ الَّذِينَ  
 قَالُوا لِلْإِخْوَانِ يَوْمَ وَقَعْدَا لَوْ أَطَاعُونَا مَا قَاتَلُوا ۚ  
 قُلْ فَادْرَأُوا عَنْ أَنْفُسِكُمُ التَّوْتَ إِنْ كُنْتُمْ  
 صَادِقِينَ ۚ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قَاتَلُوا فِي سَبِيلِ



बल्कि वे अपने रब के पास जीवित हैं, रोज़ी पा रहे हैं।

170. अल्लाह ने अपनी उदार कृपा से जो कुछ उन्हें प्रदान किया है, वे उसपर बहुत प्रसन्न हैं और उन लोगों के लिए भी खुश हो रहे हैं जो उनके पीछे रह गए हैं, अभी उनसे मिले नहीं हैं कि उन्हें भी न कोई भय होगा और न वे दुखी होंगे।

171. वे अल्लाह के अनुग्रह और उसकी उदार कृपा से प्रसन्न हो रहे हैं और इससे कि अल्लाह ईमानवालों का बदला नष्ट नहीं करता।

لَا يَضُرُّهُمْ ۖ  
 اللَّهُ أَمْوَاتًا ۖ بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ۝  
 فَيَرْجُونَ رَحْمَةً مِّنَ اللَّهِ ۖ وَمِنْ فَضْلِهِ ۖ وَيَسْتَبْشِرُونَ  
 بِالَّذِينَ كَفَرُوا يَلْحَقُوا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۖ أَلاْ خَوْفٌ  
 عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةِ  
 مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلِهِ ۖ وَآلَ اللَّهِ لَا يُضِلُّهُمُ أَجْرُ  
 الْمُؤْمِنِينَ ۝ آلَ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ  
 مِنْ بَعْدِ مَّا أَصَابَهُمُ الْقَرْصُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا  
 مِنْهُمْ ۖ وَاتَّقُوا أَجْرَ عَظِيمٍ ۝ الَّذِينَ قَالَتْ لَهُمُ  
 النَّاسُ إِنَّا نَارٌ ۖ قَدْ جَعَلْنَا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ  
 فَرَاَدَهُمْ إِنَّمَا نَزَّلْنَا وَقَالُوا احْسِبْنَا اللَّهَ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝  
 فَأَنقَلَبُوا بِنِعْمَةِ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلِهِ ۖ لَمْ يَنْسَهُمْ  
 سُلُوكُهُمْ ۖ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانِ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ۝  
 إِنَّمَا ذَلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَآءَهُ ۚ فَلَا تَخَافُوهُمْ

مَذَل

172. जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल की पुकार को स्वीकार किया, इसके पश्चात कि उन्हें आघात पहुँच चुका था। इन सत्कर्मों और (अल्लाह का) डर रखनेवालों के लिए बड़ा प्रतिदान है।

173. ये वही लोग हैं जिनसे लोगों ने कहा कि "तुम्हारे विरुद्ध लोग इकट्ठा हो गए हैं, अतः उनसे डरो।" तो इस चीज़ ने उनके ईमान को और बढ़ा दिया। और उन्होंने कहा : "हमारे लिए तो बस अल्लाह काफ़ी है और वही सबसे अच्छा कार्य-साधक है।"

174. तो वे अल्लाह की ओर से प्राप्त होनेवाली नेमत और उदार कृपा के साथ लौटे। उन्हें कोई तकलीफ़ छू भी नहीं सकी और वे अल्लाह की इच्छा पर चले भी, और अल्लाह बड़ी ही उदार कृपावाला है।

175. वह तो शैतान है जो अपने मित्रों को डराता है। अतः तुम उनसे न



डरो, बल्कि मुझी से डरो, यदि तुम ईमानवाले हो।

176. जो लोग अधर्म और इनकार में जल्दी दिखाते हैं, उनके कारण तुम दुखी न हो। वे अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। अल्लाह चाहता है कि उनके लिए आखिरत में कोई हिस्सा न रखे, उनके लिए तो बड़ी यातना है।

177. जो लोग ईमान की कीमत पर इनकार और अधर्म के ग्राहक हुए, वे अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, उनके लिए तो दुखद यातना है।

178. और यह ढील जो हम उन्हें दिए जाते हैं, इसे अधर्मी लोग अपने लिए अच्छा न समझें। यह ढील तो हम उन्हें सिर्फ इसलिए दे रहे हैं कि वे गुनाहों में और अधिक बढ़ जाएँ, और उनके लिए तो अत्यन्त अपमानजनक यातना है।

179. अल्लाह ईमानवालों को इस दशा में नहीं रहने देगा, जिसमें तुम हो। यह तो उस समय तक की बात है जबतक कि वह अपवित्र को पवित्र से पृथक नहीं कर देता। और अल्लाह ऐसा नहीं है कि वह तुम्हें परोक्ष की सूचना दे दे। किन्तु अल्लाह इस काम के लिए जिसको चाहता है चुन लेता है, और वे उसके रसूल होते हैं। अतः अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और यदि तुम ईमान लाओगे और (अल्लाह का) डर रखोगे तो तुमको बड़ा प्रतिदान मिलेगा।

180. जो लोग उस चीज़ में कृपणता से काम लेते हैं, जो अल्लाह ने अपनी

وَحَافُونَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَلَا يَحْزُنُهُ  
الَّذِينَ يَسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَنْ يَضُرُّوا  
اللَّهَ شَيْئًا ۚ يُرِيدُ اللَّهُ الْأَلَّ بِجَعَلِ لَهُمْ حَقًّا فِي  
الْآخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرُوا  
الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۚ وَلَهُمْ  
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ وَلَا يَحْزَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا  
نُعْطِي لَهُمْ خَيْرًا وَلَا نَفْسِهِمْ ۚ إِنَّمَا نَعْنِي لَهُمْ  
لِيُزَادُوا آثِمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۚ مَا كَانَ  
اللَّهُ لِيُذِرَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ  
يَسِيرَ الْخَبِيثُ مِنَ الطَّيِّبِ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِعَكُمْ  
عَلَىٰ الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِيٰ مِنْ رُسُلِهِ مَنْ  
يَشَاءُ ۚ قَالُوا يَا اللَّهُ وَرُسُلُهُ ۚ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَ  
تَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۚ وَلَا يَحْزَبَنَّ الَّذِينَ



उदार कृपा से उन्हें प्रदान की है, वे यह न समझें कि यह उनके हित में अच्छा है, बल्कि यह उनके लिए बुरा है। जिस चीज़ में उन्होंने कृपणता से काम लिया होगा, वही आगे क़ियामत के दिन उनके गले का तौक़ बन जाएगा। और ये आकाश और धरती अंत में अल्लाह ही के लिए रह जाएँगे। तुम जो कुछ भी करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।

181. अल्लाह उन लोगों की बात सुन चुका है जिनका कहना है कि “अल्लाह तो निर्धन है और हम धनवान हैं।” उनकी बात हम

लिख लेंगे और नबियों को जो वे नाहक़ क़त्ल करते रहे हैं उसे भी।<sup>1</sup> और हम कहेंगे : “लो, (अब) जलने की यातना का मज़ा चखो।”

182. यह उसका बदला है, जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा। अल्लाह अपने बन्दों पर तनिक भी ज़ुल्म नहीं करता।”

183. ये वही लोग हैं जिनका कहना है कि “अल्लाह ने हमें ताकीद की है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएँ, जबतक कि वह हमारे सामने ऐसी कुरबानी न पेश करे जिसे आग खा जाए।” कहो : “तुम्हारे पास मुझसे पहले कितने ही रसूल खुली निशानियाँ लेकर आ चुके हैं, और वे वह चीज़ भी लाए थे जिसके लिए तुम कह रहे हो। फिर यदि तुम सच्चे हो तो तुमने उन्हें क़त्ल क्यों किया?”

184. फिर यदि वे तुम्हें झुठलाते ही रहें, तो तुमसे पहले भी कितने ही रसूल

يَجْعَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ  
بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ - سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخَلُوا بِهِ يَوْمَ  
الْقِيَامَةِ - وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ - وَ  
اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ - لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ  
قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ -  
سَنُكْشِبُ مَا قَالُوا وَكُتْلَهُمُ الْآيِنِيَاءُ بِغَيْرِ حَقٍّ -  
وَتَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْعَرِينِ - ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ  
أَيْدِيَكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ -  
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا أَلاَّ نَكُونُ مِنَ  
الرُّسُولِ حَتَّى يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ قُلْ  
قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ قَبْلِ الْبَيْتِ بِالْبَيِّنَاتِ وَإِلَّا لَدَى  
قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ -  
فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ رَسُولٌ مِنْ قَبْلِكَ جَاءُوا

1. अर्थात् उनकी ऐसी करतूतों की क्या सज़ा हो, यह हम लिख देंगे।



झुठलाए जा चुके हैं, जो खुली निशानियाँ, 'ज़बूरें' और प्रकाशमान किताब लेकर आए थे।

185. प्रत्येक जीव मृत्यु का मज़ा चखनेवाला है, और तुम्हें तो क्रियामत के दिन पूरा-पूरा बदला दे दिया जाएगा। अतः जिसे आग (जहन्नम) से हटाकर जन्नत में दाखिल कर दिया गया, वह सफल रहा। रहा सांसारिक जीवन, तो वह माया-सामग्री के सिवा कुछ भी नहीं।

186. तुम्हारे माल और तुम्हारे प्राण में तुम्हारी परीक्षा होकर रहेगी और तुम्हें उन लोगों से, जिन्हें

तुमसे पहले किताब प्रदान की गई थी और उन लोगों से जिन्होंने 'शिरक' किया, बहुत-सी कष्टप्रद बातें सुननी पड़ेंगी। परन्तु, यदि तुम जमे रहे और (अल्लाह का) डर रखा, तो यह उन कर्मों में से है जो आवश्यक ठहरा दिया गया है।

187. याद करो जब अल्लाह ने उन लोगों से, जिन्हें किताब प्रदान की गई थी, वचन लिया था कि "उसे लोगों के सामने भली-भाँति स्पष्ट करोगे, उसे छिपाओगे नहीं।" किन्तु उन्होंने उसे पीठ पीछे डाल दिया और तुच्छ मूल्य पर उसका सौदा किया। कितना बुरा सौदा है जो ये कर रहे हैं।

188. तुम उन्हें कदापि यह न समझना, जो अपने किए पर खुश हो रहे हैं और जो काम उन्होंने नहीं किए, चाहते हैं कि उसपर भी उनकी प्रशंसा की जाए—तो तुम उन्हें यह न समझना कि वे यातना से बच जाएँगे, उनके लिए

لَا يَنْفَعُهُمْ

لَا يَنْفَعُهُمْ

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ كُلُّ نَفْسٍ  
ذَائِقَةُ الْعَذَابِ الْخَالِدِ وَلَوْ أَنَّا نُوفِقُونَ أَجُورَكُمْ يُؤْمَرُ الْغَايِبُ  
فَمَنْ رُحِمَ عَنِ النَّارِ وَأَدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ  
وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ لَسُبُّوا  
فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ وَلَتَسْنَعَنَّ مِنَ الَّذِينَ  
أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا  
أَذَى كَثِيرًا وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَلِكَ  
مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ  
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتَنِيَّيْنَهُ لِلنَّاسِ وَلَا  
تَكْتُمُونَهُ فَنَبَذُوهُ وَزَادُوا ظُهُورَهُمْ وَأَشْتَرَوْا بِهِ  
ثَمَنًا قَلِيلًا فَبُئْسَ مَا يَشْتَرُونَ لَا تَحْسَبَنَّ  
الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُوتُوا وَتُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا  
عَمَّا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبْنَهُمْ عَفَاةً مِنَ الْعَذَابِ

سُورَةُ



तो दुखद यातना है।

189. आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है, और अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

190. निस्संदेह आकाशों और धरती की रचना में और रात और दिन के आगे- पीछे बारी-बारी आने में उन बुद्धिमानों के लिए निशानियाँ हैं।

191. जो खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे अल्लाह को याद करते हैं और आकाशों और धरती की रचना में सोच-विचार करते हैं। (वे पुकार उठते हैं:) "हमारे

रब ! तूने यह सब व्यर्थ नहीं बनाया है। महान है तू, अतः तू हमें आग की यातना से बचा ले।

192. हमारे रब, तूने जिसे आग में डाला, उसे रुसवा कर दिया। और ऐसे ज़ालिमों का कोई सहायक न होगा।

193. हमारे रब ! हमने एक पुकारनेवाले को ईमान की ओर बुलाते सुना कि 'अपने रब पर ईमान लाओ।' तो हम ईमान ले आए। हमारे रब ! तो अब तू हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर दे और हमें नेक और वफ़ादार लोगों के साथ (दुनिया से) उठा।

194. हमारे रब ! जिस चीज़ का वादा तूने अपने रसूलों के द्वारा किया वह हमें प्रदान कर और क्रियामत के दिन हमें रुसवा न करना। निस्संदेह तू अपने वादे के विरुद्ध जानेवाला नहीं है।"

وَاللَّهُمَّ عَذَابَ الْيَوْمِ ۚ وَشِئْ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَ  
الْأَرْضِ. وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ إِنَّ فِي  
خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ  
لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ  
اللَّهَ قِيَمًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ  
فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ. رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ  
هَذَا بَاطِلًا. سُبْحَنَكَ قَوْمًا عَذَابَ النَّارِ ۚ  
رَبَّنَا إِنَّكَ مَن تُدْخِلُ النَّارَ فَقَدْ أَخْرَجْتَهُ. وَمَا  
بِالظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۚ رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا  
يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا ۚ رَبَّنَا  
فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّنَا  
مَعَ الْأَبْرَارِ ۚ رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ  
وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۚ



195. तो उनके रब ने उनकी पुकार सुन ली कि "मैं तुममें से किसी कर्म करनेवाले के कर्म को अकारथ नहीं करूँगा, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री। तुम सब आपस में एक-दूसरे से हो। अतः जिन लोगों ने (अल्लाह के मार्ग में) घरबार छोड़ा और अपने घरों से निकाले गए और मेरे मार्ग में सताए गए, और लड़े और मारे गए, मैं उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दूँगा और उन्हें ऐसे बागों में प्रवेश कराऊँगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी।" यह अल्लाह के पास से उनका बदला होगा और सबसे अच्छा बदला अल्लाह ही के पास है।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِنْكُمْ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ، بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ، وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُودُوا فِي سَبِيلِي وَقَتَلُوا وَقُتِلُوا لَا كُفْرَانَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَا دُخْلَهُمْ جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ، ثَوَابًا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ، وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ۝ لَا يَغْرُنَكَ تَعَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْيَلَادِ، مَتَاعٌ قَلِيلٌ، ثُمَّ مَا لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ، وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا لَهُمْ جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نَزَّلْنَا مِنَ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّالْبَاقِيَةِ، وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خَشَعَتِ لِرَبِّهِمْ

196. बस्तियों में इनकार करनेवालों की चलत-फिरत तुम्हें किसी धोखे में न डाले।

197. यह तो थोड़ी सुख-सामग्री है, फिर तो उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

198. किन्तु जो लोग अपने रब से डरते रहे उनके लिए ऐसे बाग होंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वे उसमें सदैव रहेंगे। यह अल्लाह की ओर से पहला आतिथ्य-सत्कार होगा और जो कुछ अल्लाह के पास है, वह नेक और वफ़ादार लोगों के लिए सबसे अच्छा है।

199. और किताबवालों में से कुछ ऐसे भी हैं, जो इस हाल में कि उनके दिल अल्लाह के आगे झुके हुए होते हैं, अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस



चीज़ पर भी जो तुम्हारी ओर उतारी गई है, और उस चीज़ पर भी जो स्वयं उनकी ओर उतरी। वे अल्लाह की आयतों का 'तुच्छ मूल्य पर सौदा' नहीं करते, उनके लिए उनके रब के पास उनका प्रतिदान है। अल्लाह हिसाब भी जल्द ही कर देगा।

200. ऐ ईमान लानेवालो ! धैर्य से काम लो और (मुक्काबले में) बढ़-चढ़कर धैर्य दिखाओ और जुटे और डटे रहो और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम सफल हो सको।



## 4. अन-निसा

(मदीना में उतरी— आयतें 177)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ लोगो ! अपने रब का डर रखो, जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी जाति का उसके लिए जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत-से पुरुष और स्त्रियाँ फैला दीं। अल्लाह का डर रखो, जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे के सामने अपनी माँगें रखते हो। और नाते-रिश्तों का भी तुम्हें खयाल रखना है। निश्चय ही अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है।

2. और अनाथों को उनका माल दे दो और बुरी चीज़ को अच्छी चीज़ से न बदलो, और न उनके माल को अपने माल के साथ मिलाकर खा जाओ। यह बहुत बड़ा गुनाह है।

3. और यदि तुम्हें आशंका हो कि तुम अनाथों (अनाथ लड़कियों) के प्रति



न्याय न कर सकोगे तो उनमें से, जो तुम्हें पसन्द हों, दो-दो या तीन-तीन या चार-चार से विवाह कर लो। किन्तु यदि तुम्हें आशंका हो कि तुम उनके साथ एक जैसा व्यवहार न कर सकोगे, तो फिर एक ही पर बस करो, या उस स्त्री (लौंडी) पर जो तुम्हारे कब्जे में आई हो, उसी पर बस करो। इसमें तुम्हारे न्याय से न हटने की अधिक संभावना है।

4. और स्त्रियों को उनके महर खुशी से अदा करो। हाँ, यदि वे अपनी खुशी से उसमें से तुम्हारे लिए छोड़ दें तो उसे तुम अच्छा और पाक समझकर खाओ।

5. और अपने माल, जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए जीवन-यापन का साधन बनाया है, बेसमझ लोगों को न दो। उन्हें उसमें से खिलाते और पहनाते रहो और उनसे भली बात कहो।

6. और अनाथों को जाँचते रहो, यहाँ तक कि जब वे विवाह की अवस्था को पहुँच जाएँ, तो फिर यदि तुम देखो कि उनमें सूझ-बूझ आ गई है, तो उनके माल उन्हें सौंप दो, और इस भय से कि कहीं वे बड़े न हो जाएँ तुम उनके माल अनुचित रूप से उड़ाकर और जल्दी करके न खाओ। और जो धनवान हो, उसे तो (इस माल से) बचना ही चाहिए। हाँ, जो निर्धन हो, वह उचित रीति से कुछ खा सकता है। फिर जब उनके माल उन्हें सौंपने लगो, तो उनकी मौजूदगी में गवाह बना लो। हिसाब लेने के लिए तो अल्लाह काफी है।

7. पुरुषों का उस माल में एक हिस्सा है जो माँ-बाप और नातेदारों ने छोड़ा

فِي الْيَتَامَىٰ فَانْكَحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مِمَّا  
وَلْتَكُنَّ زَوْجَةً ۖ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً  
أَوْ مَا تَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ ذَلِكَ أَذَىٰ ۖ لَا تَعُولُوا ۚ  
وَأَتُوا النِّسَاءَ صَدُقَتِهِنَّ فِعْلَهُ ۚ فَإِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ  
شَيْءٍ مِنْهُ نَفْسًا فَكُوْهُ هُنَّ بَيْنًا مِّبْرَةً ۖ وَلَا تَتُوتُوا  
النِّسَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَمًا  
وَأَرْزُقُوهُمْ فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا  
مَعْرُوفًا ۚ وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ فَإِنْ  
أَنْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا  
تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ وَمَنْ كَانَ  
غَنِيًّا فَلْيَسْتَعِظْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ  
بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ  
فَأَشْهَدُوا عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللهِ حَسِيبًا ۚ لِلرِّجَالِ



हो; और स्त्रियों का भी उस माल में एक हिस्सा है जो माल माँ-बाप और नातेदारों ने छोड़ा हो—चाहे वह थोड़ा हो या अधिक हो—यह हिस्सा निश्चित किया हुआ है।

8. और जब बाँटने के समय नातेदार और अनाथ और मुहताज उपस्थित हों तो उन्हें भी उसमें से (उनका हिस्सा) दे दो और उनसे भली बात करो।

9. और लोगों को डरना चाहिए कि यदि वे स्वयं अपने पीछे निर्बल बच्चे छोड़ते तो उन्हें उन बच्चों के विषय में कितना भय होता। तो फिर उन्हें अल्लाह से डरना चाहिए और ठीक सीधी बात कहनी चाहिए।

10. जो लोग अनाथों के माल अन्याय के साथ खाते हैं, वास्तव में वे अपने पेट आग से भरते हैं, और वे अवश्य भड़कती हुई आग में पड़ेंगे।

11. अल्लाह तुम्हारी संतान के विषय में तुम्हें आदेश देता है कि दो बेटियों के हिस्से के बराबर एक बेटे का हिस्सा होगा; और यदि दो से अधिक बेटियाँ ही हों तो उनका हिस्सा छोड़ी हुई सम्पत्ति का दो तिहाई है। और यदि वह अकेली हो तो उसके लिए आधा है। और यदि मरनेवाले की संतान हो तो उसके माँ-बाप में से प्रत्येक का उसके छोड़े हुए माल का छठा हिस्सा है। और यदि वह निस्संतान हो और उसके माँ-बाप ही उसके वारिस हों, तो उसकी माँ का हिस्सा तिहाई होगा। और यदि उसके भाई भी हों, तो उसकी माँ का छठा हिस्सा होगा। ये हिस्से, वसीयत जो वह कर जाए पूरी करने या ऋण चुका देने के पश्चात हैं। तुम्हारे बाप भी हैं और तुम्हारे बेटे भी। तुम

نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۖ وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكَوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعْفًا خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۖ يُؤْصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ الْإُنثَىٰ ۖ وَإِنْ كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۖ وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا الشُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ



नहीं जानते कि उनमें से लाभ पहुँचाने की दृष्टि से कौन तुमसे अधिक निकट है। यह हिस्सा अल्लाह का निश्चित किया हुआ है। अल्लाह सब कुछ जानता, समझता है।

12. और तुम्हारी पत्नियों ने जो कुछ छोड़ा हो, उसमें तुम्हारा आधा है, यदि उनकी संतान न हों। लेकिन यदि उनकी संतान हों तो वे जो छोड़ें; उसमें तुम्हारा चौथाई होगा, इसके पश्चात् कि जो वसीयत वे कर जाएँ वह पूरी कर दी जाए, या जो ऋण (उनपर) हो वह चुका दिया जाए। और जो

कुछ तुम छोड़ जाओ, उसमें उनका (पत्नियों का) चौथाई हिस्सा होगा, यदि तुम्हारी कोई संतान न हो। लेकिन यदि तुम्हारी संतान है, तो जो कुछ तुम छोड़ोगे, उसमें से उनका (पत्नियों का) आठवाँ हिस्सा होगा, इसके पश्चात् कि जो वसीयत तुमने की हो वह पूरी कर दी जाए, या जो ऋण हो उसे चुका दिया जाए, और यदि किसी पुरुष या स्त्री के न तो कोई संतान हो और न उसके माँ-बाप ही जीवित हों और उसके एक भाई या बहन हो तो उन दोनों

١٢٤  
 إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ  
 أَبُوهُ فَأُولَئِكَ الثَّلَاثُ. فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُولَئِهِ  
 الشُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِهِ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنًا  
 أَبَاؤُكُمْ وَأُمَّهَاتُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ  
 نَفْعًا. فَرِيضَةٌ مِنَ اللَّهِ. إِنْ اللَّهُ كَانَ عَلِيمًا  
 حَكِيمًا ۝ وَلَكُمْ يَصْطَفَى مَتْرُكُ أَزْوَاجِكُمْ إِنْ لَمْ  
 يَكُنْ لَهُنَّ وَلَدٌ، فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلِكُمُ  
 الزَّيْبُ مِمَّا تَرَكَنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِهِ يُوصِيْنَ بِهَا  
 أَوْ دَيْنًا. وَلَهُنَّ الزَّيْبُ مِمَّا تَرَكَتُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ  
 وَلَدٌ، فَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا  
 تَرَكَتُمْ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِهِ تَوْصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنًا. وَ  
 إِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورِثُ كَلَالَةً أَوْ امْرَأَةً وَلَهُ أَخٌ  
 أَوْ أُخْتُ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا الشُّدُسُ، فَإِنْ كَانُوا



में से प्रत्येक का छठा हिस्सा होगा। लेकिन यदि वे इससे अधिक हों तो फिर एक तिहाई में वे सब शरीक होंगे, इसके पश्चात् कि जो वसीयत उसने की वह पूरी कर दी जाए या जो ऋण (उसपर) हो वह चुका दिया जाए, शर्त यह है कि वह हानिकर न हो। यह अल्लाह की ओर से ताकीदी आदेश है और अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, अत्यन्त सहनशील है।

13. ये अल्लाह की निश्चित की हुई सीमाएँ हैं। जो कोई अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों का पालन करेगा, उसे अल्लाह ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वह सदैव रहेगा और यही बड़ी सफलता है।

14. परन्तु जो अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा और उसकी सीमाओं का उल्लंघन करेगा उसे अल्लाह आग में डालेगा, जिसमें वह सदैव रहेगा। और उसके लिए अपमानजनक यातना है।

15. और तुम्हारी स्त्रियों में से जो व्यभिचार कर बैठें, उनपर अपने में से चार आदमियों की गवाही लो, फिर यदि वे गवाही दे दें तो उन्हें घरों में बन्द रखो, यहाँ तक कि उनकी मृत्यु आ जाए या अल्लाह उनके लिए कोई रास्ता निकाल दे।

16. और तुममें से जो दो पुरुष यह कर्म करें, उन्हें प्रताड़ित करो, फिर यदि वे तौबा कर लें और अपने को सुधार लें, तो उन्हें छोड़ दो। अल्लाह तौबा क़बूल करनेवाला, दयावान है।

17. उन्हीं लोगों की तौबा क़बूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है जो भावनाओं

النِّسَاء

النِّسَاء

أَكْثَرُ مِنْ ذَلِكَ فَمَنْ شَرَكَاهُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ  
وَصِيَّتِهِ يُؤْصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ، غَيْرَ مُضَآرٍّ، وَصِيَّتُهُ  
مِنْ اللَّهِ، وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝ يَلِكُ حُدُودُ اللَّهِ  
وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ  
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا، وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝  
وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ  
يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا، وَلَهُ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝  
وَالَّذِي يَأْتِيَنَّ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِسَائِكُمْ فَأَسْتَشْهِدُوا  
عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِّنكُمْ، فَإِنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ  
فِي الْبُيُوتِ حَتَّى يَتَوَقَّعَهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَخْرُجَ اللَّهُ  
لَهُنَّ سَبِيلًا ۝ وَالَّذِينَ يَأْتِيْنَهَا مِنْكُمْ فَاذْوَهَبَا،  
وَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا، إِنَّ اللَّهَ  
كَانَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ۝ إِنَّا الشُّبُهَةَ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ

مَثَل



में बहकर नादानी से कोई बुराई कर बैठें, फिर जल्द ही तौबा कर लें, ऐसे ही लोग हैं जिनकी तौबा अल्लाह क़बूल करता है। अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

18. और ऐसे लोगों की तौबा नहीं जो बुरे काम किए चले जाते हैं, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु का समय आ जाता है तो कहने लगता है : "अब मैं तौबा करता हूँ।" और इसी प्रकार तौबा उनकी भी नहीं है, जो मरते दम तक इनकार करनेवाले ही रहें। ऐसे लोगों के लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

19. ऐ ईमान लानेवालो ! तुम्हारे लिए वैध नहीं कि स्त्रियों के माल के ज़बरदस्ती वारिस बन बैठो, और न यह वैध है कि उन्हें इसलिए रोको और तंग करो कि जो कुछ तुमने उन्हें दिया है, उसमें से कुछ ले उड़ो। परन्तु यदि वे खुले रूप में अशिष्ट कर्म कर बैठें तो दूसरी बात है। और उनके साथ भले तरीक़े से रहो-सहो। फिर यदि वे तुम्हें पसन्द न हों, तो संभव है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द न हो और अल्लाह उसमें बहुत कुछ भलाई रख दे।

20. और यदि तुम एक पत्नी की जगह दूसरी पत्नी लाना चाहो तो, चाहे

لَنْ تَنَالُوا  
يَعْمَلُونَ النُّوْءَ بِمَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ  
فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ. وَكَانَ اللَّهُ  
عَلِيمًا حَكِيمًا. وَ لَيْسَ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ  
السَّيِّئَاتِ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ  
إِنِّي تَبْتُ الذَّنَّ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ.  
أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا. يَا أَيُّهَا  
الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَجِدْ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ  
كُرْهًا. وَلَا تَعْضِلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا  
أَكْتَسَبْتُمُوهُنَّ. لَا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِمَا حِصَّةٌ مُّبَيَّنَةٌ  
وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ. فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ  
فَعَنَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا  
كَثِيرًا. وَإِنْ أَرَدْتُمْ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَكَانَ  
زَوْجٍ فَأَتَيْتُمُ إحْدَاهُنَّ فَنَظَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ



तुमने उनमें किसी को ढेरों माल दे दिया हो, उसमें से कुछ मत लेना। क्या तुम उसपर झूठा आरोप लगाकर और खुले रूप में हक मारकर उसे लोगे ?

21. और तुम उसे किस तरह ले सकते हो, जबकि तुम एक-दूसरे से मिल चुके हो और वे तुमसे दृढ़ प्रतिज्ञा भी ले चुकी हैं ?

22. और उन स्त्रियों से विवाह न करो, जिनसे तुम्हारे बाप विवाह कर चुके हों, परन्तु जो पहले हो चुका सो हो चुका। निस्संदेह यह एक अश्लील और अत्यन्त अप्रिय कर्म है, और बुरी रीति है।

23. तुम्हारे लिए हराम हैं तुम्हारी माँ, बेटियाँ, बहनें, फूफियाँ, मौसियाँ, भतीजियाँ, भाँजियाँ, और तुम्हारी वे माँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो और दूध के रिश्ते से तुम्हारी बहनें और तुम्हारी सासें और तुम्हारी पत्नियों की बेटियाँ जो दूसरे पति से हों और जो तुम्हारी गोदों में पलीं—तुम्हारी उन स्त्रियों की बेटियाँ जिनसे तुम संभोग कर चुके हो। परन्तु यदि संभोग नहीं किया है तो इसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं—और तुम्हारे उन बेटों की पत्नियाँ जो तुमसे पैदा हों और यह भी कि तुम दो बहनों को इकट्ठा करो; परन्तु पहले जो हो चुका सो हो चुका। निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

شَيْئًا. أَتَأْخُذُونَهُ بُهْتَانًا وَإِنَّمَا مُبِينًا. وَكَيْفَ  
تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَى بَعْضُكُمْ إِلَى بَعْضٍ وَ  
أَخَذَنَ مِنْكُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا. وَلَا تَنْكِحُوا  
مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ.  
إِنَّهُ كَانَ قَاحِشَةً وَمَقْتًا. وَسَاءَ سَبِيلًا.  
حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ  
وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأُخْتِ  
وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتُكُمُ مِنَ الرَّضَاعَةِ  
وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي فِي حُجُورِكُمْ  
مِّنْ نِّسَائِكُمُ اللَّاتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ. فَإِنْ لَّمْ يَكُنُوا  
دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ. وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ  
الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ. وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ  
إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ. إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا.



24. और विवाहिता स्त्रियाँ भी वर्जित हैं, सिवाय उनके जो तुम्हारी लौंडी हों। यह अल्लाह ने तुम्हारे लिए अनिवार्य कर दिया है। इनके अतिरिक्त शेष स्त्रियाँ तुम्हारे लिए वैध हैं कि तुम अपने माल के द्वारा उन्हें प्राप्त करो उनकी पाकदामनी की सुरक्षा के लिए, न कि यह काम स्वच्छन्द काम-तृप्ति के लिए हो। फिर उनसे दाम्पत्य जीवन का आनंद लो तो उसके बदले उनका निश्चित किया हुआ हक्क (महर) अदा करो और यदि हक्क निश्चित हो जाने के पश्चात तुम आपस में अपनी प्रसन्नता से कोई समझौता कर लो, तो इसमें तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। निस्संदेह, अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ  
كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَأُجَلَ لَكُمْ مِمَّا رَأَوْا زَلَمَكُمْ  
أَنْ تَتَّبِعُوا بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصَرِينَ عَنْ مُسَوِّغِينَ  
فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ  
فَرِيضَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا تَرَضَيْتُمْ بِهِ  
مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا  
وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ  
الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِنْ فَتِيلَتِكُمْ  
الْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِنْ  
بَعْضٍ فَاتَّخِذُوهُنَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِنَّ وَآتُوهُنَّ  
أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسَوِّغَاتٍ  
وَلَا مُتَّخِذَاتِ أَخْدَانٍ فَإِذَا أُحْصِنَ فَإِنْ أَتَيْنَ  
بِفَاحِشَةٍ فَلَهُنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ

25. और तुममें से जिस किसी की इतनी सामर्थ्य न हो कि पाकदामन, स्वतंत्र, ईमानवाली स्त्रियों से विवाह कर सके, तो तुम्हारी वे ईमानवाली जवान लौंडियाँ ही सही जो तुम्हारे कब्जे में हों। और अल्लाह तुम्हारे ईमान को भली-भाँति जानता है। तुम सब आपस में एक ही हो, तो उनके मालिकों की अनुमति से तुम उनसे विवाह कर लो और सामान्य नियम के अनुसार उन्हें उनका हक्क भी दो। वे पाकदामनी की सुरक्षा करनेवाली हों, स्वच्छन्द काम-तृप्ति न करनेवाली हों और न वे चोरी-छिपे गैरों से प्रेम करनेवाली हों। फिर जब वे विवाहिता बना ली जाएँ और उसके पश्चात कोई अश्लील कर्म कर बैठें, तो जो दण्ड सम्मानित स्त्रियों के लिए है, उसका आधा उनके लिए होगा। यह तुममें से उस व्यक्ति के लिए है, जिसे खराबी में पड़ जाने का



भय हो, और यह कि तुम धैर्य से काम लो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। निस्संदेह अल्लाह बहुत क्षमाशील, दयावान है।

26. अल्लाह चाहता है कि तुमपर स्पष्ट कर दे और तुम्हें उन लोगों के तरीकों पर चलाए, जो तुमसे पहले हुए हैं और तुमपर दयादृष्टि करे। अल्लाह तो सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

27. और अल्लाह चाहता है कि तुमपर दयादृष्टि करे, किन्तु जो लोग अपनी तुच्छ इच्छाओं का पालन करते हैं, वे चाहते हैं कि तुम राह से हटकर बहुत दूर जा पड़ो।

28. अल्लाह चाहता है कि तुमपर से बोझ हलका कर दे, क्योंकि इनसान निर्बल पैदा किया गया है।

29. ऐ ईमान लानेवालो ! आपस में एक-दूसरे के माल ग़लत तरीके से न खाओ— यह और बात है कि तुम्हारी आपस की रज़ामन्दी से कोई सौदा हो—और न अपनों की हत्या करो। निस्संदेह अल्लाह तुमपर बहुत दयावान है।

30. और जो कोई ज़ुल्म और ज़्यादती से ऐसा करेगा, तो उसे हम जल्द ही आग में झोंक देंगे, और यह अल्लाह के लिए सरल है।

31. यदि तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहो, जिनसे तुम्हें रोका जा रहा है, तो

وَالْعَذَابُ ذَٰلِكَ لِمَن حَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۚ وَأَن تَصِيرُوا خِثْرًا لَّكُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۚ يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذَيِّبَ لَكُم مَّا فِي قُلُوبِكُمْ وَيُتُوبَ عَلَيْكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ وَيُرِيدُ أَن يَتُوبَ عَلَيْكُمْ ۚ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَن يُنْفِلُوا مِنَّا غَظِيبًا ۚ يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُخَفِّفَ عَنْكُم مَّزِيدَ الذُّلِّ ۚ وَخُلِقَ الْإِنسَانُ ضَعِيفًا ۚ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِبَارَةً عَن تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۚ إِن تَجْتَنِبُوا كِبَارَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نَغْفِرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُم



हम तुम्हारी बुराइयों को तुमसे दूर कर देंगे और तुम्हें प्रतिष्ठित स्थान में प्रवेश कराएँगे।

32. और उसकी कामना न करो, जिसमें अल्लाह ने तुममें किसी को किसी से उच्च रखा है। पुरुषों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है और स्त्रियों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है। अल्लाह से उसका उदार दान चाहो। निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।

33. और प्रत्येक माल के लिए, जो माँ-बाप और नातेदार छोड़ जाएँ, हमने वारिस ठहरा दिए हैं और जिन लोगों से अपनी क़समों के द्वारा तुम्हारा पक्का मामला हुआ हो, तो उन्हें भी उनका हिस्सा दो। निस्संदेह हर चीज़ अल्लाह के समक्ष है।

34. पति पत्नियों के संरक्षक और निगराँ हैं, क्योंकि अल्लाह ने उनमें से कुछ को कुछ के मुक़ाबले में आगे रखा है, और इसलिए भी कि पत्नियों ने अपने माल खर्च किए हैं, तो नेक पत्नियाँ तो आज्ञापालन करनेवाली होती हैं और गुप्त बातों की रक्षा करती हैं, क्योंकि अल्लाह ने उनकी रक्षा की है। और जो पत्नियाँ ऐसी हों जिनकी सरकशी का तुम्हें भय हो, उन्हें समझाओ और बिस्तरों में उन्हें अकेली छोड़ दो और (अति आवश्यक हो तो) उन्हें मारो भी। फिर यदि वे तुम्हारी बात मानने लगे, तो उनके विरुद्ध कोई रास्ता न ढूँढ़ो। अल्लाह सबसे उच्च, सबसे बड़ा है।

مُذْخَلًا كَرِيمًا ۚ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ  
بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ ۚ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا  
اَكْتَسَبُوا ۚ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اَكْتَسَبْنَ ۚ وَسَلُّوا  
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝  
وَلِكُلِّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ  
وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَالدَّيْنُ عَقْدَتٌ أَيْمَانُكُمْ  
فَاتُؤَمُّنْهُمْ نَصِيبُهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى  
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝ الرِّجَالُ  
قَوُّمُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ  
عَلَى بَعْضٍ ۚ وَبِمَا أَنْفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ۚ  
فَالضَّالِيحَتِ قَبِضَتْ حِفْظٌ لِلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ  
اللَّهُ ۚ وَالَّتِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ  
وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ  
فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۚ  
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا ۝



35. और यदि तुम्हें पति-पत्नी के बीच बिगाड़ का भय हो, तो एक फ़ैसला करनेवाला पुरुष के लोगों में से और एक फ़ैसला करनेवाला स्त्री के लोगों में से नियुक्त करो, यदि वे दोनों सुधार करना चाहेंगे, तो अल्लाह उनके बीच अनुकूलता पैदा कर देगा। निस्संदेह, अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, खबर रखनेवाला है।

36. अल्लाह की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ और अच्छा व्यवहार करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों, अनाथों और मुहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसियों के साथ और अपरिचित पड़ोसियों के साथ और साथ रहनेवाले व्यक्ति के साथ और मुसाफ़िर के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसंद नहीं करता, जो इतराता और डींगें मारता हो।

37. वे जो स्वयं कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी पर उभारते हैं और अल्लाह ने अपने उदार दान से जो कुछ उन्हें दे रखा होता है, उसे छिपाते हैं, तो हमने अक़ृतज़ लोगों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

38. वे जो अपने माल लोगों को दिखाने के लिए खर्च करते हैं, न अल्लाह पर ईमान रखते हैं, न अंतिम दिन पर, और जिस किसी का साथी शैतान हुआ,

النِّسَاء

النِّسَاء

وَأِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِنْ أَهْلِهَا إِنْ يُرِيدَا إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝  
وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تَشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا ۝  
الَّذِينَ يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبَخْلِ وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۝ وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا

سُورَةُ



तो वह बहुत ही बुरा साथी है।

39. उनका क्या बिगड़ जाता, यदि वे अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाते और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया है, उसमें से खर्च करते? अल्लाह उन्हें भली-भाँति जानता है।

40. निस्संदेह अल्लाह रत्ती-भर भी ज़ुल्म नहीं करता और यदि कोई एक नेकी हो तो वह उसे कई गुना बढ़ा देगा और अपनी ओर से बढ़ा बदला देगा।

41. फिर क्या हाल होगा जब हम प्रत्येक समुदाय में से एक गवाह लाएँगे और स्वयं तुम्हें इन लोगों के मुक़ाबले में गवाह बनाकर पेश करेंगे?

42. उस दिन वे लोग जिन्होंने इनकार किया होगा और रसूल की अवज्ञा की होगी, यही चाहेंगे कि किसी तरह उन्हें धरती में समोकर उसे बराबर कर दिया जाए। वे अल्लाह से कोई बात भी न छिपा सकेंगे।

43. ऐ ईमान लानेवालो! नशे की दशा में नमाज़ में व्यस्त न हो, जब तक कि तुम यह न जानने लगे कि तुम क्या कह रहे हो। और इसी प्रकार नापाकी की दशा में भी (नमाज़ में व्यस्त न हो), जब तक कि तुम स्नान न कर लो, सिवाय इसके कि तुम सफ़र में हो। और यदि तुम बीमार हो या सफ़र में हो, या तुममें से कोई शौच करके आए या तुमने स्त्रियों को हाथ लगाया हो, फिर तुम्हें पानी न मिले, तो पाक मिट्टी से काम लो और उसपर हाथ मारकर अपने चेहरे और हाथों पर मलो। निस्संदेह अल्लाह नमी से काम लेनेवाला,

نِسَاءٌ قَرِينًا ۖ وَمَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللّٰهِ وَ  
الْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ۖ وَكَانَ  
اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيمًا ۖ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۖ  
وَإِن تَكُ حَسَنَةً يُضَعِفَهَا زَيْدٌ مِّن لَّدُنْهُ  
أَجْرًا عَظِيمًا ۖ فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ  
وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَٰؤُلَاءِ شَهِيدًا ۖ يَوْمَئِذٍ يُؤَدُّ  
الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرّسُولَ لَوِ تَشَٰوَىٰ بِهِمُ الْأَرْضُ  
وَلَا يَكْتُمُونَ اللّٰهَ حَدِيثًا ۖ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا  
لَا تَقْرُبُوا الصَّلَاةَ وَأَنتُمْ سُكَرَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا  
مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ  
تَغْتَسِلُوا ۚ وَإِن كُنتُمْ مَّرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ  
أَحَدٌ مِّنْكُم مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ لَسْتُمْ بِالنِّسَاءِ فَلَمْ  
تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا

سَلَامٌ

اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيمًا ۖ



अत्यन्त क्षमाशील है।

44. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हें सौभाग्य प्रदान हुआ था अर्थात् किताब दी गई थी? वे पथभ्रष्टता के खरीदार बने हुए हैं और चाहते हैं कि तुम भी रास्ते से भटक जाओ।

45. अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं को भली-भाँति जानता है। अल्लाह एक संरक्षक के रूप में काफ़ी है और अल्लाह एक सहायक के रूप में भी काफ़ी है।

46. वे लोग जो यहूदी बन गए, वे शब्दों को उनके स्थानों से दूसरी ओर फेर देते हैं और कहते हैं :

“समि’अना व ‘असैना” (हमने सुना, लेकिन हम मानते नहीं); और “इसम’अ ग़ै-र मुसम’इन” (सुनो हालाँकि तुम सुनने के योग्य नहीं हो) और “राइना” (हमारी ओर ध्यान दो)—यह वे अपनी ज़बानों को तोड़-मरोड़कर और दीन पर चोटें करते हुए कहते हैं। और यदि वे कहते : “समि’अना व अ-त’अना” (हमने सुना और माना) और “इसम’अ” (सुनो) और “उनज़ुरना”<sup>1</sup> (हमारी ओर निगाह करो) तो यह उनके लिए अच्छा और अधिक ठीक होता। किन्तु उनपर तो उनके इनकार के कारण अल्लाह की फिटकार पड़ी हुई है। फिर वे ईमान थोड़े ही लाते हैं।

47. ऐ लोगो ! जिन्हें किताब दी गई, उस चीज़ को मानो जो हमने उतारी है, जो उसकी पुष्टि में है, जो स्वयं तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम चेहरों की

وَالَّذِينَ  
يُجَاهِدُكُمْ وَيُؤَيِّدُكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ۝  
الَّذِينَ فِي الدِّينِ أُوتُوا كِتَابًا مِّنَ الْكِتَابِ  
يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَن يُضِلُّوا السَّبِيلَ ۝  
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ ۚ وَلَقَدْ يَأْتِيهِمْ لَئِيَّا  
بِاللَّهِ تَصْنِئَاتٌ ۚ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ  
الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا  
وَأَنفَعُ غَيْرُ مُسْمٍ وَرَائِنَا لَيًّا بِالسِّيَرِ ۚ وَطَعْنَا  
فِي الدِّينِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا  
وَأَنفَعُ وَانْظَرْنَا لَكُنْ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ ۚ وَ  
لَكِن لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ آمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا  
مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ ۚ مِّن قَبْلِ أَن نَّطْمِسَ  
وُجُوهًا فَتَرَدَّهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا

سَمِعْنَا

1. 'समि'अना व अ-त'अना' और 'इसम'अ' और 'उनज़ुरना' के अरबी वाक्यों में इसकी गुंजाइश नहीं पाई जाती कि इनका कोई अनुचित अर्थ लिया जा सके। इसी लिए इन्हीं को प्रयोग करने को ठीक बताया गया।



रूपरेखा को मिटाकर रख दें और उन्हें उनके पीछे की ओर फेर दें या उनपर लानत करें, जिस प्रकार हमने सब्तवालों पर लानत की थी। और अल्लाह का आदेश तो लागू होकर ही रहता है।

48. अल्लाह इसको क्षमा नहीं करेगा कि उसका साझी ठहराया जाए। किन्तु उससे नीचे दर्जे के अपराध को जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा और जिस किसी ने अल्लाह का साझी ठहराया, तो उसने एक बहुत बड़ा झूठ घड़ लिया।

49. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने को पूर्ण एवं शिष्ट होने का दावा करते हैं? (कोई यूँ ही शिष्ट नहीं हुआ करता) बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहता है, पूर्णता एवं शिष्टता प्रदान करता है। और उनके साथ तनिक भी अत्याचार नहीं किया जाता।

50. देखो तो सही, वे अल्लाह पर कैसा झूठ मढ़ते हैं? खुले गुनाह के लिए तो यही पर्याप्त है।

51. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया? वे अवास्तविक चीजों और तागूत (बढ़े हुए सरकश) को मानते हैं। और अधर्मियों के विषय में कहते हैं: "ये ईमानवालों से बढ़कर मार्ग पर हैं।"

52. वही हैं जिनपर अल्लाह ने लानत की है, और जिसपर अल्लाह लानत कर दे, उसका तुम कोई सहायक कदापि न पाओगे।

53. या बादशाही में इनका कोई हिस्सा है? फिर तो ये लोगों को फूटी कौड़ी तक भी न देते।

54. या ये लोगों से इसलिए ईर्ष्या करते हैं कि अल्लाह ने उन्हें अपने उदार

النِّسَاء

النِّسَاء

لَعَنَّا أَصْحَابَ النَّبِيِّ، وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۖ  
إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ  
ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ، وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ افْتَرَى  
إِثْمًا عَظِيمًا ۖ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنْفُسَهُمْ،  
بَلَى اللَّهُ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ وَلَا يظْلُمُونَ شَيْئًا ۖ  
أَنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ، وَكَفَى  
بِهِ إِثْمًا مُبِينًا ۖ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا  
نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجَنَّةِ وَالْطَّاعُوتِ  
وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ  
الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلًا ۖ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ  
اللَّهُ، وَمَنْ يُلْعَنِ اللَّهُ فَلَئِنْ تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ۖ  
أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ النَّارِ فَإِذَا لَا يُؤْتُونَ  
النَّاسَ نَقِيرًا ۖ أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ

مَنْ



दान से अनुगृहीत कर दिया? हमने तो इबराहीम के लोगों को किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) दी और उन्हें बड़ा राज्य प्रदान किया।<sup>1</sup>

55. फिर उनमें से कोई उसपर ईमान लाया और उनमें से किसी ने उससे किनारा खींच लिया। और (ऐसे लोगों के लिए) जहन्नम की भड़कती आग ही काफ़ी है।

56. जिन लोगों ने हमारी आयतों का इनकार किया, उन्हें हम जल्द ही आग में झोंकेंगे। जब भी उनकी खालें पक जाएँगी, तो हम उन्हें दूसरी खालों से बदल दिया करेंगे, ताकि वे यातना का मज़ा चखते ही रहें। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

57. और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें हम ऐसे बागों में दाखिल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। उनके लिए वहाँ पाक जोड़े होंगे और हम उन्हें घनी छाँव में दाखिल करेंगे।

58. अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि अमानतों को उनके हक़दारों तक पहुँचा दिया करो। और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो, तो न्यायपूर्वक फ़ैसला करो। अल्लाह तुम्हें कितनी अच्छी नसीहत करता है। निस्संदेह,

مَا آتَيْنَاهُم مِّن فَضْلٍ ۖ فَقَدْ أَيْنَأْنَا  
إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ ۖ وَآتَيْنَاهُمْ ثُلُكًا عَظِيمًا ۖ  
فَمِنْهُمْ مَّنْ آمَنَ بِهِ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ۚ  
وَكُفِيَ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا  
سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا ۚ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ  
بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۚ إِنَّ  
اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا  
الْصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا  
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ  
مُّطَهَّرَةٌ ۖ وَنُزُلٌ مِنْ لَدُنْهُمْ ظِلٌّ ۚ إِنَّ اللَّهَ  
يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا ۖ وَإِذَا  
حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَعْلَمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ  
اللَّهَ نَوْتًا يَعْظُمُكُمْ بِهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا

1. अर्थात् उनकी इच्छा के प्रतिकूल हमने इसमाईल की संतान को किताब, हिकमत और महान राज्य प्रदान किया।



अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।

59. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और रसूल का कहना मानो और उनका भी कहना मानो जो तुममें अधिकारी लोग हैं। फिर यदि तुम्हारे बीच किसी मामले में झगड़ा हो जाए, तो उसे तुम अल्लाह और रसूल की ओर लौटाओ, यदि तुम अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हो। यही उत्तम है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है।

60. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जो दावा तो यह करते हैं कि वे उस चीज़ पर ईमान रखते हैं, जो तुम्हारी ओर उतारी गई है और जो तुमसे पहले उतारी गई है। और चाहते हैं कि अपना मामला तागूत के पास ले जाकर फ़ैसला कराएँ, जबकि उन्हें हुक्म दिया गया है कि वे उसका इनकार करें? परन्तु शैतान तो उन्हें भटकाकर बहुत दूर डाल देना चाहता है।

61. और जब उनसे कहा जाता है कि आओ उस चीज़ की ओर जो अल्लाह ने उतारी है और आओ रसूल की ओर, तो तुम मुनाफ़िकों (कपटाचारियों) को देखते हो कि वे तुमसे कतराकर रह जाते हैं।

62. फिर कैसी बात होगी कि जब उनकी अपनी ही करतूतों के कारण उनपर बड़ी मुसीबत आ पड़ेगी। फिर वे तुम्हारे पास अल्लाह की क़समें खाते

الْحَمْدُ لِلّٰهِ

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

بَصِيرًا ۚ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اطِيعُوا اللّٰهَ وَ  
اطِيعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولٰٓئِ الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ  
تَنٰازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ  
اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ ذٰلِكَ  
خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۚ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ  
يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَا اُنْزِلَ  
مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُوْنَ اَنْ يَّخْتَلَفُوْا اِلَى الطَّاغُوْتِ  
وَقَدْ اُمِرُوْا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ۚ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ  
اَنْ يُّضِلَّهُمْ صَلٰٓةً بَعِيْدًا ۚ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ  
تَعٰلَوْا اِلَى مَا اُنْزِلَ اللّٰهُ وَ اِلَى الرَّسُوْلِ رَاٰى  
الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ۚ فَكَيْفَ اِذَا  
اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۚ بَا ۚ قَدْ مَتَّ اَيْدِيَهُمْ ثُمَّ  
جَآءُوكَ يَخْلِفُوْنَ ۚ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَا اِلَّا حُسْنًا

مَثَل



हुए आते हैं कि हम तो केवल भलाई और बनाव चाहते थे ?

63. ये वे लोग हैं जिनके दिलों की बात अल्लाह भली-भाँति जानता है; तो तुम उन्हें जाने दो और उन्हें समझाओ और उनसे उनके विषय में वह बात कहो जो प्रभावकारी हो ।

64. हमने जो रसूल भी भेजा, इसलिए भेजा कि अल्लाह की अनुमति से उसकी आज्ञा का पालन किया जाए । और यदि यह उस समय, जबकि इन्होंने स्वयं अपने ऊपर जुल्म किया था, तुम्हारे पास आ जाते और अल्लाह से क्षमा चाहते और रसूल भी इनके लिए क्षमा की

प्रार्थना करता तो निश्चय ही वे अल्लाह को अत्यन्त क्षमाशील और दयावान पाते ।

65. तो तुम्हें तुम्हारे रब की कसम ! ये ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपस के झगड़ों में ये तुमसे फ़ैसला न कराएँ । फिर जो फ़ैसला तुम कर दो, उसपर ये अपने दिल में कोई तंगी न पाएँ और पूरी तरह मान लें ।

66. और यदि कहीं हमने उन्हें आदेश दिया होता कि "अपनों को क़त्ल करो<sup>1</sup> या अपने घरों से निकल जाओ", तो उनमें से थोड़े ही ऐसा करते । हालाँकि जो नसीहत उन्हें की जाती है, अंगर वे उसे व्यवहार में लाते तो यह बात उनके लिए अच्छी होती और ज़्यादा जमाव पैदा करनेवाली होती ।

67. और उस समय हम उन्हें अपनी ओर से निश्चय ही बड़ा बदला प्रदान करते ।

68. और उन्हें सीधे मार्ग पर भी लगा देते ।

69. जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करता है, तो ऐसे ही लोग

وَتَوْفِيقًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ فَأَغْرَضَ عَنْهُمْ وَعَظَّمَهُمْ وَقَالَ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَلَوْ أَنْتُمْ إِذْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ جَاءَ وَلَدٌ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝ فَلَا وَرَبِّكَ إِلَّا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْكُمْ فَيُبَايِعُوا بِكَ أَوْ يُضْلِمُوا ۚ فَأَنفَرْتُمْ مِنْهُمْ فَتُتِبْتُمْ وَنَقَرْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ ۚ وَلَوْ أَنَّ كُتِبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِنْهُمْ ۚ وَلَوْ أَنَّكُمْ فَعَلْتُمْ مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيثًا ۚ وَإِذَا لَأْتَيْنَهُمْ مِنْ لَدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ۚ وَلَهْدَيْنَهُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۚ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ

1. यानी अपने उन लोगों को जिन्होंने ऐसे अपराध किए जिनकी सज़ा क़त्ल ही है ।



उन लोगों के साथ हैं जिनपर अल्लाह की कृपादृष्टि रही है— वे नबी, सिद्दीक़, शहीद और अच्छे लोग हैं। और वे कितने अच्छे साथी हैं।

70. यह अल्लाह का उदार अनुग्रह है। और काफ़ी है अल्लाह, इस हाल में कि वह भली-भाँति जानता है।

71. ऐ ईमान लानेवालो ! अपने बचाव की सामग्री (हथियार आदि) सँभालो। फिर या तो अलग-अलग टुकड़ियों में निकलो या इकट्ठे होकर निकलो।

72. तुममें से कोई ऐसा भी है जो ढीला पड़ जाता है, फिर यदि तुमपर कोई मुसीबत आए तो कहने लगता है कि अल्लाह ने मुझपर कृपा की कि मैं इन लोगों के साथ न गग़ा।

73. परन्तु यदि अल्लाह की ओर से तुमपर कोई उदार अनुग्रह हो तो वह इस प्रकार से जैसे तुम्हारे और उसके बीच प्रेम का कोई संबंध ही नहीं, कहता है : “क्या ही अच्छा होता कि मैं भी उनके साथ होता, तो बड़ी सफलता प्राप्त करता।”

74. तो जो लोग आखिरत (परलोक) के बदले सांसारिक जीवन का सौदा करें, उन्हें चाहिए कि अल्लाह के मार्ग में लड़ें। जो अल्लाह के मार्ग में लड़ेगा, चाहे वह मारा जाए या विजयी रहे, उसे हम शीघ्र ही बड़ा बदला प्रदान करेंगे।

75. तुम्हें क्या हुआ है कि अल्लाह के मार्ग में और उन कमज़ोर पुरुषों, औरतों

وَالَّذِينَ

وَالَّذِينَ

وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ  
 مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ  
 وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ۗ  
 وَكَفَىٰ بِاللهِ عِلْمًا ۚ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا  
 حِذْرَكُمْ فَانفِرُوا ثُبَاتٍ أَوِ انفِرُوا جَمِيعًا ۚ وَإِنْ  
 مِنْكُمْ لَمَنْ كَيْبُطٌ ۖ وَإِنْ أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ ۖ قَالُوا  
 قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْنَا ۖ إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ شَاهِدًا ۚ  
 وَلَكِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِنَ اللَّهِ لِيَقُولُوا كَأَن لَّمْ  
 يَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَلَيْفَ كُنْتُمْ مَعَهُمْ  
 فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ۚ فَلْيَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ  
 الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ وَمَنْ  
 يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ ۖ فَسَوْفَ  
 نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۚ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي

مِنْ



और बच्चों के लिए युद्ध न करो, जो प्रार्थनाएँ करते हैं कि “हमारे रब ! तू हमें इस बस्ती से निकाल, जिसके लोग अत्याचारी हैं। और हमारे लिए अपनी ओर से तू कोई समर्थक नियुक्त कर और हमारे लिए अपनी ओर से तू कोई सहायक नियुक्त कर।”

76. ईमान लानेवाले तो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करते हैं और अधर्मी लोग तागूत (बड़े हुए सरकश) के मार्ग में युद्ध करते हैं। अतः तुम शैतान के मित्रों से लड़ो। निश्चय ही, शैतान की चाल बहुत कमज़ोर होती है।

سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ  
وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ  
هَذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا، وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ  
لَدُنْكَ وَلِيًّا، وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا ۖ  
الَّذِينَ آمَنُوا يَقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا  
يَقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ  
الشَّيْطَانِ، إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ۖ أَلَمْ تَرَ  
إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا  
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ، فَلَنَّا كَتَبَ عَلَيْهِمْ  
الْقِتَالَ إِذَا فُرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ  
اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً، وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ  
عَلَيْنَا الْقِتَالَ، لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ، قُلْ  
مَتَاءُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ، وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ اتَّقَى ۚ

77. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था कि अपने हाथ रोके रखो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो ? फिर जब उन्हें युद्ध का आदेश दिया गया तो क्या देखते हैं कि उनमें से कुछ लोगों का हाल यह है कि वे लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे अल्लाह का डर हो या यह डर उससे भी बढ़कर हो। कहने लगे : “हमारे रब ! तूने हमपर युद्ध क्यों अनिवार्य कर दिया ? क्यों न थोड़ी मुहलत हमें और दी ?” कह दो : “दुनिया की पूँजी बहुत थोड़ी है, जबकि आखिरत उस व्यक्ति के लिए अधिक अच्छी है जो अल्लाह



का डर रखता हो और तुम्हारे साथ तनिक भी अन्याय न किया जाएगा।

78. तुम जहाँ कहीं भी होगे, मृत्यु तो तुम्हें आकर रहेगी; चाहे तुम मज़बूत बुजूर्ज (क्लिलो) में ही (क्यों न) हो।" यदि उन्हें कोई अच्छी हालत पेश आती है तो कहते हैं : "यह तो अल्लाह के पास से है।" परन्तु यदि उन्हें कोई बुरी हालत पेश आती है तो कहते हैं : "यह तुम्हारे कारण है।" कह दो : "हरेक चीज़ अल्लाह के पास से है।" आखिर इन लोगों को क्या हो गया है कि ये ऐसे नहीं लगते कि कोई बात समझ सकें ?

79. तुम्हें जो भी भलाई प्राप्त होती है, वह अल्लाह की ओर से है और जो बुरी हालत तुम्हें पेश आ जाती है तो वह तुम्हारे अपने ही कारण पेश आती है। हमने तुम्हें लोगों के लिए रसूल बनाकर भेजा है और (इसपर) अल्लाह का गवाह होना काफ़ी है।

80. जिसने रसूल की आज्ञा का पालन किया, उसने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया और जिसने मुँह मोड़ा तो हमने तुम्हें ऐसे लोगों पर कोई रखवाला बनाकर तो नहीं भेजा है।

81. और वे दावा तो आज्ञापालन का करते हैं, परन्तु जब तुम्हारे पास से हटते हैं तो उनमें एक गिरोह अपने कथन के विपरीत रात में षड्यंत्र करता है। जो कुछ वे षड्यंत्र करते हैं, अल्लाह उसे लिख रहा है। तो तुम उनसे रुख फेर लो और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह का कार्यसाधक होना काफ़ी है !

82. क्या वे कुरआन में सोच-विचार नहीं करते ? यदि यह अल्लाह के

النِّسَاء

النِّسَاء

وَلَا تُظْلَمُونَ قَتِيلًا ۝ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَذَرِكُمْ  
الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشِيدَةٍ ۝ وَإِنْ تُصِيبْهُمْ  
حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۝ وَإِنْ تُصِيبْهُمْ  
سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِكَ ۝ قُلْ كُلُّ مِنْ عِنْدِ  
اللَّهِ ۝ فَبِأَلِّ هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكْأَدُونَ يَعْقِلُونَ  
حَدِيثًا ۝ مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۝ وَمَا  
أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنَ نَفْسِكَ ۝ وَ أَرْسَلْنَاكَ  
بِالنَّاسِ رَسُولًا ۝ وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝ مَنْ يُظِلِّ  
الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۝ وَمَنْ تَوَلَّى فَمَا أَرْسَلْنَاكَ  
عَلَيْهِمْ حَافِظًا ۝ وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ  
عِنْدِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ ۝  
وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ ۝ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ  
عَلَى اللَّهِ ۝ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝ أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ

مَنْ



अतिरिक्त किसी और की ओर से होता, तो निश्चय ही वे इसमें बहुत-सी बेमेल बातें पाते।

83. जब उनके पास निश्चिन्तता या भय की कोई बात पहुँचती है तो उसे फैला देते हैं, हालाँकि अगर वे उसे रसूल और अपने समुदाय के उत्तरदायी व्यक्तियों तक पहुँचाते तो उसे वे लोग जान लेते जो उनमें उसकी जाँच कर सकते हैं। और यदि तुमपर अल्लाह का उदार अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती, तो थोड़े लोगों के सिवा तुम सब शैतान के पीछे चलने लग जाते।

الْقُرْآنَ. وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ  
اِخْتِلَافًا كَثِيرًا. وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الْأَمِينِ  
أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ. وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَى  
أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَ الَّذِينَ يَسْتَنبِطُونَهُ مِنْهُمْ  
مِنْهُم. وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ  
الشَّيْطَانَ. إِلَّا قَلِيلًا. فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ. لَا  
تُكَلِّفُ إِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِضِ الْمُؤْمِنِينَ. عَسَى اللَّهُ  
أَنْ يَكْلِفَ بَأْسَ الْهَيْئَةِ كُفْرًا. وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ  
تَنْكِيلًا. مَنْ يُشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ  
نَصِيبٌ مِنْهَا. وَمَنْ يُشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ  
لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا. وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُقِيلًا.  
وَإِذَا حُجِّبْتُمْ بِهِ نَظَرْنَا بِأَحْسَنِ مِنْهَا أَوْ رَدُّوهُ  
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا. اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا

84. अतः अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो—तुमपर तो बस तुम्हारी अपनी ही ज़िम्मेदारी है—और ईमानवालों की कमज़ोरियों को दूर करो और उन्हें (युद्ध के लिए) उभारो। इसकी बहुत संभावना है कि अल्लाह इनकार करनेवालों के जोर को रोक लगा दे। अल्लाह बड़ा जोरवाला और कठोर दण्ड देनेवाला है।

85. जो कोई अच्छी-सिफ़ारिश करेगा, उसे उसके कारण प्रतिदान मिलेगा और जो बुरी सिफ़ारिश करेगा, तो उसके कारण उसका बोझ उसपर पड़कर रहेगा। अल्लाह को तो हर चीज़ पर क़ाबू हासिल है।

86. और तुम्हें जब सलामती की कोई दुआ दी जाए, तो तुम सलामती की उससे अच्छी दुआ दो या उसी को लौटा दो। निश्चय ही, अल्लाह हर चीज़ का हिसाब रखता है।

87. अल्लाह के सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं। वह तुम्हें क़ियामत के दिन की



ओर ले जाकर इकट्ठा करके रहेगा, जिसके आने में कोई संदेह नहीं, और अल्लाह से बढ़कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है।

88. फिर तुम्हें क्या हो गया है कि कपटाचारियों (मुनाफ़िकों) के विषय में तुम दो गिरोह हो रहे हो, यद्यपि अल्लाह ने तो उनकी करतूतों के कारण उन्हें उल्टा फेर दिया है? क्या तुम उसे मार्ग पर लाना चाहते हो जिसे अल्लाह ने गुमराह छोड़ दिया है? हालाँकि जिसे अल्लाह मार्ग न दिखाए, उसके लिए तुम कदापि कोई मार्ग नहीं पा सकते।

إِذَا هُمْ لِيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ  
وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ۚ قُلْ لَكُمْ فِي  
الْمُؤْفِقِينَ فِتْنَةٌ وَاللَّهُ أَرْكَهُمْ بِمَا كَسَبُوا ۚ  
أَتُرِيدُونَ أَنْ تَهْتَدُوا مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ ۚ وَمَنْ يُضِلِلِ  
اللَّهُ فَلَئِنْ تَجَدَّ لَهُ سَبِيلًا ۚ وَذُؤَا لَوْ تَكْفُرُونَ  
كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً ۚ فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ  
أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يَخْرُجُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ كُتِلُوا  
وُكِّلُوا مِنْهُمْ وَأُتِلُوا مِنْهُمْ حَتَّىٰ وَجَدْتُمُوهُمْ ۚ وَلَا  
تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ قُلِيًّا وَلَا نُصِيرًا ۚ إِلَّا الَّذِينَ  
يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ نَبَأٌ أَوْ جَاءَكُمْ  
حَصْرَتٌ صُدُّوا عَنْهُمْ أَنْ يَقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا  
قَوْمَهُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَطَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَتَلُوكُمْ ۚ  
وَإِنْ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يَقَاتِلُوكُمْ وَالْقَوَا إِلَيْكُمْ

89. वे तो चाहते हैं कि जिस प्रकार वे स्वयं अधर्मी हैं, उसी प्रकार तुम भी अधर्मी बनकर उन जैसे हो जाओ; तो तुम उनमें से अपने मित्र न बनाओ, जब तक कि वे अल्लाह के मार्ग में घरबार न छोड़ें। फिर यदि वे इससे पीठ फेरें तो उन्हें पकड़ो, और उन्हें क़त्ल करो जहाँ कहीं भी उन्हें पाओ— तो उनमें से किसी को न अपना मित्र बनाना और न सहायक—

90. सिवाय उन लोगों के जो ऐसे लोगों से संबंध रखते हों, जिनसे तुम्हारे और उनके बीच कोई समझौता हो या वे तुम्हारे पास इस दशा में आएँ कि उनके दिल इससे तंग हो रहे हों कि वे तुमसे लड़ें या अपने लोगों से लड़ाई करें। यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें तुमपर क़ाबू दे देता। फिर तो वे तुमसे अवश्य लड़ते; तो यदि वे तुमसे अलग रहें और तुमसे न लड़ें और संधि के



लिए तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाएँ तो उनके विरुद्ध अल्लाह ने तुम्हारे लिए कोई रास्ता नहीं रखा है।

91. अब तुम कुछ ऐसे लोगों को भी पाओगे, जो चाहते हैं कि तुम्हारी ओर से निश्चिन्त होकर रहें और अपने लोगों की ओर से भी निश्चिन्त होकर रहें। परन्तु जब भी वे फ़साद और उपद्रव की ओर फेरे गए तो वे उसी में औंधे जा गिरे। तो यदि वे तुमसे अलग-थलग न रहें और तुम्हारी ओर सुलह का हाथ न बढ़ाएँ, और अपने हाथ न रोकें, तो तुम उन्हें पकड़ो और क़त्ल करो, जहाँ कहीं भी तुम उन्हें पाओ। उनके विरुद्ध हमने तुम्हें खुला अधिकार दे रखा है।

92. किसी ईमानवाले का यह काम नहीं कि वह किसी ईमानवाले की हत्या करे, भूल-चूक की बात और है। और कोई व्यक्ति यदि ग़लती से किसी ईमानवाले की हत्या कर दे, तो एक मोमिन गुलाम को आज़ाद करना होगा और अर्धदण्ड उस (मारे गए व्यक्ति) के घरवालों को सौंपा जाए। यह और बात है कि वे अपनी खुशी से छोड़ दें। और यदि वह उन लोगों में से हो, जो तुम्हारे शत्रु हों और वह (मारा जानेवाला) स्वयं मोमिन रहा हो तो एक मोमिन को गुलामी से आज़ाद करना होगा। और यदि वह उन लोगों में से हो कि तुम्हारे और उनके बीच कोई संधि और समझौता हो, तो अर्धदण्ड उसके घरवालों को सौंपा जाए और एक मोमिन को गुलामी से आज़ाद करना होगा। लेकिन जो (गुलाम) न पाए तो वह निरन्तर दो मास के रोज़े रखे। यह अल्लाह

النِّسَاء

النِّسَاء

الْإِسْلَامَ، فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ۖ  
مَتَّحِدُونَ أَخْرَجَ يَرْيَدُونَ أَنْ يَأْمَنُواكُمْ وَ  
يَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ، كُلَّمَا رُزِّقُوا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا  
فِيهَا، فَإِنْ لَمْ يَعْتَزْلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمْ السَّلَامَ  
وَيَكْفُرُوا أَيَّدِيَهُمْ فَعُذُّوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ  
تَوَقَّفْتُمُوهُمْ وَأُولَئِكَ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ مَلْظُمًا  
مُحْكَمًا ۚ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَقتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا  
خَطَا، وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ  
مُؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَى أَهْلِهِ إِلَّا أَنْ  
يَصَّدَّقُوا، فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَكُمْ وَهُوَ  
مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ، وَإِنْ كَانَ  
مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ فِدْيَةٌ  
مُسَلَّمَةٌ إِلَى أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ،

مَنْ



की ओर से निश्चित किया हुआ उसकी तरफ़ पलट आने का तरीका है। अल्लाह तो सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

93. और जो व्यक्ति जान-बूझकर किसी मोमिन की हत्या करे, तो उसका बदला जहन्नम है, जिसमें वह सदा रहेगा; उसपर अल्लाह का प्रकोप और उसकी फिटकार है और उसके लिए अल्लाह ने बड़ी यातना तैयार कर रखी है।

94. ऐ ईमान लानेवालो ! जब तुम अल्लाह के मार्ग में निकलो तो अच्छी तरह पता लगा लो और जो तुम्हें सलाम करे, उससे यह न कहो कि तुम ईमान नहीं रखते, और इससे तुम्हारा ध्येय यह हो कि सांसारिक जीवन का माल प्राप्त करो। अल्लाह के पास तो बहुत अधिक प्राप्त माल है। पहले तुम भी ऐसे ही थे, फिर अल्लाह ने तुमपर उपकार किया, तो अच्छी तरह पता लगा लिया करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी खबर रखता है।

95. ईमानवालों में से वे लोग जो बिना किसी कारण के बैठे रहते हैं और जो अल्लाह के मार्ग में अपने धन और प्राणों के साथ जी-तोड़ कोशिश करते हैं, दोनों समान नहीं हो सकते। अल्लाह ने बैठ रहनेवालों की अपेक्षा अपने धन और प्राणों से जी-तोड़ कोशिश करनेवालों का दर्जा बढ़ा रखा है। यद्यपि

النساء

والفصل

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ قَصِيَامَ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً  
مِّنَ اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَمَنْ  
يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِدًا قَدْ آذَىٰ جَهَنَّمَ خُلْدًا  
فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا  
عَظِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ  
فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَىٰ  
إِلَيْكُمُ السَّلَامَ كُنتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ  
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِندَ اللَّهِ مَغَارِمُ كَثِيرَةٌ ۚ كَذَلِكَ  
كُنْتُمْ قَبْلَ فَمَنْ أَلْقَىٰ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۚ إِنَّ  
اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ لَا يَسْتَوِي  
الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَعِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ  
فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ

سَبَل



प्रत्येक के लिए अल्लाह ने अच्छे बदले का वचन दिया है। परन्तु अल्लाह ने बैठ रहनेवालों की अपेक्षा जी-तोड़ कोशिश करनेवालों का बड़ा बदला रखा है।

96. उसकी ओर से दर्जे हैं और क्षमा और दयालुता है। और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

97. जो लोग अपने-आप पर अत्याचार करते हैं, जब फ़रिश्ते उस दशा में उनके प्राण ग्रस्त कर लेते हैं, तो कहते हैं : “तुम किस दशा में पड़े रहे?” वे कहते हैं : “हम धरती में निर्बल और बेबस

थे।” फ़रिश्ते कहते हैं : “क्या अल्लाह की धरती विस्तृत न थी कि तुम उसमें घर-बार छोड़कर कहीं चले जाते?” तो ये वही लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है।—और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

98. सिवाय उन बेबस पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के जिनके बस में कोई उपाय नहीं और न कोई राह पा रहे हैं;

99. तो संभव है कि अल्लाह ऐसे लोगों को छोड़ दे; क्योंकि अल्लाह छोड़ देनेवाला और बड़ा क्षमाशील है।

100. जो कोई अल्लाह के मार्ग में घरबार छोड़कर निकलेगा, वह धरती में शरण लेने की बहुत जगह और समाई पाएगा, और जो कोई अपने घर में सब

وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنَحْلِهِمْ يَدْعُونَ  
عَلَى الْقُعُودِينَ دَرَجَةً ۚ كُلًّا وَعَدَ اللَّهُ  
الْحُسْنَىٰ ۚ وَقَضَىٰ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقُعُودِينَ  
أَجْرًا عَظِيمًا ۚ دَرَجَتٍ مِنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۚ  
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَوَقَّعُوا  
الْمَكِيدَةَ ظَالِمًا أَفْتَبِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ  
قَالُوا كُنَّا مُتَضَعِّفِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ قَالُوا أَلَمْ  
تَكُنْ أَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا ۚ  
قَالُوا لَكَ مَا دَرَبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۚ  
إِلَّا الْمُتَضَعِّفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْأَوْلَادِ  
لَا يَسْتَطِيعُونَ جُنُودًا وَلَا يَهْتَدُونَ  
سَبِيلًا ۚ قَالُوا لَكَ عَسَىٰ أَنْ يَغْفِرَ عَنْهُمْ ۚ  
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۚ وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي  
سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرْغَمًا كَثِيرًا



कुछ छोड़कर अल्लाह और उसके रसूल की ओर निकले और उसकी मृत्यु हो जाए, तो उसका प्रतिदान अल्लाह के ज़िम्मे हो गया। अल्लाह बहुत क्षमाशील, दयावान है।

101. और जब तुम धरती में यात्रा करो, तो इसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं कि नमाज़ को कुछ संक्षिप्त कर दो; यदि तुम्हें इस बात का भय हो कि विधर्मी लोग तुम्हें सताएँगे और कष्ट पहुँचाएँगे। निश्चय ही विधर्मी लोग तुम्हारे खुले शत्रु हैं।

102. और जब तुम उनके बीच हो और (लड़ाई की दशा में) उन्हें नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े हो, तो चाहिए कि उनमें से एक गिरोह के लोग तुम्हारे साथ खड़े हो जाएँ और अपने हथियार साथ लिए रहें, और फिर जब वे सजदा कर लें तो उन्हें चाहिए कि वे हटकर तुम्हारे पीछे हो जाएँ और दूसरे गिरोह के लोग, जिन्होंने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी, आएँ और तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ें, और उन्हें भी चाहिए कि वे भी अपने बचाव के सामान और हथियार लिए रहें। विधर्मी चाहते ही हैं कि तुम अपने हथियारों और सामान से असावधान हो जाओ तो वे तुमपर एक साथ टूट पड़ें। यदि वर्षा के कारण तुम्हें तकलीफ़ होती हो या तुम बीमार हो, तो

وَسَعَةً. وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى  
اللّٰهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ  
أَجْرُهُ عَلَى اللّٰهِ. وَكَانَ اللّٰهُ غَفُورًا رَّحِيمًا  
وَإِذَا خَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ  
أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ  
الَّذِينَ كَفَرُوا. إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا  
مُّبِينًا. وَإِذَا كُنْتُمْ فِيهِمْ فَأَقِمْ لَهُمُ الصَّلَاةَ  
فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ  
فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ وَرَائِكُمْ وَلْتَأْتِ  
طَائِفَةٌ أُخْرَى لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ  
وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ. وَذَ الَّذِينَ  
كَفَرُوا لَوْ كَفَلُوا عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ  
فَيُمِينُونَ عَلَيْكُمْ مِثْلَ وَاحِدَةٍ وَلَا جُنَاحَ



तुम्हारे लिए कोई गुनाह नहीं कि अपने हथियार रख दो, फिर भी अपनी सुरक्षा का सामान लिए रहो। अल्लाह ने विधर्मियों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

103. फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह को याद करते रहो। फिर जब तुम्हें इतमीनान हो जाए तो विधिवत रूप से नमाज़ पढ़ो। निस्संदेह ईमानवालों पर समय की पाबन्दी के साथ नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है।

104. और उन लोगों का पीछा करने में सुस्ती न दिखाओ। यदि तुम्हें दुख पहुँचता है, तो उन्हें भी तो दुख पहुँचता है, जिस तरह तुमको दुख पहुँचता है। और तुम अल्लाह से उस चीज़ की आशा करते हो, जिस चीज़ की वे आशा नहीं करते। अल्लाह तो सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

105. निस्संदेह हमने यह किताब हक के साथ उतारी है, ताकि अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिखाया है उसके अनुसार लोगों के बीच फ़ैसला करो। और तुम विश्वासघाती लोगों की ओर से झगड़नेवाले न बनो।

106. अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। निस्संदेह अल्लाह बहुत क्षमाशील, दयावान है।

107. और तुम उन लोगों की ओर से न झगड़ो जो स्वयं अपनों के साथ विश्वासघात करते हैं। अल्लाह को ऐसा व्यक्ति प्रिय नहीं है जो विश्वासघाती,

عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَدْنَىٰ مِنْ مَضَرٍّ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَنْ تَصُومُوا أَسْلِحَتْكُمْ، وَخُذُوا حِذْرَكُمْ، إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا، فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَمًا وَتَعَوُّدًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ، فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ، إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا، وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ، إِنْ تَكُونُوا تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ، وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ، وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا، إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرَاكَ اللَّهُ، وَلَا تَكُنَ لِلْغَائِبِينَ خَصِيمًا، وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ، إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا، وَلَا تَجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَلُونَ أَنفُسَهُمْ، إِنَّكَ



हक़ मारनेवाला हो ।

108. वे लोगों से तो छिपते हैं, परन्तु अल्लाह से नहीं छिपते । वह तो (उस समय भी) उनके साथ होता है, जब वे रातों में उस बात की गुप्त-मन्त्रणा करते हैं जो उनकी इच्छा के विरुद्ध होती है । जो कुछ वे करते हैं, वह अल्लाह (के ज्ञान) से आच्छादित है ।

109. हाँ, ये तुम ही हो, जिन्होंने सांसारिक जीवन में उनकी ओर से झगड़ लिया, परन्तु क्रियामत के दिन उनकी ओर से अल्लाह से कौन झगड़ेगा या कौन उनका वकील होगा ?

110. और जो कोई बुरा कर्म कर बैठे या अपने-आप पर अत्याचार करे, फिर अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करे, तो वह अल्लाह को बड़ा क्षमाशील, दयावान पाएगा ।

111. और जो व्यक्ति गुनाह कमाए, तो वह अपने ही लिए कमाता है । अल्लाह तो सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है ।

112. और जो व्यक्ति कोई ग़लती या गुनाह की कमाई करे, फिर उसे किसी निर्दोष पर थोप दे, तो उसने एक बड़े लांछन और खुले गुनाह का बोझ अपने ऊपर ले लिया ।

113. यदि तुमपर अल्लाह का उदार अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती तो उनमें से कुछ लोग तो यह निश्चय कर ही चुके थे कि, तुम्हें राह से भटका दें, हालाँकि वे अपने आप ही को पथभ्रष्ट कर रहे हैं, और तुम्हें वे कोई हानि

وَالْمُنَافِقِينَ

وَالْمُنَافِقِينَ

اللَّهُ لَا يَجِبُ مَنْ كَانَ خَوَاتًا أَثِمًا ۚ يَسْتَخْفُونَ  
مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ  
إِذَا يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَى مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَكَانَ  
اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ۖ هَآأَنْتُمْ هَؤُلَاءِ جَدَلْتُمْ  
عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ فَمَنْ يُجَادِلُ اللَّهَ  
عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَمْ مَنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۖ  
وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ  
اللَّهُ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَحِيمًا ۖ وَمَنْ يَكْسِبْ  
إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ عَلَى نَفْسِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ  
عَلِيمًا حَكِيمًا ۖ وَمَنْ يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ  
يَزِمْ بِهَا بَرِيًّا فَقَدْ اِخْتَلَفَ بَيْنَهُمَا وَإِنَّمَا مُمِيتَانِ ۚ  
وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّتْ  
طَائِفَةٌ مِنْهُمْ أَنْ يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا

مَنْ



नहीं पहुँचा सकते। अल्लाह ने तुमपर किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) उतारी है और उसने तुम्हें वह कुछ सिखाया जो तुम जानते न थे। और अल्लाह का तुमपर बहुत बड़ा अनुग्रह है।

114. उनकी अधिकतर काना-फूसियों में कोई भलाई नहीं होती। हाँ, जो व्यक्ति सदका देने या भलाई करने या लोगों के बीच सुधार के लिए कुछ कहे, तो उसकी बात और है। और जो कोई यह काम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए करेगा, उसे हम निश्चय ही बड़ा प्रतिदान प्रदान करेंगे।

115. और जो व्यक्ति, इसके पश्चात भी कि मार्गदर्शन खुलकर उसके सामने आ गया है, रसूल का विरोध करेगा और ईमानवालों के मार्ग के अतिरिक्त किसी और मार्ग पर चलेगा तो उसे हम उसी पर चलने देंगे, जिसको उसने अपनाया होगा और उसे जहन्नम में झोंक देंगे, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

116. निस्संदेह अल्लाह इस चीज़ को क्षमा नहीं करेगा कि उसके साथ किसी को शामिल किया जाए। हाँ, इससे नीचे दर्जे के अपराध को, जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा। जो अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराता है, तो वह भटककर बहुत दूर जा पड़ा।

117. वे अल्लाह से हटकर बस कुछ देवियों को पुकारते हैं। और वे तो बस सरकश शैतान को पुकारते हैं;

118. जिसपर अल्लाह की फिटकार है। उसने कहा था : "मैं तेरे बन्दों में

أَنفُسَهُمْ

وَمَا يَصْرُوفُكَ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَأَنزَلَ اللَّهُ

عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَيْكَ مَا لَمْ تُكُنْ

تَعْلَمُ ۚ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝ لَا خَيْرَ

فِي كَثِيرٍ مِّنْ تَجْوَاهُمْ إِلَّا مَن أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ

مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ

ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا

عَظِيمًا ۝ وَمَن يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا

كَتَبَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ

تُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَتُضْلِخْ جَهَنَّمَ ۚ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ

ذَٰلِكَ لِمَن يُشَاءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ

ضَلَالًا بَعِيدًا ۝ إِن يَدْعُونَ مِن دُونِهِ إِلَّا إِنشَاءً ۚ

وَلَن يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَّرِيدًا ۝ لَّعَنَهُ اللَّهُ

مَلِكُ



से एक निश्चित हिस्सा लेकर रहूँगा।

119. और उन्हें अवश्य ही भटकाऊँगा और उन्हें कामनाओं में उलझाऊँगा, और उन्हें हुक्म दूँगा तो वे चौपायों के कान फाड़ेंगे, और उन्हें मैं सुझाव दूँगा तो वे अल्लाह की संरचना में परिवर्तन करेंगे।" और जिसने अल्लाह से हटकर शैतान को अपना संरक्षक और मित्र बनाया, वह खुले घाटे में पड़ गया।

120. वह उनसे वादा करता है और उन्हें कामनाओं में उलझाए रखता है, हालाँकि शैतान उनसे जो कुछ वादा करता है वह एक धोके के सिवा कुछ भी नहीं होता।

121. वही लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वे उससे अलग होने की कोई जगह न पाएँगे।

122. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें हम जल्द ही ऐसे बागों में दाखिल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। अल्लाह का वादा सच्चा है, और अल्लाह से बढ़कर बात का सच्चा कौन हो सकता है?

123. बात न तुम्हारी कामनाओं की है और न किताबवालों की कामनाओं की। जो भी बुराई करेगा उसे उसका फल मिलेगा और वह अल्लाह से हटकर न तो कोई मित्र पाएगा और न ही सहायक।

124. किन्तु जो अच्छे कर्म करेगा, चाहे पुरुष हो या स्त्री, यदि वह ईमान-

وَالْمُنَافِقِينَ

وَالْمُنَافِقِينَ

وَقَالَ لَا تَخْذَنْ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا  
وَلَا ضَلَالَتَهُمْ وَلَا مَتْنِبَهُمْ وَلَا مَرْتَبَهُمْ فَلْيَبْشِرْ  
أَذَانُ الْأَنْعَامِ وَلَا مَرْتَبَهُمْ فَلْيَغْتَبِرْ خَلَقَ اللَّهُ  
وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ  
خَسِرَ خُسْرَانًا مُبِينًا يُعِدُّهُ وَيَمْنِيهِمْ وَمَا  
يُعِدُّهُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا أُولَئِكَ مَا أَوْفَوْا  
بِعَهْدِهِمْ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا وَالَّذِينَ  
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي  
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَعْدَ اللَّهِ  
حَقًّا وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا لَيْسَ  
بِأَمَانِيكُمْ وَلَا أَمَانِي أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ يَعْمَلْ  
سُوءًا يُجْزَ بِهِ وَلَا يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا  
وَلَا يَصِيرَ وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ

مِنْ



वाला है तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे। और उनका हक़ रक्ती भर भी मारा नहीं जाएगा।

125. और दीन (धर्म) की दृष्टि से उस व्यक्ति से अच्छा कौन हो सकता है, जिसने अपने आपको अल्लाह के आगे झुका दिया और वह अत्यन्त सत्कर्मों भी हो और इबराहीम के तरीक़े का अनुसरण करे, जो सबसे कटकर एक का हो गया था? अल्लाह ने इबराहीम को अपना घनिष्ठ मित्र बनाया था।

126. जो कुछ आकाशों में और जो कुछ धरती में है, वह अल्लाह ही का है और अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है।

127. लोग तुमसे स्त्रियों के विषय में पूछते हैं, कहो : "अल्लाह तुम्हें उनके विषय में हुक्म देता है और जो आयतें तुमको इस किताब में पढ़कर सुनाई जाती हैं, वे उन स्त्रियों के अनाथों के विषय में भी हैं, जिनके हक़ तुम अदा नहीं करते। और चाहते हो कि तुम उनके साथ विवाह कर लो और कमज़ोर यतीम बच्चों के बारे में भी यही आदेश है। और इस विषय में भी कि तुम अनाथों के विषय में इनसाफ़ पर क़ायम रहो। जो भलाई भी तुम करोगे तो निश्चय ही, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता होगा।"

128. यदि किसी स्त्री को अपने पति की ओर से दुर्व्यवहार या बेरुखी का भय हो, तो इसमें उनके लिए कोई दोष नहीं कि वे दोनों आपस में मेल-मिलाप की कोई राह निकाल लें। और मेल-मिलाप अच्छी चीज़ है। और

وَالَّذِينَ  
أَوَّاهُوا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ  
وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِّمَّنْ  
أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ  
إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا. وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا  
وَاللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ. وَكَانَ  
اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي  
النِّسَاءِ. قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا يُثَلِّ عَلَيْكُمْ  
فِي الْكِتَابِ فِي يَتِمِّي النِّسَاءِ الَّتِي لَا تُوْتُوهُنَّ  
مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَشَرَعْتُمْ أَنْ تَتَنكِحُوهُنَّ وَ  
الْمُسْتَغْفِرِينَ مِنَ الْوِلْدَانِ وَإِنْ تُقَوْمُوا إِلَيْهِنَّ  
يَا قَسِطًا. وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ  
بِهِ عَلِيمًا وَإِنْ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا  
شُورًا أَوْ غَرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا



मन तो लोभ एवं कृपणता के लिए उद्यत रहता है। परन्तु यदि तुम अच्छा व्यवहार करो और (अल्लाह का) भय रखो, तो अल्लाह को निश्चय ही जो कुछ तुम करोगे उसकी खबर रहेगी।

129. और चाहे तुम कितना ही चाहो, तुममें इसकी सामर्थ्य नहीं हो सकती कि औरतों के बीच पूर्ण रूप से न्याय कर सको। तो ऐसा भी न करो कि किसी से पूर्णरूप से फिर जाओ, जिसके परिणामस्वरूप वह ऐसी हो जाए, जैसे उसका पति खो गया हो। परन्तु यदि तुम अपना व्यवहार ठीक रखो और

بَيْنَهُمَا صُلْحًا. وَالصُّلْحُ خَيْرٌ وَأُحْضِرَتِ الْأَنفُسُ  
الشُّعْرَ. وَإِنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا  
تَعْمَلُونَ خَبِيرًا. وَلَنْ تُشْطَبُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ  
النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمِيلِ فَتَدْرُوا  
كَالْمُعَلَّقَةِ. وَإِنْ تَصْلَحُوهَا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ  
كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا. وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلًّا  
مِنْ سَعْيِهِ. وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا. وَهُوَ مَا  
فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ. وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ  
أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنْ اتَّقُوا اللَّهَ.  
وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ.  
وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيدًا. وَهُوَ مَا فِي السَّمَوَاتِ  
وَمَا فِي الْأَرْضِ. وَكَفَى بِالنَّاسِ عَذَابًا. إِنْ يَشَأْ  
يُذْهِبْكُمْ أَهْلَ النَّاسِ وَيَأْتِ بِآخَرِينَ. وَكَانَ

(अल्लाह से) डरते रहो, तो निस्संदेह अल्लाह भी बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

130. और यदि दोनों अलग ही हो जाएँ तो अल्लाह अपनी समाई से एक को दूसरे से बेपरवाह कर देगा। अल्लाह बड़ी समाईवाला, तत्त्वदर्शी है।

131. आकाशों और धरती में जो कुछ है, सब अल्लाह ही का है। तुमसे पहले जिन्हें किताब दी गई थी, उन्हें और तुम्हें भी हमने ताकीद की है कि "अल्लाह का डर रखो।" यदि तुम इनकार करते हो, तो इससे क्या होने का? आकाशों और धरती में जो कुछ है, सब अल्लाह ही का रहेगा। अल्लाह तो निस्मृह, प्रशंसनीय है।

132. हाँ, आकाशों और धरती में जो कुछ है, अल्लाह ही का है और अल्लाह कार्यसाधक की हैसियत से काफ़ी है।

133. ऐ लोगो ! यदि वह चाहे तो तुम्हें हटा दे और तुम्हारी जगह दूसरों को



ले आए। अल्लाह को इसकी पूरी सामर्थ्य है।

134. जो कोई दुनिया का बदला चाहता है, तो अल्लाह के पास दुनिया का बदला भी है और आखिरत का भी। अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।

135. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह के लिए गवाही देते हुए इनसाफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहो, चाहे वह स्वयं तुम्हारे अपने या माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो। कोई धनवान हो या निर्धन (जिसके विरुद्ध तुम्हें गवाही देनी पड़े)

अल्लाह को उनसे (तुमसे कहीं बढ़कर) निकटता का संबंध है, तो तुम अपनी इच्छा के अनुपालन में न्याय से न हटो, क्योंकि यदि तुम हेर-फेर करोगे या कतराओगे, तो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर रहेगी।

136. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी है और उस किताब पर भी, जिसको वह इसके पहले उतार चुका है। और जिस किसी ने भी अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों और अंतिम दिन का इनकार किया, तो वह भटककर बहुत दूर जा पड़ा।

137. रहे वे लोग जो ईमान लाए, फिर इनकार किया; फिर ईमान लाए, फिर इनकार किया; फिर इनकार की दशा में बढ़ते चले गए तो अल्लाह उन्हें कदापि

وَاللَّهُ

وَاللَّهُ

اللَّهُ عَلَى ذَلِكَ قَدِيرٌ ۖ مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ  
الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَكَانَ  
اللَّهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۚ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتُوبًا  
قَوْلُ مِنْ بِالْقِسْطِ شَهَادَةً لِلَّهِ وَلَوْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ  
أَوْ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبِينَ ۚ إِنْ يَكُنْ غَنِيًّا أَوْ فَقِيرًا  
فَاللَّهُ أُولَىٰ بِهَا ۖ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَنْ تَعْدِلُوا ۚ  
وَإِنْ تُلَاقُوا أَوْ تَعْرِضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ  
خَبِيرًا ۚ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَ  
رَسُولِهِ ۚ وَالْكِتَابَ الَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۚ وَالْكِتَابَ  
الَّذِي أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ  
وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا  
بُعِيدًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ  
كَفَرُوا ثُمَّ أَزْدَادُوا كُفْرًا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ

مَنْ



क्षमा नहीं करेगा और न उन्हें राह दिखाएगा।

138. मुनाफ़िकों (कपटाचारियों) को मंगल-सूचना दे दो कि उनके लिए दुखद यातना है;

139. जो ईमानवालों को छोड़कर इनकार करनेवालों को अपना मित्र बनाते हैं। क्या उन्हें उनके पास प्रतिष्ठा की तलाश है? प्रतिष्ठा तो सारी की सारी अल्लाह ही के लिए है।

140. वह 'किताब' में तुमपर यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इनकार किया जा रहा है और उनका उपहास किया जा रहा है, तो जब तक वे किसी दूसरी बात में न लग जाएँ, उनके साथ न बैठो, अन्यथा तुम भी उन्हीं जैसे होगे। निश्चय ही अल्लाह कपटाचारियों और इनकार करनेवालों—सबको जहन्नम में एकत्र करनेवाला है।

141. जो तुम्हारे मामले में प्रतीक्षा करते हैं, यदि अल्लाह की ओर से तुम्हारी विजय हुई, तो कहते हैं: "क्या हम तुम्हारे साथ न थे?" और यदि विधर्मियों के हाथ कुछ लगा तो कहते हैं: "क्या हमने तुम्हें घेर नहीं लिया था और तुम्हें ईमानवालों से बचाया नहीं?" अतः अल्लाह क्रियामत के दिन तुम्हारे बीच फ़ैसला कर देगा, और अल्लाह विधर्मियों को ईमानवालों के मुक़ाबले में कोई राह नहीं देगा।

142. कपटाचारी अल्लाह के साथ धोखेबाज़ी कर रहे हैं, हालाँकि उसी ने

وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۚ بُشِّرِ الْمُنَافِقِينَ بِأَن لَّهُمْ  
عَذَابًا أَلِيمًا ۝ الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ  
مِّن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ يَتَّبِعُونَ عَنَدَهُمُ الْعِزَّةَ  
فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۖ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي  
الْكِتَابِ أَن إِذَا سَمِعْتُمُ آيَةَ اللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا وَ  
يَسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ حَتَّى يَخُوضُوا فِي  
حَدِيثِ غَيْرِهِ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا مِّثْلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ  
الْمُنَافِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ۝ الَّذِينَ  
يَتَوَضَّعُونَ بِكُمْ ۚ وَإِن كَانَ لَكُمْ كُفْرٌ مِّنَ اللَّهِ  
أَلَمْ تَكُنْ مَعَكُمْ ۚ وَإِن كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ ۚ قَالُوا  
أَلَمْ نَسْتَحِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعَكُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ قَالَهُ  
يَعْلَمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَلَن يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ  
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ۚ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُغَدِّقُونَ



उन्हें धोखे में डाल रखा है। जब वे नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो कसमसाते हुए, लोगों को दिखाने के लिए खड़े होते हैं। और अल्लाह को थोड़े ही याद करते हैं।

143. इसी के बीच डाँवाडोल हो रहे हैं, न इन (ईमानवालों) की तरफ़ के हैं, न इन (इनकार करनेवालों) की तरफ़ के। जिसे अल्लाह ही भटका दे, उसके लिए तो तुम कोई राह नहीं पा सकते।

144. ऐ ईमान लानेवालो! ईमानवालों से हटकर इनकार करनेवालों को अपना मित्र न

बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह का स्पष्ट तर्क अपने विरुद्ध जुटाओ?

145. निस्संदेह कपटाचारी आग (जहन्नम) के सबसे निचले खण्ड में होंगे, और तुम कदापि उनका कोई सहायक न पाओगे।

146. उन लोगों की बात और है जिन्होंने तौबा कर ली और अपने को सुधार लिया और अल्लाह को मज़बूती से पकड़ लिया और अपने दीन (धर्म) में अल्लाह ही के हो रहे। ऐसे लोग ईमानवालों के साथ हैं और अल्लाह ईमानवालों को शीघ्र ही बड़ा प्रतिदान प्रदान करेगा।

147. अल्लाह को तुम्हें यातना देकर क्या करना है, यदि तुम कृतज्ञता दिखलाओ और ईमान लाओ? अल्लाह गुणग्राहक, सब कुछ जाननेवाला है।

وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ فَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كَسَالَىٰ ۖ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ۚ مَذْبُوحِينَ بَيْنَ ذَلِكَ إِلَّا إِلَىٰ هَؤُلَاءِ ۚ وَلَا إِلَىٰ هَؤُلَاءِ ۚ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۚ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أُرِيدُونَ أَنْ تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُبِينًا ۚ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرَجَةِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ تَصِيرًا ۚ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَسَوْفَ يُؤْتِي اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۚ مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَأَمَنْتُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ۚ



148. अल्लाह बुरी बात खुल्लम-खुल्ला कहने को पसंद नहीं करता, मगर उसकी बात और है जिसपर ज़ुल्म किया गया हो। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

149. यदि तुम खुले रूप में नेकी और भलाई करो या उसे छिपाओ या किसी बुराई को क्षमा कर दो, तो अल्लाह भी क्षमा करनेवाला, सामर्थ्यवान है।

150. जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इनकार करते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच विच्छेद करें, और कहते हैं कि "हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते" और इस तरह वे चाहते हैं कि बीच की कोई राह अपनाएँ;

151. वही लोग पक्के इनकार करनेवाले हैं और हमने इनकार करनेवालों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

152. रहे वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं और उनमें से किसी को उस संबंध में पृथक नहीं करते जो उनके बीच पाया जाता है, ऐसे लोगों को अल्लाह शीघ्र ही उनके प्रतिदान प्रदान करेगा। अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

153. किताबवालों की तुमसे माँग है कि तुम उनपर आकाश से कोई किताब उतार लाओ, तो वे तो मूसा से इससे भी बड़ी माँग कर चुके हैं। उन्होंने कहा था : "हमें अल्लाह को प्रत्यक्ष दिखा दो", तो उनके इस अपराध पर बिजली की कड़क ने उन्हें आ दबोचा। फिर वे बछड़े को अपना उपास्य

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالشُّعْرِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَن ظَلِمَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ۖ إِنَّ تَبْدُؤًا خَيْرًا أَوْ تَغْفُوهُ أَوْ تَعْفُوا عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيرًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَن يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنُكْفِرُ بِبَعْضٍ ۖ وَيُرِيدُونَ أَن يَخْتَدُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا ۖ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أَجُورُهُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا رَحِيمًا ۖ يُنَزِّلُ الْكِتَابَ أَن تَنزِيلٍ عَلَيْهِمْ كِتَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىٰ أَكْبَرَ مِن ذَٰلِكَ فَقَالُوا أَرِنَا اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ

مَذَل



बना बैठे, हालाँकि उनके पास खुली-खुली निशानियाँ आ चुकी थीं। फिर हमने उसे भी क्षमा कर दिया और मूसा को स्पष्ट बल एवं प्रभाव प्रदान किया।

154. और उन लोगों से वचन लेने के साथ तूर (पहाड़) को उनपर उठा दिया और उनसे कहा : “दरवाजे में सजदा करते हुए प्रवेश करो।” और उनसे कहा : “सब्त (सामूहिक इबादत का दिन) के विषय में ज्यादाती न करना।” और हमने उनसे बहुत-ही दृढ़ वचन लिया था।

155. फिर उनके अपने वचन भंग करने और अल्लाह की आयतों का इनकार करने के कारण और नबियों को नाहक क़त्ल करने और उनके यह कहने के कारण कि “हमारे हृदय आवरणों में सुरक्षित हैं”—— नहीं, बल्कि वास्तव में उनके इनकार के कारण अल्लाह ने उनके दिलों पर ठप्पा लगा दिया है। तो ये ईमान थोड़े ही लाते हैं।

156. और उनके इनकार के कारण और मरयम के खिलाफ़ ऐसी बात कहने पर जो एक बड़ा लांछन था——

157. और उनके इस कथन के कारण कि हमने मरयम के बेटे ईसा मसीह, अल्लाह के रसूल, को क़त्ल कर डाला—— हालाँकि न तो इन्होंने उसे क़त्ल किया और न उसे सूली पर चढ़ाया, बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध हो गया। और जो लोग इसमें विभेद कर रहे हैं, निश्चय ही वे इस मामले में सन्देह में थे। अटकल पर चलने के अतिरिक्त उनके पास कोई ज्ञान न था।

الضُّوْقَةُ يَظْلِمُوهُمْ، ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ  
مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذَلِكَ، وَأَشْرَيْنَا  
مُوسَى سُلْطَانًا مُبِينًا - وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ  
بِمِيثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمْ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا  
لَهُمْ لَا تَعْبُدُوا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا  
غَلِيظًا - فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ وَكَفْرِهِمْ بِآيَاتِ  
اللَّهِ وَقَتْلِهِمْ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا  
غُلْفٌ - بَلْ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ  
إِلَّا قَلِيلًا - وَبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَى مَرْيَمَ  
بُهْتَانًا عَظِيمًا : وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ  
بَنِيَّ ابْنِ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ، وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا  
صَلَبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ - وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا  
فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ - مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا



निश्चय ही उन्होंने उसे (ईसा को)  
क़त्ल नहीं किया,

158. बल्कि उसे अल्लाह ने अपनी ओर उठा लिया। और अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

159. किताबवालों में से कोई ऐसा न होगा, जो उसकी मृत्यु से पहले उसपर ईमान न ले आए। और वह क्रियामत के दिन उनपर गवाह होगा।

160. सारांश यह कि यहूदियों के अत्याचार के कारण हमने बहुत-सी अच्छी पाक चीज़ें उनपर हाराम कर दी, जो उनके लिए

हलाल थी और उनके प्रायः अल्लाह के मार्ग से रोकने के कारण;

161. और उनके ब्याज लेने के कारण, जबकि उन्हें इससे रोका गया था । और उनके अवैध रूप से लोगों के माल खाने के कारण ऐसा किया गया और हमने उनमें से जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए दुखद यातना तैयार कर रखी है ।

162. परन्तु उनमें से जो लोग ज्ञान में पक्के हैं और ईमानवाले हैं, वे उस पर ईमान रखते हैं जो तुम्हारी ओर उतारा गया है और जो तुमसे पहले उतारा गया था, और जो विशेष रूप से नमाज़ कायम करते, ज़कात देते और अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं। यही लोग हैं जिन्हें हम शीघ्र ही बड़ा प्रतिदान प्रदान करेंगे।

163. हमने तुम्हारी ओर उसी प्रकार वह्य की है जिस प्रकार नूह और उसके बाद के नबियों की ओर वह्य की। और हमने इबराहीम, इसमाईल,

إِنَّمَا الظَّالِمُ وَمَا قَتَلُوا بِقِيَّتِهِمْ بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ  
إِلَيْهِ. وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا. وَإِنْ مِنْ أَهْلِ  
الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤَيِّدَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ، وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ  
يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا. فَبُطْلِمٍ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا  
حَرَمْنَا عَلَيْهِمْ طَهْنَتِ أَجَلَتْ لَهُمْ وَبَصَدِهِمْ عَنْ  
سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا. وَأَخَذَهُمُ الْيَهُودُ وَقَدْ نُهُوا  
عَنْهُ وَأَكْلَهُمْ أَمْوَالُ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَأَعْتَدْنَا  
لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا. لَكِنِ الرَّاسِخُونَ  
فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ  
إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ  
وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ  
الْآخِرِ. أُولَئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا. إِنَّا أَوْحَيْنَا  
إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِنْ بَعْدِهِ

١٢



इसहाक और याकूब और उसकी संतान और ईसा और अय्यूब और यूनस और हारून और सुलैमान की ओर भी वह्य की। और हमने दाऊद को ज़बूर प्रदान किया।

164. और कितने ही रसूल हुए जिनका वृत्तान्त पहले हम तुमसे बयान कर चुके हैं और कितने ही ऐसे रसूल हुए जिनका वृत्तान्त हमने तुमसे नहीं बयान किया। और मूसा से अल्लाह ने बातचीत की, जिस प्रकार बातचीत की जाती है।

165. रसूल शुभ समाचार देनेवाले और सचेत करनेवाले बनाकर भेजे गए हैं, ताकि रसूलों के पश्चात लोगों के पास अल्लाह के मुक़ाबले में (अपने निर्दोष होने का) कोई तर्क न रहे। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

166. परन्तु अल्लाह गवाही देता है कि उसके द्वारा जो उसने तुम्हारी ओर उतारा है कि उसे उसने अपने ज्ञान के साथ उतारा है और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं, यद्यपि अल्लाह का गवाह होना ही काफी है।

167. निश्चय ही, जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका, वे भटककर बहुत दूर जा पड़े।

168. जिन लोगों ने इनकार किया और ज़ुल्म पर उतर आए, उन्हें अल्लाह कदापि क्षमा नहीं करेगा और न उन्हें कोई मार्ग दिखाएगा।

169. सिवाय जहन्नम के मार्ग के, जिसमें वे सदैव पड़े रहेंगे। और यह अल्लाह

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ  
وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ  
وَسُلَيْمَانَ وَأَتَيْنَا دَاوُدَ رُجُوزًا ۖ وَرُسُلًا قَدْ  
قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِن قَبْلُ ۖ وَرُسُلًا لَّمْ تَقْصُصْهُمْ  
عَلَيْكَ ۖ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا ۖ رُسُلًا  
نُبَيِّنُ لَكَ آيَاتِنَا وَلِتَذَكَّرَ ۖ إِنَّكَ أَنتَ عَلَىٰ عِلْمٍ  
مِّنْ حَيْثُ بُعِدَ الرُّسُلُ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۖ  
لَكِنَّ اللَّهَ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ  
وَالسَّامِكَةُ يَشْهَدُونَ ۖ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۖ  
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ  
صَلُّوا ضَلَالًا بُعِيدًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا  
لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرْ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ۖ  
إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَكَانَ

مَزْلُومٌ



के लिए बहुत-ही सहज बात है।

170. ऐ लोगो ! रसूल तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य लेकर आ गया है। अतः तुम उस भलाई को मानो जो तुम्हारे लिए जुटाई गई है। और यदि तुम इनकार करते हो तो आकाशों और धरती में जो कुछ है, वह अल्लाह ही का है। और अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

171. ऐ किताबवालो ! अपने धर्म में हद से आगे न बढ़ो और अल्लाह से जोड़कर सत्य के अतिरिक्त कोई बात न कहो। मरयम का बेटा मसीह-ईसा इसके

अतिरिक्त कुछ नहीं कि अल्लाह का रसूल है और उसका एक 'कलिमा' है, जिसे उसने मरयम की ओर भेजा था। और उसकी ओर से एक रूह है। तो तुम अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और "तीन" न कहो—बाज़ आ जाओ ! यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है—अल्लाह तो केवल अकेला पूज्य है। यह उसकी महानता के प्रतिकूल है कि उसका कोई बेटा हो। आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसी का है। और अल्लाह कार्यसाधक की हैसियत से काफ़ी है।

172. मसीह ने कदापि अपने लिए बुरा नहीं समझा कि वह अल्लाह का बन्दा हो और न निकटवर्ती फ़रिश्तों ने ही (इसे बुरा समझा)। और जो कोई अल्लाह की बन्दगी को अपने लिए बुरा समझेगा और घमण्ड करेगा,—तो वह (अल्लाह) उन सभी लोगों को अपने पास इकट्ठा करके रहेगा।

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرًا ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ فَامِنُوْا حٰثِرًا لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِى دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۚ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيسٰى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ۚ وَكَلِمَتُهُ اَلْقَاهَا اِلَى مَرْيَمَ وَرُوُوْهُ فَعِنْدُ ۙ فَاَمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ ۚ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ۚ اِنَّهُمْ اَحَدٌ ۚ لَّكُم مِّنْ اَمْرًا اَللّٰهُ وَاحِدٌ ۚ سُبْحٰنَهُ اَنْ يَّكُوْنَ لَهُ وَلَدٌ ۚ لَّهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ وَكَفَى بِاللّٰهِ وَكِيلًا ۚ لَنْ يُسْتَغْنٰى الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لَّهِ ۚ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ وَمَنْ يُسْتَنَفِْكَ عَنْ عِبَادَتِهِ ۚ وَيَسْتَكْبِرْ فَيَعْرِضْهُمْ اِلَيْهِ جَمِيعًا ۝

مِثْل



173. अतः जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, तो अल्लाह उन्हें उनका पूरा-पूरा बदला देगा और अपने उदार अनुग्रह से उन्हें और अधिक प्रदान करेगा। और जिन लोगों ने बन्दगी को बुरा समझा और घमण्ड किया, तो उन्हें वह दुखद यातना देगा। और वे अल्लाह से बच सकने के लिए न अपना कोई निकट का समर्थक पाएँगे और न ही कोई सहायक।

174. ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुला प्रमाण आ चुका है और हमने तुम्हारी ओर एक स्पष्ट प्रकाश उतारा है।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ  
أَجْرَهُمْ وَيَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنكَفُوا  
وَأَسْكَبُوا فِعْزَهُمْ عِدَابًا إِلَيْهَا ۖ وَلَا يَجِدُونَ  
لَهُمْ مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۚ يَأْتِيهَا  
النَّاسُ قَدْ جَاءَهُمُ الْبُرْهَانُ مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَأَنزَلْنَا  
رَبِّيَكُمْ نُورًا مُّبِينًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا  
بِهِ فَسَيُجْزِيهِمْ فِي رَحْمَةِ رَبِّهِمْ وَفَضْلٍ ۚ وَيُخَذِّبُهُمْ  
إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۖ يَسْتَغْفِرُكَ ۚ قُلِ اللَّهُ  
يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ ۚ إِن مَّرُؤًا هَلَكَ لَيْسَ لَهُ  
وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتُ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَا  
إِن لَّمْ يَكُن لَهَا وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا  
النِّصْفَيْنِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِن كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً  
فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۚ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ  
أَن تَضِلُّوا ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

175. तो रहे वे लोग जो अल्लाह पर ईमान लाए और उसे मज़बूती के साथ पकड़े रहे, उन्हें वह शीघ्र ही अपनी दयालुता और अपने उदार अनुग्रह के क्षेत्र में दाखिल करेगा और उन्हें अपनी ओर का सीधा मार्ग दिखा देगा।

176. वे तुमसे आदेश मालूम करना चाहते हैं। कह दो : “अल्लाह तुम्हें ऐसे व्यक्ति के विषय में, जिसका कोई वारिस न हो, आदेश देता है—यदि किसी पुरुष की मृत्यु हो जाए जिसकी कोई संतान न हो, परन्तु उसकी एक बहन हो, तो जो कुछ उसने छोड़ा है उसका आधा हिस्सा उस बहन का होगा। और भाई बहन का वारिस होगा, यदि उस (बहन) की कोई संतान न हो। और यदि (वारिस) दो बहनें हों, तो जो कुछ उसने छोड़ा है, उसमें से उनके लिए दो-तिहाई होगा। और यदि कई भाई-बहन (वारिस) हों तो एक पुरुष का हिस्सा दो स्त्रियों के बराबर होगा।”

अल्लाह तुम्हारे लिए आदेशों को स्पष्ट करता है, ताकि तुम न भटको। और अल्लाह को हर चीज़ का पूरा ज्ञान है।



## 5. अल-माइदा

(मदीना में उतरी— आयतें 120)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ ईमान लानेवालो ! प्रतिबंधों  
(प्रतिज्ञाओं, समझौतों आदि) का पूर्ण  
रूप से पालन करो। तुम्हारे लिए  
चौपायों की जाति के जानवर हलाल  
हैं सिवाय उनके जो तुम्हें बताए जा  
रहे हैं; (हलाल जानवरों को खाओ)  
लेकिन जब तुम इहराम<sup>1</sup> की दशा में  
हो तो शिकार को हलाल न



समझना। निस्संदेह अल्लाह जो चाहता है, आदेश देता है।

2. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह की निशानियों का अनादर न करो; न  
आदर के महीनों का, न कुरबानी के जानवरों का और न उन जानवरों का  
जिनकी गरदनों में पट्टे पड़े हों और न उन लोगों का जो अपने रब के  
अनुग्रह और उसकी प्रसन्नता की चाह में प्रतिष्ठित गृह (काबा) को जाते हों।  
और जब इहराम की दशा से बाहर हो जाओ तो शिकार करो। और ऐसा न  
हो कि एक गिरोह की शत्रुता, जिसने तुम्हारे लिए प्रतिष्ठित घर का रास्ता बन्द  
कर दिया था, तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम ज्यादाती करने लगो। हक़  
अदा करने और ईश-भय के काम में तुम एक-दूसरे का सहयोग करो और  
हक़ मारने और ज्यादाती के काम में एक-दूसरे का सहयोग न करो। अल्लाह  
का डर रखो; निश्चय ही अल्लाह बड़ा कठोर दण्ड देनेवाला है।

1. हज और उमरा के अवसर पर पहना जानेवाला विशेष परिधान।



3. तुम्हारे लिए हराम हुआ मुर्दार, रक्त, सूअर का मांस और वह जानवर जिसपर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो और वह जो घुटकर या चोट खाकर या ऊँचाई से गिरकर या सींग लगने से मरा हो या जिसे किसी हिंसक पशु ने फाड़ खाया हो—सिवाय उसके जिसे तुमने ज़बह कर लिया हो—और वह जो किसी थान पर ज़बह किया गया हो। और यह भी (तुम्हारे लिए हराम है) कि तीरों के द्वारा क्रिस्मत मालूम करो। यह आज्ञा का उल्लंघन है— आज इनकार

العَقَابِ ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكَ الْمَيْتَةُ وَالْدَّمُ وَلَحْمُ  
الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ  
وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ  
الشَّبَعُ إِلَّا مَا ذُكِّرْتُمْ ۖ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ ۚ  
وَأَنْ تَقْسِمُوا بِالْأَزْلَامِ ۚ ذَٰلِكُمْ فُسْءٌ ۖ الْيَوْمَ يَكْفُرُ  
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ۚ  
الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ  
نِعْمَتِي ۚ وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ  
فِي مَخَضَةٍ غَيْرِ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمِهِ ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ  
رَّحِيمٌ ۝ يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ ۖ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ  
الطَّيِّبَاتُ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِ الْمُكَلِّينَ تَعْلَمُونَهَا  
مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ ۚ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَادْكُرُوا  
اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

करनेवाले तुम्हारे धर्म की ओर से निराश हो चुके हैं, तो तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को पूर्ण कर दिया और तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दी और मैंने तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम<sup>1</sup> को पसन्द किया— तो जो कोई भूख से विवश हो जाए, परन्तु गुनाह की ओर उसका झुकाव न हो, तो निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

4. वे तुमसे पूछते हैं कि “उनके लिए क्या हलाल है?” कह दो : “तुम्हारे लिए सारी अच्छी स्वच्छ चीज़ें हलाल हैं और जिन शिकारी जानवरों को तुमने सधे हुए शिकारी जानवर के रूप में सधा रखा हो— जिनको जैसा अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है, सिखाते हो— वे जिस शिकार को तुम्हारे लिए पकड़े रखें, उसको खाओ और उसपर अल्लाह का नाम लो। और अल्लाह का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह जल्द हिसाब लेनेवाला है।”

1. अर्थात् पूरा जीवन अल्लाह की इच्छा के अनुसार व्यतीत करना।



5. आज तुम्हारे लिए अच्छी स्वच्छ चीज़ें हलाल कर दी गईं और जिन्हें किताब दी गई उनका भोजन भी तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा भोजन उनके लिए हलाल है और शरीफ़ और स्वतंत्र ईमानवाली स्त्रियाँ भी, और वे शरीफ़ और स्वतंत्र स्त्रियाँ भी जो तुमसे पहले के किताब वालों में से हों, जबकि तुम उनका हक़ (महर) देकर उन्हें निकाह में लाओ। न तो यह काम स्वच्छंद कामतृप्ति के लिए हो और न चोरी-छिपे याराना करने को। और जिस किसी ने ईमान से इनकार किया, उसका सारा किया-धरा

الَّذِينَ

الَّذِينَ

الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ ۚ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا  
الْكِتَابَ حِلٌّ لَكُمْ ۖ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَهُمْ ۚ وَالْمُحْصَنَاتُ  
مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا  
الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ مُحْصِينَ  
غَيْرَ مُسَفِحِينَ وَلَا مُتَّحِدِينَ ۚ وَمَن يَكْفُرْ  
بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ  
الْخَسِيرِينَ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى  
الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ  
وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ وَإِن  
كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا ۚ وَإِن كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَى  
سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنكُم مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ لَسْتُمْ  
النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا  
فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ مِنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ اللَّهُ

مَدِينَةٍ

अकारथ गया और वह आखिरत में भी घाटे में रहेगा।

6. ऐ ईमान लानेवालो ! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने चेहरों को और हाथों को कुहनियों तक धो लिया करो और अपने सिरों पर हाथ फेर लो और अपने पैरों को भी टखनों तक धो लो। और यदि नापाक हो तो अच्छी तरह पाक हो जाओ। परन्तु यदि बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई शौच करके आया हो या तुमने स्त्रियों को हाथ लगाया हो, फिर पानी न मिले तो पाक मिट्टी से काम लो। उसपर हाथ मारकर अपने मुँह और हाथों पर फेर लो। अल्लाह तुम्हें किसी तंगी में नहीं डालना चाहता।<sup>1</sup> अपितु वह चाहता है कि

1. बल्कि उसने तंगी रखी ही नहीं। जानवरों को ज़बह करते समय अल्लाह का नाम लेने से उनका मांस हलाल हो जाता है। विवाह से स्त्रियाँ वैध हो जाती हैं। इसी प्रकार वुज़्र और तयम्मूम अर्थात् मुँह-हाथ कुहनियों तक धोने और सिर पर हाथ फेरने तथा दोनों पाँव टखनों तक धोने और पानी न मिलने पर इसके विकल्प के रूप में स्वच्छ मिट्टी से काम लेने के पश्चात् आदमी नमाज़ पढ़ने के लायक हो जाता है।



तुम्हें पवित्र करे और अपनी नेमत तुमपर पूरी कर दे, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

7. और अल्लाह के उस अनुग्रह को याद करो जो उसने तुमपर किया है और उस प्रतिज्ञा को भी जो उसने तुमसे की है, जबकि तुमने कहा था— “हमने सुना और माना।” और अल्लाह का डर रखो। अल्लाह जो कुछ सीनों (दिलों) में है, उसे भी जानता है।

8. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह के लिए खूब उठनेवाले, इनसाफ़ की निगरानी करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे

कि तुम इनसाफ़ करना छोड़ दो। इनसाफ़ करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी खबर है।

9. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनसे अल्लाह का वादा है कि उनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिदान है।

10. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही भड़कती आग में पड़नेवाले हैं।

11. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह के उस अनुग्रह को याद करो जो उसने तुमपर किया है, जबकि कुछ लोगों ने तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाने का निश्चय कर

التَّائِبِينَ

الْمُتَّقِينَ

لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ  
وَلِيُثَبِّتَ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَادْكُرُوا  
نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الّذِي وَاعَقْتُمْ بِهِ ۚ  
إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ  
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا  
كُونُوا قَوْمِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ  
شَتَانُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا ۚ اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ  
لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝  
وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ لَهُمْ  
مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا  
بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ  
آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ إِذْ هُمْ قَوْمٌ  
أَن يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ

مَدَن



लिया था तो उसने उनके हाथ तुमसे रोक दिए। अल्लाह का डर रखो, और ईमानवालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

12. अल्लाह ने इसराईल की संतान से वचन लिया था और हमने उनमें से बारह सरदार नियुक्त किए थे। और अल्लाह ने कहा था : "मैं तुम्हारे साथ हूँ, यदि तुमने नमाज़ कायम रखी, ज़कात देते रहे, मेरे रसूलों पर ईमान लाए और उनकी सहायता की और अल्लाह को अच्छा ऋण दिया तो मैं अवश्य तुम्हारी बुराइयाँ तुमसे दूर कर दूँगा और तुम्हें निश्चय ही ऐसे बाग़ों में दाखिल करूँगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। फिर इसके पश्चात तुममें से जिसने इनकार किया, तो वास्तव में वह ठीक और सही रास्ते से भटक गया।"

13. फिर उनके बार-बार अपने वचन को भंग कर देने के कारण हमने उनपर लानत की और उनके हृदय कठोर कर दिए। वे शब्दों को उनके स्थान से फेरकर कुछ का कुछ कर देते हैं और जिसके द्वारा उन्हें याद दिलाया गया था, उसका एक बड़ा भाग वे भुला बैठे। और तुम्हें उनके किसी न किसी विश्वासघात का बराबर पता चलता रहेगा। उनमें ऐसा न करनेवाले थोड़े लोग हैं, तो तुम उन्हें क्षमा कर दो और उन्हें छोड़ो। निश्चय ही अल्लाह को वे लोग प्रिय हैं जो उत्तमकर्मी हैं।

14. और हमने उन लोगों से भी दृढ़ वचन लिया था, जिन्होंने कहा था कि

وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝  
وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ وَبَعَثْنَا  
مِنْهُمْ اثْنَيْ عَشَرَ نَفِيسًا ۖ وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ  
لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ  
بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا  
لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ  
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ  
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ فَبِمَا تَقْضِيهِمْ  
مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً  
يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ ۚ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا  
ذُكِّرُوا بِهِ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَى خَآفٍ مِنْهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ  
يُحِبُّ الْمُصْنِئِينَ ۝ وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرُكَ

مَذَل



हम नसारा (ईसाई) हैं, किन्तु जो कुछ उन्हें जिसके द्वारा याद कराया गया था उसका एक बड़ा भाग भुला बैठे। फिर हमने उनके बीच क्रियामत तक के लिए शत्रुता और द्वेष की आग भड़का दी, और अल्लाह जल्द उन्हें बता देगा, जो कुछ वे बनाते रहे थे।

15. ऐ किताबवालो ! हमारा रसूल तुम्हारे पास आ गया है। किताब की जो कुछ बातें तुम छिपाते थे, उसमें से बहुत-सी बातें वह तुम्हारे सामने खोल रहा है और बहुत-सी बातों को छोड़ देता है। तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश और एक स्पष्ट किताब आ गई है,

أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ سَاءَ غَرَضًا  
بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَسَوْفَ  
يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ  
قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ  
تَخْفَوْنَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْقُوا عَنْ كَثِيرٍ ۖ قَدْ جَاءَكُمْ  
مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ ۚ يَهْدِي اللَّهُ بِهِ لِّلَّذِينَ  
مَنِ اتَّبَعَ بِضِرَافِ نُورِهِ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُمُ  
مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى  
صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ  
اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ  
مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ  
مَرْيَمَ وَآلَهُ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۚ وَلِلَّهِ  
مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ يَخْلُقُ  
مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشِمْ

16. जिसके द्वारा अल्लाह उस व्यक्ति को जो उसकी प्रसन्नता का अनुगामी है, सलामती की राहें दिखा रहा है और अपनी अनुज्ञा से ऐसे लोगों को अँधेरों से निकालकर उजाले की ओर ला रहा है और उन्हें सीधे मार्ग पर चला रहा है।

17. निश्चय ही उन लोगों ने इनकार किया, जिन्होंने कहा : “अल्लाह तो वही मरयम का बेटा मसीह है।” कहो : “अल्लाह के आगे किसका कुछ बस चल सकता है, यदि वह मरयम के पुत्र मसीह को और उसकी माँ (मरयम) को और समस्त धरतीवालों को विनष्ट करना चाहे? और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आकाशों और धरती की और जो कुछ उनके मध्य है उसकी भी। वह



जो चाहता है पैदा करता है। और अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।”

18. यहूदी और ईसाई कहते हैं : “हम तो अल्लाह के बेटे और उसके चहेते हैं।” कहो : “फिर वह तुम्हें तुम्हारे गुनाहों पर दण्ड क्यों देता है ? बात यह नहीं है, बल्कि तुम भी उसके पैदा किए हुए प्राणियों में से एक मनुष्य हो। वह जिसे चाहे क्षमा करे और जिसे चाहे दण्ड दे।” और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आकाशों और धरती की और जो कुछ उनके बीच है उसकी भी, और जाना भी उसी की ओर है।

مَا يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَىٰ نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ وَأَحِبَّاؤُهُ ۚ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوبِكُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّثْلُ خَلْقٍ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَٱلِىهِ ٱلْحَصِيرُ ۝ يٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَىٰ فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَن تَقُولُوا مَا جَآءَنَا مِن بَشَرٍ ۖ وَلَا نَذِيرٌ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيرٌ ۖ وَنَذِيرٌ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ ٱذْكُرُوا نِعْمَةَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِىكُمْ أَنبِيَآءَ وَجَعَلَ لَكُم مَّلَوكًا ۖ وَأَشْرَكُم مَّا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ۖ يُقَوْمِ ٱدْخُلُوا ٱلْأَرْضَ ٱلْمُقَدَّسَةَ الَّتِى كَتَبَ ٱللَّهُ لَكُمْ وَلَا

19. ऐ-किताबवालो ! हमारा रसूल ऐसे समय में तुम्हारे पास आया है और तुम्हारे लिए (हमारे आदेश) खोल-खोलकर बयान करता है, जबकि रसूलों के आने का सिलसिला एक मुद्दत से बन्द था, ताकि तुम यह न कह सको कि “हमारे पास कोई शुभ-समाचार देनेवाला और सचेत करनेवाला नहीं आया।” तो देखो ! अब तुम्हारे पास शुभ-समाचार देनेवाला और सचेत करनेवाला आ गया है। अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

20. और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा था : “ऐ मेरे लोगो ! अल्लाह की उस नेमत को याद करो जो उसने तुम्हें प्रदान की है। उसने तुममें नबी पैदा किए और तुम्हें शासक बनाया और तुमको वह कुछ दिया जो संसार में किसी को नहीं दिया था।

21. ऐ मेरे लोगो ! इस पवित्र भूमि में प्रवेश करो, जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए



लिख दी है। और पीछे न हटो, अन्यथा घाटे में पड़ जाओगे।”

22. उन्होंने कहा : “ऐ मूसा ! उसमें तो बड़े शक्तिशाली लोग रहते हैं। हम तो वहाँ कदापि नहीं जा सकते, जब तक कि वे वहाँ से निकल नहीं जाते। हाँ, यदि वे वहाँ से निकल जाएँ, तो हम अवश्य प्रविष्ट हो जाएँगे।

23. उन डरनेवालों में से ही दो व्यक्ति ऐसे भी थे जिनपर अल्लाह का अनुग्रह था। उन्होंने कहा : “उन लोगों के मुकाबले में दरवाजे से प्रविष्ट हो जाओ। जब तुम उसमें प्रविष्ट हो जाओगे, तो तुम ही प्रभावी होगे। अल्लाह पर भरोसा रखो, यदि तुम ईमानवाले हो।”

24. उन्होंने कहा : “ऐ मूसा ! जब तक वे लोग वहाँ हैं, हम तो कदापि वहाँ नहीं जाएँगे। ऐसा ही है तो जाओ तुम और तुम्हारा रब, और दोनों लड़ो। हम तो यहीं बैठे रहेंगे।”

25. उसने कहा : “मेरे रब ! मेरा स्वयं अपने और अपने भाई के अतिरिक्त किसी पर अधिकार नहीं है। अतः तू हमारे और इन अवज्ञाकारी लोगों के बीच अलगाव पैदा कर दे।”

26. कहा : “अच्छ तो अब यह भूमि चालीस वर्ष तक इनके लिए वर्जित है। ये धरती में मारे-मारे फिरेंगे, तो तुम इन अवज्ञाकारी लोगों के प्रति शोक न करो।”

27. और इन्हें आदम के दो बेटों का सच्चा वृत्तान्त सुना दो। जब दोनों ने

تَرْتَدُّوْا عَلَیْهِ اَدْبَارُكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِیْنَ ۝ قَالُوْا  
یْٰمُوسٰی اِنَّ فِیْهَا قَوْمًا جَبّٰرِیْنَ ۗ وَاِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا  
حَتّٰی یَخْرُجُوْا مِنْهَا، وَاَنْ یَخْرُجُوْا مِنْهَا قٰوْمًا  
ذٰجِلُوْنَ ۝ قَالَ رَجَلٰی مِنَ الدّٰیْنِ یَخْفٰوْنِ اَنْعَمَ  
اللهُ عَلَیْهِمَا اَدْخُلُوْا عَلَیْهِمُ الْبَابَ، فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ  
قَالَكُمْ عَلَیْئِهٖ ۙ وَعَلٰی الله فْتَوَكَّلُوْا اِنْ كُنْتُمْ  
مُّؤْمِنِیْنَ ۝ قَالُوْا یْٰمُوسٰی اِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا اَبَدًا  
مَا دَامُوْا فِیْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَابِلًا ۗ اِنَّا  
مُهِنٰتٌ قُعْدُوْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ لَا اَمْلِكُ اِلَّا  
نَفْسِیْ وَاِخِیْ فَاَفَرُقْ بَیْنَنَا وَبَیْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِیْنَ ۝  
قَالَ فَاُولٰٓئِهَا مَحْكَمَةٌ عَلَیْهِمْ اَرْبَعِیْنَ سَنَةً،  
یَتَّبِعُوْنَ فِی الْاَرْضِ فَلَا تَاسَ عَلَی الْقَوْمِ  
الْفٰسِقِیْنَ ۝ وَاَنْتَ عَلَیْهِمْ نَبِیُّ اٰیٰتِیْ اَدْمُرْ بِاَحْقَیْ



कुरबानी की, तो उनमें से एक की कुरबानी स्वीकृत हुई और दूसरे की स्वीकृत न हुई। उसने कहा : “मैं तुझे अवश्य ही मार डालूँगा।” दूसरे ने कहा : “अल्लाह तो उन्हीं की (कुरबानी) स्वीकृत करता है, जो डर रखनेवाले हैं।

28. यदि तू मेरी हत्या करने के लिए मेरी ओर हाथ बढ़ाएगा तो मैं तेरी हत्या करने के लिए तेरी ओर अपना हाथ नहीं बढ़ाऊँगा। मैं तो अल्लाह से डरता हूँ, जो सारे संसार का रब है।

29. मैं तो चाहता हूँ कि मेरा

गुनाह और अपना गुनाह तू ही अपने सिर ले ले, फिर आग (जहन्नम) में पड़नेवालों में से हो जाए, और वही अत्याचारियों का बदला है :”

30. अन्ततः उसके जी ने उसे अपने भाई की हत्या के लिए उद्यत कर दिया, तो उसने उसकी हत्या कर डाली और घाटे में पड़ गया।

31. तब अल्लाह ने एक कौआ भेजा जो भूमि कुरेदने लगा, ताकि उसे दिखा दे कि वह अपने भाई के शव को कैसे छिपाए। कहने लगा : “अफ़सोस मुझ पर ! क्या मैं इस कौए जैसा भी न हो सका कि अपने भाई का शव छिपा देता ?” फिर वह लज्जित हुआ।

32. इसी कारण हमने इसराईल की संतान के लिए लिख दिया था कि जिसने किसी व्यक्ति को किसी के खून का बदला लेने या धरती में फ़साद

إِذْ قَرَّبْنَا قُورَيْبًا ثُمَّ يَبَأُ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ  
مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ، قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ  
اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ۝ لَكِنْ بَطَخْتَ إِلَىٰ يَدِكَ  
لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسٍ بِإِذَىٰ لِّكَ لَأَقْتُلَنَّكَ،  
إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝ إِنِّي أُرِيدُ  
أَنْ تَتَّبِعُوا آيَاتِي وَأَتُوبَ إِلَيْكُمْ فَتَكُونُوا مِنْ  
الْمُتَّقِينَ ۝ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ۝ فَطَوَّعَتْ لَهُ  
نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝  
فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ  
كَيْفَ يُوَارِي سَوْءَ أَخِيهِ ۝ قَالَ يَوَيْلَ لِيُغَمِّرَنَّ  
أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَ  
أَخِي ۝ فَأَصْبَحَ مِنَ التَّوَّابِينَ ۝ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ ۝  
كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا

وَيُؤْتِيهِمْ مِنْهَا خُبْرًا  
وَيُؤْتِيهِمْ مِنْهَا خُبْرًا  
وَيُؤْتِيهِمْ مِنْهَا خُبْرًا



फैलाने के अतिरिक्त किसी और कारण से मार डाला तो मानो उसने सारे ही इनसानों की हत्या कर डाली। और जिसने उसे जीवन प्रदान किया, उसने मानो सारे इनसानों को जीवन दान किया। उनके पास हमारे रसूल स्पष्ट प्रमाण ला चुके हैं, फिर भी उनमें बहुत-से लोग धरती में ज्यादातियाँ करनेवाले ही हैं।

33. जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करने के लिए दौड़-धूप करते हैं, उनका बदला तो बस यही है कि बुरी

तरह क़त्ल किए जाएँ या सूली पर चढ़ाए जाएँ या उनके हाथ-पाँव विपरीत दिशाओं में काट डाले जाएँ या उन्हें देश से निष्कासित कर दिया जाए। यह अपमान और तिरस्कार उनके लिए दुनिया में है और आखिरत में उनके लिए बड़ी यातना है।

34. किन्तु जो लोग, इससे पहले कि तुम्हें उनपर अधिकार प्राप्त हो, पलट आएँ (अर्थात् तौबा कर लें) तो ऐसी दशा में तुम्हें मालूम होना चाहिए कि अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

35. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह का डर रखो और उसका सामीप्य प्राप्त करो और उसके मार्ग में जी-तोड़ संघर्ष करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

36. जिन लोगों ने इनकार किया यदि उनके पास वह सब कुछ हो जो सारी

الْحَمْدُ

لِلَّهِ

بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ  
النَّاسَ جَمِيعًا. وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا  
النَّاسَ جَمِيعًا. وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولُنَا بِالْبَيِّنَاتِ  
ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ بَعْدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لَكُفْرُونَ ۝  
إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ  
وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا  
أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِنْ  
خِلَافٍ أَوْ يُنْفَخُوا مِنَ الْأَرْضِ. ذَلِكَ لَهُمْ  
جَزَاءُ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ  
عَظِيمٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْرَأَ  
عَلَيْهِمْ. فَامْلِكُوا أَنَّ اللَّهَ عَظِيمٌ رَحِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا  
الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ  
وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ إِنَّ

مَنْ



घरती में है और उतना ही उसके साथ और भी हो कि वह उसे देकर क्रियामत के दिन की यातना से बच जाएँ; तब भी उनकी ओर से यह सब दी जानेवाली वस्तुएँ स्वीकार न की जाएँगी। उनके लिए दुखद यातना ही है।

37. वे चाहेंगे कि आग (जहन्नम) से निकल जाएँ, परन्तु वे उससे न निकल सकेगे। उनके लिए चिरस्थायी यातना है।

38. और चोर चाहे स्त्री हो या पुरुष दोनों के हाथ काट दो। यह उनकी कमाई का बदला है और अल्लाह की ओर से शिक्षाप्रद दण्ड। अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

39. फिर जो व्यक्ति अत्याचार करने के पश्चात पलट आए और अपने को सुधार ले, तो निश्चय ही वह अल्लाह की कृपा का पात्र होगा। निस्संदेह, अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

40. क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही आकाशों और घरती के राज्य का अधिकारी है? वह जिसे चाहे यातना दे और जिसे चाहे क्षमा कर दे। अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

41. ऐ रसूल ! जो लोग अधर्म के मार्ग में दौड़ते हैं, उनके कारण तुम दुखी न होना; वे जिन्होंने अपने मुँह से कहा कि "हम ईमान ले आए", किन्तु उनके दिल ईमान नहीं लाए; और वे जो यहूदी हैं, वे झूठ के लिए कान लगाते हैं और उन

الَّذِينَ

الَّذِينَ

الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَارِ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا  
وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ الرَّحِيمَةِ  
مَا يَقْبَلُ مِنْهُمْ، وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ يُرِيدُونَ  
أَنْ يُخْرِجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنْهَا،  
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝ وَالشَّارِقُ وَالشَّارِقَةُ  
فَاقْطِعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً بِمَا كَبَبَا نَكَالًا ۝  
اللَّهُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ قَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ  
ظُلُمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ  
عَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ  
لِمَنْ يَشَاءُ ۝ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَا أَيُّهَا  
الرَّسُولُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ  
مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنُ

مَذَل



दूसरे लोगों की भली-भाँति सुनते हैं, जो तुम्हारे पास नहीं आए, शब्दों को उनका स्थान निश्चित होने के बाद भी उनके स्थान से हटा देते हैं। कहते हैं : “यदि तुम्हें यह (आदेश) मिले, तो इसे स्वीकार करना और यदि न मिले तो बचना।” जिसे अल्लाह ही आपदा में डालना चाहे उसके लिए अल्लाह के यहाँ तुम्हारी कुछ भी नहीं चल सकती। ये वही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने स्वच्छ करना नहीं चाहा। उनके लिए संसार में भी अपमान और तिरस्कार है और आखिरत में भी बड़ी यातना है।

قُلُوبُهُمْ ۚ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۖ سَمْعُونَ  
لِلْكَذِبِ سَمْعُونَ لِقَوْمٍ آخَرِينَ ۚ لَمْ يَأْتُواكَ  
بِخَبْرَتٍ مِنَ الْكَلِمِ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهِ ۚ يَقُولُونَ  
إِنْ أُرْسِلَتْمْ هَذَا فَخُذُوا ۚ وَإِنْ لَمْ تُنَزَّلْ  
فَاخْذُوا ۚ وَمَنْ يُرِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَنْ تَمْلِكَ  
لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ  
اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرْ قُلُوبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚ  
وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ سَمْعُونَ  
لِلْكَذِبِ أَكْثُونَ لِلشُّحِّ ۚ وَإِنْ جَاءَوكَ فَاحْكُمْ  
بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ  
فَلَنْ يَضُرَّوكَ شَيْئًا ۚ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ  
بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ وَكَيفَ  
يَحْكُمُوكَ وَعِنْدَهُمُ الثَّوَرَةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ

مَنْزِل

42. वे झूठ के लिए कान लगाते रहनेवाले और बड़े हaram खानेवाले हैं। अतः यदि वे तुम्हारे पास आएँ, तो या तुम उनके बीच फ़ैसला कर दो या उन्हें टाल जाओ। यदि तुम उन्हें टाल गए तो वे तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। परन्तु यदि फ़ैसला करो तो उनके बीच इनसाफ़ के साथ फ़ैसला करो। निश्चय ही अल्लाह इनसाफ़ करनेवालों से प्रेम करता है।

43. वे तुमसे फ़ैसला कराएँगे भी कैसे, जबकि उनके पास तौरात है, जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है! फिर इसके पश्चात भी वे मुँह मोड़ते हैं। वे तो



ईमान ही नहीं रखते ।

44. निस्संदेह हमने तौरात उतारी, जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश था । नबी जो आज्ञाकारी थे, उसको यहूदियों के लिए अनिवार्य ठहराते थे कि वे उसका पालन करें और इसी प्रकार अल्लाहवाले और शास्त्रवेत्ता भी । क्योंकि उन्हें अल्लाह की किताब की सुरक्षा का आदेश दिया गया था और वे उसके संरक्षक थे । तो तुम लोगों से न डरो, बल्कि मुझ ही से डरो और मेरी आयतों के बदले थोड़ा मूल्य प्राप्त करने का मामला न करना । जो लोग उस विधान के अनुसार फ़ैसला न करें, जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो ऐसे ही लोग विधर्मी हैं ।

ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ  
إِذَا أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ يَحْكُمُ  
بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَا ذُوا  
الزَّبَنِينَ وَالْأَعْيُنَ بِمَا اسْتَحْفَظُوا مِنْ كِتَابِ  
اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ  
وَإِخْشَوْنِي وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا  
وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ  
الْكَافِرُونَ ۚ وَكُتِبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَرَأَيْتَ  
بِالنَّفْسِ ۚ وَالْعَيْنِ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفِ بِالْأَنْفِ  
وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُومَ  
قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ ۚ  
وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ  
الظَّالِمُونَ ۚ وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعَيْنِي ابْنِ

45. और हमने उस (तौरात) में उनके लिए लिख दिया था कि जान जान के बराबर है, आँख आँख के बराबर है, नाक नाक के बराबर है, कान कान के बराबर, दाँत दाँत के बराबर और सब आघातों के लिए इसी तरह बराबर का बदला है । तो जो कोई उसे क्षमा कर दे तो यह उसके लिए प्रायश्चित्त होगा और जो लोग उस विधान के अनुसार फ़ैसला न करें, जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं ।

46. और उनके पीछे उन्हीं के पद-चिह्नों पर हमने मरयम के बेटे ईसा को



भेजा जो पहले से उसके सामने मौजूद किताब 'तौरात' की पुष्टि करनेवाला था। और हमने उसे इनजील प्रदान की, जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश था। और वह अपनी पूर्ववर्ती किताब तौरात की पुष्टि करनेवाली थी, और वह डर रखनेवालों के लिए मार्गदर्शन और नसीहत थी।

47. अतः इनजील वालों को चाहिए कि उस विधान के अनुसार फैसला करें, जो अल्लाह ने उस इनजील में उतारा है। और जो उसके अनुसार फैसला न करें, जो अल्लाह ने उतारा है, तो ऐसे ही लोग उल्लंघनकारी हैं।

48. और हमने तुम्हारी ओर यह किताब हक के साथ उतारी है, जो उस किताब की पुष्टि करती है जो उसके पहले से मौजूद है और उसकी संरक्षक है। अतः लोगों के बीच तुम मामलों में वही फैसला करना जो अल्लाह ने उतारा है और जो सत्य तुम्हारे पास आ चुका है उसे छोड़कर उनकी इच्छाओं का पालन न करना। हमने तुममें से प्रत्येक के लिए एक ही घाट (शरीअत) और एक ही मार्ग निश्चित किया है। यदि अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक समुदाय बना देता। परन्तु जो कुछ उसने तुम्हें दिया है, उसमें वह तुम्हारी परीक्षा करनी चाहता है। अतः भलाई के कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ो। तुम सबको अल्लाह ही की ओर लौटना है। फिर वह तुम्हें बता देगा, जिसमें तुम विभेद करते रहे हो।

49. और यह कि तुम उनके बीच वही फैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है

مَرِّمَ مَصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ  
وَإِنَّمَا إِلَهُ الْبَيْنِ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمَصَدِّقًا  
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ  
لِّلْمُتَّقِينَ ۚ وَلِيَعْلَمَ أَهْلُ الْإِنجِيلِ بِمَا أَنزَلَ  
اللَّهُ فِيهِ ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ  
هُمُ الْفَاسِقُونَ ۚ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ  
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَ  
مُهَيِّئًا عَلَيْهِ قُلُوبَكُمْ بَيْنَهُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ  
وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۚ لِكُلِّ  
جَعَلْنَا مِنْكُمْ فِرْقَةً وَمِنْهَا جُنُودٌ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ  
لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا  
آتَاكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا  
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۚ وَأَن أَرْسَلَ



और उनकी इच्छाओं का पालन न करो और उनसे बचते रहो कि कहीं ऐसा न हो कि वे तुम्हें फ़रेब में डालकर जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारी ओर उतारा है उसके किसी भाग से वे तुम्हें हटा दें। फिर यदि वे मुँह मोड़ें तो जान लो कि अल्लाह ही उनके कुछ गुनाहों के कारण उन्हें संकट में डालना चाहता है। निश्चय ही अधिकांश लोग उल्लंघनकारी हैं।

50. अब क्या वे अज्ञान का फ़ैसला चाहते हैं? तो विश्वास करनेवाले लोगों के लिए अल्लाह से अच्छा फ़ैसला करनेवाला कौन हो सकता है?

51. ऐ ईमान लानेवालो! तुम यहूदियों और ईसाइयों को अपना मित्र (राज़दार) न बनाओ। वे (तुम्हारे विरुद्ध) परस्पर एक-दूसरे के मित्र हैं। तुममें से जो कोई उनको अपना मित्र बनाएगा, वह उन्हीं लोगों में से होगा। निस्संदेह अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

52. तो तुम देखते हो कि जिन लोगों के दिलों में रोग है, वे उनके यहाँ जाकर उनके बीच दौड़-धूप कर रहे हैं। वे कहते हैं: "हमें भय है कि कहीं हम किसी संकट में न ग्रस्त हो जाएँ।" तो संभव है कि जल्द ही अल्लाह (तुम्हें) विजय प्रदान करे या उसकी ओर से कोई और बात प्रकट हो। फिर तो

تَكَاثُرًا

تَكَاثُرًا

بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ  
وَاحْذَرُهُمْ أَنْ يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ  
إِلَيْكَ ۖ فَإِنْ ثَوَّلُوا قَاعَكُمْ أَشَأَ يُرِيدُ اللَّهُ  
أَنْ يُصِيبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ  
النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ۝ أَلَمْ تَكُنْ مِنَ الْهَادِلِينَ ۙ يَتَّبِعُونَ  
وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَةَ  
أُولَئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ  
فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ  
الظَّالِمِينَ ۝ فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ  
يُكَايِدُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَى أَنْ تُصِيبَنَا  
دَآئِرَةٌ ۚ فَعَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ  
مِنْ عِنْدِهِ فَيُضْبِحُوا عَلَى مَا أَسْرَوْا فِي أَنْفُسِهِمْ

مَنْ



ये लोग जो कुछ अपने जी में छिपाए हुए हैं, उसपर लज्जित होंगे।

53. उस समय ईमानवाले कहेंगे : “क्या ये वही लोग हैं जो अल्लाह की कड़ी-कड़ी कसमें खाकर विश्वास दिलाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं?” इनका किया-धरा सब अकारथ गया और ये घाटे में पड़कर रहे।

54. ऐ ईमान लानेवालो ! तुममें से जो कोई अपने धर्म से फिरेगा तो अल्लाह जल्द ही ऐसे लोगों को लाएगा जिनसे उसे प्रेम होगा और जो उससे प्रेम करेंगे। वे

ईमानवालों के प्रति नरम और अविश्वासियों के प्रति कठोर होंगे। अल्लाह की राह में जी-तोड़ कोशिश करेंगे और किसी भर्त्सना करनेवाले की भर्त्सना से न डरेंगे। यह अल्लाह का उदार अनुग्रह है, जिसे चाहता है प्रदान करता है। अल्लाह बड़ी समाईवाला, सर्वज्ञ है।

55. तुम्हारे मित्र तो केवल अल्लाह और उसका रसूल और वे ईमानवाले हैं; जो विनम्रता के साथ नमाज़ क़ायम करते और ज़कात देते हैं।

56. अब जो कोई अल्लाह और उसके रसूल और ईमानवालों को अपना मित्र बनाए, तो निश्चय ही अल्लाह का गिरोह प्रभावी होकर रहेगा।

57. ऐ ईमान लानेवालो ! तुमसे पहले जिनको किताब दी गई थी, जिन्होंने

تَدْبِيرِينَ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَهَؤُلَاءِ  
الَّذِينَ آمَنُوا بِاللهِ جَهْدَ آيْمَانِهِمْ ۝ إِنَّهُمْ  
لَسَعَكُم حِطَّتْ آغْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خَيْرِينَ ۝  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ  
فَسَوْفَ يَأْتِي اللهَ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ ۝  
أَذَلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝  
يَجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ وَلَا يَخَافُونَ  
لَوْمَةً لَّا إِلَهَ إِلَّا اللهُ ۝ ذَلِكَ فَضْلُ اللهِ يُؤْتِيهِ مَنْ  
يُشَاءُ ۝ وَاللهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللهُ  
وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ  
وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ۝ وَمَنْ يَتَوَلَّ  
اللهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ  
اللهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا



तुम्हारे धर्म को हँसी-खेल बना लिया है, उन्हें और इनकार करनेवालों को अपना मित्र न बनाओ। और अल्लाह का डर रखो, यदि तुम ईमानवाले हो।

58. जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो तो वे उसे हँसी और खेल बना लेते हैं। इसका कारण यह है कि वे बुद्धिहीन लोग हैं।

59. कहो : “ऐ किताबवालो ! क्या इसके सिवा हमारी कोई और बात तुम्हें बुरी लगती है कि हम अल्लाह और उस चीज़ पर ईमान लाए, जो हमारी ओर उतारी गई, और जो पहले उतारी जा चुकी है ? और यह कि तुममें अधिकांश लोग अवज्ञाकारी हैं।”

60. कहो : “क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह के यहाँ परिणाम की दृष्टि से इससे भी बुरी नीति क्या है ? कौन गिरोह है जिसपर अल्लाह की फिटकार पड़ी और जिसपर अल्लाह का प्रकोप हुआ और जिसमें से उसने बन्दर और सूअर बनाए और जिसने बढ़े हुए फ़सादी (तागूत) की बन्दगी की, वे लोग (तुमसे भी) निकृष्ट दर्जे के थे। और वे (तुमसे भी अधिक) सीधे मार्ग से भटके हुए थे।”

61. जब वे (यहूदी) तुम लोगों के पास आते हैं तो कहते हैं : “हम ईमान ले आए।” हालाँकि वे इनकार के साथ आए थे और उसी के साथ चले गए।

لَا تَتَّخِذُوا

لَا تَتَّخِذُوا

لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُوءًا وَ  
لُعِبًا مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ  
وَ الْكَافِرَ أَوْلِيَاءَ : وَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ كُنُتُمْ  
مُؤْمِنِينَ ۝ وَ إِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا  
هُزُوءًا وَ لُعِبًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝  
قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنْقِمُونَ مِنِّي إِلَّا  
أَنْ أَمَّا بِاللهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ  
مِنْ قَبْلُ ۚ وَ أَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَاسِقُونَ ۝ قُلْ هَلْ  
أَتَيْتُكُمْ بِشَيْءٍ مِنْ ذَٰلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ ۚ  
مَنْ لَعْنَهُ اللَّهُ وَ غَضِبَ عَلَيْهِ وَ جَعَلَ مِنْهُمْ  
الْقِرَادَةَ وَ الْخَنَازِيرَ وَ عِبَدَ الطَّاغُوتِ ۚ أُولَٰئِكَ  
شَرٌّ مَكَانًا وَ أَضَلُّ عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝ وَ  
إِذَا جَاءَ وَكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكَفْرِ

مَذَلَّ



अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं।

62. तुम देखते हो कि उनमें से बहुतेरे लोग हक मारने, ज्यादती करने और हरामखोरी में बड़ी तेज़ी दिखाते हैं। निश्चय ही बहुत ही बुरा है, जो वे कर रहे हैं।

63. उनके संत और धर्मज्ञाता उन्हें गुनाह की बात बकने और हराम खाने से क्यों नहीं रोकते? निश्चय ही बहुत बुरा है, जो काम वे कर रहे हैं।

64. और यहूद कहते हैं : "अल्लाह का हाथ बँध गया है।"<sup>1</sup>

उन्हीं के हाथ बँधे हैं, और फिटकार है उनपर, उस बकवास के कारण जो वे करते हैं, बल्कि उसके दोनों हाथ तो खुले हुए हैं। वह जिस तरह चाहता है खर्च करता है। जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है, उससे अवश्य ही उनके अधिकतर लोगों की सरकशी और इनकार ही में अभिवृद्धि होगी। और हमने उनके बीच क्रियामत तक के लिए शत्रुता और द्वेष डाल दिया है। वे जब भी युद्ध की आग भड़काते हैं, अल्लाह उसे बुझा देता है। वे धरती में बिगाड़ फैलाने के लिए प्रयास कर रहे हैं, हालाँकि अल्लाह बिगाड़ फैलानेवालों को पसन्द नहीं करता।

65. और यदि किताबवाले ईमान लाते और (अल्लाह का) डर रखते तो हम

وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا  
يَكْتُمُونَ ۝ وَتَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يَسْلُبُونَ فِي الْأَثْمِ  
وَالْعُدْوَانِ وَأَكْبَهُمُ الشُّحَّ ۚ لَيْسَ مَا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ۝ لَوْلَا يَنْصَحُهُمُ الرَّبُّ زَيْنُونَ وَالْأَخْبَارُ  
عَنْ قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْبَهُمُ الشُّحَّ ۚ لَيْسَ مَا  
كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ ۚ  
غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا ۚ بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ  
يَنْفَعُ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ وَلَئِنْ يَدَانِ كَثِيرَا مِنْهُمْ مِمَّا  
أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ وَالْقَيْنَا  
بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ  
كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ ۚ وَيَسْعَوْنَ  
فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۝  
وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ

1. अर्थात् वे यह समझ रहे हैं कि अल्लाह के उदार दान और उपकार के पात्र केवल यहूदी हैं।



उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर देते और उन्हें नेमत भरी जन्नतों में दाखिल कर देते ।

66. और यदि वे तौरात और इजील को और जो कुछ उनके रब की ओर से उनकी ओर उतारा गया है, उसे क़ायम रखते, तो उन्हें अपने ऊपर से भी खाने को मिलता और अपने पाँव के नीचे से भी । उनमें से एक गिरोह सीधे मार्ग पर चलनेवाला भी है, किन्तु उनमें से अधिकतर ऐसे हैं कि जो भी करते हैं बुरा होता है ।

67. ऐ रसूल ! तुम्हारे रब की ओर से तुमपर जो कुछ उतारा गया है, उसे पहुँचा दो । यदि ऐसा न किया तो तुमने उसका संदेश नहीं पहुँचाया । अल्लाह तुम्हें लोगों (की बुराइयों) से बचाएगा । निश्चय ही अल्लाह इनकार करनेवाले लोगों को मार्ग नहीं दिखाता ।

68. कह दो : "ऐ किताबवालो ! तुम किसी भी चीज़ पर नहीं हो, जब तक कि तौरात और इनजील को और जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है, उसे क़ायम न रखो ।" किन्तु (ऐ नबी ! ) तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर जो कुछ अवतरित हुआ है, वह अवश्य ही उनमें से बहुतों की सरकशी और इनकार में अभिवृद्धि करनेवाला है । अतः तुम इनकार करनेवाले लोगों की दशा पर दुखी न होना ।

69. निस्संदेह वे लोग जो ईमान लाए हैं और जो यहूदी हुए हैं और साबई और ईसाई, उनमें से जो कोई भी अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाए और

التَّائِبِينَ

لَا يُجِيبُ عَنْهُ

سَيِّئَاتِهِمْ وَلَا ذُنُوبَهُمْ حَسْبُ النَّعِيمِ . وَلَوْ أَنَّهُمْ  
 أَقَامُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ  
 مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكْلُوا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ  
 مِنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ سَاءَ مَا  
 يَعْمَلُونَ . يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ  
 مِنْ رَبِّكَ . وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَغْتَ رِسَالَتَهُ  
 وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ . إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي  
 الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ . قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُ عَلَى  
 شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ  
 إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ . وَلَيُزِيدَنَّا كَثِيرًا مِنْهُمْ  
 مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا . قُلْ  
 لَسْتُ نَاسٌ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ . إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا  
 وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ وَالْمُصْرِيَّةَ مِنَ الْأَمَنِينَ

سَمِعْنَا



अच्छा कर्म करे तो ऐसे लोगों को न तो कोई डर होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

70. हमने इसराईल की संतान से दृढ़ वचन लिया और उनकी ओर रसूल भेजे। उनके पास जब भी कोई रसूल वह कुछ लेकर आया जो उन्हें पसन्द न था, तो कितनों को तो उन्होंने झुठलाया और कितनों की हत्या करने लगे।

71. और उन्होंने समझा कि कोई आपदा न आएगी; इसलिए वे अंधे और बहरे बन गए। फिर अल्लाह ने उनपर दयादृष्टि की, फिर भी उनमें से बहुत-से अंधे और बहरे हो गए। अल्लाह देख रहा है, जो कुछ वे करते हैं।

72. निश्चय ही उन्होंने (सत्य का) इनकार किया, जिन्होंने कहा : "अल्लाह मरयम का बेटा मसीह ही है।" जबकि मसीह ने कहा था : "ऐ इसराईल की संतान ! अल्लाह की बन्दगी करो, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। जो कोई अल्लाह का साझी ठहराएगा, उसपर तो अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना आग है। अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं।"

73. निश्चय ही उन्होंने इनकार किया, जिन्होंने कहा : "अल्लाह तीन में का

الَّذِينَ

نُوحِيْنَهُ

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَيْلٍ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَآءَ نِيلَ وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ رُسُلًا ۖ كُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنْفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ۝ وَحَسِبُوا أَنَّ تَكُونَ فِتْنَةٌ قَعَسُوا وَصَنَوْا ثُمَّ تَابَ إِلَهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَنَوْا كَثِيرٌ مِنْهُمْ ۖ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ الْمَسِيحُ يَبْنِي إِسْرَآءَ نِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَزَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ جُزْءًا مِنَ الْخُزْنِ وَمَا لَهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنَ النَّصِيرِ ۝ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَلَاثٌ

مَذَلَةٌ



एक है।" हालाँकि अकेले पूज्य के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। जो कुछ वे कहते हैं यदि इससे बाज़ न आएँ तो उनमें से जिन्होंने इनकार किया है, उन्हें दुखद यातना पहुँचकर रहेगी।

74. फिर क्या वे लोग अल्लाह की ओर नहीं पलटेंगे और उससे क्षमा याचना नहीं करेंगे, जबकि अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

75. मरयम का बेटा मसीह एक रसूल के अतिरिक्त और कुछ नहीं। उससे पहले भी बहुत-से रसूल गुज़र चुके हैं। उसकी माँ अत्यन्त सत्यवती थी। दोनों ही भोजन करते थे। देखो, हम किस प्रकार उनके सामने निशानियाँ स्पष्ट करते हैं; फिर देखो, ये किस प्रकार उलटे फिरे जा रहे हैं!

76. कह दो : "क्या तुम अल्लाह से हटकर उसकी बन्दगी करते हो जो न तुम्हारी हानि का अधिकारी है, न लाभ का? हालाँकि सुननेवाला, जाननेवाला अल्लाह ही है।"

77. कह दो : "ऐ किताबवालो! अपने धर्म में नाहक हद से आगे न बढ़ो और उन लोगों की इच्छाओं का पालन न करो जो इससे पहले स्वयं पथभ्रष्ट हुए और बहुतों को पथभ्रष्ट किया और सीधे मार्ग से भटक गए।

الْحَمْدُ لِلّٰهِ

الْحَمْدُ لِلّٰهِ

ثَلَاثَةً ۚ وَمِمَّا مِنْ إِلَهِ إِلَّا إِلَهُ وَاحِدٌ ۚ وَإِنْ لَّمْ يَرَوْهُمْ أَعْمَاءُ يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لَهُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۚ كَانَا يَأْكُلَنِ الطَّعَامَ ۚ أَنْظِرْ كَيْفَ نُنَبِّئُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ أَنْظِرْ أَنَّى يُؤْفَكُونَ ۚ قُلِ الْمُتَعَبِدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۚ قُلِ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِنْ قَبْلُ وَ أَضَلُّوا كَثِيرًا وَ ضَلُّوا عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ۚ

مَدَن



78. इसराईल की संतान में से जिन लोगों ने इनकार किया, उनपर दाऊद और मरयम के बेटे ईसा की ज़बान से फिटकार पड़ी, क्योंकि उन्होंने अवज्ञा की और वे हद से आगे बढ़े जा रहे थे।

79. जो बुरा काम वे करते थे, उससे वे एक-दूसरे को रोकते न थे। निश्चय ही बहुत ही बुरा था, जो वे कर रहे थे।

80. तुम उनमें से बहुतेरे लोगों को देखते हो जो इनकार करनेवालों से मित्रता रखते हैं। निश्चय ही बहुत बुरा है, जो उन्होंने अपने आगे रखा है। अल्लाह का उनपर प्रकोप हुआ और यातना में वे सदैव ग्रस्त रहेंगे।

81. और यदि वे अल्लाह और नबी पर और उस चीज़ पर ईमान लाते, जो उसकी ओर अवतरित हुई, तो वे उनको मित्र न बनाते। किन्तु उनमें अधिकतर अवज्ञाकारी हैं।

82. तुम ईमानवालों का शत्रु सब लोगों से बढ़कर यहूदियों और बहुदेववादियों को पाओगे। और ईमान लानेवालों के लिए मित्रता में सबसे निकट उन लोगों को पाओगे, जिन्होंने कहा कि 'हम नसारा हैं।' यह इस कारण है कि उनमें बहुत-से धर्मज्ञाता और संसार-त्यागी संत पाए जाते हैं। और इस कारण कि वे अहंकार नहीं करते।

الَّذِينَ

الَّذِينَ

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَى لِسَانِ  
دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا  
يَعْتَدُونَ ۝ كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ  
فَعَلُوهُ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝ تَرَى كَثِيرًا  
مِنْهُمْ يَقُولُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَؤُلَاءِ لَيْسَ مَا قَدَّمَتْ  
لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْ يَخَافَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ  
هُمُ خَالِدُونَ ۚ وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ  
وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوا لَهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ  
كَثِيرًا مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ  
عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ  
وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَوَدَّةً لِلَّذِينَ آمَنُوا  
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرُكَ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ  
قَتِيلِينَ وَرُهْبَانًا ۚ وَاللَّهُ لَا يَتَّكِبُ عَنِ الْعَالَمِينَ

مَنْ



83. जब वे उसे सुनते हैं जो रसूल पर अवतरित हुआ तो तुम देखते हो कि उनकी आँखें आँसुओं से छलकने लगती हैं। इसका कारण यह है कि उन्होंने सत्य को पहचान लिया। वे कहते हैं : "हमारे रब ! हम ईमान ले आए। अतएव तू हमारा नाम गवाही देनेवालों में लिख ले।

84. और हम अल्लाह पर और जो सत्य हमारे पास पहुँचा है उसपर ईमान क्यों न लाएँ, जबकि हमें आशा है कि हमारा रब हमें अच्छे लोगों के साथ (जन्नत में) प्रविष्ट करेगा।"

وَاِذَا سَمِعُوا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرَوْهُم مِّنْ اَعْيُنِهِمْ  
تَفِيضٌ مِّنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ  
رَبَّنَا اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّٰهِدِيْنَ ۝ وَ مَا لَنَا  
لَا نُوْمِنُ بِاٰلِهٰٓئِهِمْ وَ مَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۚ وَ نَنْظُمُ اَنْ  
يُّدْخِلَنَا رَبَّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّٰلِحِيْنَ ۝ فَ اَنَّا بَهُمْ  
اَللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنَّبْتَ تَجْرِئُ مِنْ تَخْتِهَا الْاَنْهٰرُ  
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْحٰسِنِيْنَ ۝ وَ الَّذِيْنَ  
كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِآيٰتِنَا اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝  
يَاۤئِيْهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحٰمِلُوْا طٰٓئِفَةً مِّنْ  
اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوْا اِنْ اللّٰهُ لَا يُحِبُّ  
الْمُتَّبِعِيْنَ ۝ وَ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمْ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا  
وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ اَنْتُمْ بِهٖ مُّؤْمِنُوْنَ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ  
اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فَاٰيٰتِكُمْ وَ لٰكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا

85. फिर अल्लाह ने उनके इस कथन के कारण उन्हें ऐसे बाग़ प्रदान किए, जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे सदैव रहेंगे। और यही सत्कर्मों लोगों का बदला है।

86. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे भड़कती आग (में पड़ने) वाले हैं।

87. ऐ ईमान लानेवालो ! जो अच्छी पाक चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं, उन्हें हराम न कर लो और हद से आगे न बढ़ो। निश्चय ही अल्लाह को वे लोग प्रिय नहीं हैं, जो हद से आगे बढ़ते हैं।

88. जो कुछ अल्लाह ने हलाल और पाक रोज़ी तुम्हें दी है, उसे खाओ और अल्लाह का डर रखो, जिसपर तुम ईमान लाए हो।

89. तुम्हारी उन क़समों पर अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता जो यूँ ही असावधानी में ज़बान से निकल जाती हैं। परन्तु जो तुमने पक्की क़समें खाई हों, उनपर वह तुम्हें पकड़ेगा। तो इसका प्रायश्चित्त दस मुहताजों को औसत



दर्जे का वह खाना खिला देना है, जो तुम अपने बाल-बच्चों को खिलाते हो या फिर उन्हें कपड़े पहनाना या एक गुलाम आज़ाद करना होगा। और जिसे इसकी सामर्थ्य न हो, तो उसे तीन दिन के रोज़े रखने होंगे। यह तुम्हारी क्रसमों का प्रायश्चित्त है, जबकि तुम क्रसम खा बैठो। तुम अपनी क्रसमों की हिफ़ाज़त किया करो। इस प्रकार अल्लाह अपनी आयतें तुम्हारे सामने खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

عَقِدْتُمْ الْإِيمَانَ، فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشْرَةِ  
مَسْكِينٍ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعَمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ  
أَوْ خُرُوجُ رَقَبَةٍ، فَمَنْ لَمْ يَجِدْ قُصِيَّامًا ثَلَاثًا أَتَامَ  
ذَلِكَ كَفَّارَةً أَيَّمَا إِيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ، وَاحْفَظُوا  
أَيَّمَانَكُمْ، كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ  
تَشْكُرُونَ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّا الْخَمْرُ  
وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِنْ عَمَلِ  
الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ إِنَّا يُرِيدُ  
الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي  
الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ  
الصَّلَاةِ، فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهُوْنَ ۝ وَاطِيعُوا اللَّهَ  
وَاطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا، فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ  
فَاعْلَمُوا أَنَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝ لَيْسَ

بِذَنْ

90. ऐ ईमान लानेवालो ! ये शराब और जुआ और देवस्थान और पाँसे तो गंदे शैतानी काम हैं। अतः तुम इनसे अलग रहो, ताकि तुम सफल हो।

91. शैतान तो बस यही चाहता है कि शराब और जुए के द्वारा तुम्हारे बीच शत्रुता और द्वेष पैदा कर दे और तुम्हें अल्लाह की याद से और नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम बाज़ न आओगे ?

92. अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और रसूल की आज्ञा का पालन करो और बचते रहो, किन्तु यदि तुमने मुँह मोड़ा तो जान लो कि हमारे रसूल पर केवल स्पष्ट रूप से (संदेश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है।

93. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे पहले जो कुछ



खा-पी चुके उसके लिए उनपर कोई गुनाह नहीं; जबकि वे डर रखें और ईमान पर कायम रहें और अच्छे कर्म करें। फिर डर रखें और ईमान लाएँ, फिर डर रखें और अच्छे से अच्छा कर्म करें। अल्लाह सत्कर्मियों से प्रेम करता है।

94. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह उस शिकार के द्वारा तुम्हारी अवश्य परीक्षा लेगा जिस तक तुम्हारे हाथ और नेत्रे पहुँच सकें, ताकि अल्लाह यह जान ले कि उससे बिन देखे कौन डरता है। फिर इसके पश्चात जिसने ज्यादाती की, उसके लिए दुखद यातना है।

95. ऐ ईमान लानेवालो ! इहराम की हालत में तुम शिकार न मारो। तुम में जो कोई जान-बूझकर उसे मारे, तो उसने जो जानवर मारा हो, चौपायों में से उसी जैसा एक जानवर— जिसका फ़ैसला तुम्हारे दो न्यायप्रिय व्यक्ति कर दें— काबा पहुँचाकर कुरबान किया जाए, या प्रायश्चित के रूप में मुहताजों को भोजन कराना होगा या उसके बराबर रोज़े रखने होंगे, ताकि वह अपने किए का मज़ा चख ले। जो पहले हो चुका उसे अल्लाह ने क्षमा कर दिया; परन्तु जिस किसी ने फिर ऐसा किया तो अल्लाह उससे बदला लेगा। अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेनेवाला है।

96. तुम्हारे लिए जल का शिकार और उसका खाना हलाल है कि तुम उससे

عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا  
طَعَمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ  
ثُمَّ اتَّقَوْا وَآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَأَحْسَنُوا ۗ وَاللَّهُ  
يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَبْلُغُوا  
اللَّهُ بِعَنَى ۖ مِنَ الصَّيْدِ ثَمَلَةً أَيْدِيكُمْ ۖ وَمِمَّا حَكَّمُ  
بِطَعْلَمَ اللَّهُ مِنْ عَفَا ۖ بِالْغَيْبِ ۖ فَمَنْ اغْتَدَى بِغَدِ  
ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا  
الصَّيْدَ ۖ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ ۖ وَمَنْ قَتَلَهُ مِنْكُمْ مُتَعَمِّدًا  
فَبِعَذَابِ اللَّهِ يَمُوتُ ۖ وَمَنْ قَتَلَهُ مِنْكُمْ بِدَوَّاعِلٍ  
وَمَنْ هَذَا بِلَيْلَةِ الْكُفَّةِ ۖ أَوْ لِفَارَةٍ طَعَامُ مَسْكِينٍ  
أَوْ عَدَلٌ ۖ ذَلِكَ مِمَّا لَيْدُو ۖ وَبِالْأَمْرِ ۖ عَفَا  
اللَّهُ عَنَّا سَلَفَ ۖ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ ۖ وَاللَّهُ  
عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ أَحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ

سَلَمَ







अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया।  
अल्लाह बहुत क्षमा करनेवाला,  
सहनशील है।

102. तुमसे पहले कुछ लोग इस तरह के प्रश्न कर चुके हैं, फिर वे उसके कारण इनकार करनेवाले हो गए।

103. अल्लाह ने न कोई 'बहीरा' ठहराया है और न 'सायबा' और न 'वसीला' और न 'हाम', परन्तु इनकार करनेवाले अल्लाह पर झूठ का आरोपण करते हैं और उनमें अधिकतर बुद्धि से काम नहीं लेते।

104. और जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ की ओर आओ जो

अल्लाह ने अवतरित की है और रसूल की ओर, तो वे कहते हैं: "हमारे लिए तो वही काफ़ी है, जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है।" क्या यद्यपि उनके बाप-दादा कुछ भी न जानते रहे हों और न सीधे मार्ग पर रहे हों।

105. ऐ ईमान लानेवालो ! तुमपर अपनी चिन्ता अनिवार्य है, जब तुम रास्ते पर हो, तो जो कोई भटक जाए वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। अल्लाह की ओर तुम सबको लौटकर जाना है। फिर वह तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे होगे।

106. ऐ ईमान लानेवालो ! जब तुममें से किसी की मृत्यु का समय आ जाए तो वसीयत के समय तुममें से दो न्यायप्रिय व्यक्ति गवाह हों, या तुम्हारे ग़ैर

الْمُكَذِّبِينَ

الْمُكَذِّبِينَ

تُبَدِّلْ لَكُمْ عَقَا اللَّهَ عَنْهَا. وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝  
قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا  
كُفْرِينَ ۝ مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ  
وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ ۝ وَلَكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا  
يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۝ وَكَثُرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝  
وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى  
الرُّسُولِ قَالُوا احْسِبْنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا  
أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ۝  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ ۝ لَا تَضُرُّكُمْ  
مِّنْ ضَلٍّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۝ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا  
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا  
شَهِادَةٌ بَيْنَكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ  
الْوَصِيَّةِ اثْنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ أُخْرَيْنِ مِّنْ غَيْرِكُمْ

سُورَةُ

1. अरब के बहुदेववादी अपने बुतों के नाम पर जानवर छोड़ते थे, फिर उनसे कोई काम न लेते थे। विभिन्न प्रकार के ऊँट और ऊँटनियों के अलग-अलग नाम रखते थे, उन्हीं नामों का उल्लेख इस आयत में किया गया है।



लोगों में से दूसरे दो व्यक्ति गवाह बन जाएँ, यह उस समय कि यदि तुम कहीं सफ़र में गए हो और मृत्यु तुमपर आ पहुँचे। यदि तुम्हें कोई संदेह हो तो नमाज़ के पश्चात उन दोनों को रोक लो, फिर वे दोनों अल्लाह की क़समें खाएँ कि “हम इसके बदले कोई मूल्य स्वीकार करनेवाले नहीं हैं चाहे कोई नातेदार ही क्यों न हो और न हम अल्लाह की गवाही छिपाते हैं। निस्संदेह ऐसा किया तो हम गुनाहगार ठहरेंगे।”

107. फिर यदि पता चल जाए कि उन दोनों ने हक़ मारकर अपने को गुनाह में डाल लिया है, तो उनकी जगह दूसरे दो व्यक्ति उन लोगों में से खड़े हो जाएँ, जिनका हक़ पिछले दोनों ने मारना चाहा था, फिर वे दोनों अल्लाह की क़सम खाएँ कि “हम दोनों की गवाही उन दोनों की गवाही से अधिक सच्ची है और हमने कोई ज़्यादाती नहीं की है। निस्संदेह हमने ऐसा किया तो अत्याचारियों में से होंगे।”

108. इसमें इसकी अधिक संभावना है कि वे ठीक-ठीक गवाही देंगे या डरेंगे कि उनकी क़समों के पश्चात क़समें ली जाएँगी। अल्लाह का डर रखो और सुनो। अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

109. जिस दिन अल्लाह रसूलों को इकट्ठा करेगा, फिर कहेगा : “तुम्हें क्या जवाब मिला?” वे कहेंगे : “हमें कुछ नहीं मालूम। तू ही छिपी बातों को जानता है।”

110. जब अल्लाह कहेगा : “ऐ मरयम के बेटे ईसा ! मेरे उस अनुग्रह को

لَئِنْ أَنْتُمْ صَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةُ  
النُّوْتِ، تَحْبِسُونَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقِيمِينَ بِاللَّهِ  
إِنْ أَرَبْتُمْ لَا تَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ، وَلَا  
تَكُنْ مِنْ شُهَادَةِ اللَّهِ إِنْ آتَا لَيْنَ الْأَشْجِينَ ۖ وَإِنْ غُيِّرَ  
عَلَىٰ أَنْهَمَا اسْتَصَقَّآ إِثْمًا فَأَخْرَجَ يَقُومِينَ مَقَامَهُمَا  
مِنَ الَّذِينَ اسْتَصَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوَّلِينَ فَيُقِيمِينَ بِاللَّهِ  
لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا إِلَّا  
إِذَا لَوْنُ الظَّالِمِينَ ۖ ذَلِكَ أَذَىٰ أَنْ يَأْتُوا بِاللَّشَّادَةِ  
عَلَىٰ رُءُوسِهِمَا أَوْ يَخَافُوا أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ  
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ  
الْفَاسِقِينَ ۖ يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا  
أُجِبْتُمْ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۖ  
إِذْ قَالَ اللَّهُ يٰعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي

مَدَّ



याद करो जो तुमपर और तुम्हारी माँ पर हुआ है। जब मैंने पवित्र आत्मा से तुम्हें शक्ति प्रदान की; तुम पालने में भी लोगों से बात करते थे और बड़ी अवस्था को पहुँचकर भी। और याद करो, जबकि मैंने तुम्हें किताब और हिकमत और तौरात और इनजील की शिक्षा दी थी। और याद करो जब तुम मेरे आदेश से मिट्टी से पक्षी का प्रारूपण करते थे; फिर उसमें फूँक मारते थे, तो वह मेरे आदेश से उड़नेवाली बन जाती थी। और तुम मेरे आदेश से अंधे और कोढ़ी को अच्छा कर देते थे

الْمَلَكُ

وَالْأَنْبِيَاءُ

عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَالِدَتِكَ إِذْ أَبَدْتُكَ بِرُوحِ  
الْقُدُسِ مَحْكُمِ النَّاسِ فِي السَّهْلِ وَكَهْلًا، وَإِذْ  
عَلَّمْتُكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ، وَإِذْ  
تَخَلَّقُ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَتَنَّهُمْ فِيهَا  
فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي وَتُبْرِئُ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ  
بِإِذْنِي، وَإِذْ تُخَوِّمُ السَّوْيَ بِإِذْنِي، وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي  
إِسْرَءِيلَ عَنْكَ إِذْ جَنَّتْهُمْ بِالْبَيْتِ فَقَالَ الَّذِينَ  
كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ وَإِذْ  
أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ امْنُوا بِي وَبِرُسُولِي، قَالُوا  
أَمَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ ۝ إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ  
يُعِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنْزِلَ  
عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ ۖ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ  
مُؤْمِنِينَ ۝ قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَنَحْمِلَ

مِنْهَا

और जबकि तुम मेरे आदेश से मुर्दों को जीवित निकाल खड़ा करते थे। और याद करो जबकि मैंने तुमसे इसराइलियों को रोके रखा, जबकि तुम उनके पास खुली-खुली निशानियाँ लेकर पहुँचे थे, तो उनमें से जो इनकार करनेवाले थे उन्होंने कहा : “यह तो बस खुला जादू है।”

111. और याद करो, जब मैंने हवारियों (साथियों और शार्गिदों) के दिल में डाला कि “मुझपर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ”, तो उन्होंने कहा : “हम ईमान लाए और तुम गवाह रहो कि हम मुस्लिम हैं।”

112. और याद करो जब हवारियों ने कहा : “ऐ मरयम के बेटे ईसा ! क्या तुम्हारा रब आकाश से खाने से भरा थाल उतार सकता है ?” कहा : “अल्लाह से डरो, यदि तुम ईमानवाले हो।”

113. वे बोले : “हम चाहते हैं कि उसमें से खाएँ और हमारे हृदय संतुष्ट



हों और हमें मालूम हो जाए कि तूने हमसे सच कहा और हम उसपर गवाह रहें।”

114. मरयम के बेटे ईसा ने कहा : “ऐ अल्लाह, हमारे रब ! हमपर आकाश से खाने से भरा थाल उतार, जो हमारे लिए और हमारे अंगलों और हमारे पिछलों के लिए खुशी का कारण बने और तेरी ओर से एक निशानी हो, और हमें आहार प्रदान कर। तू सबसे अच्छा प्रदान करनेवाला है।”

115. अल्लाह ने कहा : “मैं उसे तुमपर उतारूँगा, फिर उसके पश्चात तुममें से जो कोई इनकार करेगा तो मैं अवश्य उसे ऐसी यातना दूँगा जो संपूर्ण संसार में किसी को न दूँगा।”

116. और याद करो जब अल्लाह कहेगा : “ऐ मरयम के बेटे ईसा ! क्या तुमने लोगों से कहा था कि अल्लाह के अतिरिक्त दो और पूज्य मुझे और मेरी माँ को बना लो ?” वह कहेगा : “महिमावान है तू ! मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं वह बात कहूँ जिसका मुझे कोई हक नहीं है। यदि मैंने यह कहा होता तो तुझे मालूम ही होता। तू जानता है, जो कुछ मेरे मन में है। परन्तु मैं नहीं जानता जो कुछ तेरे मन में है। निश्चय ही, तू ही छिपी बातों का भली-भाँति जाननेवाला है।

117. मैंने उनसे उसके सिवा और कुछ नहीं कहा, जिसका तूने मुझे आदेश दिया था, यह कि ‘अल्लाह की बन्दगी करो, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा

قُلُوبِنَا وَنَعْلَمَ أَن قَدْ صَدَّقْنَا وَنَكُونُ عَلَيْهَا  
مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ  
رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا  
عَيْدًا لِّأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ ۝ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ  
خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝ قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنْزِلُهَا عَلَيْكُمْ  
فَتَن يَكْفُرُ بَعْدَ مِنْكُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ وَإِذْ قَالَ اللَّهُ  
لِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ أَمَّا أَنْتَ الْيَهُودِيَّ ۖ أَتَقُولُ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوا مِنِّي  
وَآلِيَّ الْهَوِيِّ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ  
لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ بِي ۖ بِحَقِّ رَبِّكَ أَنْتَ قُلْتَهُ فَقَدْ  
عَلِمْتَهُ ۖ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۖ  
إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝ مَا كُنْتَ لَهُمْ إِلَّا مَنًّا  
أَوْ تَزَكُّيًّا ۖ يَبْغُونَ أَنْ يَأْمُرُوا اللَّهَ بِرَبِّهِمْ ۖ وَكَانَتْ

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ



भी रब है।' और जब तक मैं उनमें रहा उनकी खबर रखता था, फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो फिर तू ही उनका निरीक्षक था। और तू हर चीज़ का साक्षी है।

118. यदि तू उन्हें यातना दे तो वे तो तेरे बन्दे ही हैं और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो निस्संदेह तू अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।"

119. अल्लाह कहेगा : "यह वह दिन है कि सच्चों को उनकी सच्चाई लाभ पहुँचाएगी। उनके लिए ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे सदैव रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए। यही सबसे बड़ी सफलता है।"

120. आकाशों और धरती और जो कुछ उनके बीच है, सबपर अल्लाह ही की बादशाही है और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।



## 6. अल-अनआम

(मक्का में उतरी— आयतें 165)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान् है।

1. प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और अँधेरों और उजाले का विधान किया; फिर भी इनकार करनेवाले लोग दूसरों को अपने रब के समकक्ष ठहराते हैं।

2. वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर (जीवन की) एक अवधि



निश्चित कर दी और उसके यहाँ (क्रियामत की) एक अवधि और निश्चित है; फिर भी तुम संदेह करते हो !

3. वही अल्लाह है, आकाशों में भी और धरती में भी। वह तुम्हारी छिपी और तुम्हारी खुली बातों को जानता है, और जो कुछ तुम कमाते हो, वह उससे भी अवगत है।

4. हाल यह है कि उनके रब की निशानियों में से कोई निशानी भी उनके पास ऐसी नहीं आई, जिससे उन्होंने मुँह न मोड़ लिया हो।

5. उन्होंने सत्य को झुठला दिया, जबकि वह उनके पास आया।

अतः जिस चीज़ की वे हँसी उड़ाते रहे हैं, जल्द ही उसके संबंध में उन्हें खबरें मिल जाएँगी।

6. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले कितने ही गिरोहों को हम विनष्ट कर चुके हैं। उन्हें हमने धरती में ऐसा जमाव प्रदान किया था, जो तुम्हें नहीं प्रदान किया। और उनपर हमने आकाश को खूब बरसता छोड़ दिया और उनके नीचे नहरें बहाई। फिर हमने उन्हें उनके गुनाहों के कारण विनष्ट कर दिया और उनके पश्चात दूसरे गिरोहों को उठाया।

7. और यदि हम तुम्हारे ऊपर काग़ज़ में लिखी-लिखाई किताब भी उतार देते और उसे लोग अपने हाथों से छू भी लेते तब भी, जिन्होंने इनकार किया है, वे यही कहते : "यह तो बस एक खुला जादू है।"

8. उनका तो कहना है : "इस (नबी) पर कोई फ़रिश्ता (खुले रूप में) क्यों नहीं उतारा गया?" हालाँकि यदि हम फ़रिश्ता उतारते तो फ़ैसला हो चुका

أَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهُ ثُمَّ أَنْتُمْ تَنْسَوْنَ ۖ وَهُوَ اللَّهُ  
فِي السَّمَوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ ۖ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ  
وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ۖ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ  
آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۖ فَقَدْ  
كَذَّبُوا بِآلِهَتِنَا فَاتَّخَذُوا مِنْهُمْ قُتُولًا  
مُتَبَدِّلِينَ ۚ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَفْهِمُونَ ۖ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ  
أَفْضَلْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قُرُونٍ مَّا كُنْتُمْ فِي الْأَرْضِ  
مِمَّا لَمْ يُكُنْ لَكُمْ وَالرَّسُلَ الْأَنْبِيَاءَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتُ  
وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِبًا مِنْ تَجْتِبِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ  
بِذُنُوبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ۖ  
وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ فَلْيَسَوْذُ  
بِأَيْدِيهِمْ لَقَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ  
مُبِينٌ ۖ وَقَالُوا لَوْلَا آيَاتُ اللَّهِ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ



होता। फिर उन्हें कोई मुहलत ही न मिलती।

9. यह बात भी है कि यदि हम उसे (नबी को) फ़रिश्ता बना देते तो उसे आदमी ही (के रूप का) बनाते। इस प्रकार उन्हें उसी संदेह में डाल देते, जिस संदेह में वे इस समय पड़े हुए हैं।

10. तुमसे पहले कितने ही रसूलों की हँसी उड़ाई जा चुकी है। अन्ततः जिन लोगों ने उनकी हँसी उड़ाई थी, उन्हें उसी ने आ घेरा जिस बात पर वे हँसी उड़ाते थे।

11. कहो : “धरती में चल-फिरकर देखो कि झुठलानेवालों का क्या परिणाम हुआ !”

12. कहो : “आकाशों और धरती में जो कुछ है किसका है ?” कह दो : “अल्लाह ही का है।” उसने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है। निश्चय ही वह तुम्हें क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। जिन लोगों ने अपने-आपको घाटे में डाला है, वही हैं जो ईमान नहीं लाते।

13. हाँ, उसी का है जो भी रात में ठहरता है और दिन में (गतिशील होता है), और वह सब कुछ सुनता, जानता है।

14. कहो : “क्या मैं आकाशों और धरती को पैदा करनेवाले अल्लाह के सिवा किसी और को संरक्षक बना लूँ ? उसका हाल यह है कि वह खिलाता है और स्वयं नहीं खाता।” कहो : “मुझे आदेश हुआ है कि सबसे पहले मैं उसके आगे झुक जाऊँ। और (यह कि) तुम बहुदेववादियों में कदापि सम्मिलित न होना।”

15. कहो : “यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ, तो उस स्थिति में मुझे एक

أَنزَلْنَا لَكُمْ الْقَضَى الْأَمْرَ ثُمَّ لَا يَنْظُرُونَ ۖ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ  
مَلَكًا لَجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَا يَلْبِسُونَ ۝  
وَلَقَدْ اسْتَفْزَى بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ فَخَفَى بِالَّذِينَ  
سَخَرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ قُلْ  
يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ  
الْمُكَذِّبِينَ ۝ قُلْ لِمَنْ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝  
قُلْ لِلَّهِ ۖ كَتَبَ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۖ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ  
يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۖ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ  
فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ وَلِلَّهِ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَ النَّهَارِ  
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۖ قُلْ أَعْبُدُوا اللَّهَ أَتَأْخُذُوا  
بِقَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُهُمْ وَلَا يَغْنَمُ ۖ  
قُلْ إِنِّي أَوْصِيْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا  
تَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِكِينَ ۖ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ



बड़े (भयानक) दिन की यातना का डर है।”

16. उस दिन वह जिसपर से टल गई, उसपर अल्लाह ने दया की, और यही स्पष्ट सफलता है।

17. और यदि अल्लाह तुम्हें कोई कष्ट पहुँचाए तो उसके अतिरिक्त उसे कोई दूर करनेवाला नहीं और यदि वह तुम्हें कोई भलाई पहुँचाए तो उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

18. उसे अपने बन्दों पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है। और वह तत्त्वदर्शी, खबर रखनेवाला है।

19. कहो : “किस चीज़ की गवाही सबसे बड़ी है?” कहो : “मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह है। और यह कुरआन मेरी ओर वहय (प्रकाशना) किया गया है, ताकि मैं इसके द्वारा तुम्हें सचेत कर दूँ। और जिस किसी को यह पहुँचे, वह भी ऐसा ही करे। क्या तुम वास्तव में गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य भी हैं?” तुम कह दो : “मैं तो इसकी गवाही नहीं देता।” कहो : “वह तो बस अकेला पूज्य है। और तुम जो उसका साझी ठहराते हो, उससे मेरा कोई संबंध नहीं।”

20. जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे उसे इस प्रकार पहचानते हैं, जिस प्रकार अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगों ने अपने आपको घाटे में डाला है, वही ईमान नहीं लाते।

21. और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या

عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ . مَنْ يُصْرِفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ . وَذَلِكَ الْفُورُ الْمُبِينُ . وَإِنْ يَمَسَّكَ اللَّهُ يَضْرِبْ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ . وَإِنْ يَمَسَّكَ بَعْثٌ فُهِمَ فَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ . وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ . وَهُوَ الْغَنِيُّ الْغَنِيُّ . قُلْ إِنِّي شَيْءٌ أَكْبَرُ شَهَادَةً . قُلِ اللَّهُ شَهِيدُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ . وَأَوْصِي إِلَى هَذَا الْقُرْآنِ لِأَنَّ زَكَمَ بِهِ وَمَنْ يَلْمَ . أَهْنُكُمْ لَشَهَادَتِهِ . إِنَّ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ . قُلْ لَا أَشْهَدُ . قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَهٌ وَاحِدٌ . وَإِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ . الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْكِتَابَ يَعْزِفُونَهُ كَمَا يَغْرِفُونَ آبْنَاءَهُمْ . الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ . وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ . إِنَّهُ

مَنْ



उसकी आयतों को झुठलाए।  
निस्संदेह अत्याचारी कभी सफल  
नहीं हो सकते।

22. और उस दिन को याद करो  
जब हम सबको इकट्ठा करेंगे; फिर  
बहुदेववादियों से पूछेंगे : “कहाँ हैं  
तुम्हारे ठहराए हुए साझीदार,  
जिनका तुम दावा किया करते थे ?”

23. फिर उनका कोई फ़िला  
(उपद्रव) शेष न रहेगा। सिवाय  
इसके कि वे कहेंगे : “अपने रब  
अल्लाह की सौगन्ध! हम  
बहुदेववादी न थे।”

24. देखो, कैसा वे अपने विषय  
में झूठ बोले। और वह गुम होकर  
रह गया जो वे घड़ा करते थे।

25. और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं, हालाँकि हमने  
तो उनके दिलों पर परदे डाल रखे हैं कि वे उसे समझ न सकें और उनके कानों में  
बोझ डाल दिया है। और वे चाहे प्रत्येक निशानी देख लें तब भी उसे मानेंगे नहीं;  
यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास आकर तुमसे झगड़ते हैं, तो अविश्वास की नीति  
अपनानेवाले कहते हैं : “यह तो बस पहले के लोगों की गाथाएँ हैं।”

26. और वे उससे दूसरों को रोकते हैं और स्वयं भी उससे दूर रहते हैं। वे  
तो बस अपने आपको ही विनष्ट कर रहे हैं, किन्तु उन्हें इसका एहसास नहीं।

27. और यदि तुम उस समय देख सकते, जब वे आग के निकट खड़े किए  
जाएँगे और कहेंगे : “काश ! क्या ही अच्छा होता कि हम फिर लौटा दिए जाएँ  
(कि मानें) और अपने रब की आयतों को न झुठलाएँ और माननेवालों में हो  
जाएँ।”

28. कुछ नहीं, बल्कि जो कुछ वे पहले छिपाया करते थे, वह उनके सामने

الْأَنْتَارِ

لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ

لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۖ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ  
لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا أَيْنَ شُرَكَاءُكُمْ الَّذِينَ كُنْتُمْ  
تَرْعَوْنَ ۖ ثُمَّ لَمْ تُكُنْ فَتَنْصُرُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ  
رَبُّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ۖ أَنْظِرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَى  
أَنْفُسِهِمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۖ وَمِنْهُمْ  
مَنْ يَنْتِمِ إِلَيْكَ، وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ  
يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِنْ يَرَوْا كَلِمَةً  
يُؤْمِنُوا بِهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ ذَلِكَ يَجْدُلُونَكَ يَقُولُ  
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۖ وَهُمْ  
يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْتَوْنَ عَنْهُ ۖ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا  
أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۖ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وَقَفُوا عَلَى  
النَّارِ فَقَالُوا بَلَىٰ نَحْنُ نَرُودُ وَلَا كَلِيبَ بَأْسِي رَبِّنَا  
وَلَكُونِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ بَلْ بَدَأَ لَهُمْ مَا كَانُوا

مَقُولَ



आ गया। और यदि वे लौटा भी दिए जाएँ, तो फिर वही कुछ करने लगेंगे जिससे उन्हें रोका गया था। निश्चय ही वे झूठे हैं।

29. और वे कहते हैं : “जो कुछ है बस यही हमारा सांसारिक जीवन है; हम कोई फिर उठाए जानेवाले नहीं हैं।”

30. और यदि तुम देख सकते जब वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएँगे ! वह कहेगा : “क्या यह यथार्थ नहीं है ?” कहेंगे : “क्यों नहीं, हमारे रब की कसम !” वह कहेगा : “अच्छा तो उस इनकार के बदले जो तुम करते रहे हो, यातना का मज़ा चखो।”

31. वे लोग घाटे में पड़े, जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया, वहाँ तक कि जब अचानक उनपर वह घड़ी आ जाएगी तो वे कहेंगे : “हाय ! अफ़सोस, उस कोताही पर जो इसके विषय में हमसे हुई।” और हाल यह होगा कि वे अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए होंगे। देखो, कितना बुरा बोझ है जो ये उठाए हुए हैं !

32. सांसारिक जीवन तो एक खेल और तमाशे (ग़फ़लत) के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, जबकि आखिरत का घर उन लोगों के लिए अच्छा है, जो डर रखते हैं। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?

33. हमें मालूम है, जो कुछ वे कहते हैं उससे तुम्हें दुख पहुँचता है। तो वे वास्तव में तुम्हें नहीं झुठलाते, बल्कि उन अत्याचारियों को तो अल्लाह की आयतों से इनकार है।

34. तुमसे पहले भी बहुत-से रसूल झुठलाए जा चुके हैं, तो वे अपने

الأنعام

قَالَ هَٰؤُلَاءِ

يُغْفَرُونَ مِنْ قَبْلِ ۖ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ ۚ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۚ وَقَالُوا إِن هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۚ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وَقَعُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۖ قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۚ قَدْ حَسَرَ الَّذِينَ كَذَبُوا ۖ بِلِقَاءِ اللَّهِ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً ۖ قَالُوا يَحْسِرُنَا عَلَىٰ مَا فَزَعْنَا فِيهَا ۖ وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۖ أَلَا سَاءَ مَا يَزِيدُونَ ۚ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لُحُوبٌ وَلَهْوٌ ۚ وَلِلْآخِرَةِ الْآخِرَةُ حَزِيرٌ لِلَّذِينَ يَشْقُونَ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۚ قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لِيَحْزَنَكَ الْوَدْعَىٰ يَقُولُونَ ۖ وَآيَاتُهُمْ لَا يَكْذِبُونَكَ وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْعَدُونَ ۚ وَلَقَدْ كَذَّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كَذَّبُوا ۖ وَآوَدُوا حَتَّىٰ

سَمِعُوا



झुठलाए जाने और कष्ट पहुँचाए जाने पर धैर्य से काम लेते रहे, यहाँ तक कि उन्हें हमारी सहायता पहुँच गई। कोई नहीं जो अल्लाह की बातों को बदल सके। तुम्हारे पास तो रसूलों की कुछ खबरें पहुँच ही चुकी हैं।

35. और यदि उनकी विमुखता तुम्हारे लिए असहनीय है, तो यदि तुमसे हो सके कि धरती में कोई सुरंग या आकाश में कोई सीढ़ी ढूँढ़ निकालो और उनके पास कोई निशानी ले आओ, तो (ऐसा कर देखो), यदि अल्लाह चाहता तो उन सबको सीधे मार्ग पर इकट्ठा कर देता। अतः तुम उजड़ु और नादान न बनना।

36. मानते तो वही लोग हैं जो सुनते हैं; रहे मुर्दे, तो अल्लाह उन्हें (क्रियामत के दिन) उठा खड़ा करेगा; फिर वे उसी की ओर पलटेंगे।

37. वे यह भी कहते हैं : "उस (नबी) पर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई?" कह दो : "अल्लाह को तो इसकी सामर्थ्य प्राप्त है कि कोई निशानी उतार दे; परन्तु उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।"

38. धरती में चलने-फिरनेवाला कोई भी प्राणी हो या अपने दो परों से उड़नेवाला कोई पक्षी, ये सब तुम्हारी ही तरह के गिरोह हैं। हमने किताब में कोई भी चीज़ नहीं छोड़ी है। फिर वे अपने रब की ओर इकट्ठे किए जाएँगे।

39. जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, वे बहरे और गूँगे हैं, अँधेरों में पड़े हुए हैं। अल्लाह जिसे चाहे भटकने दे और जिसे चाहे सीधे मार्ग पर लगा दे।

وَلَقَدْ جَاءَكَ  
مِنْ نَّبِيِّ الرُّسُلِينَ ۖ وَإِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ  
إِعْرَاضُهُمْ فَإِنْ اسْتَطَعْتَ أَنْ تُبَدِّلَ نُفُوسًا فِي الْأَرْضِ  
أَوْ سُلُوكًا فِي السَّمَاءِ فَتُاتِيَهُمْ بِآيَةٍ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ  
لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهَدْيِ فَلَا تَلْوَنَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۖ  
إِنَّمَا يَنْصِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۖ وَالنُّفُوسَ يَنْصِيبُهُمُ  
اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يَرْجَعُونَ ۖ وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ  
مِنْ رَبِّهِ ۖ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُنْزِلَ آيَةً  
وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۖ وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ  
وَلَا ظَلِيرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أَمَّمْ آمَنَّاكُمْ مَا فَرَّطْنَا  
فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ۖ وَالَّذِينَ  
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمُّوا وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ ۖ مَن يَشَأِ اللَّهُ  
يُضِلَّهُ ۖ وَمَن يَشَأِ يُجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝



40. कहो : “क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि तुमपर अल्लाह की यातना आ पड़े या वह घड़ी तुम्हारे सामने आ जाए, तो क्या अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे ? बोलो, यदि तुम सच्चे हो ?

41. बल्कि तुम उसी को पुकारते हो— फिर जिसके लिए तुम उसे पुकारते हो, वह चाहता है तो उसे दूर भी कर देता है—और उन्हें भूल जाते हो जिन्हें साझीदार ठहराते हो ।”

42. तुमसे पहले कितने ही समुदायों की ओर हमने रसूल भेजे फिर उन्हें तंगियों और मुसीबतों में डाला, ताकि वे विनम्र हों ।

43. जब हमारी ओर से उनपर सख्ती आई तो फिर क्यों न वे विनम्र हुए ? परन्तु उनके हृदय तो कठोर हो गए थे और जो कुछ वे करते थे शैतान ने उसे उनके लिए मोहक बना दिया ।

44. फिर जब उसे उन्होंने भुला दिया जो उन्हें याद दिलाई गई थी, तो हमने उनपर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए; यहाँ तक कि जो कुछ उन्हें मिला था, जब वे उसमें मग्न हो गए तो अचानक हमने उन्हें पकड़ लिया, तो क्या देखते हैं कि वे बिल्कुल निराश होकर रह गए ।

45. इस प्रकार अत्याचारी लोगों की जड़ काटकर रख दी गई । प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो सारे संसार का रब है ।

46. कहो : “क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि अल्लाह तुम्हारे सुनने की और तुम्हारी देखने की शक्ति छीन ले और तुम्हारे दिलों पर ठप्पा लगा दे, तो अल्लाह के सिवा कौन पूज्य है जो तुम्हें ये चीज़ें लाकर दे ?” देखो, किस

الانسان

مَا تَدْعُونَ

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ  
أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ، إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ بَلْ إِنَّمَا  
تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ وَ  
تَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ  
مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَاهُم بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ  
يَتَضَرَّعُونَ ۝ فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا  
وَلَكِن قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ۝ فُلْنَا كُنُوزَهُمْ فَكَّرُوا فِيهَا كَفَتْنَا عَلَيْهِمْ  
أَبْوَابَ كُلِّ مَنَىٰ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ  
بَغْتَةً ۖ فَاذًّا هُمْ مُبْلِسُونَ ۝ فَقُطِعَ دَائِرُ الْقُرُورِ  
الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ قُلْ  
أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَ أَبْصَارَكُمْ وَ خَمَّرَ  
عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ مِّنْ إِلَهٍ غَيْرَ اللَّهِ يَأْتِيَكُمْ بِهِ ۚ أَنْظَرُ

مِّنَ



प्रकार हम तरह-तरह से अपनी निशानियाँ बयान करते हैं ! फिर भी वे किनारा ही खींचते जाते हैं ।

47. कहो : "क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि तुमपर अचानक या प्रत्यक्षतः अल्लाह की यातना आ जाए, तो क्या अत्याचारी लोगों के सिवा कोई और विनष्ट होगा ?"

48. हम रसूलों को केवल शुभ-सूचना देनेवाले और सचेतकर्ता बनाकर भेजते रहे हैं । फिर जो ईमान लाए और सुधर जाए, तो ऐसे लोगों के लिए न कोई भय है और न वे कभी दुखी होंगे ।

الْأَنْعَامِ

وَالْأَنْعَامِ

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ ۝ قُلْ  
أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَشْرَكْنَا بِاللهِ بِغَتَّةٍ أَوْ جَهْرَةً  
هَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ وَمَا تُرْسِلُ  
الرُّسُلَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ فَمَنْ أَضَلَّ  
وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝  
وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يُمْسِكُهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا  
يَفْسُقُونَ ۝ قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللهِ  
وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ ۚ إِنْ  
أَسْمِعُ إِلَّا مَا يُؤْتَىٰ إِلَيَّ ۚ قُلْ هَلْ يَسْمَعُ الْإِنْسَانُ  
وَالْبَصِيرُ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ۝ وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ  
يَخَافُونَ أَنْ يُعَذِّبَهُمُ اللهُ وَالَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ  
دُونَهُ وَلِيٌّ وَلَا يَسْعَىٰ لَهُمُ الْعَمَلُ ۚ يَتَّقُونَ ۝ وَلَا  
تُطْرَدِ الَّذِينَ يُدْعَوْنَ إِلَى الْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ

سَلَامٌ

49. रहे वे लोग, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें यातना पहुँचकर रहेगी, क्योंकि वे अवज्ञा करते रहे हैं ।

50. कह दो : "मैं तुमसे यह नहीं कहता कि 'मेरे पास अल्लाह के खज़ाने हैं, और न मैं परोक्ष का ज्ञान रखता हूँ', और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि 'मैं कोई फ़रिश्ता हूँ ।' मैं तो बस उसी का अनुपालन करता हूँ जो मेरी ओर वहय की जाती है ।" कहो : "क्या अंधा और आँखोंवाला दोनों बराबर हो जाएँगे ? क्या तुम सोच-विचार से काम नहीं लेते ?"

51. और तुम इसके द्वारा उन लोगों को सचेत कर दो, जिन्हें इस बात का भय है कि वे अपने रब के पास इस हाल में इकट्ठा किए जाएँगे कि उसके सिवा न तो उनका कोई समर्थक होगा और न कोई सिफ़ारिश करनेवाला, ताकि वे बचें ।

52. और जो लोग अपने रब को उसकी खुशी की चाह में प्रातः और सायंकाल पुकारते रहते हैं, ऐसे लोगों को दूर न करना । उनके हिसाब की



तुमपर कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं है और न तुम्हारे हिसाब की उनपर कोई ज़िम्मेदारी है कि तुम उन्हें दूर करो और फिर हो जाओ अत्याचारियों में से।

53. और इसी प्रकार हमने इनमें से एक को दूसरे के द्वारा आजमाइश में डाला, ताकि वे कहें : “क्या यही वे लोग हैं, जिनपर अल्लाह ने हममें से चुनकर एहसान किया है?” — क्या अल्लाह कृतज्ञ लोगों से भली-भाँति परिचित नहीं है?

54. और जब तुम्हारे पास वे लोग आएँ, जो हमारी आयतों को मानते हैं, तो कहो : “सलाम हो तुमपर ! तुम्हारे रब ने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि तुममें से जो कोई नासमझी से कोई बुराई कर बैठे, फिर उसके पश्चात पलट आए और अपना सुधार कर ले तो यह है कि वह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।”

55. इसी प्रकार हम अपनी आयतें खोल-खोलकर बयान करते हैं (ताकि तुम हर ज़रूरी बात जान लो) और इसलिए कि अपराधियों का मार्ग स्पष्ट हो जाए।

56. कह दो : “तुम लोग अल्लाह से हटकर जिन्हें पुकारते हो, उनकी बन्दगी करने से मुझे रोका गया है।” कहो : “मैं तुम्हारी इच्छाओं का अनुपालन नहीं करता, क्योंकि तब तो मैं मार्ग से भटक गया और मार्ग पानेवालों में से न रहा।”

57. कह दो : “मैं अपने रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर क़ायम हूँ और तुमने उसे झुठला दिया है। जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी मचा रहे हो,

الْأَنفَامِ

قُلْ أَتَسْتَأْذِنُونَ

يُرِيدُونَ وَجْهَهُ . مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ تَكْثُرُدُّهُمْ فَتَكُونُ مِنَ الظَّالِمِينَ . وَكَذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوا أَهَؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنْ بَيْنِنَا . أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ . وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ . أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ . وَكَذَلِكَ نَقُصُّلُ الْآيَاتِ وَلِيَسْتَضِيَّ السَّائِلُ الْخَافِرِينَ . قُلْ إِنِّي نَهَيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ . قُلْ لَا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ . قَدْ صَلَّيْتُ إِذَا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ . قُلْ إِنِّي عَلَى بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ . مَا عِنْدِي

مِثْرَلٌ



वह कोई मेरे पास तो नहीं है। निर्णय का सारा अधिकार अल्लाह ही को है, वही सच्ची बात बयान करता है और वही सबसे अच्छा निर्णायक है।”

58. कह दो : “जिस चीज़ को तुम्हें जल्दी पड़ी हुई है, यदि कहीं वह चीज़ मेरे पास होती तो मेरे और तुम्हारे बीच कभी का फ़ैसला हो चुका होता। और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।”

59. उसी के पास परोक्ष की कुंजियाँ हैं, जिन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता। जल और थल में जो कुछ है, उसे वह जानता है। और जो पत्ता भी गिरता है, उसे वह निश्चय ही जानता है। और धरती के अँधेरों में कोई भी दाना हो और कोई भी आर्द्र (गोली) और शुष्क (सूखी) चीज़ हो, वह निश्चय ही एक स्पष्ट किताब में मौजूद है।

60. और वही है जो रात को तुम्हें मौत देता है और दिन में जो कुछ तुमने किया उसे जानता है। फिर वह इसलिए तुम्हें उठाता है, ताकि निश्चित अवधि पूरी हो जाए; फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है, फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे हो।

61. और वही अपने बन्दों पर पूरा-पूरा क़ाबू रखनेवाला है और वह तुम पर निगरानी करनेवाले को नियुक्त करके भेजता है, यहाँ तक कि जब तुममें से किसी की मृत्यु आ जाती है, तो हमारे भेजे हुए कार्यकर्ता उसे अपने क़ब्ज़े में कर लेते हैं और वे कोई कोताही नहीं करते।

مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۚ يَقْضِ الْحَقُّ  
وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ۚ قُلْ أَوْ أَنْ عِنْدِي مَا  
تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ أَقْضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ  
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ۚ وَعِنْدَهُ مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ لَا  
يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ  
وَمَا تَنْقُطُ مِنْ وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٌ فِي  
طَلْسِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٌ وَلَا يَابِسٌ إِلَّا فِي  
كِتَابٍ مُبِينٍ ۚ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَقَّعُكُمْ بِالْيَمِينِ وَ  
يَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ  
لِقَاضِي أَجَلٍ مُسَمًّى ۚ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ  
يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ  
عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ  
أَحَدَكُمْ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفْقِرُونَ ۚ

مَعْلَمٌ



62. फिर सब अल्लाह की ओर, जो उनका वास्तविक स्वामी है, लौट जाएँगे। जान लो, निर्णय का अधिकार उसी को है और वह बहुत जल्द हिसाब लेनेवाला है।

63. कहो : “कौन है जो थल और जल के अँधेरो से तुम्हें छुटकारा देता है, जिसे तुम गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके पुकारने लगते हो कि यदि हमें इससे बचा लिया तो हम अवश्य कृतज्ञ हो जाएँगे?”

64. कहो : “अल्लाह तुम्हें इनसे और हरेक बेचैनी और पीड़ा से छुटकारा देता है, लेकिन फिर तुम उसका साझीदार ठहराने लगते हो।”

65. कहो : “वह इसकी सामर्थ्य रखता है कि तुमपर तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से कोई यातना भेज दे या तुम्हें टोलियों में बाँटकर परस्पर भिड़ा दे और एक को दूसरे की लड़ाई का मज्रा चखाए।” देखो, हम आयतों को कैसे, तरह-तरह से, बयान करते हैं, ताकि वे समझें।

66. तुम्हारी क़ौम ने तो उसे झुठला दिया, हालाँकि वह सत्य है। कह दो : “मैं तुमपर कोई संरक्षक नियुक्त नहीं हूँ।

67. हर खबर का एक निश्चित समय है और शीघ्र ही तुम्हें ज्ञात हो जाएगा।”

68. और जब तुम उन लोगों को देखो, जो हमारी आयतों पर नुक्ताचीनी करने में लगे हुए हैं, तो उनसे मुँह फेर लो, ताकि वे किसी दूसरी बात में लग जाएँ। और यदि कभी शैतान तुम्हें भुलावे में डाल दे, तो याद आ जाने के

الْأَنْعَامِ

قَالَ تَحْمِلُونَ

ثُمَّ رُدُّوْا۟ اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰهُمُ الْحَقُّ ؕ اِلَّا لَهٗ الْحُكْمُ ۚ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِیْنَ ؕ قُلْ مَنْ يُكْفِيْكُمْ مِنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ؕ لَیْنِ اٰمَنَّا مِنْ هٰذَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِیْنَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَكْفِيْكُمْ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْۢی ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ؕ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰۤی اَنْ یَّبْعَثَ عَلَیْكُمْ عَذٰۤاۢبًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ یَلْبِسَكُمْ شِیْعًا وَیَذِیْقَ بَعْضُکُمْ بَآسَۢاۤ بَعْضًا ؕ اَنْظُرْ کَیْفَ تُصَوِّرُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّهٖمْ یَفْقَهُوْنَ ؕ وَكَذَّبَ بِهٖۤا ثَوْمُکَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَنْتُ عَلَیْکُمْ بِوٰکِیْلٍ ؕ لِکُلِّ نَبِیٍّ مُّسْتَقَرٌّ ۚ وَسَوْفَ تُعْلَمُوْنَ ؕ وَاِذَا رَاَیْتَ الَّذِیْنَ یُخَوِّضُوْنَ فِیۡۤ اٰیٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰی یَخْضُوْۤا فِیۡ حَدِیْثٍ غَیْرِہٖ ؕ وَاِنَّمَا یُنۢۢیْسِنُکَ

مَنْزِل



बाद उन अत्याचारियों के पास न बैठे।

69. उनके हिसाब के प्रति तो उन लोगों पर कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं, जो डर रखते हैं। यदि है तो बस याद दिलाने की; ताकि वे डरें।

70. छोड़ो उन लोगों को, जिन्होंने अपने धर्म को खेल और तमाशा बना लिया है और उन्हें सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल रखा है। और इसके द्वारा उन्हें नसीहत करते रहो कि कहीं ऐसा न हो कि कोई अपनी कमाई के कारण तबाही में पड़ जाए।

अल्लाह से हटकर कोई भी नहीं, जो उसका समर्थक और सिफ़ारिश करनेवाला हो सके और यदि वह छुटकारा पाने के लिए बदले के रूप में हर संभव चीज़ देने लगे, तो भी वह उससे न लिया जाए। ऐसे ही लोग हैं, जो अपनी कमाई के कारण तबाही में पड़ गए। उनके लिए पीने को खौलता हुआ पानी है और दुखद यातना भी; क्योंकि वे इनकार करते रहे थे।

71. कहो : "क्या हम अल्लाह को छोड़कर उसे पुकारने लग जाएँ जो न तो हमें लाभ पहुँचा सके और न हमें हानि पहुँचा सके और हम उलटे पाँव फिर जाएँ, जबकि अल्लाह ने हमें मार्ग पर लगा दिया है?—उस व्यक्ति को तरह जिसे शैतानों ने धरती में भटका दिया हो और वह हैरान होकर रह गया हो। उसके कुछ साथी हों, जो उसे मार्ग की ओर बुला रहे हों कि 'हमारे पास चला आ!' " कह दो : "मार्गदर्शन केवल अल्लाह का मार्गदर्शन है और हमें इसी

الْأَنفَالِ

الْأَنفَالِ

الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدُوا بَعْدَ الذِّكْرِ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝  
وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۝  
وَلَكِنْ ذِكْرٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ وَذَرِ الَّذِينَ  
اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لِبَئًا وَكَهْوًَا وَعَرَّتْهُمْ الْحَيَاةُ  
الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهِ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ ۝  
لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ ۝ وَإِنْ  
تَعْدِلْ كُلُّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ  
أَنْبَلُوا بِمَا كَسَبُوا ۝ لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ  
أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝ قُلْ أَدْعُوا مِنْ دُونِ  
اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا  
بَعْدَ إِذْ هَدَيْنَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ  
فِي الْأَرْضِ حَيْرَانًا ۝ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَىٰ  
الْهُدَىٰ انْتِنَاءً ۝ قُلْ إِنْ هَدَىٰ اللَّهُ فَمَا لَهُ هَدًى ۝

مَنْزِلَ



बात का आदेश हुआ है कि हम सारे संसार के स्वामी को समर्पित हो जाएँ।”

72. और यह कि “नमाज़ क़ायम करो और उसका डर रखो। वही है, जिसके पास तुम इकट्ठे किए जाओगे,

73. और वही है जिसने आकाशों और धरती को हक़ के साथ पैदा किया। और जिस समय वह किसी चीज़ को कहे : ‘हो जा’, तो उसी समय वह हो जाती है। उसकी बात सर्वथा सत्य है और जिस दिन ‘सूर’ (नरसिंघा) में फूँक मारी जाएगी, राज्य उसी का होगा।

वह सभी छिपी और खुली चीज़ का जाननेवाला है, और वही तत्त्वदर्शी, खबर रखनेवाला है।”

74. और याद करो, जब इबराहीम ने अपने बाप आज़र से कहा था : “क्या तुम मूर्तियों को पूज्य बनाते हो? मैं तो तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पड़ा देख रहा हूँ।”

75. और इस प्रकार हम इबराहीम को आकाशों और धरती का राज्य दिखाने लगे (ताकि उसके ज्ञान का विस्तार हो) और इसलिए कि उसे विश्वास हो।

76. अतएव जब रात उसपर छा गई, तो उसने एक तारा देखा। उसने कहा : “इसे मेरा रब ठहराते हो!” फिर जब वह छिप गया तो बोला : “छिप जानेवालों से मैं प्रेम नहीं करता।”

77. फिर जब उसने चाँद को चमकता हुआ देखा, तो कहा : “इसको मेरा रब ठहराते हो!” फिर जब वह छिप गया, तो कहा : “यदि मेरा रब मुझे मार्ग

وَأْمُرْنَا لِلْإِسْلَامِ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَ أَنْ أَقِيمُوا  
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝  
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۝  
وَيَوْمَ يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۚ وَلَهُ  
الْمُلْكُ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةُ  
وَهُوَ الْحَكِيمُ الْحَنِيفُ ۝ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ  
أَرَرَأَيْتُ أَتَّخِذُ أَصْنَامًا إِيَّاهُ ۚ إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ  
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَكَذَلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ  
مَلَكُوتَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ  
الْمُوقِنِينَ ۝ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَى كَوْكَبًا  
قَالَ هَذَا رَبِّي ۚ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ  
الْأَفْلَاقَ ۚ فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِعًا قَالَ هَذَا رَبِّي ۚ  
فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَيْسَ لَهُ يَهْدِيَنِي رَبِّي لَا كُفُونُ



न दिखाता तो मैं भी पथभ्रष्ट लोगों में सम्मिलित हो जाता।”

78. फिर जब उसने सूर्य को चमकता हुआ देखा, तो कहा : “इसे मेरा रब ठहराते हो ! यह तो बहुत बड़ा है।” फिर जब वह भी छिप गया, तो कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मैं विरक्त हूँ उनसे जिनको तुम साझी ठहराते हो।

79. मैंने तो एकाग्र होकर अपना मुख उसकी ओर कर लिया है, जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया। और मैं साझी ठहरानेवालों में से नहीं।”

80. उसकी क़ौम के लोग उससे झगड़ने लगे। उसने कहा : “क्या तुम मुझसे अल्लाह के विषय में झगड़ते हो ? जबकि उसने मुझे मार्ग दिखा दिया है। मैं उनसे नहीं डरता, जिन्हें तुम उसका सहभागी ठहराते हो, बल्कि मेरा रब जो कुछ चाहता है वही पूरा होकर रहता है। प्रत्येक वस्तु मेरे रब की ज्ञान-परिधि के भीतर है। फिर क्या तुम चेतोगे नहीं ?

81. और मैं तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों से कैसे डरूँ, जबकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह का सहभागी उस चीज़ को ठहराया है, जिसका उसने तुमपर कोई प्रमाण अवतरित नहीं किया ? अब दोनों फ़रीक़ों में से कौन अधिक निश्चिन्त रहने का अधिकारी है ? बताओ यदि तुम जानते हो।

82. जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में किसी (शिरक) ज़ुल्म की मिलावट नहीं की, वही लोग हैं जो भय मुक्त हैं और वही सीधे मार्ग पर हैं।”

83. यह है हमारा वह तर्क जो हमने इबराहीम को उसकी अपनी क़ौम के मुकाबले में प्रदान किया था। हम जिसे चाहते हैं दर्जों (श्रेणियों) में ऊँचा कर

الْأَنْعَامُ

قُلُوبُ النَّاسِ

مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ۖ فَلَمَّا رَأَى السَّمَاءَ بَازِغَةً  
قَالَ هَذَا رَبِّي هَذَا أَكْبَرُ ۖ فَلَمَّا أَفْلَتْ قَالَ  
يَقَوْمِ إِنِّي بَرِئٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ۚ إِنِّي وَجْهَتُ  
وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا  
وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ وَحَاجَّجَهُ قَوْمُهُ ۖ قَالَ  
اتَّخَذُونِي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدِينِ ۖ وَلَا أَخَافُ مَا  
تُشْرِكُونَ بِهِ ۚ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۚ وَسِعَ رَبِّي  
كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۚ وَكَيْفَ  
أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنْتُمْ أَشْرَكْتُمْ  
بِاللَّهِ مَا لَكُمْ يُنَزِّلُ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا فَأَيُّ  
الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۚ  
الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ  
لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ ۚ وَبَلَّغَ مَحْمُودًا

سَبِيلَهُ



देते हैं। निस्संदेह तुम्हारा रब तत्त्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

84. और हमने उसे (इबराहीम को) इसहाक और याकूब दिए; हर एक को मार्ग दिखाया—और नूह को हमने इससे पहले मार्ग दिखाया था—और उसकी संतान में दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ़, मूसा और हारून को भी— और इस प्रकार हम शुभ-सुन्दर कर्म करनेवालों को बदला देते हैं—

85. और ज़करिया, यह्या, ईसा और इलयास को भी (मार्ग दिखलाया)। इनमें का हर एक योग्य और नेक था।

أَتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۖ نَزَعْنَا مِنْ أَشْجَارِهِ  
لَئِنْ رَأَيْتَ حَكِيمٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ  
كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ  
وَسُلَيْمَانَ ۚ وَأَيُّوبَ ۚ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ  
نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۚ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ  
كُلٌّ مِنَ الصَّالِحِينَ ۚ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيُوشَعَ  
نُوحًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَىٰ الْعَالَمِينَ ۚ وَمِنْ آبَائِهِمْ وَ  
ذُرِّيَّتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَىٰ  
صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ ذَٰلِكَ هُدَىٰ اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَنْ  
يَشَاءُ ۚ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَ  
وَالتَّنْذِيرَ ۚ فَإِنْ يُكَفِّرْ بِهَا هَؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا  
لَئِيْسُوا بِهَا بِكَافِرِينَ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَىٰ اللَّهُ فَبْهَتُوا

مَنْ

86. और इसमाईल, अलयसअ, यूनस और लूत को भी। इनमें से हर एक को हमने संसारवालों के मुक़ाबले में श्रेष्ठता प्रदान की।

87. और उनके बाप-दादा और उनकी संतान और उनके भाई-बन्धुओं में भी कितने ही लोगों को (मार्ग दिखाया)। और हमने उन्हें चुन लिया और उन्हें सीधे मार्ग की ओर चलाया।

88. यह अल्लाह का मार्गदर्शन है, जिसके द्वारा वह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है मार्ग दिखाता है, और यदि उन लोगों ने कहीं अल्लाह का साझी ठहराया होता, तो उनका सब किया-धरा अकारथ हो जाता।

89. वे ऐसे लोग हैं जिन्हें हमने किताब और निर्णय-शक्ति और पैग़म्बरी प्रदान की थी (उसी प्रकार हमने मुहम्मद को भी किताब, निर्णय-शक्ति और पैग़म्बरी दी है)। फिर यदि ये लोग इसे मानने से इनकार करें, तो अब हमने इसको ऐसे लोगों को सौंपा है जो इसका इनकार नहीं करते।

90. वे (पिछले पैग़म्बर) ऐसे लोग थे, जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया था, तो तुम



उन्हीं के मार्ग का अनुसरण करो। कह दो : "मैं तुमसे उसका कोई प्रतिदान नहीं माँगता। वह तो सम्पूर्ण संसार के लिए बस एक प्रबोध है।"

91. उन्होंने अल्लाह की क्रूर न जानी, जैसी उसकी क्रूर जाननी चाहिए थी, जबकि उन्होंने कहा : "अल्लाह ने किसी मनुष्य पर कुछ अवतरित ही नहीं किया है।" कहो : "फिर वह किताब किसने अवतरित की, जो मूसा लोगों के लिए प्रकाश और मार्गदर्शन के रूप में लाया था, जिसे तुम पन्ना-पन्ना करके रखते हो? उन्हें दिखाते भी हो, परन्तु बहुत-सा छिपा जाते हो। और तुम्हें

वह ज्ञान दिया गया, जिसे न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप-दादा ही।" कह दो : "अल्लाह ही ने", फिर उन्हें छोड़ो कि वे अपनी नुक्ताचीनियों से खेलते रहें।

92. यह किताब है जिसे हमने उतारा है; बरकतवाली है; अपने से पहले की पुष्टि में है (ताकि तुम शुभ-सूचना दो) और ताकि तुम केन्द्रीय बस्ती (मक्का) और उसके चतुर्दिक बसनेवाले लोगों को सचेत करो और जो लोग आखिरत पर ईमान रखते हैं, वे इसपर भी ईमान लाते हैं। और वे अपनी नमाज़ की रक्षा करते हैं।

93. और उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह पर मिथ्यारोपण करे या यह कहे कि "मेरी ओर प्रकाशना (वह्य) की गई है", हालाँकि उसकी ओर कोई भी प्रकाशना न की गई हो। और उस व्यक्ति से (बढ़कर अत्याचारी कौन होगा) जो यह कहे कि "मैं भी ऐसी चीज़ उतार दूँगा, जैसी अल्लाह ने उतारी है।" और यदि तुम देख सकते, जब अत्याचारी मृत्यु-यातनाओं में होते हैं और फ़रिश्ते अपने हाथ बढ़ा रहे होते हैं कि "निकालो अपने प्राण! आज तुम्हें अपमानजनक यातना दी जाएगी, क्योंकि तुम अल्लाह के प्रति झूठ बका करते थे

الأنعام

نَزَّلَ الْجَنَّةَ

اِقْتَدِهِ. قُلْ لَا اَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ  
لِّلْعَالَمِينَ وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَتَّى قَدَرَهُ اِذْ قَالُوا مَا  
اَنْزَلَ اللَّهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ  
الَّذِى جَاءَ بِهِ مُوسٰى نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ لِيَجْعَلُوهُ  
قُرْاٰنًا يَّبْكُرُوْنَ وَتَخْفَوْنَ كَثِيْرًا وَعَلَيْكُمْ مَّآلُكُمْ  
تَعْمَلُوْا اَنْتُمْ وَلَا اٰبَاؤُكُمْ قُلْ اِنَّ اللَّهَ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ  
يَلْعَبُوْنَ ۝ وَهٰذَا كِتٰبُ اَنْزَلْنٰهُ مُبْرَكًا مُّصَدِّقًا لِّلَّذِى  
بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرَى وَمَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِيْنَ  
يُؤْمِنُوْنَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهِ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ  
يُحٰفِظُوْنَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِّمَّنْ افْتَرٰى عَلٰى اللَّهِ كَذِبًا  
اَوْ قَالَ اُنْصِيَ اِلٰى وَلَمْ يُوْرَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَنْ قَالَ سَاَنْزِلُ  
مِثْلَ مَا اَنْزَلَ اللَّهُ وَلَوْ تَرٰٓءِ اِذَا الظّٰلِمُوْنَ فِيْ عَمْرٰتِ  
السَّمٰوٰتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بِاَيْسَظْ اَعْيٰنِهِمْ اَخْرِجُوْا اَنْفُسَكُمْ

مَعْلُومٌ



और उसकी आयतों के मुक़ाबले में अकड़ते थे।”

94. और निश्चय ही तुम उसी प्रकार एक-एक करके हमारे पास आ गए, जिस प्रकार हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था। और जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा था, उसे अपने पीछे छोड़ आए और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देख रहे हैं, जिनके विषय में तुम दावे से कहते थे कि “वे तुम्हारे मामले में (अल्लाह के) शरीक हैं।” तुम्हारे पारस्परिक संबंध टूट चुके हैं और वे सब तुमसे गुम होकर रह गए, जो दावे तुम किया करते थे।

95. निश्चय ही अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ निकालता है, सजीव को निर्जीव से निकालता है और निर्जीव को सजीव से निकालनेवाला है। वही अल्लाह है— फिर तुम कहाँ औंधे हुए जाते हो?—

96. पौ फाड़ता है, और उसी ने रात को आराम के लिए बनाया और सूर्य और चन्द्रमा को (समय के) हिसाब का साधन ठहराया। यह बड़े शक्तिमान, सर्वज्ञ का ठहराया हुआ परिणाम है।

97. और वही है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाए, ताकि तुम उनके द्वारा स्थल और समुद्र के अंधकारों में मार्ग पा सको। जो लोग जानना चाहें उनके लिए हमने निशानियाँ खोल-खोलकर बयान कर दी हैं।

98. और वही तो है, जिसने तुम्हें अकेली जान पैदा किया। अतः एक अवधि तक ठहरना है और फिर सौंप देना है। उन लोगों के लिए, जो समझें, हमने निशानियाँ खोल-खोलकर बयान कर दी हैं।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ  
الْيَوْمَ يُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ تُكْذِبُونَ ۝ وَلَقَدْ جَعَلْنَا نُوحًا نُزَارًا ۖ كَمَا خَلَقْنَاهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرْكَبُوا مَا خَوَّلْنَاهُمْ ۖ وَرَأَىٰ ظُهُورُكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ رَعَيْتُمُ اللَّهَ ۖ فَبَيْنَكُمْ شُرَكَوَاهُ ۚ لَقَدْ تَقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَا كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۚ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمْ اللَّهُ فَآلَىٰ تَوْفِكُونَ ۝ فَآلَىٰ الْإِضْبَاجِ ۚ وَجَعَلَ الْبَيْتَ سَكَنًا وَالشَّسَّ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ اللَّيْلِ وَالْبَحْرِ ۖ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ ۚ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ



99. और वही है जिसने आकाश से पानी बरसाया, फिर हमने उसके द्वारा हर प्रकार की वनस्पति उगाई; फिर उससे हमने हरी-भरी पत्तियाँ निकालीं और तने विकसित किए, जिससे हम तले-ऊपर चढ़े हुए दाने निकालते हैं— और खजूर के गांभे से झुके पड़ते गुच्छे भी— और अंगूर, जैतून और अनार के बाग लगाए, जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं और एक-दूसरे से भिन्न भी होते हैं। उसके फल को देखो, जब वह फलता है और उसके पकने को भी देखो! निस्संदेह ईमान लानेवाले लोगों के लिए इनमें बड़ी निशानियाँ हैं।

يَفْقَهُونَ ۖ وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً، فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ، فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُخْرِيدُهُ مِنْهُ حَبًّا مُتَرَاكِبًا، وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنَّاتٍ مِنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالزُّمُرُّانَ مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ انْظُرُوا إِلَى ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكُمْ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَجَعَلُوا بَيْنَهُ شُرَكَاءَ الْيَحْنَنَ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ سُبْحَنَهُ وَعَمَّا يَعْبُدُونَ ۚ بِيَدِهِ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ مَا يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ صَاحِبَةً ۚ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ ذَٰلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۚ فَاعْبُدُوهُ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ لَا تَذَرِكُهُ الْآبْصَارُ ۚ وَهُوَ يُبْدِيكَ الْآبْصَارَ ۚ وَهُوَ الْلطِيفُ الْخَبِيرُ ۚ قَدْ جَاءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ

100. और लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझी ठहरा रखा है; हालाँकि उन्हें उसी ने पैदा किया है। और बेजाने-बूझे उसके लिए बेटे और बेटियाँ घड़ ली हैं। यह उसकी महिमा के प्रतिकूल है! वह उन बातों से उच्च है, जो वे बयान करते हैं!

101. वह आकाश और धरती का सर्वप्रथम पैदा करनेवाला है। उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है, जबकि उसकी पत्नी ही नहीं? और उसी ने हर चीज़ को पैदा किया है और उसे हर चीज़ का ज्ञान है।

102. वही अल्लाह तुम्हारा रब; उसके सिवा कोई पूज्य नहीं; हर चीज़ का स्रष्टा है; अतः तुम उसी की बन्दगी करो। वही हर चीज़ का ज़िम्मेदार है।

103. निगाहें उसे नहीं पा सकतीं, बल्कि वही निगाहों को पा लेता है। वह अत्यन्त सूक्ष्म (एवं सूक्ष्मदर्शी) खबर रखनेवाला है।

104. तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से आँख खोल देनेवाले प्रमाण आ चुके हैं; तो जिस किसी ने देखा, अपना ही भला किया और जो अंधा बना रहा, तो वह अपने ही को हानि पहुँचाएगा। और मैं तुमपर कोई नियुक्त



रखवाला नहीं हूँ।

105. और इसी प्रकार हम अपनी आयतें विभिन्न ढंग से बयान करते हैं (कि वे सुनें) और इसलिए कि वे कह लें “(ऐ मुहम्मद ! ) तुमने कहीं से पढ़-पढ़ा लिया है।” और इसलिए भी कि हम उनके लिए जो जानना चाहें, सत्य को स्पष्ट कर दें।

106. तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी तरफ़ जो वहय की गई है, उसी का अनुसरण किए जाओ, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं और बहुदेववादियों (की कुनीति) पर ध्यान न दो।

107. यदि अल्लाह चाहता तो वे (उसका) साझी न ठहराते। तुम्हें हमने उनपर कोई नियुक्त संरक्षक तो नहीं बनाया है और न तुम उनके कोई ज़िम्मेदार ही हो।

108. अल्लाह के सिवा जिन्हें ये पुकारते हैं, तुम उनके प्रति अपशब्द का प्रयोग न करो। ऐसा न हो कि वे हद से आगे बढ़कर अज्ञान वश अल्लाह के प्रति अपशब्द का प्रयोग करने लगें। इसी प्रकार हमने हर गिरोह के लिए उसके कर्म को सुहावना बना दिया है। फिर उन्हें अपने रब ही की ओर लौटना है। उस समय वह उन्हें बता देगा, जो कुछ वे करते रहे होंगे।

109. वे लोग तो अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते हैं कि यदि उनके पास कोई निशानी आ जाए, तो उसपर वे अवश्य ईमान लाएँगे। कह दो : “निशानियाँ तो अल्लाह ही के पास हैं।” और तुम्हें क्या पता कि जब वे आ जाएँगी तो भी वे ईमान नहीं लाएँगे।

110. और हम उनके दिलों और उनकी निगाहों को फेर देंगे, जिस प्रकार वे पहली बार ईमान नहीं लाए थे। और हम उन्हें छोड़ देंगे कि वे अपनी सरकशी में भटकते रहें।

الْأَنفُسُ

فَلَا تُهِنُوا

رَبِّكُمْ، فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ، وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا  
وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ۖ وَكَذَلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ  
لِيُقُولُوا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۚ إِنَّمَا  
أَوْحَى إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ، لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، وَأَعْرِضْ عَنِ  
الشُّشْرَكِينَ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا ۚ وَمَا جَعَلْنَاكَ  
عَلَيْهِمْ حَفِيظًا، وَمَا أَنْتَ بِرَاقِبٍ ۚ وَلَا تَسْأَلُوا  
الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَسْأَلُوا اللَّهَ عَدُوًّا يُغْفِرُ  
عَلَيْهِمْ ۚ كَذَلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ  
مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ وَأَسْمُوا بِأَلِلَّهِ  
جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَكِنْ جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لِّيُؤْمِنُوا بِهَا ۚ قُلْ  
إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ  
لَا يُؤْمِنُونَ ۚ وَتَقَلِّبْ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ  
يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۚ

سَبَّحَ



111. यदि हम उनकी ओर फ़रिश्ते भी उतार देते और मुर्दे भी उनसे बातें करने लगते और प्रत्येक चीज़ उनके सामने लाकर इकट्ठा कर देते, तो भी वे ईमान न लाते, बल्कि अल्लाह ही का चाहा क्रियान्वित है। परन्तु उनमें से अधिकतर लोग अज्ञानता से काम लेते हैं।

112. और इसी प्रकार हमने मनुष्यों और जिनों में से शैतानों को प्रत्येक नबी का शत्रु बनाया, जो चिकनी-चुपड़ी बात एक-दूसरे के मन में डालकर धोखा देते थे—यदि तुम्हारा रब चाहता तो वे ऐसा न कर सकते। अब छोड़ो उन्हें और उनके मिथ्यारोपण को।—

113. और ताकि जो लोग परलोक को नहीं मानते, उनके दिल उसकी ओर झुकें और ताकि वे उसे पसंद कर लें, और ताकि जो कमाई उन्हें करनी है कर लें।

114. अब क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और निर्णायक दूढ़ूँ? हालाँकि वही है जिसने तुम्हारी ओर किताब अवतरित की है, जिसमें बातें खोल-खोलकर बता दी गई हैं और जिन लोगों को हमने किताब प्रदान की थी, वे भी जानते हैं कि यह तुम्हारे रब की ओर से हक़ के साथ अवतरित हुई है, तो तुम कदापि संदेह में न पड़ना।

115. तुम्हारे रब की बात सच्चाई और इनसाफ़ के साथ पूरी हुई, कोई नहीं जो

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَقَدْ مَكَّمْنَا السَّابِقَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْغَوْثَ  
وَحَضَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَا كَانُوا يَتُوبُونَ  
إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ يَجْهَلُونَ  
وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيْطِينِ الْإِنْسِ  
وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ  
غُرُورًا وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلْنَاهُمْ قَدْزَرَهُمْ وَمَا يَفْعَلُونَ  
وَلْيَصْنَعِ إِلَهِهِ أَفْدَةً لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ  
وَلْيَرْضَوْهُ وَلَيَفْقَرِ قَوْمًا هُمْ مُقْتَرِفُونَ ۝ أَفَغَيَّرَ  
اللَّهُ أَبْتَغَىٰ حُكْمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ  
الْكِتَابَ مُفَصَّلًا ۝ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا الْكِتَابَ  
يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنْزَلٌ مِّنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا يَكُونُونَ  
مِنَ الْمُنْزَرِينَ ۝ وَتَوَكَّلْ عَلَىٰ رَبِّكَ صِدْقًا ۝  
عَدَا ۝ لَا مَبْدَلَ لِّكِتَابَتِهِ ۝ وَهُوَ السَّمِيعُ

مَدَن



उसकी बातों को बदल सके, और वह सुनता, जानता है।

116. और धरती में अधिकतर लोग ऐसे हैं कि यदि तुम उनके कहने पर चले तो वे अल्लाह के मार्ग से तुम्हें भटका देंगे। वे तो केवल अटकल के पीछे चलते हैं और वे निरे अटकल ही दौड़ाते हैं।

117. निस्संदेह तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटकता है और वह उन्हें भी जानता है जो सीधे मार्ग पर हैं।

118. अतः जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया हो, उसे खाओ; यदि तुम उसकी आयतों को मानते हो।

119. और क्या आपत्ति है कि तुम उसे न खाओ, जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया हो, बल्कि जो कुछ चीज़ें उसने तुम्हारे लिए हaram कर दी हैं, उनको उसने विस्तारपूर्वक तुम्हें बता दिया है। यह और बात है कि उसके लिए कभी तुम्हें विवश होना पड़े। परन्तु अधिकतर लोग तो ज्ञान के बिना केवल अपनी इच्छाओं (ग़लत विचारों) के द्वारा पथभ्रष्ट करते रहते हैं। निस्संदेह तुम्हारा रब मर्यादाहीन लोगों को भली-भाँति जानता है।

120. छोड़ो खुले गुनाह को भी और छिपे को भी। निश्चय ही गुनाह कमानेवालों को उसका बदला दिया जाएगा, जिस कमाई में वे लगे रहे होंगे।

121. और उसे न खाओ जिसपर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। निश्चय ही वह तो आज्ञा का उल्लंघन है। शैतान तो अपने मित्रों के दिलों में

الانعام

ذوالنهار

الْعَلِيمُ ۝ وَإِنْ تُلْهُمَ أَكْثَرُ مَنْ فِي الْأَرْضِ  
يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ  
وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ  
مَنْ يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ ۝ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ۝  
فَكُلُوا مِمَّا ذُكِّرَ لَكُمْ عَلَيْهِ ۝ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ  
مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِّرَ لَكُمْ  
اللَّهُ عَلَيْهِ ۝ وَقَدْ فَضَّلَ لَكُمْ مِمَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا  
مَا اضْطُرَرْتُمْ إِلَيْهِ ۝ وَإِنْ كَثِيرٌ يَضِلُّونَ بِأَهْوَاءِهِمْ  
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ۝  
وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِلَهِمْ وَبَاطِنَهُ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ  
الْإِلَهِمْ سِجْزُونَ ۝ يَمَا كَانُوا يُفْتَرُونَ ۝ وَلَا تَأْكُلُوا  
مِمَّا لَمْ يُذْكَرْ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ ۝ وَإِنَّ  
الشَّيْطَانَ لَيُوْخُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۝ وَإِنْ

سَبِيلَ



डालते हैं कि वे तुमसे झगड़ें। यदि तुमने उनकी बात मान ली तो निश्चय ही तुम बहुदेववादी होगे।

122. क्या वह व्यक्ति जो पहले मुर्दा था, फिर उसे हमने जीवित किया और उसके लिए एक प्रकाश उपलब्ध किया जिसको लिए हुए वह लोगों के बीच चलता-फिरता है, उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अँधेरो में पड़ा हुआ हो, उससे कदापि निकलनेवाला न हो? ऐसे ही इनकार करनेवालों के कर्म उनके लिए सुहावने बनाए गए हैं।

123. और इसी प्रकार हमने प्रत्येक बस्ती में उसके बड़े-बड़े अपराधियों को लगा दिया है कि वे वहाँ चालें चलें। वे अपने ही विरुद्ध चालें चलते हैं, किन्तु उन्हें इसका एहसास नहीं।

124. और जब उनके पास कोई आयत (निशानी) आती है तो वे कहते हैं : "हम कदापि नहीं मानेंगे, जब तक कि वैसी ही चीज़ हमें न दी जाए जो अल्लाह के रसूलों को दी गई है।" अल्लाह भली-भाँति उस (के औचित्य) को जानता है, जिसमें वह अपनी पैगम्बरी रखता है। अपराधियों को शीघ्र ही अल्लाह के यहाँ बड़े अपमान और कठोर यातना का सामना करना पड़ेगा, उस चाल के कारण जो वे चलते रहे हैं।

125. अतः (वास्तविकता यह है कि) जिसे अल्लाह सीधे मार्ग पर लाना चाहता है, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिसे गुमराही में पड़ा रहने देना चाहता है, उसके सीने को तंग और भिंचा हुआ कर देता है; मानो वह आकाश में चढ़ रहा है। इस तरह अल्लाह उन लोगों पर गन्दगी

الْأَنفُسِ  
أَطَعَتْهُمْ إِنْ كُنْتُمْ لَشْرِكُونَ ۚ أَوَمَنْ كَانَ مَسِيئًا  
فَأَخَيْنَاهُ ۖ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ  
كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا ۚ  
كَذَلِكَ نُزَيِّنُ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ وَكَذَلِكَ  
جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرًا مَجْرُمِينَ ۚ لِيُكَفِّرُوا فِيهَا  
وَمَا يَنْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۚ وَإِذَا  
جَاءَ غَمٌّ مِنْ آيَةٍ ۖ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِحَقِّ نُورٍ مِثْلَ مَا  
أَوَى رَسُولُ اللَّهِ ۚ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۚ  
سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ  
شَدِيدٌ ۚ بَلَا كَانُوا يَنْكُرُونَ ۚ فَمَنْ يُؤِذِ اللَّهَ أَنْ  
يَهْدِيَهُ يَكْثُرْ صَنْدَرُهُ لِلْإِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُؤِذِ أَنْ  
يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا ۚ كَانُوا يَصْعَدُ  
فِي السَّمَاءِ ۚ وَكَذَلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ



डाल देता है, जो ईमान नहीं लाते ।

126. और यह तुम्हारे रब का रास्ता है, बिलकुल सीधा । हमने निशानियाँ, ध्यान देनेवालों के लिए खोल-खोलकर बयान कर दी हैं ।

127. उनके लिए उनके रब के यहाँ सलामती का घर है और वह उनका संरक्षक मित्र है, उन कामों के कारण जो वे करते रहे हैं ।

128. और उस दिन को याद करो जब वह उन सबको घेरकर इकट्ठा करेगा, (कहेगा) : "ऐ जिन्नों के गिरोह ! तुमने तो मनुष्यों पर खूब हाथ साफ़ किया ।" और मनुष्यों में से जो उनके साथी रहे

होंगे, कहेंगे : "ऐ हमारे रब ! हमने आपस में एक-दूसरे से लाभ उठाया और अपने उस नियत समय को पहुँच गए, जो तूने हमारे लिए ठहराया था ।" वह कहेगा : "आग (नस्क) तुम्हारा ठिकाना है, उसमें तुम्हें सदैव रहना है ।" अल्लाह का चाहा ही क्रियान्वित है । निश्चय ही तुम्हारा रब तत्त्वदर्शी, सर्वज्ञ है ।

129. इसी प्रकार हम अत्याचारियों को एक-दूसरे के लिए (नरक का) साथी बना देंगे, उस कमाई के कारण जो वे करते रहे थे ।

130. "ऐ जिन्नों और मनुष्यों के गिरोह ! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे, जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाते और इस दिन के पेश आने से तुम्हें डराते थे ?" वे कहेंगे : "क्यों नहीं ! (रसूल तो आए थे) हम स्वयं अपने विरुद्ध गवाह हैं ।" उन्हें तो सांसारिक जीवन ने धोखे में रखा । मगर अब वे

لَا يُؤْمِنُونَ ۚ وَهَذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۚ  
قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُدْكِرُونَ ۚ لَهُمْ دَارُ  
السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ  
وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ جَمِيعًا، يُعْصَرُ الْحِجْنَ قَدْ اسْتَكْبَرْتُمْ  
مِنَ الْإِنسِ، وَقَالَ أَوْلِيؤُهُمْ مِنَ الْإِنسِ رَبَّنَا  
اسْمِعْهُمْ نِعْمَتًا يُبْعِضُ وَبَلَغْنَا أَجَلَنَا الَّذِي  
أَجَلْتَ لَنَا، قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَالِدِينَ فِيهَا إِلَّا  
مَا كَسَاءَ اللَّهُ، إِنَّ رَبَّكَ عَلَيْكُمْ عَلِيمٌ ۚ وَكَذَلِكَ  
تُؤْتَى بَعْضُ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ  
يُعْصَرُ الْحِجْنَ وَالْإِنسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ  
يَقْضُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ  
هَذَا، قَالُوا شَهِدْنَا عَلَى أَنْفُسِنَا وَعَدَّاهُمْ  
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا

سُورَةُ



स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देने लगे कि वे इनकार करनेवाले थे।

131. यह जान लो कि तुम्हारा रब जुल्म करके बस्तियों को विनष्ट करनेवाला न था, जबकि उनके निवासी बेसुध रहे हों।

132. सभी के दर्जे उनके कर्मों के अनुसार हैं। और जो कुछ वे करते हैं, उससे तुम्हारा रब अनभिज्ञ नहीं है।

133. तुम्हारा रब निस्पृह, दयावान है। यदि वह चाहे तो तुम्हें (दुनिया से) ले जाए और तुम्हारे स्थान पर जिसको चाहे तुम्हारे बाद ले आए, जिस प्रकार उसने तुम्हें कुछ और लोगों की सन्तति से उठाया है।

134. जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है, उसे अवश्य आना है और तुममें उसे मात करने की सामर्थ्य नहीं।

135. कह दो : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! तुम अपनी जगह कर्म करते रहो, मैं भी अपनी जगह कर्मशील हूँ। शीघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि घर (लोक-परलोक) का परिणाम किसके हित में होता है। निश्चय ही अत्याचारी सफल नहीं होते।”

136. उन्होंने अल्लाह के लिए स्वयं उसी की पैदा की हुई खेती और चौपायों में से एक भाग निश्चित किया है और अपने खयाल से कहते हैं : “यह हिस्सा अल्लाह का है और यह हमारे ठहराए हुए साझीदारों का है।” फिर जो उनके साझीदारों का (हिस्सा) है, वह अल्लाह को नहीं पहुँचता, परन्तु जो अल्लाह का है, वह उनके साझीदारों को पहुँच जाता है। कितना बुरा है, जो फ़ैसला वे करते हैं !

137. इसी प्रकार बहुत-से बहुदेववादियों के लिए उनके साझीदारों ने उनकी

الْأَنْشَاءُ

الْأَنْشَاءُ

كُفُوبِينَ ۚ ذَٰلِكَ أَن لَّمْ يَكُن رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ  
بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا غَافِلُونَ ۚ وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِّنَ  
عَمَلِهِمْ مَّا رَزَقَهُ بِغَافِلٍ ۚ وَمَا يَكْمُلُونَ ۚ وَرَبُّكَ  
الْعَزِيزُ ذُو الرِّحْمَةِ ۚ إِنَّ يَشَاءُ يَذْهَبَكُمْ وَيَسْخُلِفُ  
مِنْ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَاءُ ۚ كَمَا أَنشَأَكُم مِّن دُنْيَ  
قَوْمٍ آخَرِينَ ۚ إِنَّ مَّا تُوْعَدُونَ لَآتٍ ۚ وَمَا أَنْتُمْ  
بِمُعْجِزِينَ ۚ قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ ۚ إِنِّي  
عَاسِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ مَنْ يَكُن لَّهُ عَاقِبَةٌ  
الْدَّارِ الْآخِرَةِ لَا يُفْلِحِ الظَّالِمُونَ ۚ وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا  
ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَٰذَا  
لِلَّهِ بِرِزْقِهِمْ ۚ وَهَٰذَا لِشُرَكَائِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ  
فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَى  
شُرَكَائِهِمْ ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ رَزَيْنَا لِكَثِيرٍ

سُورَةُ



अपनी संतान की हत्या को सुहाना बना दिया है, ताकि उन्हें विनष्ट कर दें और उनके लिए उनके धर्म को संदिग्ध बना दें। यदि अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते; तो छोड़ दो उन्हें और उनके झूठ घड़ने को।

138. और वे कहते हैं : “ये जानवर और खेती वर्जित और सुरक्षित हैं। इन्हें तो केवल वही खा सकता है, जिसे हम चाहें।”— ऐसा वे स्वयं अपने खयाल से कहते हैं— और कुछ चौपाए ऐसे हैं, जिनकी पीठों को (सवारी के लिए) हराम ठहरा लिया है और कुछ जानवर ऐसे हैं जिनपर अल्लाह का नाम नहीं लेते। यह सब उन्होंने अल्लाह पर झूठ घड़ा है, और वह शीघ्र ही उन्हें उनके झूठ घड़ने का बदला देगा।

139. और वे कहते हैं : “जो कुछ इन जानवरों के पेट में है वह बिलकुल हमारे पुरुषों ही के लिए है और वह हमारी पत्नियों के लिए वर्जित है। परन्तु यदि वह मुर्दा हो, तो वे सब उसमें शरीक हैं।” शीघ्र ही वह उन्हें उनके ऐसा कहने का बदला देगा। निस्संदेह वह तत्त्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

140. वे लोग कुछ जाने-बूझे बिना घाटे में रहे, जिन्होंने मूर्खता के कारण अपनी संतान की हत्या की और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें प्रदान किया था, उसे अल्लाह पर झूठ घड़कर हराम ठहरा लिया। वास्तव में वे भटक गए और वे सीधा मार्ग पानेवाले न हुए।

141. और वही है जिसने बाग़ पैदा किए; कुछ जालियों पर चढ़ाए जाते हैं

مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتَلَ أَوْلَادَهُمْ شُرَكَاءَهُمْ لِيُرُدُّوهُمْ  
وَلَا يَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ. وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ  
قَدْ زُهِمَ وَمَا يَفْتَرُونَ ۝ وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ  
وَحَرِّثُ حِمْرًا لَا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَن نَّشَاءُ بِرِغْبِهِمْ  
وَأَنْعَامٌ حَرِّمَتْ طَهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَا يَذْكُرُونَ  
اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ. سَيَجْزِيهِمْ بِمَا  
كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ  
الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا  
وَأَن يَكُن مِّثْقَلُهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ. سَيَجْزِيهِمْ  
وَصَفَّهُمْ. إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ  
قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا  
رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ. قَدْ ضَلُّوا وَمَا  
كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَلَّتْ مَعْرُوشَتُهُ

مَثَلُهُ



और कुछ नहीं चढ़ाए जाते और खजूर और खेती भी जिनकी पैदावार विभिन्न प्रकार की होती है, और जैतून और अनार जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं और नहीं भी मिलते हैं। जब वह फल दे, तो उसका फल खाओ और उसका हक अदा करो जो उस (फ़सल) की कटाई के दिन वाजिब होता है। और हद से आगे न बढ़ो, क्योंकि वह हद से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता।

142. और चौपायों में से कुछ बोझ उठानेवाले बड़े और कुछ छोटे जानवर पैदा किए। अल्लाह

ने जो कुछ तुम्हें दिया है, उसमें से खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो। निश्चय ही वह तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है।

143. आठ नर-मादा पैदा किए—दो भेड़ की जाति से और दो बकरी की जाति से—कहो : “क्या उसने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा को? या उसको जो इन दोनों मादा के पेट में हो? किसी ज्ञान के आधार पर मुझे बताओ, यदि तुम सच्चे हो।”

144. और दो ऊँट की जाति से और दो गाय की जाति से, कहो : “क्या उसने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा को? या उसको जो इन दोनों मादा के पेट में हो? या, तुम उपस्थित थे, जब अल्लाह ने तुम्हें इसका आदेश दिया था? फिर उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो लोगों को

وَعَيْرَ مَعْرُوشَتٍ وَالْفُلَّ وَالزَّرَعَ فَخْتَلَفًا أُكْلُهُ  
وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ  
كُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ  
وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝ وَمِنَ  
الْأَنْعَامِ حَمُولَةٌ وَفَرَسٌ كُلُوا مِنَّا زَكَاةً فَكُمْ اللَّهُ  
وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝  
ثَمَنِيَّةٌ أَزْوَاجٌ مِنَ الضَّانِّ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ  
اثْنَيْنِ ۝ قُلْ لِلذَّكَرَيْنِ حَرَمٌ أَمِ الْإُنْثَيَيْنِ أَمْ  
اسْتَمَلْتُ عَلَيْهِمْ أَرْحَامُ الْإُنْثَيَيْنِ ۝ يَتَّبِعُني يَعْلَمُ  
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ  
الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۝ قُلْ لِلذَّكَرَيْنِ حَرَمٌ أَمِ الْإُنْثَيَيْنِ  
أَمْ اسْتَمَلْتُ عَلَيْهِمْ أَرْحَامُ الْإُنْثَيَيْنِ ۝ أَمْ كُنْتُمْ  
شُهَدَاءَ إِذْ وَضَعَكُمُ اللَّهُ فِيهِ هَذَا ۝ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ

مَنْ



पथभ्रष्ट करने के लिए अज्ञानता-पूर्वक अल्लाह पर झूठ घड़े? निश्चय ही, अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।”

145. कह दो : “जो कुछ मेरी ओर प्रकाशना की गई है, उसमें तो मैं नहीं पाता कि किसी खानेवाले पर उसका कोई खाना हaram किया गया हो, सिवाय इसके कि वह मुरदार हो, या बहता हुआ रक्त हो या सुअर का मांस हो— कि वह निश्चय ही नापाक है— या वह चीज़ जो मर्यादा से हटी हुई हो, जिसपर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया

اَفْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۚ قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ حَرْمًا عَلَى طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنْزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرْمًا كُلُّ ذِي ظُفْرٍ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرْمًا عَلَيْهِمْ ثَمَرُهُمْ إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمْ أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذَلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۚ وَذُنَا لُصْدِيقُونَ ۚ فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبِّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۚ سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۚ

हो। इसपर भी जो बहुत विवश और लाचार हो जाए; परन्तु वह अवज्ञाकारी न हो और न हद से आगे बढ़नेवाला हो, तो निश्चय ही तुम्हारा रब अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

146. और उन लोगों के लिए जो यहूदी हुए हमने नाखूनवाला जानवर हaram किया था और गाय और बकरी में से इन दोनों की चरबियाँ उनके लिए हaram कर दी थीं, सिवाय उस (चर्बी) के जो उन दोनों की पीठों या आँखों से लगी हुई या हड्डी से मिली हुई हों। यह बात ध्यान में रखो। हमने उन्हें उनकी सरकशी का बदला दिया था और निश्चय ही हम सच्चे हैं।

147. फिर यदि वे तुम्हें झुठलाएँ तो कह दो : “तुम्हारा रब व्यापक दयालुतावाला है और अपराधियों से उसकी यातना नहीं फिरती।”

148. बहुदेववादी कहेंगे : “यदि अल्लाह चाहता तो न हम साझीदार ठहराते और न हमारे पूर्वज ही; और न हम किसी चीज़ को (बिना अल्लाह के आदेश के) हaram ठहराते।” ऐसे ही उनसे पहले के लोगों ने भी झुठलाया था, यहाँ



तक कि उन्हें हमारी यातना का मज़ा चखना पड़ा। कहो : “क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है कि उसे हमारे पास पेश करो?” तुम लोग केवल गुमान पर चलते हो और निरे अटकल से काम लेते हो।

149. कह दो : “पूर्ण तर्क तो अल्लाह ही का है। अतः यदि वह चाहता तो तुम सबको सीधा मार्ग दिखा देता।”

150. कह दो : “अपने उन गवाहों को लाओ, जो इसकी गवाही दें कि अल्लाह ने इसे हARAM किया है।” फिर यदि वे गवाही दें तो तुम उनके साथ गवाही न देना,

और उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न करना जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और जो आखिरत को नहीं मानते और (जिनका) हाल यह है कि वे दूसरों को अपने रब के समकक्ष ठहराते हैं।

151. कह दो : “आओ, मैं तुम्हें सुनाऊँ कि तुम्हारे रब ने तुम्हारे ऊपर क्या पाबन्दियाँ लगाई हैं : यह कि किसी चीज़ को उसका साझीदार न ठहराओ और माँ-बाप के साथ सद्व्यवहार करो और निर्धनता के कारण अपनी संतान की हत्या न करो; हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी। और अश्लील बातों के निकट न जाओ, चाहे वे खुली हुई हों या छिपी हुई हों। और किसी जीव की, जिसे अल्लाह ने आदरणीय ठहराया है, हत्या न करो। यह और बात है कि हक़ के लिए ऐसा करना पड़े। ये बातें हैं, जिनकी ताकीद उसने

ذٰلِكَ كَذٰبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى دَاقُوْا  
بَاسَنَاۤ ۚ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَاۤ ۚ  
اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ۚ  
قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَاطِلَةُ ۚ فَلَوْ شَاءَ لَهَدٰىكُمْ  
اَجْمَعِيْنَ ۚ قُلْ هَلَمْ شَهِدَاۤ اَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ  
اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ اِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدُوْا مَعَهُمْ  
وَلَا تَتَّبِعِمْ اَهْوَاۤءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِآيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا  
يُؤْمِنُوْنَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ يَرٰبِتُهُمْ يَبْغِيْلُوْنَ ۚ قُلْ  
تَعٰلَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبِّيْكُمْ عَلٰىكُمْ اِلَّا تَشْكُرُوْا بِهٖ  
شَيْئًا وَّ بِالَّذِيْنَ اٰخَسَاۤءُ ۚ وَلَا تَقْسَلُوْا اَوْلَادَكُمْ  
مِّنْ اِمْلَاقٍ ۚ تَحْنُ نَزْرٌ عَلَيْكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوْا  
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْسَلُوْا  
النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ ذٰلِكُمْ وَضَعَتْكُمْ

مَثَلًا



तुम्हें की है, शायद कि तुम बुद्धि से काम लो।

152. और अनाथ के धन को हाथ न लगाओ, किन्तु ऐसे तरीके से जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँच जाए। और इनसाफ़ के साथ पूरा-पूरा नापो और तौलो। हम किसी व्यक्ति पर उसी काम की ज़िम्मेदारी का बोझ डालते हैं जो उसकी सामर्थ्य में हो। और जब बात कहो, तो न्याय की कहो, चाहे मामला अपने नातेदार ही का क्यों न हो, और अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो। ये बातें हैं, जिनकी उसने तुम्हें ताकीद की है। आशा है तुम ध्यान रखोगे।

153. और यह कि यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर चलो और दूसरे मार्गों पर न चलो कि वे तुम्हें उसके मार्ग से हटाकर इधर-उधर कर देंगे। यह वह बात है जिसकी उसने तुम्हें ताकीद की है, ताकि तुम (पथभ्रष्टता से) बचो।”

154. फिर (देखो) हमने मूसा को किताब दी थी, (धर्म को) पूर्णता प्रदान करने के लिए, जिसे उसने उत्तम रीति से ग्रहण किया था; और हर चीज़ को स्पष्ट रूप से बयान करने, मार्गदर्शन देने और दया करने के लिए, ताकि वे लोग अपने रब से मिलने पर ईमान लाएँ।

155. और यह किताब भी हमने उतारी है, जो बरकतवाली है; तो तुम इसका अनुसरण करो और डर रखो, ताकि तुमपर दया की जाए,

156. कि कहीं ऐसा न हो कि तुम कहने लगो : “किताब तो केवल हमसे पहले के दो गिरोहों पर उतारी गई थी और हमें तो उनके पढ़ने-पढ़ाने की

الأنعام

النواحي

بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۖ وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا  
بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا  
الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا تَكْلِفُ نَفْسًا إِلَّا  
وُسْعَهَا ۚ وَإِذَا قُلْتُمْ قَاعِدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۚ  
وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ۚ ذَلِكُمْ وَضَعْنَا لَعَلَّكُمْ  
تَذَكَّرُونَ ۚ وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ  
فَاتَّبِعُوهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ  
سَبِيلِهِ ۚ ذَلِكُمْ وَضَعْنَا لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۚ ثُمَّ  
أَنزَلْنَا مُوسَىٰ عَلَى الْكُتُبِ نَسَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَ  
تَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّعَلَّاهُمْ يُلَاقُوا  
رَبَّهُمْ يُؤْمِنُونَ ۚ وَهَذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ  
فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۚ أَنْ تَقُولُوا  
إِنَّمَا أَنزَلَ الْكِتَابَ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۚ

مَنْ



खबर तक न थी।”

157. या यह कहने लगे : “यदि हमपर किताब उतारी गई होती तो हम उनसे बढ़कर सीधे मार्ग पर होते।” तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण, मार्गदर्शन और दयालुता आ चुकी है। अब उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और दूसरों को उनसे फेरे? जो लोग हमारी आयतों से रोकते हैं, उन्हें हम इस रोकने के कारण जल्द बुरी यातना देंगे।

158. क्या ये लोग केवल इसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आ जाएँ या स्वयं तुम्हारा रब आ जाए या तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाए? जिस दिन तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाएगी, फिर किसी ऐसे व्यक्ति को उसका ईमान कुछ लाभ न पहुँचाएगा जो पहले ईमान न लाया हो या जिसने अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई हो। कह दो : “तुम भी प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा करते हैं।”

159. जिन लोगों ने अपने धर्म के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और स्वयं गिरोहों में बँट गए, तुम्हारा उनसे कोई संबंध नहीं। उनका मामला तो बस अल्लाह के हवाले है। फिर वह उन्हें बता देगा जो कुछ वे किया करते थे।

160. जो कोई अच्छा चरित्र लेकर आएगा उसे उसका दस गुना बदला मिलेगा

وَلَا تَنْتَظِرُوا أَنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابَ لَكُنَّا أَهْلُكُمْ وَرَحْمَةً ۖ  
فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ  
عَنْهَا ۖ سَتَجِدُ الَّذِينَ يُضِلُّونَ عَنْ آيَاتِنَا  
سُوءَ الْعَذَابِ ۖ إِنَّمَا تُضِلُّونَ ۖ هَلْ يَنْظُرُونَ  
إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ  
بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ ۖ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ  
لَا يَنْفَعُهُمْ نَفْسًا لِمَا نُهُوا ۖ لَمْ يَكُنْ أَمْرُكَ مِنْ قَبْلُ  
أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا ۖ قُلِ انْتَظِرُوا إِنَّا  
مُنْتَظِرُونَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ فَزَعُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا  
شُرَكَاءَ لِمَنْ هُمْ فِي شَيْءٍ ۖ رَأَيْنَا أَمْوَاحَهُمْ إِلَى اللَّهِ  
ثُمَّ يَنْتَظِرُهُمْ ۖ إِنَّمَا يُفْعَلُونَ ۖ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ



और जो व्यक्ति बुरा चरित्र लेकर आएगा उसे उसका बस उतना ही बदला मिलेगा, उनके साथ कोई अन्याय न होगा।

161. कहो : “मेरे रब ने मुझे सीधा मार्ग दिखा दिया है, बिल्कुल ठीक धर्म, इबराहीम के पंथ की ओर जो सबसे कटकर एक (अल्लाह) का हो गया था और वह बहुदेववादियों में से न था।”

162. कहो : “मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब है।

163. उसका कोई साझी नहीं है। मुझे तो इसी का आदेश मिला है और सबसे पहला मुस्लिम (आज्ञाकारी) मैं हूँ।

164. कहो : “क्या मैं अल्लाह से भिन्न कोई और रब दूँ, जबकि हर चीज़ का रब वही है!” और यह कि प्रत्येक व्यक्ति जो कुछ कमाता है, उसका फल वही भोगेगा; कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर तुम्हें अपने रब की ओर लौटकर जाना है। उस समय वह तुम्हें बता देगा, जिसमें परस्पर तुम्हारा मतभेद और झगड़ा था।

165. वही है जिसने तुम्हें धरती में खलीफ़ा (अधिकारी, उत्तराधिकारी) बनाया और तुममें से कुछ लोगों के दर्जे कुछ लोगों की अपेक्षा ऊँचे रखे, ताकि जो कुछ उसने तुमको दिया है उसमें वह तुम्हारी परीक्षा ले। निस्संदेह तुम्हारा रब जल्द सज़ा देनेवाला है। और निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

قُلْ

قُلْ

قُلْ عَشْرُ أَمْثَالِهَا، وَمَنْ جَاءَ بِالنَّفْسِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا وُشْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ قُلْ إِنِّي هَدَيْتُ رَبِّي إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ دِينًا قَبِيماً ۝ قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفاً، وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ۝ قُلْ أَغْنَى اللَّهُ عَنْيَ رِزْقِي وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۝ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا، وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ، إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ ۚ وَإِنَّهُ لَكَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

مَذَل

قُلْ



## 7. अल-आराफ़

(मक्का में उतरी— आयतें 206)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़, लाम, मीम, साद, ।

2. यह एक किताब है, जो तुम्हारी  
ओर उतारी गई है— अतः इससे  
तुम्हारे सीने में कोई तंगी न  
हो—ताकि तुम इसके द्वारा सचेत  
करो और यह ईमानवालों के लिए  
एक प्रबोधन है;

3. जो कुछ तुम्हारे रब की ओर  
से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है,  
उस पर चलो और उसे छोड़कर

दूसरे संरक्षक मित्रों का अनुसरण न करो। तुम लोग नसीहत थोड़े ही मानते हो।

4. कितनी ही बस्तियाँ थीं, जिन्हें हमने विनष्ट कर दिया। उनपर हमारी  
यातना रात को सोते समय आ पहुँची या (दिन-दहाड़े) आई, जबकि वे दोपहर  
में विश्राम कर रहे थे।

5. जब उनपर हमारी यातना आ गई तो इसके सिवा उनके मुँह से कुछ न  
निकला कि वे पुकार उठे : “वास्तव में हम अत्याचारी थे।”

6. अतः हम उन लोगों से अवश्य पूछेंगे, जिनके पास रसूल भेजे गए थे,  
और हम रसूलों से भी अवश्य पूछेंगे।

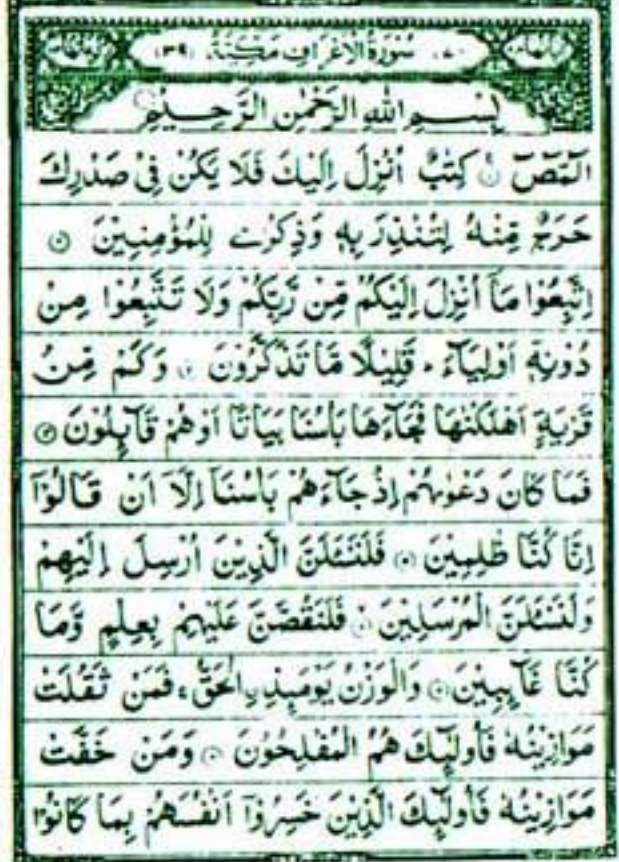
7. फिर हम पूरे ज्ञान के साथ उनके सामने सब बयान कर देंगे। हम कहीं  
गायब नहीं थे।

8. और बिलकुल पक्का-सच्चा वज़न उसी दिन होगा। अतः जिनके कर्म  
वज़न में भारी होंगे, वही सफलता प्राप्त करेंगे।

9. और वे लोग जिनके कर्म वज़न में हलके होंगे, तो वही वे लोग हैं,

الْأَعْرَافِ

وَالْأَعْرَافِ



مَنْزُورٌ



जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, क्योंकि वे हमारी आयतों का इनकार और अपने ऊपर अत्याचार करते रहे।

10. और हमने धरती में तुम्हें अधिकार दिया और उसमें तुम्हारे लिए जीवन - सामग्री रखी। तुम कृतज्ञता थोड़े ही दिखलाते हो।

11. हमने तुम्हें पैदा करने का निश्चय किया; फिर तुम्हारा रूप बनाया; फिर हमने फ़रिश्तों से कहा: "आदम को सजदा करो।" तो उन्होंने सजदा किया, सिवाय इबलीस के। वह (इबलीस) सजदा करनेवालों में से न हुआ।

بِأَيِّدِنَا يَنْظُرُونَ ۝ وَلَقَدْ مَكْنُكُم فِي الْأَرْضِ وَ  
جَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ۚ وَلَوْلَا مَا تَشْكُرُونَ ۝  
وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَكِ  
اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ لَمْ يَكُنْ مِنَ  
الْمُسَبِّحِينَ ۝ قَالَ مَا مَنَعَكَ آلَا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ۚ  
قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ خَلَقْتَنِي مِنْ نَارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ  
طِينٍ ۝ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ  
تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ۝ قَالَ  
أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ قَالَ إِنَّكَ مِنَ  
النَّاظِرِينَ ۝ قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ  
صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ۖ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَهُمْ مِنْ بَيْنِ  
أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ  
شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ۝ قَالَ

12. कहा: "तुझे किसने सजदा करने से रोका, जबकि मैंने तुझे आदेश दिया था?" बोला: "मैं उससे अच्छा हूँ। तूने मुझे अग्नि से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया।"

13. कहा: "उतर जा यहाँ से! तुझे कोई हक़ नहीं है कि यहाँ घमण्ड करे, तो अब निकल जा; निश्चय ही तू अपमानित है।"

14. बोला: "मुझे उस दिन तक मुहलत दे, जबकि लोग उठाए जाएँगे।"

15. कहा: "निस्संदेह तुझे मुहलत है।"

16. बोला: "अच्छा, इस कारण कि तूने मुझे गुमराही में डाला है<sup>1</sup>, मैं भी तेरे सीधे मार्ग पर उनके लिए घात में अवश्य बैटूँगा।

17. फिर उनके आगे और उनके पीछे और उनके दाएँ और उनके बाएँ से उनके पास आऊँगा। और तू उनमें अधिकतर को कृतज्ञ न पाएगा।"

1. अर्थात् तेरे सजदे के लिए आदेश देने के कारण मैं गुमराही में पड़ गया।



18. कहा : “निकल जा यहाँ से ! निन्दित, ठुकराया हुआ । उनमें से जिस किसी ने भी तेरा अनुसरण किया, मैं अवश्य तुम सबसे जहन्नम को भर दूँगा ।”

19. और “ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों जन्नत में रहो-बसो, फिर जहाँ से चाहो खाओ, लेकिन इस वृक्ष के निकट न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे ।”

20. फिर शैतान ने दोनों को बहकाया, ताकि उनकी शर्मगाहों को, जो उन दोनों से छिपी थीं, उन दोनों के सामने खोल दे । और

उसने (इबलीस ने) कहा : “तुम्हारे रब ने तुम दोनों को जो इस वृक्ष से रोका है, तो केवल इसलिए कि ऐसा न हो कि तुम कहीं फ़रिश्ते हो जाओ या कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें अमरता प्राप्त हो जाए ।”

21. और उसने उन दोनों के आगे क्रसमें खाई कि “निश्चय ही मैं तुम दोनों का हितैषी हूँ ।”

22. इस प्रकार धोखा देकर उसने उन दोनों को झुका लिया । अन्ततः जब उन्होंने उस वृक्ष का स्वाद लिया, तो उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खुल गई और वे अपने ऊपर बाग़ के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे । तब उनके रब ने उन्हें पुकारा : “क्या मैंने तुम दोनों को इस वृक्ष से रोका नहीं था और तुमसे कहा नहीं था कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रु है ?”

23. दोनों बोले : “हमारे रब ! हमने अपने आप पर अत्याचार किया । अब यदि तूने हमें क्षमा न किया और हम पर दया न दर्शाई, फिर तो हम घाटा उठानेवालों में से होंगे ।”

اٰخَرُ مِنْهَا مَذْمُوْمًا مَذْحُوْرًا ۚ لَنْ نَسِيْعَكَ مِنْهُمْ لَامُتَلٰتِنٌ مِنْهُمْ ۚ اَجْمَعِيْنَ ۚ وَ يٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَرَوْجُكَ الْجَنَّةَ ۚ كُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا ۚ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوَاتِحِهِمَا ۚ وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّا اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَتَيْنِ ۙ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝ وَقَاسَمَهُمَا اِنِّيْ لَكُمَا لَوْنٌ الطّٰوْسِيْنَ ۝ فَدَلَّهُمَا بِعُرْوَةٍ ۙ فَلَمَّا ذَاَقَا الشَّجَرَةَ ۙ بَدَا لَهُمَا سَوَاتِحُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ ذُرِّي الْجَنَّةِ ۙ وَنَادَاهُمَا رَبُّهُمَا اَلَمْ اَنْهٰكُمَا عَنْ تِلْكَ الشَّجَرَةِ ۙ وَاَقُلْتُ لَكُمَا اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا ۙ وَ اِنْ لَّمْ

مَزَلْنَا



24. कहा : “उतर जाओ ! तुम परस्पर एक-दूसरे के शत्रु हो और एक अवधि तक तुम्हारे लिए धरती में ठिकाना और जीवन-सामग्री है ।”

25. कहा : “वहीं तुम्हें जीना और वहीं तुम्हें मरना है और उसी में से तुमको निकाला जाएगा ।”

26. ऐ आदम की संतान ! हमने तुम्हारे लिए वस्त्र उतारा है कि तुम्हारी शर्मगाहों को छुपाए और रक्षा और शोभा का साधन हो । और धर्मपरायणता का वस्त्र—वह तो सबसे उत्तम है, यह अल्लाह की निशानियों में से है, ताकि वे ध्यान दें ।

27. ऐ आदम की संतान ! कहीं शैतान तुम्हें बहकावे में न डाल दे, जिस प्रकार उसने तुम्हारे माँ-बाप को जन्नत से निकलवा दिया था; उनके वस्त्र उनपर से उतरवा दिए थे, ताकि उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खोल दे । निस्संदेह वह और उसका गिरोह उस स्थान से तुम्हें देखता है, जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते । हमने तो शैतानों को उन लोगों का मित्र बना दिया है, जो ईमान नहीं रखते ।

28. और उनका हाल यह है कि जब वे लोग कोई अश्लील कर्म करते हैं तो कहते हैं कि “हमने अपने बाप-दादा को इसी तरीके पर पाया है और अल्लाह ही ने हमें इसका आदेश दिया है ।” कह दो : “अल्लाह कभी अश्लील बातों का आदेश नहीं दिया करता । क्या अल्लाह पर थोपकर ऐसी

تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَيْرِينَ ۖ قَالَ  
اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ  
مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۖ قَالَ فِيهَا تُخَيَّوْنَ وَ  
فِيهَا تُمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ ۚ يَبْنَىٰ آدَمَ  
قَدْ أَتَيْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُؤَارِي سَوَاطِلَكُمْ وَيُشَاهِدُ  
وَلِبَاسُ التَّقْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ  
لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ۚ يَبْنَىٰ آدَمَ لَا يَفْتِنُكُمُ الشَّيْطَانُ  
كَمَا أَخْرَجَ أَبَوَيْكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا  
لِيُزَيِّنَ لَهُمَا سَوَاقِلَهُمَا إِنَّهُ يَرَئَكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ  
حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ  
لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا  
وَجَدْنَا عَلَيْهَا آبَاءَنَا وَاللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا ۚ قُلْ  
إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ ۚ اتَّقُوا اللَّهَ عَلَىٰ اللَّهِ



बात कहते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं?"

29. कह दो : "मेरे रब ने तो न्याय का आदेश दिया है और यह कि इबादत के प्रत्येक अवसर पर अपना रुख ठीक रखो और निरे उसी के भक्त एवं आज्ञाकारी बनकर उसे पुकारो। जैसे उसने तुम्हें पहली बार पैदा किया, वैसे ही तुम फिर पैदा होगे।"

30. एक गिरोह को उसने मार्ग दिखाया। परन्तु दूसरा गिरोह ऐसा है, जिसके लोगों पर गुमराही चिपककर रह गई। निश्चय ही उन्होंने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपने मित्र बनाए और समझते यह हैं कि वे सीधे मार्ग पर हैं।

31. ऐ आदम की संतान ! इबादत के प्रत्येक अवसर पर अपनी शोभा धारण करो; खाओ और पियो, परन्तु हद से आगे न बढ़ो। निश्चय ही, वह हद से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता।

32. कहो : "अल्लाह की उस शोभा को जिसे उसने अपने बन्दों के लिए उत्पन्न किया है और आजीविका की पवित्र, अच्छी चीज़ों को किसने हराम कर दिया?" कह दो : "ये सांसारिक जीवन में भी ईमानवालों के लिए हैं; क्रियामत के दिन तो ये केवल उन्हीं के लिए होंगी। इसी प्रकार हम आयतों को उन लोगों के लिए सविस्तार बयान करते हैं, जो जानना चाहें।"

33. कह दो : "मेरे रब ने केवल अश्लील कर्मों को हराम किया है—जो उनमें से प्रकट हों उन्हें भी और जो छिपे हों उन्हें भी—और हक़ मारना,

الْأَنْفُسُ

الْأَنْفُسُ

مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ ۚ وَأَقِيمُوا  
وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ  
لَهُ الدِّينَ ۚ كَذَّابًا كُمْ تَعُودُونَ ۝ فَرِيقًا هَدَى  
وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۚ إِنَّهُمْ اتَّخَذُوا  
الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ  
أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ۝ يَبْتَغِي أَدْمُغُنُّوا زِينَتَكُمْ عِندَ  
كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ  
لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي  
آخَرَهُ لِعِبَادِهِ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ ۚ قُلْ هِيَ  
لِلَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ  
الْقِيَامَةِ ۚ كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ لِقَاءَ لِقَوْمٍ يُعْلَمُونَ ۝  
قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّي الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا  
وَمَا بَطَّنَ ۚ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا

مَنْ



नाहक़ ज़्यादती और इस बात को कि तुम अल्लाह का साझीदार ठहराओ, जिसके लिए उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा और इस बात को भी कि तुम अल्लाह पर थोपकर ऐसी बात कहो जिसका तुम्हें ज्ञान न हो।”

34. प्रत्येक समुदाय के लिए एक नियत अवधि है। फिर जब उनका नियत समय आ जाता है, तो एक घड़ी भर न पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।

35. ऐ आदम की संतान ! यदि तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आएँ; तुम्हें मेरी आयतें सुनाएँ, तो जिसने डर रखा और सुधार कर लिया तो ऐसे लोगों के लिए न कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

36. रहे वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनके मुक्काबले में अकड़ दिखाई; वही आगवाले हैं, जिसमें वे सदैव रहेंगे।

37. अब उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है, जिसने अल्लाह पर मिथ्यारोपण किया या उसकी आयतों को झुठलाया? ऐसे लोगों को उनके लिए लिखा हुआ हिस्सा पहुँचता रहेगा, यहाँ तक कि जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनके प्राण ग्रस्त करने के लिए उनके पास आएँगे तो कहेंगे : “कहाँ हैं, वे जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते थे?” कहेंगे : “वे तो हमसे गुम हो गए।” और वे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देंगे कि वास्तव में वे इनकार करनेवाले थे।

38. वह कहेगा : “जिन्न और इन्सान के जोकेग़रोह तुमसे पहले गुज़रे हैं,

الْأَنفُسُ

وَالْأَنفُسُ

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطٰنًا وَّ اَنْ تَقُولُوْا عَلٰى  
اَللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَّلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ  
اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝  
يٰۤاٰدَمُ اِمَّا يٰۤاَتَيْنٰكَم رُّسُلًا مِّنْكُمْ يَعْضُوْنَ  
عَلَيْكُمْ اَيْۤمِيْٓنَ ۚ فَمِنْ اَثْقٰ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ  
وَلَا هُمْ يَغْرَبُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَبُوْا بِاٰتِنَا  
وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا  
خٰلِدُوْنَ ۝ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلٰى اللّٰهِ  
كَذِبًا وَّكَذَّبَ بِاٰتِنَا ۚ اُولٰٓئِكَ يَنٰۤاَلُهُمْ نَصِيْبُهُمْ  
مِّنَ الْكِتٰبِ حَقًّا اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ  
قَالُوْا اٰيِنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ قَالُوْا  
صَلُّوْا عَلٰى وَّشٰهِدُوْا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَاٰنُوْا  
كٰفِرِيْنَ ۝ قَالَ اَدْخُلُوْا فِىْ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ

سَلٰ



उन्हीं के साथ सम्मिलित होकर तुम भी आग में प्रवेश करो।" जब भी कोई जमाअत प्रवेश करेगी, तो वह अपनी बहन<sup>1</sup> पर लानत करेगी, यहाँ तक कि जब सब उसमें रल-मिल जाएँगे तो उनमें से बाद में आनेवाले अपने से पहलेवाले के विषय में कहेंगे : "हमारे रब ! हमें इन्हीं लोगों ने गुमराह किया था; तो तू इन्हें आग की दोहरी यातना दे।" वह कहेगा : "हरेक के लिए दोहरी ही है। किन्तु तुम नहीं जानते।"

39. और उनमें से पहले आनेवाले अपने से बाद में आनेवालों से कहेंगे : "फिर हमारे मुक्काबले में तुम्हें कोई श्रेष्ठता प्राप्त नहीं, तो जैसी कुछ कमाई तुम करते रहे हो, उसके बदले में तुम यातना का मज़ा चखो !"

40. जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनके मुक्काबले में अकड़ दिखाई, उनके लिए आकाश के द्वार नहीं खोले जाएँगे और न वे जन्नत में प्रवेश करेंगे जब तक कि ऊँट सुई के नाके में से न गुज़र जाए। हम अपराधियों को ऐसा ही बदला देते हैं।

41. उनके लिए बिछौना जहन्नम का होगा और ओढ़ना भी उसी का। अत्याचारियों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

42. इसके विपरीत जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए— हम किसी पर उसकी सामर्थ्य से बढ़कर बोझ नहीं डालते— वही लोग

الْأَنفُسُ

الْأَنفُسُ

قَبْلَكُمْ مِنَ الْيَمِينِ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلًّا دَخَلَتْ  
 أُمَّةٌ لَعْنَتُ أَخِيهَا حَتَّى إِذَا دُرُّوا فِيهَا جَبِيئًا  
 قَالَتْ أَخْرِضْهُمْ لِأُولِهِمْ رَبَّنَا قَوْلًا أَصْلَحُوا  
 فَأَيُّهُمْ عَذَابًا ضَعُفًا مِنَ النَّارِ قَالَ لِكُلِّ  
 ضَعْفٌ وَلَكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَقَالَتْ أُولَاهُمْ  
 لِأَخْرِضْهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ  
 فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ كُفِرُونَ ۝ إِنَّ  
 الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّمُ  
 لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى  
 يَلْبِغَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۝ وَكَذَلِكَ نَجْزِي  
 الْمُجْرِمِينَ ۝ لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ وَمِهَادٌ وَمِنْ قَوَائِمِهِمْ  
 غَوَاشٍ ۝ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا  
 وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا تُكَذِّبُ نَفْسًا إِلَّا وَنُفْعًا

مَثَلٌ



जन्नतवाले हैं। वे उसमें सदैव रहेंगे।

43. उनके सीनों में एक-दूसरे के प्रति जो रंजिश होगी, उसे हम दूर कर देंगे; उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वे कहेंगे : “प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने इसकी ओर हमारा मार्गदर्शन किया। और यदि अल्लाह हमारा मार्गदर्शन न करता तो हम कदापि मार्ग नहीं पा सकते थे। हमारे रब के रसूल निस्संदेह सत्य लेकर आए थे।” और उन्हें आवाज़ दी जाएगी : “यह जन्नत है, जिसके तुम वारिस बनाए गए। उन कर्मों के बदले में जो तुम करते रहे थे।”

44. जन्नतवाले आगवालों को पुकारेंगे : “हमसे हमारे रब ने जो वादा किया था, उसे हमने सच पाया। तो क्या तुमसे तुम्हारे रब ने जो वादा कर रखा था, तुमने भी उसे सच पाया?” वे कहेंगे : “हाँ।” इतने में एक पुकारनेवाला उनके बीच पुकारेगा : “अल्लाह की फिटकार है अत्याचारियों पर।”

45. जो अल्लाह के मार्ग से रोकते और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं और जो आखिरत का इनकार करते हैं,

46. और इन दोनों के मध्य एक ओट होगी। और ऊँचाइयों पर कुछ लोग होंगे जो प्रत्येक को उसके लक्षणों से पहचानते होंगे, और जन्नतवालों से

الْمُؤْمِنِينَ

الْمُؤْمِنِينَ

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ وَ  
نَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ تَجَرَّيْءٍ مِنْ  
تَحْوِيلِهِمْ ۚ الْأَنْهَارُ تَجْرُ مِنْ تَحْتِهَا نَدًى مُّحْدَبًا  
يَهْدِي إِلَىٰ كُنُوزٍ مُّكَتُوبٍ ۖ لَوْلَا أَنَّ مَدَنَّا اللَّهُ  
لَقَدْ جَاءَتْ رَسُولٌ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ وَتُودُّونَ أَنْ  
تَلَٰكُمُ الْجَنَّةُ أَوْ رِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ  
وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنْ قَدْ  
وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا ۖ فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا  
وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۖ فَاذْنَبُوا مُؤْذِنًا  
بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۖ الَّذِينَ  
يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۖ  
وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَافِرُونَ ۖ وَبَيْنَهُمَا رِجَابٌ  
وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَتِهِمْ ۚ

مَنْ



पुकारकर कहेंगे : “तुमपर सलाम है।” वे अभी जन्नत में प्रविष्ट तो नहीं हुए होंगे, यद्यपि वे आस लगाए होंगे।

47. और जब उनकी निगाहें आगवालों की ओर फिरेगी, तो कहेंगे : “हमारे रब, हमें अत्याचारी लोगों में सम्मिलित न करना।”

48. और ये ऊँचाइयोंवाले कुछ ऐसे लोगों से, जिन्हें ये उनके लक्षणों से पहचानते हैं, कहेंगे : “तुम्हारे जत्थे तो तुम्हारे कुछ काम न आए और न तुम्हारा अकड़ते रहना ही।

49. क्या ये वही हैं ना, जिनके विषय में तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह उनपर अपनी दया-दृष्टि न करेगा।” “जन्नत में प्रवेश करो, तुम्हारे लिए न कोई भय है और न तुम्हें कोई शोक होगा।”

50. आगवाले जन्नतवालों को पुकारेंगे कि “थोड़ा पानी हमपर बहा दो, या उन चीज़ों में से कुछ दे दो जो अल्लाह ने तुम्हें दी हैं।” वे कहेंगे : “अल्लाह ने तो ये दोनों चीज़ें इनकार करनेवालों के लिए वर्जित कर दी हैं।”——

51. उनके लिए जिन्होंने अपना धर्म खेल-तमाशा ठहराया और जिन्हें सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल दिया, तो आज हम भी उन्हें भुला देंगे, जिस प्रकार वे अपने इस दिन की मुलाक़ात को भूले रहे और हमारी आयतों का

قُلُوبُهُمْ

قُلُوبُهُمْ

وَنَادُوا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلِّمُوا عَلَيْكُمْ فَلَمَّا  
يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ۖ وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ  
تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبِّنَا لَا تَجْعَلْنَا مِمَّنْ  
الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۖ وَكَادَ أَنْ أَصْغَبَ الْأَعْرَافَ  
رِجَالًا لَا يَعْرِفُونَ هُمْ بَسِيمُهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنْكُمْ  
جَنَّتُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ۖ أَهَؤُلَاءِ  
الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ أَدْخُلُوا  
الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَخْشَوْنَ ۖ  
وَنَادَىٰ أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا  
عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۖ قَالُوا إِنَّ  
اللَّهَ حَرَمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ ۖ الَّذِينَ اتَّخَذُوا  
دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا  
قَالِیَوْمَ نُنْصِبُكُمْ كَمَا تَسْؤُلُونَ لِقَاءَ یَوْمِهِمْ هَٰذَا وَمَا

مَنْعَهُ



इनकार करते रहे ।

52. और निश्चय ही हम उनके पास एक ऐसी किताब ले आए हैं, जिसे हमने ज्ञान के आधार पर विस्तृत किया है, जो ईमान लानेवालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है ।

53. क्या वे लोग केवल इसी की प्रतीक्षा में हैं कि उसकी वास्तविकता और परिणाम प्रकट हो जाए? जिस दिन उसकी वास्तविकता सामने आ जाएगी, तो वे लोग जो इससे पहले उसे भूले हुए थे, बोल उठेंगे : “वास्तव में, हमारे रब के रसूल सत्य लेकर

आए थे । तो क्या हमारे कुछ सिफ़ारिशी हैं, जो हमारी सिफ़ारिश कर दें या हमें वापस भेज दिया जाए कि जो कुछ हम करते थे उससे भिन्न कर्म करें ?” उन्होंने अपने आपको घाटे में डाल दिया और जो कुछ वे झूठ घढ़ते थे, वे सब उनसे गुम होकर रह गए ।

54. निस्संदेह तुम्हारा रब वही अल्लाह है, जिसने आकाशों और धरती को छह दिनों में पैदा किया—फिर राजसिंहासन पर विराजमान हुआ । वह रात को दिन पर ढाँकता है जो तेज़ी से उसका पीछा करने में सक्रिय है ।—और सूर्य, चन्द्रमा और तारे भी बनाए, इस प्रकार कि वे उसके आदेश से काम में लगे हुए हैं । सावधान रहो, उसी की सृष्टि है और उसी का आदेश है । अल्लाह सारे संसार का रब, बड़ी बरकतवाला है ।

55. अपने रब को गिड़गिड़ाकर और चुपके-चुपके पुकारो । निश्चय ही वह हद से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता ।

الْأَنفُسُ

الْأَنفُسُ

كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ۖ وَلَقَدْ جِئْنَاهُمْ بِكِتَابٍ  
فَضَّلْنَاهُ عَلَىٰ كُلِّ مِلَّةٍ هُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝  
هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلَهُ  
يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ  
رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۖ قَهَلْنَا مِنْ شُفْعَاءِ فَيَشْفَعُوا  
لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۖ قَدْ  
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝  
إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ  
فِي يَوْمٍ اِسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۖ يُغْشِي  
الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا ۖ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ  
وَالنُّجُومُ مُسَوَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۚ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۚ  
تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ اَدْعُوا رَبَّكُمْ  
نَضَرَعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝

مَنْ



56. और धरती में उसके सुधार के पश्चात बिगाड़ न पैदा करो। भय और आशा के साथ उसे पुकारो। निश्चय ही, अल्लाह की दयालुता सत्कर्मों लोगों के निकट है।

57. और वही है जो अपनी दयालुता से पहले शुभ सूचना देने को हवाएँ भेजता है, यहाँ तक कि जब वे बोझिल बादल को उठा लेती हैं तो हम उसे किसी निर्जीव भूमि की ओर चला देते हैं, फिर उससे पानी बरसाते हैं; फिर उससे हर तरह के फल निकालते हैं। इसी प्रकार हम मुर्दों को मृत अवस्था से निकालेंगे—ताकि तुम्हें ध्यान हो।

58. और अच्छी भूमि के पेड़-पौधे उसके रब के आदेश से निकलते हैं और जो भूमि खराब हो गई तो उससे निकम्मी पैदावार के अतिरिक्त कुछ नहीं निकलता। इसी प्रकार हम निशानियों को उन लोगों के लिए तरह-तरह से बयान करते हैं, जो कृतज्ञता दिखलानेवाले हैं।

59. हमने नूह को उसकी क़ौम के लोगों की ओर भेजा, तो उसने कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।”

60. उसकी क़ौम के सरदारों ने कहा : “हम तो तुम्हें खुली गुमराही में पड़ा देख रहे हैं।”

الْأَنْفُسِ

وَالْأَنْفُسِ

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا  
وَطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ۝  
وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ  
رَحْمَتِهِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا أَقْلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَهُ  
لِئَلَّكُمْ مَيْتٌ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ  
مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ  
تَذَكَّرُونَ ۝ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرِجُ نَبَاتًا  
وَالَّذِي جَحِبَ لَا يَخْرِجُ إِلَّا نَكْدًا ۚ  
كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْأَيِّتَ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ۝  
لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يٰقَوْمِ  
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ إِنِّي  
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قَالَ  
الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

مَثَل



61. उसने कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! किसी गुमराही का मुझसे संबंध नहीं, बल्कि मैं सारे संसार के रब का एक रसूल हूँ।

62. अपने रब के संदेश पहुँचाता हूँ और तुम्हारा हित चाहता हूँ, और मैं अल्लाह की ओर से वह कुछ जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते।”

63. क्या (तुमने मुझे झूठा समझा) और तुम्हें इस पर आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक आदमी के द्वारा तुम्हारे रब की नसीहत आई? ताकि वह तुम्हें सचेत कर दे और ताकि तुम डर रखने लगे और शायद कि तुमपर दया की जाए।

64. किन्तु उन्होंने झुठला दिया। अन्ततः हमने उसे और उन लोगों को जो उसके साथ एक नौका में थे, बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को ग़लत समझा, उन्हें हमने डुबो दिया। निश्चय ही वे अन्धे लोग थे।

65. और आद की ओर उनके भाई हूद को भेजा। उसने कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की बन्दगी करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तो क्या (इसे सोचकर) तुम डरते नहीं?”

66. उसकी क़ौम के इनकार करनेवाले सरदारों ने कहा, “वास्तव में, हम तो देखते हैं कि तुम बुद्धिहीनता में ग्रस्त हो और हम तो तुम्हें झूठा समझते हैं।”

67. उसने कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मैं बुद्धिहीनता में कदापि ग्रस्त

الْأَفْرَاحِ

زَكَرِيَّا

قَالَ يَقَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ  
مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَبْلُغْكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝  
أَوْعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَى  
رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ  
تُزَكَّوْنَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَاتَّبَعَيْنَاهُ الَّذِينَ  
مَعَهُ فِي الْفُلِكِ وَاعْرَفْنَاهُ الَّذِينَ كَذَّبُوا  
بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عِيبِينَ ۝ وَإِلَى  
عَادِ أَخَاهُمْ هُودًا ۝ قَالَ يَقَوْمِ اغْبُدُوا لِلَّهِ  
مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۝ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ قَالَ  
الْمَلَائِكَةُ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ ۝ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي  
سَفَاهَةٍ ۝ فَلَمَّا لَبَّيْنَاهُ لَنُظَنِّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ قَالَ  
يَقَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّن

مِّن



नहीं हूँ। परन्तु मैं सारे संसार के रब का रसूल हूँ।

68. तुम्हें अपने रब के संदेश पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा विश्वस्त हितैषी हूँ।

69. क्या (तुमने मुझे झूठा समझा) और तुम्हें इसपर आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक आदमी के द्वारा तुम्हारे रब की नसीहत आई, ताकि वह तुम्हें सचेत करे? और याद करो, जब उसने नूह की क्रौम के पश्चात तुम्हें उसका उत्तराधिकारी बनाया और शारीरिक दृष्टि से भी तुम्हें अधिक विशालता प्रदान की। अतः

अल्लाह की सामर्थ्य के चमत्कारों को याद करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।”

70. वे बोले : “क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि अकेले अल्लाह की हम बन्दगी करें और जिनको हमारे बाप-दादा पूजते रहे हैं, उन्हें छोड़ दें? अच्छा, तो जिसकी तुम हमें धमकी देते हो, उसे हमपर ले आओ, यदि तुम सच्चे हो।”

71. उसने कहा : “तुम पर तो तुम्हारे रब की ओर से नापाकी थोप दी गई है और प्रकोप टूट पड़ा है। क्या तुम मुझसे उन नामों के लिए झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख छोड़े हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा? अच्छा, तो तुम भी प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।”

72. फिर हमने अपनी दयालुता से उसको और जो लोग उसके साथ थे उन्हें

الْحَمْدُ لِلَّهِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ

مَرَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أُولَئِكَ يَرْسُلُ رَبِّي وَأَنَا  
لَكُمْ نَاصِرٌ أَمِينٌ ۝ أَوْعِظْكُمْ أَنْ جَاءَكُمْ  
ذِكْرُ مَنْ رَبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِنْكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۝  
وَأَذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ قَوْمِ  
نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَضْطَةً ۝ فَادْكُرُوا  
آلَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ قَالُوا أَجِئْتَنَا  
لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَخُذْهُ وَنَذَرِ مَا كَانَ يَعْبُدُ  
آبَاؤُنَا، فَإِنَّا بِمَا نَعْبُدُهُ إِن كُنْتَ مِنَ  
الصَّادِقِينَ ۝ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ  
رِجْسٌ وَغَضَبٌ ۝ أَتَعْبَادُونََنِي فِيْ أَسْمَاءِ  
سَمَيْتُهُمْ أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ مَا نَزَلَ اللَّهُ  
بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ۝ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ  
الْمُنْتَظِرِينَ ۝ فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ

مَنْ



बचा लिया और उन लोगों की जड़ काट दी, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था और ईमानवाले न थे।

73. और समूद की ओर उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण आ चुका है। यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है। अतः इसे छोड़ दो कि अल्लाह की धरती में खाए। और तकलीफ़ पहुँचाने के लिए इसे हाथ न लगाना, अन्यथा तुम्हें एक दुखद यातना आ लेगी—

74. और याद करो जब अल्लाह ने आद के पश्चात् तुम्हें उसका उत्तराधिकारी बनाया और धरती में तुम्हें ठिकाना प्रदान किया। तुम उसके समतल मैदानों में महल बनाते हो और पहाड़ों को काट-छाँट कर भवनों का रूप देते हो। अतः अल्लाह की सामर्थ्य के चमत्कारों को याद करो और धरती में बिगाड़ पैदा करते न फिरो।”

75. उसकी क़ौम के सरदार, जो बड़े बने हुए थे, उन कमज़ोर लोगों से, जो उनमें ईमान लाए थे, कहने लगे : “क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने रब का भेजा हुआ (पैग़म्बर) है?” उन्होंने कहा : “निस्संदेह जिस चीज़ के साथ

وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۚ وَإِلَىٰ شِمُودَ أَخَاهُمْ  
صَالِحًا قَالَ يَوْمَ ائْتِدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ  
إِلَٰهِ غَيْرِهِ ۚ قَدْ جَاءَ كُفْرًا مِنْ رَبِّكُمْ ۚ هَٰذَا  
نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ ۖ فَذُرْنَهَا تَآْكُلُ فِي أَرْضِ  
اللَّهِ وَلَا تَتَّبِعُوا بِسُوءِ فِعَالِكُمْ عَذَابَ الْيَمِّ ۚ  
وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَ  
بَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ سُهُولِهَا  
قُصُورًا وَتَكْبِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ۚ فَاذْكُرُوا الْآءَ  
اللَّهِ وَلَا تَعْمُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۚ قَالَ  
الْمَلَائِكَةُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِلَّذِينَ  
اسْتَضَعُوا مِنَ الْأَمْنِ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ  
صَالِحًا مُرْسَلٌ مِنْ رَبِّهِ ۚ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ

مَنْزِلًا



वह भेजा गया है, हम उसपर ईमान रखते हैं।”

76. उन घमण्ड करनेवालों ने कहा : “जिस चीज़ पर तुम ईमान लाए हो, हम तो उसको नहीं मानते।”

77. फिर उन्होंने उस ऊँटनी की कूचें काट दीं और अपने रब के आदेश की अवहेलना की और बोले : “ऐ सालेह ! हमें तू जिस चीज़ की धमकी देता है, उसे हमपर ले आ, यदि तू वास्तव में रसूलों में से है।”

78. अन्ततः एक हिला मारने वाली आपदा ने उन्हें आ लिया और वे अपने घरों में आँधे पड़े रह गए।

79. फिर वह यह कहता हुआ उनके यहाँ से फिरा : “ऐ मेरी क्रौम के लोगो ! मैं तो तुम्हें अपने रब का संदेश पहुँचा चुका और मैंने तुम्हारा हित चाहा। परन्तु तुम्हें अपने हितैषी पसन्द ही नहीं आते।”

80. और हमने लूत को भेजा। जब उसने अपनी क्रौम से कहा : “क्या तुम वह प्रत्यक्ष अश्लील कर्म करते हो, जिसे दुनिया में तुमसे पहले किस ने नहीं किया ?”

81. तुम स्त्रियों को छोड़कर मर्दों से कामेच्छा पूरी करते हो, बल्कि तुम नितान्त मर्यादाहीन लोग हो।

82. उसकी क्रौम के लोगों का उत्तर इसके अतिरिक्त और कुछ न था कि वे बोले : “निकालो, उन लोगों को अपनी बस्ती से। ये ऐसे लोग हैं जो बड़े पाक-साफ़ हैं !”

83. फिर हमने उसे और उसके लोगों को छुटकारा दिया, सिवाय उसकी स्त्री के कि वह पीछे रह जानेवालों में से थी।

الزمر

والزمر

بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي  
أَمْنَكُمْ بِهِ كَاذِبُونَ ۝ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا  
عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يُضْلِمُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا  
إِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَأَخَذْتُمُ الرِّجْفَ  
فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جُثَثِينَ ۝ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ  
وَقَالَ يُقَوْمُ لَقَدْ أَهْلَكْتُكُمْ بِسَالَةِ رَبِّي وَنَصَحْتُ  
لَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُعْتَبُونَ التَّوْحِيدِينَ ۝ وَلَوْ أَن  
إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ  
بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ۝ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ  
الزَّيْجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ الْبِغَاءِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ  
مُسْرِفُونَ ۝ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ  
قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ ۝ إِنَّهُمْ أَنْفُسٌ  
يَتَطَهَّرُونَ ۝ فَأَجْحَدْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۝ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۝

سورة



84. और हमने उनपर एक बरसात बरसाई, तो देखो अपराधियों का कैसा परिणाम हुआ।

85. और मदयनवालों की ओर हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा: "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण आ चुका है। तो तुम नाप और तौल पूरी-पूरी करो, और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दो, और धरती में उसके सुधार के पश्चात बिगाड़ पैदा न करो। यही तुम्हारे लिए अच्छा है, यदि तुम ईमानवाले हो।

86. और प्रत्येक मार्ग पर इसलिए न बैठो कि धमकियाँ दो और उस व्यक्ति को अल्लाह के मार्ग से रोकने लगो जो उसपर ईमान रखता हो और न उस मार्ग को टेढ़ा करने में लग जाओ। याद करो, वह समय जब तुम थोड़े थे, फिर उसने तुम्हें अधिक कर दिया। और देखो, बिगाड़ पैदा करनेवालों का कैसा परिणाम हुआ।

87. और यदि तुममें एक गिरोह ऐसा है, जो उसपर ईमान लाया है, जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह ईमान नहीं लाया, तो धैर्य से काम लो, यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच फ़ैसला कर दे। और वह सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।"

الْأَنْفَالِ

الْأَنْفَالِ

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ  
الْمُجْرِمِينَ ۚ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ  
يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِن إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ قَدْ  
جَاءَ تَكْمِلَتُهُ مِن رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا الْكَيْلَ وَ  
الْيَمِينَ ۚ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا  
فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن  
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ  
تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَن أَمَنَ  
بِهِ وَتَبْغُوا نَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنْتُمْ  
قَلِيلًا فَكَثَرَكُمْ ۚ وَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ  
الْمُفْسِدِينَ ۚ وَإِن كَانَ طَائِفَةٌ مِّنْكُمْ أَمَنُوا بِآلِ زَيْ  
رٍ أُرْسِلَتْ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ  
يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۚ

مَثَلٍ



88. उसकी क़ौम के सरदारों ने, जो घमण्ड में पड़े थे, कहा : “ऐ शुऐब ! हम तुझे और तेरे साथ उन लोगों को, जो ईमान लाए हैं, अपनी बस्ती से निकालकर रहेंगे। या फिर तुम हमारे पंथ में लौट आओ।” उसने कहा : “क्या (तुम यही चाहोगे) यद्यपि यह हमें अप्रिय हो जब भी ?

89. हम अल्लाह पर झूठ घड़नेवाले ठहरेंगे, यदि तुम्हारे पंथ में लौट आएँ, इसके बाद कि अल्लाह ने हमें उससे छुटकारा दे दिया है। यह हमसे तो होने का नहीं कि हम उसमें पलट कर जाएँ,

बल्कि हमारे रब अल्लाह की इच्छा ही क्रियान्वित है। ज्ञान की दृष्टि से हमारा रब हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है। हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। हमारे रब, हमारे और हमारी क़ौम के बीच निश्चित अटल फ़ैसला कर दे। और तू सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।”

90. उसकी क़ौम के सरदार, जिन्होंने इनकार किया था, बोले : “यदि तुम शुऐब के अनुयायी बने तो तुम घाटे में पड़ जाओगे।”

91. अन्ततः एक दहला देनेवाली आपदा ने उन्हें आ लिया। फिर वे अपने घर में औंधे पड़े रह गए,

92. शुऐब को झुठलानेवाले, मानो कभी वहाँ बसे ही न थे। शुऐब को झुठलानेवाले ही घाटे में रहे।

93. तब वह उनके यहाँ से यह कहता हुआ फिरा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो !

الْمُؤْمِنِينَ

قَالَ الْمَلَأُ

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَشُعَيْبٍ

يَشْعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ قُرَيْبِنَا أَوْ

لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كِرْهَيْنَ ۖ

قَدْ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ

بَعْدَ إِذْ جَعَلْنَا اللَّهُ مِنْهَا وَعًا يُكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ

فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ

شَيْءٍ عِلْمًا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبُّنَا افْتَرَيْنَا وَ

بَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَرِحِينَ ۖ وَقَالَ

الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَئِنْ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ

إِذَا الْخَيْرُونَ ۖ فَآخَذْتَهُمُ الرِّجْفَةُ فَاصْبَحُوا

فِي دَارِهِمْ جُثَمِينَ ۖ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا

كَانَ لَمْ يَخْتَوِ فِيهَا ۖ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا

فِي الْخُسُوفِ ۖ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَاقَوْمِ لَقَدْ

مَنْذُورٌ

الْمَلَأُ

الْمَلَأُ



मैंने अपने रब के संदेश तुम्हें पहुँचा दिए और मैंने तुम्हारा हित चाहा। अब मैं इनकार करनेवाले लोगों पर कैसे अफ़सोस करूँ !”

94. हमने जिस बस्ती में भी कभी कोई नबी भेजा, तो वहाँ के लोगों को तंगी और मुसीबत में डाला, ताकि वे (हमारे सामने) गिड़गिड़ाएँ।

95. फिर हमने बदहाली को खुशहाली से बदल दिया, यहाँ तक कि वे ख़ूब फले-फूले और कहने लगे : “ये दुख और सुख तो हमारे बाप-दादा को भी पहुँचे हैं।” अन्ततः जब वे बेखबर थे, हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया।

96. यदि बस्तियों के लोग ईमान लाते और डर रखते तो अवश्य ही हम उनपर आकाश और धरती की बरकतें खोल देते, परन्तु उन्होंने तो झुठलाया। तो जो कुछ कमाई वे करते थे, उसके बदले में हमने उन्हें पकड़ लिया।

97. फिर क्या बस्तियों के लोगों को इस ओर से निश्चिन्त रहने का अवसर मिल सका कि रात में उनपर हमारी यातना आ जाए, जबकि वे सोए हुए हों ?

98. और क्या बस्तियों के लोगों को इस ओर से निश्चिन्त रहने का अवसर मिल सका कि दिन चढ़े उनपर हमारी यातना आ जाए, जबकि वे खेल रहे हों ?

99. आखिर क्या वे अल्लाह की चाल से निश्चिन्त हो गए थे ? तो (समझ लो उन्हें टोटे में पड़ना ही था, क्योंकि) अल्लाह की चाल से तो वही लोग निश्चिन्त होते हैं, जो टोटे में पड़नेवाले होते हैं।

100. क्या जो धरती के, उसके पूर्ववासियों के पश्चात उत्तराधिकारी हुए हैं,

الْأَنْفُسُ

فَالْأَنْفُسُ

أَبْلَغْتَكُمْ رَسُولَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ، فَكَيْفَ أَتَيْتُمْ عَلَى قَوْمٍ كَافِرِينَ ۖ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَضُرَّعُونَ ۖ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ التَّيْبَةِ الْحَنَةَ حَتَّى عَفَوْا وَقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنْ كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۖ أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ۖ أَوْ آمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضَعًى وَهُمْ يُلْعَبُونَ ۖ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ۚ أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ

سَبَل



उनपर यह तथ्य प्रकट न हुआ कि यदि हम चाहें तो उनके गुनाहों पर उन्हें आ पकड़ें? हम तो उनके दिलों पर मुहर लगा रहे हैं, क्योंकि वे कुछ भी नहीं सुनते।

101. ये हैं वे बस्तियाँ जिनके कुछ वृत्तांत हम तुमको सुना रहे हैं। उनके पास उनके रसूल खुली-खुली निशानियाँ लेकर आए परन्तु वे ऐसे न हुए कि ईमान लाते। इसका कारण यह था कि वे पहले से झुठलाते रहे थे। इसी प्रकार अल्लाह इनकार करनेवालों के दिलों पर मुहर लगा देता है।

102. हमने उनके अधिकतर लोगों में प्रतिज्ञा का निर्वाह न पाया, बल्कि उनके बहुतांश को हमने उल्लंघनकारी ही पाया।

103. फिर उनके पश्चात हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, परन्तु उन्होंने उनका इनकार और स्वयं पर अत्याचार किया। तो देखो, इन बिगाड़ पैदा करनेवालों का कैसा परिणाम हुआ!

104. मूसा ने कहा: "ऐ फ़िरऔन! मैं सारे संसार के रब का रसूल हूँ।

105. मैं इसका अधिकारी हूँ कि अल्लाह से सम्बद्ध करके सत्य के अतिरिक्त कोई बात न कहूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण लेकर आ गया हूँ। अतः तुम इसराईल की संतान को मेरे साथ जाने दो।"

106. बोला: "यदि तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो उसे पेश करो, यदि तुम सच्चे हो।"

قَالَ الْمَلَأُ الْأَوَّلُونَ  
أَهْلِيهَا أَنْ لَوْ شَاءَ أَصَبْنَهُمْ بِدُنُوبِهِمْ، وَنُظِفَ  
عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۖ تِلْكَ الْقُرَى  
نَقَضَ عَلَيْهِ مِنْ آثَابِهَا، وَلَقَدْ جَاءَ ثَمُودُ  
رُسُلَهُم بِالْبَيِّنَاتِ، فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ  
قَبْلُ ۚ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ۖ وَمَا  
وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ ۚ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ  
لَفَاسِقِينَ ۖ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا  
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا، فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ  
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۖ وَقَالَ مُوسَى يُفْرَعُونَ إِلَيَّ  
رَسُولٌ مِنَ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ حَقِيقٌ عَلَى أَنْ لَا أَقُولَ  
عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ ۚ قَدْ جُنْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ  
فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ قَالَ إِنْ كُنْتَ جُنْتَ  
بِآيَةٍ فَاتِ بِهَا ۚ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۖ قَالَ لَوْ



107. तब उसने अपनी लाठी डाल दी। क्या देखते हैं कि वह प्रत्यक्ष अजगर है।

108. और उसने अपना हाथ निकाला, तो क्या देखते हैं कि वह सब देखनेवालों के सामने चमक रहा है।

109. फिरऔन की क़ौम के सरदार कहने लगे : “अरे, यह तो बड़ा कुशल जादूगर है !

110. तुम्हें तुम्हारी धरती से निकाल देना चाहता है। तो अब क्या कहते हो ?”

111. उन्होंने कहा : “इसे और इसके भाई को प्रतीक्षा में रखो और नगरों में हरकारे भेज दो,

112. कि वे हर कुशल जादूगर को तुम्हारे पास ले आएँ।”

113. अतएव जादूगर फिरऔन के पास आ गए। कहने लगे : “यदि हम विजयी हुए तो अवश्य ही हमें बड़ा बदला मिलेगा ?”

114. उसने कहा : “हाँ, और बेशक तुम (मेरे) क़रीबियों में से हो जाओगे।”

115. उन्होंने कहा : “ऐ मूसा ! या तुम डालो या फिर हम डालते हैं ?”

116. उसने कहा : “तुम ही डालो।” फिर उन्होंने डाला तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें भयभीत कर दिया। उन्होंने एक बहुत बड़े जादू का प्रदर्शन किया।

117. हमने मूसा की ओर प्रकाशना की कि “अपनी लाठी डाल दे।” फिर क्या देखते हैं कि वह उनके रचे हुए स्वांग को निगलती जा रही है।

118. इस प्रकार सत्य प्रकट हो गया और जो कुछ वे कर रहे थे, मिथ्या होकर रहा।

119. अतः वे पराभूत हो गए और अपमानित होकर रहे।

عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۖ وَنَزَّ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنُّظُرِينَ ۚ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا لَسِجْدٌ عَلَيْكُمْ ۖ تُرِيدُونَ أَن تَخْرُجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ۚ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ ۚ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۚ يَا تَوَكُّلْ بِكُلِّ شَجَرٍ عَلَيْهِمْ ۚ وَجَاءَ الشَّجَرُ فِرْعَوْنَ قَالُوا لَا تَنَاجُوا لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ۚ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۚ قَالُوا يَبُوءُونَ بِآثَانَا أَن نَكُونُ نَحْنُ الْمُلُوقِينَ ۚ قَالَ الْفُؤَادُ لَنُفَا سَعِدُوا أَغْنَيْنَ النَّاسِ وَاسْتَزْهَبُوهُمْ ۖ وَجَاءَ وَبِخَيْرٍ عَظِيمٍ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَن أَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۚ فَوَقَّعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ فَغُلِبُوا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا



120. और जादूगर सहसा सजदे में गिर पड़े ।

121. बोले : "हम सारे संसार के रब पर ईमान ले आए;

122. मूसा और हारून के रब पर ।"

123. फिरऔन बोला : "इससे पहले कि मैं तुम्हें अनुमति दूँ, तुम उसपर ईमान ले आए ! यह तो एक चाल है, जो तुम लोग नगर में चले हो, ताकि उसके निवासियों को उससे निकाल दो । अच्छा, तो अब तुम्हें जल्द ही मालूम हुआ जाता है !

124. मैं तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव विपरीत दिशाओं से काट दूँगा; फिर तुम सबको सूली पर चढ़ाकर रहूँगा ।"

125. उन्होंने कहा : "हम तो अपने रब ही की ओर लौटेंगे ।

126. और तू केवल इस क्रोध से हमें कष्ट पहुँचाने के लिए पीछे पड़ गया है कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान ले आए । हमारे रब ! हमपर धैर्य उड़ेल दे और हमें इस दशा में उठा कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हों ।"

127. फिरऔन की क़ौम के सरदार कहने लगे : "क्या तुम मूसा और उसकी क़ौम को ऐसे ही छोड़ दोगे कि वे ज़मीन में बिगाड़ पैदा करें और वे तुम्हें और तुम्हारे उपास्यों को छोड़ बैठें ?" उसने कहा : "हम उनके बेटों को बुरी तरह क़त्ल करेंगे और उनकी स्त्रियों को जीवित रखेंगे । निश्चय ही हमें उनपर पूर्ण अधिकार प्राप्त है ।"

128. मूसा ने अपनी क़ौम से कहा : "अल्लाह से संबद्ध होकर सहायता प्राप्त करो और धैर्य से काम लो । धरती अल्लाह की है । वह अपने बन्दों में

صُغِيرِينَ ۖ وَالْقِيَ السَّحَرَةَ سَجِدِينَ ۖ قَالُوا  
أَمْنَا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ۖ  
قَالَ فِرْعَوْنُ أَمْنُكُمْ بِهِ قَبْلَ أَنْ أَدْنَ لَكُمْ ۚ إِنَّ  
هَذَا لَمَكْرٌ مَكْرُؤُهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا  
مِنْهَا أَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۖ لَأَقْطَعَنَّ أَيْدِيَكُمْ  
وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ۖ  
قَالُوا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۖ وَمَا نَنُومُ مِنْهَا  
إِلَّا أَنْ أَمَّنَا بِأَيِّ رَبِّنَا لَبَّأْنَا ۚ جَاءَتْهُمْ رَجَبًا أَفْرِغَ  
عَلَيْنَا صَبْرًا ۚ وَتَوَقَّأَ مُسْلِمِينَ ۖ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ  
قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَنْذَرُ مُوسَىٰ وَقَوْمَهُ لِيَفْسِدُوا فِي  
الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَالْهَتَّكَ ۚ قَالَ سَنُقْبِلُ أَبْنَاءَهُمْ  
وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ ۚ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ ۖ قَالَ  
مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا ۚ إِنَّ

مَنْ



से जिसे चाहता है, उसका वारिस बना देता है। और अंतिम परिणाम तो डर रखनेवालों ही के लिए है।”

129. उन्होंने कहा : “तुम्हारे आने से पहले भी हम सताए गए और तुम्हारे आने के बाद भी।” उसने कहा : “निकट है कि तुम्हारा सब तुम्हारे शत्रुओं को विनष्ट कर दे और तुम्हें धरती में खलीफ़ा बनाए, फिर यह देखे कि तुम कैसे कर्म करते हो।”

130. और हमने फ़िरऔनियों को कई वर्ष तक अकाल और पैदावार की कमी में ग्रस्त रखा कि वे चेतें।

131. फिर जब उन्हें अच्छी हालत पेश आती है तो कहते हैं : “यह तो है ही हमारे लिए।” और जब उन्हें बुरी हालत पेश आए तो वे उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत (अशकुन) ठहराएँ। सुन लो, उनकी नहूसत तो अल्लाह ही के पास है, परन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं।

132. वे बोले : “तू हमपर जादू करने के लिए चाहे कोई भी निशानी हमारे पास ले आए, हम तुझपर ईमान लानेवाले नहीं।”

133. अन्ततः हमने उनपर तूफ़ान और टिड्डियाँ और छोटे कीड़े और मेंढक और रक्त, कितनी ही निशानियाँ अलग-अलग भेजीं, किन्तु वे घमण्ड ही करते

فَالْأَرْضَ لِلّٰهِ يُدِيرُهَا مَنْ يَّشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَ  
الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝ قَالُوا أَوْزَيْنَا مِنْ قَبْلُ  
أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسَىٰ رَبُّكُمْ  
أَنْ يُّهْلِكَ عَذُّكُمْ وَيَخْلُقَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ  
كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝ وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ  
بِالْيَمِينِ وَنَقَصْنَا الشُّرْتَ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ۝  
فَإِذَا جَاءَتْهُمْ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَئِنَّا هِذِهِ ۚ وَإِنْ  
تُصِبُّهُمْ سَيِّئَةٌ يَطْفِرُوا يَمُوسَ وَمَنْ مَعَهُ ۚ  
أَلَا إِنَّا طِفِّرُهُمْ عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا  
يَعْلَمُونَ ۝ وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِيَنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِّتَضْحَكُنَا  
بِهَا ۚ فَمَا نَعْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۝ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ  
الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَ  
الدَّمَ آيَاتٍ مُّفَصَّلَاتٍ ۚ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا

منزل



रहे। वे थे ही अपराधी लोग।

134. जब कभी उनपर यातना आ पड़ती, कहते : “ऐ मूसा, हमारे लिए अपने रब से प्रार्थना करो, उस प्रतिज्ञा के आधार पर जो उसने तुमसे कर रखी है। तुमने यदि हमपर से यह यातना हटा दी, तो हम अवश्य ही तुम पर ईमान ले आएँगे और इसराईल की संतान को तुम्हारे साथ जाने देंगे।”

135. किन्तु जब हम उनपर से यातना को एक नियत समय के लिए जिस तक वे पहुँचनेवाले ही थे, हटा लेते तो क्या देखते कि वे वचन-भंग करने लग गए।

136. फिर हमने उनसे बदला लिया और उन्हें गहरे पानी में डुबो दिया, क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को ग़लत समझा और उनसे ग़ाफ़िल हो गए।

137. और जो लोग कमज़ोर पाए जाते थे, उन्हें हमने उस भू-भाग के पूरब के हिस्सों और पश्चिम के हिस्सों का उत्तराधिकारी बना दिया, जिसे हमने बरकत दी थी। और तुम्हारे रब का अच्छा वादा इसराईल की संतान के हक़ में पूरा हुआ, क्योंकि उन्होंने धैर्य से काम लिया और फिरौन और उसकी क्रौम का वह सब कुछ हमने विनष्ट कर दिया, जिसे वे बनाते और ऊँचा उठाते थे।

138. और इसराईल की संतान को हमने सागर से पार करा दिया, फिर वे ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अपनी कुछ मूर्तियों से लगे बैठे थे। कहने लगे : “ऐ मूसा ! हमारे लिए भी कोई ऐसा उपास्य ठहरा दे, जैसे इनके उपास्य हैं।”

مُجْرِمِينَ ۖ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يٰمُوسَىٰ  
اٰدُۢنَا رَبَّنَا بِمَا عٰهَدْنَاكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ  
عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ ۖ وَلَنُرْسِدَنَّ مَعَكَ بَنِي  
۞ اِسْرٰٓءِیْلَ ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرِّجْزَ اِذْۢى اَجَلَ هُمْ  
بِلٰغُوۡهُ اِذَا هُمْ يَنْكُشُوۡنَ ۚ فَاَنۡفَقْنَا مِنْهُمۡ ۚ فَاَغْرَقْنٰهُمْ  
فِی الیَمِّ بِاَنۡهَمۡ كَذَّبُوۡا بِآیٰتِنَا وَكَانُوۡا عَنْهَا  
غٰفِلِیۡنَ ۚ ۝ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِیۡنَ كَانُوۡا یَسْتَضَعُّوۡنَ  
مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِیۡ بَرَكْنَا فِیۡهَا ۚ  
وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰی عَلٰی بَنِیۡ اِسْرٰٓءِیْلَ ۚ  
۝ بِمَا صَبَرُوۡۤا ۚ وَدَمَرْنَا مَا كَانْ یُضَعُّهُ فِرْعَوۡنُ وَ  
قَوۡمُهٗ ۚ وَمَا كَانُوۡا یَعْرِشُوۡنَ ۚ ۝ وَجَوَزْنَا بِبَنِیۡ  
۞ اِسْرٰٓءِیْلَ الْبَحْرَ فَاَتُوۡۤا عَلٰی قَوْمٍ یَّعْلَفُوۡنَ ۚ عَلٰی  
۝ اَصۡنَٰمِهِمۡ ۚ قَالُوۡۤا یٰمُوسٰی اَجۡعَلْ لَنَا اِلٰهًا كَمَا



उसने कहा : “निश्चय ही तुम बड़े ही अज्ञानी लोग हो ।

139. निश्चय ही वह सब कुछ जिसमें ये लोग लगे हुए हैं, बरबाद होकर रहेगा । और जो कुछ ये कर रहे हैं सर्वथा व्यर्थ है ।”

140. उसने कहा : “क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई और उपास्य दूँ, हालाँकि उसी ने सारे संसारवालों पर तुम्हें श्रेष्ठता प्रदान की ?”

141. और याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिया जो तुम्हें बुरी यातना में ग्रस्त रखते थे । तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रहने देते थे । और वह (छुटकारा दिलाना) तुम्हारे रब की ओर से बड़ा अनुग्रह है ।

142. और हमने मूसा से तीस रातों का वादा ठहराया, फिर हमने दस और बढ़ाकर उसे पूरा किया । इस प्रकार उसके रब की ठहराई हुई अवधि चालीस रातों में पूरी हुई और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा : “मेरे पीछे तुम मेरी क़ौम में मेरा प्रतिनिधित्व करना और सुधारना-सँवारना और बिगाड़ पैदा करनेवालों के मार्ग पर न चलना ।”

143. जब मूसा हमारे निश्चित किए हुए समय पर पहुँचा और उसके रब ने उससे बातें कीं, तो वह कहने लगा : “मेरे रब ! मुझे देखने की शक्ति प्रदान कर कि मैं तुझे देखूँ ।” कहा : “तू मुझे कदापि न देख सकेगा । हाँ, पहाड़ की ओर देख । यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रह जाए तो फिर तू मुझे देख लेगा ।” अतएव जब उसका रब पहाड़ पर प्रकट हुआ तो उसे चकनाचूर कर

الْأَنْفَالُ

بِالْقَوْلِ

لَهُمُ الْإِلَهَ . قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ۝ إِنَّ هَؤُلَاءِ  
مُتَّبِعُونَ مَا هُمْ فِيهِ وَبِطُلُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝  
قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِيكُمْ إِلَهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ  
عَلَى الْعَالَمِينَ ۝ وَإِذْ أَنْجَيْنَاكَ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ  
يَسُومُونَكَ سَوَاءَ الْعَذَابِ ، يُقْتِلُونَ أَبْنَاءَ كُفٍّ  
وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَ كُفٍّ ، وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ  
مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝ وَوَعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ  
لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَاهَا بِعَشْرِ قِسْمٍ مِّيقَاتٍ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ  
لَيْلَةً ۝ وَقَالَ مُوسَى لِأَخِيهِ هَارُونَ اخْلُفْنِي فِي  
قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ۝  
وَلَمَّا جَاءَ مُوسَىٰ لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ ، قَالَ  
رَبِّ أَرِنِي أَنْظُرْ إِلَيْكَ ، قَالَ لَن تَرَانِي وَلَكِن  
أَنْظُرَ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ

مَرَيْنَا



दिया और मूसा मूर्छित होकर गिर पड़ा। फिर जब होश में आया तो कहा : “महिमा है तेरी ! मैं तेरे समक्ष तौबा करता हूँ और सबसे पहला ईमान लानेवाला मैं हूँ।”

144. उसने कहा : “ऐ मूसा ! मैंने दूसरे लोगों के मुकाबले में तुझे चुनकर अपने संदेशों और अपनी वाणी से तुझे उपकृत किया। अतः जो कुछ मैं तुझे दूँ उसे ले और कृतज्ञता दिखा।”

145. और हमने उसके लिए तख्तियों पर उपदेश के रूप में हर चीज़ और हर चीज़ का विस्तृत वर्णन लिख दिया। अतः उनको

मज़बूती से पकड़। उनमें उत्तम बातें हैं। अपनी क़ौम के लोगों को हुक्म दे कि वे उनको अपनाएँ। मैं शीघ्र ही तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखाऊँगा।

146. जो लोग धरती में नाहक़ बड़े बनते हैं, मैं अपनी निशानियों की ओर से उन्हें फेर दूँगा। यदि वे प्रत्येक निशानी देख लें तब भी वे उस पर ईमान नहीं लाएँगे। यदि वे सीधा मार्ग देख लें तो भी वे उसे अपना मार्ग नहीं बनाएँगे। लेकिन यदि वे पथभ्रष्टता का मार्ग देख लें तो उसे अपना मार्ग ठहरा लेंगे। यह इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों को झूठलाया और उनसे गाफ़िल रहे।

147. जिन लोगों ने हमारी आयतों को और आखिरत के मिलन को झूठा

ثَرْبِنِي ۖ كَلَّمْنَا بِحُجْلِ رَبِّهِ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ  
مُوسَىٰ صَعِقًا ۖ كَلَّمْنَا آفَاقًا ۖ قَالَ سُبْحَنَكَ ثَبَّتَ  
إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ يُؤْتِيَ عِلْمِي  
أَصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَتِي ۖ وَبِكَ لَمِنِي ۖ  
فَخُذْ مَا آتَيْتُكَ وَكُن مِّنَ الشَّاكِرِينَ ۝ وَكَلَّمْنَا لَهُ  
فِي الْأَلْوَامِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا  
لِّكُلِّ شَيْءٍ ۖ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا  
بِأَحْسَنِهَا ۖ سَأُرِيكُمْ دَارَ الْفَاسِقِينَ ۝ سَأَصْرِفُ  
عَنِ آلِئِي آلِئِي الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ  
وَأَن يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ لَا يُؤْمِنُوا بِهَا ۖ وَأَن يَرَوْا سَبِيلَ  
الرَّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۖ وَأَن يَرَوْا سَبِيلَ الْغِي  
يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا  
عَنْهَا غَافِلِينَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ

مَذَرَهُ



जाना, उनका तो सारा किया-धरा उनकी जान को लागू हुआ। जो कुछ वे करते रहे हैं क्या उसके सिवा वे किसी और चीज़ का बदला पाएँगे ?

148. और मूसा के पीछे उसकी क़ौम ने अपने ज़ेवरों से अपने लिए एक बछड़ा बना लिया, जिसमें से बैल की-सी आवाज़ निकलती थी। क्या उन्होंने देखा नहीं कि वह न तो उनसे बातें करता है और न उन्हें कोई राह दिखाता है ? उन्होंने उसे अपना उपास्य बना लिया, और वे बड़े अत्याचारी थे।

149. और जब (चेतावनी से) उन्हें पश्चात्ताप हुआ और उन्होंने देख लिया कि वास्तव में वे भटक गए हैं तो कहने लगे : “यदि हमारे रब ने हमपर दया न की और उसने हमें क्षमा न किया तो हम घाटे में पड़ जाएँगे !”

150. और जब मूसा क्रोध और दुख से भरा हुआ अपनी क़ौम की ओर लौटा तो उसने कहा : “तुम लोगों ने मेरे पीछे मेरी जगह बुरा किया। क्या तुम अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर बैठे ?” फिर उसने तख्त्रियाँ डाल दीं और अपने भाई का सिर पकड़कर उसे अपनी ओर खींचने लगा। वह बोला : “ऐ मेरी माँ के बेटे ! लोगों ने मुझे कमज़ोर समझ लिया और निकट था कि मुझे मार डालते। अतः शत्रुओं को मुझपर हुलसने का अवसर न दे और अत्याचारी लोगों में मुझे सम्मिलित न कर।”

151. उसने कहा : “मेरे रब ! मुझे और मेरे भाई को क्षमा कर दे और हमें

الْأَخْرَجُوا

لَيْلَانِ

الْأَخْرَجُوا حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا  
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَى مِنْ بَعْدِهِ  
مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَهُ خُورَاءُ الْفَرِيرُوا أَنَّهُ  
لَا يَكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا مَاتَّخَذُوهُ وَكَانُوا  
ظَالِمِينَ ۝ وَلَمَّا سَقَطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ  
قَدْ ضَلُّوا ۝ قَالُوا لَئِنْ لَمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا  
لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَى إِلَى  
قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۝ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي  
مِنْ بَعْدِي ۝ أَعِجَلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۝ وَآلَيْهِ الْأَوَاحِ  
وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۝ قَالَ ابْنُ أَمْرَانَ  
الْقَوْمُ اسْتَضَعِفُونِي وَكَادُوا يُقْتُلُونَنِي ۝ فَلَا  
تُثَبِّتْ لِي الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ  
الظَّالِمِينَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِإِخِي وَادْخُلْنَا

مِنَ



अपनी दयालुता में दाखिल कर ले। तू तो सबसे बढ़कर दयावान है।”

152. जिन लोगों ने बछड़े को अपना उपास्य बनाया, वे अपने रब की ओर से प्रकोप और सांसारिक जीवन में अपमान में ग्रस्त होकर रहेंगे; और झूठ घड़नेवालों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

153. रहे वे लोग जिन्होंने बुरे कर्म किए फिर उसके पश्चात तौबा कर ली और ईमान ले आए, तो इसके बाद तो तुम्हारा रब बड़ा ही क्षमाशील, दयावान है।

154. और जब मूसा का क्रोध शान्त हुआ तो उसने तख्तियों को उठा लिया। उनके लेख में उन लोगों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता थी जो अपने रब से डरते हैं।

155. मूसा ने अपनी क़ौम के सत्तर आदमियों को हमारे नियत किए हुए समय के लिए चुना। फिर जब उन लोगों को एक भूकम्प ने आ पकड़ा तो उसने कहा : “मेरे रब ! यदि तू चाहता तो पहले ही इनको और मुझको विनष्ट कर देता। जो कुछ हमारे नादानों ने किया है, क्या उसके कारण तू हमें विनष्ट करेगा ? यह तो बस तेरी ओर से एक परीक्षा है। इसके द्वारा तू जिसको चाहे पथभ्रष्ट कर दे और जिसे चाहे मार्ग दिखा दे। तू ही हमारा संरक्षक है। अतः तू हमें क्षमा कर दे और हमपर दया कर, और तू ही सबसे बढ़कर क्षमा करनेवाला है।

156. और हमारे लिए इस संसार में भलाई लिख दे और आखिरत में भी।

فِي رَحْمَتِكَ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيِّئًا لَهُمْ غَضَبٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۝ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ۝ وَالَّذِينَ عَلِمُوا النَّبَايَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِهَا وَأَمَنُوا ۝ إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۚ وَفِي نُحُوتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَزْهَبُونَ ۝ وَاخْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِمِيقَاتِنَا ۚ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُمْ مِنْ قَبْلِ وَإِيَّائِي ۚ أَتَهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الشُّفَهَاءُ مِنَّا ۚ إِنَّ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَنِ اشَاءَ وَتَهْدِي مَنْ تَشَاءُ ۚ أَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ۝ وَاكْتُبْ لَنَا



हम तेरी ही ओर उन्मुख हुए।”  
उसने कहा : “अपनी यातना में मैं  
तो उसी को ग्रस्त करता हूँ, जिसे  
चाहता हूँ, किन्तु मेरी दयालुता से  
हर चीज़ आच्छादित है। उसे तो मैं  
उन लोगों के हक़ में लिखूँगा जो  
डर रखते और ज़कात देते हैं और  
जो हमारी आयतों पर ईमान लाते  
हैं।

157. (तो आज इस दयालुता के  
अधिकारी वे लोग हैं) जो उस  
रसूल, उम्मी नबी का अनुसरण  
करते हैं, जिसे वे अपने यहाँ तौरात  
और इंजील में लिखा पाते हैं।  
और जो उन्हें भलाई का हुक्म देता  
और बुराई से रोकता है उनके लिए अच्छी-स्वच्छ चीज़ों को हलाल और  
बुरी-अस्वच्छ चीज़ों को हराम ठहराता है और उनपर से उनके वह बोझ  
उतारता है, जो अब तक उनपर लदे हुए थे और उन बन्धनों को खोलता है,  
जिनमें वे जकड़े हुए थे। अतः जो लोग उसपर ईमान लाए, उसका सम्मान  
किया और उसकी सहायता की और उस प्रकाश के अनुगत हुए, जो उसके  
साथ अवतरित हुआ है, वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।”

158. कहो : “ऐ लोगो ! मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ, जो  
आकाशों और धरती के राज्य का स्वामी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वही

الْأَنْفَالِ

الْأَنْفَالِ

فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُنَا  
إِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۚ وَ  
رَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَكَتُبْنَاهَا لِلَّذِينَ  
يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا  
يُؤْمِنُونَ ۚ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ  
الْأُمِّيَّ الَّذِي يَمْلِكُ لَهُ مَكْتُوبُنَا عِنْدَهُمْ فِي  
التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ يَأْمُرُهُمْ بِالْعُرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ  
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ  
الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ  
عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ  
وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنْزِلَ مَعَهُ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ  
الْمُفْلِحُونَ ۚ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ  
إِلَيْكُمْ بِمِيعَةٍ ۚ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ

سُورَةُ



जीवन प्रदान करता और वही मृत्यु देता है। अतः अल्लाह और उसके रसूल, उस उम्मी नबी, पर ईमान लाओ जो स्वयं अल्लाह पर और उसके शब्दों (वाणी) पर ईमान रखता है और उसका अनुसरण करो, ताकि तुम मार्ग पा लो।”

159. मूसा की क़ौम में एक गिरोह ऐसे लोगों का भी हुआ जो हक़ के अनुसार मार्ग दिखाते और उसी के अनुसार न्याय करते।

160. और हमने उन्हें, बारह खानदानों में विभक्त करके अलग-अलग समुदाय बना दिया। जब उसकी क़ौम के लोगों ने पानी

माँगा तो हमने मूसा की ओर प्रकाशना की : “अपनी लाठी अमुक चट्टान पर मारो।” अतएव उससे बारह स्रोत फूट निकले और हर गिरोह ने अपना-अपना घाट मालूम कर लिया। और हमने उनपर बादल की छाया की और उनपर ‘मन्न’ और ‘सलवा’ उतारा : “हमने तुम्हें जो अच्छी-स्वच्छ चीज़ें प्रदान की हैं, उन्हें खाओ।” उन्होंने हमपर कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वास्तव में वे स्वयं अपने ऊपर ही ज़ुल्म करते रहे।

161. याद करो जब उनसे कहा गया : “इस बस्ती में रहो-बसो और इसमें जहाँ से चाहो खाओ और कहो—‘हित्ततुन’<sup>1</sup>। और द्वार में सजदा करते हुए प्रवेश करो। हम तुम्हारी ख़ताओं को क्षमा कर देंगे और हम सुक़र्मी लोगों को और अधिक भी देंगे।”

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ فَآمِنُوا بِاللّٰهِ وَ  
رُسُلِهِ النَّبِيُّ الْأَبْنَى الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمَتِهِ  
وَأَتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَمِنْ قَوْمِ مُوسَى  
أَمَّهُ يُهَدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ۝ وَتَقَطَّعُهُمْ  
اثْنَتَى عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى  
إِذَا اسْتَقْبَلَهُ قَوْمُهُ أَنْ اصْطِرِبْ بَعْصَكَ الْحَبِرَ  
فَأَنْجَبْتَ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ  
كُلُّ أَتَّاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَ  
أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَى ۖ كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ  
مَا رَزَقْنَاكُمْ ۖ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ  
يَظْلِمُونَ ۝ وَإِذْ قِيلَ لَهُمْ اسْكُنُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ  
وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةً وَادْخُلُوا الْبَابَ  
سُجَّدًا تَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ ۖ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ۝

منه

1. इससे अभिप्राय सार्वजनिक क्षमा और रियायत की उद्घोषणा है या क्षमा की प्रार्थना।



162. किन्तु उनमें से जो अत्याचारी थे उन्होंने, जो कुछ उनसे कहा गया था, उसको उससे भिन्न बात से बदल दिया। अतः जो अत्याचार वे कर रहे थे, उसके कारण हमने आकाश से उनपर यातना भेजी।

163. उनसे उस बस्ती के विषय में पूछो जो सागर-तट पर थी। जब वे सब्त के मामले में सीमा का उल्लंघन करते थे, जब उनके सब्त के दिन उनकी मछलियाँ खुले तौर पर पानी के ऊपर आ जाती थी और जो दिन उनके सब्त का न होता तो वे उनके पास न आती थीं। इस प्रकार उनके अवज्ञाकारी होने के कारण हम उनको परीक्षा में डाल रहे थे।

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ۖ وَنَسَلْنَهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةً الْبَحِيرِ مَادَّ يَصُدُّونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِينَتَانَهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ ۖ لَا تَأْتِيهِمْ ۚ كَذَلِكَ ۚ نَبْلُوهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۖ وَإِذْ قَالَتْ أُمَةٌ مِنْهُمْ لِمَ نَعْبُدُونَ قَوْمًا ۚ اللَّهُ مَهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا قَالُوا مَعذَرَةٌ إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۖ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْشَوَاءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابِهِمْ بَوْمٍ ۖ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۖ فَلَمَّا عَاوَا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً

164. और जब उनके एक गिरोह ने कहा : “तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत किए जा रहे हो, जिन्हें अल्लाह विनष्ट करनेवाला है या जिन्हें वह कठोर यातना देनेवाला है?” उन्होंने कहा : “तुम्हारे रब के समक्ष अपने को निरपराध सिद्ध करने के लिए, और कदाचित वे (अवज्ञा से) बचें।”

165. फिर जब वे उसे भूल गए जो नसीहत उन्हें की गई थी तो हमने उन लोगों को बचा लिया, जो बुराई से रोकते थे और अत्याचारियों को उनकी अवज्ञा के कारण कठोर यातना में पकड़ लिया।

166. फिर जब वे सरकशी के साथ वही कुछ करते रहे, जिससे उन्हें रोका



गया था तो हमने उनसे कहा :  
“बन्दर हो जाओ, अपमानित और  
तिरस्कृत !”

167. और याद करो जब तुम्हारे  
रब ने खबर कर दी थी कि वह  
क्रियामत के दिन तक उनके विरुद्ध  
ऐसे लोगों को उठाता रहेगा, जो  
उन्हें बुरी यातना देंगे। निश्चय ही  
तुम्हारा रब जल्द सज़ा देता है और  
वह बड़ा क्षमाशील, दयावान भी  
है।

168. और हमने उन्हें टुकड़े-  
टुकड़े करके धरती में अनेक  
गिरोहों में बिखेर दिया। कुछ उनमें  
से नेक हैं और कुछ उनमें इससे  
भिन्न हैं, और हमने उन्हें अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डालकर उनकी  
परीक्षा ली, कदाचित वे पलट आएँ।

169. फिर उनके पीछे ऐसे अयोग्य लोगों ने उनकी जगह ली, जो किताब के  
उत्तराधिकारी होकर इसी तुच्छ संसार का सामान समेटते हैं और कहते हैं : “हमें  
अवश्य क्षमा कर दिया जाएगा।” और यदि इस जैसा और सामान भी उनके पास  
आ जाए तो वे उसे भी ले लेंगे। क्या उनसे किताब का यह वचन नहीं लिया गया  
था कि अल्लाह पर थोपकर हक़ के सिवा कोई और बात न कहें। और जो उसमें है  
उसे वे स्वयं पढ़ भी चुके हैं। और आखिरत का घर तो उन लोगों के लिए उत्तम है,  
जो डर रखते हैं। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?

170. और जो लोग किताब को मज़बूती से थामते हैं और जिन्होंने नमाज़  
क्रायम कर रखी है, तो काम को ठीक रखनेवालों के प्रतिदान को हम कभी  
अकारथ नहीं करते।

171. और याद करो जब हमने पर्वत को हिलाया, जो उनके ऊपर था।

خَسِيسِينَ ۝ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لِيُبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ  
إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَنْ يُسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۝  
إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۝ وَإِنَّهُ لَكَفُورٌ رَحِيمٌ ۝  
وَقَطَّعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا ۝ مِنْهُمْ الضَّالُّونَ وَ  
مِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ ۝ وَبَلَّوْنَاهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالشَّيَاطِ  
لَعَنَهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ فَخَلَفَ مِنْ بَعدِهِمْ خَلْفٌ  
وَرِثُوا الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ عَرَصَ هَذَا الْأَدْنَىٰ وَ  
يَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۝ وَإِنْ يَأْتِهِمْ عَرَصٌ مِثْلُهُ  
يَأْخُذُوهُ ۝ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِيثَاقُ الْكِتَابِ  
أَنْ لَا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ ۝  
وَالَّذِينَ الْأَخْرَجُوا خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۝ أَفَلَا  
تَعْقِلُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَمَسُكُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا  
الصَّلَاةَ ۝ إِنَّا لَا نَضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَإِذْ



मानो वह कोई छत्र हो और वे समझे कि बस वह उनपर गिरा ही चाहता है— “थामो मज़बूती से, जो कुछ हमने दिया है। और जो कुछ उसमें है उसे याद रखो, ताकि तुम बच सको।”

172. और याद करो जब तुम्हारे रब ने आदम की संतान से (अर्थात् उनकी पीढ़ियों से) उनकी सन्तति निकाली और उन्हें स्वयं उनके ऊपर गवाह बनाया कि “क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?” बोले : “क्यों नहीं, हम गवाह हैं।” ऐसा इसलिए किया कि तुम क्रियामत के दिन कहीं यह न कहने लगे कि “हमें तो इसकी खबर ही न थी।”

173. या कहो कि “(अल्लाह के साथ) साझी तो पहले हमारे बाप-दादा ने किया। हम तो उनके पश्चात् उनकी सन्तति में हुए हैं। तो क्या तू हमें उसपर विनष्ट करेगा जो कुछ मिथ्याचारियों ने किया है?”

174. इस प्रकार स्थिति के अनुकूल आयतें प्रस्तुत करते हैं। और शायद कि वे पलट आएं।

175. और उन्हें उस व्यक्ति का हाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें प्रदान की, किन्तु वह उनसे निकल भागा। फिर शैतान ने उसे अपने पीछे लगा लिया। अन्ततः वह पथभ्रष्ट और विनष्ट होकर रहा।

176. यदि हम चाहते तो इन आयतों के द्वारा उसे उच्चता प्रदान करते, किन्तु वह तो धरती के साथ लग गया और अपनी इच्छा के पीछे चला। अतः उसकी मिसाल कुत्ते जैसी है कि यदि तुम उसपर आक्षेप करो तब भी वह

لَا يَنْفَعُهُمْ ۚ تَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُوا أَنَّهُ  
وَأَقَرُّ بِهِمْ ۚ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا  
مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن  
بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى  
أَنفُسِهِمْ ۚ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۚ قَالُوا بَلَىٰ ۚ شَهِدْنَا ۚ  
أَن تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَافِلِينَ ۝  
أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا  
ذُرِّيَّةً مِن بَعْدِهِمْ ۚ فَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ  
الْمُظْلِمُونَ ۝ وَكَذَٰلِكَ نَقُصُّكَ الْآيَاتِ وَلَعَلَّهُمْ  
يَرْجِعُونَ ۝ وَآتِلْ عَلَيْهِم نَبَأَ الذِّينِ اتَّخَذُوا  
أَيَّتِنَا فَأَسْلَمُوا مِنْهَا فَاتَّبَعُوا الشَّيْطَانَ فَكَانَ  
مِنَ الْغَافِلِينَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ  
أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ ۚ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ

مَثَلِ



ज़बान लटकाए रहे या यदि तुम उसे छोड़ दो तब भी वह ज़बान लटकाए ही रहे। यही मिसाल उन लोगों की है, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, तो तुम वृत्तान्त सुनाते रहो, कदाचित वे सोच-विचार कर सकें।

177. बुरे हैं मिसाल की दृष्टि से वे लोग, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और वे स्वयं अपने ही ऊपर अत्याचार करते रहे।

178. जिसे अल्लाह मार्ग दिखाए वही सीधा मार्ग पानेवाला है और जिसे वह मार्ग से वंचित रखे, तो ऐसे ही लोग घाटे में पड़नेवाले हैं।

179. निश्चय ही हमने बहुत-से जिनों और मनुष्यों को जहन्नम ही के लिए फैला रखा है। उनके पास दिल हैं जिनसे वे समझते नहीं, उनके पास आँखें हैं जिनसे वे देखते नहीं; उनके पास कान हैं जिनसे वे सुनते नहीं। वे पशुओं की तरह हैं, बल्कि वे उनसे भी अधिक पथभ्रष्ट हैं। वही लोग हैं जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।

180. अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं। तो तुम उन्हीं के द्वारा उसे पुकारो और उन लोगों को छोड़ो जो उसके नामों के संबंध में कुटिलता ग्रहण करते हैं। जो कुछ वे करते हैं, उसका बदला वे पाकर रहेंगे।

181. हमारे पैदा किए प्राणियों में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हक़ के अनुसार

الْأَفْرَاقِ

الْأَفْرَاقِ

الْكَلْبِ ۖ إِنَّ تَحْمِلَ عَلَيْهِ يَلْهَثُ أَوْ تَشْرَكَهُ  
يَلْهَثُ ذَلِكَ مِثْلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا  
فَأَقْصَصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ سَاءَ  
مِثْلًا الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا وَ أَنْفُسَهُمْ  
كَانُوا يَظْلِمُونَ ۝ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِى  
وَمَنْ يَضِلَّ فَلَا إِلَهَ لَهُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ وَلَقَدْ  
ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ  
لَهُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا ۖ وَلَهُمْ أَعْيُنٌ  
لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا ۖ وَلَهُمْ أُذُنٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا  
أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُولَٰئِكَ هُمُ  
الْغَافِلُونَ ۝ وَ لِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ  
بِهَا ۖ وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ ۖ  
سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَمِمَّنْ خَلَقْنَا

سَزَلَهُ



मार्ग दिखाते और उसी के अनुसार न्याय करते हैं।

182. रहे वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, हम उन्हें क्रमशः तबाही की ओर ले जाएँगे, ऐसे तरीके से जिसे वे जानते नहीं।

183. मैं तो उन्हें ढील दिए जा रहा हूँ। निश्चय ही मेरी चाल अत्यन्त सुदृढ़ है।

184. क्या उन लोगों ने विचार नहीं किया? उनके साथी को कोई उन्माद नहीं। वह तो बस एक साफ़-साफ़ सचेत करनेवाला है।

185. या क्या उन्होंने आकाशों और धरती के राज्य पर और जो चीज़ भी अल्लाह ने पैदा की है उसपर दृष्टि नहीं डाली, और इस बात पर कि कदाचित् उनकी अवधि निकट आ लगी हो? फिर आखिर इसके बाद अब कौन-सी बात हो सकती है, जिसपर वे ईमान लाएँगे?

186. जिसे अल्लाह मार्ग से वंचित रखे उसके लिए कोई मार्गदर्शक नहीं। वह तो उन्हें उनकी सरकशी ही में भटकता हुआ छोड़ रहा है।

187. तुमसे उस घड़ी (क्रियामत) के विषय में पूछते हैं कि वह कब आएगी? कह दो: "उसका ज्ञान मेरे रब ही के पास है। अतः वही उसे उसके समय पर प्रकट करेगा। वह आकाशों और धरती में बोझिल हो गई है— बस अचानक ही वह तुमपर आ जाएगी।" वे तुमसे पूछते हैं मानो तुम

أَمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَأُمِلَّ لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ۝ أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جُنَّةٍ ۖ إِنَّ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَوَلَمْ يَنْظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَإِنَّ عَذَابِي أَن يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۚ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝ مَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا هَادِيَ لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّاتٍ مَُّرْسُومًا ۚ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي ۚ لَا يُجِئُهَا بُرْهَانٌ إِلَّا هُوَ ۚ تُقْلَتُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ۚ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۚ



उसके विषय में भली-भाँति जानते हो। कह दो : “उसका ज्ञान तो बस अल्लाह ही के पास है— किन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते।”

188. कहो : “मैं अपने लिए न तो लाभ का अधिकार रखता हूँ और न हानि का, बल्कि अल्लाह ही की इच्छा क्रियान्वित है। यदि मुझे परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञान होता तो बहुत-सी भलाई समेट लेता और मुझे कभी कोई हानि न पहुँचती। मैं तो बस सचेत करनेवाला और शुभ-समाचार देनेवाला हूँ, उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।”

189. वही है जिसने तुम्हें अकेली जान पैदा किया और उसी की जाति से उसका जोड़ा बनाया, ताकि उसकी ओर प्रवृत्त होकर शान्ति और चैन प्राप्त करे। फिर जब उसने उसको ढाँक लिया तो उसने एक हल्का-सा बोझ उठा लिया; फिर वह उसे लिए हुए चलती-फिरती रही, फिर जब वह बोझिल हो गई तो दोनों ने अल्लाह—अपने रब को पुकारा : “यदि तूने हमें भला-चंगा बच्चा दिया, तो निश्चय ही हम तेरे कृतज्ञ होंगे।”

190. किन्तु उसने जब उन्हें भला-चंगा (बच्चा) प्रदान किया तो जो उन्हें प्रदान किया उसमें वे दोनों उसका (अल्लाह का) साझी ठहराने लगे। किन्तु अल्लाह तो उच्च है उससे, जो साझी वे ठहराते हैं।

191. क्या वे उसको साझी ठहराते हैं जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं करता, बल्कि ऐसे उनके ठहराए हुए साझीदार तो स्वयं पैदा किए जाते हैं।

192. और वे न तो उनकी सहायता करने की सामर्थ्य रखते हैं और न स्वयं अपनी ही सहायता कर सकते हैं?

193. यदि तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुलाओ तो वे तुम्हारे पीछे न

الْأَرْوَاحُ

قَالَ الْمَلَأُ

قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبِ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسْنِيَ السُّوءُ ۚ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيًّا ۖ فَمَرَّتْ بِهِ ۖ فَلَمَّا أَثْقَلَتْ دَعَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ أَشِيتُنَا صَالِحًا لَّنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ فَلَمَّا أَتَاهَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا أُتِيهُمَا ۖ فَتَبَعَهُ اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ أَيْشُرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلِقُونَ ۝ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ۝ وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى

مَذَلًا



आएँगे। तुम्हारे लिए बराबर है—  
उन्हें पुकारो या तुम चुप रहो।

194. तुम अल्लाह को छोड़कर  
जिन्हें पुकारते हो वे तो तुम्हारे ही  
जैसे बन्दे हैं, अतः पुकार लो  
उनको, यदि तुम सच्चे हो, तो उन्हें  
चाहिए कि वे तुम्हें उत्तर दें।

195. क्या उनके पाँव हैं जिनसे  
वे चलते हों या उनके हाथ हैं  
जिनसे वे पकड़ते हों या उनके पास  
आँखें हैं जिनसे वे देखते हों या  
उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हों?  
कहो : “तुम अपने ठहराए हुए  
सहभागियों को बुला लो, फिर मेरे  
विरुद्ध चालें चलो, इस प्रकार कि  
मुझे मुहलत न दो।

196. निश्चय ही मेरा संरक्षक मित्र अल्लाह है, जिसने यह किताब उतारी  
और वह अच्छे लोगों का संरक्षण करता है।

197. रहे वे जिन्हें तुम उसको छोड़कर पुकारते हो, वे न तो तुम्हारी,  
सहायता करने की सामर्थ्य रखते हैं और न स्वयं अपनी ही सहायता कर  
सकते हैं।

198. और यदि तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुलाओ तो वे न सुनेंगे। वे  
तुम्हें ऐसे दीख पड़ते हैं जैसे वे तुम्हारी ओर ताक रहे हैं, हालाँकि वे कुछ भी  
नहीं देखते।

199. क्षमा की नीति अपनाओ और भलाई का हुक्म देते रहो और  
अज्ञानियों से किनारा खींचो।

200. और यदि शैतान तुम्हें उकसाए तो अल्लाह की शरण माँगो।

الْمُذْمَنِينَ

الْمُذْمَنِينَ

الْهُدَى لَا يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ  
أَنْتُمْ صَائِرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ  
دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَشْبَاهُكُمْ فَأَدْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا  
لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ أَلَهُمْ أَزْجُلُ يَنْشُرُونَ  
بِهَاءَ أَمْرَهُمْ أَنْ يَنْبِطُوا بِهَاءَ ۝ أَمْرُهُمْ أَغِيثُ  
يُبْصِرُونَ بِهَاءَ ۝ أَمْرُهُمْ أَذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَاءَ ۝ قُلْ  
ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كَيْدُونِ فَلَا تُنْظَرُونَ ۝  
إِنَّ وَلِيََّ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى  
الصَّالِحِينَ ۝ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا  
يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ۝  
فَلَنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَسْعَوْنَ وَتَرَاهُمْ  
يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝ خُذِ الْعَفْوَ  
وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ۝ وَإِنَّمَا

مَثَلُ



निश्चय ही, वह सब कुछ सुनता, जानता है।

201. जो डर रखते हैं, उन्हें जब शैतान की ओर से कोई खयाल छू जाता है, तो वे चौंक उठते हैं। फिर वे साफ़ देखने लगते हैं।

202. और उन (शैतानों) के भाई उन्हें गुमराही में खींचे लिए जाते हैं, फिर वे कोई कमी नहीं करते।

203. और जब तुम उनके सामने कोई निशानी नहीं लाते तो वे कहते हैं : "तुम स्वयं कोई निशानी क्यों न छाँट लाए?" कह दो : "मैं तो केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे रब की ओर से प्रकाशना की जाती है। यह तुम्हारे रब की ओर से अन्तर्दृष्टियों का प्रकाश-पुंज है, और ईमान लानेवालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है।"

204. जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो और चुप रहो, ताकि तुमपर दया की जाए।

205. अपने रब को अपने मन में प्रातः और संध्या के समयों में विनम्रतापूर्वक, डरते हुए और हल्की आवाज़ के साथ याद किया करो। और उन लोगों में से न हो जाओ जो शफ़लत में पड़े हुए हैं।

206. निस्संदेह जो तुम्हारे रब के पास हैं, वे उसकी बन्दगी के मुक़ाबले में अहंकार की नीति नहीं अपनाते; वे तो उसकी तसबीह (महिमागान) करते हैं और उसी को सजदा करते हैं।

يَنْزَعُ عَنْكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ  
سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ  
طُغْيَانٌ مِنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ ۝  
وَأَخْوَانَهُمْ يَمُدُّوهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ۝  
وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا  
قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِنْ رَبِّي ۚ هَذَا  
بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ  
يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَ  
أَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَادْكُرْ رَبَّكَ فِي  
نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ  
بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ ۝  
إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ  
عِبَادَتِهِ وَيَسْتَبِشِرُونَ ۚ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ۝

(7:206)



## 8. अल-अनफ़ाल

(मदीना में उतरी — आयतें 75)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. वे तुमसे ग़नीमतों के विषय में पूछते हैं। कहो : “ग़नीमतें अल्लाह और रसूल की हैं। अतः अल्लाह का डर रखो और आपस के संबंधों को ठीक रखो। और, अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो, यदि तुम ईमानवाले हो।

2. ईमानवाले तो वही लोग हैं जिनके दिल उस समय काँप उठें जबकि अल्लाह को याद किया जाए। और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाएँ तो वे उनके ईमान को और अधिक बढ़ा दें और वे अपने रब पर भरोसा रखते हों।

3. ये वे लोग हैं जो नमाज़ क़ायम करते और जो कुछ हमने दिया है उसमें से खर्च करते हैं।

4. वही लोग वास्तव में ईमानवाले हैं। उनके लिए उनके रब के पास बड़े दर्जे हैं और क्षमा और सम्मानित उत्तम आजीविका भी।

5. (यह बिलकुल वैसी ही परिस्थिति है) जैसे तुम्हारे रब ने तुम्हें तुम्हारे घर से एक उद्देश्य के साथ निकाला, किन्तु ईमानवालों में से एक गिरोह को यह अप्रिय लगा था।

6. वे सत्य के विषय में उसके स्पष्ट हो जाने के पश्चात तुमसे झगड़ रहे





थे। मानो वे आँखों देखी मृत्यु की ओर हाँके जा रहे हों।

7. और याद करो जब अल्लाह तुमसे वादा कर रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारे हाथ आएगा और तुम चाहते थे कि तुम्हें वह हाथ आए, जो निःशस्त्र था, हालाँकि अल्लाह चाहता था कि अपने वचनों से सत्य को सत्य कर दिखाए और इनकार करनेवालों की जड़ काट दे;

8. ताकि सत्य को सत्य कर दिखाए और असत्य को असत्य, चाहे अपराधियों को कितना ही अप्रिय लगे।

9. याद करो जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे, तो उसने तुम्हारी पुकार सुन ली। (उसने कहा :) "मैं एक हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करूँगा जो तुम्हारे साथी होंगे।"

10. अल्लाह ने यह केवल इसलिए किया कि यह एक शुभ-सूचना हो और ताकि इससे तुम्हारे हृदय संतुष्ट हो जाएँ। सहायता अल्लाह ही के यहाँ से होती है। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

11. याद करो जबकि वह अपनी ओर से चैन प्रदान कर तुम्हें ऊँघ से ढँक रहा था और वह आकाश से तुमपर पानी बरसा रहा था, ताकि उसके द्वारा तुम्हें अच्छी तरह पाक करे और शैतान की गन्दगी तुमसे दूर करे और तुम्हारे दिलों को मज़बूत करे और उसके द्वारा तुम्हारे क़दमों को जमा दे।

12. याद करो जब तुम्हारा रब फ़रिश्तों की ओर प्रकाशना (वहय) कर रहा

الْأَنْفَالِ

الْأَنْفَالِ

وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۖ وَإِذْ يَعِدُّكُمْ اللَّهُ إِحْدَى  
الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ  
الشُّكِّ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ  
يُخَيِّطَ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ ۖ  
لِيُخَيِّطَ الْحَقَّ وَيُجِلَّ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۖ  
إِذْ تَسْتَفِيشُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي  
مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرَدِّفِينَ ۖ وَمَا  
جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ  
وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ  
حَكِيمٌ ۖ إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسُ أَمْنَهُ مِّنْهُ وَ  
يُنْزِلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَ كُمْ بِهِ  
وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَى  
قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۖ إِذْ يُؤَيِّسُ

مِّنَ



था कि “मैं तुम्हारे साथ हूँ। अतः तुम ईमानवालों को जमाए रखो। मैं इनकार करनेवालों के दिलों में रोब डाले देता हूँ। तो तुम उनकी गरदनें मारो और उनके पोर-पोर पर चोट लगाओ !”

13. यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करे (उसे कठोर यातना मिलकर रहेगी) क्योंकि अल्लाह कड़ी यातना देनेवाला है।

14. यह तो तुम चखो ! और यह कि इनकार करनेवालों के लिए आग की यातना है।

15. ऐ ईमान लानेवालो ! जब एक सेना के रूप में तुम्हारा इनकार करनेवालों से मुकाबला हो तो पीठ न फेरो।

16. जिस किसी ने भी उस दिन उनसे अपनी पीठ फेरी—यह और बात है कि युद्ध-चाल के रूप में या दूसरी टुकड़ी से मिलने के लिए ऐसा करे— तो वह अल्लाह के प्रकोप का भागी हुआ और उसका ठिकाना जहन्नम है, और क्या ही बुरा जगह है वह पहुँचने की !

17. तुमने उन्हें क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ही ने उन्हें क़त्ल किया और जब तुमने (उनकी ओर मिट्टी और कंकड़) फेंका, तो तुमने नहीं फेंका बल्कि

الْأَنْفَالِ

الْأَنْفَالِ

رَبُّكَ إِلَى الْمَلَكَةِ إِنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ  
آمَنُوا سَالِحِينَ فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا  
الرَّغَبَ فَاصْبِرُوا فَوْقَ الْأَغْنَابِ وَاصْبِرُوا  
مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۖ ذَٰلِكُمْ بِمَا كُفَرُوا بِاللَّهِ  
وَرَسُولِهِ ۚ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ  
اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوا ۚ وَ أَنَّ  
لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ  
آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا  
تُوَلُّوهُمْ الْأَذْبَارُ ۚ وَمَنْ يُؤَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ  
دُورًا إِلَّا مَتَّعِفًا لِّقَاتِلٍ أَوْ مُتَعَفِّيًا إِلَىٰ فِتْنَةٍ  
فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ وَمَا وَدَّ جَهَنَّمُ  
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۖ فَلَمْ تُقَاتِلُوهُمْ وَلَكِنَّ  
اللَّهَ قَتَلَهُمْ ۚ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ

مَنْ



अल्लाह ने फेंका (कि अल्लाह अपनी गुण-गरिमा दिखाए) और ताकि अपनी ओर से ईमानवालों के गुण प्रकट करे। निस्संदेह अल्लाह सुनता, जानता है।

18. यह तो हुआ, और यह (जान लो) कि अल्लाह इनकार करनेवालों की चाल को कमज़ोर कर देनेवाला है।

19. यदि तुम फ़ैसला चाहते हो तो फ़ैसला तुम्हारे सामने आ चुका और यदि बाज़्र आ जाओ तो यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है। लेकिन यदि तुमने पलटकर फिर वही हरकत की तो हम भी पलटेंगे और

तुम्हारा जत्था, चाहे वह कितना ही अधिक हो, तुम्हारे कुछ काम न आ सकेगा। और यह कि अल्लाह मोमिनों के साथ होता है।

20. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो और उससे मुँह न फेरो जबकि तुम सुन रहे हो।

21. और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने कहा था कि "हमने सुना", हालाँकि वे सुनते नहीं।

22. अल्लाह की दृष्टि में तो निकृष्ट पशु वे बहरे-गूंगे लोग हैं, जो बुद्धि से काम नहीं लेते।

23. यदि अल्लाह जानता कि उनमें कुछ भी भलाई है, तो वह उन्हें अवश्य सुनने का सौभाग्य प्रदान करता। और यदि वह उन्हें सुना देता तो भी वे कतराते हुए मुँह फेर लेते।

24. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह और रसूल की बात मानो, जब वह तुम्हें उस चीज़ की ओर बुलाए जो तुम्हें जीवन प्रदान करनेवाली है, और जान रखो

الْأَنْفَالُ

تِلْكَ آيَاتُ

رَحْمَةٍ، وَلِيُبَيِّنَ لِلْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءٌ حَسَنًا، إِنَّ  
 اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۖ ذَٰلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُؤَمِّنٌ  
 كَيْدِ الْكَافِرِينَ ۝ إِنَّ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ  
 الْفَتْحُ، وَإِنْ تَنْتَهُوا فَمَا وَخَيْرُ لَكُمْ، وَإِنْ تَعُودُوا  
 نَعُدْ، وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فُتُوكُمْ شَيْئًا وَ لَوْ  
 كَثُرَتْ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ يَا أَيُّهَا  
 الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا  
 تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا  
 كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝ إِنَّ  
 شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الضُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا  
 يَعْقِلُونَ ۝ وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ وَلَوْ  
 أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝ يَا أَيُّهَا  
 الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ

مَنْزِلُهُ



कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के बीच आड़े आ जाता है और यह कि वही है जिसकी ओर (पलटकर) तुम एकत्र होगे ।

25. बचो उस फ़ितने से जो अपनी लपेट में विशेष रूप से केवल अत्याचारियों को ही नहीं लेगा, जान लो कि अल्लाह कठोर दण्ड देनेवाला है ।

26. और याद करो जब तुम थोड़े थे, धरती में निर्बल थे, डरे-सहमे रहते थे कि लोग कहीं तुम्हें उचक न ले जाएँ, फिर उसने तुम्हें ठिकाना दिया और अपनी सहायता से तुम्हें शक्ति प्रदान की और अच्छी-स्वच्छ चीज़ों की तुम्हें रोज़ी दी, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ ।

27. ऐ ईमान लानेवालो ! जानते-बूझते तुम अल्लाह और उसके रसूल के साथ विश्वासघात न करना और न अपनी अमानतों में ख़ियानत करना ।

28. और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान परीक्षा-सामग्री हैं और यह कि अल्लाह के पास बड़ा प्रतिदान है ।

29. ऐ ईमान लानेवालो ! यदि तुम अल्लाह का डर रखोगे तो वह तुम्हें एक विशिष्टता प्रदान करेगा और तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर करेगा और तुम्हें क्षमा करेगा । अल्लाह बड़ा अनुग्राहक है ।

30. और याद करो जब इनकार करनेवाले तुम्हारे साथ चालें चल रहे थे कि

لَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُونُوا فِي سَعْيٍ مِّمَّنْ يَحْزَنُونَ ۝ وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَمُولُ بَيْنَ الرِّجْلِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تَحْشَرُونَ ۝ وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً، وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ وَاذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ يَخَافُونَ أَنْ يَخِفْتَكُمْ النَّاسُ فَأَوْرَكَكُمْ وَأَيَّدَكُمْ بِبَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمْنَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ وَأَعْلَمُوا أَنَّهُمْ أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَاكُمْ فِتْنَةٌ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝ وَلَإِذَا



तुम्हें कैद रखें या तुम्हें क़त्ल कर दें या तुम्हें निकाल बाहर करें। वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह भी अपनी चाल चल रहा था। अल्लाह सबसे अच्छी चाल चलता है।

31. जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो वे कहते हैं: "हम सुन चुके। यदि हम चाहें तो ऐसी बातें हम भी बना लें; ये तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।"

32. और याद करो जब उन्होंने कहा था: "ऐ अल्लाह! यदि यही तेरे यहाँ से सत्य हो तो हमपर आकाश से पत्थर बरसा दे, या हमपर कोई दुखद यातना ही ले आ।

33. और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम उनके बीच उपस्थित हो और वह उन्हें यातना देने लग जाए, और न अल्लाह ऐसा है कि वे क्षमा-याचना कर रहे हों और वह उन्हें यातना में ग्रस्त कर दे।

34. किन्तु अब क्या है उनके पास कि अल्लाह उन्हें यातना न दे, जबकि वे "मस्जिदे हराम" (काबा) से रोकते हैं, हालाँकि वे उसके कोई व्यवस्थापक नहीं? उसके व्यवस्थापक तो केवल डर रखनेवाले ही हैं, परन्तु उनके अधिकतर लोग जानते नहीं।

35. उनकी नमाज़ इस घर (काबा) के पास सीटियाँ बजाने और तालियाँ पीटने के अलावा कुछ भी नहीं होती। तो अब यातना का मज़ा चखो, उस

الْأَنْفَالِ

الْأَنْفَالِ

يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَنْكُرُونَ وَيَنْكُرُ اللَّهُ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرُ الْمَكِيدِينَ ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَذَا ۖ إِنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَابًا مِنَ السَّمَاءِ أَوْ افْتِكِنَا يُعَذِّبِ آلِ يَسْمُ ۝ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۝ وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يُصَدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَ ۚ إِنْ أَوْلِيَائُهُ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءٌ وَتَضَائِعٌ ۚ

سَبَّحَ



इनकार के बदले में जो तुम करते रहे हो।

36. निश्चय ही इनकार करनेवाले अपने माल अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिए खर्च करते हैं। वे तो उनको खर्च करते रहेंगे, फिर यही उनके लिए पश्चात्ताप बनेगा। फिर वे पराभूत होंगे और इनकार करनेवाले जहन्नम की ओर समेट लाए जाएँगे,

37. ताकि अल्लाह नापाक को पाक से छाँटकर अलग करे और नापाकों को आपस में एक-दूसरे पर रखकर ढेर बनाए, फिर उसे जहन्नम में डाल दे। यही लोग घाटे में पड़नेवाले हैं।

38. उन इनकार करनेवालों से कह दो कि वे यदि बाज़्र आ जाएँ तो जो कुछ हो चुका, उसे क्षमा कर दिया जाएगा, किन्तु यदि वे फिर भी वही करेंगे तो पूर्ववर्ती लोगों के सिलसिले में जो रीति अपनाई गई वह सामने से गुज़र चुकी है।

39. उनसे युद्ध करो, यहाँ तक कि फ़ितना बाक़ी न रहे और दीन (धर्म) पूरा का पूरा अल्लाह ही के लिए हो जाए। फिर यदि वे बाज़्र आ जाएँ तो अल्लाह उनके कर्म को देख रहा है।

40. किन्तु यदि वे मुँह मोड़ें तो जान रखो कि अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है। क्या ही अच्छा संरक्षक है वह, और क्या ही अच्छा सहायक !

अल्लाह

अल्लाह

قَدْ وَقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ كُفَرُونَ ۝ إِنَّ  
الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدَّوْا  
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيُنْفِقُونَهَا ثُمَّ يَكُونُ  
عَلَيْهِمْ حَسْرَةٌ ثُمَّ يَغْلِبُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا  
إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ۝ لِيَبْلِيَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ  
الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضُهُ عَلَىٰ بَعْضٍ  
فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلُهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ  
الْخَاسِرُونَ ۝ قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا آثَانٌ يَنْتَهُوْا يُغْفَرُ  
لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ ۚ وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ  
سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ  
وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ  
بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا  
أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ نِعِمَّ التَّوَلَّىٰ وَنِعَمَ النَّصِيرُ ۝

مَنْ



41. और तुम्हें मालूम हो कि जो कुछ ग़नीमत के रूप में माल तुमने प्राप्त किया है, उसका पाँचवाँ भाग अल्लाह का, रसूल का, नातेदारों का, अनाथों का, मुहताजों और मुसाफ़िरो का है। यदि तुम अल्लाह पर और उस चीज़ पर ईमान रखते हो, जो हमने अपने बन्दे पर फ़ैसले के दिन उतारी, जिस दिन दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हुई, और अल्लाह को हर चीज़ की पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त है।

42. याद करो जब तुम घाटी के निकटवर्ती छोर पर थे और वे घाटी के दूरस्थ छोर पर थे और

क्राफ़िला तुमसे नीचे की ओर था। यदि तुम परस्पर समय निश्चित किए होते तो अनिवार्यतः तुम निश्चित समय पर न पहुँचते। किन्तु जो कुछ हुआ वह इसलिए कि अल्लाह उस बात का फ़ैसला कर दे, जिसका पूरा होना निश्चित था, ताकि जिसे विनष्ट होना हो, वह स्पष्ट प्रमाण देखकर ही विनष्ट हो और जिसे जीवित रहना हो वह स्पष्ट प्रमाण देखकर जीवित रहे। निस्संदेह अल्लाह भली-भाँति जानता, सुनता है।

43. और याद करो जब अल्लाह उनको तुम्हारे स्वप्न में थोड़ा करके तुम्हें दिखा रहा था और यदि वह उन्हें ज़्यादा करके तुम्हें दिखा देता तो अवश्य ही तुम हिम्मत हार बैठते और असल मामले में झगड़ने लग जाते, किन्तु अल्लाह ने इससे बचा लिया। निश्चय ही वह तो जो कुछ दिलों में होता है उसे भी जानता है।

44. याद करो जब तुम्हारी परस्पर मुठभेड़ हुई तो वह तुम्हारी निगाहों में उन्हें

وَأَعْلَمُ أَمَّا غَمَّتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ رَبَّيَ خَبِيرٌ  
وَلِلرَّسُولِ وَلِلَّذِينَ الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَ  
ابْنِ السَّبِيلِ ۚ إِن كُنتُمْ أَمُنْتُمْ بِاللهِ وَمَا أُنزِلْنَا  
عَلَيْ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ التَّقَىٰ الْجَمْعِينَ  
وَاللهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدُوِّ  
الَّذِينَ هُمْ بِالْعُدُوِّ وَالْغُصُونِ وَالرَّكْبِ اسْفَلَ  
مِنْكُمْ ۚ وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ لَا خْتَفْتُمْ فِي الْمِيعَدِ ۚ  
وَلَكِنْ لِيَقْضِيَ اللهُ أُمُورًا كَانَ مَفْعُولًا لَّيْهْلِكِ  
مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيَخْيِي مَنْ خَافَ عَنْ  
بَيِّنَةٍ ۚ وَإِنَّ اللهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِذْ يُرِيكَهُمُ اللهُ  
فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا ۚ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشَلْتُمْ  
وَلَكِنَّآ زَعَمْتَ فِي الْأَمْرِ وَلَكِنَّ اللهَ سَلَّمَ ۚ إِنَّهُ  
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ وَإِذْ يُرِيكُوهُمْ إِذِ



कम करके और तुम्हें उनकी निगाहों में कम करके दिखा रहा था, ताकि अल्लाह उस बात का फ़ैसला कर दे जिसका होना निश्चित था। और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

45. ऐ 'ईमान लानेवालो ! जब तुम्हारा किसी गिरोह से मुक़ाबला हो जाए तो जमे रहो और अल्लाह को ज़्यादा याद करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

46. और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानो और आपस में न झगड़ो, अन्यथा हिम्मत हार बैठोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। और धैर्य से काम लो। निश्चय ही, अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

47. और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से इतराते और लोगों को दिखाते निकले थे और वे अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं, हालाँकि जो कुछ वे करते हैं, अल्लाह उसे अपने घेरे में लिए हुए है।

48. और याद करो जब शैतान ने उनके कर्म उनके लिए सुन्दर बना दिए और कहा : "आज लोगों में से कोई भी तुमपर प्रभावी नहीं हो सकता। मैं तुम्हारे साथ हूँ।" किन्तु जब दोनों गिरोह आमने-सामने हुए तो वह उलटे पाँव फिर गया और कहने लगा : "मेरा तुमसे कोई संबंध नहीं। मैं वह कुछ देख रहा हूँ, जो तुम्हें नहीं दिखाई देता। मैं अल्लाह से डरता हूँ, और अल्लाह

الْأَنْفَالِ

وَالْمُلُوكِ

التَّقِيْتُمْ فِيْ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِيْ اَعْيُنِهِمْ  
لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۚ وَاِلٰى اللّٰهِ  
تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۚ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِذَا لَقِيْتُمْ فِرْسَةً  
فَاَنْتَبِهُوْا ۚ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝  
وَاطِيعُوْا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَ  
تَذْهَبَ رِيْضُكُمْ ۚ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝  
وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ  
بَطْرًا وَرِيَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ  
اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝ۙ وَاِذْ رَاٰنَ  
لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمٰلَهُمْ وَقَالَ لَا غٰلِبَ لَكُمْ  
اَلْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ  
الْفِرْسَتَيْنِ تَكَصَّ عَلَى عَقَبَيْهِ ۚ وَقَالَ اِنِّيْۤ اَبْرِيْ  
مِنْكُمْ اِنِّيْۤ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ ۚ اِنِّيْۤ اَخَافُ اللّٰهَ ۚ

مِنْ



कठोर यातना देनेवाला है।”

49. याद करो जब कपटाचारी और वे लोग जिनके दिलों में रोग है, कह रहे थे : “इन लोगों को तो इनके धर्म ने धोखे में डाल रखा है।” हालाँकि जो अल्लाह पर भरोसा रखता है, तो निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

50. क्या ही अच्छा होता कि तुम देखते जब फ़रिश्ते इनकार करनेवालों के प्राण ग्रस्त करते हैं ! वे उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते जाते हैं कि “लो अब जलने की यातना का मज़ा चखो।”

(तो उनकी दुर्दशा का अन्दाज़ा कर सकते)।

51. यह तो उसी का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और यह कि अल्लाह अपने बन्दों पर तनिक भी अत्याचार नहीं करता।

52. इनके साथ वैसा ही मामला पेश आया जैसा फ़िरऔन के लोगों और उनसे पहले के लोगों के साथ पेश आया। उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया तो अल्लाह ने उनके गुनाहों के कारण उन्हें पकड़ लिया। निस्संदेह अल्लाह शक्तिशाली, कठोर यातना देनेवाला है।

53. यह इसलिए हुआ कि अल्लाह उस उदार अनुग्रह (नेमत) को, जो उसने किसी क़ौम पर किया हो, बदलनेवाला नहीं है, जब तक कि लोग उस चीज़ को न बदल डालें, जिसका संबंध स्वयं उनसे है। और यह कि अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

54. जैसे फ़िरऔनियों और उनसे पहले के लोगों का हाल हुआ। उन्होंने अपने रब की आयतों को झुठलाया तो हमने उन्हें उनके गुनाहों के बदले में

وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ إِذْ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ  
وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ غَرْهُؤَلَاءِ دِينُهُمْ  
وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۖ  
وَلَوْ تَرَى إِذْ يَتَوَكَّلُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى  
الْعَذَابِ الْحَرِيِّ ۖ ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْت أَيْدِيكُمْ  
وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَالَمِينَ ۖ كَذَّابٌ  
إِلَٰهٌ ۖ فَذَرَعُونَ ۖ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ  
فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ  
شَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكْ مُغَيِّرًا  
نِّعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرَ مَا بِأَنفُسِهِمْ ۖ  
وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۖ كَذَّابٌ  
إِلَٰهٌ ۖ فَذَرَعُونَ ۖ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ  
كَذَّبُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ



विनष्ट कर दिया और फिर औनियों को डुबो दिया। ये सभी अत्याचारी थे।

55. निश्चय ही, सबसे बुरे प्राणी अल्लाह की दृष्टि में वे लोग हैं जिन्होंने इनकार किया। फिर वे ईमान नहीं लाते।

56. जिनसे तुमने वचन लिया वे फिर हर बार अपने वचन को भंग कर देते हैं और वे डर नहीं रखते।

57. अतः यदि युद्ध में तुम उनपर क़ाबू पाओ, तो उनके साथ इस तरह पेश आओ कि उनके पीछेवाले भी भाग खड़े हों, ताकि वे शिक्षा ग्रहण करें।

58. और यदि तुम्हें किसी क़ौम से विश्वासघात की आशंका हो, तो तुम भी उसी प्रकार ऐसे लोगों के साथ हुई संधि को खुल्लम-खुल्ला उनके आगे फेंक दो। निश्चय ही अल्लाह को विश्वासघात करनेवाले प्रिय नहीं।

59. इनकार करनेवाले यह न समझें कि वे आगे निकल गए। वे क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते।

60. और जो भी तुमसे हो सके, उनके लिए बल और बँधे घोड़े<sup>1</sup> तैयार रखो, ताकि इसके द्वारा अल्लाह के शत्रुओं और अपने शत्रुओं और इनके अतिरिक्त उन दूसरे लोगों को भी भयभीत कर दो जिन्हें तुम नहीं जानते। अल्लाह उनको जानता है और अल्लाह के मार्ग में तुम जो कुछ भी खर्च करोगे, वह तुम्हें

الْأَنْفَالُ

الْأَنْفَالُ

فَاهْلِكْنَهُمْ بِدُلُوبِهِمْ وَأَعْرَفْنَاهُ الْفِرْعَوْنَ ۖ وَ  
كُلُّ كَانُوا ظَالِمِينَ ۝ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ  
اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ  
عَاهَدَتْ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْفُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي  
كُلِّ مَرْقَةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۝ فَإِنَّمَا تَتَّفَقَتُهُمْ فِي  
الْحَرْبِ فَتُقَرَّبُ إِلَيْهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ يُدَكِّرُونَ ۝  
وَإِنَّمَا تَخَافْنَ مِنْ قَوْمٍ خِيفَتُهُ قَاسِيَةٌ إِلَيْهِمْ  
عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِبِينَ ۝ وَلَا  
يَخْشَىٰ الَّذِينَ كَفَرُوا سُبُوحًا عَلَيْهِمْ لَا يُفْجَرُونَ ۝  
وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ  
الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَ  
آخِرِينَ مِنْ دُونِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُونَهُمُ ۚ اللَّهُ  
يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

مَنْعَةً



पूरा-पूरा चुका दिया जाएगा और तुम्हारे साथ कदापि अन्याय न होगा।

61. और यदि वे संधि और सलामती की ओर झुके तो तुम भी इसके लिए झुक जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। निस्संदेह, वह सब कुछ सुनता, जानता है।

62. और यदि वे यह चाहें कि तुम्हें धोखा दें तो तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है। वही तो है जिसने तुम्हें अपनी सहायता से और मोमिनों के द्वारा शक्ति प्रदान की।

63. और उनके दिल आपस में एक-दूसरे के साथ जोड़ दिए। यदि तुम, धरती में जो कुछ है, सब खर्च कर डालते तो भी उनके दिलों को परस्पर जोड़ न सकते, किन्तु अल्लाह ने उन्हें परस्पर जोड़ दिया। निश्चय ही वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

64. ऐ नबी ! तुम्हारे लिए अल्लाह और तुम्हारे ईमानवाले अनुयायी ही काफ़ी हैं।

65. ऐ नबी ! मोमिनों को जिहाद पर उभारो। यदि तुम्हारे बीस आदमी जमे होंगे, तो वे दो सौ पर प्रभावी होंगे और यदि तुममें से ऐसे सौ होंगे तो वे इनकार करनेवालों में से एक हजार पर प्रभावी होंगे, क्योंकि वे नासमझ लोग हैं।

66. अब अल्लाह ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया और उसे मालूम हुआ कि

يُوفِّىٰ لَكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْكُرُونَ ۝ وَإِنْ جَنَحُوا  
لِلسَّلَامِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ  
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ  
فَأِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۚ هُوَ الَّذِي آتَاكَ بِنَصْرِهِ وَ  
بِالْمُؤْمِنِينَ ۝ وَالْفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا  
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَّا آفَتْ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ  
وَلَكِنَّ اللَّهَ آفَتْ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝  
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ  
الْمُؤْمِنِينَ ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضَ الْمُؤْمِنِينَ  
عَلَى الْقِتَالِ ۚ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عَشْرُونَ صَبَرُوا  
يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ قِسْرَةٌ  
يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ  
لَا يَفْقَهُونَ ۝ أَلَمْ يَخَفْ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ

ع



तुममें कुछ कमजोरी है। तो यदि तुम्हारे सौ आदमी जमे रहनेवाले होंगे, तो वे दो सौ पर प्रभावी रहेंगे और यदि तुममें ऐसे हजार होंगे तो अल्लाह के हुक्म से वे दो हजार पर प्रभावी रहेंगे। अल्लाह तो उन्हीं लोगों के साथ है जो जमे रहते हैं।

67. किसी नबी के लिए यह उचित नहीं कि उसके पास कैदी हों यहाँ तक कि वह धरती में रक्तपात करे।<sup>1</sup> तुम लोग संसार की सामग्री चाहते हो, जबकि अल्लाह आखिरत चाहता है। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

68. यदि अल्लाह का लिखा पहले से मौजूद न होता, तो जो कुछ नीति तुमने अपनाई है उसपर तुम्हें कोई बड़ी यातना आ लेती।

69. अतः जो कुछ ग़नीमत का माल तुमने प्राप्त किया है, उसे वैध-पवित्र समझकर खाओ और अल्लाह का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

70. ऐ नबी ! जो कैदी तुम्हारे कब्ज़े में हैं, उनसे कह दो : “यदि अल्लाह ने यह जान लिया कि तुम्हारे दिलों में कुछ भलाई है तो वह तुम्हें उससे कहीं उत्तम प्रदान करेगा, जो तुम से छिन गया है और तुम्हें क्षमा कर देगा। और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।”

71. किन्तु यदि वे तुम्हारे साथ विश्वासघात करना चाहेंगे, तो इससे पहले वे अल्लाह के साथ विश्वासघात कर चुके हैं। तो उसने तुम्हें उनपर अधिकार

وَاللَّهُ يَكُونُ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُلَاقِيَ فِي  
الْأَرْضِ ۚ تُرِيدُونَ عَرَصَ الدُّنْيَا ۚ وَاللَّهُ يُرِيدُ  
الْآخِرَةَ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ لَوْ كُتِبَ مِنَ اللَّهِ  
سَبَقٌ لِّسَلَامِكُمْ فَبِمَا أَخَذْتُمْ عَذَابَ عَظِيمٍ ۚ فَكُلُوا  
مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ  
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۚ يَأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَن فِي أَيْدِيكُمْ  
مِّنَ الْأَسْرَىٰ ۚ إِن يَتْلُمْ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا  
يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرَ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ  
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۚ وَإِنْ تُرِيدُوا حَيَاتِكُمْ  
فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ

1. अर्थात् यहाँ तक कि विरोधियों को कुचलकर उनका जोर तोड़ दे।



दे दिया। अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, बड़ा तत्त्वदर्शी है।

72. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद किया और जिन लोगों ने उन्हें शरण दी और सहायता की, वही लोग परस्पर एक-दूसरे के संरक्षक मित्र हैं। रहे वे लोग जो ईमान लाए, किन्तु उन्होंने हिजरत नहीं की, उनसे तुम्हारा संरक्षण और मित्रता का कोई संबंध नहीं है, जब तक कि वे हिजरत न करें, किन्तु यदि वे धर्म के मामले में तुमसे सहायता माँगे

وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَ  
هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ  
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا  
أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ  
آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مِمَّا لَكُمْ مِنْ وَلَا يَتَّبِعُهُمْ  
مِنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ اسْتَنْصَرُوكُمْ  
فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ  
وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝  
وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا  
تَفْعَلُوا لَكِنَّ فِتْنَةً فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ۝  
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي  
سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ  
هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

तो तुमपर अनिवार्य है कि सहायता करो, सिवाय इसके कि यह सहायता किसी ऐसी क़ौम के मुक़ाबले में हो जिससे तुम्हारी कोई संधि हो। तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे देखता है।

73. जो इनकार करनेवाले लोग हैं, वे आपस में एक-दूसरे के मित्र और सहायक हैं। यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो धरती में फ़ितना और बड़ा फ़साद फैलेगा।

74. और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया और जिन लोगों ने उन्हें शरण दी और सहायता की वही सच्चे मोमिन हैं। उनके लिए क्षमा और सम्मानित—उत्तम आजीविका है।



75. और जो लोग बाद में ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया तो ऐसे लोग भी तुम में ही से हैं। किन्तु अल्लाह की किताब में खून के रिश्तेदार एक-दूसरे के ज्यादा हकदार हैं। निश्चय ही अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।

## 9. अत-तौबा

(मदीना में उतरी—आयतें 129)

1. मुशरिकों (बहुदेववादियों) से, जिनसे तुमने संधि की थी, विरक्ति (की उद्घोषणा) है अल्लाह और उसके रसूल की ओर से।

2. “अतः इस धरती में चार महीने और चल-फिर लो और यह बात जान लो कि तुम अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते और यह कि अल्लाह इनकार करनेवालों को अपमानित करता है।”

3. सार्वजनिक उद्घोषणा है अल्लाह और उसके रसूल की ओर से, बड़े हज के दिन लोगों के लिए, कि “अल्लाह मुशरिकों के प्रति ज़िम्मेदारी से बरी है और उसका रसूल भी। अब यदि तुम तौबा कर लो, तो यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है, किन्तु यदि तुम मुह मोड़ते हो, तो जान लो कि तुम अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते।” और इनकार करनेवालों को एक दुखद यातना की शुभ-सूचना दे दो;

4. सिवाय उन मुशरिकों के जिनसे तुमने संधि-समझौते किए, फिर उन्होंने





तुम्हारे साथ अपने वचन को पूर्ण करने में कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता ही की, तो उनके साथ उनकी संधि को उन लोगों के निर्धारित समय तक पूरा करो। निश्चय ही अल्लाह को डर रखनेवाले प्रिय हैं।

5. फिर, जब हराम (प्रतिष्ठित) महीने बीत जाएँ तो मुशरिकों को जहाँ कहीं पाओ क़त्ल करो, उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर यदि वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो उनका मार्ग छोड़ दो, निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

6. और यदि मुशरिकों में से कोई तुमसे शरण माँगे, तो तुम उसे शरण दे दो, यहाँ तक कि वह अल्लाह की वाणी सुन ले। फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दो; क्योंकि वे ऐसे लोग हैं, जिन्हें ज्ञान नहीं।

7. इन मुशरिकों की किसी संधि की कोई ज़िम्मेदारी अल्लाह और उसके रसूल पर कैसे बाक़ी रह सकती है?— उन लोगों का मामला इससे अलग है, जिनसे तुमने मस्जिदे हराम (काबा) के पास संधि की थी, तो जब तक वे तुम्हारे साथ सीधे रहें, तब तक तुम भी उनके साथ सीधे रहो। निश्चय ही अल्लाह को डर रखनेवाले प्रिय हैं।—

ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوا شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ  
أَحَدًا فَأَيُّ الْيَوْمِ أَلَيْسَ لَهُمْ عَهْدٌ إِلَىٰ مَدْيَنِهِمْ ۖ إِنَّ  
اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝ فَإِذَا أَنْزَلْنَا الْأَشْهُرَ  
الْحَرَامَ فَأَقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ  
وَخُذُواهُمْ وَاحْصِرُوهُمْ وَأَقْبِضُوا أَلْغُلَ كُلِّ مِرْصَدٍ ۚ  
فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ  
وَكَلَّوْا سَبِيلَكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَفُوٌّ رَحِيمٌ ۝ وَإِنْ  
أَجِدُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتِجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ  
يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ  
قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ۝ كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ  
عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ  
عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوا  
لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝



8. कैसे बाक़ी रह सकती है ? जबकि उनका हाल यह है कि यदि वे तुम्हें दबा पाएँ तो वे न तुम्हारे विषय में किसी नाते-रिश्ते का खयाल रखें और न किसी अभिवचन का। वे अपने मुँह ही से तुम्हें राज़ी करते हैं, किन्तु उनके दिल इनकार करते रहते हैं और उनमें अधिकतर अवज्ञाकारी हैं।

9. उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ा-सा मूल्य स्वीकार किया और इस प्रकार वे उसका मार्ग अपनाने से रुक गए। निश्चय ही बहुत बुरा है जो कुछ वे कर रहे हैं।

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ  
الْأَوَّلَ ذِمَّةً. يُرْضُونَكُمْ بِأَقْوَاهِمَ وَتَأْتِي  
قُلُوبُهُمْ. وَكَثَرَهُمْ فَيَقُونَ. إِنْ شِئْتُمْ بِآيَاتِ  
اللَّهِ تَسَاءَلُنَا قَلِيلًا فَوَصَدُوا عَنْ سَبِيلِهِ. إِنَّهُمْ  
سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ. لَا يَرْقُبُونَ فِي  
مُؤْمِنٍ إِلَّا ذِمَّةً. وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ.  
فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ  
فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ. وَنَفَّصْنَا الْأَمْرَ لِلْقَوْمِ  
يَعْلَمُونَ. وَإِنْ تَكَفَّتُوا أَيْمَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ  
عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَيْمَةَ  
الْكَافِرِ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ.  
أَلَا تَقَاتِلُونَ قَوْمًا نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا  
بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ.

10. किसी मोमिन के बारे में न तो नाते-रिश्ते का खयाल रखते हैं और न किसी अभिवचन का। वही लोग हैं जिन्होंने सीमा का उल्लंघन किया।

11. अतः यदि वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो वे धर्म के भाई हैं। और हम उन लोगों के लिए आयतें खोल-खोलकर बयान करते हैं, जो जानना चाहें।

12. और यदि अपने अभिवचन के पश्चात वे अपनी क़समों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन (धर्म) पर चोटें करने लगें, तो फिर कुफ़्र (अधर्म) के सरदारों से युद्ध करो, उनकी क़समें कुछ नहीं, ताकि वे बाज़ आ जाएँ।

13. क्या तुम ऐसे लोगों से नहीं लड़ोगे जिन्होंने अपनी क़समें तोड़ डाली और रसूल को निकाल देना चाहा और वही हैं जिन्होंने तुमसे छेड़ में पहल की ?



क्या तुम उनसे डरते हो ? यदि तुम मोमिन हो तो इसका ज्यादा हक़दार अल्लाह है कि तुम उससे डरो ।

14. उनसे लड़ो । अल्लाह तुम्हारे हाथों से उन्हें यातना देगा और उन्हें अपमानित करेगा और उनके मुक़ाबले में वह तुम्हारी सहायता करेगा । और ईमानवाले लोगों के दिलों का दुखमोचन करेगा;

15. उनके दिलों का क्रोध मिटाएगा, अल्लाह जिसे चाहेगा, उसपर दया-दृष्टि डालेगा । अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है ।

16. क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम ऐसे ही छोड़ दिए जाओगे, हालाँकि अल्लाह ने अभी उन लोगों को छाँटा ही नहीं, जिन्होंने तुममें से जिहाद किया और अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों को छोड़कर किसी को घनिष्ठ मित्र नहीं बनाया ? तुम जो कुछ भी करते हो, अल्लाह उसकी खबर रखता है ।

17. यह मुशरिकों का काम नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें और उसके प्रबंधक हों, जबकि वे स्वयं अपने विरुद्ध कुफ़्र की गवाही दे रहे हैं । उन लोगों का सारा किया-धरा अकारथ गया और वे आग में सदैव रहेंगे ।

18. अल्लाह की मस्जिदों का प्रबंधक और उसे आबाद करनेवाला वही हो सकता है जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाया, नमाज़ कायम की और

اتَّخِشُوا لَهُمْ ۖ قَالَ اللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِيهِمْ وَيُنْصِرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيُشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ ۖ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۚ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَنْ يُغْلِبَ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۚ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۖ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ۚ إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ



ज़कात दी और अल्लाह के सिवा किसी से न डरा। अतः ऐसे ही लोग, आशा है कि सीधा मार्ग पानेवाले होंगे।

19. क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम (काबा) के प्रबंध को उस व्यक्ति के काम के बराबर ठहरा लिया है, जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाया और उसने अल्लाह के मार्ग में संघर्ष किया? अल्लाह की दृष्टि में वे बराबर नहीं। और अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

20. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ दर्जे में वे बहुत बड़े हैं और वही सफल हैं।

21. उन्हें उनका रब अपनी दयालुता और प्रसन्नता और ऐसे बागों की शुभ-सूचना देता है, जिनमें उनके लिए स्थायी सुख-सामग्री है।

22. उनमें वे सदैव रहेंगे। निस्संदेह अल्लाह के पास बड़ा बदला है।

23. ऐ ईमान लानेवालो! अपने बाप और अपने भाइयों को अपने मित्र न बनाओ यदि ईमान के मुक़ाबले में कुफ़र उन्हें प्रिय हो। तुममें से जो कोई उन्हें

وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ فَقَسَّ أُولَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا  
مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۖ أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ  
وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ  
الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ  
اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ  
آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ  
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۖ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ  
وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ  
بِرَحْمَةٍ مِنْهُ وَبِرِضْوَانٍ وَجَنَّتْ لَهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ  
مُقِيمٌ ۝ خُلْدٍ فِيهَا أَبَدًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ  
أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا  
أَبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّ اسْتَعَبُوا الْكُفْرَ  
عَلَى الْإِيمَانِ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَاُولَٰئِكَ



अपना मित्र बनाएगा, तो ऐसे ही लोग अत्याचारी होंगे।

24. कह दो : “यदि तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे रिश्ते-नातेवाले और माल, जो तुमने कमाए हैं और कारोबार जिसके मन्दा पड़ जाने का तुम्हें भय है और घर जिन्हें तुम पसन्द करते हो, तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और उसके मार्ग में जिहाद करने से अधिक प्रिय हैं तो प्रतीक्षा करो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला ले आए। और अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्ग नहीं दिखाता।”

هُمُ الظَّالِمُونَ ۚ قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ  
وَأَخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ  
اِكْتَسَبْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ  
مَسْكَنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنْ اللَّهِ وَ  
رَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرْتَبِصُوا حَتَّى يَأْتِيَ  
اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۚ  
لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۚ وَيَوْمَ  
حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ  
شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ  
وَلَيْتُمْ مُذْهِبِينَ ۚ ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى  
رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَمْ  
تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَلِكَ جَزَاءُ  
الْكُفْرِينَ ۚ ثُمَّ يُنَوِّبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَلَى

25. अल्लाह बहुत-से अवसरों पर तुम्हारी सहायता कर चुका है और हुनैन (की लड़ाई) के दिन भी, जब तुम अपनी अधिकता पर फूल गए, तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई और धरती अपनी विशालता के बावजूद तुम पर तंग हो गई। फिर तुम पीठ फेरकर भाग खड़े हुए।

26. अन्ततः अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनों पर अपनी सकीनत (प्रशान्ति) उतारी और ऐसी सेनाएँ उतारीं जिनको तुमने नहीं देखा। और इनकार करनेवालों को यातना दी, और यही इनकार करनेवालों का बदला है।

27. फिर इसके बाद अल्लाह जिसको चाहता है उसे तौबा नसीब करता है।



अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

28. ऐ ईमान लानेवालो ! मुशरिक तो बस अपवित्र ही हैं। अतः इस वर्ष के पश्चात वे मस्जिदे हराम के पास न आएँ। और यदि तुम्हें निर्धनता का भय हो तो आगे यदि अल्लाह चाहेगा तो तुम्हें अपने अनुग्रह से समृद्ध कर देगा। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

29. वे किताबवाले जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न अंतिम दिन पर और न अल्लाह और उसके रसूल के हराम ठहराए हुए को हराम ठहराते हैं और न सत्यधर्म का अनुपालन करते हैं, उनसे लड़ो, यहाँ तक कि वे सत्ता से विलग होकर और छोटे (अधीनस्थ) बनकर जिज़्या देने लगें।

30. यहूदी कहते हैं : "उज़ैर अल्लाह का बेटा है" और ईसाई कहते हैं : "मसीह अल्लाह का बेटा है।" ये उनकी अपने मुँह की बातें हैं। ये उन लोगों की-सी बातें कर रहे हैं जो इससे पहले इनकार कर चुके हैं। अल्लाह की मार इन पर ! ये कहाँ से औंधे हुए जा रहे हैं !

31. उन्होंने अल्लाह से हटकर अपने धर्मज्ञाताओं और संसार-त्यागी संतों और मरयम के बेटे ईसा को अपने रब बना लिए—हालाँकि उन्हें इसके सिवा

مَنْ يَشَاءُ. وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۖ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ  
اٰمَنُوا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ  
الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً  
فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمْ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ اِنْ شِئْتُمْ ۚ اِنَّ  
اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۖ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ  
بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ  
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنََ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ  
اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ  
صٰغِرُوْنَ ۚ وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ اِبْنُ اللّٰهِ  
وَقَالَتِ النَّصْرَةُ السِّيمُ اِبْنُ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ  
بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِيُوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ  
قَبْلُ ۚ قَتَلَهُمُ اللّٰهُ اَتَىٰ يَوْمُكُمُ الَّذِيْ لَا تَاْخُذُوْا  
اَحْبَابًا لَهُمْ وَرُھْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ



और कोई आदेश नहीं दिया गया था कि अकेले इष्ट-पूज्य की वे बन्दगी करें, जिसके सिवा कोई और पूज्य नहीं। उसकी महिमा के प्रतिकूल है वह शिर्क जो ये लोग करते हैं।—

32. चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपने मुँह से बुझा दें, किन्तु अल्लाह अपने प्रकाश को पूर्ण किए बिना नहीं रहेगा, चाहे इनकार करनेवालों को अप्रिय ही लगे।

33. वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्यधर्म के साथ भेजा ताकि उसे तमाम दीन (धर्म) पर प्रभावी कर दे, चाहे मुशरिकों को बुरा लगे।

34. ऐ ईमान लानेवालो ! अवश्य ही बहुत-से धर्मज्ञाता और संसार-त्यागी संत ऐसे हैं जो लोगों के माल नाहक खाते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं, और जो लोग सोना और चाँदी एकत्र करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह के मार्ग में खर्च नहीं करते, उन्हें दुखद यातना की शुभ-सूचना दे दो।

35. जिस दिन उनको जहन्नम की आग में तपाया जाएगा फिर उससे उनके ललाटों और उनके पहलुओं और उनकी पीठों को दागा जाएगा (और कहा जाएगा) : "यही है जो तुमने अपने लिए संचय किया, तो जो कुछ तुम संचित

وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ، وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا  
إِلَهًا وَاحِدًا، لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، سُبْحَنَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ  
يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى  
اللَّهُ إِلَّا أَنْ يَتِمَّ نُورُهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ  
الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ  
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ، وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَخْبَارِ وَ  
الرُّهْبَانِ لَيَاَكُونُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَ  
يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ، وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ  
الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يَنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ،  
نَبِّئْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ يَوْمَ يُخْفَىٰ عَلَيْهَا  
فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَمَتْلَوْهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ  
وَأُظْهَرُ لَهُمْ هَذَا مَا كُنْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ تَقْدِفُونَ

سَبِيلِ



करते रहे हो, उसका मज़ा चखो !”

36. निस्संदेह महीनों की संख्या—अल्लाह के अध्यादेश में उस दिन से जब उसने आकाशों और धरती को पैदा किया—अल्लाह की दृष्टि में बारह महीने हैं। उनमें चार आदर के हैं, यही सीधा दीन (धर्म) है। अतः तुम उन (महीनों) में अपने ऊपर अत्याचार न करो।<sup>1</sup> और मुशरिकों से तुम सबके सब लड़ो, जिस प्रकार वे सब मिलकर तुमसे लड़ते हैं। और जान लो कि अल्लाह डर रखनेवालों के साथ है।

37. (आदर के महीनों का)

हटाना तो बस कुफ़्र में एक वृद्धि है, जिससे इनकार करनेवाले-गुमराही में पड़ते हैं। किसी वर्ष वे उसे हलाल (वैध) ठहरा लेते हैं और किसी वर्ष उसको हराम ठहरा लेते हैं, ताकि अल्लाह के आदर (महीनों) की संख्या पूरी कर लें, और इस प्रकार अल्लाह के हराम किए हुए को वैध ठहरा लें। उनके अपने बुरे कर्म उनके लिए सुहाने हो गए हैं और अल्लाह इनकार करनेवाले लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।

38. ऐ ईमान लानेवालो ! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है : “अल्लाह के मार्ग में निकलो” तो तुम धरती पर ढहे जाते हो ? क्या तुम आखिरत की अपेक्षा सांसारिक जीवन पर राज़ी हो गए ? सांसारिक जीवन की

مَا كُنْتُمْ تَكْفِرُونَ ۚ إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ  
اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ  
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَا اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۚ ذٰلِكَ  
الَّذِيْنَ الْقِيَمُ ۚ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ  
وَقَاتِلُوا الشُّرِكِيْنَ كَاْفًا ۚ كَمَا يُقَاتِلُوْكُمْ  
كَاْفًا ۚ وَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۚ اِنَّمَا  
النِّسْيُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهٖ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا  
يَحْمِلُوْهُ عَامًا وَيَحْمِلُوْهُ عَامًا ۚ اَلْيَٰوَظُّوْا عِدَّةَ مَا  
حَرَّمَ اللّٰهُ فَيَجْلُوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ۚ زَيْنٌ لَّهُمْ سُوٓءٌ  
اَعْمٰ اَبْصَارَهُمْ ۚ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِيْنَ ۚ  
يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمْ  
اَنْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اِنَّا قَلَنْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ  
اَرْضَيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَّاءُ

1. अर्थात् इन महीनों में लड़ाई से बाज़ रहो।



सुख-सामग्री तो आखिरत के हिसाब में है कुछ थोड़ी ही !

39. यदि तुम न निकलोगे तो वह तुम्हें दुखद यातना देगा और वह तुम्हारी जगह दूसरे गिरोह को ले आएगा और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे । और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है ।

40. यदि तुम उसकी सहायता न भी करो तो अल्लाह उसकी सहायता उस समय कर चुका है जब इनकार करनेवालों ने उसे इस स्थिति में निकाला कि वह केवल दो में का दूसरा था, जब वे दोनों गुफा में थे । जबकि वह अपने

साथी से कह रहा था : “शोकाकुल न हो । अवश्यमेव अल्लाह हमारे साथ है ।” फिर अल्लाह ने उसपर अपनी ओर से सकीनत (प्रशान्ति) उतारी और उसकी सहायता ऐसी सेनाओं से की जिन्हें तुम देख न सके और इनकार करनेवालों का बोल नीचा कर दिया, बोल तो अल्लाह ही का ऊँचा रहता है । अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है ।

41. हलके और बोझिल निकल पड़ो और अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करो ! यही तुम्हारे लिए उत्तम है, यदि तुम जानो ।

42. यदि निकट (भविष्य में) ही कुछ मिलनेवाला होता और सफ़र भी हलका होता तो वे अवश्य तुम्हारे पीछे चल पड़ते, किन्तु मार्ग की दूरी उन्हें

وَالَّذِينَ

وَالَّذِينَ

الْحَيَاةَ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ۖ إِلَّا تَنْفِرُوا  
يُعَذِّبُكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ  
وَلَا تَنْصُرُوهُ شَيْئًا ۚ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ  
إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ  
كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ  
لِصَاحِبِهِ لَا تُخَافَنَّ إِنَّ اللَّهَ مَعَنا ۖ فَأَنْزَلَ اللَّهُ  
سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَمْ تَرَوْهَا ۚ وَ  
جَعَلَ لَكُمُ الْيَوْمَ الْغَنَى وَالْغَنَى ۚ وَكَلِمَةً  
اللَّهُ هِيَ الْعُلْيَا ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ لَا تَقْرُوا  
خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ  
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ  
تَعْلَمُونَ ۚ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا  
لَا تَبْعُوكُمْ وَلَكِنْ بَعْدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّكَّةُ ۚ

مَدِينَةٍ



कठिन और बहुत दीर्घ प्रतीत हुई। अब वे अल्लाह की क़समें खाएँगे कि “यदि हममें इसकी सामर्थ्य होती तो हम अवश्य तुम्हारे साथ निकलते।” वे अपने आपको तबाही में डाल रहे हैं और अल्लाह भली-भाँति जानता है कि निश्चय ही वे झूठे हैं।

43. अल्लाह ने तुम्हें क्षमा कर दिया ! तुमने उन्हें क्यों अनुमति दे दी, यहाँ तक कि जो लोग सच्चे हैं वे तुम्हारे सामने प्रकट हो जाते और झूठों को भी तुम जान लेते ?

44. जो लोग अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं, वे तुमसे कभी यह नहीं चाहेंगे कि उन्हें अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करने से माफ़ रखा जाए। और अल्लाह डर रखनेवालों को भली-भाँति जानता है।

45. तुमसे छुट्टी तो बस वही लोग माँगते हैं जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिनके दिल संदेह में पड़े हैं, तो वे अपने संदेह ही में डाँवाडोल हो रहे हैं।

46. यदि वे निकलने का इरादा करते तो इसके लिए कुछ सामग्री जुटाते, किन्तु अल्लाह ने उनके उठने को नापसन्द किया तो उसने उन्हें रोक दिया। उनसे कह दिया गया : “बैठनेवालों के साथ बैठ रहो।”

47. यदि वे तुम्हारे साथ निकलते भी तो तुम्हारे अन्दर खराबी के सिवा किसी और चीज़ की अभिवृद्धि नहीं करते। और वे तुम्हारे बीच उपद्रव मचाने के लिए दौड़-धूप करते और तुममें उनकी सुननेवाले हैं। और अल्लाह

وَسَيَصْلَوْنَ بِاللهِ لَوْ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ  
يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ، وَاللهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝  
عَفَا اللهُ عَنْكَ، لَمْ أَذْنَبْ لَهُمْ حَتَّى يَتَّبِعِنَ  
لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ الْكَاذِبِينَ ۝ لَا  
يَسْتَاذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ  
الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ، وَاللهُ عَلَيْهِمُ  
بِالتَّقْوَى ۝ إِنَّمَا يَسْتَاذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ  
بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَازْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ  
فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ۝ وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ  
لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَكِنْ كَرِهَ اللهُ انْبِعَاثَهُمْ  
فَتَبَطَّهْمُ وَقِيلَ لِمَنْ أَقْعَدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ ۝ لَوْ  
خَرَجُوا فَنَجَّيْنَاهُمْ مِمَّا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا وَلَا أُفْعُوهَا  
خَلَلَكُمْ يَبْغُوزُكُمْ الْفِتْنَةُ، وَفِيكُمْ سَمْعُونَ

منزل



अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।

48. उन्होंने तो इससे पहले भी उपद्रव मचाना चाहा था और वे तुम्हारे विरुद्ध घटनाओं और मामलों के उलटने-पलटने में लगे रहे, यहाँ तक कि हक़ आ गया और अल्लाह का आदेश प्रकट होकर रहा, यद्यपि उन्हें अप्रिय ही लगता रहा।

49. उनमें कोई है, जो कहता है : "मुझे इजाज़त दे दीजिए, मुझे फ़ितने में न डालिए।" जान लो कि वे फ़ितने में तो पड़ ही चुके हैं और निश्चय ही जहन्नम भी इनकार करनेवालों को घेर रही है।

تَهُمُ دَوَّالَةٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا لَقَدْ ابْتِغَوْا  
الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّى جَاءَ  
الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَرِهُونَ ۖ وَمِنْهُمْ  
مَنْ يَقُولُ ائْذَنْ لِي وَلَا تَفْتِنِي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ  
سَقَطُوا ۖ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۚ إِنَّ  
تُصِيبَكَ حَسَنَةٌ تَأْتِيهِمْ ۖ وَإِنْ تُصِيبَكَ مُصِيبَةٌ  
يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرًا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا  
وَهُمْ قَرِحُونَ ۚ قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ  
اللَّهُ لَنَا ۖ هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ  
الْمُؤْمِنُونَ ۚ قُلْ هَلْ تَرْضَوْنَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى  
الْحُسْنَيْنَيْنِ ۚ وَتَمَنَّيْنَا أَنْ تُبَدِّلَنَا اللَّهُ  
بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهِ أَوْ بِإِذِينَا ۚ فَتَرَبَّصُوا  
إِنَّا مَعَكُمْ مُتَرَبِّصُونَ ۚ قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ

50. यदि तुम्हें कोई अच्छी हालत पेश आती है, तो उन्हें बुरा लगता है और यदि तुमपर कोई मुसीबत आ जाती है तो वे कहते हैं : "हमने तो अपना काम पहले ही सँभाल लिया था।" और वे खुश होते हुए पलटते हैं।

51. कह दो : "हमें कुछ भी पेश नहीं आ सकता सिवाय उसके जो अल्लाह ने लिख दिया है। वही हमारा स्वामी है। और ईमानवालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।"

52. कहो : "तुम हमारे लिए दो भलाइयों<sup>1</sup> में से किसी एक भलाई के सिवा किसकी प्रतीक्षा कर सकते हो? जबकि हमें तुम्हारे हक़ में इसी की प्रतीक्षा है कि अल्लाह अपनी ओर से तुम्हें कोई यातना देता है या हमारे हाथों दिलाता है। अच्छा तो तुम भी प्रतीक्षा करो, हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

53. कह दो : "तुम चाहे स्वेच्छापूर्वक खर्च करो या अनिच्छापूर्वक, तुमसे



कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा। निस्संदेह तुम अवज्ञाकारी लोग हो।”

54. उनके खर्च के स्वीकृत होने में इसके अतिरिक्त और कोई चीज़ बाधक नहीं कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया। नमाज़ को आते हैं तो बस हारे जी आते हैं और खर्च करते हैं, तो अनिच्छापूर्वक ही।

55. अतः उनके माल तुम्हें मोहित न करें और न उनकी संतान ही। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उनके द्वारा उन्हें सांसारिक जीवन में यातना दे और उनके प्राण इस दशा में निकलें कि वे इनकार करनेवाले ही रहें।

56. वे अल्लाह की क़समें खाते हैं कि वे तुम्ही में से हैं, हालाँकि वे तुममें से नहीं हैं, बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो त्रस्त रहते हैं।

57. यदि वे कोई शरण पा लें या कोई गुफा या घुस बैठने की जगह, तो अवश्य ही वे बगटुट उसकी ओर उल्टे भाग जाएँ।

58. और उनमें से कुछ लोग सदक़ों के विषय में तुमपर चोटें<sup>1</sup> करते हैं। किन्तु यदि उन्हें उसमें से दे दिया जाए तो प्रसन्न हो जाएँ और यदि उन्हें उसमें से न दिया गया तो क्या देखोगे कि वे क्रोधित होने लगते हैं।

59. यदि अल्लाह और उसके रसूल ने जो कुछ उन्हें दिया था, उसपर वे राज़ी रहते और कहते कि “हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है। अल्लाह हमें जल्द ही

كَرِهًا لَّن يَتَقَبَّلَ مِنكُم ۚ إِنَّكُم كُنْتُمْ قَوْمًا  
فَاسِقِينَ ۝ وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقَبَّلَ مِنْهُمْ تُفَقُّهُمْ  
إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَلَا يَأْتُونَ  
الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كَسَالَىٰ وَلَا يُنفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ  
كَرِهُونَ ۝ فَلَا تُغْنِيكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ  
إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا  
وَيَزَهِّقَ أَلْفُسَهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ وَيَعْلِفُونَ  
بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَيُنْكَرُ ۚ وَمَا هُمْ بِمُنْكَرٍ وَلَعَنَهُمُ  
قَوْمُ يُقْرِئُونَ ۝ لَوْ يَجِدُونَ مَلَجًا أَوْ مَغْرَبًا  
أَوْ مَدَخَلًا لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْحَدُونَ ۝ وَ مِنْهُمْ  
مَنْ يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ ۚ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا  
رَضُوا وَإِنْ لَمْ يُعْطُوا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ۝  
وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ

1. अर्थात् तुमपर इसका आरोपण करते हैं कि ख़ैरात (दान) बाँटने में तुम न्याय से काम नहीं लेते।



अपने अनुग्रह से देगा और उसका रसूल भी। हम तो अल्लाह ही की ओर उन्मुख हैं।" (तो यह उनके लिए अच्छा होता)।

60. सदके तो बस गरीबों, मुहताजों और उन लोगों के लिए हैं, जो इस काम पर नियुक्त हों और उनके लिए जिनके दिलों को आकृष्ट करना और परचाना अभीष्ट हो और गर्दनों को छुड़ाने और कर्जदारों और तावान भरनेवालों की सहायता करने में, अल्लाह के मार्ग में, मुसाफ़िरो की सहायता करने में लगाने के लिए हैं। यह अल्लाह की ओर से

وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ  
وَرَسُولُهُ ۖ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ۝ إِنَّمَا  
الصَّدَقَتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ عَلَيْهَا  
وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغَرَمِينَ وَ  
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۖ فَرِيضَةً مِّنَ  
اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَمِنْهُمْ الَّذِينَ  
يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ هُوَ أَذُنٌ ۚ قُلْ أَدُنُّ  
خَيْرٌ لَّكُمْ يَوْمِنَ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ  
وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ ۚ وَالَّذِينَ  
يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝  
يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيَرْضَوْكُمْ، وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ  
أَحَقُّ أَنْ يُرْضَوْا إِن كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۝ أَلَمْ  
يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَن يُحَادِدِ اللَّهَ ۚ وَاللَّهُ قَانٌ

ठहराया हुआ हुक्म है। अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

61. और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं, जो नबी को दुख देते हैं और कहते हैं : "वह तो निरा कान! है!" कह दो : "वह सर्वथा कान तुम्हारी भलाई के लिए है। वह अल्लाह पर ईमान रखता है और ईमानवालों पर भी विश्वास करता है। और उन लोगों के लिए सर्वथा दयालुता है जो तुममें से ईमान लाए हैं। रहे वे लोग जो अल्लाह के रसूल को दुख देते हैं, उनके लिए दुखद यातना है।"

62. वे तुम लोगों के सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं, ताकि तुम्हें राज़ी कर लें, हालाँकि यदि वे मोमिन हैं तो अल्लाह और उसका रसूल इसके ज़्यादा हक़दार हैं कि उनको राज़ी करें।

63. क्या उन्हें मालूम नहीं कि जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध

1. मुनाफ़िक़ नबी (सल्ल०) के विषय में यह भी कहते थे कि वे तो केवल कान होकर रह गए हैं। जो चाहता है कान भर देता है और उनको हमारे विरुद्ध भड़का देता है।



करता है, उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वह सदैव रहेगा। यह बहुत बड़ी रुसवाई है।

64. मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) डर रहे हैं कि कहीं उनके बारे में कोई ऐसी सूरा न अवतरित हो जाए जो वह सब कुछ उनपर खोल-दे, जो उनके दिलों में है। कह दो : “मज़ाक़ उड़ा लो, अल्लाह तो उसे प्रकट करके रहेगा, जिसका तुम्हें डर है।”

65. और यदि उनसे पूछो तो कह देंगे : “हम तो केवल बातें और हँसी-खेल कर रहे थे।” कहो : “क्या अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ हँसी-मज़ाक़ करते थे?”

66. बहाने न बनाओ, तुमने अपने ईमान के पश्चात इनकार किया। यदि हम तुम्हारे कुछ लोगों को क्षमा भी कर दें तो भी कुछ लोगों को यातना देकर ही रहेंगे, क्योंकि वे अपराधी हैं।”

67. मुनाफ़िक़ पुरुष और मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। वे बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से रोकते हैं और हाथों को बन्द किए रहते हैं। वे अल्लाह को भूल बैठे तो उसने भी उन्हें भुला दिया। निश्चय ही मुनाफ़िक़ अवज्ञाकारी हैं।

68. अल्लाह ने मुनाफ़िक़ पुरुषों और मुनाफ़िक़ स्त्रियों और इनकार करनेवालों से जहन्नम की आग का वादा किया है, जिसमें वे सदैव ही रहेंगे।

لَهُ نَارُ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ذَلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ أَنْ تُنْزَلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ قُلِ اسْتَهِزُّوا إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُونَ وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ قُلْ أَبِ اللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ إِنْ نَعْفَ عَنْ طَائِفَةٍ مِنْكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةٌ بِأَنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ أَسْأَلُ اللَّهَ فَتَيْهِمْ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ الْكَفَّارَ نَارَ



वही उनके लिए काफ़ी है और अल्लाह ने उनपर लानत की, और उनके लिए स्थाई यातना है।

69. उन लोगों की तरह, जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, वे शक्ति में तुमसे बढ़-चढ़कर थे और माल और औलाद में भी बढ़े हुए थे। फिर उन्होंने अपने हिस्से का मज़ा उठाना चाहा और तुमने भी अपने हिस्से से मज़ा उठाना चाहा, जिस प्रकार कि तुमसे पहले के लोगों ने अपने हिस्से का मज़ा उठाना चाहा, और जिस प्रकार वे वाद-विवाद में पड़े थे तुम भी वाद-विवाद में पड़ गए। ये वही लोग हैं जिनका किया-धरा दुनिया और आखिरत में अकारथ गया, और वही घाटे में हैं।

70. क्या उन्हें उन लोगों का वृत्तांत नहीं पहुँचा जो उनसे पहले गुज़रे हैं— नूह के लोगों का, आद और समूद का, और इबराहीम की क़ौम का और मदीयनवालों का और उन बस्तियों का जिन्हें उलट दिया गया? उनके रसूल उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए थे, फिर अल्लाह ऐसा न था कि वह उनपर अत्याचार करता, किन्तु वे स्वयं अपने-आप पर अत्याचार कर रहे थे।

71. रहे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, वे सब परस्पर एक-दूसरे के मित्र हैं। भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं। नमाज़ क़ायम करते हैं,

بَعَثْنَا خُلَيْدِينَ فِيهَا هِيَ حَسْبُهُمْ، وَلَعْنَهُمُ  
اللَّهُ، وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝ كَالَّذِينَ مِنْ  
قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَكَثُرَ أَمْوَالُهُمْ  
وَأَوْلَادُهُمْ فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَائِقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَائِقِكُمْ  
كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَائِقِهِمْ  
وَخُضْتُمْ كَالَّذِينَ خَلَّوْا أُولَئِكَ حِطَّةٌ  
أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، وَأُولَئِكَ هُمُ  
الْخَسِرُونَ ۝ أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ  
قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودَ ۚ وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ  
وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ  
بِالْبَيِّنَاتِ، فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا  
أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ  
بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ



ज़कात देते हैं और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करते हैं। ये वे लोग हैं, जिनपर शीघ्र ही अल्लाह दया करेगा। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

72. मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से अल्लाह ने ऐसे बागों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे और सदाबहार बागों में पवित्र निवास गृहों का (भी वादा है) और अल्लाह की प्रसन्नता और रज़ामन्दी का; जो सबसे बढ़कर है। यही सबसे बड़ी सफलता है।

73. ऐ नबी ! इनकार करनेवालों और मुनाफ़िकों से ज़िहाद करो और उनके साथ सख्ती से पेश आओ। अन्ततः उनका ठिकाना जहन्नम है और वह जा पहुँचने की बहुत बुरी जगह है !

74. वे अल्लाह की क़समें खाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा, हालाँकि उन्होंने अवश्य ही कुफ़्र की बात कही है और अपने इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात् इनकार किया, और वह चाहा जो वे न पा सके। उनके प्रतिशोध का कारण तो यह है कि अल्लाह और उसके रसूल ने अपने अनुग्रह से उन्हें समृद्ध कर दिया।

الْقُرْآنُ

٢٤٩

وَالْمَنَاجِدُ

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَ  
يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ  
أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ  
حَكِيمٌ ۝ وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ  
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا  
وَمَسْكِنٍ طَيِّبَةٍ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۝ وَرِضْوَانٌ  
مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝  
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ  
وَاعْلِظْ عَلَيْهِمْ ۝ وَمَا أُولَئِكَ بِجِهَنَّمَ  
الْمُصِيرِ ۝ يَعْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ  
قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَ  
هَتُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا وَمَا نَقَمُوا إِلَّا أَنْ  
أَغْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ ۝ فَإِنْ  
يَتُوبُوا يَكُ

مِّنَ



अब यदि वे तौबा कर लें तो उन्हीं के लिए अच्छा है और यदि उन्होंने मुँह मोड़ा तो अल्लाह उन्हें दुनिया और आखिरत में दुखद यातना देगा और धरती में उनका न कोई मित्र होगा और न सहायक।

75. और उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने अल्लाह को वचन दिया था कि "यदि उसने हमें अपने अनुग्रह से दिया तो हम अवश्य दान करेंगे और नेक होकर रहेंगे।"

76. किन्तु जब अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से दिया तो वे उसमें कंजूसी करने लगे और पहलू बचाकर फिर गए।

77. फिर परिणाम यह हुआ कि उसने उनके दिलों में उस दिन तक के लिए कपटाचार डाल दिया, जब वे उससे मिलेंगे, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह से जो प्रतिज्ञा की थी उसे भंग कर दिया और इसलिए भी कि वे झूठ बोलते रहे।

78. क्या उन्हें खबर नहीं कि अल्लाह उनका भेद और उनकी कानाफूसियों को अच्छी तरह जानता है और यह कि अल्लाह परोक्ष की सारी बातों को भली-भाँति जानता है।

79. जो लोग स्वेच्छापूर्वक देनेवाले मोमिनों पर उनके सदक़ों (दान) के विषय में चोटें करते हैं और उन लोगों का उपहास करते हैं, जिनके पास इसके सिवा कुछ नहीं जो वे मशक्कत उठाकर देते हैं, उन (उपहास करनेवालों) का

حَٰزِلًا لَهُمْ ۚ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا يَـُٔدِّبْهُمْ اللَّهُ  
عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ  
فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ وَمِنْهُمْ  
مَنْ عٰهَدَ اللَّهَ لَئِنْ آتَيْنَا مِنْ فَضْلِهِ  
لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصّٰلِحِينَ ۝ فَلَمَّا  
آتَاهُمْ مِنْ فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ  
مُعْرِضُونَ ۝ فَأَعْقَبَهُمْ نِقَاحًا فِي قُلُوبِهِمْ  
إِلَى يَوْمٍ يَلْقَوْنَ رَبَّآ أَخْلَفُوا اللَّهَ مَا  
وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝ أَلَمْ يَعْلَمُوا  
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ  
عَلَامُ الْغُيُوبِ ۝ الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ  
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ  
إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ ۚ سَخِرَ اللَّهُ

مَزَل



उपहास अल्लाह ने किया और उनके लिए दुखद यातना है।

80. तुम उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो या उनके लिए क्षमा की प्रार्थना न करो। यदि तुम उनके लिए सत्तर बार भी क्षमा की प्रार्थना करोगे, तो भी अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा, यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और अल्लाह अवज्ञाकारियों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।

81. पीछे रह जानेवाले अल्लाह के रसूल के पीछे अपने बैठ रहने पर प्रसन्न हुए। उन्हें यह नापसंद

हुआ कि अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करें। और उन्होंने कहा : "इस गर्मी में न निकलो।" कह दो : "जहन्नम की आग इससे कहीं अधिक गर्म है", यदि वे समझ पाते (तो ऐसा न कहते)।

82. अब चाहिए कि जो कुछ वे कमाते रहे हैं, उसके बदले में हँसें कम और रोएँ अधिक।

83. अब यदि अल्लाह तुम्हें उनके किसी गिरोह की ओर रुजू कर दे और भविष्य में वे तुमसे साथ निकलने की अनुमति चाहें तो कह देना : "तुम मेरे साथ कभी भी नहीं निकल सकते और न मेरे साथ होकर किसी शत्रु से लड़ सकते हो। तुम पहली बार बैठ रहने पर ही राज़ी हुए, तो अब पीछे रहनेवालों

مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ اَسْتَغْفِرُ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرُ لَهُمْ ۚ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ ۚ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ قِيَرَمَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خَلْفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْا اَنْ يُجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَزَنِ ۚ قُلْ نَارُكُمْ اَشَدُّ حَرًّا لَّوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝ فَلْيُضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَاءُ بِِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ اِنْ رَّجِعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَائِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَازَنُوْكَ لِلْحُرُوْبِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَلَنْ تَقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۚ اِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ

مَنْ



के साथ बैठे रहो।”

84. और उनमें से जिस किसी व्यक्ति की मृत्यु हो उसकी जनाजे की नमाज़ कभी न पढ़ना और न कभी उसकी क़ब्र पर खड़े होना। उन्होंने तो अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और मरे इस दशा में कि अवज्ञाकारी थे।

85. और उनके माल और उनकी औलाद तुम्हें मोहित न करें। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उनके द्वारा उन्हें संसार में यातना दे और उनके प्राण इस दशा में निकलें कि वे काफ़िर हों।

86. और जब कोई सूरा उतरती है कि “अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ होकर जिहाद करो।” तो उनके सामर्थ्यवान लोग तुमसे छुट्टी माँगने लगते हैं और कहते हैं कि “हमें छोड़ दो कि हम बैठनेवालों के साथ रह जाएँ।”

87. वे इसी पर राज़ी हुए कि पीछे रह जानेवाली स्त्रियों के साथ रह जाएँ और उनके दिलों पर तो मुहर लग गई है, अतः वे समझते नहीं।

88. किन्तु, रसूल और उसके ईमानवाले साथियों ने अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद किया, और वही लोग हैं जिनके लिए भलाइयाँ हैं और वही लोग हैं जो सफल हैं।

89. अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें

الْخَلِيفِينَ ۖ وَلَا تَصِلْ عَلَىٰ أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ  
أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ ۚ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَ  
رَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَسِقُونَ ۚ وَلَا تُغْنِيكَ  
أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّا نُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ  
بِهَآ فِي الدُّنْيَا وَتَرْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۚ  
وَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ أَمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ  
رَسُولِهِ ۚ أَسْتَأْذِنُكَ أُولُوا الظُّلُمِ مِنْهُمْ وَقَالُوا  
أُذِنَآ لَكُمْ مَعَ الْقَوْدِينَ ۚ نَصُؤَا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ  
الْحَوَافِيفِ وَطَبَعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۚ  
لَكُمْ الرِّسَالُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جُهَدُوا  
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ وَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ ۚ وَ  
أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۚ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ  
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ

مَذَل



बह रही हैं, वे उनमें सदैव रहेंगे।  
यही बड़ी सफलता है।

90. बहाने करनेवाले बददू भी आए कि उन्हें (बैठे रहने की) छुट्टी मिल जाए। और जो अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोले वे भी बैठे रहे। उनमें से जिन्होंने इनकार किया उन्हें शीघ्र ही एक दुखद यातना पहुँचकर रहेगी।

91. न तो कमजोरों के लिए कोई दोष की बात है और न बीमारों के लिए और न उन लोगों के लिए जिन्हें खर्च करने के लिए कुछ प्राप्त नहीं, जबकि वे अल्लाह और उसके रसूल के प्रति निष्ठावान हों। उत्तमकारों पर इलज़ाम की कोई गुंजाइश नहीं है। अल्लाह तो बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

92. और न उन लोगों पर आक्षेप करने की कोई गुंजाइश है जिनका हाल यह है कि जब वे तुम्हारे पास आते हैं, कि तुम उनके लिए सवारी का प्रबंध कर दो, तुम कहते हो : "मुझे ऐसा कुछ प्राप्त नहीं जिसपर तुम्हें सवार करूँ।" वे इस दशा में लौटते हैं कि इस ग़म में उनकी आँखें आँसू बहा रही होती हैं कि वे अपने पास खर्च करने को कुछ नहीं पाते।

93. इलज़ाम तो बस उनपर है जो धनवान होते हुए तुमसे छुट्टी माँगते हैं। वे इसपर राज़ी हुए कि पीछे डाले गए लोगों के साथ रह जाएँ। अल्लाह ने तो उनके दिलों पर मुहर लगा दी है, इसलिए वे जानते नहीं।

تَبٰرَكَ الَّذِي

تَبٰرَكَ الَّذِي

ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ  
الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا  
اللّهَ وَرُسُلَهُ ۚ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ  
عَذَابٌ اَلِيمٌ ۝ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى  
وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يَنْفِقُونَ حَرَجٌ اِذَا  
نَصَحُوا لِلّٰهِ وَرُسُلِهِ ۚ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنَ  
سَبِيلٍ ۚ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَلَا عَلَى الَّذِينَ  
اِذَا مَا اتَّوَكَّلْتَ لِيُخْلِيَهُمْ قُلْتَ لَا اَجِدُ مَا  
اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۚ تَوَلَّوْا وَاَعْيَنُهُمْ تَفِيضٌ مِنَ  
الدَّامِرِ ۚ حَرَجًا اَلَّا يَجِدُوا مَا يَنْفِقُونَ ۝ اِنَّمَا  
التَّسْيِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَاذِنُوكَ وَهُمْ  
اَغْنِيَاءُ ۚ رَضُوا بِاَنْ يَكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِیِ ۚ  
وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلَى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

مَثَلُهُ



94. जब तुम पलटकर उनके पास पहुँचोगे तो वे तुम्हारे सामने बहाने करेंगे। तुम कह देना : "बहाने न बनाओ। हम तुम्हारी बात कदापि नहीं मानेंगे। हमें अल्लाह ने तुम्हारे वृत्तांत बता दिए हैं। अभी अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे काम को देखेगा, फिर तुम उसकी ओर लौटोगे, जो छिपे और खुले का ज्ञान रखता है। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो वह तुम्हें बता देगा।"

95. जब तुम पलटकर उनके पास जाओगे तो वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएँगे, ताकि तुम उन्हें उनकी हालत पर छोड़ दो। तो तुम उन्हें छोड़ ही दो। निश्चय ही वे गन्दगी हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है। जो कुछ वे कमाते रहे हैं, यह उसी का बदला है।

96. वे तुम्हारे सामने क़समें खाएँगे ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, किन्तु यदि तुम उनसे राज़ी भी हो गए तो अल्लाह ऐसे लोगों से कदापि राज़ी न होगा, जो अवज्ञाकारी हैं।

97. ये बददू इनकार और कपटाचार में बहुत-ही बढ़े हुए हैं। और इसी के ज़्यादा योग्य हैं कि उसकी सीमाओं से अनभिज्ञ रहें, जिसे अल्लाह ने अपने रसूल पर अवतरित किया है। अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।

98. और कुछ बददू ऐसे हैं, कि वे जो कुछ खर्च करते हैं, उसे तावान समझते हैं और तुम्हारे हक़ में बुरी गर्दिशों (बुरे दिन) की प्रतीक्षा में हैं, बुरी

بَعْدُ زَوَانٍ لَكُمْ قَدْ نَبَأْنَا اللَّهَ مِنْ أَخْبَارِكُمْ  
وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَى  
عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ  
تَعْمَلُونَ ۝ سَيَعْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ  
إِلَيْهِمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۚ إِنَّهُمْ  
بِجَحْمٍ وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝  
يَعْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ  
فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝ الْأَعْرَابُ  
أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا  
أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَمِنَ  
الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَفْرَمًا وَيَتَرَبَّصُّ  
بِكُمْ الدَّوَابِرَ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْرِ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ



गर्दिश में तो वही हैं। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

99. और बददुओं में ऐसे भी लोग हैं जो अल्लाह और अंतिम दिन को मानते हैं और जो कुछ खर्च करते हैं उसे अल्लाह के यहाँ निकटताओं का और रसूल की दुआओं को प्राप्त करने का साधन बनाते हैं। हाँ! निस्संदेह वह उनके हक में निकटता ही है। अल्लाह उन्हें शीघ्र ही अपनी दयालुता में दाखिल करेगा। निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

100. सबसे पहले आगे बढ़नेवाले मुहाजिर और अनसार और जिन्होंने भली प्रकार उनका अनुसरण किया, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए। और उसने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, वे उनमें सदैव रहेंगे। यही बड़ी सफलता है।

101. और तुम्हारे आस-पास के बददुओं में और मदीनावालों में कुछ ऐसे कपटाचारी हैं जो कपट-नीति पर जमे हुए हैं। उनको तुम नहीं जानते, हम उन्हें भली-भाँति जानते हैं। शीघ्र ही हम उन्हें दो बार यातना देंगे। फिर वे एक बड़ी यातना की ओर लौटाए जाएँगे।

102. और दूसरे कुछ लोग हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का इकरार किया। उन्होंने मिले-जुले कर्म किए, कुछ अच्छे और कुछ बुरे। आशा है कि अल्लाह

عَلَيْهِمْ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ  
الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبَىٰ عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَوَاتُ  
الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَىٰ لَهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ  
فِي رَحْمَتِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالشَّيْقُونَ  
الْأَذْلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ ۚ وَالَّذِينَ  
اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا  
عَنْهُ ۚ وَاعِدَ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ  
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْقَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَمِمَّنْ  
خَوَّلَكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ مُنْفِقُونَ ۚ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَرَدُّوا  
عَلَىٰ الظَّفَاقِ ۚ لَا تَعْلَمُهُمْ ۚ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۚ  
سَنُعَذِّبُهُمْ مُّزَيَّنِينَ ثُمَّ يَرُدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ۚ  
وَأَخْرَجْنَا مَنَافِقِيهِمْ مِّنْ دُونِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا  
وَأَخْرَسَيْنَاهُمْ ۚ عَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ



की कृपा-दृष्टि उनपर हो। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

103. तुम उनके माल में से दान लेकर उन्हें शुद्ध करो और उसके द्वारा उन (की आत्मा) को विकसित करो और उनके लिए दुआ करो। निस्संदेह तुम्हारी दुआ उनके लिए सर्वथा परितोष है। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

104. क्या वे जानते नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और सदक़े लेता है और यह कि अल्लाह ही तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

105. कह दो : “कर्म किए जाओ। अभी अल्लाह और उसका रसूल और ईमानवाले तुम्हारे कर्म को देखेंगे। फिर तुम उसकी ओर पलटोगे, जो छिपे और खुले को जानता है। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो, वह सब तुम्हें बता देगा।”

106. और कुछ दूसरे लोग भी हैं जिनका मामला अल्लाह का हुक्म आने तक स्थगित है, चाहे वह उन्हें यातना दे या उनकी तौबा क़बूल करे। अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।

107. और कुछ ऐसे लोग भी हैं, जिन्होंने एक मस्जिद बनाई इसलिए कि नुक़सान पहुँचाएँ और कुफ़्र करें और इसलिए कि ईमानवालों के बीच फूट डालें और उस व्यक्ति के घात लगाने का ठिकाना बनाएँ, जो इससे पहले अल्लाह और उसके रसूल से लड़ चुका है। वे निश्चय ही क़समें खाएँगे कि “हमने तो बस अच्छा ही चाहा था।” किन्तु अल्लाह गवाही देता है कि वे बिलकुल झूठे हैं।

108. तुम कभी भी उसमें खड़े न होना। वह मस्जिद जिसकी आधारशिला

التوبة

التوبة

غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ  
وَتُزَكِّيَهُمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ  
لَّهُمْ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ  
هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ  
وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ وَقُلْ أَعْمَلُوا فَسِرَّ  
اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ وَسِرُّدُونِ  
إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنْثِقُكُمْ بِهَا كُنْتُمْ  
تَعْمَلُونَ ۝ وَآخَرُونَ مُّرْجُونَ إِلَىٰ اللَّهِ إِمَّا  
يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ  
حَكِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْهُمْ ضِرَارًا وَكُفْرًا  
وَتَفَرُّيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِصْرًا لِمَنْ حَارَبَ  
اللَّهُ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَادْنَا  
إِلَّا الْحَسَنَ ۚ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ لَا تَقُمْ

مَنْزِل



पहले दिन ही से ईशपरायणता पर रखी गई है, वह इसकी ज्यादा हकदार है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग पाए जाते हैं, जो अच्छी तरह स्वच्छ रहना पसन्द करते हैं, और अल्लाह भी पाक-साफ़ रहनेवालों को पसन्द करता है।

109. फिर क्या वह अच्छा है जिसने अपने भवन की आधारशिला अल्लाह के भय और उसकी खुशी पर रखी है या वह, जिसने अपने भवन की आधारशिला किसी खाई के खोखले कगार पर रखी, जो गिरने ही को है। फिर वह उसे लेकर जहन्नम की आग में जा गिरा? अल्लाह तो अत्याचारी लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।

110. उनका यह भवन जो उन्होंने बनाया है, सदैव उनके दिलों में खटक बनकर रहेगा। हाँ, यदि उनके दिल ही टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ तो दूसरी बात है। अल्लाह तो सब कुछ जाननेवाला, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

111. निस्संदेह अल्लाह ने ईमानवालों से उनके प्राण और उनके माल इसके बदले में खरीद लिए हैं कि उनके लिए जन्नत है। वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं, तो वे मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं। यह उसके ज़िम्मे तौरात, इनजील और कुरआन में (किया गया) एक पक्का वादा है। और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को पूरा करनेवाला हो भी कौन सकता है? अतः अपने उस सौदे पर खुशियाँ मनाओ, जो सौदा तुमने उससे किया है। और यही

الْقَوْمِ

بِشَيْءٍ

فِيهِ أَبَدًا كَسِبُوا عَلَىٰ النَّفْسِ مِنْ أَوَّلِ  
يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ  
يُتَّخَذُوا لِلَّهِ يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ ۝ أَكُنْ أَسَسَ  
بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَم مِّنْ  
أَسَسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شِقَاقٍ حَرُوفٍ هَٰذَا قَائِمًا رَّيْبُهُ  
فِي تَارِجِهِمْ ۝ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝  
لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا  
أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۝ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ  
اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ  
لَّهُمُ الْجَنَّةَ ۝ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَ  
يُقْتَلُونَ ۝ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقٌّ فِي التَّوْرَةِ ۝ وَإِلَّا نَجْعَلَ  
وَالْقُرْآنِ ۝ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۝ فَاسْتَبْشِرُوا  
بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۝ وَذَٰلِكَ هُوَ الْقَوْمُ

مَذْهُبٌ



सबसे बड़ी सफलता है।

112. वे ऐसे हैं, जो तौबा करते हैं, बन्दगी करते हैं, स्तुति करते हैं, (अल्लाह के मार्ग में) भ्रमण करते हैं, (अल्लाह के आगे) झुकते हैं, सजदा करते हैं, भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और अल्लाह की निर्धारित सीमाओं की रक्षा करते हैं—और इन ईमानवालों को शुभ-सूचना दे दो।

113. नबी और ईमान लानेवालों के लिए उचित नहीं कि वे बहुदेववादियों के लिए क्षमा की प्रार्थना करें, यद्यपि वे उनके नातेदार ही क्यों न हों, जबकि उनपर यह बात खुल चुकी है कि वे भड़कती आगवाले हैं।

114. इबराहीम ने अपने बाप के लिए जो क्षमा की प्रार्थना की थी, वह तो केवल एक वादे के कारण की थी, जो वादा वह उससे कर चुका था। फिर जब उसपर यह बात खुल गई कि वह अल्लाह का शत्रु है तो वह उससे विरक्त हो गया। वास्तव में, इबराहीम बड़ा ही कोमल हृदय, अत्यन्त सहनशील था।

115. अल्लाह ऐसा नहीं कि लोगों को पथभ्रष्ट ठहराए, जबकि वह उनको राह पर ला चुका हो, जब तक कि उन्हें साफ़-साफ़ वे बातें बता न दे, जिनसे उन्हें बचना है। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ को भली-भाँति जानता है।

116. आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है, वही जिलाता और मारता है। अल्लाह से हटकर न तुम्हारा कोई मित्र है और न सहायक।

117. अल्लाह नबी पर मेहरबान हो गया और मुहाजिरों और अनसार पर भी,

التَّائِبِينَ

التَّائِبِينَ

الْعَظِيمِ ۝ التَّائِبُونَ الْعِمِدُونَ الْحَمْدُونَ  
التَّائِبُونَ الزَّكُّونَ الشَّاهِدُونَ الْأَمْرُونَ  
بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُونَ  
لِحُدُودِ اللَّهِ ۝ وَيُبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَ  
الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلشَّارِكِينَ وَلَوْ كَانُوا  
أُولَىٰ قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ  
الْجَحِيمِ ۝ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا  
عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ ۖ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ  
عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۝  
وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ  
يَبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ  
اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَيُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا  
لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ لَقَدْ

مَذَلَّ



जिन्होंने तंगी की घड़ी में उसका साथ दिया, इसके पश्चात कि उनमें से एक गिरोह के दिल कुटिलता की ओर झुक गए थे। फिर उसने उनपर दया-दृष्टि दर्शाई। निस्संदेह वह उनके लिए अत्यन्त करुणामय, दयावान है।

118. और उन तीनों पर भी जो पीछे छोड़ दिए गए थे, यहाँ तक कि जब धरती विशाल होते हुए भी उनपर तंग हो गई और उनके प्राण उनपर दूभर हो गए और उन्होंने समझा कि अल्लाह से बचने के लिए कोई शरण नहीं मिल सकती—मिल सकती है तो उसी

के यहाँ। फिर उसने उनपर कृपा-दृष्टि की ताकि वे पलट आएँ। निस्संदेह अल्लाह ही तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

119. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह का डर रखो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ।

120. मदीनावालों और उनके आसपास के बद्दुओं को ऐसा नहीं चाहिए था कि अल्लाह के रसूल को छोड़कर पीछे रह जाएँ और न यह कि उसकी जान के मुक़ाबले में उन्हें अपनी जान अधिक प्रिय हो, क्योंकि वह अल्लाह के मार्ग में प्यास या थकान या भूख की कोई भी तकलीफ़ उठाएँ या किसी ऐसी जगह क़दम रखें, जिससे काफ़िरों का क्रोध भड़के या जो चरका भी वे शत्रु को

تَبَّ اللَّهُ عَلَى الْفُجَّارِ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبَ فِرْعَوْنَ مِنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ ۝ وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِقُوا ۖ حَتَّىٰ إِذَا صَافَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَصَافَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَن لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ۝ مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ بِأَنَّهُمْ لَا يُصَلِّيهُمْ ظُلُمًا وَلَا نَضَبٌ وَلَا مَخِصَّةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَتُكُونُونَ مَوْطِئًا يُغِیْظُ الْكَافِرَ وَلَا يَتَّكُونَ

مَعَهُ



लगाएँ, उसपर उनके हक में अनिवार्यतः एक सुकर्म लिख लिया जाता है। निस्संदेह अल्लाह उत्तमकार का कर्मफल अकारथ नहीं जाने देता।

121. और वे थोड़ा या ज्यादा जो कुछ भी खर्च करें या (अल्लाह के मार्ग में) कोई घाटी पार करें, उनके हक में अनिवार्यतः लिख लिया जाता है, ताकि अल्लाह उन्हें उनके अच्छे कर्मों का बदला प्रदान करे।

122. यह तो नहीं कि ईमानवाले सब के सब निकल खड़े हों, फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ कि उनके हर गिरोह में से कुछ लोग निकलते, ताकि वे धर्म में समझ प्राप्त करते और ताकि वे अपने लोगों को सचेत करते, जब वे उनकी ओर लौटते, ताकि वे (बुरे कर्मों से) बचते ?

123. ऐ ईमान लानेवालो ! उन इनकार करनेवालों से लड़ो जो तुम्हारे निकट हैं और चाहिए कि वे तुममें सख्ती पाएँ, और जान रखो कि अल्लाह डर रखनेवालों के साथ है।

124. जब भी कोई सूरा अवतरित की गई, तो उनमें से कुछ लोग कहते हैं : "इसने तुममें से किसके ईमान को बढ़ाया ?" हाँ, जो लोग ईमान लाए हैं इसने उनके ईमान को बढ़ाया है। और वे आनन्द मना रहे हैं।

125. रहे वे लोग जिनके दिलों में रोग है, उनकी गन्दगी में अभिवृद्धि करते हुए उसने उन्हें उनकी अपनी गन्दगी में और आगे बढ़ा दिया। और वे मरे तो

التوبة

التوبة

مِنْ عَدُوٍّ تَبَيَّنَ إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ ۚ  
إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَلَا يُنْفِقُونَ  
نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا  
إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝  
وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ  
كُلِّ فِرْقَةٍ مِنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ  
وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ  
يَحْذَرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ  
يَلُونَكُمْ مِنَ الْكُفَّارِ وَلِجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَعَلِمُوا  
أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝ وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ  
فَمِنْهُمْ مَنِ يَقُولُ أَيْكُمُ زَادَتْ هَذِهِ آيَاتًا ۚ فَأَمَّا  
الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ وَ  
أَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَى

مَزِيدًا



इनकार की दशा ही में।

126. क्या वे देखते नहीं कि प्रत्येक वर्ष वे एक या दो बार आजमाइश में डाले जाते हैं? फिर भी न तो वे तौबा करते हैं और न चेतते हैं।

127. और जब कोई सूरा अवतरित होती है, तो वे परस्पर एक-दूसरे को देखने लगते हैं कि "तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा है।" फिर पलट जाते हैं। अल्लाह ने उनके दिल फेर दिए हैं, क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं।

128. तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असह्य है। वह तुम्हारे लिए लालायित है। वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान है।

129. अब यदि ये मुँह मोड़ें तो कह दो : "मेरे लिए अल्लाह काफी है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं! उसी पर मैंने भरोसा किया और वही बड़े सिंहासन का प्रभु है।"

يُونُس

يُنْفِثُونَ

يَجْرِيهِمْ وَهُمْ كُفْرًا ۖ أَوَلَا يَرَوْنَ  
أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا  
يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذْكُرُونَ ۖ وَإِذَا مَا أَنْزَلَتْ سُورَةٌ  
نَظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ هَلْ يَرِيكُمْ مِنْ أَحَدٍ ثُمَّ  
انصَرَفُوا صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا  
يَفْقَهُونَ ۖ لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ  
عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ  
رَحِيمٌ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا  
هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

سُورَةُ يُونُسَ مَكِّيَّةٌ (١٠) بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الرَّسُولُكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ۖ أَكَانَ لِلنَّاسِ  
عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ

مِثْلَهُ

## 10. यूनस

(मक्का में उतरी— आयतें 109)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० रा०। ये तत्त्वदर्शितायुक्त किताब की आयतें हैं।

2. क्या लोगों को इस बात पर आश्चर्य है कि हमने उन्हीं में से एक आदमी की ओर प्रकाशना की कि लोगों को सचेत कर दो और जो लोग मान लें, उनको शुभ समाचार दे दो कि उनके लिए उनके रब के पास शाश्वत



सच्चा उन्नत स्थान है? इनकार करनेवाले कहने लगे : "निस्संदेह यह एक खुला जादूगर है।"

3. निस्संदेह तुम्हारा रब वही अल्लाह है, जिसने आकाशों और धरती को छः दिनों में पैदा किया, फिर सिंहासन पर विराजमान होकर व्यवस्था चला रहा है। उसकी अनुज्ञा के बिना कोई सिफारिश करनेवाला नहीं है। वह अल्लाह है तुम्हारा रब। अतः उसी की बन्दगी करो। तो क्या तुम ध्यान न दोगे?

4. उसी की ओर तुम सबको लौटना है। यह अल्लाह का पक्का वादा है। निस्संदेह वही पहली बार पैदा करता है। फिर दोबारा पैदा करेगा, ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें न्यायपूर्वक बदला दे। रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनके लिए खौलता पेय और दुखद यातना है, उस इनकार के बदले में जो वे करते रहे।

5. वही है जिसने सूर्य को सर्वथा दीप्ति और चन्द्रमा को प्रकाश बनाया और उनके लिए मंजिलें निश्चित कीं, ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो। अल्लाह ने यह सब कुछ सोद्देश्य ही पैदा किया है। वह अपनी निशानियों को उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करता है, जो जानना चाहें।

6. निस्संदेह रात और दिन के उलट-फेर में और जो कुछ अल्लाह ने

وَيُفِيهِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا لَكَاذِبٌ مُّبِينٌ ۝  
إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُدِيرُ الْأَمْرَ مَا مِنْ شَافِعٍ إِلَّا مِنْ بَعْدِ إِذْنِهِ ۚ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبَّكُمْ ۚ فَاعْبُدُوهُ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۚ وَعِنْدَ اللَّهِ حَقُّهُ رَبُّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ النِّجْمِينَ ۚ وَ الْحِسَابِ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ

مَنْعِهِ



आकाशों और धरती में पैदा किया उसमें डर रखनेवाले लोगों के लिए निशानियाँ हैं।

7. रहे वे लोग जो हमसे मिलने की आशा नहीं रखते और सांसारिक जीवन ही पर निहाल हो गए हैं और उसी पर संतुष्ट हो बैठे, और जो हमारी निशानियों की ओर से असावधान हैं;

8. ऐसे लोगों का ठिकाना आग है, उसके बदले में जो वे कमाते रहे।

9. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनका रब उनके ईमान के कारण उनका मार्गदर्शन करेगा। उनके नीचे नेमत भरी जन्नतों में नहरें बह रही होंगी।

10. वहाँ उनकी पुकार यह होगी कि "महिमा है तेरी, ऐ अल्लाह!" और उनका पारस्परिक अभिवादन "सलाम" होगा। और उनकी पुकार का अंत इसपर होगा कि "प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे संसार का रब है।"

11. यदि अल्लाह लोगों के लिए उनके जल्दी मचाने के कारण भलाई की जगह बुराई को शीघ्र घटित कर दे तो उनकी ओर उनकी अवधि पूरी कर दी जाए, किन्तु हम उन लोगों को जो हमसे मिलने की आशा नहीं रखते उनकी अपनी सरकशी में भटकने के लिए छोड़ देते हैं।

12. मनुष्य को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है, वह लेटे या बैठे या खड़े हमको पुकारने लग जाता है। किन्तु जब हम उसकी तकलीफ़ उससे दूर कर देते हैं तो

وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا يَتَّبِعُونَ يَقَوْمٌ يَتَّبِعُونَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ إِقَاءَنَا وَرَضُوا بِأَحْيَاةِ الدُّنْيَا وَأُطَاعُوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَافِلُونَ ۚ أُولَٰئِكَ مَا لَهُمْ مِنَ النَّارِ إِلَّا أَنْ يَكْسِبُونَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِآيَاتِهِمْ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتٍ النَّعِيمِ ۖ دَعْوُهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّاتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۖ وَأُخْرُ دَعْوُهُمْ أَنَّ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَنَأْتِيَ الشَّرَّاسْتَعْجِلَ لَهُمُ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ ۖ فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ إِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۖ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا بِخِبْنَةٍ أَوْ قَائِدًا أَوْ فَأْتِمْنَا ۖ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّكَانَ كَأَن لَّمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ



वह इस तरह चल देता है मानो कभी कोई तकलीफ पहुँचने पर उसने हमें पुकारा ही न था। इसी प्रकार मर्यादाहीन लोगों के लिए जो कुछ वे कर रहे हैं सुहावना बना दिया गया है।

13. तुमसे पहले कितनी ही नस्लों को, जब उन्होंने अत्याचार किया, हम विनष्ट कर चुके हैं, हालाँकि उनके मूल उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए थे। किन्तु वे ऐसे न थे कि उन्हें मानते। अपराधी लोगों को हम इसी प्रकार बदला दिया करते हैं।

14. फिर उनके पश्चात हमने धरती में उनकी जगह तुम्हें रखा, ताकि हम देखें कि तुम कैसे कर्म करते हो।

15. और जब उनके सामने हमारी खुली हुई आयतें पढ़ी जाती हैं तो वे लोग, जो हमसे मिलने की आशा नहीं रखते, कहते हैं : "इसके सिवा कोई और कुरआन ले आओ या इसमें कुछ परिवर्तन करो।" कह दो : "मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी ओर से इसमें कोई परिवर्तन करूँ। मैं तो बस उसका अनुपालन करता हूँ, जो प्रकाशना मेरी ओर अवतरित की जाती है। यदि मैं अपने प्रभु की अवज्ञा करूँ तो इसमें मुझे एक बड़े दिन की यातना का भय है।"

16. कह दो : "यदि अल्लाह चाहता तो मैं तुम्हें यह पढ़कर न सुनाता और न वह तुम्हें इससे अवगत कराता। आखिर इससे पहले मैं तुम्हारे बीच जीवन की पूरी अवधि व्यतीत कर चुका हूँ। फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?"

17. फिर उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर

مَنْ قَسَتْهُ ۖ كَذَلِكَ رُبَّمَا لِّلْمُتَّبِعِينَ ۖ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝  
وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونُ مِن قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۖ وَ  
جَاءَهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۖ  
كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝ ثُمَّ جَعَلْنَاكَ  
خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ مِن بَعْدِهِمْ ۖ لِنَنْظُرَ كَيْفَ  
تَعْمَلُونَ ۖ وَإِذَا تَنَزَّلْنَا مِنَّا بِآيَاتِنَا ۖ قَالَ  
الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا إِنِّي وَكَأَنِّي بُرِّئٌ ۖ  
أَوْ بَدِّلْهُ ۖ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَن أُبَدِّلَهُ مِن تِلْقَآئِي  
نَفْسِي ۖ إِن أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۖ إِنِّي أَخَافُ أَن  
عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابٌ عَظِيمٌ ۖ قُلْ لَوْ شَاءَ  
اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُمْ بِهِ ۖ فَقَدْ  
كُنْتُ فِيكُمْ عُمَرًا مِّن قَبْلِهِ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۖ قَسَنَ  
أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ

مَنْ



थोपकर झूठ घड़े या उसकी आयतों को झुठलाए? निस्संदेह अपराधी कभी सफल नहीं होते।

18. वे लोग अल्लाह से हटकर उनको पूजते हैं, जो न उनका कुछ बिगाड़ सकें और न उनका कुछ भला कर सकें। और वे कहते हैं : “ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारिशी हैं।” कह दो : “क्या तुम अल्लाह को उसकी खबर देनेवाले हो, जिसका अस्तित्व न उसे आकाशों में ज्ञात है न धरती में?” महिमावान है वह और उसकी उच्चता के प्रतिकूल है वह शिर्क, जो वे कर रहे हैं।

19. सारे मनुष्य एक ही समुदाय थे। वे तो स्वयं अलग-अलग हो रहे। और यदि तेरे रब की ओर से पहले ही एक बात निश्चित न हो गई होती, तो उनके बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर दिया जाता जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं।

20. वे कहते हैं : “उसपर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी?” तो कह दो : “परोक्ष तो अल्लाह ही से सम्बन्ध रखता है। अच्छा, प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।”

21. जब हम लोगों को उनके किसी तकलीफ़ में पड़ने के पश्चात दयालुता का रसास्वादन कराते हैं तो वे हमारी आयतों के विषय में चालबाज़ियाँ करने लग जाते हैं। कह दो : “अल्लाह की चाल ज़्यादा तेज़ है।” निस्संदेह जो चालबाज़ियाँ तुम कर रहे हो, हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनको लिखते जा रहे हैं।

22. वही है जो तुम्हें थल और जल में चलाता है, यहाँ तक कि जब तुम नौका

إِنَّهُ لَا يَغْلِبُهُ الْمُجْرِمُونَ ۝ وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۖ قُلْ أَتَدْعُونَ اللَّهَ مَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۖ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَنَّا يُشْرِكُونَ ۝ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَفُضِي بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۚ وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا ۚ إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝ وَإِذَا أَدَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّن بَعْدِ صَرَاءٍ مَّتَنَّهُمْ إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ فِي آيَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَكْفُرُونَ ۚ هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ حَتَّى إِذَا كُنْتُمْ فِي



में होते हो और वह लोगों को लिए हुए अच्छी अनुकूल वायु के सहारे चलती है और वे उससे हर्षित होते हैं कि अकस्मात उनपर प्रचण्ड वायु का झोंका आता है, हर ओर से लहरें उनपर चली आती हैं और वे समझ लेते हैं कि बस अब वे धिर गए, उस समय वे अल्लाह ही को, निरी उसी पर आस्था रखकर, पुकारने लगते हैं : "यदि तूने हमें इससे बचा लिया तो हम अवश्य आभारी होंगे।"

23. फिर जब वह उनको बचा लेता है, तो क्या देखते हैं कि वे नाहक धरती में सरकशी करने लग जाते हैं। ऐ लोगो ! तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही विरुद्ध है। सांसारिक जीवन का सुख ले लो। फिर तुम्हें हमारी ही ओर लौटकर आना है। फिर हम तुम्हें बता देंगे जो कुछ तुम करते रहे होगे।

24. सांसारिक जीवन की उपमा तो बस ऐसी है जैसे हमने आकाश से पानी बरसाया, तो उसके कारण धरती से उगनेवाली चीजें, जिनको मनुष्य और चौपाये सभी खाते हैं, घनी हो गई, यहाँ तक कि जब धरती ने अपना शृंगार कर लिया और सँवर गई और उसके मालिक समझने लगे कि उन्हें उसपर पूरा अधिकार प्राप्त है कि रात या दिन में हमारा आदेश आ पहुँचा। फिर हमने उसे कटी फ़सल की तरह कर दिया, मानो कल वहाँ कोई आबादी ही न थी। इसी तरह हम उन लोगों के लिए खोल-खोलकर निशानियाँ बयान करते

يُخَسِّدُونَ  
الْفُلُكَ، وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ تَفْرِخُهَا  
جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ  
مَكَانٍ وَظَنُوا أَنَّهُمْ أُخِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ  
لَهُ الدِّينَ ۚ لَئِنْ أَجَبْنَاهُمْ مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ  
الشَّاكِرِينَ ۚ فَلَمَّا أَتَجَمَّهْمُ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ  
بَغْزٍ الْحَقِّ ۚ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ  
مَتَاءَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ  
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا  
كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ  
الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ ۚ حَتَّىٰ إِذَا  
أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا  
أَنَّهُمْ قُلُودُونَ ۚ عَلَيْهَا ۖ أَنشَأَ أَمْرًا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا  
فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْنَبْ ۖ يَا لَأَمْسٍ ۚ كَذَلِكَ



हैं, जो सोच-विचार से काम लेना चाहें।

25. और अल्लाह तुम्हें सलामती के घर की ओर बुलाता है, और जिसे चाहता है सीधी राह चलाता है;

26. अच्छे से अच्छा कर्म करनेवालों के लिए अच्छा बदला है और इसके अतिरिक्त और भी। और उनके चेहरों पर न तो कलौस छाएगी और न ज़िल्लत। वही जन्नतवाले हैं; वे उसमें सदैव रहेंगे।

27. रहे वे लोग जिन्होंने बुराईयाँ कमाई, तो एक बुराई का बदला भी उसी जैसा होगा; और ज़िल्लत उनपर छा रही होगी। उन्हें अल्लाह से बचानेवाला कोई न होगा। उनके चेहरों पर मानो अँधेरी रात के टुकड़े ओढ़ा दिए गए हों। वही आगवाले हैं, उन्हें उसमें सदैव रहना है।

28. और जिस दिन हम उन सबको इकट्ठा करेंगे, फिर उन लोगों से, जिन्होंने शिर्क किया होगा, कहेंगे: "अपनी जगह ठहरे रहो तुम भी और तुम्हारे साझीदार भी।" फिर हम उनके बीच अलगाव पैदा कर देंगे, और उनके ठहराए हुए साझीदार कहेंगे: "तुम हमारी तो बन्दगी नहीं करते थे।

29. हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह ही एक गवाह काफ़ी है। हमें तो तुम्हारी बन्दगी की खबर तक न थी।"

30. वहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने पहले के किए हुए कर्मों को स्वयं जाँच लेगा और

يُونُسُ  
نَحْنُ نَحْنُ  
نَفْصِلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَىٰ  
دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝  
لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ ۖ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ  
قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا  
خَالِدُونَ ۖ وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ  
بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاجِزٍ  
كَأَنَّمَا أَغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطْعًا مِنَ الْعِلِّ ۖ مُظْلِمًا  
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ وَيَوْمَ  
نُخْشِرُهُم جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا  
مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ ۖ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ  
شُرَكَاءُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِلَّا نَا تَعْبُدُونَ ۖ فَكَفَىٰ بِاللهِ  
سَهِيْدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادِكُمْ  
لَغَافِلِينَ ۖ هُنَالِكَ تَبْلُو كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ ۚ وَ



वह अल्लाह, अपने वास्तविक स्वामी की ओर फिरेंगे और जो कुछ झूठ वे घड़ते रहे थे, वह सब उनसे गुम होकर रह जाएगा।

31. कहो : “तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी कौन देता है, या ये कान और आँखें किसके अधिकार में हैं और कौन जीवन्त को निर्जीव से निकालता है और निर्जीव को जीवन्त से निकालता है और कौन यह सारा इन्तिज़ाम चला रहा है?” इस पर वे बोल पड़ेंगे : “अल्लाह!” तो कहो : “फिर आखिर तुम क्यों नहीं डर रखते?”

32. फिर यही अल्लाह तो है तुम्हारा वास्तविक रब। फिर आखिर सत्य के पश्चात पथभ्रष्टता के अतिरिक्त और क्या रह जाता है? फिर तुम कहाँ से फिरे जाते हो?

33. इसी तरह अवज्ञाकारी लोगों के प्रति तुम्हारे रब की बात सच्ची होकर रही कि वे मानेंगे नहीं।

34. कहो : “क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में कोई है जो सृष्टि का आरंभ भी करता हो, फिर उसकी पुनरावृत्ति भी करे?” कहो : “अल्लाह ही सृष्टि का आरंभ करता है और वही उसकी पुनरावृत्ति भी; आखिर तुम कहाँ औंधे हुए जाते हो?”

35. कहो : “क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में कोई है जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करे?” कहो : “अल्लाह ही सत्य के मार्ग पर चलाता है। फिर जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता हो, वह इसका ज़्यादा हक़दार है कि उसका अनुसरण किया जाए या वह जो स्वयं ही मार्ग न पाए जब तक कि उसे मार्ग न दिखाया

يُفْتَرُونَ ۚ قُلْ مَنْ يُزِيلُكُم مِّنَ السَّمَاوَاتِ  
الْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ  
يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ  
الْحَيِّ وَمَنْ يُدِيرُ الْأَمْرَ ۚ فَيَقُولُونَ اللَّهُ ۚ قُلْ  
أَفَلَا تَتَّقُونَ ۚ قَدْ لَكُمْ اللَّهُ رُكْبَمٌ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ  
الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ ۚ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ ۚ كَذَلِكَ حَقَّتْ  
كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ  
قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَن يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ  
يُعِيدُهُ ۚ قُلْ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ فَكَيْفَ  
تُؤْفَكُونَ ۚ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَن يَهْدِي إِلَى  
الْحَقِّ ۚ قُلْ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ ۚ أَفَمَنْ يَهْدِي إِلَى  
الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمَّنْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ يَهْدَىٰ

مَعْلُومٌ



जाए? फिर यह तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसे फ़ैसले कर रहे हो?"

36. और उनमें से अधिकतर तो बस अटकल पर चलते हैं। निश्चय ही अटकल सत्य को कुछ भी दूर नहीं कर सकती।<sup>1</sup> वे जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसको भली-भाँति जानता है।

37. यह कुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह से हटकर घड़े लिया जाए, बल्कि यह तो जिसके समक्ष है, उसकी पुष्टि में है और किताब का विस्तार है, जिसमें किसी संदेह की गुंजाइश नहीं। यह सारे संसार के रब की ओर से है।

فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ وَمَا يَنْتِمْ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَى مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ وَ مِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ وَ رَّبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِي عَمَلٌ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ أَنْتُمْ بَرِيغُونَ وَمِمَّا أَعْمَلُ

38. (क्या उन्हें कोई खटक है) या वे कहते हैं : "इस व्यक्ति (पैग़म्बर) ने उसे स्वयं ही घड़ लिया है?" कहो : "यदि तुम सच्चे हो, तो इस जैसी एक सूरा ले आओ और अल्लाह से हटकर उसे बुला लो, जिसपर तुम्हारा बस चले।"

39. बल्कि बात यह है कि जिस चीज़ के ज्ञान पर वे हावी न हो सके, उसे उन्होंने झुठला दिया और अभी उसका परिणाम उनके सामने नहीं आया। इसी प्रकार उन लोगों ने भी झुठलाया था, जो इनसे पहले थे। फिर देख लो उन अत्याचारियों का कैसा परिणाम हुआ!

40. उनमें कुछ लोग उसपर ईमान रखनेवाले हैं और उनमें कुछ लोग उसपर ईमान लानेवाले नहीं हैं। और तुम्हारा रब बिगाड़ पैदा करनेवालों को भली-भाँति जानता है।

41. और यदि वे तुझे झुठलाएँ तो कह दो : "मेरा कर्म मेरे लिए है और

1. अर्थात् अटकल कदापि सत्य का बदल (Substitute) नहीं हो सकती।



तुम्हारा कर्म तुम्हारे लिए। जो कुछ मैं करता हूँ उसकी ज़िम्मेदारी से तुम बरी हो और जो कुछ तुम करते हो उसकी ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूँ।”

42. और उनमें बहुत-से ऐसे लोग हैं जो तेरी ओर कान लगाते हैं। किन्तु क्या तू बहरों को सुनाएगा, चाहे वे समझ न रखते हों?

43. और कुछ उनमें ऐसे हैं, जो तेरी ओर ताकते हैं, किन्तु क्या तू अंधों को मार्ग दिखाएगा, चाहे उन्हें कुछ सूझता न हो?

44. अल्लाह तो लोगों पर तनिक भी अत्याचार नहीं करता, किन्तु लोग स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार करते हैं।

45. जिस दिन वह उनको इकट्ठा करेगा तो ऐसा जान पड़ेगा जैसे वे दिन की एक घड़ी भर ठहरे थे। वे परस्पर एक-दूसरे को पहचानेंगे। वे लोग घाटे में पड़ गए, जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और वे मार्ग न पा सके।

46. जिस चीज़ का हम उनसे वादा करते हैं उसमें से कुछ चाहे तुझे दिखा दें या हम तुझे (इससे पहले) उठा लें, उन्हें तो हमारी ओर लौटकर आना ही है। फिर जो कुछ वे कर रहे हैं उसपर अल्लाह गवाह है।

47. प्रत्येक समुदाय के लिए एक रसूल है। फिर जब उनके पास उनका रसूल आ जाता है तो उनके बीच न्यायपूर्वक फ़ैसला कर दिया जाता है। उनपर कुछ भी अत्याचार नहीं किया जाता।

48. वे कहते हैं: “यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?”

49. कहो: “मुझे अपने लिए न तो किसी हानि का अधिकार प्राप्त है और न

وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُونَ  
إِلَيْكَ ۖ أَفَأَنْتَ تَنْصِتُ لَهُمْ ۚ وَإِنْ يُلْقُوا  
وَلَوْ كَانُوا لَا يَبْصُرُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ  
النَّاسَ شَيْئًا ۚ وَلَكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ۚ وَيَوْمَ  
يُخْشَرُهُمْ كَانَ لَكُمْ يُلْبِثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ  
يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۚ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ  
اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۚ وَإِنَّا لَنُرِيكَ بَعْضَ  
الْأَنبِيَاءِ نَبِيٍّ يُبْعَثُ ۚ وَأَنَّا لَمَبْنِيءٌ مَّرْجِعُهُمْ ثُمَّ  
اللَّهُ مُهْتَدٍ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ۚ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ  
رَّسُولٌ ۚ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ  
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۚ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ  
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا

مَرْءًا



लाभ का, बल्कि अल्लाह जो चाहता है वही होता है। हर समुदाय के लिए एक नियत समय है, जब उनका नियत समय आ जाता है तो वे न घड़ी भर पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।”

50. कहो : “क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि तुमपर उसकी यातना रातों रात या दिन को आ जाए तो (क्या तुम उसे टाल सकोगे?) वह आखिर कौन-सी चीज़ होगी जिसके लिए अपराधियों को जल्दी पड़ी हुई है?”

51. क्या फिर जब वह घटित हो जाएगी तब तुम उसे मानोगे?—

क्या अब ! इसी के लिए तो तुम जल्दी मचा रहे थे !”

52. फिर अत्याचारी लोगों से कहा जाएगा : “स्थायी यातना का मज़ा चखो ! जो कुछ तुम कमाते रहे हो, उसके सिवा तुम्हें और क्या बदला दिया जा सकता है ?”

53. वे तुम से चाहते हैं कि उन्हें खबर दो कि “क्या वह वास्तव में सत्य है?” कह दो : “हाँ, मेरे रब की कसम ! वह बिलकुल सत्य है और तुम क़ाबू से बाहर निकल जानेवाले नहीं हो।”

54. यदि प्रत्येक अत्याचारी व्यक्ति के पास वह सब कुछ हो जो धरती में है, तो वह अर्थदण्ड के रूप में उसे दे डाले। जब वे यातना को देखेंगे तो मन ही मन में पछताएँगे। उनके बीच न्यायपूर्वक फ़ैसला कर दिया जाएगा और उनपर कोई अत्याचार न होगा।

55. सुन लो, जो कुछ आकाशों और धरती में है, अल्लाह ही का है। जान लो,

وَلَا تَنْفَعُ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۚ وَلَا يَسْتَقْدِرُونَ ۚ  
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَآتًا أَوْ نَهَايًّا مَّا  
ذَآئِدُكُمْ مِنْهُ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا مَّا وَفَّيْتُمْ ۚ  
أَمْ تُكْسِبُ بِهِ ٱلْأَنفُسَ ۚ وَكَذَّبْتُمْ بِهِ ۚ تَسْتَعْجِلُونَ ۚ  
ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ  
تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۚ وَيَسْتَكْبِرُونَ ۚ  
أَحَقُّ هُوَ ۚ قُلْ إِنِّي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۚ وَمَا أَنْتُمْ  
بِمُعْجِزِينَ ۚ وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَآ فِي  
ٱلْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۚ وَأَسْرَوْا ٱلنَّدَامَةَ لَمَّا  
رَأَوُا ٱلْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِٱلْقُضِطِ ۚ وَهُمْ لَا  
يُظْلَمُونَ ۚ ٱلْأَن ۚ إِنَّ يَهُ ۚ مَا فِي ٱلسَّمَٰوٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ  
ٱلْأَن ۚ وَعَدَ ٱللَّهُ حَقًّا ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا

سَلَامٌ



निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है, किन्तु उनमें अधिकतर लोग जानते नहीं।

56. वही जिलाता और मारता है और उसी की ओर तुम लौटाए जा रहे हो।

57. ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उपदेश और जो कुछ सीनों में (रोग) है, उसके लिए रोगमुक्ति और मोमिनों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता आ चुकी है।

58. कह दो : “यह अल्लाह के अनुग्रह और उसकी दया से है, अतः इस पर उन्हें प्रसन्न होना चाहिए।

यह उन सब चीजों से उत्तम है, जिनको वे इकट्ठा करने में लगे हुए हैं।”

59. कह दो : “क्या तुम लोगों ने यह भी देखा कि जो रोज़ी अल्लाह ने तुम्हारे लिए उतारी है उसमें से तुमने स्वयं ही कुछ को हaram और हलाल ठहरा लिया ?” कहो : “क्या अल्लाह ने तुम्हें इसकी अनुमति दी है या तुम अल्लाह पर झूठ घड़कर थोप रहे हो ?”

60. जो लोग झूठ घड़कर उसे अल्लाह पर थोपते हैं, उन्होंने क़ियामत के दिन के विषय में क्या समझ रखा है ? अल्लाह तो लोगों के लिए बड़ा अनुग्रहवाला है, किन्तु उनमें अधिकतर कृतज्ञता नहीं दिखलाते।

61. तुम जिस दशा में भी होते हो और कुरआन से जो कुछ भी पढ़ते हो और तुम लोग जो काम भी करते हो हम तुम्हें देख रहे होते हैं, जब तुम उसमें लगे होते हो। और तुम्हारे रब से कण भर भी कोई चीज़ छिपी नहीं है, न

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝ هُوَ يُخَيِّ وَيُمِيتُ وَلَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَ تَكْمٌ مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۝

وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ ۝ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

قُلْ يَفْضِلُ اللَّهُ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَّا أَنزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِّن رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ آتَىٰ اللَّهُ أَذِينَ لَّكُمْ أَمْرًا عَلَىٰ

اللَّهِ تَفْكُرُونَ ۝ وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَامِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْلَمُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَن رَّبِّنَا

شَيْءٌ ۚ

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ۝



धरती में न आकाश में और न उससे छोटी और न बड़ी कोई चीज़ ऐसी है जो एक स्पष्ट किताब में मौजूद न हो।

62. सुन लो, अल्लाह के मित्रों को न तो कोई डर है और न वे शोकाकुल ही होंगे।

63. ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और डर कर रहे।

64. उनके लिए सांसारिक जीवन में भी शुभ-सूचना है और आखिरत में भी— अल्लाह के शब्द बदलते नहीं— यही बड़ी सफलता है।

65. उनकी बात तुम्हें दुखी न करे, सारा प्रभुत्व अल्लाह ही के लिए है, वह सुनता, जानता है।

66. जान रखो ! जो कोई भी आकाशों में है और जो कोई धरती में है, अल्लाह ही का है। जो लोग अल्लाह को छोड़कर दूसरे साझीदारों को पुकारते हैं, वे आखिर किसका अनुसरण करते हैं ? वे तो केवल अटकल पर चलते हैं और वे निरे अटकलें दौड़ाते हैं।

67. वही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें चैन पाओ और दिन को प्रकाशमान बनाया (ताकि तुम उसमें दौड़-धूप कर सको); निस्संदेह

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَسُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۚ

رَأَيْتَكَ مِنْ مِّثْقَالٍ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝ أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَلَا يَحْزَنكَ قَوْلُهُمْ ۚ إِنَّ الْوَعْدَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ ۖ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْكَيْلَ لِتَكْسِبُوا فِيهِ ۖ وَالتَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ

مَنْعَهُ



इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो सुनते हैं।

68. वे कहते हैं : “अल्लाह औलाद रखता है।” महान और उच्च है वह ! वह निरपेक्ष है, आकाशों और धरती में जो कुछ है उसी का है। तुम्हारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं। क्या तुम अल्लाह से जोड़कर वह बात कहते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं ?

69. कह दो : “जो लोग अल्लाह पर थोपकर झूठ घड़ते हैं, वे सफल नहीं होते।”

70. यह तो सांसारिक सुख है। फिर हमारी ओर ही उन्हें लौटना है, फिर जो इनकार वे करते रहे होंगे उसके बदले में हम उन्हें कठोर यातना का मज़ा चखाएँगे।

71. उन्हें नूह का वृत्तान्त सुनाओ। जब उसने अपनी क़ौम से कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! यदि मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों के द्वारा नसीहत करना तुम्हें भारी हो गया है तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है। तुम अपना मामला ठहरा लो और अपने ठहराए हुए साझीदारों को भी साथ ले लो, फिर तुम्हारा मामला तुमपर कुछ संदिग्ध न रहे; फिर मेरे साथ जो कुछ करना है, कर डालो और मुझे मुहलत न दो।”

72. फिर यदि तुम मुँह फेरोगे तो मैंने तुमसे कोई बदला नहीं माँगा। मेरा बदला (पारिश्रमिक) बस अल्लाह के ज़िम्मे है, और आदेश मुझे मुस्लिम (आज्ञाकारी) होने का हुआ है।

73. किन्तु उन्होंने उसे झुठला दिया, तो हमने उसे और उन लोगों को, जो

يَقُولُونَ سَمْعُونَ ۖ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ ۖ  
هُوَ الْعَزِيزُ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ  
إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطِينَ بِهَذَا ۖ اتَّقُوا اللَّهَ ۖ عَلَى  
اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۖ قُلْ إِنْ الَّذِينَ يَفْكُرُونَ  
عَلَى اللَّهِ كَذِبٌ لَا فِئْلُونَ ۖ مَتَّاعٌ فِي الدُّنْيَا  
ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نَذِقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ  
بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۖ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ ۖ  
إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَقُولُونَ إِنْ كَانَ كِبَرُ عَلَيْكُمْ مَقَامِي  
وَتَذَكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا  
أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ  
غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنظِرُون ۖ قُلْ إِنْ  
تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجِرِيَ إِلَّا عَلَى  
اللَّهِ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۖ قُلْ ذَرُونِي



उसके साथ नौका में थे, बचा लिया और उन्हें उत्तराधिकारी बनाया, और उन लोगों को डुबो दिया, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था। अतः देख लो, जिन्हें सचेत किया गया था उनका क्या परिणाम हुआ !

74. फिर उसके बाद कितने ही रसूल हमने उनकी क्राँम की ओर भेजे और वे उनके पास स्पष्ट निशानियाँ लेकर आए, किन्तु वे ऐसे न थे कि जिसको पहले झुठला चुके हों, उसे मानते। इसी तरह अतिक्रमणकारियों के दिलों पर हम मुहर लगा देते हैं।

فَقَبَلْنَاهُ وَمَنْ مَّعَهُ فِي الْفُلِّ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلِيفَ  
وَاعْرِفْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا، فَإِنَّظِرْ كَيْفَ كَانَ  
عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا  
إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا  
كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَى قُلُوبِ  
الْمُعْتَدِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ مُوسَى وَهَارُونَ  
إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا  
قَوْمًا مُجْرِمِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا  
قَالُوا إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُبِينٌ ۝ قَالَ مُوسَى أَتَقُولُونَ  
لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ أَرَيْضُهُمْ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ الشَّعْرُونَ ۝  
قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَنْفِثَنَ عَنْمَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ  
أَهْلَاءَنَا وَتَكُونُ لَكُمُ الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ ۖ وَمَا  
نَحْنُ لَكُمُ بِمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ اسْتَوْفُوا

75. फिर उनके बाद हमने मूसा और हारून को अपनी आयतों के साथ फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा। किन्तु उन्होंने घमण्ड किया, वे थे ही अपराधी लोग।

76. अतः जब हमारी ओर से सत्य उनके सामने आया तो वे कहने लगे : “यह तो खुला जादू है।”

77. मूसा ने कहा : “क्या तुम सत्य के विषय में ऐसा कहते हो, जबकि यह तुम्हारे सामने आ गया है? क्या यह कोई जादू है? जादूगर तो सफल नहीं हुआ करते।”

78. उन्होंने कहा : “क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हमें उस चीज़ से फेर दे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है और धरती में तुम दोनों की बड़ाई स्थापित हो जाए? हम तो तुम्हें माननेवाले नहीं।”

79. फिरऔन ने कहा : “हर कुशल जादूगर को मेरे पास लाओ।”



80. फिर जब जादूगर आ गए तो मूसा ने उनसे कहा : "जो कुछ तुम डालते हो, डालो।"

81. फिर जब उन्होंने डाला तो मूसा ने कहा : “तुम जो कुछ लाए हो, जादू है। अल्लाह अभी उसे मलियामेट किए देता है। निस्संदेह अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवालों के कर्म को फलीभूत नहीं होने देता।

82. अल्लाह अपने शब्दों से सत्य को सत्य कर दिखाता है, चाहे अपराधी नापसंद ही करें।”

83. फिर मूसा की बात उसकी  
क्रौम की संतति में से बस कुछ ही  
लोगों ने मानी; फिरऔन और

उनके अपने सरदारों के भय से कि कहीं उन्हें किसी फ़ितने में न डाल दें। फिर औन था भी धरती में बहुत सिर उठाए हुए, और निश्चय ही वह हद से आगे बढ़ गया था।

84. मूसा ने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! यदि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसपर भरोसा करो, यदि तुम आज्ञाकारी हो ।"

85. इसपर वे बोले : "हमने अल्लाह पर भरोसा किया । ऐ हमारे रब ! तू हमें अत्याचारी लोगों के हाथों आज्रमाइश में न डाल ।

86. और अपनी दयालुता से हमें इनकार करनेवालों से छटकारा दिला।”

87. हमने मूसा और उसके भाई की ओर प्रकाशना की कि "तुम दोनों अपने

بِكُلِّ سَجِيرٍ عَلَيْهِمْ ۖ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقَوَامَاتُ أَنْتُمْ مُلْقُونَ ۖ فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۖ السَّحَرَةُ إِذْ اللَّهُ سَيَبْطِلُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضْلِعُ عَمَلَ الْفَاسِقِينَ ۖ وَيُحْيِي اللَّهُ الْحَيَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۖ فَمَا أَمَرَ يُوسَى إِلَّا ذُرِّيَّتَهُ مِنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِمَّنْ فِرْعَوْنُ وَمَلَائِكَتِهِ أَنْ يَفْتِنَهُمْ ۖ وَإِنْ فِرْعَوْنُ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ ۖ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُنْزِفِينَ ۖ وَقَالَ مُوسَى يَقُولُونَ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ فَمَنْ لَكُمْ بِآلِهَتِكُمْ ۖ أَشِدَّاءُ يَنْصَرِفُونَ أَمْ يُلْقُونَ أَعْيُنَهُمْ تُلَاقِحَ السَّحَابَ ۖ فَمَنْ لَكُمْ بِهِمْ ۖ أَمْ لَهُمْ إِلَهٌ مُنْجٍ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۖ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً ۖ لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۖ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوَّآ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ



लोगों के लिए मिस्त्र में कुछ घर निश्चित कर लो और अपने घरों को क़िबला बना लो ।' और नमाज़ कायम करो और ईमानवालों को शम्सूचना दे दो ।"

88. मूसा ने कहा : "हमारे रब ! तूने फिरऔन और उसके सरदारों को सांसारिक जीवन में शोभा-सामग्री और धन दिए हैं, हमारे रब, इसलिए कि वे तेरे मार्ग से भटकाएँ ! हमारे रब, उनके धन नष्ट कर दे और उनके हृदय कठोर कर दे कि वे ईमान न लाएँ, ताकि वे दुःखद यातना देख लें।"

89. कहा : "तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकृत हो चुकी । अतः तुम दोनों जमे रहो और उन लोगों के मार्ग पर कदापि न चलना, जो जानते नहीं ।"

१०. और हमने इसराईलियों को समुद्र पार करा दिया। फिर फिरऔन और उसकी सेनाओं ने सरकशी और ज़्यादती के साथ उनका पीछा किया, यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो पुकार उठा : "मैं ईमान ले आया कि उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं, जिसपर इसराईल की संतान ईमान लाई। अब मैं आज्ञाकारी हूँ।"

91. "क्या अब ? हालाँकि इससे पहले तूने अवज्ञा की और बिगाड़ पैदा करनेवालों में से था ।

بَيِّنَاتٍ وَأَجْمَلُوا بَيِّنَاتِكُمْ قَبْلَهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ  
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا إِنَّكَ  
أَنْتَ فَرَعُونَ وَمَلَأَ زَيْنَةُ وَأَمْوَالًا فِي  
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ  
رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَى  
قُلُوبِهِمْ فَلَا يُفْهِمُوا حَقَّ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝  
قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا  
تَتَّبِعِينَ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَجُوزْنَا  
بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَاتَّبَعَهُمْ فَرَعُونَ وَ  
جُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدُوًّا حَتَّى إِذَا أَذْرَكَ الْعُرْقُ  
قَالَ أَمَنْتُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي آمَنْتُ بِهِ  
بَنُو إِسْرَءِيلَ نِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أَلَمْ  
يَكُنْ عَصِيَّتَ قَبْلَ وَكُنْتُ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ۝



92. अतः आज हम तेरे शरीर को बचा लेंगे, ताकि तू अपने बादवालों के लिए एक निशानी हो जाए। निश्चय ही, बहुत-से लोग हमारी निशानियों के प्रति असावधान ही रहते हैं।”

93. और हमने इसराईल की संतान को अच्छा, सम्मानित ठिकाना दिया और उन्हें अच्छी आजीविका प्रदान की। फिर उन्होंने उस समय विभेद किया, जबकि ज्ञान उनके पास आ चुका था। निश्चय ही तुम्हारा रब क्रियामत के दिन उनके बीच उस चीज़ का फ़सला कर देगा, जिसमें वे विभेद करते रहे हैं।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خُلِقَ  
آيَةً ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا  
لَغَفْلُونَ ۚ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مَبْوَأَ  
صِدْقٍ وَرَزَقْنَهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا  
حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ  
يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۚ فَإِن  
كُنْتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْأَلِ الَّذِينَ  
يَقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَاءَكَ  
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ ۚ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۚ  
وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ  
فَتَكُونُوا مِنَ الْخَاسِرِينَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ  
عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ وَلَوْ جَاءَهُمْ  
كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۚ فَلَوْ لَا

94. अतः यदि तुम्हें उस चीज़ के बारे में कोई संदेह हो, जो हमने तुम्हारी ओर अवतरित की है, तो उनसे पूछ लो जो तुमसे पहले से किताब पढ़ रहे हैं। तुम्हारे पास तो तुम्हारे रब की ओर से सत्य आ चुका। अतः तुम कदापि संदेह करनेवाले न हो।

95. और न उन लोगों में सम्मिलित होना जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, अन्यथा तुम घाटे में पड़कर रहोगे।

96. निस्संदेह जिन लोगों के विषय में तुम्हारे रब की बात सच्ची होकर रही वे ईमान नहीं लाएँगे,

97. जब तक कि वे दुखद यातना न देख लें, चाहे प्रत्येक निशानी उनके पास आ जाए।

98. फिर ऐसी कोई बस्ती क्यों न हुई कि वह ईमान लाती और उसका ईमान



उसके लिए लाभप्रद सिद्ध होता ? हाँ, यूनस की क़ौम के लोग इसके अपवाद हैं। जब वे ईमान लाए तो हमने सांसारिक जीवन में अपमानजनक यातना को उनपर से टाल दिया और उन्हें एक अवधि तक सुखोपभोग का अवसर प्रदान किया।

99. यदि तुम्हारा रब चाहता तो धरती में जितने भी लोग हैं वे सब के सब ईमान ले आते, फिर क्या तुम लोगों को विवश करोगे कि वे मोमिन हो जाएँ ?

100. हालाँकि किसी व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं कि अल्लाह की अनुज्ञा के बिना कोई व्यक्ति ईमान लाए। वह तो उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है, जो बुद्धि से काम नहीं लेते।

101. कहो : “देख लो, आकाशों और धरती में क्या कुछ है !” किन्तु निशानियाँ और चेतावनियाँ उन लोगों के कुछ काम नहीं आती, जो ईमान न लाना चाहें।

102. अतः वे तो उस तरह के दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जिस तरह के दिन वे लोग देख चुके हैं जो उनसे पहले गुज़रे हैं। कह दो : “अच्छा, प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।”

103. फिर हम अपने रसूलों और उन लोगों को बचा लेते रहे हैं, जो ईमान ले आए। ऐसी ही हमारी रीति है, हमपर यह हक़ है कि ईमानवालों को बचा लें।

104. कह दो : “ऐ लोगो ! यदि तुम मेरे धर्म के विषय में किसी संदेह में हो

كَانَتْ قَرْيَةٌ أَمَنَتْ فَنَقَمَهَا إِيْمَانُهَا إِلَّا قَوْمًا  
يُؤْتَسِرُونَ أَمَنُوا كَفَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ  
فِي الْعَيُوتِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۝ وَلَوْ  
شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مِنَ فِي الْأَرْضِ كُلَّهُمْ جَمِيعًا  
أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝  
وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَ  
يَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝  
قُلْ أَنْظَرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا  
تُغْنِي الْآيَاتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۝  
فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا  
مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ  
الْمُنْتَظِرِينَ ۝ ثُمَّ نَتَّبِعْ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ أَمَنُوا كَذَلِكَ  
حَقًّا عَلَيْنَا سُبْحَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ قُلْ يَٰ أَيُّهَا النَّاسُ إِن



तो मैं तो उनकी बन्दगी नहीं करता जिनकी तुम अल्लाह से हटकर बन्दगी करते हो, बल्कि मैं उस अल्लाह की बन्दगी करता हूँ जो तुम्हें मृत्यु देता है। और मुझे आदेश है कि मैं ईमानवालों में से होऊँ।

105. और यह कि हर ओर से एकाग्र होकर अपना रुख इस धर्म की ओर कर लो और मुशरिकों में कदापि सम्मिलित न हो,

106. और अल्लाह से हटकर उसे न पुकारो जो न तुम्हें लाभ पहुँचाए और न तुम्हें हानि पहुँचा सके और न तुम्हारा कुछ बुरा कर सके, क्योंकि यदि तुमने ऐसा किया तो उस समय तुम अत्याचारी होगे।

107. यदि अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ में डाल दे तो उसके सिवा कोई उसे दूर करनेवाला नहीं। और यदि वह तुम्हारे लिए किसी भलाई का इरादा कर ले तो कोई उसके अनुग्रह को फेरनेवाला भी नहीं। वह इसे अपने बन्दों में से जिस तक चाहता है, पहुँचाता है और वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।”

108. कह दो : “ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य आ चुका है। अब जो कोई मार्ग पर आएगा, तो वह अपने ही लिए मार्ग पर आएगा, और जो कोई पथभ्रष्ट होगा तो वह अपने ही बुरे के लिए पथभ्रष्ट होगा। मैं तुम्हारे ऊपर कोई हवालेदार तो हूँ नहीं।”

109. जो कुछ तुमपर प्रकाशना की जा रही है, उसका अनुसरण करो और

يُنَادُوا رَبَّهُمْ  
كَتُتُمْ فِي شَيْءٍ مِّن دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ  
تَعْبُدُونَ مِّن دُونِ اللَّهِ وَلَكِن أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي  
يَتَوَكَّلُكُمْ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ  
وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا، وَلَا تَكُونَنَّ  
مِنَ الشَّارِكِينَ وَلَا تَبْدَأُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا  
لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ، إِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا  
مِنَ الظَّالِمِينَ وَإِنْ يَنسَكَ اللَّهُ يَضُرَّ فَلَا  
كَاشَفَ لَهُ إِلَّا هُوَ، وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ  
لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ، وَهُوَ  
الْعَفُورُ الرَّحِيمُ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ  
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ، فَمَن اهْتَدَى فَإِنَّمَا يَهْتَدِي  
لِنَفْسِهِ، وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا، وَمَا  
أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ



धैर्य से काम लो, यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और वह सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।

## 11. हूद

(मक्का में उतरी—आयतें 123)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० रा०। यह एक किताब है जिसकी आयतें पक्की हैं, फिर सविस्तार बयान हुई हैं; उसकी ओर से जो अत्यन्त तत्त्वदर्शी, पूरी खबर रखनेवाला है।

2. कि “तुम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो। मैं तो उसकी ओर से तुम्हें सचेत करनेवाला और शुभ सूचना देनेवाला हूँ।”

3. और यह कि “अपने रब से क्षमा माँगो, फिर उसकी ओर पलट आओ। वह तुम्हें एक निश्चित अवधि तक सुखोपभोग की उत्तम सामग्री प्रदान करेगा। और बढ़-चढ़कर कर्म करनेवालों पर वह तदधिक अपना अनुग्रह करेगा, किन्तु यदि तुम मुँह फेरते हो तो निश्चय ही मुझे तुम्हारे विषय में एक बड़े दिन की यातना का भय है।

4. तुम्हें अल्लाह ही की ओर पलटना है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।”

5. देखो! ये अपने सीनों को मोड़ते हैं, चाहिए कि उससे छिपें। देखो! जब ये अपने कपड़ों से स्वयं को ढाँकते हैं, वह जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ वे प्रकट करते हैं। निस्संदेह वह सीनों तक की बात को जानता है।





6. धरती में चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है उसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है। वह जानता है जहाँ उसे ठहरना है और जहाँ उसे सौंपा जाना है। सब कुछ एक स्पष्ट किताब में मौजूद है।

7. वही है जिसने आकाशों और धरती को छः दिनों में पैदा किया— उसका सिंहासन पानी पर था— ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। और यदि तुम कहो कि “मरने के पश्चात तुम अवश्य उठोगे।” तो जिन्हें इनकार है, वे कहने लगेंगे : “यह तो खुला जादू है।”

8. यदि हम एक निश्चित अवधि तक के लिए उनसे यातना को टाले रखें, तो वे कहने लगेंगे : “आखिर किस चीज़ ने उसे रोक रखा है ?” सुन लो ! जिस दिन वह उनपर आ जाएगी तो फिर वह उनपर से टाली नहीं जाएगी। और वही चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसका वे उपहास करते हैं।

9. यदि हम मनुष्य को अपनी दयालुता का रसास्वादन कराकर फिर उसको उससे छीन लें, तो (वह दयालुता के लिए याचना नहीं करता) निश्चय ही वह निराशावादी, कृतघ्न है।

10. और यदि हम इसके पश्चात कि उसे तकलीफ़ पहुँची हो, उसे नेमत का रसास्वादन कराते हैं तो वह कहने लगता है : “मेरे तो सारे दुख दूर हो गए।” वह तो फूला नहीं समाता, डींगें मारने लगता है।

11. उनकी बात दूसरी है जिन्होंने धैर्य से काम लिया और सत्कर्म किए।

हूद

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّنَا نَافِلَةٌ

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّنَا نَافِلَةٌ  
مُسْقَرَةً وَمُسْتَوْدَعَةً كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ  
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ  
أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَكْفَمَ  
أَحْسَنَ عَمَلًا وَلَكِنْ قُلْتَ إِنَّكُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ  
بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا  
إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ وَلَكِنْ أَخَذْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِلَى  
أَمْتٍ مَعْدُودَةٍ لَيَقُولَنَّ مَا يَجِبُ لَهُ الْآلَا يَوْمَ  
يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا  
بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ وَلَكِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً  
ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَكَفُورٌ كَذَّابٌ وَلَكِنْ  
أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَاءٍ مَشَتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ  
السَّيِّئَاتِ عَنِّي إِنَّهُ لَكَفُورٌ كَذَّابٌ إِلَّا الَّذِينَ

مِنَ الْإِيمَانِ



वही हैं जिनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिदान है।

12. तो शायद तुम उसमें से कुछ छोड़ बैठोगे, जो तुम्हारी ओर प्रकाशना रूप में भेजी जा रही है। और तुम इस बात पर तंगदिल हो रहे हो कि वे कहते हैं : "उसपर कोई खज़ाना क्यों नहीं उतरा या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया?" तुम तो केवल सचेत करनेवाले हो। हर चीज़ अल्लाह ही के हवाले है।

13. (उन्हें कोई शंका है) या वे कहते हैं कि "उसने इसे स्वयं घड़ लिया है?" कह दो : "अच्छा, यदि

तुम सच्चे हो तो इस जैसी घड़ी हुई दस सूरतें ले आओ और अल्लाह से हटकर जिस किसी को बुला सकते हो बुला लो।"

14. फिर यदि वे तुम्हारी बात न मानें तो जान लो, यह अल्लाह के ज्ञान ही के साथ अवतरित हुआ है। और यह कि उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। तो अब क्या तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) होते हो?

15. जो व्यक्ति सांसारिक जीवन और उसकी शोभा का इच्छुक हो तो ऐसे लोगों को उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला हम यहीं दे देते हैं और इसमें उनका कोई हक़ नहीं मारा जाता।

16. यही वे लोग हैं जिनके लिए आखिरत में आग के सिवा और कुछ भी नहीं। उन्होंने जो कुछ बनाया, वह सब वहाँ उनकी जान को लागू हुआ और

مُؤْمِنِينَ

نَسَائِمَ وَأَنبِيَاءَ

صَبْرًا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ  
وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۚ فَلَمَّا كَثُرَ بَغْضَ مَا يُوحَىٰ  
إِلَيْكَ وَضَاقَتْ بِهِ صُدُورُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أَنْزَلْ  
عَلَيْهِ كُتُبًا أَوْجَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۚ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ  
وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۚ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ  
قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيَاتٍ ۚ وَادْعُوا  
مَنْ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ ذُرِّيَةِ اللَّهِ ۚ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ  
فَإِلَّا كَفَرْتُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّمَا أَنْزَلْنَا بِعِلْمِ  
اللَّهِ وَأَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۚ  
مَنْ كَانَ يُرِيدِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ  
إِلَيْهِمْ أَغْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ۚ  
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۚ  
وَحَبِطَ مَا صَبَّغُوا فِيهَا وَبُطِلَ مَا كَانُوا

سَلَفَهُ



उनका सारा किया-धरा मिथ्या होकर रहा।

17. फिर क्या वह व्यक्ति जो अपने रब के एक स्पष्ट प्रमाण पर है और स्वयं उसके रूप में भी एक गवाह उसके साथ-साथ रहता है—और इससे पहले मूसा की किताब भी एक मार्गदर्शक और दयालुता के रूप में उपस्थित रही है—(और वह जो प्रकाश एवं मार्गदर्शन से वंचित है, दोनों बराबर हो सकते हैं) ऐसे ही लोग उसपर ईमान लाते हैं, किन्तु इन गिरोहों में से जो उसका इनकार करेगा तो उसके लिए जिस जगह का वादा है, वह तो आग है। अतः तुम्हें इसके विषय में कोई संदेह न हो। यह तुम्हारे रब की ओर से सत्य है, किन्तु अधिकतर लोग मानते नहीं।

18. उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर थोपकर झूठ घड़े। ऐसे लोग अपने रब के सामने पेश होंगे और गवाही देनेवाले कहेंगे : "यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ घड़ा।" सुन लो ! ऐसे अत्याचारियों पर अल्लाह की लानत है।

19. जो अल्लाह के मार्ग से रोकते और उसमें टेढ़ पैदा करना चाहते हैं; और वही आखिरत का इनकार करते हैं।

20. वे धरती में क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते और न अल्लाह से हटकर उनका कोई समर्थक ही है। उन्हें दोहरी यातना दी जाएगी। वे न सुन ही सकते

يَعْمَلُونَ ۖ أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ  
شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كُتِبَ مُوْتَىٰ ۖ إِنَّمَا وَرَثَتُهُ  
أُولَٰئِكَ يُوْثِقُونَ بِهِ ۖ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ  
فَالثَّأْرُ مُوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ  
مِن رَّبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝  
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ  
يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ  
الَّذِينَ كَذَّبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى  
الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ  
وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ۝  
أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا  
كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَآءَ ۚ يُضْعَفُ  
لَهُمُ الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا



थे और न देख ही सकते थे ।

21. ये वही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और जो कुछ वे घड़ा करते थे, वह सब उनसे गुम होकर रह गया ।

22. निश्चय ही वही आखिरत में सबसे बड़कर घाटे में रहेंगे ।

23. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और अपने रब की ओर झुक पड़े वही जन्नतवाले हैं, उसमें वे सदैव रहेंगे ।

24. दोनों पक्षों की उपमा ऐसी है जैसे एक अन्धा और बहरा हो और एक देखने और सुननेवाला ।

क्या इन दोनों की दशा समान हो सकती है ? तो क्या तुम होश से काम नहीं लेते ?

25. हमने नूह को उसकी क्राँम की ओर भेजा । (उसने कहा : ) “मैं तुम्हें साफ़- साफ़ चेतावनी देता हूँ ।

26. यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो । मुझे तुम्हारे विषय में एक दुखद दिन की यातना का भय है ।”

27. इसपर उसकी क्राँम के सरदार, जिन्होंने इनकार किया था, कहने लगे : “हमारी दृष्टि में तो तुम हमारे ही जैसे आदमी हो और हम देखते हैं कि बस कुछ ऐसे लोग ही तुम्हारे अनुयायी हैं जो पहली दृष्टि ही में हमारे यहाँ के नीच हैं । हम अपने मुक़ाबले में तुममें कोई बड़ाई नहीं देखते, बल्कि हम तो तुम्हें झूठा समझते हैं ।”

28. उसने कहा : “ऐ मेरी क्राँम के लोगो ! तुम्हारा क्या विचार है ? यदि मैं

كَانُوا يُبْصِرُونَ ۖ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ  
وَصَلَّ عَنْهُمْ مِمَّا كَانُوا يَفْعَرُونَ ۖ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ  
فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْآخِرُونَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَ  
عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَاخْتَبَأُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ  
الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ  
كَالْأَعْيُنِ وَالْأَصْمِ وَالْبَصِيرِ ۖ وَالزَّيْمِ ۖ هَلْ يَسْتَوِينَ  
مَثَلًا ۖ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۖ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ  
قَوْمِهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۖ أَن لَّا تَعْبُدُوا إِلَّا  
اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمِ الْيَوْمِ ۖ فَقَالَ  
الْمَلَائِكَةُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا  
بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ  
أَرَادُوا لَنَا بِاِلْهَادٍ ۖ وَتَرَاىَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ  
فَضْلٍ ۖ بَلْ تُظَلِّمُونَ كَذِبِينَ ۖ قَالَ يُقَوْمِ ۖ أَرَأَيْتُمْ



अपने रब के एक स्पष्ट प्रमाण पर हैं और उसने मुझे अपने पास से दयालुता भी प्रदान की है, फिर वह तुम्हें न सूझे तो क्या हम हठात् उसे तुमपर चिपका दें, जबकि वह तुम्हें अप्रिय है ?

29. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मैं इस काम पर तुमसे कोई धन नहीं माँगता । मेरा पारिश्रमिक तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है । मैं ईमान लानेवालों को दूर करनेवाला भी नहीं । उन्हें तो अपने रब से मिलना ही है, किन्तु मैं तुम्हें देख रहा हूँ कि तुम अज्ञानी लोग हो ।

30. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! यदि मैं उन्हें धुत्कार दूँ तो अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी सहायता कर सकता है ? फिर क्या तुम होश से काम नहीं लेते ?

31. और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि 'मेरे पास अल्लाह के खजाने हैं', और न मुझे परोक्ष का ज्ञान है और न मैं यह कहता हूँ कि 'मैं कोई फ़रिश्ता हूँ' और न उन लोगों के विषय में, जो तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ हैं, मैं यह कहता हूँ कि अल्लाह उन्हें कोई भलाई न देगा । जो कुछ उनके जी में है, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है । (यदि मैं ऐसा कहूँ) तब तो मैं अवश्य ही ज़ालिमों में से हूँगा ।"

32. उन्होंने कहा : "ऐ नूह ! तुम हमसे झगड़ चुके और बहुत झगड़ चुके । यदि तुम सच्चे हो तो जिसकी तुम हमें धमकी देते हो, अब उसे हम पर ले ही आओ ।"

33. उसने कहा : "वह तो अल्लाह ही यदि चाहेगा तो तुमपर लाएगा और

مُؤْمِنِينَ

تَمَامُ السُّورَةِ

إِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَيْنِي رَحْمَةً  
مِّنْ عِنْدِهِ فَصَبِّتْ عَلَيْكُمْ ۖ أُنْزِلَ عَلَيْهَا وَاتَّخَذَ  
لَهَا كَرَاهِيُونَ ۖ وَيَقُولُوا لَا أَمْلَأُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا  
إِنْ أَجُوبِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ  
أَمْسُوا إِنَّهُمْ مَلَكُوا رَبَّهُمْ وَلَكِنِّي أَرْسَلَكُمْ قَوْمًا  
تَجْهَلُونَ ۖ وَيَقُولُوا مَنْ يُنْصِرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ  
كَرَدْتَهُمْ ۖ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۖ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي  
خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي  
مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَنْ  
يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ ۖ  
إِنِّي إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ۖ قَالُوا يَتَّبِعُهُ قَدْ جَدَلْتُنَا  
فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتُمْ  
مِنَ الصَّادِقِينَ ۖ قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيَكُمْ بِهِ اللَّهُ إِنْ

مَرْكَبًا



तुम क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते ।

34. अब जबकि अल्लाह ही ने तुम्हें विनष्ट करने का निश्चय कर लिया हो, तो यदि मैं तुम्हारा भला भी चाहूँ, तो मेरा भला चाहना तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता । वही तुम्हारा रब है और उसी की ओर तुम्हें पलटना भी है ।”

35. (क्या उन्हें कोई खटक है) या वे कहते हैं कि : “उसने स्वयं इसे घड़ लिया है ?” कह दो : “यदि मैंने इसे घड़ लिया है तो मेरे अपराध का दायित्व मुझपर ही है । और जो अपराध तुम कर रहे हो मैं उसके दायित्व से मुक्त हूँ ।”

36. नूह की ओर प्रकाशना की गई कि “जो लोग ईमान ला चुके हैं, उनके सिवा अब तुम्हारी क़ौम में कोई ईमान लानेवाला नहीं । अतः जो कुछ वे कर रहे हैं उसपर तुम दुखी न हो ।

37. तुम हमारे समक्ष और हमारी प्रकाशना के अनुसार नाव बनाओ और अत्याचारियों के विषय में मुझसे बात न करो । निश्चय ही वे डूबकर रहेंगे ।”

38. वह नाव बनाने लगता है । उसकी क़ौम के सरदार जब भी उसके पास से गुज़रते तो उसका उपहास करते । उसने कहा : “यदि तुम हमारा उपहास करते हो तो हम भी तुम्हारा उपहास करेंगे, जैसे तुम हमारा उपहास करते हो ।

39. अब शीघ्र ही तुम जान लोगे कि कौन है जिसपर ऐसी यातना आती है, जो उसे अपमानित कर देगी और जिसपर ऐसी स्थाई यातना टूट पड़ती है ।

40. यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया और तंदूर उबल पड़ा तो हमने

مَنْعَهُ

وَمَا مِنْ دَانِفَةٍ

شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُنْجِينَ ۖ وَلَا يَنْفَعُكُمُ نَضِيقُ  
إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ ۚ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ  
أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۚ أَمْ  
يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَىٰ إِجْرَائِي  
وَإِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُعْبِرُمُونَ ۚ وَادْعُوا إِلَىٰ تَوَجُّعِ  
أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا  
تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۚ وَاصْنَعِ الْفُلَكَ  
بِأَعْيُنِنَا ۚ وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ  
ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ ۚ وَاصْنَعِ الْفُلَكَ ۚ وَكَلَّمَا  
مَرْعِيلَهُ مَلَأْ مِنْ قَوْمِهِ سِغْرًا مِنْهُ ۚ قَالَ  
إِنْ تَسْخَرُوا مِنِّي فَإِنِّي أَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا  
تَسْخَرُونَ ۚ فَتَوَفَّ يَعْلَمُونَ ۚ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ  
يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۚ حَتَّىٰ إِذَا

سَلَّمَ



कहा : “हर जाति में से दो-दो के जोड़े उसमें चढ़ा लो और अपने घरवालों को भी—सिवाय ऐसे व्यक्ति के जिसके बारे में बात तय पा चुकी है—और जो ईमान लाया हो उसे भी।” किन्तु उसके साथ जो ईमान लाए थे वे थोड़े ही थे।

41. उसने कहा : “उसमें सवार हो जाओ। अल्लाह के नाम से इसका चलना भी है और इसका ठहरना भी। निस्संदेह मेरा रब अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।”

42. और वह (नाव) उन्हें लिए हुए पहाड़ों जैसी ऊँची लहर के

बीच चल रही थी। नूह ने अपने बेटे को, जो उससे अलग था, पुकारा : “ऐ मेरे बेटे ! हमारे साथ सवार हो जा। तू इनकार करनेवालों के साथ न रह।”

43. उसने कहा : “मैं किसी पहाड़ से जा लगूँगा, जो मुझे पानी से बचा लेगा।” कहा : “आज अल्लाह के आदेश (फ़ैसले) से कोई बचानेवाला नहीं है सिवाय उसके जिसपर वह दया करे।” इतने में दोनों के बीच लहर आ पड़ी और डूबनेवालों के साथ वह भी डूब गया।

44. और कहा गया : “ऐ धरती ! अपना पानी निगल जा और ऐ आकाश ! तू थम जा।” अतएव पानी तह में बैठ गया और फ़ैसला चुका दिया गया और वह (नाव) जूदी पर्वत पर टिक गई और कह दिया गया : “फिटकार हो अत्याचारी लोगों पर !”

45. नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा : “मेरे रब ! मेरा बेटा मेरे घरवालों

جَاءَ أَمْرُنَا وَقَارَ الثُّغُورُ فَلَمَّا أَحْيَلْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ وَمَا آمَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ۝ وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْريهَا وَمُزْمَلُهَا إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ سَوَادًا ۖ تَوَّخَّاهُ ابْنُهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يَتَّبِعِي أَرْكَبَ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ۝ قَالَ سَاوِي إِلَى جَبَلٍ يَعْصُمُنِي مِنَ الْمَاءِ ۚ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ رَحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ۝ وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكِ وَيَبْأُ أَفْلَحِي وَغِيضَ الْمَاءِ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَنَادَى تَوْخَّ رَّبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي



में से है और निस्संदेह तेरा वादा सच्चा है और तू सबसे बड़ा हाकिम भी है।”

46. कहा : “ऐ नूह ! वह तेरे घरवालों में से नहीं, वह तो सर्वथा एक बिगड़ा काम है। अतः जिसका तुझे ज्ञान नहीं, उसके विषय में मुझसे न पूछ, तेरे नादान हो जाने की आशंका से मैं तुझे नसीहत करता हूँ।”

47. उसने कहा : “मेरे रब ! मैं इससे तेरी पनाह माँगता हूँ कि तुझसे उस चीज़ का सवाल करूँ जिसका मुझे कोई ज्ञान न हो। अब यदि तूने मुझे क्षमा न किया और मुझपर दया न की, तो मैं घाटे में पड़कर रहूँगा।”

48. कहा गया : “ऐ नूह ! हमारी ओर से सलामती और उन बरकतों के साथ उतर, जो तुझपर और उन गिरोहों पर होगी, जो तेरे साथवालों में से होंगे। कुछ गिरोह ऐसे भी होंगे जिन्हें हम थोड़े दिनों का सुखोपभोग कराएँगे। फिर उन्हें हमारी ओर से दुखद यातना आ पहुँचेगी।”

49. ये परोक्ष की खबरें हैं जिनकी हम तुम्हारी ओर प्रकाशना कर रहे हैं। इससे पहले तो न तुम्हें इनकी खबर थी और न तुम्हारी क़ौम को। अतः धैर्य से काम लो। निस्संदेह अंतिम परिणाम डर रखनेवालों के पक्ष में है।

50. और ‘आद’ की ओर उनके भाई ‘हूद’ को भेजा। उसने कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य

مِنْ أَهْلِيْ وَلَا نَ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ  
الْحَكَمِيْنَ ۝ قَالَ يُتُومُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ ۚ إِنَّهُ  
عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَتَّبِعْ مَا كَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ  
إِنِّيْ أَعْطُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ  
إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهِ عِلْمٌ ۚ  
وَلَا تُغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْ أَكُنْ مِنَ الْخَسِرِيْنَ ۝  
قِيلَ يُتُومُ ۖ وَنُوحٍ نَّاسِلُ ۚ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ  
عَلَى أَمَمٍ ۖ وَمَنْ مَّعَكَ وَأَمَّمْ سَمْعَتَهُمْ ثُمَّ  
يَنْشُرُهُمْ قَوْمًا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ يَلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ  
الْغَيْبِ نُوْحِيْهَا إِلَيْكَ ۖ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ  
وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هَٰذَا ۖ فَاصْبِرْ ۚ إِنَّ الْعَاقِبَةَ  
لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَالْإِلَٰهَ عَادُ أَخَاهُمْ هُوْدًا ۚ قَالَ يُقُوْمُ  
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا

وَالْإِلَٰهَ عَادُ أَخَاهُمْ هُوْدًا ۚ قَالَ يُقُوْمُ

سَلَامٌ



प्रभु नहीं। तुमने तो बस झूठ घड़ रखा है।

51. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मैं इसपर तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता। मेरा पारिश्रमिक तो बस उसके ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया। फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?

52. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अपने रब से क्षमा याचना करो, फिर उसकी ओर पलट आओ। वह तुमपर आकाश को खूब बरसता छोड़ेगा और तुममें शक्ति पर शक्ति की अभिवृद्धि करेगा। तुम अपराधी बनकर मुँह न फेरो।”

53. उन्होंने कहा : “ऐ हूद ! तू हमारे पास कोई स्पष्ट प्रमाण लेकर नहीं आया है। तेरे कहने से हम अपने इष्ट-पूज्यों को नहीं छोड़ सकते और न हम तुझपर ईमान लानेवाले हैं।

54-55. हम तो केवल यही कहते हैं कि हमारे इष्ट-पूज्यों में से किसी की तुझपर मार पड़ गई है।” उसने कहा : “मैं तो अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि उनसे मेरा कोई संबंध नहीं, जिनको तुम साझी ठहराकर उसके सिवा पूज्य मानते हो। अतः तुम सब मिलकर मेरे साथ दाँव-घात लगाकर देखो और मुझे मुहलत न दो।

56. मेरा भरोसा तो अल्लाह, अपने रब और तुम्हारे रब, पर है। चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है, उसकी चोटी तो उसी के हाथ में है। निस्संदेह मेरा रब सीधे मार्ग पर है।

57. किन्तु यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो जो कुछ देकर मुझे तुम्हारी ओर भेजा गया था, वह तो मैं तुम्हें पहुँचा ही चुका। मेरा रब तुम्हारे स्थान पर दूसरी

مُذَرِّ

زَيْنَبُ وَآلِهَا

مُفْتَرُونَ ۖ يَقُولُونَ لَا آتَيْنَاكَ عَلَيْهِمْ آجْرًا إِنْ أَجَبْنَاهُ  
إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرْنَاهُ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۚ وَيَقُولُونَ  
اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ  
مِدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا  
مُجْرِمِينَ ۚ قَالُوا لَهْؤُنَا مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ  
بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۚ  
إِنْ نَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ  
قَالَ إِنِّي أَشْهَدُ اللَّهَ وَ أَشْهَدُ وَأَنَا بَرِيءٌ ۚ وَمِمَّا  
تَشْرِكُونَ ۚ مِنْ دُونِهِ فَكَيْدُؤُنِي جَمِيعًا ثُمَّ لَا  
تَنْظُرُونَ ۚ وَإِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ ۚ  
مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ إِنْ رَجَعْتَ  
عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ  
مَا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ

مَدَن



किसी क्रौम को लाएगा और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। निस्संदेह मेरा रब हर चीज़ की देख-भाल कर रहा है।”

58. और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने हूद और उसके साथ के ईमान लानेवालों को अपनी दयालुता से बचा लिया। और एक कठोर यातना से हमने उन्हें छुटकारा दिया।

59. ये आद हैं, जिन्होंने अपने रब की आयतों का इनकार किया; उसके रसूलों की अवज्ञा की और हर सरकश विरोधी के पीछे चलते रहे।

وَلَا تَصْرُوهٖ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَّبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ۝  
وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَحْنُ خُودٌ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ  
بَرْحَمَتِ رَبِّنَا ۚ وَنَجِّنَهُمْ مِّنْ عَذَابٍ عَلِيمٍ ۝  
وَبَلَّغَ عَادَ بُحْدَهُمَا يَأْتِ رَبَّهُمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ  
وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝ وَأَتَّبَعُوا فِي هَذِهِ  
الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا  
رَبَّهُمْ ۚ أَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ۚ وَإِلَىٰ شُودٍ  
أَخَاهُمْ صَالِحًا ۚ قَالَ يَقَوْمِ اغْبُدُوا لِلَّهِ مَا لَكُمْ  
مِّنَ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ هُوَ أَنشَأَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ وَ  
اسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا ۚ فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تَوَلَّوْا إِلَيْهِ  
إِنَّ رَّبِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ۝ قَالُوا يَضْلِكُمْ ۚ قَدْ كُنْتُمْ  
فِيْنَا مَرْجُؤًا قَبْلَ هَذَا ۚ أَتَنْهَدُونَ أَن نَّعْبُدَ  
مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّ لَإِفْنَ شَكَّ مِمَّا تَدْعُونَا

60. इस संसार में भी लानत ने उनका पीछा किया और क्रियामत के दिन भी : “सुन लो ! निस्संदेह आद ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया। सुनो ! विनष्ट हो आद, हूद की क्रौम।”

61. समूद की ओर उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा : “ऐ मेरी क्रौम के लोगो ! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई अन्य पूज्य-प्रभु नहीं। उसी ने तुम्हें धरती से पैदा किया और उसमें तुम्हें बसाया। अतः उससे क्षमा माँगो; फिर उसकी ओर पलट आओ। निस्संदेह मेरा रब निकट है, प्रार्थनाओं को स्वीकार करनेवाला भी।”

62. उन्होंने कहा : “ऐ सालेह ! इससे पहले तू हमारे बीच ऐसा व्यक्ति था जिससे बड़ी आशाएँ थीं। क्या तू हमें उनको पूजने से रोकता है जिनकी पूजा हमारे बाप-दादा करते रहे हैं ? जिसकी ओर तू हमें बुला रहा है उसके विषय



में तो हमें संदेह है जो हमें दुविधा में डाले हुए है।”

63. उसने कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! क्या तुमने सोचा ? यदि मैं अपने रब के एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उसने मुझे अपनी ओर से दयालुता प्रदान की है, तो यदि मैं उसकी अवज्ञा करूँ तो अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी सहायता करेगा ? तुम तो और अधिक घाटे में डाल देने के अतिरिक्त मेरे हक़ में और कोई अभिवृद्धि नहीं करोगे।

64. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है। इसे छोड़ दो कि अल्लाह की धरती में खाए और इसे तकलीफ़ देने के लिए हाथ न लगाना अन्यथा समीपस्थ यातना तुम्हें आ लेगी।”

65. किन्तु उन्होंने उसकी कूचें काट डालीं। इसपर उसने कहा : “अपने घरों में तीन दिन और मज़े ले लो। यह ऐसा वादा है, जो झूठा सिद्ध न होगा।”

66. फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा, तो हमने अपनी दयालुता से सालेह को और उसके साथ के ईमान लानेवालों को बचा लिया, और उस दिन के अपमान से उन्हें सुरक्षित रखा। वास्तव में, तुम्हारा रब बड़ा शक्तिवान, प्रभुत्वशाली है।

67. और अत्याचार करनेवालों को एक भयंकर चिंघार ने आ लिया और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए,

68. मानो वे वहाँ कभी बसे ही न थे। “सुनो ! समूद ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया। सुन लो ! फिटकार हो समूद पर !”

مُزَوَّرٌ

تَبَارَكَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ

إِلَيْهِ مُرِيبٌ ۖ قَالَ يَقَوْمِ ارْوَيْتُمْ إِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ نَيْلَةٍ مِّن رَّبِّي وَأَسْنَيْتُمْ مِنْهُ رَحْمَةً ۖ فَمَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ ۖ فَمَا تَزِيدُونَنِي غَيْرَ تَخْسِيرٍ ۖ وَيَقَوْمِ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ ۖ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أََرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمْسُوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ۖ فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَمَسُّعُوا فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ۖ ذَلِكُمْ وَعَذَابُ مَكْدُودٍ ۖ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا بِجَعِينَا صَلِيحًا وَالدِّينِ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِهِمْ ۖ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۖ وَأَخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الضِّيْعَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جُثَمِينَ ۖ كَانَ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۖ أَلَا إِنَّ شَوْدَا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۖ أَلَا بُعْدًا لِّثَمُودَ ۖ

سَلَامٌ



69. और हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) इबराहीम के पास शुभ सूचना लेकर पहुँचे। उन्होंने कहा : "सलाम हो !" उसने भी कहा : "सलाम हो ।" फिर उसने कुछ विलंब न किया, एक भुना हुआ बछड़ा ले आया ।

70. किन्तु जब देखा कि उनके हाथ उसकी ओर नहीं बढ़ रहे हैं तो उसने उन्हें अजनबी समझा और दिल में उनसे डरा। वे बोले : "डरो नहीं, हम तो लूत की क्रौम की ओर भेजे गए हैं ।"

71. उसकी स्त्री भी खड़ी थी। वह इसपर हँस पड़ी। फिर हमने उसको इसहाक़ और इसहाक़ के बाद याकूब की शुभ सूचना दी ।

72. वह बोली : "हाय मेरा हतभाग्य ! क्या मैं बच्चे को जन्म दूँगी, जबकि मैं वृद्धा हूँ और ये मेरे पति हैं बूढ़े ? यह तो बड़ी ही अद्भुत बात है !"

73. वे बोले : "क्या अल्लाह के आदेश पर तुम आश्चर्य करती हो ? घरवालो ! तुम लोगों पर तो अल्लाह की दयालुता और उसकी बरकतें हैं। वह निश्चय ही प्रशंसनीय, गौरवाला है ।"

74. फिर जब इबराहीम की घबराहट दूर हो गई और उसे शुभ सूचना भी मिली तो वह लूत की क्रौम के विषय में हम से झगड़ने लगा ।

75. निस्संदेह इबराहीम बड़ा ही सहनशील, कोमल हृदय, हमारी ओर रुजू (प्रवृत्त) होनेवाला था ।

76. "ऐ इबराहीम ! इसे छोड़ दो। तुम्हारे रब का आदेश आ चुका है और

مُذَرِّجٌ

وَمَنْ يَنْزِلُ

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا  
سَلَامٌ قَالَ سَلَامٌ فَمَا لَبِثَ أَنْ جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِيذٍ  
فَلَمَّا رَأَى أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكَّرَهُمْ وَأَوْجَسَ  
مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَى  
قَوْمٍ لُوطٍ وَإِنَّا لَهُ قَائِمَةٌ فَضَوَّكْتَ كَبَشْرُنَا  
بِاسْحَاقَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِكَ يُعْقُوبُ ۖ قَالَتْ  
يُؤْتِكُنِي آلِدٌ وَأَنَا مَخْجُورٌ وَهَذَا بَعْلٌ شَيْعَاءُ  
إِنَّ هَذَا الشَّيْءُ عَجِيبٌ ۖ قَالُوا أَتَعْجَبِينَ مِنْ أَمْرِ  
اللَّهِ رَحِمْتُ اللَّهُ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ  
إِنَّهُ حَمِيدٌ مَجِيدٌ ۖ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ  
الرُّؤْيُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَى يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ  
لُوطٍ ۖ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ۖ  
يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَذَا إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ

مَنْعَةٍ



निश्चय ही उनपर न टलनेवाली यातना आनेवाली है।"

77. और जब हमारे दूत लूत के पास पहुँचे तो वह उनके कारण अप्रसन्न हुआ और उनके मामले में दिल तंग पाया। कहने लगा : "यह तो बड़ा ही कठिन दिन है।"

78. उसकी क़ौम के लोग दौड़ते हुए उसके पास आ पहुँचे। वे पहले से ही दुष्कर्म किया करते थे। उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! ये मेरी (क़ौम की) बेटियाँ (विधितः विवाह के लिए) मौजूद हैं। ये तुम्हारे लिए अधिक पवित्र हैं। अतः अल्लाह का डर रखो

और मेरे अतिथियों के विषय में मुझे अपमानित न करो। क्या तुममें एक भी अच्छी समझ का आदमी नहीं ?"

79. उन्होंने कहा : "तुझे तो मालूम है कि तेरी बेटियों से हमें कोई मतलब नहीं। और हम जो चाहते हैं, उसे तू भली-भाँति जानता है।"

80. उसने कहा : "क्या ही अच्छा होता मुझमें तुमसे मुक्काबले की शक्ति होती या मैं किसी सुदृढ़ आश्रय की शरण ही ले सकता।"

81. उन्होंने कहा : "ऐ लूत ! हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं। वे तुम तक कदापि नहीं पहुँच सकते। अतः तुम रात के किसी हिस्से में अपने घरवालों को लेकर निकल जाओ और तुममें से कोई पीछे पलटकर न देखे। हाँ, तुम्हारी स्त्री का मामला और है। उसपर भी वही कुछ बीतनेवाला है, जो उनपर बीतेगा।

رَبِّكَ وَإِنَّهُمْ لَنِيبٌ أَلَيْسَ  
وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سَيِّئًا بِهِمْ وَضَاقَ  
بِهِمْ ذُرْعًا وَقَالَ هَذَا يَوْمَ عَصِيبٍ ۖ وَجَاءَهُ  
قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ ۖ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ  
السَّيِّئَاتِ ۚ قَالَ يَقَوْمِ هَلْ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ  
لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تَخْزُونِ فِي ضَيْفِي ۚ أَلَيْسَ  
مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ ۚ قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا  
فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ ۖ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ۚ  
قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةٌ أَوْ إِنِّي إِلَٰهٌ رَّكِينٌ  
شَدِيدٌ ۚ قَالُوا يَلُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ  
يَصْلُوَا إِلَيْكَ فَاسْرِ بِأَهْلِكَ بِقُطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ  
وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا أَمْرًا نَكَ ۚ إِنَّهُ مُصِيبُهَا  
مَا أَصَابَهُمْ ۚ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الضُّمُّ ۚ أَلَيْسَ الضُّمُّ



निर्धारित समय उनके लिए प्रातःकाल का है। तो क्या प्रातःकाल निकट नहीं ?”

82. फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने उसको तलपट कर दिया और उसपर ककरीले पत्थर ताबड़-तोड़ बरसाए,

83. जो तुम्हारे रब के यहाँ चिह्नित थे। और वे अत्याचारियों से कुछ दूर भी नहीं।

84. मदयन की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। और नाप और तौल में कमी न करो। मैं तो तुम्हें अच्छी दशा में देख रहा हूँ, किन्तु मुझे तुम्हारे विषय में एक घेर लेनेवाले दिन की यातना का भय है।

85. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! इनसाफ़ के साथ नाप और तौल को पूरा रखो। और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दो और धरती में बिगाड़ पैदा करनेवाले बनकर अपने मुँह को कलुषित न करो।

86. यदि तुम मोमिन हो तो जो अल्लाह के पास शेष रहता है वही तुम्हारे लिए उत्तम है। मैं तुम्हारे ऊपर कोई नियुक्त रखवाला नहीं हूँ।”

87. वे बोले : “ऐ शुऐब ! क्या तेरी नमाज़ तुझे यही सिखाती है कि उन्हें हम छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप-दादा पूजते आए हैं या यह कि हम अपने माल का उपभोग अपनी इच्छानुसार न करें ? बस एक तू ही तो बड़ा सहनशील, समझदार रह गया है !”

مُؤْمِنِينَ

نَسَامِنَ قَاتِلِهِ

بِقَرِيبٍ ۖ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا  
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَابًا مِّنْ سَافِلٍ ۚ فَاصْبِرْ ۚ  
مُسَوِّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ۚ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ  
بَبَعِيدٍ ۚ وَلِلَّهِ مَدِينٌ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ  
يَقُومُوا عِبَادُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنَ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ وَلَا  
تَنفَعُوهُمُ الْبُكْيَالُ وَالْمِيزَانُ ۚ إِنِّي أَنزَلْتُكُمْ بِخَيْرٍ وَإِنِّي  
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ۚ وَيَقُومُوا أَوْفُوا  
الْبُكْيَالُ وَالْمِيزَانُ ۚ بِالنِّسَابِ ۚ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ  
أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۚ  
بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۚ  
وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ۚ قَالُوا يَشْعِيبُ أَصْلُكَ  
تَأْمُرُكَ أَن تَتْرَكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَن نَّفْعَلَ  
فِي أَمْوَالِنَا مَا تُشَاؤُا ۖ إِنَّا كَاشِفُوكَ الرِّيشِ

سَلَامَةٍ



88. उसने कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! तुम्हारा क्या विचार है ? यदि मैं अपने रब के एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उसने मुझे अपनी ओर से अच्छी आजीविका भी प्रदान की (तो झुठलाना मेरे लिए कितना हानिकारक होगा ! ) । और मैं नहीं चाहता कि जिन बातों से मैं तुम्हें रोकता हूँ स्वयं तुम्हारे विपरीत उनको करने लगूँ । मैं तो अपने बस भर केवल सुधार चाहता हूँ । मेरा काम बनना तो अल्लाह ही की सहायता से संभव है । उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की ओर मैं रुजू करता हूँ ।

قَالَ يَقُومُ أَرَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي  
وَرَزَقْنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَمْلِكُمْ  
إِلَىٰ مَا أَنْهَكُم عَنْهُ ۚ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا  
اسْتَطَعْتُ ۚ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ  
وَالَيْهِ أُنِيبُ ۝ وَيَقُومُ لَمْ يَجْعَلْ لَكُمْ شِقَاقِي أَنْ  
يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ  
قَوْمَ صَالِحٍ ۚ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنْكُمْ بِعِينٍ ۝ وَاسْتَغْفِرُكَ  
رَبُّكُمْ ثُمَّ ثَوَّبُوا إِلَيْهِ ۚ إِنْ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ۝ قَالُوا  
يُشْعِبُ مَا نَفَقَهُ كَثِيرًا مِّمَّا تَقُولُ وَإِنَّا لَنَرَاكَ  
فِينَا ضَعِيفًا ۚ وَلَوْلَا دَعْوَتُكَ لَرَجَمْنَاكَ ۚ وَمَا أَنتَ  
عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ۝ قَالَ يَقُومُ أَرَهَيْتُمْنِي أَعَزَّ عَلَيْكُم مِّنَ  
اللَّهِ ۚ وَاتَّخَذْتُمُوهُ وَرَاءَكُمْ ظَهْرًا ۚ وَإِنْ رَبِّي بِمَا  
تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝ وَيَقُومُ اغْمِلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ

89. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मेरे प्रति तुम्हारा विरोध कहीं तुम्हें उस अपराध पर न उभारे कि तुमपर भी वही कुछ बीते जो नूह की क़ौम या हूद की क़ौम या सालेह की क़ौम पर बीत चुका है, और लूत की क़ौम तो तुमसे कुछ दूर भी नहीं ।

90. अपने रब से क्षमा माँगो और फिर उसकी ओर पलट आओ । मेरा रब तो बड़ा दयावन्त, बहुत प्रेम करनेवाला है ।”

91. उन्होंने कहा : “ऐ शूऐब ! तेरी बहुत-सी बातों को समझने में तो हम असमर्थ हैं । और हम तो तुझे देखते हैं कि तू हमारे मध्य अत्यंत निर्बल है । यदि तेरे भाई-बन्धु न होते तो हम पत्थर मार-मारकर कभी का तुझे समाप्त कर चुके होते । तू इतने बल-बूतेवाला तो है नहीं कि हमपर भारी हो ।”

92. उसने कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! क्या मेरे भाई-बन्धु तुमपर अल्लाह से भी ज्यादा भारी हैं कि तुमने उसे अपने पीछे डाल दिया ? तुम जो कुछ भी करते हो निश्चय ही मेरे रब ने उसे अपने घेरे में ले रखा है ।

93. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! तुम अपनी जगह कर्म करते रहो, मैं भी कर



रहा हूँ। शीघ्र ही तुमको ज्ञात हो जाएगा कि किसपर वह यातना आती है, जो उसे अपमानित करके रहेगी, और कौन है जो झूठा है ! प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।”

94. अन्ततः जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने अपनी दयालुता से शुऐब और उसके साथ के ईमान लानेवालों को बचा लिया। और अत्याचार करनेवालों को एक प्रचण्ड चिंघार ने आ लिया और वे अपने घरों में अचेत औंधे पड़े रह गए,

95. मानो वे वहाँ कभी बसे ही न थे। “सुन लो ! फिटकार है मदयनवालों पर, जैसे समूद पर फिटकार हुई !”

96-97. और हमने मूसा को अपनी निशानियों और स्पष्ट प्रमाण के साथ फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, किन्तु वे फिरऔन ही के कहने पर चले, हालाँकि फिरऔन की बात कोई ठीक बात न थी।—

98. क्रियामत के दिन वह अपनी क्रौम के लोगों के आगे होगा—और उसने उन्हें आग में जा उतारा, और बहुत ही बुरा घाट है वह उतरने का !

99. यहाँ भी लानत ने उनका पीछा किया और क्रियामत के दिन भी—बहुत ही बुरा पुरस्कार है यह जो किसी को दिया जाए !

100. ये बस्तियों के कुछ वृत्तान्त हैं, जो हम तुम्हें सुना रहे हैं। इनमें कुछ तो खड़ी हैं और कुछ की फसल कट चुकी है।

101. हमने उनपर अत्याचार नहीं किया, बल्कि उन्होंने स्वयं अपने आप पर

وَمَا مِنْكُمْ مِنْ شَيْءٍ  
إِنِّي عَائِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ  
يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ  
رَقِيبٌ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا بَعَيْنَا شُعَيْبًا وَالدِّينَ  
أَمْنًا مَعَهُ يَرْحَلُ مِنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا  
الصَّخِيصَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جُثَيَيْنَ ؕ كَانَ لِمَنْ  
يَعْتَوِضُهَا أَلَا بَعْدَ الْمَدِينِ كَمَا بَعْدَتْ ثَمُودُ  
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَى بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ  
إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَأَتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ وَمَا  
أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ؕ يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ  
فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَيُسَّ الْمُورُودُ ؕ وَأُتْبِعُوا  
فِي هَذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ يُسَّ الزُّفْدِ  
الْمُرْفُودِ ذَلِكُمْ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَى نَقُصُّهُ عَلَيْكَ  
مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ؕ وَمَا ظَنَنْهُمْ وَلَكِنْ

سَلَّمَ



अत्याचार किया। फिर जब तेरे रब का आदेश आ गया तो उनके वे पूज्य, जिन्हें वे अल्लाह से हटकर पुकारा करते थे, उनके कुछ भी काम न आ सके। उन्होंने विनाश के अतिरिक्त उनके लिए किसी और चीज़ में अभिवृद्धि नहीं की।

102. तेरे रब की पकड़ ऐसी ही होती है, जब वह किसी ज़ालिम बस्ती को पकड़ता है। निस्संदेह उसकी पकड़ बड़ी दुखद, अत्यन्त कठोर होती है।

103. निश्चय ही इसमें उस व्यक्ति के लिए एक निशानी है जो आखिरत की यातना से डरता हो। वह एक ऐसा दिन होगा, जिसमें सारे ही लोग एकत्र किए जाएँगे और वह एक ऐसा दिन होगा, जिसमें सब कुछ आँखों के सामने होगा,

104. हम उसे केवल थोड़ी अवधि के लिए ही लग रहे हैं;

105. जिस दिन वह आएगा, तो उसकी अनुमति के बिना कोई व्यक्ति बात तक न कर सकेगा। फिर (मानवों में) कोई तो उनमें अभागा होगा और कोई भाग्यशाली।

106. तो जो अभागे होंगे, वे आग में होंगे; जहाँ उन्हें आर्तनाद करना और फुँकार मारना है।

107. वहाँ वे सदैव रहेंगे, जब तक आकाश और धरती स्थिर रहें, बात यह है कि तुम्हारे रब की इच्छा ही चलेगी। तुम्हारा रब जो चाहे करे।

108. रहे वे जो भाग्यशाली होंगे तो वे जन्नत में होंगे, जहाँ वे सदैव रहेंगे

ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي  
يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ لَنَا جَاءَ أَمْرُ  
رَبِّكَ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ۝ وَكَذَلِكَ أَخْذُ  
رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقَرْيَةَ وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ  
أَلِيمٌ شَدِيدٌ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِمَنْ خَافَ  
عَذَابَ الْآخِرَةِ ۚ ذَلِكَ يَوْمٌ مَجْمُوعٌ لَهُ النَّاسُ وَ  
ذَلِكَ يَوْمٌ مَشْهُودٌ ۝ وَمَا تَوْجِهُهُ إِلَّا لِأَجْلِ  
مَعْدُودٍ ۚ يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلُمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ  
فَمَنْهُمْ شَقِيقٌ وَسَعِيدٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فِيهِ  
التَّارِكُ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ ۚ خَلِيلَيْنِ فِيهَا مَا  
دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۚ إِنَّ  
رَبَّكَ فَعَالٌ لِمَا يُرِيدُ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ سَعِدُوا  
فَإِنَّ الْجَنَّةَ خَلِيلَيْنِ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ

مَلِكٌ



जब तक आकाश और धरती स्थिर रहें। बात यह है कि तुम्हारे रब की इच्छा ही चलेगी। यह एक ऐसा उपहार है, जिसका सिलसिला कभी न टूटेगा।

109. अतः जिनको ये पूज रहे हैं, उनके विषय में तुझे कोई संदेह न हो। ये तो बस उसी तरह पूजा किए जा रहे हैं, जिस तरह इससे पहले इनके बाप-दादा पूजा करते रहे हैं। हम तो इन्हें इनका हिस्सा बिना किसी कमी के पूरा-पूरा देनेवाले हैं।

110. हम मूसा को भी किताब दे चुके हैं। फिर उसमें भी विभेद किया गया था। यदि तुम्हारे रब की ओर से एक बात पहले ही निश्चित न कर दी गई होती तो उनके बीच कभी का फ़ैसला कर दिया गया होता। ये उसकी ओर से असमंजस में डाल देनेवाले संदेह में पड़े हुए हैं।

111. निश्चय ही समय आने पर एक-एक को, जितने भी हैं उनको तुम्हारा रब उनका किया पूरा-पूरा देकर रहेगा। वे जो कुछ कर रहे हैं, निस्संदेह उसे उसकी पूरी खबर है।

112. अतः जैसा तुम्हें आदेश हुआ है, जमे रहो और तुम्हारे साथ के तौबा करनेवाले भी जमे रहें, और सीमोल्लंघन न करना। जो कुछ भी तुम करते हो, निश्चय ही वह उसे देख रहा है।

113. उन लोगों की ओर तनिक भी न झुकना, जिन्होंने अत्याचार की नीति अपनाई है, अन्यथा आग तुम्हें आ लिपटेगी—और अल्लाह से हटकर तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र नहीं—फिर तुम्हें कोई सहायता भी न मिलेगी।

114. और नमाज़ क़ायम करो दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ

مُؤَدَّ

مُؤَدَّ

وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ عَطَاءٌ غَيْرُ مَجْذُودٍ ۝  
فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءُ مَا يَعْبُدُونَ  
إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاؤُهُمْ مِنْ قَبْلُ ۚ وَإِنَّا لَمُوَفُّهُمْ  
نَعْدَهُمْ غَيْرَ مَنقُوصٍ ۚ وَلَقَدْ أَتَيْنَا مُوسَى  
الْكِتَابَ فَأَخْلَفَ فِيهِ ۚ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ  
مِنْ رَبِّكَ لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ  
مِّنْهُ مُرِيبٍ ۚ وَإِن كَلَّا لَمَّا كَيُوفِيهِمْ رَّبُّكَ  
أَعْمَالَهُمْ ۚ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ فَاسْتَقِمْ  
كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۚ إِنَّهُ  
بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ وَلَا تَرْكَبُوا إِلَى الَّذِينَ  
ظَلَمُوا فَمَا تَقْتُلُوهُمُ النَّارَ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ  
مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ۚ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي  
النَّهَارِ وَزُلْفًا مِّنَ اللَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبُنَّ

مِّنَ



हिस्से में। निस्संदेह नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं। यह याद रखनेवालों के लिए एक अनुस्मरण है।

115. और धैर्य से काम लो, इसलिए कि अत्ताह सुकर्मियों का बदला अकारथ नहीं करता;

116. फिर तुमसे पहले जो नस्लें गुजर चुकी हैं उनमें ऐसे भले-समझदार क्यों न हुए जो धरती में बिगाड़ से रोकते, उन थोड़े-से लोगों के सिवा जिनको उनमें से हमने बचा लिया। अत्याचारी लोग तो उसी सुख-सामग्री के पीछे पड़े रहे, जिसमें वे रखे गए थे। वे तो थे ही अपराधी।

117. तुम्हारा रब तो ऐसा नहीं है कि बस्तियों को अकारण विनष्ट कर दे, जबकि वहाँ के निवासी बनाव और सुधार में लगे हों।

118. और यदि तुम्हारा रब चाहता तो वह सारे मनुष्यों को एक समुदाय बना देता, किन्तु अब तो वे सदैव विभेद करते ही रहेंगे,

119. सिवाय उनके जिनपर तुम्हारा रब दया करे और इसी के लिए उसने उन्हें पैदा किया है, और तुम्हारे रब की यह बात पूरी होकर रही कि "मैं जहन्नम को अपराधी जिन्नों और मनुष्यों सबसे भरकर रहूँगा।"

120. रसूलों के वृत्तान्तों में से हर वह कथा जो हम तुम्हें सुनाते हैं उसके द्वारा हम तुम्हारे हृदय को सुदृढ़ करते हैं। और इसमें तुम्हारे पास सत्य आ गया है और मोमिनों के लिए उपदेश और अनुस्मरण भी।

121. जो लोग ईमान नहीं ला रहे हैं उनसे कह दो : "तुम अपनी जगह कर्म

هُود

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ

الشَّيَاطِئِ، ذَلِكَ ذِكْرٌ لِلَّذِينَ هُمْ وَوَاضٍ  
وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝ قُلُوا  
كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةَ  
يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَاسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ  
أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ، وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أَتَوْا فِيهِ  
وَكَانُوا مُخْرِمِينَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ  
الْقُرَى بِظُلْمٍ وَأَهْلِهَا مُصْلِحُونَ ۝ وَلَوْ شَاءَ  
رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَا يَزَالُ النَّاسُ  
مُخْتَلِفِينَ ۝ إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ  
وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ  
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝ وَكَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ  
أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نَشِئْتُ بِهِ فُؤَادَكَ، وَجَاءَكَ فِي  
هَذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقُلْ

مَعْلَم



किए जाओ, हम भी कर्म कर रहे हैं।

122. तुम भी प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।”

123. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों और धरती में छिपा है, और हर मामला उसी की ओर पलटता है। अतः उसी की बन्दगी करो और उसी पर भरोसा रखो। जो कुछ तुम करते हो, उससे तुम्हारा रब बेखबर नहीं है।

## 12. यूसुफ़

(मक्का में उतरी — आयतें 111)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० रा०। ये स्पष्ट किताब की आयतें हैं।
2. हमने इसे अरबी कुरआन के रूप में उतारा है, ताकि तुम समझो।
3. इस कुरआन की तुम्हारी ओर प्रकाशना करके इसके द्वारा हम तुम्हें एक बहुत ही अच्छा बयान सुनाते हैं, यद्यपि इससे पहले तुम बेखबर थे।
4. जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा : “ऐ मेरे बाप ! मैंने स्वप्न में ग्यारह सितारे देखे और सूर्य और चाँद। मैंने उन्हें देखा कि वे मुझे सजदा कर रहे हैं।”
5. उसने कहा : “ऐ मेरे बेटे ! अपना स्वप्न अपने भाइयों को मत बताना,

يُوسُفُ

وَمَنْ جَاءَكَ مِنْ

لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اَعْمَلُوا عَلٰٓى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا  
غُلُوْنَ ؕ وَانْتَظِرُوْا ؕ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ؕ وَرَبُّوْهُ غَيْبُ  
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهُ ۚ فَاعْبُدْهُ  
وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ؕ

سُوْرَةُ يُوسُفُ مَكِّيَّةٌ ۙ اٰیٰتُهَا ۙ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الرَّسُوْلَ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ؕ اِنَّا اَنْزَلْنٰهُ  
قُرْءٰنًا عَرَبِیًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ؕ نَحْنُ نَقُصُّ  
عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ هٰذَا  
الْقُرْءٰنَ ۚ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الْغٰفِلِیْنَ ؕ

اِذْ قَالَ یُوْسُفُ لِاٰیٰتِهِ یٰٓاَبَتِ اِنِّیْ رَاٰیٓتُ اَحَدَ عَشَرَ  
كُوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاٰیْتُهُمْ لِیْ سٰجِدِیْنَ ؕ

قَالَ یٰٓبْنٰی لَا تَقْصُصْ رُءُیَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ

سَلٰمٌ



अन्यथा वे तेरे विरुद्ध कोई चाल चलेंगे। शैतान तो मनुष्य का खुला हुआ शत्रु है।

6. और ऐसा ही होगा, तेरा रब तुझे चुन लेगा और तुझे बातों की तथ्य तक पहुँचना सिखाएगा और अपना अनुग्रह तुझपर और याकूब के घरवालों पर उसी प्रकार पूरा करेगा, जिस प्रकार इससे पहले वह तेरे पूर्वज इबराहीम और इसहाक़ पर पूरा कर चुका है। निस्संदेह तेरा रब सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।”

7. निश्चय ही यूसुफ़ और उसके भाइयों में सवाल करनेवालों के लिए निशानियाँ हैं।

8. जबकि उन्होंने कहा : “यूसुफ़ और उसका भाई हमारे बाप को हमसे अधिक प्रिय हैं, हालाँकि हम एक पूरा जत्था हैं। वास्तव में हमारे बाप स्पष्टतः बहक गए हैं।

9. यूसुफ़ को मार डालो या उसे किसी भूभाग में फेंक आओ, ताकि तुम्हारे बाप का ध्यान केवल तुम्हारी ही ओर हो जाए। इसके पश्चात् तुम फिर नेक बन जाना।”

10. उनमें से एक बोलनेवाला बोल पड़ा : “यूसुफ़ की हत्या न करो, यदि तुम्हें कुछ करना ही है तो उसे किसी कुएँ की तह में डाल दो। कोई राहगीर उसे उठा लेगा।”

11. उन्होंने कहा : “ऐ हमारे बाप ! आपको क्या हो गया है कि यूसुफ़ के मामले

يُكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۚ وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِّلسَّاعِدِينَ ۚ إِذْ قَالَ الْيُوسُفُ لِأَخُوهُ أَحِبُّ إِلَيَّ آيِنًا مِنَّا وَتَحْنُ عُصْبَةٌ ۚ إِنَّ آبَاءَنَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۚ اقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَظْهِرُوا أَرْضَكُمْ لَكُمْ وَجْهَ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ۚ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَالْقُوَّةُ فِي غَيْبَتِ الْعُجْبِ يَلْتَقِطُهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ۚ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا



में आप हमपर भरोसा नहीं करते, हालाँकि, हम तो उसके हितैषी हैं ?

12. हमारे साथ कल उसे भेज दीजिए कि वह कुछ चर-चुग और खेल ले। उसकी रक्षा के लिए तो हम हैं ही।”

13. उसने कहा : “यह बात कि तुम उसे ले जाओ, मुझे दुखी कर देती है। कहीं ऐसा न हो कि तुम उसका ध्यान न रख सको और भेड़िया उसे खा जाए।”

14. वे बोले : “हमारे एक जत्थे के होते हुए भी यदि उसे भेड़िए ने खा लिया, तब तो निश्चय ही हम सब कुछ गँवा बैठे।”

15. फिर जब वे उसे ले गए और सभी इस बात पर सहमत हो गए कि उसे एक कुएँ की गहराई में डाल दें (तो उन्होंने वह किया जो करना चाहते थे), और हमने उसकी ओर प्रकाशना की : “तू उन्हें उनके इस कर्म से अवगत कराएगा और वे जानते न होंगे।”

16. कुछ रात बीते वे रोते हुए अपने बाप के पास आए।

17. कहने लगे : “ऐ हमारे बाप ! हम परस्पर दौड़ में मुक्काबला करते हुए दूर चले गए और यूसुफ़ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया था कि इतने में भेड़िया उसे खा गया। आप तो हमपर विश्वास करेंगे नहीं, यद्यपि हम सच्चे हैं।”

18. वे उसके कुतरे पर झूठमूठ का खून लगा लाए थे। उसने कहा : “नहीं, बल्कि तुम्हारे जी ने बहकाकर तुम्हारे लिए एक बात बना दी है। अब धैर्य से काम लेना ही उत्तम है ! जो बात तुम बता रहे हो उसमें अल्लाह ही सहायक हो सकता है।”

19. एक क़ाफ़िला आया। फिर अपने पनिहारा को भेजा। उसने अपना डोल ज्यों ही डाला तो पुकार उठा : “अरे ! कितनी खुशी की बात है। यह तो

وَمَا جَاءَكَ بِهِمْ  
لَهُ لَنَصْحُونَهُ ۖ أَرْسَلَهُ مَعَنَا غَدًا يَزْتَعِمُ وَيَلْعَبُ وَ  
إِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۖ قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنَّ تَذْهَبُوا  
بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ  
غَافِلُونَ ۖ قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا  
إِذَا الْخَيْرُونَ ۖ فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْتَمَعُوا أَنْ يُجْعَلُوهُ  
فِي غَيْبَتِ الْحَبِّ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَجِّيَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ  
هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً  
يَبْكُونَ ۖ قَالُوا يَا أَبَا نَأَىٰ ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا  
يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ  
لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ۖ وَجَاءَهُ عَلَىٰ قَبِيضِهِ بِدَمٍ  
كَذِبٍ ۖ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبِرْ  
بِرَجِيلٍ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۖ وَجَاءَتْ  
سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ ۖ قَالَ لِيَبْشُرَنَّ

مَرْثَلَهُ



एक लड़का है।" उन्होंने उसे व्यापार का माल समझकर छुपा लिया। किन्तु जो कुछ वे कर रहे थे, अल्लाह तो उसे जानता ही था।

20. उन्होंने उसे सस्ते दाम, गिनती के कुछ दिरहमों में बेच दिया, क्योंकि वे उसके मामले में बेपरवाह थे।

21. मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे खरीदा, उसने अपनी स्त्री से कहा : "इसको अच्छी तरह रखना। बहुत संभव है कि यह हमारे काम आए या हम इसे बेटा बना लें।" इस प्रकार हमने उस

भूभाग में यूसुफ़ के क़दम जमाने की राह निकाली (ताकि उसे प्रातःप्रातः प्रदान करें) और ताकि मामलों और बातों के परिणाम से हम उसे अवगत कराएँ। अल्लाह तो अपना काम करके रहता है, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।

22. और जब वह अपनी पूरी जवानी को पहुँचा तो हमने उसे निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया। उत्तमकार लोगों को हम इसी प्रकार बदला देते हैं।

23. जिस स्त्री के घर में वह रहता था, वह उसपर डोरे डालने लगी। उसने दरवाज़े बन्द कर दिए और कहने लगी : "लो, आ जाओ!" उसने कहा : "अल्लाह की पनाह! मेरे रब ने मुझे अच्छा स्थान दिया है। अत्याचारी कभी सफल नहीं होते।"

24. उसने उसका इरादा कर लिया था। यदि वह अपने रब का स्पष्ट प्रमाण न देख लेता तो वह भी उसका इरादा कर लेता। ऐसा इसलिए हुआ ताकि हम बुराई और अश्लीलता को उससे दूर रखें। निस्संदेह वह हमारे

هَذَا غُلْمٌ وَاسْتَرَوْهُ بِضَاعَتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ  
وَسَرَّوهُ بِمَنْ يَحْسِبُ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ، وَكَانُوا فِيهِ  
مِنَ الزَّاهِدِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ فُضْرٍ  
لَا مَرَاتَةَ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَنِّي أَلَّا يَكُونُ لِي مَثْوًى  
وَتَوَدَّاهُ وَلَدًا ۝ وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ  
وَلِنُعَلِّمَهُ مِمَّا تَوَدَّى الْأَحَادِيثَ ۝ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَى  
أَمْرِهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا بَلَغَ  
أَشَدَّهُ آثِنَهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۝ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ  
وَرَأَوْنَاهُ الْيَتِيمَ الَّذِي يَتَرَبَّصُّ عَنْ نَفْسِهِ ۝ وَعَلَقَتْ  
الْأَبْوَابُ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۝ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ  
رَبِّي أَحْسَنُ مَثْوًى ۝ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝ وَقَدْ  
هَمَّتْ بِهِ، وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنَّ رَأَى بِرَّهَانَ رَبِّهِ ۝  
كَذَلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ ۝ إِنَّهُ مِنْ



चुने हुए बन्दों में से था।

25. वे दोनों दरवाज़े की ओर झपटे और उस स्त्री ने उसका कुर्ता पीछे से फाड़ डाला। दरवाज़े पर दोनों ने उस स्त्री के पति को उपस्थित पाया। वह बोली : "जो कोई तुम्हारी घरवाली के साथ बुरा इरादा करे, उसका बदला इसके सिवा और क्या होगा कि उसे बंदी बनाया जाए या फिर कोई दुखद यातना दी जाए?"

26. उसने कहा : "यही मुझपर डोरे डाल रही थी।" उस स्त्री के लोगों में से एक गवाह ने गवाही दी : "यदि इसका कुर्ता आगे से फटा है तो यह सच्ची है और यह झूठा है,

27. और यदि उसका कुर्ता पीछे से फटा है तो यह झूठी है और यह सच्चा है।"

28. फिर जब देखा कि उसका कुर्ता पीछे से फटा है तो उसने कहा : "यह तुम स्त्रियों की चाल है। निश्चय ही तुम्हारी चाल बड़े ग़ज़ब की होती है।

29. यूसुफ़! इस मामले को जाने दे और स्त्री तू अपने गुनाह की माफ़ी माँग। निस्संदेह ख़ता तेरी ही है।"

30. नगर में स्त्रियाँ कहने लगीं : "अज़ीज़<sup>1</sup> की पत्नी अपने नव युवक गुलाम पर डोरे डालना चाहती है। वह प्रेम-प्रेरणा से उसके मन में घर कर गया है। हम तो उसे देख रहे हैं कि वह खुली ग़लती में पड़ गई है।"

31. उसने जब उनकी मक्कारी की बातें सुनी तो उन्हें बुला भेजा और उनमें

وَمِنْ دُونِهِمَا نِسَاءً مِّنْ أَهْلِهَا إِذَا دَخَلْنَ عَلَيْهِ فَانطَبَقْنَ عَلَيْهَا وَقَدْ حُشِنَ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ  
عَبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ۖ وَاتَّبَعْنَا الْبَابَ وَقَدْ تَلَفْتُمْ مَنِاسِرَ ۚ  
مِنْ دُونِهِمَا نِسَاءً مِّنْ أَهْلِهَا إِذَا دَخَلْنَ عَلَيْهِ فَانطَبَقْنَ عَلَيْهَا وَقَدْ حُشِنَ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ  
مَنْ أَرَادَ يَأْخُذْ بِكُلِّ نِسْوَةٍ لَّيْسَ لَهُ الْخَبِرُ بِمَا يَفْعَلُونَ ۚ  
الْيَوْمَ ۖ قَالَ هِيَ رَأَوْدَتْنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ  
مِّنْ أَهْلِهَا ۚ إِنْ كَانَ قَبِيضُهُ قَدْ مِّنْ قَبْلِ فَصَدَقَتْ  
وَهُوَ مِنَ الْكَذَّابِينَ ۚ وَإِنْ كَانَ قَبِيضُهُ قَدْ مِّنْ  
دُونِ فَلَا يَكُنْ لَهُ مِنَ الْإِثْمِ ۚ فَلَمَّا رَأَىٰ قَبِيضَهُ  
قَدْ مِّنْ دُونِ قَالَ إِنَّهُ مِّنْ كَيْدِ كُنَّ ۚ إِنْ كَيْدُ كُنَّ  
عَظِيمٌ ۚ يُوسُفُ أَعْرَضَ عَنْ هَٰذَا ۖ وَاسْتَغْفِرَ لِي  
لِدُنْيَاكَ ۚ إِنَّكَ كُنْتَ مِنَ الْخَاطِئِينَ ۚ وَقَالَ نِسْوَةٌ  
فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ  
قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۚ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۚ  
فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ

1. मिस्र के उच्च पदाधिकारी की उपाधि।



से हरेक के लिए आसन सुसज्जित किया और उनमें से हरेक को एक छुरी दी। उसने (यूसुफ़ से) कहा : "इनके सामने आ जाओ।" फिर जब स्त्रियों ने उसे देखा तो वे उसकी बड़ाई से दंग रह गईं। उन्होंने अपने हाथ घायल कर लिए और कहने लगीं : "अल्लाह की पनाह ! यह मनुष्य नहीं। यह तो कोई प्रतिष्ठित फ़रिश्ता है।"

32. वह बोली : "यह वही है जिसके विषय में तुम मुझे मलामत कर रही थीं। हाँ, मैंने इसे रिझाना चाहा था, किन्तु यह बचा रहा। और यदि इसने न किया जो मैं

इससे कहती हूँ तो यह अवश्य कैद किया जाएगा और अपमानित होगा।"

33. उसने कहा : "मेरे रब ! जिसकी ओर ये सब मुझे बुला रही हैं, उससे अधिक तो मुझे कैद ही पसन्द है। यदि तूने उनके दाँव-घात को मुझसे न टाला तो मैं उनकी ओर झुक जाऊँगा और निरे आवेग के वशीभूत हो जाऊँगा।"

34. अतः उसके रब ने उसकी सुन ली और उसकी ओर से उन स्त्रियों के दाँव-घात को टाल दिया। निस्संदेह वह सब कुछ सुनता, जानता है।

35. फिर उन्हें, इसके पश्चात कि वे निशानियाँ देख चुके थे, यह सूझा कि उसे एक अवधि के लिए कैद कर दें।

36. कारागार में दो नव युवकों ने भी उसके साथ प्रवेश किया। उनमें से एक ने कहा : "मैंने स्वप्न देखा है कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ।" दूसरे ने कहा : "मैंने देखा कि मैं अपने सिर पर रोटियाँ उठाए हुए हूँ, जिनको पक्षी खा रहे हैं। हमें

تَوَكَّلْ

تَوَكَّلْ

لَهُنَّ مُتَّكِرًا وَاتَّتْ كُلُّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَ  
قَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ  
أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا إِنْ هَذَا  
إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ  
وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِن لَّمْ  
يَفْعَلْ مَا أَمَرَهُ لَيَتَّخِذَنَّ وَلْيَكُونَا مِنَ الصَّغِيرِينَ  
قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ  
وَلَا أَصْرِفُ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ  
الْجَاهِلِينَ قَالَتْ فَاصْبِرْ لَهُ رَبُّهُ فَصَبَرَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ  
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ثُمَّ بَدَأَ لُمْنَا مِن بَعْدِ مَا رَأَوْا  
الْآيَاتِ لِيَتَّخِذَنَّهُ حَتَّىٰ جِئْنِي وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ  
فَتَتَيْنِ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا وَ  
قَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَانِي أُخِيطُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْرًا تَأْكُلُ

مَلَأَ



इसका अर्थ बता दीजिए। हमें तो आप बहुत ही नेक नज़र आते हैं।”

37-38. उसने कहा : “जो भोजन तुम्हें मिला करता है वह तुम्हारे पास नहीं आ पाएगा, उसके तुम्हारे पास आने से पहले ही मैं तुम्हें इसका अर्थ बता दूँगा। यह उन बातों में से है, जो मेरे रब ने मुझे सिखाई हैं। मैंने तो उन लोगों का तरीका छोड़कर, जो अल्लाह को नहीं मानते और जो आखिरत (परलोक) का इनकार करते हैं, अपने पूर्वज इबराहीम, इसहाक और याकूब का तरीका अपनाया है। हमसे यह नहीं हो सकता कि

تَمَاحِیْ ۝ ۱۲  
الطَّيْرُ مِنْهُ نَبْتْنَا يَتَّبِعُنَا بِقُدْرَةِ رَبِّكَ ۝ اِنَّا نَزَّلْنَا مِنَ الْمَحْنَنِ ۝  
قَالَ لَا يَأْتِيَكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقُنِي ۝ اِلَّا نَبَاتًا مِّمَّا يَنْتَابُ ۝  
قَبْلَ اَنْ يَّاتِيَكُمَا ذِكْرًا ۝ مَّا عَلَّمْنِي رَبِّي ۝ اِلَّا  
تَرْكُوتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ  
كَافِرُونَ ۝ ۱۳ ۝ وَاشْبَعْتُ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ ۝ اِبْرٰهِيْمَ ۝ وَاسْحَقَ  
وَيَعْقُوبَ ۝ مَا كَانَ لَنَا اَنْ نَّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۝  
ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنْ اَكْثَرُ  
النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ ۱۴ ۝ يٰصٰحِبِ الرَّجَنِ ۝ اَرْبَابُ  
مُّتَعَرِّفُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ مَّا تَعْبُدُوْنَ  
مِنْ دُوْنِهِ ۝ اِلَّا اَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا اَنْتُمْ وَاٰبَاؤُكُمْ  
فَاَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۝ اِنْ اَحْكُمُ الْاَيْمٰنُ اَمْرًا ۝ اَلَا  
تَعْبُدُوْنَ اِلَّا الْاِيَّاهُ ۝ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَدِيْمُ وَلٰكِنْ اَكْثَرُ  
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ ۱۵ ۝ يٰصٰحِبِ الرَّجَنِ ۝ اَمَّا اَحَدُكُمَا

हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को साझी ठहराएँ। यह हमपर और लोगों पर अल्लाह का अनुग्रह है। किन्तु अधिकतर लोग आभार नहीं प्रकट करते।

39. ऐ कारागार के मेरे साथियो ! क्या अलग-अलग बहुत-से रब अच्छे हैं या अकेला अल्लाह जिसका प्रभुत्व सबपर है ?

40. तुम उसके सिवा जिनकी भी बन्दगी करते हो वे तो बस निरे नाम हैं, जो तुमने रख छोड़े हैं और तुम्हारे बाप-दादा ने। उनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा। सत्ता और अधिकार तो बस अल्लाह का है। उसने आदेश दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो। यही सीधा, सच्चा दीन (धर्म) है, किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

41. ऐ कारागार के मेरे दोनों साथियो ! तुममें से एक तो अपने स्वामी को



मद्यपान कराएगा; रहा दूसरा तो उसे सूली पर चढ़ाया जाएगा और पक्षी उसका सिर खाएँगे। फ़ैसला हो चुका उस बात का जिसके विषय में तुम मुझसे पूछ रहे हो।”

42. उन दोनों में से जिसके विषय में उसने समझा था कि वह रिहा हो जाएगा, उससे कहा : “अपने स्वामी से मेरी चर्चा करना।” किन्तु शैतान ने अपने स्वामी से उसकी चर्चा करना भुलवा दिया। अतः वह (यूसुफ़) कई वर्ष तक कारागार ही में रहा।

43. फिर ऐसा हुआ कि सम्राट ने कहा : “मैंने स्वप्न में देखा है कि सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खा रही हैं और सात बालें हरी हैं और दूसरी (सात) सूखी। ऐ सरदारो ! यदि तुम स्वप्न का अर्थ बताते हो, तो मुझे मेरे इस स्वप्न के संबंध में बताओ।”

44. उन्होंने कहा : “ये तो संप्रमित स्वप्न हैं। हम ऐसे स्वप्न का अर्थ नहीं जानते।”

45. इतने में उन दोनों में से जो रिहा हो गया था और एक असें के बाद उसे याद आया तो वह बोला.: “मैं इसका अर्थ तुम्हें बताता हूँ। ज़रा मुझे (यूसुफ़ के पास) भेज दीजिए।”

46. “यूसुफ़, ऐ सत्यवान ! हमें इसका अर्थ बता कि सात मोटी गायें हैं, जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालें हैं और दूसरी (सात)

يُوسُفُ

مَنَافِعُ وَالْأَنْفِ

فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا، وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ  
الطَّيْرُ مِنْ رَأْسِهِ، قَضَى الْأَمْرَ الَّذِي فِيهِ نَسَفْتَيْنِ  
وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ  
فَأَنسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ  
سِنِينَ ۖ وَقَالَ الْمَلِكُ لِمَنْ أَرَىٰ فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ  
يَأْكُلُهَا سَبْعَ عَجَافٍ وَسَبْعَ سُتُوبَاتٍ خُضِرَ  
وَأُخْرِي سَبِيحٌ، يَأْكُلُهَا الْمَلَأُ أَتَوْنِي فِي رُؤْيَايَ إِن  
كُنْتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ۖ قَالُوا أَضْغَاثُ أَخْلَامٍ وَمَا  
نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَخْلَامِ بِعَالَمِينَ ۖ وَقَالَ الَّذِي نَجَّى  
مِنْهُمَا وَادْكُرْ بَعْدَ أَمْرٍ أَنَا أَنْتُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ  
فَارْسِلُونِ ۖ يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي  
سَبْعِ بَقَرَاتٍ يَأْكُلُهَا سَبْعَ عَجَافٍ وَسَبْعِ  
سُتُوبَاتٍ خُضِرَ وَأُخْرِي سَبِيحٌ لِّعَلَىٰ أَرْجِهِ إِلَى النَّاسِ

مَثَلُهُ



सूखी, ताकि मैं लोगों के पास लौटकर जाऊँ कि वे जान लें।”

47. उसने कहा : “सात वर्ष तक तुम व्यवहारतः खेती करते रहोगे। फिर तुम जो फ़सल काटो तो थोड़े हिस्से के सिवा जो तुम्हारे खाने के काम आए शेष को उसकी बाली ही में रहने देना।

48. फिर उसके पश्चात सात कठिन वर्ष आएँगे जो वे सब खा जाएँगे जो तुमने उनके लिए पहले से इकट्ठा कर रखा होगा, सिवाय उस थोड़े-से हिस्से के जो तुम सुरक्षित कर लोगे।

49. फिर उसके पश्चात एक वर्ष ऐसा आएगा, जिसमें वर्षा द्वारा लोगों की फ़रियाद सुन ली जाएगी और उसमें वे रस निचोड़ेंगे।”

50. सम्राट ने कहा : “उसे मेरे पास ले आओ।” किन्तु जब दूत उसके पास पहुँचा तो उसने कहा : “अपने स्वामी के पास वापस जाओ और उससे पूछो कि ‘उन स्त्रियों का क्या मामला है, जिन्होंने अपने हाथ घायल कर लिए थे।’ निस्संदेह मेरा रब उनकी मक्कारी को भली-भाँति जानता है।”

51. — उसने कहा : “तुम स्त्रियों का क्या हाल था, जब तुमने यूसुफ़ को रिझाने की चेष्टा की थी?” उन्होंने कहा : “पाक है अल्लाह ! हम उसमें कोई बुराई नहीं जानते हैं।” अज़ीज़ की स्त्री बोल उठी : “अब तो सत्य प्रकट हो गया है। मैंने ही उसे रिझाना चाहा था। वह तो बिलकुल सच्चा है।”

52. — “यह इसलिए कि वह जान ले कि मैंने गुप्त रूप से उसके साथ विश्वासघात नहीं किया है और यह कि अल्लाह विश्वासघातियों की चाल को चलने नहीं देता।

يُوسُفُ

وَمِنْ آيَاتِهِ

لَعَلَّكُمْ يَعْلَمُونَ ۖ قَالَ تَزِرْغَوْنَ سَبْعَ سِنِينَ دَأْبًا ۖ  
فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا  
تَأْكُلُونَ ۖ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعٌ شِدَادًا  
يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تَحْصِنُونَ ۖ  
ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَ  
فِيهِ يَعَصِرُونَ ۚ وَقَالَ الْمَلِكُ التَّوَنِّي بِهِ ۚ فَلَمَّا  
جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ مَا بَالُ  
الْبِسْوَاعِ الَّتِي قَطَعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِمْ  
عَلِيمٌ ۖ قَالَ مَا خَطْبُكُمْ إِذْ أَرَادْتُمْ يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ  
قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ قَالَتِ امْرَأَتُ  
الْعَزِيزِ إِنِّي حَصَصْتُ الْحَقَّ أَنَا وَأَوْثَقْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ  
وَإِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۖ ذَلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ  
بِالْعَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِبِينَ ۖ

سَبْعَ



53. मैं यह नहीं कहता कि मैं बरी हूँ—जी तो बुराई पर उभारता ही है—यदि मेरा रब ही दया करे तो बात और है। निश्चय ही मेरा रब बहुत क्षमाशील, दयावान है।”

54. सम्राट ने कहा : “उसे मेरे पास ले आओ ! मैं उसे अपने लिए खास कर लूँगा।” जब उसने उससे बात-चीत की तो उसने कहा “निस्संदेह आज तुम हमारे यहाँ विश्वसनीय अधिकार प्राप्त व्यक्ति हो।”

55. उसने कहा : “इस भू-भाग के खजानों पर मुझे नियुक्त कर दीजिए। निश्चय ही मैं रक्षक और ज्ञानवान हूँ।”

56. इस प्रकार हमने यूसुफ़ को उस भू-भाग में अधिकार प्रदान किया कि वह उसमें जहाँ चाहे अपनी जगह बनाए। हम जिसे चाहते हैं उसे अपनी दया का पात्र बनाते हैं। उत्तमकारों का बदला हम अकारथ नहीं जाने देते।

57. और ईमान लानेवालों और डर रखनेवालों के लिए आखिरत का बदला इससे कहीं उत्तम है।

58. फिर ऐसा हुआ कि यूसुफ़ के भाई आए और उसके सामने उपस्थित हुए। उसने तो उन्हें पहचान लिया, किन्तु वे उससे अपरिचित रहे।

59. जब उसने उनके लिए उनका सामान तैयार करा दिया तो कहा : “बाप की ओर से जो तुम्हारा एक भाई है, उसे मेरे पास लाना। क्या देखते नहीं कि मैं पूरी माप से देता हूँ और मैं अच्छा आतिशेय भी हूँ ?

60. किन्तु यदि तुम उसे मेरे पास न लाए तो फिर तुम्हारे लिए मेरे यहाँ कोई

يُوسُفُ

وَمَا يُغْنِي

وَمَا يُغْنِي نَفْسِي إِنَّ النَّفْسَ لَمَّارَةٌ بِالشُّوْءِ  
إِلَّا مَا رَجَمَ رَبِّي إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَقَالَ  
الْمَلِكُ اسْتَوْفِي بِهِ اسْتَفْصِلْهُ لِنَفْسِي، فَلَمَّا كَلَّمَهُ  
قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ۝ قَالَ  
اجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ عَلَيْكُمْ ۝  
وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ، يَتَّبِعُوهُ مِنْهَا  
حَيْثُ يَشَاءُ، نُضِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيبُ  
أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَلَا جَزَاءَ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ  
آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ وَجَاءَ اِخْوَتَ يُوسُفَ  
فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ۝ وَلَمَّا  
جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ قَالَ اسْتَؤْنِي بِإِخْوَتِكُمْ مِنْ  
أَبْنَيْكُمْ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أَوْفِي الْكَيْلِ وَأَنَا خَيْرُ  
الْمُنْزِلِينَ ۝ فَإِنْ لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ

منزل



माप (गल्ला) नहीं और तुम मेरे पास आना भी मत ।”

61. वे बोले : “हम उसके लिए उसके बाप को राज़ी करने की कोशिश करेंगे और हम यह काम अवश्य करेंगे ।”

62. उसने अपने सेवकों से कहा : “इनका दिया हुआ माल इनके सामान में रख दो कि जब ये अपने घरवालों की ओर लौटें तो इसे पहचान लें, ताकि ये फिर लौटकर आएँ ।”

63. फिर जब वे अपने बाप के पास लौटकर गए तो कहा : “ऐ हमारे बाप ! (अनाज की) माप हमसे रोक दी गई है । अतः हमारे भाई को हमारे साथ भेज दीजिए, ताकि हम माप भर लाएँ; और हम उसकी रक्षा के लिए तो मौजूद ही हैं ।”

64. उसने कहा : “क्या मैं उसके मामले में तुमपर वैसा ही भरोसा करूँ जैसा इससे पहले उसके भाई के मामले में तुमपर भरोसा कर चुका हूँ ? हाँ, अल्लाह ही सबसे अच्छा रक्षक है और वह सबसे बढ़कर दयावान है ।”

65. जब उन्होंने अपना सामान खोला, तो उन्होंने अपना माल अपनी ओर वापस किया हुआ पाया । वे बोले : “ऐ हमारे बाप, हमें और क्या चाहिए ! यह हमारा माल भी तो हमें लौटा दिया गया है । अब हम अपने घरवालों के लिए खाद्य-सामग्री लाएँगे और अपने भाई की रक्षा भी करेंगे । और एक ऊँट के बोझभर और अधिक लेंगे । इतना माप (गल्ला) मिल जाना तो बिल्कुल आसान है ।”

66. उसने कहा : “मैं उसे तुम्हारे साथ कदापि नहीं भेज सकता । जब तक कि तुम अल्लाह को गवाह बनाकर मुझे पक्का वचन न दो कि तुम उसे मेरे

وَمَا يُؤْمِنُ

وَمَا يُؤْمِنُ

عِنْدِي وَلَا تَقْرَبُونِ ۖ قَالُوا سَرَّادُ عَشَةِ  
أَبَاهُ وَرَبَّنَا لَفَعَلُونَ ۖ وَقَالَ لِفَتَيْنِهِ اجْعَلُوا  
بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يُعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا  
إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۖ فَلَمَّا رَجَعُوا  
إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ  
مَعَنَا آخَانًا تَحْمِلُ رِبَّانًا لَهُ لِحَفَظُونَ ۖ قَالَ هَلْ  
أَمْنُكُمْ عَلَيْهِ ۖ إِلَّا كَمَا أَمْنْتُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ ۖ  
فَاللَّهُ خَيْرٌ حَافِظًا ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۖ وَكَلَّمَا  
فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ يُدْتَلَّىٰ إِلَيْهِمْ ۖ  
قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي ۖ هَذِهِ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا  
وَنَبِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانًا وَنَزِدَا ذِكْلًا بَعِيرٍ  
ذَلِكَ كَيْلٌ يُبَيِّرُ ۖ قَالَ لَنْ أُرْسِلَ مَعَكُمْ حَتَّىٰ  
تُؤْتُونِي مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَنْ  
يَحْضُرَ



पास अवश्य लाओगे, यह और बात है कि तुम घिर जाओ।” फिर जब उन्होंने उसे अपना वचन दे दिया तो उसने कहा : “हम जो कुछ कर रहे हैं वह अल्लाह के हवाले है।”

67. उसने यह भी कहा : “ऐ मेरे बेटो ! एक द्वार से प्रवेश न करना, बल्कि विभिन्न द्वारों से प्रवेश करना यद्यपि मैं अल्लाह के मुक्काबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकता। आदेश तो बस अल्लाह ही का चलता है। उसी पर मैंने भरोसा किया और भरोसा करनेवालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।”

68. और जब उन्होंने प्रवेश किया जिस तरह से उनके बाप ने उन्हें आदेश दिया था— अल्लाह की ओर से होनेवाली किसी चीज़ को वह उनसे हटा नहीं सकता था। बस याक़ूब के जी की एक इच्छा थी, जो उसने पूरी कर ली। और निस्संदेह वह ज्ञानवान था, क्योंकि हमने उसे ज्ञान प्रदान किया था; किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं —

69. और जब उन्होंने यूसुफ़ के यहाँ प्रवेश किया तो उसने अपने भाई को अपने पास जगह दी और कहा : “मैं तेरा भाई हूँ। जो कुछ ये करते रहे हैं, अब तू उसपर दुखी न हो।”

70. फिर जब उनका सामान तैयार कर दिया तो अपने भाई के सामान में पानी पीने का प्याला रख दिया। फिर एक मुकारनेवाले ने पुकारकर कहा : “ऐ

يُؤْتِيهِ

رَبُّكَ

يُعَاطِيكُمْ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْتَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَيَّ  
مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ۝ وَقَالَ يَبْنَئِي لَا تَدْخُلُوا  
مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُتَفَرِّقَةٍ ۝  
وَمَا أَعْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا  
لِيُؤْتِيَهُ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝  
وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ  
يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي  
نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا وَإِنَّهُ لَدُوْعٌ لِمَا عَلَّمْنَاهُ  
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوا  
عَلَى يُوسُفَ أَوَّاهٌ وَإِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا  
أَخُوكَ فَلَا تَبْتِهِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝  
فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ نِيقَايَةَ فِي  
رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيُّهَا الْوَيْلُ لَكُمْ

مَدِينَةٍ



काफ़िलेवालो ! निश्चय ही तुम चोर हो !”

71. वे उनकी ओर रुख करते हुए बोले : “तुम्हारी क्या चीज़ खो गई है ?”

72. उन्होंने कहा : “शाही पैमाना हमें नहीं मिल रहा है। जो व्यक्ति उसे ला दे उसको एक ऊँट का बोझभर ग़ल्ला इनाम मिलेगा। मैं इसकी ज़िम्मेदारी लेता हूँ।”

73. वे कहने लगे : “अल्लाह की क़सम ! तुम लोग जानते ही हो कि हम इस भू-भाग में बिगाड़ पैदा करने नहीं आए हैं और न हम चोर हैं।”

74. उन्होंने कहा : “यदि तुम झूठे सिद्ध हुए तो फिर उसका दण्ड क्या है ?”

75. वे बोले : “उसका दण्ड यह है कि जिसके सामान में वह मिले वही उसका बदला ठहराया जाए। हम अत्याचारियों को ऐसा ही दण्ड देते हैं।”

76. फिर उसके भाई की खुरजी से पहले उनकी खुरजियाँ देखनी शुरू कीं; फिर उसके भाई की खुरजी से उसे बरामद कर लिया। इस प्रकार हमने यूसुफ़ के लिए उपाय किया। वह शाही क़ानून के अनुसार अपने भाई को प्राप्त नहीं कर सकता था। बल्कि अल्लाह ही की इच्छा लागू है। हम जिसको चाहें उसके दर्जे ऊँचे कर दें। और प्रत्येक ज्ञानवान से ऊपर एक ज्ञानवान मौजूद है।

77. उन्होंने कहा : “यदि यह चोरी करता है तो चोरी तो इससे पहले इसका एक भाई भी कर चुका है।” किन्तु यूसुफ़ ने इसे अपने जी ही में रखा और उनपर प्रकट नहीं किया। उसने कहा : “मक़ाम की दृष्टि से तुम अत्यन्त बुरे

يُؤْتِيهِ

يُؤْتِيهِ

لَسْرِقُونَ ۖ قَالُوا وَاقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقَدُونَ ۖ  
قَالُوا تَفْقَدُ صُورَاءَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ  
وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ۖ قَالُوا نَأْتِيهِ لَعَدُ غَلَتُمْ مَا جَحِشْنَا  
لِنُفِيسَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سَارِقِينَ ۖ قَالُوا  
فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَاذِبِينَ ۖ قَالُوا جَزَاؤُهُ  
مَنْ وَجَدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ ۖ كَذَلِكَ  
تَجْزَى الظَّالِمِينَ ۖ فَبَدَأَ بِأَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ  
أَخِيهِ ۖ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ ۖ كَذَلِكَ  
كَدْنَا لِيُؤْسَفَ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ  
الْمَلِكِ ۖ لَا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ تَرْفَعُ دَرَجَتٍ مِّنْ  
نَّسَبِهِ ۖ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ۖ قَالُوا إِنْ يَسْرِقْ  
فَقَدْ مَسَرَّقَ أَخُو لَهُ مِنْ قَبْلُ ۖ فَاسْرَحَا يُؤْسَفُ  
فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمَا ۖ قَالَ أَنْتُمْ شَرُّ

مَنْ



हो। जो कुछ तुम बताते हो, अल्लाह को उसका पूरा ज्ञान है।”

78. उन्होंने कहा : “ऐ अज़ीज़ ! इसका बाप बहुत ही बूढ़ा है। इसलिए इसके स्थान पर हममें से किसी को रख लीजिए। हमारी दृष्टि में तो आप बड़े ही सुकर्मी हैं।”

79. उसने कहा : “इस बात से अल्लाह पनाह में रखे कि जिसके पास हमने अपना माल पाया है, उसे छोड़कर हम किसी दूसरे को रखें। फिर तो हम अत्याचारी ठहरेंगे।”

80. तो जब वे उससे निराश हो गए तो परामर्श करने के लिए अलग जा बैठे। उनमें जो बड़ा था, वह कहने लगा : “क्या तुम जानते नहीं कि तुम्हारा बाप अल्लाह के नाम पर तुमसे वचन ले चुका है और उसको जो इससे पहले यूसुफ़ के मामले में तुमसे कसूर हो चुका है? मैं तो इस भू-भाग से कदापि टलने का नहीं जब तक कि मेरे बाप मुझे अनुमति न दें या अल्लाह ही मेरे हक़ में कोई फ़ैसला कर दे। और वही सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।

81. तुम अपने बाप के पास लौटकर जाओ और कहो : ‘ऐ हमारे बाप ! आपके बेटे ने चोरी की है। हमने तो वही कहा जो हमें मालूम हो सका, परोक्ष तो हमारी दृष्टि में था नहीं।’

82. आप उस बस्ती से पूछ लीजिए जहाँ हम थे और उस क़ाफ़िले से भी

يُفْسِدُونَ

وَمَا يُفْسِدُونَ

مَكَانًا. وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ۝ قَالُوا يَا أَبَانَا  
الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدًا  
مَكَانَهُ. إِنَّا نُرِيدُكَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ قَالَ مَعَاذَ  
اللَّهِ أَنْ تَأْخُذَ بَلَاءًا مِّنْ وَحْدَنَا مَثَاعًا عِنْدَكَ. إِنْ  
إِنَّا إِذَا لَطَلِمُونَ ۝ فَلَمَّا اسْتَشِيرُوا مِنْهُ خَلَصُوا  
نَجِيًّا. قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ  
قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْعِدًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ  
مَا فَرَقْتُمْ فِي يُوسُفَ. فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّى  
يَأْذَنَ لِي أَوْ يَأْذَنَ لِلَّهِ. وَهُوَ خَيْرُ  
الْحَكِيمِينَ ۝ ارْجِعُوا إِلَىٰ آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا  
إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ. وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلَّمَنَا  
وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ۝ وَنَسِىَ الْقَرْيَةَ الَّتِي  
كُنَّا فِيهَا وَالْعَذْرَاءَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا. وَإِنَّا

مَنْزِلٌ



وَمَا أَهْلَكَ

يُوسُفَ

जिसके साथ होकर हम आए।  
निस्संदेह हम बिलकुल सच्चे हैं।”

83. उसने कहा : “नहीं, बल्कि तुम्हारे जी ही ने तुम्हें पट्टी पढ़ाकर एक बात बना दी है। अब धैर्य से काम लेना ही उत्तम है ! बहुत संभव है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास ले आए। वह तो सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।”

84. उसने उनकी ओर से मुख फेर लिया और कहने लगा : “हाय अफ़सोस, यूसुफ़ की जुदाई पर !” और ग़म के मारे उसकी आँखें सफ़ेद पड़ गई और वह घुटा जा रहा था।

لَصِدِّقُونَ ۖ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ  
تَصَبَّرْ جَمِيعًا ۖ عَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۚ  
إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۖ وَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ  
يَٰسَافِرِ ۖ عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِبْرَاهِيمَ ۖ وَابْرَأَتْ عَيْنُهُ مِنَ الْحُزَنِ  
فَهُوَ كَظِيمٌ ۖ قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتُوا تَذَكَّرُ يُونُسَ  
حَتَّىٰ تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ۖ  
قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ  
اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۖ يَبْنَئِي أَدْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا ۖ مِنَ  
يُونُسَ وَأَخِيهِ وَلَا تَأَيُّسُوا مِنَ رُوحِ اللَّهِ إِنَّهُ  
لَا يَأْيُسُ مِنَ رُوحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ۖ فَلَمَّا  
دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَكْنَا  
الضَّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجَاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَ  
تَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۖ إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ۖ

مَنْزِلٌ

85. उन्होंने कहा : “अल्लाह की क़सम ! आप तो यूसुफ़ ही की याद में लगे रहेंगे, यहाँ तक कि घुलकर रहेंगे या प्राण ही त्याग देंगे।”

86. उसने कहा : “मैं तो अपनी परेशानी और अपने ग़म की शिकायत अल्लाह ही से करता हूँ। और अल्लाह की ओर से जो मैं जानता हूँ, तुम नहीं जानते।

87. ऐ मेरे बेटो ! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की टोह लगाओ और अल्लाह की सदयता से निराश न हो। अल्लाह की सदयता से तो केवल कुफ़्र करनेवाले ही निराश होते हैं।”

88. फिर जब वे उसके पास उपस्थित हुए तो कहा : “ऐ अज़ीज़ ! हमें और हमारे घरवालों को बहुत तकलीफ़ पहुँची है और हम कुछ तुच्छ-सी पूँजी लेकर आए हैं, किन्तु आप हमें पूरी-पूरी माप प्रदान करें। और हमें दान दें। निश्चय ही दान करनेवालों को बदला अल्लाह देता है।”



وَقَالَ يُوسُفُ

يُوسُفُ

89. उसने कहा : “क्या तुम्हें यह भी मालूम है कि जब तुम आवेग के वशीभूत थे तो यूसुफ़ और उसके भाई के साथ तुमने क्या किया था ?”

90. वे बोल पड़े : “क्या यूसुफ़ आप ही हैं ?” उसने कहा : “मैं ही यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हमपर उपकार किया है। सच तो यह है कि जो कोई डर रखे और धैर्य से काम ले तो अल्लाह भी उत्तमकारों का बदला अकारथ नहीं करता।”

91. उन्होंने कहा : “अल्लाह की कसम ! आपको अल्लाह ने हमारे मुक़ाबले में पसन्द किया और निश्चय ही चूक तो हमसे हुई।”

92. उसने कहा : “आज तुमपर कोई आरोप नहीं। अल्लाह तुम्हें क्षमा करे। वह सबसे बढ़कर दयावान है।

93. मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसे मेरे बाप के मुख पर डाल दो। उनकी नेत्र-ज्योति लौट आएगी, फिर अपने सब घरवालों को मेरे यहाँ ले आओ।”

94. इधर जब क़ाफ़िला चला तो उनके बाप ने कहा : “यदि तुम मुझे बहकी बातें करनेवाला न समझो तो मुझे तो यूसुफ़ की महक आ रही है।”

95. वे बोले : “अल्लाह की कसम ! आप तो अभी तक अपनी उसी पुरानी भ्रांति ही में पड़े हुए हैं।”

96. फिर जब शुभ सूचना देनेवाला आया तो उसने उस (कुर्ते) को उसके मुँह पर डाल दिया और तत्क्षण उसकी नेत्र-ज्योति लौट आई। उसने कहा : “क्या मैंने

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ يُّوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ  
جَاهِلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّكَ لَأَنْتَ يُوسُفُ ۝ قَالَ أَنَا  
يُّوسُفُ وَهَذَا أَخِي ۖ قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَن  
يَشِئُ وَيُضِيزُ ۖ قَالَنَّهُ لَا يُضِيزُ ۖ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝  
قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ أَتَرَكْنَا اللَّهَ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخُاطِبِينَ ۝  
قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۖ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ ۖ  
وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝ إِذْ هَبُوا بَيْعِيصِي هَذَا  
فَالْقُوَّةَ عَلَى وَجْهِ ابْنِ يَاتٍ بَصِيرًا ۖ وَأَتَوْنِي بِأَهْلِكُمْ  
أَجْمَعِينَ ۝ وَلَمَّا قَصَلَتِ الْعِزُّ قَالَ أَبُوهُمْ  
إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنْ تُفَنِّدُونِ ۝  
قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ۝ فَلَمَّا أَنْ  
جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَى وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۖ  
قَالَ أَرَأَيْتُمْ لَكُمْ ءَاتِي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا

مَنْ



तुमसे कहा नहीं था कि अल्लाह की ओर से जो मैं जानता हूँ, तुम नहीं जानते।”

97. वे बोले : “ऐ हमारे बाप ! आप हमारे गुनाहों की क्षमा के लिए प्रार्थना करें। वास्तव में चूक हमसे ही हुई।”

98. उसने कहा : “मैं अपने रब से तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करूँगा। वह बहुत क्षमाशील, दयावान है।”

99. फिर जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उसने अपने माँ-बाप को खास अपने पास जगह दी और कहा : “तुम सब नगर में प्रवेश

करो। अल्लाह ने चाहा तो यह प्रवेश निश्चिन्तता के साथ होगा।”

100. उसने अपने माँ-बाप को ऊँची जगह सिंहासन पर बिठाया और सब उसके आगे सजदे में गिर पड़े। इस अवसर पर उसने कहा : “ऐ मेरे बाप ! यह मेरे विगत स्वप्न का साकार रूप है। इसे मेरे रब ने सच बना दिया। और उसने मुझपर उपकार किया जब मुझे कैदखाने से निकाला और आप लोगों को देहात से इसके पश्चात ले आया, जबकि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच फ़साद डलवा दिया था। निस्संदेह मेरा रब जो चाहता है उसके लिए सूक्ष्म उपाय करता है। वास्तव में वही सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

101. मेरे रब ! तूने मुझे राज्य प्रदान किया और मुझे घटनाओं और बातों के निष्कर्ष तक पहुँचना सिखाया। आकाश और धरती के पैदा करनेवाले ! दुनिया और आखिरत में तू ही मेरा संरक्षक मित्र है। तू मुझे इस दशा में उठा

يُوسُفُ

وَمَا آتَيْنَاهُ

تَعْلَمُونَ ۝ قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا  
خَاطِئِينَ ۝ قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ  
الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَّاهُ  
لِئِهِ أَبْوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوا مَصْرًا إِنَّ شَاءَ اللَّهِ  
أَمْنِينَ ۝ وَرَفَعَ أَبْوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ  
سُجَّدًا ۝ وَقَالَ يَا بَنِي هَذَا تِلْكَ أَنَا مِنْ قَبْلُ  
قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ  
أَخْرَجَنِي مِنَ السِّبْيِ وَأَنْجَاكَ مِنْ الْبَدَنِ مِنَ الْيَدِ  
بَعْدَ أَنْ نَزَعَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۝ إِنَّ  
رَبِّي لَطِيفٌ لِمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝  
رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ  
تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۝ فَاطْرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝  
أَنْتَ وَلِيَّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۝ تُوفِّقُنِي مَسْلَمًا

مَنْ



कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला।”

102. ये परोक्ष की खबरे हैं जिनकी हम तुम्हारी ओर प्रकाशना कर रहे हैं। तुम तो उनके पास नहीं थे, जब उन्होंने अपने मामले को पक्का करके षड्यंत्र किया था।

103. किन्तु चाहे तुम कितना ही चाहो, अधिकतर लोग तो मानेंगे नहीं।

104. तुम उनसे इसका कोई बदला भी नहीं माँगते। यह तो सारे संसार के लिए बस एक अनुस्मरण है।

105. आकाशों और धरती में कितनी ही निशानियाँ हैं, जिनपर से वे इस तरह गुज़र जाते हैं कि उनकी ओर वे ध्यान ही नहीं देते।

106. इनमें अधिकतर लोग अल्लाह को मानते भी हैं तो इस तरह कि वे साझी भी ठहराते हैं।

107. क्या वे इस बात से निश्चिन्त हैं कि अल्लाह की कोई यातना उन्हें ढँक ले या सहसा वह घड़ी ही उनपर आ जाए, जबकि वे बिलकुल बेखबर हों?

108. कह दो : “यही मेरा मार्ग है। मैं अल्लाह की ओर बुलाता हूँ। मैं स्वयं भी पूर्ण प्रकाश में हूँ और मेरे अनुयायी भी—महिमावान है अल्लाह!—और मैं कदापि बहुदेववादी नहीं।”

109. तुमसे पहले भी हमने जिनको रसूल बनाकर भेजा, वे सब बस्तियों के रहनेवाले पुरुष ही थे। हम उनकी ओर प्रकाशना करते रहे—फिर क्या वे

لُزِمُوا

وَمَا كُنْتُمْ لَدَيْهِمْ إِذْ اجْتَمَعُوا أَمْرُهُمْ

وَالْحَقِّقِي بِالضَّالِّحِينَ ۝ ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ

تُوجِيهِهِ إِلَيْكَ ۝ وَمَا كُنْتُمْ لَدَيْهِمْ إِذْ اجْتَمَعُوا أَمْرُهُمْ

وَهُمْ يَمْكُرُونَ ۝ وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ

بِمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا تَنْتَلِهِمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنَّ

هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝ وَكَأَيِّنْ مِنْ آيَةٍ فِي

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُمْرُونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا

مُعْرِضُونَ ۝ وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللهِ إِلَّا وَهُمْ

مُفْرِكُونَ ۝ أَفَأَمِنُوا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِنْ

عَذَابِ اللهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ

لَا يَشْعُرُونَ ۝ قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُوا إِلَى اللهِ

عَلَى بَصِيرَةٍ ۚ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ وَسُبْحَانَ اللهِ وَمَا

أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا

رِجَالًا نُنَاجِي الْإِنْسَانَ مِنْ أَهْلِ الْقُرَى ۚ أَفَلَمْ يَسِيرُوا

سُورَةُ

يَا

وَمَا كُنْتُمْ لَدَيْهِمْ إِذْ اجْتَمَعُوا أَمْرُهُمْ



धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उनका कैसा परिणाम हुआ, जो उनसे पहले गुजरे हैं? निश्चय ही आखिरत का घर ही डर रखनेवालों के लिए सर्वोत्तम है। तो क्या तुम समझते नहीं?—

110. यहाँ तक कि जब वे रसूल निराश होने लगे और वे समझने लगे कि उनसे झूठ कहा गया था कि सहसा उन्हें हमारी सहायता पहुँच गई। फिर हमने जिसे चाहा बचा लिया। किन्तु अपराधी लोगों पर से तो हमारी यातना टलती ही नहीं।

111. निश्चय ही उनकी कथाओं में बुद्धि और समझ रखनेवालों के लिए एक शिक्षाप्रद सामग्री है। यह कोई घड़ी हुई बात नहीं है, बल्कि यह अपने से पूर्व<sup>1</sup> की पुष्टि में है, और हर चीज़ का विस्तार और ईमान लानेवाले लोगों के लिए मार्ग- दर्शन और दयालुता है।

الزُّنُودِ

وَالَّذِينَ

فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ  
مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ  
آمَنُوا ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَ  
كَانُوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا ۚ فَنُصِّحِي  
مَنْ نَشَاءُ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۝  
لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ  
مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ ۚ وَلَكِن تَصْدِيقَ الَّذِي  
بَيْنَ يَدَيْهِ ۚ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَهُدًى وَ  
رَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

سُورَةُ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ  
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي اَنْزَلَ اِلَيْكَ  
مِنْ نَزْلِكَ الْحَقَّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

سُورَةُ

## 13. अर-रअद

(मदीना में उतरी— आयतें 43)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० मीम० रा०। ये किताब की आयतें हैं और जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है, वह सत्य है, किन्तु अधिकतर लोग मान नहीं रहे हैं।

1. अर्थात् अपने से पूर्व की आसमानी शिक्षाओं।



2. अल्लाह वह है जिसने आकाशों को बिना सहारे के ऊँचा बनाया जैसा कि तुम उन्हें देखते हो। फिर वह सिंहासन पर आसीन हुआ। उसने सूर्य और चन्द्रमा को काम पर लगाया। हरेक एक नियत समय तक के लिए चला जा रहा है। वह सारे काम का विधान कर रहा है; वह निशानियाँ खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि तुम्हें अपने रब से मिलने का विश्वास हो।

3. और वही है जिसने धरती को फैलाया और उसमें जमे हुए पर्वत और नदियाँ बनाई और हरेक पैदावार की दो-दो किस्में बनाई। वही रात से दिन को छिपा देता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं।

4. और धरती में पास-पास भूभाग पाए जाते हैं जो परस्पर मिले हुए हैं, और अंगूरों के बाग हैं और खेतियाँ हैं और खजूर के पेड़ हैं, इकहरे भी और दोहरे भी। सबको एक ही पानी सिंचित करता है, फिर भी हम पैदावार और स्वाद में किसी को किसी के मुक़ाबले में बढ़ा देते हैं। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो बुद्धि से काम लेते हैं।

5. अब यदि तुम्हें आश्चर्य ही करना है तो आश्चर्य की बात तो उनका यह कहना है कि : "क्या जब हम मिट्टी हो जाएँगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा भी होंगे?" वही हैं जिन्होंने अपने रब के साथ इनकार की नीति अपनाई और

الْقَمَرِ

تَقَاتِلَ

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَسَحَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ بَلَاغًا رَبِّكُمْ تَوْقِنُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الشَّجَرِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشَى الْاَيْلَ النَّهَارَ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ وَفِي الْأَرْضِ قِطْعٌ مُّتَمَجِّجَاتٌ وَجَنَّاتٌ مِنْ أَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَى بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَنُفِصِلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأَكْلِ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَإِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ إِذَا كُنَّا ثَرَاتًا لِّفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ

سَبَّحَهُ



वही हैं, जिनकी गर्दनो में तौक पड़े हुए हैं और वही आग (में पड़ने) वाले हैं जिसमें उन्हें सदैव रहना है।

6. वे भलाई से पहले बुराई के लिए तुमसे जल्दी मचा रहे हैं, हालाँकि उनसे पहले कितनी ही शिक्षाप्रद मिसालें गुज़र चुकी हैं। किन्तु तुम्हारा रब लोगों को उनके अत्याचार के बावजूद क्षमा कर देता है और वास्तव में तुम्हारा रब दण्ड देने में भी बहुत कठोर है।

7. जिन्होंने इनकार किया, वे कहते हैं : "उसपर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं अवतरित हुई?" तुम तो बस एक चेतावनी देनेवाले हो और हर क़ौम के लिए एक मार्गदर्शक हुआ है।

8. किसी भी स्त्री-जाति को जो भी गर्भ रहता है अल्लाह उसे जान रहा होता है और उसे भी जो गर्भाशय में कमी-बेशी होती है। और उसके यहाँ हरेक चीज़ का एक निश्चित अन्दाज़ा है।

9. वह परोक्ष और प्रत्यक्ष का ज्ञाता है, महान, अत्यन्त उच्च है।

10. तुममें से कोई चुपके से बात करे और जो कोई ज़ोर से और जो कोई रात में छिपता हो और जो दिन में चलता-फिरता दीख पड़ता हो उसके लिए सब बराबर है।

11. उसके रक्षक (पहरेदार) उसके अपने आगे और पीछे लगे होते हैं जो अल्लाह के आदेश से उसकी रक्षा करते हैं। किसी क़ौम के लोगों को जो कुछ

अनुवाद

उमर अल-फारूक

الْأَغْلُلُ فِي أَعْنَاقِهِمْ، وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالتَّيْتَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلَتُ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِلنَّاسِ عَلَى ظُلْمِهِمْ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَوْلَا نُنْزِلْ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ مَا نَشَاءُ أَنْتَ مُنْذِرٌ وَكُلُّ قَوْمٍ هَادٍ ۝ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَعْمَلُ كُلُّ أُنْثَى وَمَا تَغِيصُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِقَدَارٍ ۝ عَلِيمُ الْغُيُوبِ وَ الشَّهَادَةِ الْكَبِيرِ الْمُتَعَالِ ۝ سَوَاءٌ مِنْكُمْ مَنْ أَمَرَ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۝ لَهُ مُعَقَّبَاتٌ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ

منزل



प्राप्त होता है अल्लाह उसे बदलता नहीं, जब तक कि वे स्वयं अपने आपको न बदल डालें। और जब अल्लाह किसी क़ौम का अनिष्ट चाहता है तो फिर वह उससे टल नहीं सकता, और उससे हटकर उनका कोई समर्थक और संरक्षक भी नहीं।

12. वही है जो भय और आशा के निमित्त तुम्हें बिजली की चमक दिखाता है और बोझिल बादलों को उठाता है।

13. बादल की गरज उसका गुणगान करती है और उसके भय से काँपते हुए फ़रिश्ते भी। वही कड़कती बिजलियाँ भेजता है, फिर जिसपर चाहता है उन्हें गिरा देता है, जबकि वे अल्लाह के विषय में झगड़ रहे होते हैं। निश्चय ही उसका चाल बड़ी सख्त है।

14. उसी के लिए सच्ची पुकार है। उससे हटकर जिनको वे पुकारते हैं, वे उनकी पुकार का कुछ भी उत्तर नहीं देते। बस यह ऐसा ही होता है जैसे कोई अपने दोनों हाथ पानी की ओर इसलिए फैलाए कि वह उसके मुँह में पहुँच जाए, हालाँकि वह उस तक पहुँचनेवाला नहीं। कुफ़्र करनेवालों की पुकार तो बस भटकने ही के लिए होती है।

15. आकाशों और धरती में जो भी है स्वेच्छापूर्वक या विवशतापूर्वक अल्लाह ही को सजदा कर रहे हैं और उनकी परछाइयाँ भी प्रातः और संध्या समय।

16. कहो : “आकाशों और धरती का रब कौन है ?” कहो : “अल्लाह !” कह दो : “फिर क्या तुमने उससे हटकर दूसरों को अपना संरक्षक बना रखा है,

अनुवाद

وَمَا يَنْفَعُهُمْ

لَا يُغَيِّرُ مَا يَقُومُ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۚ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءَ آفَلًا مَرَدًّا لَهُ ۖ وَمَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَالٍ ۚ هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ الْبَرْقَ خُوفًا وَطَمَعًا وَيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۖ وَيُسَيِّرُ الرِّعْدَ بِمُحْدِثٍ وَالْمَلَائِكَةَ مِنْ خِيفَتِهِ ۖ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ ۖ وَهُوَ شَدِيدُ الْحَالِ ۖ لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْمَعُونَ لَهُمْ يَنْهَىٰ إِلَّا كِبَاسِطَ كَفِّهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلِغَهُمْ فَأَءَ ۖ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ ۖ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۖ وَلِلَّهِ يُسْجَدُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَالُهُمْ بِالْعُدْوِ وَالْأَصَالِ ۖ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ قُلْ أَفَأَتَّخِذُكُمْ مِنْ

مَزَل

وَمَا يَنْفَعُهُمْ



وَمَا يَنْظُرُونَ

الزُّمَرِ

जिन्हें स्वयं अपने भी किसी लाभ का न अधिकार प्राप्त है और न किसी हानि का?" कहो : "क्या अंधा और आँखोंवाला दोनों बराबर होते हैं? या बराबर होते हैं अँधेरे और प्रकाश? या जिनको अल्लाह का सहभागी ठहराया है, उन्होंने भी कुछ पैदा किया है, जैसा कि उसने पैदा किया है जिसके कारण सृष्टि का मामला इनके लिए गड़बड़ हो गया है?" कहो : "हर चीज़ का पैदा करनेवाला अल्लाह है और वह अकेला है, सब पर प्रभावी!"

دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ أَنْ نَنْفَعَهُمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا  
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرَةُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي  
الظُّلُمَةُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا إِلَهُهُمُ شُرَكَاءَ خَلَقُوا  
كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ  
كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ  
مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهِ فَاتَّخَذَ السَّيْلُ  
زَبَدًا رَابِيًا وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ  
أَبْتَعَاءَ حُلِيِّهِ أَوْ مَتَاعٍ رَبَّدَ مِثْلَهُ كَذَلِكَ يَضْرِبُ  
اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً  
وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ كَذَلِكَ  
يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ  
الْحُسْنَىٰ وَالَّذِينَ كَفَرُوا سَيُجْزَوْنَ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا  
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ

وَمَا يَنْظُرُونَ

17. उसने आकाश से पानी

उतारा तो नदी-नाले अपनी-अपनी समाई के अनुसार बह निकले। फिर पानी के बहाव ने उभरे हुए झाग को उठा लिया और उसमें से भी, जिसे वे ज़ेवर या दूसरे सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं, ऐसा ही झाग उठता है। इस प्रकार अल्लाह सत्य और असत्य की मिसाल बयान करता है। फिर जो झाग है वह तो सूखकर नष्ट हो जाता है और जो कुछ लोगों को लाभ पहुँचानेवाला होता है, वह धरती में ठहर जाता है। इसी प्रकार अल्लाह दृष्टांत प्रस्तुत करता है।

18. जिन लोगों ने अपने रब का आमंत्रण स्वीकार कर लिया, उनके लिए अच्छा पुरस्कार है। रहे वे लोग जिन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया यदि उनके पास वह सब कुछ हो जो धरती में है, बल्कि उसके साथ उतना और भी हो तो



अपनी मुक्ति के लिए वे सब दे डालें। वही हैं, जिनका बुरा हिसाब होगा। उनका ठिकाना जहन्नम है और वह अत्यन्त बुरा विश्राम-स्थल है।

19. भला वह व्यक्ति जो जानता है कि जो कुछ तुमपर उतरा है तुम्हारे रब की ओर से सत्य है, कभी उस जैसा हो सकता है जो अंधा है? परन्तु समझते तो वही हैं जो बुद्धि और समझ रखते हैं,

20. जो अल्लाह के साथ की हुई प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं और अभिवचन को तोड़ते नहीं,

21. और जो ऐसे हैं कि अल्लाह ने जिसे जोड़ने का आदेश दिया है, उसे जोड़ते हैं और अपने रब से डरते रहते हैं और बुरे हिसाब का उन्हें डर लगा रहता है।

22. और जिन लोगों ने अपने रब की प्रसन्नता की चाह में धैर्य से काम लिया और नमाज़ कायम की और जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसमें से खुले और छिपे खर्च किया, और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं। वही लोग हैं जिनके लिए आखिरत के घर का अच्छा परिणाम है,

23. अर्थात् सदैव रहने के बाग़ हैं जिनमें वे प्रवेश करेंगे और उनके बाप-दादा और उनकी पत्नियों और उनकी संतानों में से जो नेक होंगे वे भी, और हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास पहुँचेंगे।

24. (वे कहेंगे) : "तुमपर सलाम है उसके बदले में जो तुमने धैर्य से काम लिया।" अतः क्या ही अच्छा परिणाम है आखिरत के घर का !

25. रहे वे लोग जो अल्लाह की प्रतिज्ञा को उसे दृढ़ करने के पश्चात् तोड़

الْأَفْئِدَةِ

بَيْنَهُمْ

أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۖ وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَ  
يُسْأَلُ السَّاعِدُونَ ۖ أَفَمَنْ يَعْلمُ أَنَّ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ  
مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَغْيَىٰ ۖ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ  
أُولُو الْأَلْبَابِ ۖ الَّذِينَ يُوقُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا  
يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ ۖ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ  
بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ  
الْحِسَابِ ۖ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَ  
أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوْا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً  
وَيُؤْتُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةِ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى  
الدَّارِ ۖ جَنَّاتٌ عِدْنُ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ  
أَبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ  
عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۖ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۖ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ  
عُقْبَى الدَّارِ ۖ وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ

مَنْعِهِمْ



مَنْ آمَنَ

الرَّحْمَنُ

डालते हैं और अल्लाह ने जिसे जोड़ने का आदेश दिया है, उसे काटते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं। वही हैं जिनके लिए फिटकार है और जिनके लिए आखिरत का बुरा घर है।

26. अल्लाह जिसको चाहता है प्रचुर फैली हुई रोज़ी प्रदान करता है और इसी प्रकार नपी-तुली भी। और वे सांसारिक जीवन में मग्न हैं, हालाँकि सांसारिक जीवन आखिरत के मुक़ाबले में तो बस अल्प सुख-सामग्री है।

27. जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं: "उसपर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी?" कहो: "अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट कर देता है। अपनी ओर तो वह मार्गदर्शन उसी का करता है जो रुजू होता है।"

28. ऐसे ही लोग हैं जो ईमान लाए और जिनके दिलों को अल्लाह के स्मरण से आराम और चैन मिलता है। सुन लो, अल्लाह के स्मरण से ही दिलों को संतोष प्राप्त हुआ करता है।

29. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए सुख-सौभाग्य है और लौटने का अच्छा ठिकाना है।

30. अतएव हमने तुम्हें एक ऐसे समुदाय में भेजा है जिससे पहले कितने ही समुदाय गुज़र चुके हैं, ताकि हमने तुम्हारी ओर जो प्रकाशना की है, उसे उनको सुना दो, यद्यपि वे रहमान के साथ इनकार की नीति अपनाए हुए हैं। कह दो: "वही मेरा रब है। उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। उसी पर मेरा

مِنْ شَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ وَفَرَحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْنَا آيَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ قُلْ إِنْ اللَّهُ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِئِ إِلَىٰ يَوْمٍ أَتَابَ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ ۚ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحَسَنُ مَا أَجْرُهُمْ ۚ كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَشَارَوْا عَلَيْهِمْ ۚ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ ۚ بِالزَّخْمَيْنِ ۚ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَرْجِعِي ۝



भरोसा है और उसी की ओर मुझे पलटकर जाना है।”

31. और यदि कोई ऐसा कुरआन होता जिसके द्वारा पहाड़ चलने लगते या उससे धरती खण्ड-खण्ड हो जाती या उसके द्वारा मुर्दे बोलने लगते (तब भी वे लोग ईमान न लाते)। नहीं, बल्कि बात यह है कि सारे काम अल्लाह ही के अधिकार में हैं। फिर क्या जो लोग ईमान लाए हैं वे यह जानकर निराश नहीं हुए कि यदि अल्लाह चाहता तो सारे ही मनुष्यों को सीधे मार्ग पर लगा देता? और इनकार करनेवालों पर तो उनकी करतूतों के बदले में कोई न कोई आपदा निरंतर आती

ही रहेगी, या उनके घर के निकट ही कहीं उतरती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पूरा होगा। निस्संदेह अल्लाह अपने वादे के किरुद्ध नहीं जाता।”

32. तुमसे पहले भी कितने ही रसूलों का उपहास किया जा चुका है, किन्तु मैंने इनकार करनेवालों को मुहलत दी। फिर अंततः मैंने उन्हें पकड़ लिया, फिर कैसी रही मेरी सज़ा?

33. भला वह (अल्लाह) जो प्रत्येक व्यक्ति के सिर पर, उसकी कमाई पर निगाह रखते हुए खड़ा है (उसके समान कोई दूसरा हो सकता है)? फिर भी लोगों ने अल्लाह के सहभागी-ठहरा रखे हैं। कहो: “तनिक उनके नाम तो लो! (क्या तुम्हारे पास उनके पक्ष में कोई प्रमाण है?) या ऐसा है कि तुम उसे ऐसी बात की खबर दे रहे हो, जिसके अस्तित्व की उसे धरती भर में खबर नहीं? या यूँ ही यह एक ऊपरी बात ही बात है?” नहीं, बल्कि इनकार करनेवालों को उनकी मक्कारी ही सुहावनी लगती है और वे मार्ग से रुक गए हैं। जिसे अल्लाह ही गुमराही में छोड़ दे, उसे कोई मार्ग पर लानेवाला नहीं।

الْقُرْآنِ

وَمَا أَهْلُوا

مَتَابٌ ۖ وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ  
قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كَلِمَةٌ بِهِ الْمَوْتُ ۚ بَلْ تَتْلُو  
الْأَمْرَ جَمِيعًا ۚ أَفَلَمْ يَأْنِيسَ الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ لَوْ  
يَشَاءُ اللَّهُ لَهْدَى النَّاسَ جَمِيعًا ۚ وَلَا يَزَالُ  
الَّذِينَ كَفَرُوا تَصْنِيعُهُمْ بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةً أَوْ تَحُلُ  
قَرْنِيًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا  
يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۚ وَلَقَدْ اسْتَهْزَىٰ بِرُسُلٍ مِّنْ  
قَبْلِكَ فَامْلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ  
كَانَ عِقَابٌ ۚ أَقْسَمُ هُوَ أَقْسَمُ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا  
كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ ۚ قُلْ سَبُّهُمْ أَمْرٌ  
ثَلَاثُونَ ۚ بَلْ لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَحَدٌ مِّنْ  
الْقَوْلِ ۚ بَلْ رَتِينَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرَهُمْ وَصَدُّوا  
عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۚ

مَدَن



34. उनके लिए सांसारिक जीवन में भी यातना है। रही आखिरत की यातना, तो वह अत्यन्त कठोर है। और कोई भी तो नहीं जो उन्हें अल्लाह से बचानेवाला हो।

35. डर रखनेवालों के लिए जिस जन्नत का वादा है उसकी शान यह है कि उसके नीचे नहरें बह रही हैं, उसके फल शाश्वत हैं और इसी प्रकार उसकी छाया भी। यह परिणाम है उनका जो डर रखते हैं, जबकि इनकार करनेवालों का परिणाम आग है।

36. जिन लोगों को हमने किताब प्रदान की है वे उससे, जो तुम्हारी ओर उतारा है, हर्षित होते हैं और विभिन्न गिरोहों के कुछ लोग ऐसे भी हैं जो उसकी कुछ बातों का इनकार करते हैं। कह दो : "मुझे तो बस यह आदेश हुआ है कि मैं अल्लाह की बन्दगी करूँ और उसका सहभागी न ठहराऊँ। मैं उसी की ओर बुलाता हूँ और उसी की ओर मुझे लौटकर जाना है।"

37. और इसी प्रकार हमने इस (कुरआन) को एक अरबी फ़रमान के रूप में उतारा है। अब यदि तुम उस ज्ञान के पश्चात भी, जो तुम्हारे पास आ चुका है, उनकी इच्छाओं के पीछे चले तो अल्लाह के मुक्काबले में न तो तुम्हारा कोई सहायक मित्र होगा और न कोई बचानेवाला।

38. तुमसे पहले भी हम कितने ही रसूल भेज चुके हैं और हमने उन्हें पत्नियाँ और बच्चे भी दिए थे, और किसी रसूल को यह अधिकार नहीं था कि वह अल्लाह की अनुमति के बिना कोई निशानी स्वयं ला देता। हर चीज़ के लिए एक समय है जो अटल लिखित है।

وَالَّذِينَ

وَالَّذِينَ

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ  
وَمَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي  
وُعِدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ أُكُلُهَا  
دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى  
الْكُفْرِينَ النَّارُ ۝ وَالَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابُ يَفْرَحُونَ  
بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُنْكِرُ بَعْضَهُ  
قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ ۝  
إِلَيْهِ أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَآبٌ ۝ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ  
حُكْمًا وَعَرَبِيًّا وَلَقَدْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا  
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ وَلَا  
وَاقٍ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا  
لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ  
يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ۝

مَنْ







अवतरित की है, ताकि तुम मनुष्यों को अँधेरो से निकालकर प्रकाश की ओर ले आओ, उनके रब की अनुमति से प्रभुत्वशाली, प्रशंस्य सत्ता, उस अल्लाह के मार्ग की ओर जिसका वह सब है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। इनकार करनेवालों के लिए तो एक कठोर यातना के कारण बड़ी तबाही है।

3. जो आखिरत की अपेक्षा सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसमें टेढ़ा पैदा करना चाहते हैं, वही परले दरजे की गुमराही में पड़े हैं।

4. हमने जो रसूल भी भेजा, उसकी अपनी क़ौम की भाषा के साथ ही भेजा, ताकि वह उनके लिए अच्छी तरह खोलकर बयान कर दे। फिर अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट रहने देता है और जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर लगा देता है। वह है भी प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्त्वदर्शी।

5. हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा था कि “अपनी क़ौम के लोगों को अँधेरो से प्रकाश की ओर निकाल ला और उन्हें ‘अल्लाह के दिवस’ याद दिला।”<sup>1</sup> निश्चय ही इसमें प्रत्येक धैर्यवान, कृतज्ञ व्यक्ति के लिए कितनी ही निशानियाँ हैं।

6. जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा : “अल्लाह की उस

الْعَزِيزِ

فَتَأْتِيهِمْ

إِلَى الثُّورَةِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ  
الْحَمِيدِ ۚ اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي  
الْأَرْضِ ۚ وَوَيْلٌ لِلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۚ  
الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ  
وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۖ أُولَٰئِكَ  
فِي ضَلٰلٍ بَعِيدٍ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا  
بِلِسَانٍ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۖ فَيُضِلَّ اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ  
وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۚ وَلَقَدْ  
أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ  
إِلَى النُّورِ ۖ وَذَكِّرْهُمْ بِآيَاتِهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ  
لِّذٰلِكَ ۚ لَا يَأْتِي لِكُلِّ صَبَآةٍ شُكْرٌ ۖ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ  
ادْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ آلِ  
فِرْعَوْنَ ۖ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيَدْعُوْنَ

مَذٰلِكُمْ

1. मानव-इतिहास के वे दिन जिनमें अल्लाह ने सरकारों और अवज्ञाकारियों को विनष्ट किया और अपने आज्ञाकारी बन्दों की सहायता की, उन्हें अत्याचारियों से छुटकारा दिलाया और उन्हें बढ़ाई और श्रेष्ठता प्रदान की।



कृपादृष्टि को याद करो, जो तुमपर हुई। जब उसने तुम्हें फिरौनियों से छुटकारा दिलाया जो तुम्हें बुरी यातना दे रहे थे, तुम्हारे बेटों का वध कर डालते थे और तुम्हारी औरतों को जीवित रखते थे, किन्तु इसमें तुम्हारे रब की ओर से बड़ी कृपा हुई।”

7. जब तुम्हारे रब ने सचेत कर दिया था कि ‘यदि तुम कृतज्ञ हुए तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा, परन्तु यदि तुम अकृतज्ञ सिद्ध हुए तो निश्चय ही मेरी यातना भी अत्यन्त कठोर है।’

8. और मूसा ने भी कहा था :

“यदि तुम और वे जो भी धरती में हैं सब के सब अकृतज्ञ हो जाओ तो अल्लाह तो बड़ा निरपेक्ष, प्रशंस्य है।”

9. क्या तुम्हें उन लोगों की खबर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले गुज़रे हैं : नूह की क़ौम और आद और समूद और वे लोग जो उनके पश्चात हुए जिनको अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता? उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आए थे, किन्तु उन्होंने उनके मुँह पर अपने हाथ रख दिए और कहने लगे : “जो कुछ देकर तुम्हें भेजा गया है, हम उसका इनकार करते हैं और जिसकी ओर तुम हमें बुला रहे हो, उसके विषय में तो हम अत्यन्त दुविधाजनक संदेह में ग्रस्त हैं।”

10. उनके रसूलों ने कहा “क्या अल्लाह के विषय में संदेह है, जो आकाशों और धरती का रचयिता है? वह तो तुम्हें इसलिए बुला रहा है, ताकि तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर दे और तुम्हें एक नियत समय तक मुहलत दे।” उन्होंने कहा : “तुम तो बस हमारे ही जैसे एक मनुष्य हो, चाहते हो कि

إِنشَاءكُمْ

وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ

أَنبَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكَ بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۚ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۝ قَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تُكْفِرُوا أَنْتُمْ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۖ قَالَ اللَّهُ لَعَنِي حَمِيدٌ ۝ الْكَرِيهُانُ يَكْفُرُوا الْيَهُودُ مِمَّن قَبْلَكُمْ قَوْمُ نُوحٍ ۖ وَعَادٌ وَثَمُودُ ۚ وَالَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ ۚ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَعْيُنَهُمْ فِي الْأَفْوَاهِ ۚ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝ قَالَتْ رُسُلُهُم أَفِى اللَّهِ شَكٌّ فَأَطِيعُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخَّرَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ قَالُوا إِنَّا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ

سورة



हमें उनसे रोक दो जिनकी पूजा हमारे बाप-दादा करते आए हैं। अच्छा, तो अब हमारे सामने कोई स्पष्ट प्रमाण ले आओ।”

11. उनके रसूलों ने उनसे कहा : “हम तो वास्तव में बस तुम्हारे ही जैसे मनुष्य हैं, किन्तु अल्लाह अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है एहसान करता है और यह हमारा काम नहीं कि तुम्हारे सामने कोई प्रमाण ले आएँ। यह तो बस अल्लाह के आदेश के पश्चात ही संभव है; और अल्लाह ही पर ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए।

انزلهم

ونزلهم

تَرْيَدُونَ أَنْ نَصُدَّوَنَّا عَنَّا كَأَنْ يَغْبُدَ آبَاؤُنَا  
فَاتَّوَنَّا بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۝ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ  
تُخِنُوا إِلَّا بَشْرٌ مِثْلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ  
مِنْ عِبَادِهِ ۝ وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَانٍ إِلَّا  
بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝  
وَمَا لَنَا أَلَّا تَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا  
وَلَنَضْمِيرَنَّ عَلَىٰ مَا أَدْنَيْنَاكُمْ ۝ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ  
الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلرُّسُلِ لَهُمْ  
كَتُوبٌ جَنَّتْكُمْ مِنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۝ فَأَوَّخَىٰ  
إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَنُسَكِّنَنَّكُمْ  
الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۝ ذَلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَ  
خَافَ وَعَبَدَ ۝ وَاسْتَغْفِرُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ  
عَنِيدٍ ۝ وَمَنْ وَرَّأَيْتَهُ جَهَنَّمَ وَنُفْسٌ مِنْ مَّاءٍ

مذلة

12. आखिर हमें क्या हुआ है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, जबकि उसने हमें हमारे मार्ग दिखाए हैं? तुम हमें जो तकलीफ़ पहुँचा रहे हो उसके मुकाबले में हम धैर्य से काम लेंगे। भरोसा करनेवालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।”

13. अन्ततः इनकार करनेवालों ने अपने रसूलों से कहा : “हम तुम्हें अपने भू-भाग से निकालकर रहेंगे, या तो तुम्हें हमारे पंथ में लौट आना होगा।” तब उनके रब ने उनकी ओर प्रकाशना की : “हम अत्याचारियों को विनष्ट करके रहेंगे।

14. और उनके पश्चात तुम्हें इस धरती में बसाएँगे। यह उसके लिए है, जिसे मेरे समक्ष खड़े होने का भय हो और जो मेरी चेतावनी से डरे।”

15. उन्होंने फ़ैसला चाहा और प्रत्येक सरकश-दुराग्रही असफल होकर रहा।

16. वह जहन्नम से घिरा है और पीने को उसे कचलोहू का पानी दिया जाएगा,



17. जिसे वह कठिनाई से घूट-घूट करके पिएगा और ऐसा नहीं लगेगा कि वह आसानी से उसे उतार सकता है, और मृत्यु उसपर हर ओर से चली आती होगी, फिर भी वह मरेगा नहीं। और उसके सामने कठोर यातना होगी।

18. जिन लोगों ने अपने रब का इनकार किया उनकी मिसाल यह है कि उनके कर्म जैसे राख हों जिसपर आँधी के दिन प्रचण्ड हवा का झोंका चले। कुछ भी उन्हें अपनी कमाई में से हाथ न आ सकेगा। यही परले दर्जे की तबाही और गुमराही है।

19. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने आकाशों और धरती को सोदेश्य पैदा किया? यदि वह चाहे तो तुम सबको ले जाए और एक नवीन सृष्टि जनसमूह ले आए।

20. और यह अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं है।

21. सबके सब अल्लाह के सामने खुलकर आ जाएँगे तो कमज़ोर लोग, उन लोगों से जो बड़े बने हुए थे, कहेंगे : "हम तो तुम्हारे पीछे चलते थे। तो क्या तुम अल्लाह की यातना में से कुछ हमपर से टाल सकते हो?" वे कहेंगे : "यदि अल्लाह हमें मार्ग दिखाता तो हम तुम्हें भी दिखाते। अब यदि हम व्याकुल हों या धैर्य से काम लें, हमारे लिए बराबर है। हमारे लिए बचने का कोई उपाय नहीं।"

22. जब मामले का फ़ैसला हो चुकेगा तब शैतान कहेगा : "अल्लाह ने तो

الْزُّمَرِ

وَمَا أَتَيْنَاهُمْ

صَدِيدٍ ۖ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِغُهُ وَيَأْتِيهِ  
الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَدِينٍ ۚ وَمِنْ  
وَرَأَيْهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۝ مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا  
بِرَبِّهِمْ أَغْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي  
يَوْمٍ عَاصِفٍ ۖ لَا يَقْدِرُونَ مِنْهَا كَسْبًا عَلَى شَيْءٍ ۚ  
ذَٰلِكَ هُوَ الصَّلَٰلُ الْبَعِيدُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ إِنَّ يَٰسَأَ يُذْهِبَكُمْ وَ  
يَأْتِي بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ  
بِعَزِيزٍ ۝ وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ  
اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ رَبَّعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ  
عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قَالُوا لَوْ هَدَّ سَنَا  
اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجْرُ عَنَّا أَمْ صَبَرْنَا مَا  
لَنَا مِنْ مَّحِيصٍ ۚ وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَنَا قُضِيَ

مَزْلَمٌ



وَمَا تَنْبَغِي

الْأَمْرَانِ

तुमसे सच्चा वादा किया था और मैंने भी तुमसे वादा किया था, फिर मैंने तो तुमसे सत्य के प्रतिकूल कहा था। और मेरा तो तुमपर कोई अधिकार नहीं था, सिवाय इसके कि मैंने तुम्हें बुलाया और तुमने मेरी बात मान ली; तो अब मुझे मलामत (भर्त्सना) न करो, बल्कि अपने आप ही को मलामत करो, न मैं तुम्हारी फ़रियाद सुन सकता हूँ और न तुम मेरी फ़रियाद सुन सकते हो। पहले जो तुमने सहभागी ठहराया था, मैं उससे विरक्त हूँ।" निश्चय ही अत्याचारियों के लिए दुखदायिनी यातना है।

الْأَمْرَانِ اللَّهُ وَعَدَكُمْ وَعَدَ الْحَقُّ وَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي فَلَا تَلُمُونِي وَلَوْلَا أَنْفُسُكُمْ مَا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِمُصْرِخِي لِي إِنِّي كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَأَدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۝ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ صَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَضَلُّهَا ثَايِتٌ وَقَرَعَهَا فِي السَّمَاءِ ۝ تُؤْتِي أَكْلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ

سُورَةِ

23. इसके विपरीत जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए वे ऐसे बागों में प्रवेश करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वे अपने रब की अनुमति से सदैव रहेंगे। वहाँ उनका अभिवादन 'सलाम' से होगा।

24. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने कैसी मिसाल पेश की? अच्छी उत्तम बात एक अच्छे शुभ वृक्ष के सदृश है, जिसकी जड़ गहरी जमी हुई हो और उसकी शाखाएँ आकाश में पहुँची हुई हों;

25. अपने रब की अनुमति से वह हर समय अपना फल दे रहा हो। अल्लाह तो लोगों के लिए मिसालें पेश करता है, ताकि वे जाग्रत हों।

26. और अशुभ एवं अशुद्ध बात की मिसाल एक अशुभ वृक्ष के सदृश है, जिसे धरती के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाए और उसे कुछ



भी स्थिरता प्राप्त न हो ।

27. ईमान लानेवालों को अल्लाह सुदृढ़ बात के द्वारा सांसारिक जीवन में भी और परलोक में भी सुदृढ़ता प्रदान करता है और अत्याचारियों को अल्लाह विचलित कर देता है । और अल्लाह जो चाहता है, करता है ।

28. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत को कुफ़्र से बदल डाला<sup>1</sup> और अपनी क़ौम को विनाश-गृह में उतार दिया ;

29. जहन्नम में, जिसमें वे झोके जाएँगे और वह अत्यन्त बुरा ठिकाना है !

30. और उन्होंने अल्लाह के प्रतिद्वन्द्वी बना लिए , ताकि परिणामस्वरूप वे उन्हें उसके मार्ग से भटका दें । कह दो : “ थोड़े दिन मज़े ले लो । अन्ततः तुम्हें आग ही की ओर जाना है । ”

31. मेरे जो बन्दे ईमान लाए हैं उनसे कह दो कि वे नमाज़ की पाबन्दी करें और हमने उन्हें जो कुछ दिया है उसमें से छुपे और खुले खर्च करें, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई क्रय-विक्रय होगा और न मैत्री ।

32. वह अल्लाह ही है जिसने आकाशों और धरती की सृष्टि की और आकाश से पानी उतारा, फिर वह उसके द्वारा कितने ही पैदावार और फल तुम्हारी आजीविका के रूप में सामने लाया । और नौका को तुम्हारे काम में लगाया, ताकि समुद्र में उसके आदेश से चले और नदियों को भी तुम्हें लाभ पहुँचाने में लगाया ।

سورة

الاحزاب

قَوِيَ الْأَرْضِ مَالَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝ يُثَبِّتُ اللَّهُ  
الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي  
الْآخِرَةِ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ ۝ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا  
يَشَاءُ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا  
وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۝ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا  
وَهُمْ فِي الْقَرَارِ ۝ وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا لِيُضِلُّوا عَنْ  
سَبِيلِهِ ۝ قُلْ تَتَّبِعُوا فَإِنْ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ۝ قُلْ  
لِعِبَادِي الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُنْفِقُوا  
مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ  
يَوْمٌ لَا يَبْعَثُ فِيهِ وَلَا خَلْلٌ ۝ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ  
بِهِ مِنَ الشَّجَرِ رِزْقًا لَكُمْ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلُوكَ  
لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ۝

مذله

1. अर्थात् अल्लाह की कृपा और उसके उपकार के बदले में कृतज्ञता क्या दिखाते, कृतघ्न होकर रहे ।



33. और सूर्य और चन्द्रमा को तुम्हारे लिए कार्यरत किया कि एक नियत विधान के अधीन निरंतर गतिशील हैं। और रात और दिन को भी तुम्हें लाभ पहुँचाने में लगा रखा है।

34. और हर उस चीज़ में से तुम्हें दिया जो तुमने उससे माँगा। यदि तुम अल्लाह की नेमतों की गणना करना चाहो तो उनकी पूरी गणना नहीं कर सकते। वास्तव में मनुष्य बड़ा ही अन्यायी, कृतघ्न है।

35. याद करो जब इबराहीम ने कहा था : “मेरे रब ! इस भूभाग (मक्का) को शान्तिमय बना दे और मुझे और मेरी सन्तान को इससे बचा कि हम मूर्तियों को पूजने लग जाएँ।

36. मेरे रब ! इन्होंने (इन मूर्तियों ने) तो बहुत-से लोगों को पथभ्रष्ट किया है। अतः जिस किसी ने मेरा अनुसरण किया वह मेरा है और जिसने मेरी अवज्ञा की तो निश्चय ही तू बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

37. हमारे रब ! मैंने एक ऐसी घाटी में जहाँ कृषि-योग्य भूमि नहीं अपनी सन्तान के एक हिस्से को तेरे प्रतिष्ठित घर (काबा) के निकट बसा दिया है। हमारे रब ! ताकि वे नमाज़ क़ायम करें। अतः तू लोगों के दिलों को उनकी ओर झुका दे और उन्हें फलों और पैदावार की आजीविका प्रदान कर, ताकि वे कृतज्ञ बनें।

38. हमारे रब ! तू जानता ही है जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ प्रकट करते हैं। अल्लाह से तो कोई भी चीज़ न धरती में छिपी है और न आकाश में।

39. सारी प्रशंसा है उस अल्लाह की जिसने बुढ़ापे के होते हुए भी मुझे

إِبْرَاهِيمَ

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

وَوَضَعَكُمْ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآبِّينَ، وَسَخَّرَ لَكُمُ  
الْيَلَّ وَالنَّهَارَ، وَآتَاكُم مِّن كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ وَإِن  
تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا إِنَّ الْإِنسَانَ لَظَلُومٌ  
كَفَّارٌ، وَلَإِذَا قَالُوا بُرْهَانُهُ لَهَذَا الْبَلَدِ  
أَمِنًا وَاجْتَنِبْنِي وَبَنِيَّ أَن تَغْبِتَ الْأَضْنَامَ رَبِّ  
إِنَّهُمْ أَضَلُّونَ كَثِيرًا وَمِنَ النَّاسِ، فَمَن تَتَّبِعُنِي  
قَابَلَنِي مِنِّي وَمَن عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ  
رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي  
زُرْعَةٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ  
فَجَعَلْ أَفْهَدَ مِنَ النَّاسِ فَهَوِّ إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ  
مِّنَ الشَّعْرِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا  
نُخْفِي وَمَا نَعْلِنُ وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ  
فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي

مَزَلْ



इसमाईल और इसहाक दिए। निस्संदेह मेरा रब प्रार्थना अवश्य सुनता है।

40. मेरे रब! मुझे और मेरी सन्तान को नमाज़ क़ायम करनेवाला बना। हमारे रब! और हमारी प्रार्थना स्वीकार कर।

41. हमारे रब! मुझे और मेरे माँ-बाप को और मोमिनों को उस दिन क्षमाकर देना, जिस दिन हिसाब का मामला पेश आएगा।”

42. अब ये अत्याचारी जो कुछ कर रहे हैं, उससे अल्लाह को असावधान न समझो। वह तो इन्हें बस उस दिन तक के लिए टाल रहा है जबकि आँखें फटी की फटी रह जाएँगी,

43. अपने सिर उठाए भागे चले जा रहे होंगे; उनकी निगाह स्वयं उनकी अपनी ओर भी न फिरेगी और उनके दिल उड़े जा रहे होंगे।

44. लोगों को उस दिन से डराओ, जब यातना उन्हें आ लेगी। उस समय अत्याचारी लोग कहेंगे : “हमारे रब! हमें थोड़ी-सी मुहलत दे दे। हम तेरे आमंत्रण को स्वीकार करेंगे और रसूलों का अनुसरण करेंगे।” (कहा जाएगा :) “क्या तुम इससे पहले क़समें नहीं खाया करते थे कि हमारा तो पतन ही न होगा ?

45. तुम लोगों की बस्तियों में रह-बस चुके थे, जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया था और तुमपर अच्छी तरह स्पष्ट हो चुका था कि उनके साथ हमने कैसा मामला किया और हमने तुम्हारे लिए कितनी ही मिसालें बयान की थीं।”

46. वे अपनी चाल चल चुके हैं। अल्लाह के पास भी उनके लिए चाल

إِبْرَاهِيمَ

وَمَا يُؤْمِنُ

وَهَبْ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَجَتِي لَشَنِيعُ الدُّعَاءِ رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۚ وَلَا تَحْسِبَنَّ اللَّهُ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ۚ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمَ تَشْخُصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ۚ فَهُمْ طَرَفُهُمْ ۚ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرَفُهُمْ ۚ وَأَفْذَتْهُمْ أَعْدَائُهُمْ ۚ وَأَنْذَرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا آخِرْنَا إِلَىٰ آجَلٍ قَرِيبٍ ۖ يُحِبُّ دَعْوَتَكَ وَتَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۚ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ مِنْ قَبْلِ مَا لَكُم مِّنْ زَوَالٍ ۚ وَكُنْتُمْ فِي مَسْكِنٍ ۚ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْآمَثَالَ ۚ وَقَدْ مَكَرُوا

مَثَلًا



मौजूद थी, यद्यपि उनकी चाल ऐसी ही क्यों न रही हो जिससे पर्वत भी अपने स्थान से टल जाएँ।

47. अतः यह न समझना कि अल्लाह अपने रसूलों से किए हुए अपने वादे के विरुद्ध जाएगा। अल्लाह तो अपार शक्तिवाला, प्रतिशोधक है।

48. जिस दिन यह धरती दूसरी धरती से बदल दी जाएगी और आकाश भी। और वे सब के सब अल्लाह के सामने खुलकर आ जाएँगे, जो अकेला है, सबपर जिसका आधिपत्य है।

49. और उस दिन तुम अपराधियों को देखोगे कि जंजीरों में जकड़े हुए हैं।

50. उनके परिधान तारकोल के होंगे और आग उनके चेहरों पर छा रही होगी,

51. ताकि अल्लाह प्रत्येक जीव को उसकी कमाई का बदला दे। निश्चय ही अल्लाह जल्द हिसाब लेनेवाला है।

52. यह लोगों को संदेश पहुँचा देना है (ताकि वे इसे ध्यानपूर्वक सुनें) और ताकि उन्हें इसके द्वारा सावधान कर दिया जाए और ताकि वे जान लें कि वही अकेला पूज्य है और ताकि वे सचेत हो जाएँ, जो बुद्धि और समझ रखते हैं।



## 15. अल-हिज्र

(फक्का में उतरी— आयतें 99)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० रा०। यह किताब अर्थात् स्पष्ट कुरआन की आयतें हैं।



2. ऐसे समय आएँगे जब इनकार करनेवाले कामना करेंगे कि क्या ही अच्छा होता कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) होते !

3. छोड़ो उन्हें खाएँ और मज़े उड़ाएँ और (लम्बी) आशा उन्हें भुलावे में डाले रखे। उन्हें जल्द ही मालूम हो जाएगा !

4. हमने जिस बस्ती को भी विनष्ट किया है, उसके लिए अनिवार्यतः एक निश्चित फ़ैसला रहा है !

5. किसी समुदाय के लोग न अपने निश्चित समय से आगे बढ़ सकते हैं और न वे पीछे रह सकते हैं।

رَبَّنَا الَّذِي كُنَّا نَمُشُّ عَلَيْهِمْ  
ذُرُّهُمْ يَأْكُلُوا وَيَمْتَسُّوا وَيُلْهِمُ الْأَمَلُ فَتُفَ  
يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا  
كِتَابٌ مُعْلُومٌ ۝ مَا تَسْبِيحُ مِنْ أَمْرٍ أَجَلُهَا وَمَا  
يَسْتَأْخِرُونَ ۝ وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ  
الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ۝ لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَكَةِ  
إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝ مَا نُكْزِلُ الْمَلَكَةَ  
إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذَا مُنْظَرِينَ ۝ إِنَّا نَحْنُ  
نُزِّلُ الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا  
مِنْ قَبْلِكَ فِي شُعَيْرِ الْأَقْلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ  
رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ كَذَلِكَ نَسْلُكُهُ  
فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ  
سُنَّةُ الْأَقْلِينَ ۝ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ

مَزْلُومٌ

6. वे कहते हैं : "ऐ वह व्यक्ति, जिसपर अनुस्मरण अवतरित हुआ, तुम निश्चय ही दीवाने हो !

7. यदि तुम सच्चे हो तो हमारे समक्ष फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आते ?"

8. फ़रिश्तों को हम केवल सत्य के प्रयोजन हेतु उतारते हैं और उस समय लोगों को मुहलत नहीं मिलेगी।

9. यह अनुस्मरण निश्चय ही हमने अवतरित किया है और हम स्वयं इसके रक्षक हैं।

10. तुमसे पहले कितने ही विगत गिरोहों में हम रसूल भेज चुके हैं।

11. कोई भी रसूल उनके पास ऐसा नहीं आया, जिसका उन्होंने उपहास न किया हो।

12. इसी तरह हम अपराधियों के दिलों में इसे उतारते हैं।

13. वे इसे मानेंगे नहीं। पहले के लोगों की मिसालें गुज़र चुकी हैं।

14. यदि हम उनपर आकाश से कोई द्वार खोल दें और वे दिन-दहाड़े



उसमें चढ़ने भी लगे,

15. फिर भी वे यही कहेंगे :  
“हमारी आँखें मदमाती हैं, बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया गया है !”

16. हमने आकाश में बुर्ज (तारा-समूह) बनाए और हमने उसे देखनेवालों के लिए सुसज्जित भी किया ।

17. और हर फिटकारे हुए शैतान से उसे सुरक्षित रखा—

18. यह और बात है कि किसी ने चोरी-छिपे कुछ सुनगुन ले लिया तो एक प्रत्यक्ष अग्निशिखा ने भी झपटकर उसका पीछा किया—

19. और हमने धरती को फैलाया और उसमें अटल पहाड़ डाल दिए और उसमें हर चीज़ नपे-तुले अंदाज़ में उगाई ।

20. और उसमें तुम्हारे गुज़र-बसर के सामान निर्मित किए, और उनको भी जिनको रोज़ी देनेवाले तुम नहीं हो ।

21. कोई भी चीज़ तो ऐसी नहीं है जिसके भंडार हमारे पास न हों, फिर भी हम उसे एक ज्ञात (निश्चित) मात्रा के साथ उतारते हैं ।

22. हम ही वर्षा लानेवाली हवाओं को भेजते हैं । फिर आकाश से पानी बरसाते हैं और उससे तुम्हें सिंचित करते हैं । उसके खज़ानादार तुम नहीं हो ।

23. हम ही जीवन और मृत्यु देते हैं और हम ही उत्तराधिकारी रह जाते हैं ।

24. हम तुम्हारे पहले के लोगों को भी जानते हैं और बाद के आनेवालों को भी हम जानते हैं ।

فَقَالُوا فِينِهِ يَعْزِجُونَ ۖ لَقَالُوا إِنَّا سَحَابٌ مُّذِرٌ  
أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ۖ وَلَقَدْ  
جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ۖ وَ  
حَفَظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ۖ إِلَّا مَنْ اسْتَرَقَ  
السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ يَشَآءُ مِثْلُ ۖ وَالْأَرْضُ مَدَدُ ذَرْوِهَا  
وَالْقَيْنُ فِيهَا رَوَاسِي ۖ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ  
مَّوْرُوثٍ ۖ وَجَعَلْنَا لَكُمُ فِيهَا مَعَاشٍ وَمَنْ  
كُنْتُمْ لَهُ بَرَزَقِينَ ۖ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا  
خَزَائِنُهُ ۖ وَمَا نُنْزِلُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۖ وَأَرْسَلْنَا  
الزَّيْبِقَ لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ  
وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ۖ وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَ  
نُمِيتُ ۖ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ۖ وَلَقَدْ عَلِمْنَا  
الْمُتَقَدِّمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ۖ

مَزَلَهُ



25. तुम्हारा रब ही है, जो उन्हें इकट्ठा करेगा। निस्संदेह वह तत्त्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

26. हमने मनुष्य को सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से बनाया है,

27. और उससे पहले हम जिन्नों को लू रूपी अग्नि से पैदा कर चुके थे।

28. याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा : "मैं सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करनेवाला हूँ।

29. तो जब मैं उसे पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना !"

30. अतएव सब के सब फ़रिश्तों ने सजदा किया,

31. सिवाय इबलीस के। उसने सजदा करनेवालों के साथ शामिल होने से इनकार कर दिया।

32. कहा : "ऐ इबलीस ! तुझे क्या हुआ कि तू सजदा करनेवालों में शामिल नहीं हुआ ?"

33. उसने कहा : "मैं ऐसा नहीं हूँ कि मैं उस मनुष्य को सजदा करूँ, जिसको तू ने सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से बनाया।"

34. कहा : "अच्छा, तू निकल जा यहाँ से, क्योंकि तुझपर फिटकार है !

35. निश्चय ही बदले के दिन तक तुझपर धिक्कार है।"

36. उसने कहा : "मेरे रब ! फिर तू मुझे उस दिन तक के लिए मुहलत दे, जबकि सब उठाए जाएँगे।"

37. कहा : "अच्छा, तुझे मुहलत है,

وَلَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَنْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝ وَالْجَبَانَ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السَّمُومِ ۝ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝ فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ يَسْجُدِينَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلَكَةُ كُلُّهُمْ أَسْجُودًا ۝ إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَى أَنْ يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝ قَالَ فَأَخْرِجْهُ مِنْهَا ۝ وَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ الدَّيْنِ ۝ قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمٍ يُبْعَثُونَ ۝ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۝ إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ



38. उस दिन तक के लिए जिसका समय ज्ञात एवं नियत है।”

39. उसने कहा : “मेरे रब ! इसलिए कि तूने मुझे सीधे मार्ग से विचलित कर दिया है, अतः मैं भी धरती में उनके लिए मनमोहकता पैदा करूँगा और उन सबको बहकाकर रहूँगा,

40. सिवाय उनके जो तेरे चुने हुए बन्दे होंगे।”

41. कहा : “मुझ तक पहुँचने का यही सीधा मार्ग है,

42. मेरे बन्दों पर तो तेरा कुछ ज़ोर न चलेगा, सिवाय उन बहके हुए लोगों के जो तेरे पीछे हो लें।

43. निश्चय ही जहन्नम ही का ऐसे समस्त लोगों से वादा है।

44. उसके सात द्वार हैं। प्रत्येक द्वार के लिए उनका एक खास हिस्सा होगा।”

45. निस्संदेह डर रखनेवाले बागों और स्रोतों में होंगे :

46. “प्रवेश करो इनमें निर्भयतापूर्वक सलामती के साथ !”

47. उनके सीनों में जो मन-मुटाव होगा उसे हम दूर कर देंगे। वे भाई- भाई बनकर आमने-सामने तरज्जों पर होंगे।

48. उन्हें वहाँ न तो कोई थकान और तकलीफ़ पहुँचेगी और न वे वहाँ से कभी निकाले ही जाएँगे।

49. मेरे बन्दों को सूचित कर दो कि मैं अत्यन्त क्षमाशील, दयावान हूँ;

50. और यह कि मेरी यातना भी अत्यन्त दुखदायिनी यातना है।

51. और उन्हें इबराहीम के अतिथियों का वृत्तान्त सुनाओ,

52. जब वे उसके यहाँ आए और उन्होंने सलाम किया तो उसने कहा : “हमें तो तुमसे डर लग रहा है।”

الحجرات

النساء

الْمَعْلُومِ ۖ قَالَ رَبِّ بِأَعْوَيْتَنِي لَأَزِيدَنَّ لَهُمْ  
فِي الْأَرْضِ وَلَا أَعْوَيْتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ إِلَّا عِبَادَكَ  
مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ۖ قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ۖ  
إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ  
اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَايِبِينَ ۖ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ  
أَجْمَعِينَ ۖ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ  
جُزْءٌ مَقْسُومٌ ۖ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۖ  
أَدْخُلُوهَا يَسْلَمِينَ ۖ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ  
مِنْ غَلٍّ إِخْوَانًا عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ۖ لَا يَسْمَعُونَ  
فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ۖ نَبِيُّ عِبَادِي  
أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۖ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ  
الْأَلِيمُ ۖ وَتَبَتُّهُمْ عَنْ صِفِّ إِبْرَاهِيمَ ۖ إِذْ دَخَلُوا  
عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجَلُونَ ۖ قَالُوا

سَلَامٌ

النساء



53. वे बोले : “डरो नहीं, हम तुम्हें एक ज्ञानवान पुत्र की शुभ सूचना देते हैं।”

54. उसने कहा : “क्या तुम मुझे शुभ सूचना दे रहे हो, इस अवस्था में कि मेरा बुढ़ापा आ गया है? तो अब मुझे किस बात की शुभ सूचना दे रहे हो?”

55. उन्होंने कहा : “हम तुम्हें सच्ची शुभ सूचना दे रहे हैं, तो तुम निराश न हो।”

56. उसने कहा : “अपने रब की दयालुता से पथभ्रष्टों के सिवा और कौन निराश होगा?”

57. उसने कहा : “ऐ दूतों तुम किस अभियान पर आए हो?”

58. वे बोले : “तुम तो एक अपराधी क्रौम की ओर भेजे गए हैं,

59. सिवाय लूट के धरवालों के। उन सबको तो हम बचा लेंगे,

60. सिवाय उसकी पत्नी के— हमने निश्चित कर दिया है, वह तो पीछे रह जानेवालों में रहेगी।”

61. फिर जब ये दूत, लूट के यहाँ पहुँचे,

62. तो उसने कहा : “तुम तो अपरिचित लोग हो।”

63-64. उन्होंने कहा “नहीं, बल्कि हम तो तुम्हारे पास वही चीज़ लेकर आए हैं, जिसके विषय में वे संदेह कर रहे थे। और हम तुम्हारे पास यक़ीनी चीज़ लेकर आए हैं, और हम बिलकुल सच कह रहे हैं।

65. अतएव अब तुम अपने घरवालों को लेकर रात्रि के किसी हिस्से में निकल जाओ, और स्वयं उन सबके पीछे-पीछे चलो। और तुममें से कोई भी पीछे मुड़कर न देखे। बस चले जाओ, जिधर का तुम्हें आदेश है।”

تَجَسَّوْا

تَجَسَّوْا

لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ۝ قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي  
عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فِيمَ تُبَشِّرُونَ ۝ قَالُوا  
بَشَّرْنَاكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ الْقَاطِئِينَ ۝ قَالَ وَمَنْ  
يَقْطَعُ مِّن رَّحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ۝ قَالَ فَمَا  
خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا  
إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ۝ إِلَّا آلَ لُوطٍ ۖ إِنَّا كُنَّا بِهُم  
أَنجَمِينَ ۝ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا ۖ إِنَّهَا لَمِنَ الْغَابِرِينَ ۝  
فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ  
مُّتَكَبِّرُونَ ۝ قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ  
يَسْتَكْبِرُونَ ۝ وَآتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝  
فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أذْيَارَهُمْ وَلَا  
يَلْتَفِتْ مِنكُمْ أَحَدٌ وَامْضُ وَاحِدٌ تَوْمَرُونَ ۝  
وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَٰؤُلَاءِ

مَذْمُومٌ



66. हमने उसे अपना यह फ़ैसला पहुँचा दिया कि प्रातः होते-होते उनकी जड़ कट चुकी होगी।

67. इतने में नगर के लोग खुश-खुश आ पहुँचे।

68. उसने कहा : “ये मेरे अतिथि हैं। मेरी फ़ज़ीहत मत करना,

69. अल्लाह का डर रखो, मुझे रुसवा न करो।”

70. उन्होंने कहा : “क्या हमने तुम्हें दुनिया भर के लोगों का ज़िम्मा लेने से रोका नहीं था?”

71. उसने कहा : “तुमको यदि कुछ करना है, तो ये मेरी (क्रौम की) बेटियाँ (विधितः विवाह के लिए) मौजूद हैं।”

72. तुम्हारे जीवन की सौगन्ध, वे अपनी मस्ती में खोए हुए थे,

73-74. अन्ततः पौ फटते-फटते एक भयंकर आवाज़ ने उन्हें आ लिया, और हमने उस बस्ती को तलपट कर दिया, और उनपर कंकरीले पत्थर बरसाए।

75. निश्चय ही इसमें भापनेवालों के लिए निशानियाँ हैं।

76. और वह (बस्ती) सार्वजनिक मार्ग पर है।

77. निश्चय ही इसमें मोमिनों के लिए एक बड़ी निशानी है।

78. और निश्चय ही ऐका वाले<sup>1</sup> भी अत्याचारी थे,

79. फिर हमने उनसे भी बदला लिया, और ये दोनों (भू-भाग) खुले मार्ग पर स्थित हैं।

80. हिज़्रवाले भी रसूलों को झुठला चुके हैं।

81. हमने तो उन्हें अपनी निशानियाँ प्रदान की थीं, परन्तु वे उनकी उपेक्षा ही करते रहे।

مَقْطُوعَةٌ مُّصْبِحِينَ ۝ وَجَاءَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ  
يَسْتَبْشِرُونَ ۝ قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضِغْفِيرٌ فَلَا تَفْضَحُونِ ۝  
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزَوْنَ ۝ قَالُوا أَوَلَمْ تَنْهَكَ  
عَنِ الْعَالَمِينَ ۝ قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ كُنْتُمْ  
فَاعِلِينَ ۝ لَعَنَكَ رَبُّهُمْ لَيْفَى سَكَرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝  
فَأَخَذَتْهُمُ الضُّيْعَةُ مُشْرِقِينَ ۝ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا  
سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ سِجِّيلٍ ۝  
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِينَ ۝ وَإِنَّهَا  
لَبِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝  
وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ۝ فَاتَّخَفْنَا  
مِنْهُمْ ۝ وَإِنَّهُمْ لَيَأْمُرُونَ مُبِينًا ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ  
أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ۝ وَآتَيْنَهُمْ آيَاتِنَا  
فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ وَكَانُوا يَنْحِتُونَ

مَزْلُومٍ



82. वे बड़ी बेफ़िक्री से पहाड़ों को काट-काटकर घर बनाते थे।

83. अन्ततः एक भयानक आवाज़ ने प्रातः होते-होते उन्हें आ लिया।

84. फिर जो कुछ वे कमाते रहे, वह उनके कुछ काम न आ सका।

85. हमने तो आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके मध्य है, सोद्देश्य पैदा किया है, और वह क्रियामत की घड़ी तो अनिवार्यतः आनेवाली है। अतः तुम भली प्रकार दरगुज़र (क्षमा) से काम लो।

86. निश्चय ही तुम्हारा रब ही बड़ा पैदा करनेवाला, सब कुछ जाननेवाला है।

87. हमने तुम्हें सात "मसानी"<sup>1</sup> का समूह यानी महान कुरआन दिया—

88. जो कुछ सुख-सामग्री हमने उनमें से विभिन्न प्रकार के लोगों को दी है, तुम उसपर अपनी आँखें न पसारो और न उनपर दुखी हो, तुम तो अपनी भुजाएँ मोमिनों के लिए झुकाए रखो,

89. और कह दो : "मैं तो साफ़-साफ़ चेतावनी देनेवाला हूँ।"—

90. जिस प्रकार हमने हिस्सा-बखरा करनेवालों पर उतारा था,

91. जिन्होंने (अपने) कुरआन को टुकड़े-टुकड़े कर डाला।

92-94. अब तुम्हारे रब की क्रसम ! हम अवश्य ही उन सबसे उसके विषय में पूछेंगे जो कुछ वे करते रहे। अतः तुम्हें जिस चीज़ का आदेश हुआ है, उसे हाँक-पुकारकर बयान कर दो, और मुशरिकों की ओर ध्यान न दो।

95. उपहास करनेवालों के लिए हम तुम्हारी ओर से काफ़ी हैं।

النَّحْدِ

نَهَيْتَاهُمْ

مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا أَمِينًا ۖ فَلَا تَنفَعُ الصِّفَةَ  
مُضِيعِينَ ۖ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ  
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا  
بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَأَتِيَةٌ ۖ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ  
الْجَمِيلَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ۚ وَلَقَدْ  
أَتَيْنَكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ۚ  
لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ  
وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَخَفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ۚ  
وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ۚ كَمَا أَنْزَلْنَا  
عَلَى الْمُقْسِمِينَ ۚ الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ۚ  
فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ عَمَّا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ۚ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ  
الشُّرَكِيِّ ۚ إِنَّكَ غَفِيرٌ شَتِيرٌ ۚ

مَدَانِ

1. 'मसानी' अर्थात् बन्दों का रुख मोड़ देने का साधन, चाहे वे सात सूरतें हों या सूरतों के सात वर्ग या सूरा अल-फ़ातिहा की सात आयतें।



96. जो अल्लाह के साथ दूसरों को पूज्य-प्रभु ठहराते हैं, तो शीघ्र ही उन्हें मालूम हो जाएगा !

97. हम जानते हैं कि वे जो कुछ कहते हैं, उससे तुम्हारा दिल तंग होता है ।

98. तो तुम अपने रब का गुणगान करो और सजदा करनेवालों में सम्मिलित रहो ।

99. और अपने रब की बन्दगी में लगे रहो, यहाँ तक कि जो यक्नीनी है वह तुम्हारे सामने आ जाए ।

## 16. अन-नहल

(मक्का में उतरी — आयतें 128)



अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. आ गया आदेश अल्लाह का, तो अब उसके लिए जल्दी न मचाओ । वह महान और उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं ।

2. वह फ़रिश्तों को अपने हुक्म की रूह (वह्य) के साथ अपने जिस बन्दे पर चाहता है उतारता है कि "सचेत कर दो, मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं । अतः तुम मेरा ही डर रखो ।"

3. उसने आकाशों और धरती को सोद्देश्य पैदा किया । वह अत्यन्त उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं ।

4. उसने मनुष्य को एक बूँद से पैदा किया । फिर क्या देखते हैं कि वह खुला झगड़नेवाला बन गया !

5. रहे पशु, उन्हें भी उसी ने पैदा किया, जिसमें तुम्हारे लिए ऊष्मा प्राप्त करने



का सामान भी है और हैं अन्य कितने ही लाभ। उनमें से कुछ को तुम खाते भी हो।

6. उनमें तुम्हारे लिए एक सौन्दर्य भी है, जबकि तुम सायंकाल उन्हें लाते और जबकि तुम उन्हें चराने ले जाते हो।

7. वे तुम्हारे बोझ ढोकर ऐसे भूभाग तक ले जाते हैं, जहाँ तुम जी-तोड़ परिश्रम के बिना नहीं पहुँच सकते थे। निस्सन्देह तुम्हारा रब बड़ा ही करुणामय, दयावान है।

8. और घोड़े और खच्चर और गधे भी पैदा किए, ताकि तुम उनपर सवार हो और शोभा का कारण भी। और वह उसे भी पैदा करता है, जिसे तुम नहीं जानते।

9. अल्लाह के लिए ज़रूरी है उचित एवं अनुकूल मार्ग दिखाना और कुछ मार्ग टेढ़े भी हैं। यदि वह चाहता तो तुम सबको अवश्य सीधा मार्ग दिखा देता।

10. वही है जिसने आकाश से तुम्हारे लिए पानी उतारा, जिसे तुम पीते हो और उसी से पेड़ और वनस्पतियाँ भी उगती हैं, जिनमें तुम जानवरों को चराते हो।

11. और उसी से वह तुम्हारे लिए खेतियाँ उगाता है और ज़ैतून, खजूर, अंगूर और हर प्रकार के फल पैदा करता है। निश्चय ही सोच-विचार करनेवालों के लिए इसमें एक निशानी है।

12. और उसने तुम्हारे लिए रात और दिन को और सूर्य और चन्द्रमा को कार्यरत कर रखा है। और तारे भी उसी की आज्ञा से कार्यरत हैं—निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं—

13. और धरती में तुम्हारे लिए जो रंग-बिरंग की चीज़ें बिखेर रखी हैं,

وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۖ وَلَكُمْ فِيهَا جِبَالٌ حِجِينَ ۖ تَرِيحُونَ  
وَحِينَ تَسْرَحُونَ ۖ وَتَحْمِلُ أَعْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَكْبٍ  
لَّكُمْ تَكُونُوا يُلَاقِيهِ ۖ لَا يَشْقَىٰ الْأَنْفُسَ ۖ إِنَّ رَبَّكُمْ  
لَرَّؤُوفٌ رَّحِيمٌ ۖ وَالْحَبَلِ وَالْبِغَالِ وَالْحَمِيرِ  
لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ۖ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۖ وَعَلَىٰ  
اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَايِزٌ وَلَوْ شَاءَ  
لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ۚ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ  
مَاءً لَّكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ ثَمَرَاتٌ مُّتَعَدِّدَةٌ لِّيَسْمُونَ ۖ  
يَخْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعُ وَالزَّيْتُونُ وَالنَّخِيلُ وَ  
الْأَعْنَابُ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً  
لِّقَوْمٍ يَعْتَبِرُونَ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْيَمَّ وَالنَّهَارَ ۖ وَ  
الْشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۚ إِنَّ  
فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۖ وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ

مَذْلُومٌ



उसमें भी उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो शिक्षा लेनेवाले हैं।

14. वही तो है जिसने समुद्र को वश में किया है, ताकि तुम उससे ताज़ा मांस लेकर खाओ और उससे आभूषण निकालो, जिसे तुम पहनते हो। तुम देखते ही हो कि नौकाएँ उसको चीरती हुई चलती हैं (ताकि तुम सफ़र कर सको) और ताकि तुम उसका अनुग्रह तलाश करो और ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

15. और उसने धरती में अटल पहाड़ डाल दिए, कि वह तुम्हें लेकर झुक न पड़े। और नदियाँ बनाई और प्राकृतिक मार्ग बनाए, ताकि तुम मार्ग पा सको।

16. और मार्ग चिह्न भी बनाए और तारों के द्वारा भी लोग मार्ग पा लेते हैं।

17. फिर क्या जो पैदा करता है वह उस जैसा हो सकता है, जो पैदा नहीं करता? फिर क्या तुम्हें होश नहीं होता?

18. और यदि तुम अल्लाह की नेमतों (कृपादानों) को गिनना चाहो तो उन्हें पूर्ण-रूप से गिन नहीं सकते। निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

19. और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ प्रकट करते हो।

20. और जिन्हें वे अल्लाह से हटकर पुकारते हैं वे किसी चीज़ को भी पैदा नहीं करते, बल्कि वे स्वयं पैदा किए जाते हैं।

21. मृत हैं, जिनमें प्राण नहीं। उन्हें मालूम नहीं कि वे कब उठाए जाएँगे।<sup>1</sup>

فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَذْكُرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلَ مَوَاجِرَ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلِعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَالْقَلْبُ فِي الْأَرْضِ رَوَائِي أَنْ تَسِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لِّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَعَلَيْكَ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ۝ أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ ۝ أَفَلَا تَذْكُرُونَ ۝ وَلَنْ تَعُدُوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصَوْهَا ۝ إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَبْغُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ۝ أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ وَمَا يَغْمُرُونَ ۝ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝

1. अर्थात् उनको क्रियामत की घड़ी का भी ज्ञान नहीं, जबकि लोगों को हिसाब-किताब के लिए पुनः जीवित किया जाएगा।



22. तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला प्रभु-पूज्य है। किन्तु जो आखिरत में विश्वास नहीं रखते, उनके दिलों को इनकार है। वे अपने आपको बड़ा समझ रहे हैं।

23. निश्चय ही अल्लाह भली-भाँति जानता है, जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ प्रकट करते हैं। उसे ऐसे लोग प्रिय नहीं, जो अपने आपको बड़ा समझते हों।

24. और जब उनसे कहा जाता है कि "तुम्हारे रब ने क्या अवतरित किया है?" कहते हैं : "वे तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं।"

الْهَكْمُ لِلَّهِ وَاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ  
قُلُوبُهُمْ مُنْكَرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۚ لَا جَرَمَ  
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُبْرُونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ لَا  
يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ۚ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَّاذَا  
أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوا سَاطِطُ الْكَذِبِينَ ۚ لِيُعْمِلُوا  
أُوزَارَهُمْ كَمَا مَلَئَتْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَمِنْ أُوْزَارِهِ  
الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ الْأَسَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۚ  
قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قَالَ اللَّهُ بُنْيَانُهُمْ  
مِنَ الْقَوَاعِدِ ۚ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ النَّفْثُ مِنْ فَوْقِهِمْ ۚ وَ  
أَسْهَمُ الْعَذَابِ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۚ ثُمَّ يَوْمَ  
الْقِيَمَةِ يُخَوِّنُهُمْ وَيَقُولُ آيِنَ شُرَكَائِي الَّذِينَ  
كُنْتُمْ تَشَاقِقُونَ فِيهِمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ  
إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ۚ

25. इसका परिणाम यह होगा कि वे क्रियामत के दिन अपने बोझ भी पूरे उठाएँगे और उनके बोझ में से भी जिन्हें वे अज्ञानता के कारण पथभ्रष्ट कर रहे हैं। सुन लो, बहुत ही बुरा है वह बोझ जो वे उठा रहे हैं !

26. जो उनसे पहले गुज़रे हैं वे भी मक्कारियाँ कर चुके हैं। फिर अल्लाह उनके भवन पर नीवों की ओर से आया और छत उनपर उनके ऊपर से आ गिरी और ऐसे रुख से उनपर यातना आई जिसका उन्हें एहसास तक न था।

27. फिर क्रियामत के दिन अल्लाह उन्हें अपमानित करेगा और कहेगा : "कहाँ हैं मेरे वे साझीदार, जिनके लिए तुम लड़ते-झगड़ते थे?" जिन्हें ज्ञान प्राप्त था वे कहेंगे : "निश्चय ही आज रुसवाई और खराबी है इनकार करनेवालों के लिए।"



28. जिनकी रूहों को फ़रिश्ते इस दशा में ग्रस्त करते हैं कि वे अपने आप पर अत्याचार कर रहे होते हैं, तब आज्ञाकारी एवं वशीभूत होकर आ झुकते हैं कि “हम तो कोई बुराई नहीं करते थे।” “नहीं, बल्कि अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम करते रहे हो।

29. तो अब जहन्नम के द्वारों में, उसमें सदैव रहने के लिए प्रवेश करो। अतः निश्चय ही बहुत ही बुरा ठिकाना है यह अहंकारियों का।”

30. दूसरी ओर जो डर रखनेवाले हैं उनसे कहा जाता है :

“तुम्हारे रब ने क्या अवतरित किया?” वे कहते हैं : “जो सबसे उत्तम है।” जिन लोगों ने भलाई की उनकी इस दुनिया में भी अच्छी हालत है और आखिरत का घर तो अच्छा है ही। और क्या ही अच्छा घर है डर रखनेवालों का!—

31. सदैव रहने के बाग़ जिनमें वे प्रवेश करेंगे, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनके लिए वहाँ वह सब कुछ संचित होगा, जो वे चाहें। अल्लाह डर रखनेवालों को ऐसा ही प्रतिदान प्रदान करता है।

32. जिनकी रूहों को फ़रिश्ते इस दशा में ग्रस्त करते हैं कि वे पाक और नेक होते हैं, वे कहते हैं : “तुमपर सलाम हो ! प्रवेश करो जन्नत में उसके बदले में जो कुछ तुम करते रहे हो।”

33. क्या अब वे इसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि फ़रिश्ते उनके पास आ पहुँचें या तेरे रब का आदेश ही आ जाए? ऐसा ही उन लोगों ने भी किया,

الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ طَائِفَتًا أَنفُسِهِمْ  
فَأَقْبُوا الصَّلَاةَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوءٍ ۖ بَلَىٰ  
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ فَادْخُلُوا  
أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَلَيْسَ مَثْوًى  
لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ۖ وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنْزَلْ  
رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا خَيْرٌ ۖ الْمَلَائِكَةُ أَنْزَلُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا  
حَسَنَةً ۖ وَلَكَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ ۖ وَلَنِعْمَ دَارُ  
الْمُتَّقِينَ ۖ جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُجْنَوْنَ مِنْ  
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۚ كَذَٰلِكَ  
يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ۖ الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ  
طَيِّبِينَ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۖ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا  
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ  
الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ

مَزَلَهُ



जो इनसे पहले थे। अल्लाह ने उनपर अत्याचार नहीं किया, किन्तु वे स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते रहे।

34. अन्ततः उनकी करतूतों की बुराइयाँ उनपर आ पड़ीं, और जिसका उपहास वे करते थे उसी ने उन्हें आ घेरा।

35. शिर्क करनेवालों का कहना है : “यदि अल्लाह चाहता तो उससे हटकर किसी चीज़ की न हम बन्दगी करते और न हमारे बाप-दादा ही और न हम उसके बिना किसी चीज़ को अवैध ठहराते।” उनसे पहले के लोगों ने भी ऐसा ही किया। तो क्या साफ़-साफ़ संदेश पहुँचा देने के सिवा रसूलों पर कोई और भी ज़िम्मेदारी है?

36. हमने हर समुदाय में कोई न कोई रसूल भेजा कि “अल्लाह की बन्दगी करो और तागूत<sup>1</sup> से बचो।” फिर उनमें से किसी को तो अल्लाह ने सीधे मार्ग पर लगाया और उनमें से किसी पर पथभ्रष्टता सिद्ध होकर रही। फिर तनिक धरती में चल-फिरकर तो देखो कि झुठलानेवालों का कैसा परिणाम हुआ।

37. यद्यपि इस बात का कि वे राह पर आ जाएँ तुम्हें लालच ही क्यों न हो, किन्तु अल्लाह जिसे भटका देता है, उसे वह मार्ग नहीं दिखाया करता और ऐसे लोगों का कोई सहायक भी नहीं होता।

38. उन्होंने अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाकर कहा : “जो मर जाता है उसे

النَّازِعِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنَ الْقَبْلِهِمْ فَهَلْ عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُمْ مَنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ ۚ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝ إِن تَحْرِضْ عَلَى هَذِهِمْ قُلُوبَهُمْ قَدْ أَفْهَمَ اللَّهُ لَا يَهْدِي مَنْ يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ

مَرْكَلَةٍ



अल्लाह नहीं उठाएगा।” क्यों नहीं? यह तो एक वादा है, जिसे पूरा करना उसके लिए अनिवार्य है—किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।—

39. ताकि वह उनपर उसको स्पष्ट कर दे, जिसके विषय में वे विभेद करते हैं और इसलिए भी कि इनकार करनेवाले जान लें कि वे झूठे थे।

40. किसी चीज़ के लिए जब हम उसका इरादा करते हैं तो हमारा कहना बस यही होता है कि उससे कहते हैं : “हो जा !” और वह हो जाती है।

أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَن يَمُوتُ ۚ بَلَىٰ وَغَدَا  
عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝  
لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يُخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ  
كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ۖ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ  
إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَّقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ وَالَّذِينَ  
هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا لَنُبَيِّنَنَّ لَهُمْ  
فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَٰكِنَّ الْأَخْزَرَ أَكْبَرُ ۖ كَانُوا  
يَعْلَمُونَ ۝ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝  
وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا بَحَاثًا مُّؤْتَمِرِينَ ۖ إِلَيْهِمْ  
فَنُفِّلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝  
بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۖ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ  
لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ ۚ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝  
أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْفَىٰ اللَّهُ

مَذْلُومٌ

41. और जिन लोगों ने इसके पश्चात कि उनपर जुल्म ढाया गया था अल्लाह के लिए घर-बार छोड़ा उन्हें हम दुनिया में भी अच्छा ठिकाना देंगे और आखिरत का प्रतिदान तो बहुत बड़ा है। क्या ही अच्छा होता कि वे जानते।

42. ये वे लोग हैं जो जमे रहे और वे अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

43. हमने तुमसे पहले भी पुरुषों ही को रसूल बनाकर भेजा था—जिनकी ओर हम प्रकाशना करते रहे हैं। यदि तुम नहीं जानते तो अनुस्मृतिवालों<sup>1</sup> से पूछ लो।

44. स्पष्ट प्रमाणों और ज़बूरो (किताबों) के साथ। और अब यह अनुस्मृति तुम्हारी ओर हमने अवतरित की, ताकि तुम लोगों के समक्ष खोल-खोलकर बयान कर दो जो कुछ उनकी ओर उतारा गया है और ताकि वे सोच-विचार करें।

45. फिर क्या वे लोग जो ऐसी बुरी-बुरी चालें चल रहे हैं, इस बात से

1. अर्थात् किताबवालों—यहूद और नसारा से।



निश्चिन्त हो गए हैं कि अल्लाह उन्हें धरती में धँसा दे या ऐसे मौके से उनपर यातना आ जाए जिसका उन्हें एहसास तक न हो ?

46. या उन्हें चलते-फिरते ही पकड़ ले, वे क़ाबू से बाहर निकल जानेवाले तो हैं नहीं ?

47. या वह उन्हें त्रस्त अवस्था में पकड़ ले ? किन्तु तुम्हारा रब तो बड़ा ही करुणामय, दयावान है ।

48. क्या अल्लाह की पैदा की हुई किसी चीज़ को उन्होंने देखा नहीं कि किस प्रकार उसकी परछाइयाँ अल्लाह को सजदा करती और विनम्रता दिखाती हुई दाएँ और बाएँ ढलती हैं ?

49. और आकाशों और धरती में जितने भी जीवधारी हैं वे सब अल्लाह ही को सजदा करते हैं और फ़रिश्ते भी और वे घमण्ड बिलकुल नहा करते ।

50. अपने ऊपर से अपने रब का डर रखते हैं और जो उन्हें आदेश होता है, वही करते हैं ।

51. अल्लाह का फ़रमान है : "दो-दो पूज्य-प्रभु न बनाओ, वह तो बस अकेला पूज्य-प्रभु है । अतः मुझी से डरो ।"

52. जो कुछ आकाशों और धरती में है सब उसी का है । उसी का दीन (धर्म) स्थायी और अनिवार्य है । फिर क्या अल्लाह के सिवा तुम किसी और का डर रखोगे ?

53. तुम्हारे पास जो भी नेमत है वह अल्लाह ही की ओर से है । फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो तुम उसी से फ़रियाद करते हो ।

54. फिर जब वह उस तकलीफ़ को तुमसे टाल देता है, तो क्या देखते हैं

بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۚ أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقْلِبِهِمْ مِمَّا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ۚ أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَى تَخَوُّفٍ ۚ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَؤُوفٌ رَحِيمٌ ۚ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ يَتَّبِعُونَا ظِلَلُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِلَّهِ وَهُمْ ذَاخِرُونَ ۚ وَلَقَدْ يَنْصَدُّ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةِ وَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۚ يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِنْ قُورَيْمٍ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۚ وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا لِلْهَيْبَةِ اشْنِينَ ۚ إِنَّمَا هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ ۚ فَإِنِّي أَنَا رَبُّهُمْ ۚ وَلَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ ۚ وَأَصْبَاءٌ أَكْثَرُ ۚ اللَّهُ تَتَّقُونَ ۚ وَمَا يَكُمُ مِنْ أَعْمَالٍ ۚ فَمَنْ اللَّهُ ثُمَّ إِذَا مَتَّكُمُ الضُّرُّ ۚ فَإِنَّكُمْ تَجْعُرُونَ ۚ ثُمَّ إِذَا أَكْشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ ۚ إِذَا

مَزَلْ



कि तुममें से कुछ लोग अपने रब के साथ साझीदार ठहराने लगते हैं,

55. कि परिणामस्वरूप जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसके प्रति कृतघ्नता दिखलाई। अच्छा, कुछ मज्जे ले लो, शीघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा।

56. हमने उन्हें जो आजीविका प्रदान की है उसमें वे उनका हिस्सा लगाते हैं जिन्हें वे जानते भी नहीं। अल्लाह की सौगंध! तुम जो झूठ घड़ते हो उसके विषय में तुमसे अवश्य पूछा जाएगा।

57. और वे अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराते हैं— महान और उच्च है वह— और अपने लिए वह, जो वे चाहें।

58. और जब उनमें से किसी को बेटी की शुभ सूचना मिलती है तो उसके चेहरे पर कलौंस छा जाती है और वह घुटा-घुटा रहता है।

59. जो शुभ सूचना उसे दी गई वह (उसकी दृष्टि में) ऐसी बुराई की बात हुई कि उसके कारण वह लोगों से छिपता फिरता है कि अपमान सहन करके उसे रहने दे या उसे मिट्टी में दबा दे। देखो, कितना बुरा फ़ैसला है जो वे करते हैं!

60. जो लोग आखिरत को नहीं मानते बुरी मिसाल है उनकी। रहा अल्लाह, तो उसकी मिसाल अत्यन्त उच्च है। वह तो प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

61. यदि अल्लाह लोगों को उनके अत्याचार पर पकड़ने ही लग जाता तो धरती पर किसी जीवधारी को न छोड़ता, किन्तु वह उन्हें एक निश्चित समय तक टाले जाता है। फिर जब उनका नियत समय आ जाता है तो वे न तो

أَشْمِدُ

نَهْنَامُ

فَرِيقٌ مِّنْكُمْ يَرْبِّوهُمْ يُشْرِكُونَ ۖ لِيُكَفِّرُوا بِمَا  
آتَيْنَهُمْ ۖ فَتَمْتَعُوا قَلِيلًا ۖ تَعْلَمُونَ ۝ وَيَجْعَلُونَ  
لِمَا لَا يَفْعَلُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۚ تَأْسَوْنَ لَهُمْ  
عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُونَ ۝ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَدَنَ  
مُبْخَضَةً ۖ وَلَهُمْ مَا يَشْتَهُونَ ۖ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ  
بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝  
يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوءِ مَا بُشِّرَبِهِ ۚ إِنَّهُ يُكْذِبُ  
عَلَىٰ هُونٍ ۖ أَمَرِدُّ شُهُ فِي الشَّرَابِ ۚ أَلَا سَاءَ مَا  
يَخْكُمُونَ ۝ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ  
مَثَلُ التَّوْءِ ۖ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ  
الْحَكِيمُ ۚ وَلَوْ يُوَاسِئُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَا  
تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ ذَاتِلَةٍ ۚ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ  
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا

مَنْزِلَةٍ



एक घड़ी पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।

62. वे अल्लाह के लिए वह कुछ ठहराते हैं, जिसे खुद अपने लिए नापसन्द करते हैं और उनकी ज़बानें झूठ कहती हैं कि उनके लिए अच्छा परिणाम है। निस्संदेह उनके लिए आग है और वे उसी में पड़े छोड़ दिए जाएँगे।

63. अल्लाह की सौगंध! हम तुमसे पहले भी कितने ही समुदायों की ओर रसूल भेज चुके हैं, किन्तु शैतान ने उनकी करतूतों को उनके लिए सुहावना बना दिया। तो वही आज भी उनका संरक्षक है। उनके लिए तो एक दुखद यातना है।

64. हमने यह किताब तुमपर इसी लिए अवतरित की है कि जिसमें वे विभेद कर रहे हैं उसे तुम उनपर स्पष्ट कर दो और यह मार्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।

65. और अल्लाह ही ने आकाश से पानी बरसाया। फिर उसके द्वारा धरती को उसके मृत हो जाने के पश्चात जीवित किया। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो सुनते हैं।

66. और तुम्हारे लिए चौपायों में भी एक बड़ी शिक्षा-सामग्री है, जो कुछ उनके पेटों में है उसमें से गोबर और रक्त के मध्य से हम तुम्हें विशुद्ध दूध पिलाते हैं, जो पीनेवालों के लिए अत्यन्त प्रिय है,

67. और खजूरों और अंगूरों के फलों से भी, जिससे तुम मादक चीज़ भी तैयार कर लेते हो और अच्छी रोज़ी भी। निश्चय ही इसमें बुद्धि से काम

يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِرُونَ ۝ وَيَجْعَلُونَ  
لَهُمْ مَا يَكْرَهُونَ وَتُصِفُ لَهُمْ السَّاعَةَ ۝ الْكَذِبُ أَنَّ  
لَهُمُ الْحُسْنَىٰ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُمْ  
مُفْرَطُونَ ۝ كَذَّبُوا لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ  
مِّن قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَهُوَ  
فَلَيْهِمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَمَا  
أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي  
اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝  
وَاللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْبَا بِهِ الْأَرْضَ  
بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ  
يَسْمَعُونَ ۝ وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ  
نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِمْ مِنْ بَيْنِ قَرْنٍ وَدَرٍ  
لَّيْسَ خَالِصًا سَائِبًا لِلشَّرْبِ بَيْنَ ۝ وَمِنْ ثَمَرَاتِ



लेनेवाले लोगों के लिए एक बड़ी निशानी है।

68. और तुम्हारे रब ने मधुमक्खी के जी में यह बात डाल दी कि "पहाड़ों में और वृक्षों में और लोगों के बनाए हुए छत्रों में घर बना।

69. फिर हर प्रकार के फल-फूलों से खुराक ले और अपने रब के समतल मार्गों पर चलती रह।" उसके पेट से विभिन्न रंग का एक पेय निकलता है, जिसमें लोगों के लिए आरोग्य है। निश्चय ही सोच-विचार करनेवाले लोगों के लिए इसमें एक बड़ी निशानी है।

70. अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया। फिर वह तुम्हारी आत्माओं को ग्रस्त कर लेता है और तुममें से कोई (बुढ़ापे की) निकृष्टतम अवस्था की ओर फिर जाता है, कि (परिणामस्वरूप) जानने के पश्चात फिर वह कुछ न जाने। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, बड़ा सामर्थ्यवान है।

71. और अल्लाह ने तुममें से किसी को किसी पर रोज़ी में बड़ाई दी है। किन्तु जिनको बड़ाई दी गई है वे ऐसे नहीं हैं कि अपनी रोज़ी उनकी ओर फेर दिया करते हों जो उनके कब्जे में हैं कि वे सब इसमें बराबर हो जाएँ। फिर क्या अल्लाह के अनुग्रह का उन्हें इनकार है?¹

التَّحِيلِ

رَبِّكَ

التَّحِيلِ وَالْأَغْنَابِ تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَ  
رِزْقًا حَسَامًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝  
وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنْ اتَّخِذِي مِنَ  
الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ۝  
ثُمَّ كُلِي مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ  
رَبِّكَ ذَٰلِكَ يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُخْتَلِفٌ  
أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً  
لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ  
وَمِنْكُمْ مَنْ يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْدَلِ الْعُمُرِ لَكُمْ لَا يَعْلَمُ  
بَعْدَ عِلْمِهِ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝  
وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ  
فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا بِرَادِّي رِزْقِهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ  
أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ أَفَبِلَاغِ الْبَغْيِ أَتَقْتُلُونَ

مَزْنٍ

1. अर्थात् जब तुम इसके पक्ष में नहीं हो कि अपने माल में अपने नौकर-चाकर और गुलामों को बराबर का भागीदार बना लो, तो फिर यह बात तुम्हें कैसे सही मालूम होती है कि अल्लाह ने लोगों पर जो अनुग्रह किए हैं, उनके प्रति आधार प्रकट करने के सिलसिले में तुम अल्लाह के साथ दूसरों को भी साझीदार ठहराने लगते हो।



72. और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए तुम्हारी सहजाति पलियाँ बनाई और तुम्हारी पलियों से तुम्हारे लिए पुत्र और पौत्र पैदा किए और तुम्हें अच्छी पाक चीजों की रोज़ी प्रदान की; तो क्या वे मिथ्या को मानते हैं और अल्लाह के अनुग्रह ही का उन्हें इनकार है ?

73. और अल्लाह से हटकर उन्हें पूजते हैं, जिन्हें आकाशों और धरती से रोज़ी प्रदान करने का कुछ भी अधिकार प्राप्त नहीं है और न उन्हें कोई सामर्थ्य ही प्राप्त है ।

74. अतः अल्लाह के लिए मिसालें न घड़ो । जानता अल्लाह है, तुम नहीं जानते ।

75. अल्लाह ने एक मिसाल पेश की है : एक गुलाम है, जिसपर दूसरे का अधिकार है, उसे किसी चीज़ पर अधिकार प्राप्त नहीं । इसके विपरीत एक वह व्यक्ति है, जिसे हमने अपनी ओर से अच्छी रोज़ी प्रदान की है, फिर वह उसमें से खुले और छिपे खर्च करता रहता है । तो क्या वे परस्पर समान हैं ? प्रशंसा अल्लाह के लिए है ! किन्तु उनमें अधिकतर लोग जानते नहीं ।

76. अल्लाह ने एक और मिसाल पेश की है : दो व्यक्ति हैं । उनमें एक गूंगा है । किसी चीज़ पर उसे अधिकार प्राप्त नहीं । वह अपने स्वामी पर एक

يُجْعِدُونَ ۝ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ  
أَزْوَاجًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِينَ وَ  
حَفَدَةً وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ أَقْبِلُوا إِلَىٰ  
يَوْمِنَ ۚ وَيَنْصَحَتِ اللّٰهُ هُمْ يَكْفُرُونَ ۝ وَ  
يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا  
مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ۝  
فَلَا تَضْرِبُوا لِلّٰهِ الْأَمْثَالَ ۚ إِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَ  
أَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا  
مَّمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنَّا  
رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا هَلْ  
يَسْتَوُونَ ۚ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝  
وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكُرُ لَا  
يَقْدِرُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَهُوَ كَلٌّ عَلَىٰ مَوْلَاهُ ۚ أَيْمَانًا



बोझ है— उसे वह जहाँ भेजता है, कुछ भला करके नहीं लाता। क्या वह और जो न्याय का आदेश देता है और स्वयं भी सीधे मार्ग पर है वह, समान हो सकते हैं?

77. आकाशों और धरती के रहस्यों का सम्बन्ध अल्लाह ही से है। और उस क्रियामत की घड़ी का मामला तो बस ऐसा है जैसे आँखों का झपकना या वह इससे भी अधिक निकट है। निश्चय ही अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

78. अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट से इस दशा में निकाला कि तुम कुछ जानते न थे। उसने तुम्हें कान, आँखें और दिल दिए, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

79. क्या उन्होंने पक्षियों को नभ मण्डल में वशीभूत नहीं देखा? उन्हें तो बस अल्लाह ही थामे हुए होता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए कितनी ही निशानियाँ हैं जो ईमान लाएँ।

80. और अल्लाह ने तुम्हारे घरों को तुम्हारे लिए टिकने की जगह बनाया है और जानवरों की खालों से भी तुम्हारे लिए घर बनाए—जिन्हें तुम अपनी यात्रा के दिन और अपने ठहरने के दिन हल्का-फुलका पाते हो—और एक अवधि के लिए उनके ऊन, उनके लोमचर्म और उनके बालों से कितने ही सामान और बरतने की चीज़ें बनाई।

الأنفال

نزلنا

يُوجِّهَةُ لَا يَأْتِ بِخَبِيرٍ هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ  
يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَيُلْقِي  
غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا  
كَلِمَةٍ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ  
قَدِيرٌ ۝ وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا  
تَعْلَمُونَ شَيْئًا ۝ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ  
وَالْأَفْئِدَةَ ۝ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا إِلَى  
الطَّيْرِ مَسْجُورٍ فِي جَوْ السَّمَاءِ مَا يَتَّبِعُنَّهَا  
اللَّهُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَاللَّهُ  
جَعَلَ لَكُم مِّنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُم  
مِّنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ  
ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ۝ وَمِنْ أَصْوَافِهَا  
وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝

منزل



81. और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों से छाँवों का प्रबन्ध किया और पहाड़ों में तुम्हारे लिए छिपने के स्थान बनाए और तुम्हें लिबास दिए जो गर्मों से बचाते हैं और कुछ अन्य वस्त्र भी दिए जो तुम्हारी लड़ाई में तुम्हारे लिए बचाव का काम करते हैं। इस प्रकार वह तुमपर अपनी नेमत पूरी करता है, ताकि तुम आज्ञाकारी बनो।

82. फिर यदि वे मुँह मोड़ते हैं तो तुम्हारा दायित्व तो केवल साफ़-साफ़ संदेश पहुँचा देना है।

83. वे अल्लाह की नेमत को पहचानते हैं, फिर उसका इनकार करते हैं और उनमें अधिकतर तो अकृतज्ञ हैं।

84. याद करो जिस दिन हम हर समुदाय में से एक गवाह खड़ा करेंगे, फिर जिन्होंने इनकार किया होगा उन्हें कोई अनुमति प्राप्त न होगी। और न उन्हें इसका अवसर ही दिया जाएगा कि वे उसे राज़ी कर लें।

85. और जब वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया, यातना देख लेंगे तो न वह उनके लिए हलकी की जाएगी और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी।

86. और जब वे लोग जिन्होंने शिर्क किया अपने ठहराए हुए साझीदारों को देखेंगे तो कहेंगे : "हमारे रब ! यही हमारे वे साझीदार हैं जिन्हें हम तुझसे हटकर पुकारते थे।" इसपर वे उनकी ओर बात फेंक मारेंगे कि : "तुम बिलकुल झूठे हो।"

87. उस दिन वे अल्लाह के आगे आज्ञाकारी एवं वशीभूत होकर आ पड़ेंगे।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا خَلَقَ ظِلًّا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيْكُمْ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيْكُمْ بَاسَكُمْ ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَسْلِمُوْنَ ۝ۙ وَاَن تَوَلَّوْا فَاَنشَا عَلَيْنَا الْبَلَدَ الْيُسْيُۢمَ ۝ۙ يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يَنْكُرُوْنَهَا وَاَكْثَرَهُمُ الْكَافِرُوْنَ ۝ۙ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يَسْتَعْتَبُوْنَ ۝ۙ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ۙ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اٰشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ قَالِقُوا۟ اِلَيْهِمُ الْقَوْلُ ۙ اِنَّكُمْ لَكَٰذِبُوْنَ ۝ۙ وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَامَ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا



और जो कुछ वे घड़ा करते थे वह सब उनसे खोकर रह जाएगा।

88. जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका उनके लिए हम यातना पर यातना बढ़ाते रहेंगे, उस बिगाड़ के बदले में जो वे पैदा करते रहे।

89. और उस समय को याद करो जब हम हर समुदाय में स्वयं उसके अपने लोगों में से एक गवाह उनपर नियुक्त करके भेज रहे थे और (इसी रीति के अनुसार) तुम्हें इन लोगों पर गवाह नियुक्त करके लाए। हमने तुमपर किताब अवतरित की हर चीज़ को

खोलकर बयान करने के लिए और मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) के लिए मार्गदर्शन, दयालुता और शुभ सूचना के रूप में।

90. निश्चय ही अल्लाह न्याय का और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो।

91. अल्लाह के साथ की हुई अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करो, जबकि तुमने प्रतिज्ञा की हो। और अपनी कसमों को उन्हें सुदृढ़ करने के पश्चात मत तोड़ो, जबकि तुम अपने ऊपर अल्लाह को अपना ज़ामिन बना चुके हो। निश्चय ही अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

92. तुम उस स्त्री की भाँति न हो जाओ जिसने अपना सूत मेहनत से कातने के पश्चात टुकड़े-टुकड़े करके रख दिया। तुम अपनी कसमों को परस्पर हस्तक्षेप करने का बहाना बनाने लगो इस ध्येय से कि कहीं ऐसा न हो कि

يَفْعَرُونَ ۝ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ  
اللَّهِ رِزْدُهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا  
يُفْسِدُونَ ۝ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا  
عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَى  
هَؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِكُلِّ  
شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ۝  
إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَايَ ذِي  
الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفُسْخَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ  
يُعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا  
عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا  
وَلَقَدْ جَعَلْتُمْ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا  
تَفْعَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَقَصَّتْ عَنْ رُبِّهَا  
مِنْ بَعْدِ قُوَّتِهِ أَنْكَارًا تَتَحَدَّونَ آيُنَا لَكُمْ دَخَلًا

سُورَةُ



एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए। बात केवल यह है कि अल्लाह इस प्रतिज्ञा के द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेता है और जिस बात में तुम विभेद करते हो उसकी वास्तविकता तो वह क्रियामत के दिन अवश्य ही तुमपर खोल देगा।

93. यदि अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही समुदाय बना देता, परन्तु वह जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखाता है। तुम जो कुछ भी करते हो उसके विषय में तो तुमसे अवश्य पूछा जाएगा।

بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَعٌ مِنْ أُمَّةٍ  
إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ وَلِيُبَيِّنَ لَكُمْ يَوْمَ  
الْقِيَامَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ  
لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَ  
يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۝ وَلَتَسْلُنَ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝  
وَلَا تُؤْخَذُوا بِآيْمَانِكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَرِلَ قَدَمُ  
بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السَّوْءَ بِمَا صَدَقْتُمْ عَنْ  
سَبِيلِ اللَّهِ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ وَلَا تَفْتَرُوا  
مِعْهَدَ اللَّهِ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ عِنْدَهُ خَائِرٌ  
تَكْمُلُ إِن كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ  
وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا  
أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ مَنْ عَمِلَ  
صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ اُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ

مَزِينٌ

94. तुम अपनी क़समों को परस्पर हस्तक्षेप करने का बहाना न बना लेना। कहीं ऐसा न हो कि कोई क़दम ज़मने के पश्चात उखड़ जाए और अल्लाह के मार्ग से तुम्हारे रोकने के बदले में तुम्हें तकलीफ़ का मज़ा चखना पड़े और तुम एक बड़ी यातना के भागी ठहरो।

95. और तुच्छ मूल्य के लिए अल्लाह की प्रतिज्ञा का सौदा न करो। अल्लाह के पास जो कुछ है वह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है, यदि तुम जानो;

96. तुम्हारे पास जो कुछ है वह तो समाप्त हो जाएगा, किन्तु अल्लाह के पास जो कुछ है वही बाक़ी रहनेवाला है। जिन लोगों ने धैर्य से काम लिया उन्हें तो, जो उत्तम कर्म वे करते रहे उसके बदले में, हम अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे।

97. जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग



जो अच्छा कर्म करते रहे उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे।

98. अतः जब तुम कुरआन पढ़ने लगे तो फिटकारे हुए शैतान से बचने के लिए अल्लाह की पनाह माँग लिया करो।

99. उसका तो उन लोगों पर कोई ज़ोर नहीं चलता जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

100. उसका ज़ोर तो बस उन्हीं लोगों पर चलता है जो उसे अपना मित्र बनाते हैं और उस (अल्लाह) के साथ साझी ठहराते हैं।

حَيَوةٌ طَيِّبَةً، وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ  
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ إِذَا قُرَأَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ  
بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۚ إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ  
سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۚ  
إِنَّمَا سُلْطٰنُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ هُمْ  
بِهِ مُشْرِكُونَ ۚ وَإِذَا بَدَلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ  
وَاللّٰهُ أَغْلَمُ بِمَا يُنْزِلُ ۚ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْسِرٌ  
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۚ قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ  
الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ يُثَبِّتُ الَّذِينَ آمَنُوا  
وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ۚ وَلَقَدْ عَلِمُوا  
أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ ۚ لِّسَانُ الَّذِي  
يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَبِي ۚ وَهَذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ  
مُّبِينٌ ۚ لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللّٰهِ ۚ

101. जब हम किसी आयत की जगह दूसरी आयत बदलकर लाते हैं— और अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ वह अवतरित करता है— तो वे कहते हैं : “तुम स्वयं ही घड़ लेते हो !” नहीं, बल्कि उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।

102. कह दो : “इसे तो पवित्र आत्मा ने तुम्हारे रब की ओर से क्रमशः सत्य के साथ उतारा है, ताकि ईमान लानेवालों को जमाव प्रदान करे और आज्ञाकारियों के लिए मार्गदर्शन और शुभ सूचना हो।

103. हमें मालूम है कि वे कहते हैं : “उसको तो बस एक आदमी सिखाता पढ़ाता है।” हालाँकि जिसकी ओर वे संकेत करते हैं उसकी भाषा विदेशी है और यह स्पष्ट अरबी भाषा है।

104. सच्ची बात यह है कि जो लोग अल्लाह की आयतों को नहीं मानते,



अल्लाह उनका मार्गदर्शन नहीं करता। उनके लिए तो एक दुखद यातना है।

105. झूठ तो बस वही लोग घड़ते हैं जो अल्लाह की आयतों को मानते नहीं और वही हैं जो झूठे हैं।

106. जिस किसी ने अपने ईमान के पश्चात अल्लाह के साथ कुफ़्र किया—सिवाय उसके जो इसके लिए विवश कर दिया गया हो और दिल उसका ईमान पर संतुष्ट हो—बल्कि वह जिसने सीना कुफ़्र के लिए खोल दिया हो, तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का प्रकोप है और उनके लिए बड़ी यातना है।

107. यह इसलिए कि उन्होंने आखिरत की अपेक्षा सांसारिक जीवन को पसन्द किया और यह कि अल्लाह कुफ़्र करनेवाले लोगों का मार्गदर्शन नहीं करता।

108. वही लोग हैं जिनके दिलों और जिनके कानों और जिनकी आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है; और वही हैं जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।

109. निश्चय ही आखिरत में वही घाटे में रहेंगे।

110. फिर तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने इसके उपरांत कि वे आजमाइश में पड़ चुके थे घर-बार छोड़ा, फिर जिहाद (संघर्ष) किया और जमे

لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝  
لَا تَنفَعُكَ كُذُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝  
بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ۝ مَنْ  
كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أَكْرَهَ وَ  
قَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ  
بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ  
عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحْبَبُوا الْحَيَاةَ  
الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ ۝ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ  
الْكَافِرِينَ ۝ أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى  
قُلُوبِهِمْ وَسَمِعَتْهُمْ وَأَبْصَرَهُمْ ۝ وَأُولَئِكَ هُمُ  
الْغَافِلُونَ ۝ لَا جَرَمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۝ هُمُ  
الْمُخْسِرُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ  
مَا فُتِنُوا ثُمَّ جَاهَدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ



रहे तो इन बातों के पश्चात तो निश्चय ही तुम्हारा रब बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

111. जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी ओर से बहस करता हुआ आएगा और प्रत्येक व्यक्ति को जो कुछ उसने किया होगा, उसका पूरा-पूरा बदला चुका दिया जाएगा, और उनपर कुछ भी अत्याचार न होगा।

112. अल्लाह ने एक मिसाल बयान की है : एक बस्ती थी जो निश्चिन्त और संतुष्ट थी। हर जगह से उसकी रोज़ी प्रचुरता के साथ चली आ रही थी कि वह

अल्लाह की नेमतों के प्रति अकृतज्ञता दिखाने लगी। तब अल्लाह ने उसके निवासियों को उनकी करतूतों के बदले में भूख का मज़ा चखाया और भय का वस्त्र पहनाया।

113. उनके पास उन्हीं में से एक रसूल आया। किन्तु उन्होंने उसे झुठला दिया। अन्ततः यातना ने उन्हें इस दशा में आ लिया कि वे अत्याचारी थे।

114. अतः जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें हलाल-पाक रोज़ी दी है उसे खाओ और अल्लाह की नेमत के प्रति कृतज्ञता दिखाओ, यदि तुम उसी को स्वामी मानते हो।

115. उसने तो तुमपर केवल मुर्दार, रक्त, सुअर का मांस और जिसपर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, हराम ठहराया है। फिर यदि कोई इस प्रकार विवश हो जाए कि न तो उसकी ललक हो और न वह हृदय से आगे बढ़नेवाला हो तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

116. और अपनी ज़बानों के बयान किए हुए झूठ के आधार पर यह न

بَعْدَ مَا لَعَنُوا رَجْنِيمَ : يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ  
نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا وَتُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ  
مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظَنُّونَ - وَصَرَبَ اللَّهُ  
مَثَلًا قَدِيمَةً كَانَتْ أُمَّةٌ مُنْطَبِهَةً يَأْتِيهَا  
بِرِزْقِهَا رَغَدًا مِنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ  
اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا  
كَانُوا يُضْمَنُونَ - وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ  
فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ -  
فَكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِمْ أَذْهَبَ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا - وَاشْكُرُوا  
بِنِعْمَتِ اللَّهِ إِنَّ كُنتُمْ تَعْبُدُونَهُ - إِنَّمَا  
حَذَرُ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالْدَّمَ وَالْخَمِيرَ وَمَا  
أُهِلَّ بِهِ يُغْنِيَنَّ اللَّهَ بِهِنَّ - فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا  
عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ - وَلَا تَقُولُوا



कहा करो : "यह हलाल है और यह हराम है", ताकि इस तरह अल्लाह पर झूठ आरोपित करो। जो लोग अल्लाह से संबद्ध करके झूठ घड़ते हैं, वे कदापि सफल होनेवाले नहीं।

117. यह उपभोग थोड़ा है, उनके लिए वास्तव में तो दुखद यातना है।

118. जो यहूदी हैं उनपर हम पहले वे चीज़ें हराम कर चुके हैं जिनका उल्लेख हमने तुमसे किया। उनपर तो अत्याचार हमने नहीं किया, बल्कि वे स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार करते रहे।

لِيَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَذَا حَلَلٌ وَ هَذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۚ مَتَاءٌ قَلِيلٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَزْمًا مِّمَّا فَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۚ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا الشُّوْءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِنْهُ بَعْدَ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا ۖ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ شَاكِرًا لِأَنْعَامِهِ ۖ اجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ وَآتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ

119. फिर तुम्हारा रब उनके लिए जिन्होंने अज्ञानवश बुरा कर्म किया, फिर इसके बाद तौबा करके सुधार कर लिया, तो निश्चय ही तुम्हारा रब इसके पश्चात बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

120. निश्चय ही इबराहीम की स्थिति एक समुदाय की थी। वह अल्लाह का आज्ञाकारी और उसकी ओर एकाग्र था। वह कोई बहुदेववादी न था।

121. वह उसके (अल्लाह के) उदार अनुग्रहों के प्रति कृतज्ञता दिखलानेवाला था। अल्लाह ने उसे चुन लिया और उसे सीधे मार्ग पर चलाया।

122. और हमने उसे दुनिया में भी भलाई दी और आखिरत में भी वह अच्छे



पूर्णकाम लोगों में से होगा।

123. फिर अब हमने तुम्हारी ओर प्रकाशना की : “इबराहीम के तरीके पर चलो, जो बिलकुल एक ओर का हो गया था और बहुदेववादियों में से न था।”

124. ‘सब्त’<sup>1</sup> तो केवल उन लोगों पर लागू हुआ था जिन्होंने उसके विषय में विभेद किया था। निश्चय ही तुम्हारा रब उनके बीच क्रियामत के दिन उसका फ़ैसला कर देगा, जिसमें वे विभेद करते रहे हैं।

125. अपने रब के मार्ग की ओर तत्त्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ बुलाओ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करो जो उत्तम हो। तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया और वह उन्हें भी भली-भाँति जानता है जो मार्ग पर हैं।

126. और यदि तुम बदला लो तो उतना ही जितना तुम्हें कष्ट-पहुँचा हो, किन्तु यदि तुम सब्र करो तो निश्चय ही यह सब्र करनेवालों के लिए ज़्यादा अच्छा है।

127. सब्र से काम लो—और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही से संबद्ध है—और उनपर दुखी न हो और न उससे दिल तंग हो जो चालें वे चलते हैं।

128. निश्चय ही, अल्लाह उनके साथ है जो डर रखते हैं और जो उत्तमकार हैं।

لَيَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ۝ ثُمَّ اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ اِنْ اَتَيْتُ  
وَلَا اَبْرٰهُمْ حَنِيفًا ۝ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝  
اِنَّا جَعَلْنَا السَّبْتَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۝  
وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَخْلُقُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا  
كَانُوا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ اِذْءَا إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ  
بِالْحِكْمَةِ وَالْوَعْظِ وَالْحُسْنِ وَحَادِلُهُمْ بِالسَّبْتِ  
هِيَ اَحْسَنُ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ  
سَبِيلِهِ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ وَإِنْ عَاقَبْتُمْ  
فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهِ ۝ وَلَٰكِنْ صَبْرْتُمْ  
لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصَّٰبِرِيْنَ ۝ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا  
بِاللّٰهِ ۝ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَلٰلٍ  
مِّمَّا يَكْفُرُوْنَ ۝ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا  
وَالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ۝

سورة



## 17. बनी इसराईल

(मक्का में उतरी—आयतें 111)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. क्या ही महिमावान है वह जो रातों- रात अपने बन्दे (मुहम्मद) को प्रतिष्ठित मस्जिद (काबा) से दूरवर्ती मस्जिद (अक्सा) तक ले गया, जिसके चतुर्दिक को हमने बरकत दी, ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियाँ दिखाएँ। निस्संदेह वही सब कुछ सुनता, देखता है।

2. हमने मूसा को किताब दी थी और उसे इसराईल की संतान के लिए मार्गदर्शन बनाया था कि “मेरे सिवा किसी को कार्य-साधक न ठहराना।”

3. ऐ उनकी सन्तान, जिन्हें हमने नूह के साथ (नौका में) सवार किया था ! निश्चय ही वह एक कृतज्ञ बन्दा था।

4. और हमने किताब में इसराईल की सन्तान को इस फ़ैसले की खबर दे दी थी : “तुम धरती में अवश्य दो बार बड़ा फ़साद मचाओगे और बड़ी संरक्षी दिखाओगे।”

5. फिर जब उन दोनों में से पहले वादे का मौक़ा आ गया तो हमने तुम्हारे मुक़ाबले में अपने ऐसे बन्दों को उठाया जो युद्ध में बड़े बलशाली थे। तो वे बस्तियों में घुसकर हर ओर फैल गए और यह वादा पूरा होना ही था।

6. फिर हमने तुम्हारी बारी उनपर लौटाई कि उनपर प्रभावी हो सको। और धनों और पुत्रों से तुम्हारी सहायता की और तुम्हें बहुसंख्यक लोगों का एक जत्था बनाया।



مَزْلُومٌ



7. "यदि तुमने भलाई की तो अपने ही लिए भलाई की और यदि तुमने बुराई की तो अपने ही लिए की।" फिर जब दूसरे वादे का मौक़ा आ गया (तो हमने तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसे प्रबल को उठाया) कि वे तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें और मस्जिद (बैतुलमक़दिस) में घुस जाएँ, जैसे पहली बार वे उसमें घुसे थे और ताकि जिस चीज़ पर भी उनका ज़ोर चले विनष्ट कर डालें।

8. हो सकता है तुम्हारा रब तुमपर दया करे, किन्तु यदि तुम फिर उसी पूर्व नीति की ओर पलटे तो हम भी पलटेंगे, और हमने जहन्नम को इनकार करनेवालों के लिए कारागार बना रखा है।

9. वास्तव में यह कुरआन वह मार्ग दिखाता है जो सबसे सीधा है और उन मोमिनों को, जो अच्छे कर्म करते हैं, शुभ सूचना देता है कि उनके लिए बड़ा बदला है।

10. और यह कि जो आखिरत को नहीं मानते उनके लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

11. मनुष्य उस प्रकार बुराई माँगता है जिस प्रकार उसकी प्रार्थना भलाई के लिए होनी चाहिए। मनुष्य है ही बड़ा उतावला !

12. हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाई हैं। फिर रात की निशानी को हमने मिटी हुई (प्रकाशहीन) बनाया और दिन की निशानी को हमने प्रकाशमान बनाया, ताकि तुम अपने रब का अनुग्रह (रोज़ी) ढूँढ़ो और ताकि तुम वर्षों की गणना और हिसाब मालूम कर सको, और हर चीज़ को हमने अलग-अलग स्पष्ट कर रखा है।

13. हमने प्रत्येक मनुष्य का शकुन-अपशकुन उसकी अपनी गरदन से बाँध

سُبْحَانَكَ رَبِّيَ رَبِّ الْعَالَمِينَ  
 إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ - وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا -  
 وَلَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُودُوا وَجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا  
 الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا  
 تَتَّبِعُونَ. عَلَى رَبِّكُمْ أَنْ يَرْحَمَكُمْ وَإِنْ عُذْتُمْ  
 عُذْتُمْ مَوْجَعَنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا. إِنَّ هَذَا  
 الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ  
 الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا. وَإِنَّ  
 الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَغْتَابْنَا لَعْنًا عَذَابًا  
 أَلِيمًا. وَيَذَرُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْعَصِيِّ. وَكَانَ  
 الْإِنْسَانُ عَجُولًا. وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ  
 فَمَحْوُوتَ آيَةِ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً  
 يُبْتَغَى قَاضِيًا مِنْ رَبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَ  
 الْحِسَابَ. وَكُلُّ شَيْءٍ قَضَيْنَاهُ تَفْصِيلًا. وَكُلُّ



दिया है और क़ियामत के दिन हम उसके लिए एक किताब निकालेंगे, जिसको वह खुला हुआ पाएगा।

14. “पढ़ ले अपनी किताब (कर्मपत्र) ! आज तू स्वयं ही अपना हिसाब लेने के लिए काफ़ी है।”

15. जो कोई सीधा मार्ग अपनाए तो उसने अपने ही लिए सीधा मार्ग अपनाया और जो पथभ्रष्ट हुआ, तो वह अपने ही बुरे के लिए भटका। और कोई भी बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और हम लोगों को यातना नहीं देते जब तक कोई रसूल न भेज दें।

سَمِعْنَا قَوْلَكَ  
إِنَّا لَنَرُّوهُ ظَهْرَهُ فِي عُنُقِهِ، وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ  
الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ۝ اقْرَأْ كِتَابَكَ، كَفَى  
بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۝ مَن اهْتَدَىٰ فَإِنَّا  
يُضِلُّهُ لَبِئْسَ لَهُ مَوْضِعُ الْمَقَامِ ۝ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّا  
لَنُضِلُّهُ أَكْثَرَ مَقَامًا ۝ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۝ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ  
حَتَّىٰ تَبْعَثَ رَسُولًا ۝ وَإِذَا أُلْقُوا أَن تُهْلِكَ قَرْيَةً  
أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ  
فدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ  
مِن بَعْدِ نُوحٍ ۝ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ حَسِيبًا  
بَصِيرًا ۝ مَن كَانَ يُرِيدِ الْعَاجِلَةَ عَجَلْنَا لَهُ  
فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَن نُّرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ  
يُضِلُّهَا مَذْمُومًا مَّدْحُورًا ۝ وَمَن أَرَادَ الْآخِرَةَ  
سَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ

16. और जब हम किसी बस्ती को विनष्ट करने का इरादा कर लेते हैं तो उसके सुखभोगी लोगों को आदेश देते हैं तो (आदेश मानने के बजाए) वे वहाँ अवज्ञा करने लग जाते हैं, तब उनपर बात पूरी हो जाती है, फिर हम उन्हें बिलकुल उखाड़ फेंकते हैं।

17. हमने नूह के पश्चात कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर दिया। तुम्हारा रब अपने बन्दों के गुनाहों की खबर रखने, देखने के लिए काफ़ी है।

18. जो कोई शीघ्र प्राप्त होनेवाली<sup>1</sup> को चाहता है उसके लिए हम उसी में जो कुछ किसी के लिए चाहते हैं शीघ्र प्रदान कर देते हैं। फिर उसके लिए हमने जहन्नम तैयार कर रखा है जिसमें वह अपयशग्रस्त और ठुकराया हुआ प्रवेश करेगा।

19. और जो आखिरत चाहता हो और उसके लिए ऐसा प्रयास भी करे जैसा कि उसके लिए प्रयास करना चाहिए और वह हो मोमिन, तो ऐसे ही लोग हैं



जिनके प्रयास की कद्र की जाएगी।

20. इन्हें भी और इनको भी, प्रत्येक को हम तुम्हारे रब की देन में से सहायता पहुँचाए जा रहे हैं, और तुम्हारे रब की देन बन्द नहीं है।

21. देखो, कैसे हमने उनके कुछ लोगों को कुछ के मुक़ाबले में आगे रखा है ! और आखिरत दर्जों की दृष्टि से सबसे बढ़कर है और श्रेष्ठता की दृष्टि से भी वह सबसे बढ़-चढ़कर है।

22. अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य-प्रभु न बनाओ अन्यथा निन्दित और असहाय होकर बैठे रह जाओगे।

مَشْكُورًا ۝ كَلَّا نُبَدِّلُهُمْ لَآءَ وَهَؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۚ  
وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَخْظُورًا ۚ أَنْظِرْ كَيْفَ قُضَلْنَا  
بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ ۚ وَلِلْآخِرَةِ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ  
تَفْضِيلًا ۚ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ نَدْمُومًا  
تُحَذِّرُونَ ۚ وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۚ وَبِالْوَالِدَيْنِ  
إِحْسَانًا إِذَا بَلَغَ الْبِرَّ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا  
فَلَا تَقُلْ لَهُمَا آفٍ وَلَا تَنْهَرُهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا  
كَرِيمًا ۚ وَاخْضَعْ لَهُمَا طَمَاحَ الدُّنْيَا مِنَ الرِّحْمَةِ  
وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ۚ رَبِّكُمْ أَعْلَمُ  
بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۚ إِنْ تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ  
لِالْوَالِدَيْنِ عُقُوبًا ۚ وَأَبِى ذَاقَ الْقُرْبُ حَقَّهُ وَالْمُسْكِينِ  
وَابْنِ السَّبِيلِ وَلَا تَبْذُرُوا ثَبَاتًا ۚ إِنَّ الْمُبْذِرِينَ  
كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ ۚ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ۚ

23. तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उनमें से कोई एक या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उन्हें 'उँह' तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे शिष्टापूर्वक बात करो।

24. और उनके आगे दयालुता से नम्रता की भुजाएँ बिछाए रखो और कहो : "मेरे रब ! जिस प्रकार उन्होंने बालकाल में मुझे पाला है, तू भी उनपर दया कर।"

25. जो कुछ तुम्हारे जी में है उसे तुम्हारा रब भली-भाँति जानता है। यदि तुम सुयोग्य और अच्छे हुए तो निश्चय ही वह भी ऐसे रुजू करनेवालों के लिए बड़ा क्षमाशील है।

26. और नातेदार को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को भी— और फुज़ूलखर्ची न करो।

27. निश्चय ही फुज़ूलखर्ची करनेवाले शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा ही कृतघ्न है।—



28. किन्तु यदि तुम्हें अपने रब की दयालुता की खोज में, जिसकी तुम आशा रखते हो, उनसे<sup>1</sup> कतराना भी पड़े, तो इस दशा में तुम उनसे नर्म बात करो।

29. और अपना हाथ न तो अपनी गरदन से बाँधे रखो और न उसे बिलकुल खुला छोड़ दो कि निन्दित और असहाय होकर बैठ जाओ।

30. तुम्हारा रब जिसको चाहता है प्रचुर और फैली हुई रोज़ी प्रदान करता है और इसी प्रकार नपी-तुली भी। निस्संदेह वह अपने बन्दों की खबर और उनपर नज़र रखता है।

31. और निर्धनता के भय से अपनी संतान की हत्या न करो, हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी। वास्तव में उनकी हत्या बहुत ही बड़ा अपराध है।

32. और व्यभिचार के निकट न जाओ। वह एक अश्लील कर्म और बुरा मार्ग है।

33. किसी जीव की हत्या न करो, जिसे (मारना) अल्लाह ने हaram ठहराया है। यह और बात है कि हक़ (न्याय) का तक्राज़ा यही हो। और जिसकी अन्यायपूर्वक हत्या की गई हो, उसके उत्तराधिकारी को हमने अधिकार दिया है (कि वह हत्यारे से बदला ले सकता है), किन्तु वह हत्या के विषय में सीमा का उल्लंघन न करे। निश्चय ही उसकी सहायता की जाएगी।

34. और अनाथ के माल को हाथ मत लगाओ सिवाय उत्तम रीति के, यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाए, और प्रतिज्ञा पूरी करो। प्रतिज्ञा के विषय में अवश्य पूछा जाएगा।

35. और जब नापकर दो तो, नाप पूरी रखो। और ठीक तराजू से तौलो,

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَأَمَّا تَعْرِضْنَ عَنْهُمْ أَيْغَاءَ رَحْمَتِكَ مِنْ رَبِّكَ تَرْجُوهُمْ  
فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ۖ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً  
إِلَى عُنُقِكَ وَلَا تَبْطُهَا كُلَّ الْبَسِطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا  
مَّحْسُورًا ۖ إِنَّ رَبَّكَ يَبْطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ  
إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ  
خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ ۖ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ ۖ إِنَّ قَتْلَهُمْ  
كَانَ خِطَاً كَبِيرًا ۖ وَلَا تَقْرَبُوا الزَّوْجَ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً  
وَسَاءَ سَبِيلًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ  
إِلَّا بِالْحَقِّ ۖ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيهِ  
سُلْطَانًا فَلَا يُبْرِفُ فِي الْقَتْلِ ۖ إِنَّهُ كَانَ مُنْصُورًا ۖ  
وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّى  
يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۖ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۖ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ  
مَسْئُولًا ۖ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقَوَاسِ

مِيزَانٍ







(महिमागान) करते हैं और ऐसी कोई चीज़ नहीं जो उसका गुणगान न करती हो। किन्तु तुम उनकी तसबीह को समझते नहीं। निश्चय ही वह अत्यन्त सहनशील, क्षमावान है।

45. जब तुम कुरआन पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के बीच, जो आखिरत को नहीं मानते, एक अदृश्य पर्दे की आड़ कर देते हैं।

46. और उनके दिलों पर भी परदे डाल देते हैं कि वे समझ न सकें। और उनके कानों में बोझ (कि वे सुन न सकें)। और जब तुम कुरआन के माध्यम से अपने रब का वर्णन उसे अकेला बताते हुए करते हो तो वे नफ़रत से अपनी पीठ फेरकर चल देते हैं।

47. जब वे तुम्हारी ओर कान लगाते हैं तो हम भली-भाँति जानते हैं कि उनके कान लगाने का प्रयोजन क्या है और उसे भी जब वे आपस में कानाफूसियाँ करते हैं, जब वे ज़ालिम कहते हैं : “तुम लोग तो बस उस आदमी के पीछे चलते हो जो पक्का जादूगर है।”

48. देखो, वे कैसी मिसालें तुमपर चस्पाँ करते हैं ! वे तो भटक गए, अब कोई मार्ग नहीं पा सकते !

49. वे कहते हैं : “क्या जब हम हड्डियाँ और चूर्ण-विचूर्ण होकर रह जाएँगे, तो क्या हम फिर नए बनकर उठेंगे ?”

50. कह दो : “तुम पत्थर या लोहा हो जाओ,

51. या कोई और चीज़ जो तुम्हारे जी में अत्यन्त विकट हो।” तब वे कहेंगे : “कौन हमें पलटाकर लाएगा ?” कह दो : “वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा

سُورَةُ الْاَنْكَاسِ

سُورَةُ الْاَنْكَاسِ

السَّعْبُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَانْ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا يَسْتَعِمْ  
بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيحَهُمْ ۚ اِنَّهُمْ كَانُ  
حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝ وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ جَعَلْنَا بَيْنَكَ  
وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْجُوْرًا ۝ وَ  
جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْ اُذُنِهِمْ  
وَقْرًا ۚ وَاِذَا ذُكِّرْتُمْ رَبَّكَ فِى الْقُرْاٰنِ وَحَدَّثَكُمْ  
اُذُنًا بِرَبِّهِمْ نَفُوْرًا ۝ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ ۚ اِذَا  
يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ۚ وَاِذْ هُمْ يُخَوِّسُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ الظَّالِمُوْنَ  
اِنْ تَدْعِيْعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْجُوْرًا ۝ اَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا  
لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝ وَ  
قَالُوْا اِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ۙ اِنَّا لَمُبْعُوْثُوْنَ  
خَلْقًا جَدِيْدًا ۝ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ۙ اَوْ  
خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِى صُدُوْرِكُمْ ۚ فَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُعِيْدُنَا ۙ

سُورَةُ الْاَنْكَاسِ



किया।" तब वे तुम्हारे आगे अपने सिरो को हिला-हिलाकर कहेंगे : "अच्छा तो वह कब होगा?" कह दो : "कदाचित कि वह निकट ही हो।"

52. जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उसकी प्रशंसा करते हुए उसकी आज्ञा को स्वीकार करोगे और समझोगे कि तुम बस थोड़ी ही देर ठहरे रहे हो।

53. मेरे बन्दों से कह दो कि : "बात वही कहें जो उत्तम हो। शैतान तो उनके बीच उकसाकर फ़साद डालता रहता है। निस्संदेह शैतान मनुष्य का प्रत्यक्ष शत्रु है।"

54. तुम्हारा रब तुमसे भली-भाँति परिचित है। वह चाहे तो तुमपर दया करे या चाहे तो तुम्हें यातना दे। हमने तुम्हें उनकी ज़िम्मेदारी लेनेवाला कोई व्यक्ति बनाकर नहीं भेजा है (कि उन्हें अनिवार्यतः संमार्ग पर ला ही दो)।

55. तुम्हारा रब उससे भी भली-भाँति परिचित है जो कोई आकाशों और धरती में है, और हमने कुछ नबियों को कुछ की अपेक्षा श्रेष्ठता दी और हमने ही दाऊद को ज़बूर प्रदान की थी।

56. कह दो : "तुम उससे इतर जिनको भी पूज्य-प्रभु समझते हो उन्हें पुकार कर देखो। वे न तुमसे कोई कष्ट दूर करने का अधिकार रखते हैं और न उसे बदलने का।"

57. जिनको ये लोग पुकारते हैं वे तो स्वयं अपने रब का सामीप्य ढूँढ़ते हैं कि कौन उनमें से सबसे अधिक निकटता प्राप्त कर ले। और वे उसकी दयालुता की आशा रखते हैं और उसकी यातना से डरते रहते हैं। तुम्हारे रब

بَنِي إِسْرَءِيلَ

سُورَةُ الْاَنْعَامِ

قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْخِضُونَ اِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتٰى هُوَ ۙ قُلْ عَسٰى اَنْ يَكُوْنَ قَرِيْبًا ۝ يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُوْنَ بِحَمْدِهِ ۚ وَتَكْثُرُوْنَ اِنْ لَّيْسَتْ لَكُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۚ وَقُلْ لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّذِي هُوَ اَحْسَنُ ۚ اِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ بَيْنَكُمْ ۚ اِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ۝ رَبِّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ۚ اِنْ يَشَاۤءُ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَشَاۤءُ يُعَذِّبْكُمْ ۚ وَمَا اَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ قَوْلًا ۚ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّنَ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَ اٰتَيْنَا دَاوُدَ زَبُوْرًا ۚ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ رَعِمْتُمْ مِنْ دُوْنِهٖ ۚ فَلَا عَلٰىكُمْ كُفْرٌ ۚ كُشِفَ الضُّرُّ عَنْكُمْ وَلَا تَخَوُّوْا ۚ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمْ الْوَسِيْلَةَ ۚ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُوْنَ

مَزْلٰةً



की यातना तो है ही डरने की चीज़ !

58. कोई भी (अवज्ञाकारी) बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम क्रियामत के दिन से पहले विनष्ट न कर दें या उसे कठोर यातना न दें। यह बात किताब में लिखी जा चुकी है।

59. हमें निशानियाँ (देकर नबी को) भेजने से इसके सिवा किसी चीज़ ने नहीं रोका कि पहले के लोग उनको झुठला चुके हैं। और (उदाहरणार्थ) हमने समूद को स्पष्ट प्रमाण के रूप में ऊँटनी दी, किन्तु उन्होंने उसके साथ ग़लत नीति अपनाकर स्वयं अपनी जानों पर जुल्म किया। हम निशानियाँ तो डराने ही के लिए भेजते हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

عَذَابُهُ إِنَّمَا كَانَ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۖ وَإِنْ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۖ وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۖ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْجِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۖ وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخَوِيفًا ۖ وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۖ وَمَا جَعَلْنَا الزُّبْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِذْ كُنْتَ إِدَا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ ۖ وَنُخَوِّفُهُمْ ۖ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ۖ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ قَالَ أَأَرَأَيْتَ هَذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا خُشْيَكَ لِي ۖ فَنَنْزِلُكَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ قَالَ أَذْهَبَ فَمَنْ يَبْعَكَ مِنْهُمْ

سُورَةُ الْاَنْعَامِ

60. जब हमने तुमसे कहा था : “तुम्हारे रब ने लोगों को अपने घेरे में ले रखा है और जो अलौकिक दर्शन हमने तुम्हें कराया उसे तो हमने लोगों के लिए केवल एक आजमाइश बना दिया और उस वृक्ष को भी जिसे कुरआन में तिरस्कृत ठहराया गया है। हम उन्हें डराते हैं, किन्तु यह चीज़ उनकी बढ़ी हुई सरकशी ही को बढ़ा रही है।”

61. याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा : “आदम को सजदा करो तो इबलीस को छोड़कर सबने सजदा किया।” उसने कहा : “क्या मैं उसे सजदा करूँ, जिसे तूने मिट्टी से बनाया है ?”

62. कहने लगा : “देख तो सही, उसे जिसको तूने मेरे मुक्काबले में श्रेष्ठता प्रदान की है, यदि तूने मुझे क्रियामत के दिन तक मुहलत दे दी, तो मैं अवश्य ही उसकी संतान को वश में करके उसका उन्मूलन कर डालूँगा। केवल थोड़े ही लोग बच सकेंगे।”

63. कहा : “जा, उनमें से जो भी तेरा अनुसरण करेगा, तो तुझ सहित ऐसे



सभी लोगों का भरपूर बदला जहन्नम है।

64. उनमें से जिस किसी पर तेरा बस चले उसके कदम अपनी आवाज़ से उखाड़ दे। और उनपर अपने सवार और अपने प्यादे (पैदल सेना) चढ़ा ला। और माल और संतान में भी उनके साथ साझा लगा। और उनसे वादे कर!"— किन्तु शैतान उनसे जो वादे करता है वह एक धोखे के सिवा और कुछ भी नहीं होता।—

65. "निश्चय ही जो मेरे (सच्चे) बन्दे हैं उनपर तेरा कुछ भी ज़ोर नहीं चल सकता।" तुम्हारा रब इसके लिए काफ़ी है कि अपना मामला उसी को सौंप दिया जाए।

66. तुम्हारा रब तो वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में नौका चलाता है, ताकि तुम उसका अनुग्रह (आजीविका) तलाश करो। वह तुम्हारे हाल पर अत्यन्त दयावान है।

67. जब समुद्र में तुमपर कोई आरदा आती है तो उसके सिवा वे सब जिन्हें तुम पुकारते हो, गुम होकर रह जाते हैं : किन्तु फिर जब वह तुम्हें बचाकर थल पर पहुँचा देता है तो तुम उससे मुँह मोड़ जाते हो। मानव बड़ा ही अकृतज्ञ है।

68. क्या तुम इससे निश्चिन्त हो कि वह कभी थल की ओर ले जाकर तुम्हें धँसा दे या तुमपर पथराव करनेवाली आँधी भेज दे; फिर अपना कोई कार्यसाधक न पाओ ?

69. या तुम इससे निश्चिन्त हो कि वह फिर तुम्हें उसमें दोबारा ले जाए और तुमपर प्रचण्ड तूफ़ानी हवा भेज दे और तुम्हें तुम्हारे इनकार के बदले में डूबो दे। फिर तुम किसी को ऐसा न पाओ जो तुम्हारे लिए इसपर हमारा पीछा करनेवाला हो ?

سُبْحَانَ الَّذِي

سُبْحَانَ الَّذِي

فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاءُكُمْ جَزَاءً مَّقْفُورًا ۝ وَاسْتَغْفِرْ مَنْ  
اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصُوتِكَ ۝ وَاجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَ  
رَجُلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۝ وَمَا  
يَعْلَمُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ۝ إِنَّ عِبَادِي لَكِنَّ لَكَ  
عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ۝ وَلَقَدْ يَمُرُّكَ رَبِّكَ وَكَيْلًا ۝ رَبُّكُمُ الَّذِي يُزَيِّجُ  
لَكُمْ الْفَلَاحَ فِي الْبَحْرِ لَتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ  
بِكُمْ رَحِيمًا ۝ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ  
تَدْعُونَ إِلَّا إِلٰهًا ۚ فَلَمَّا نَجَّيْكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ۚ وَ  
كَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ۝ أَفَأَمِنْتُمْ أَن يُغْرِبَ بِكُمْ جَانِبَ  
النَّبِيِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ ثُمَّ لَا تَعْدُوا لَكُمْ  
وَكَيْلًا ۝ أَمْ أَمِنْتُمْ أَن يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرٰى ۚ  
فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَلْبًا مِّنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُم بِمَا كَفَرْتُمْ ۖ  
ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ۚ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا

مَزَلًا



70. हमने आदम की सन्तान को श्रेष्ठता प्रदान की और उन्हें थल और जल में सवारी दी और अच्छी-पाक चीजों की उन्हें रोज़ी दी और अपने पैदा किए हुए बहुत-से प्राणियों की अपेक्षा उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की।

71. (उस दिन से डरो) जिस दिन हम मानव के प्रत्येक गिरोह को उसके अपने नायक के साथ बुलाएँगे। फिर जिसे उसका कर्मपत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया, तो ऐसे लोग अपना कर्मपत्र पढ़ेंगे और उनके साथ तनिक भी अन्याय न होगा।

نَحْمَدُكَ يَا رَبِّ

سُبْحَانَكَ يَا رَبِّ

بَنِي آدَمَ وَصَلَّاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ  
الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا  
تَفْضِيلًا ۝ يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِسمَائِهِمْ ۖ فَمَنْ  
أَتَىٰ كِتَابَهُ يَمِينًا فَأُولَٰئِكَ يَفْرَحُونَ ۖ كِتَابُهُمْ وَلَا  
يُظْلَمُونَ قَتِيلًا ۖ وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي  
الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۖ وَإِن كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ  
عَنِ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَةً ۖ  
وَإِذَا لَا تَخَذُوكَ خَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَن تَبَشِّرَكَ لَقَدْ  
كَدَّتْ تَزَكُّنَ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا ۖ إِذَا لَادَّوْكَ أَنَّكَ ضَعْفُ  
الْحَيَاةِ وَضَعْفُ الْمَنَاصِبِ ثُمَّ لَا تَجِدُكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ۖ  
وَإِن كَادُوا لَيَسْتَفِزُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لَيُغَرِّبُوكَ  
مِنْهَا ۖ وَإِذَا لَا يَلْبَثُونَ خَلْقَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ سُنَّةَ  
مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا

مَعْدِلًا

72. और जो यहाँ अंधा होकर रहा वह आखिरत में भी अंधा ही रहेगा, बल्कि वह मार्ग से और भी अधिक दूर पड़ा होगा।

73. और वे तो लगते थे कि तुम्हें फ़िले में डालकर उस चीज़ से हटा देने को हैं जिसकी प्रकाशना हमने तुम्हारी ओर की है, ताकि तुम उससे भिन्न चीज़ घड़कर हमपर थोपो, और तब वे तुम्हें अपना घनिष्ट मित्र बना लेते।

74. यदि हम तुम्हें जमाव प्रदान न करते तो तुम उनकी ओर थोड़ा झुकने के निकट जा पहुँचते।

75. उस समय हम तुम्हें जीवन में भी दोहरा मज़ा चखाते और मृत्यु के पश्चात भी दोहरा मज़ा चखाते। फिर तुम हमारे मुक़ाबले में अपना कोई सहायक न पाते।

76. और निश्चय ही उन्होंने चाल चली कि इस भूभाग से तुम्हारे क़दम उखाड़ दें, ताकि तुम्हें यहाँ से निकालकर ही रहें। और ऐसा हुआ तो तुम्हारे पीछे ये भी रह थोड़े ही पाएँगे।

77. यही कार्य-प्रणाली हमारे उन रसूलों के विषय में भी रही है, जिन्हें हमने



तुमसे पहले भेजा था और तुम हमारी कार्य-प्रणाली में कोई अन्तर न पाओगे।

78. नमाज़ कायम करो सूर्य के ढलने से लेकर रात के छा जाने तक और फ़ज़्र (प्रभात) के कुरआन (अर्थात् फ़ज़्र की नमाज़) के पाबन्द रहो। निश्चय ही फ़ज़्र का कुरआन पढ़ना हुज़ूरी की चीज़ है।

79. और रात के कुछ हिस्से में उस (कुरआन) के द्वारा जागरण किया करो, यह तुम्हारे लिए तदअधिक (नफ़्तल) है। आशा है कि तुम्हारा रब तुम्हें उठाए ऐसा उठाना जो प्रशंसित हो।

80. और कहो : “मेरे रब ! तू मुझे खूबी के साथ दाखिल कर और खूबी के साथ निकाल, और अपनी ओर से मुझे सहायक शक्ति प्रदान कर।”

81. कह दो : “सत्य आ गया और असत्य मिट गया; असत्य तो मिट जानेवाला ही होता है।”

82. हम कुरआन में से जो उतारते हैं वह मोमिनो के लिए शिफ़ा (आरोग्य) और दयालुता है, किन्तु ज़ालिमों के लिए तो वह बस घाटे ही में अभिवृद्धि करता है।

83. मानव पर जब हम सुखद कृपा करते हैं तो वह मुँह फेरता और अपना पहलू बचाता है। किन्तु जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है, तो वह निराश होने लगता है।

84. कह दो : “हर एक अपने ढब पर काम कर रहा है, तो अब तुम्हारा रब ही भली-भाँति जानता है कि कौन अधिक सीधे मार्ग पर है।”

85. वे तुमसे रूह के विषय में पूछते हैं। कह दो : “रूह का सबध तो मेरे रब के आदेश से है, किन्तु ज्ञान तुम्हें मिला थोड़ा ही है।”

سُبْحَانَكَ رَبِّيَ رَبِّ الْعَالَمِينَ

سُبْحَانَكَ رَبِّيَ رَبِّ الْعَالَمِينَ

تَحْمِيلًا ۝ اَقِمِ الصَّلَاةَ لِذُلُولِ النَّهْسِ إِلَى عَسَى الْيَلِ  
وَقُرْآنِ الْفَجْرِ ۝ اِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ۝ وَ  
مِنَ الْيَلِ فَمَهْجَذِهِ نَافِلَةٌ ۝ لَكَ عَسَى اَنْ يَّيْعَتَكَ  
رَبُّكَ مَقَامًا مَّخْمُودًا ۝ وَقُلْ رَبِّ اَدْخِلْنِيْ مَدْخَلَ  
صِدْقٍ ۝ واَخْرِجْنِيْ مَخْرَجَ صِدْقٍ ۝ وَاجْعَلْ لِّىْ مِنْ  
لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْلًا ۝ وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَرَهَقَ  
الْبَاطِلُ ۝ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۝ وَنُنَزِّلُ مِنَ  
الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاۗءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَلَا يَزِيْدُ  
الظَّالِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝ وَاِذَا اَنْعَمْنَا عَلٰى الْاِنْسَانِ  
اَغْرَضْ وَّنَا بَجَانِبِهِ ۝ وَاِذَا اَمْسَهُ الشُّرُكَانَ يُّوَسُّوْا ۝  
قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلٰى شَاكِرَتِهِمْ ۝ فَرَجَبَكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ  
هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ۝ وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ۝ قُلِ  
الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّىْ ۝ وَمَا اَوْتَيْنٰكُمْ مِنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا

مَدَن



86. यदि हम चाहें तो वह सब छीन लें जो हमने तुम्हारी ओर प्रकाशना की है, फिर इसके लिए हमारे मुकाबले में अपना कोई समर्थक न पाओगे।

87. यह तो बस तुम्हारे रब की दयालुता है। वास्तविकता यह है कि उसका तुमपर बड़ा अनुग्रह है।

88. कह दो : “यदि मनुष्य और जिन इसके लिए इकट्ठे हो जाएँ कि इस कुरआन जैसी कोई चीज़ लाएँ, तो वे इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे, चाहे वे आपस में एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न हों।”

89. हमने इस कुरआन में लोगों के लिए प्रत्येक तत्त्वदर्शिता की बात फेर-फेरकर बयान की, फिर भी अधिकतर लोगों के लिए इनकार के सिवा हर चीज़ अस्वीकार्य ही रही।

90. और उन्होंने कहा : “हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे, जब तक कि तुम हमारे लिए धरती से एक स्रोत प्रवाहित न कर दो,

91. या फिर तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो और तुम उसके बीच बहती नहरें निकाल दो,

92. या आकाश को टुकड़े-टुकड़े करके हम पर गिरा दो जैसा कि तुम्हारा दावा है, या अल्लाह और फ़रिश्तों ही को हमारे समक्ष ले आओ,

93. या तुम्हारे लिए स्वर्ण-निर्मित एक घर हो जाए या तुम आकाश में चढ़ जाओ, और हम तुम्हारे चढ़ने को भी कदापि न मानेंगे, जब तक कि तुम हमपर एक किताब न उतार लाओ, जिसे हम पढ़ सकें।” कह दो : “महिमावान है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَلَمَّا شِئْنَا لَنُدْهِبَنَ بِالْوَيْلِ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لَمْ لَا  
تُعْبَدُكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكَيْلًا ۖ إِلَّا رَحْمَةً مِن  
رَّبِّكَ ۚ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ۚ قُلْ لِّمَنِ  
اجْتَمَعَتِ الْإِلَاسُ وَالْجِنُّ عَنِّي أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا  
الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ  
ظَهِيرًا ۚ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ  
مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ قَالُوا أَكُفِّرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ۚ  
وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّى تَقْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ  
يَنْبُوعًا ۚ أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّجِيلٍ وَعَلَيْكَ  
فَتْحٌ جَرَالُهَا تَهْزِيلًا ۚ أَوْ تُسْقَطَ السَّمَاءُ  
كَمَا رَعْمَتْ عَلَيْنَا كِسْفًا أَوْ تَأْتِيَ بِنَاثِلَةٍ ۚ  
فَبَيِّنْ ۚ أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ نُحْرٍ أَوْ مَرُفَعٌ  
فِي السَّمَاءِ وَلَنْ نُّؤْمِنَ بِرُفْعِكَ حَتَّى تُنْزِلَ عَلَيْنَا

مِثْلَهُ



मेरा रब ! क्या मैं एक संदेश लानेवाला मनुष्य के सिवा कुछ और भी हूँ ?”

94. लोगों को जबकि उनके पास मार्गदर्शन आया तो उनको ईमान लाने से केवल यही चीज़ रुकावट बनी कि वे कहने लगे : “क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बनाकर भेज दिया ?”

95. कह दो : “यदि धरती में फ़रिश्ते आबाद होकर चलते-फिरते होते तो हम उनके लिए अवश्य आकाश से किसी फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर भेजते ।”

96. कह दो : “मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह ही एक गवाह काफ़ी है । निश्चय ही वह अपने बन्दों की पूरी खबर रखनेवाला, देखनेवाला है ।”

97. जिसे अल्लाह ही मार्ग दिखाए वही मार्ग पानेवाला है और वह जिसे पथ भ्रष्ट होने दे, तो ऐसे लोगों के लिए उससे इतर तुम सहायक न पाओगे । क्रियामत के दिन हम उन्हें औंधे मुँह इस दशा में इकट्ठा करेंगे कि वे अंधे, गूंगे और बहरे होंगे । उनका ठिकाना जहन्नम है । जब भी उसकी आग धीमी पड़ने लगेगी तो हम उसे उनके लिए और भड़का देंगे ।

98. यही उनका बदला है, इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया और कहा : “क्या जब हम केवल हड्डियाँ और चूर्ण-विचूर्ण होकर रह जाएँगे, तो क्या हमें नए सिरे से पैदा करके उठा खड़ा किया जाएगा ?”

99. क्या उन्हें यह न सूझा कि जिस अल्लाह ने आकाशों और धरती को पैदा किया है उसे उन जैसों को भी पैदा करने की सामर्थ्य प्राप्त है ? उसने तो उनके लिए एक समय निर्धारित कर रखा है, जिसमें कोई संदेह नहीं है । फिर भी ज़ालिमों के

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ

كَيْتَبًا تَقْرُؤُهُ ۚ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ ۚ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا  
رَّسُولًا ۚ وَمَا مَنَعَهُ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمْ  
الْهُدَىٰ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا ۚ قُلْ  
لَوْ كُنَّا فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةً يَتَسَوَّوْنَ مَطَاطِينٍ  
لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَسُولًا ۚ قُلْ كَفَىٰ  
بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ  
خَبِيرًا بَصِيرًا ۚ وَمَنْ يَشْهَدِ اللَّهَ فَعَلَهُ مَقْتَدِرٌ ۚ وَمَنْ  
يُضِلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَقْلِيَاءَ ۚ مِنْ دُونِهِ مَوْعِظَةٌ لَهُمْ  
يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وَجُوهِهِمْ غَمِيرًا وَبَلَكًا ۚ وَصَمَاءُ مَا وَرَأَاهُمْ  
جَهَنَّمَ كُلًّا خَبِثَ لَدُنْهُمْ سَعِيرًا ۚ ذَلِكَ جَزَاءُ الَّذِينَ  
بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا مَا كُنَّا عِبَادًا وَلَا رُفَقَاءَ  
لِمَا نَكْتُمُوهُمْ ۚ قُلْ خَلَقْنَا جَدِيدًا ۚ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ  
الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ

مِثْلَهُ



लिए इनकार के सिवा हर चीज़ अस्वीकार्य ही रही।

100. कहो : “यदि कहीं मेरे रब की दयालुता के खज़ाने तुम्हारे अधिकार में होते तो खर्च हो जाने के भय से तुम रोके ही रखते। वास्तव में इन्सान तो दिल का बड़ा ही तंग है।

101. हमने मूसा को नौ खुली निशानियाँ प्रदान की थीं। अब इसराईल की संतान से पूछ लो कि जब वह उनके पास आया और फ़िरऔन ने उससे कहा : “ऐ मूसा ! मैं तो तुम्हें बड़ा जादूगर समझता हूँ।”

102. उसने कहा : “तू भली-भाँति जानता है कि आकाशों और धरती के रब के सिवा किसी और ने इन (निशानियों) को स्पष्ट प्रमाण बनाकर नहीं उतारा है। और ऐ फ़िरऔन ! मैं तो समझता हूँ कि तू विनष्ट होने को है।”

103. अन्ततः उसने चाहा कि उनको उस भूभाग से उखाड़ फेंके, किन्तु हमने उसे और जो उसके साथ थे सभी को डुबो दिया।

104. और हमने उसके बाद इसराईल की संतान से कहा : “तुम इस भूभाग में बसो। फिर जब आखिरत का वादा आ पूरा होगा, तो हम तुम सबको इकट्ठा ला उपस्थित करेंगे।”

105. सत्य के साथ हमने उसे अवतरित किया और सत्य के साथ वह अवतरित भी हुआ। और तुम्हें तो हमने केवल शुभ सूचना देनेवाला और सावधान करनेवाला बनाकर भेजा है।

106. और कुरआन को हमने थोड़ा-थोड़ा करके इसलिए अवतरित किया, ताकि तुम ठहर-ठहरकर उसे लोगों को सुनाओ, और हमने उसे उत्तम रीति से क्रमशः उतारा है।

مِثْلَهُمْ وَجَعَلْ لَهُمْ أَجَلًا لَا رَيْبَ فِيهِ فَأَبَى الظَّالِمُونَ  
إِلَّا كُفُورًا ۖ قُلْ لَّوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي  
إِذَا لَمْ تَسْأَلْنَاهُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ۙ  
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَنَسِيَ بَنِي إِسْرَءِيلَ  
إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يُيُوسَى  
مَسْحُورًا ۖ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَمَا أَنْزَلَ هَؤُلَاءِ وَإِلَّا رَبُّ  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِصَاطِرٍ قَدِيرٍ ۚ لَأَظُنُّكَ يُفِرُّعُونَ  
مَنْشُورًا ۖ فَأَرَادَ أَنْ يَنْتَفِرَ بِهِمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَ  
مَنْ مَعَهُ جَمِيعًا ۖ وَقُلْنَا مَنْ بَعْدَهُ لِبَنِيِّ إِسْرَءِيلَ  
اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ۖ  
وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَّلْ ۖ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا  
وَنَذِيرًا ۖ وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى  
مَكْنٍ ۖ وَنَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلًا ۖ قُلْ الْإِنشَاءُ أَوَّلًا ثُمَّ آمَنُوا



107. कह दो : “तुम उसे मानो या न मानो, जिन लोगों को इससे पहले ज्ञान दिया गया है, उन्हें जब वह पढ़कर सुनाया जाता है, तो वे ठोड़ियों के बल सजदे में गिर पड़ते हैं।

108. और कहते हैं : “महान और उच्च है हमारा रब ! हमारे रब का वादा तो पूरा होकर ही रहता है।”

109. और वे रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर जाते हैं और वह (कुरआन) उनकी विनम्रता को और बढ़ा देता है।

110. कह दो : “तुम अल्लाह को पुकारो या रहमान को पुकारो या जिस नाम से भी पुकारो, उसके लिए सब अच्छे ही नाम हैं।” और अपनी नमाज़ न बहुत ऊँची आवाज़ से पढ़ो और न उसे बहुत चुपके से पढ़ो, बल्कि इन दोनों के बीच मध्य मार्ग अपनाओ।

111. और कहो : “प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने न तो अपना कोई बेटा बनाया और न बादशाही में उसका कोई सहभागी है और न ऐसा ही है कि वह दीन-हीन हो जिसके कारण बचाव के लिए उसका कोई सहायक मित्र हो।” और बड़ाई बयान करो उसकी, पूर्ण बड़ाई।



## 18. अल-कहफ़

(मक्का में उतरी— आयतें 110)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने अपने बन्दे पर यह किताब अवतरित की और उसमें (अर्थात् उस बन्दे में) कोई टेढ़ नहीं रखी,

2. ठीक और दुरुस्त, ताकि एक कठोर आपदा से सावधान कर दे जो उसकी



ओर से आ पड़ेगी। और मोमिनों को, जो अच्छे कर्म करते हैं, शुभ सूचना दे दे कि उनके लिए अच्छा बदला है;

3. जिसमें वे सदैव रहेंगे।

4. और उनको सावधान कर दे, जो कहते हैं : “अल्लाह संतानवाला है।”

5. इसका न उन्हें कोई ज्ञान है और न उनके बाप-दादा ही को था। बड़ी बात है जो उनके मुँह से निकलती है। वे केवल झूठ बोलते हैं।

6. अच्छा, शायद उनके पीछे, यदि उन्होंने यह बात न मानी तो तुम अफ़सोस के मारे अपने प्राण ही खो दोगे !

7. धरती पर जो कुछ है उसे तो हमने उसकी शोभा बनाई है, ताकि हम उनकी परीक्षा लें कि उनमें कर्म की दृष्टि से कौन उत्तम है।

8. और जो कुछ उसपर है उसे तो हम एक चटिबल मैदान बना देनेवाले हैं।

9. क्या तुम समझते हो कि गुफा और रक़ीमवाले हमारी अद्भुत निशानियों में से थे ?

10. जब उन नवयुवकों ने गुफा में जाकर शरण ली तो कहा : “हमारे रब ! हमें अपने यहाँ से दयालुता प्रदान कर और हमारे लिए हमारे अपने मामले को ठीक कर दे।”

11. फिर हमने उस गुफा में कई वर्षों के लिए उनके कानों पर परदा डाल दिया।

الْكَافِرِينَ

سُورَةُ الْكَافِرِينَ

لَدُنْهُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ  
أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۖ مَا كُثِّرِينَ فِيهِ أَبَدًا ۖ وَ  
يُنذِرُ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ مَا لَهُمْ بِهِ  
مِنْ عِلْمٍ وَلَا إِلَهَ بآيَهُمْ ۚ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ  
أَفْوَاهِهِمْ ۚ إِنَّ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ۚ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ  
نَفْسِكَ عَلَى آثَارِهِمْ ۚ إِنَّ لَهُمْ مَوْتًا بِهَذَا الْحَدِيثِ  
أَسِفًا ۚ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَهَا  
لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا  
عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۚ أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ  
الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۚ إِذْ أَوَى  
الْفَتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ  
رِزْقًا ۚ وَهَبْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۚ فَضَرَبْنَا  
عَلَى آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۚ ثُمَّ

سُورَةُ الْكَافِرِينَ



12. फिर हमने उन्हें भेजा, ताकि मालूम करें कि दोनों गिरोहों में से किसने याद रखा है कि कितनी अवधि तक वे रहे।

13. हम तुम्हें ठीक-ठीक उनका वृत्तान्त सुनाते हैं। वे कुछ नव युवक थे जो अपने रब पर ईमान लाए थे, और हमने उन्हें मार्गदर्शन में बढ़ोत्तरी प्रदान की।

14. और हमने उनके दिलों को सुदृढ़ कर दिया। जब वे उठे तो उन्होंने कहा : "हमारा रब तो वही है जो आकाशों और धरती का रब है। हम उससे इतर किसी अन्य पूज्य को कदापि न पुकारेंगे। यदि हमने ऐसा किया तब तो हमारी बात हक़ से बहुत हटी हुई होगी।

15. ये हमारी क़ौम के लोग हैं, जिन्होंने उससे इतर कुछ अन्य पूज्य-प्रभु बना लिए हैं। आखिर ये उनके हक़ में कोई स्पष्ट प्रमाण क्यों नहीं लाते ! भला उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो झूठ घड़कर अल्लाह पर थोपे ?

16. और जबकि इनसे तुम अलग हो गए हो और उनसे भी जिनको अल्लाह के सिवा ये पूजते हैं, तो गुफा में चलकर शरण लो। तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी दयालुता का दामन फैला देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे अपने काम के सम्बन्ध में सुगमता का उपकरण उपलब्ध कराएगा।"

17. और तुम सूर्य को उसके उदित होते समय देखते तो दिखाई देता कि वह उनकी गुफा से दाहिनी ओर को बचकर निकल जाता है और जब अस्त होता है तो उनकी बाईं ओर कतराकर निकल जाता है। और वे हैं कि उस (गुफा) के एक विस्तृत स्थान में हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है। जिसे

سُبْحَانَكَ رَبَّنَا رَبِّ السَّمَوَاتِ  
وَالْأَرْضِ لَنْ نَذْغُوا مِنْ دُونِكَ إِنَّهَا لَقَدْ قُلْنَا  
إِذَا شَطَطًا هُوَ الَّذِي تَأْتُونَهُمْ بِسُلْطَانٍ بَيْنَ يَدَيْهِمْ  
أَظْلَمُ مِنْ الظُّلُمَاتِ عَلَى السَّوَادِ وَ إِنْ  
اِغْتَرَبْتُمْ فِي سُلُوكِكُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأَوَّا إِلَى الْكَهْفِ  
يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَهْتِمْ لَكُمْ مِنْ  
أَمْرِكُمْ مَرْفَعًا وَ تَرَى السُّنْسَنَةَ إِذَا طَلَعَتْ تَزُورُ  
عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقْرِضُهُمْ  
ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِنْهُ ذَلِكَ مِنْ



अल्लाह मार्ग दिखाए, वही मार्ग पानेवाला है और जिसे वह भटकता छोड़ दे उसका तुम कोई सहायक मार्गदर्शक कदापि न पाओगे।

18. और तुम समझते कि वे जाग रहे हैं, हालाँकि वे सोए हुए होते। हम उन्हें दाएँ और बाएँ फेरते और उनका कुत्ता इयोदी पर अपनी दोनों भुजाएँ फैलाए हुए होता। यदि तुम उन्हें कहीं झाँककर देखते तो उनके पास से उलटे पाँव भाग खड़े होते और तुममें उनका भय समा जाता।

19. और इसी तरह हमने उन्हें उठा खड़ा किया कि वे आपस में पूछताछ करें। उनमें एक कहनेवाले ने कहा : "तुम कितना ठहरे रहे?" वे बोले : "हम यही कोई एक दिन या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे।" उन्होंने कहा : "जितना तुम यहाँ ठहरे हो उसे तुम्हारा रब ही भली-भाँति जानता है। अब अपने में से किसी को यह चाँदी का सिक्का देकर नगर की ओर भेजो। फिर वह देख ले कि उसमें सबसे अच्छा खाना किस जगह मिलता है। तो उसमें से वह तुम्हारे लिए कुछ खाने को ले आए और चाहिए कि वह नरमी और होशियारी से काम ले और किसी को तुम्हारी खबर न होने दे।

20. यदि वे कहीं तुम्हारी खबर पा जाएँगे तो पथराव करके तुम्हें मार डालेंगे या तुम्हें अपने पंथ में लौटा ले जाएँगे और तब तो तुम कभी भी सफल न हो सकोगे।"

21. इस तरह हमने लोगों को उनकी सूचना दे दी, ताकि वे जान लें कि

الْمُكَفِّرِينَ

سُحُورِ النَّبِيِّ

أَيُّهَا اللَّهُ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِّ  
لَنْ تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُرْشِدًا ۝ وَتَحْسَبُهُمْ آيَاقًا  
وَهُمْ رُقُودٌ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ  
الشِّمَالِ ۝ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعْتَ  
عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُغْبًا ۝ وَ  
كَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لَيِّسَاءً لِّبَيْنِهِمْ ۝ قَالَ قَائِلٌ  
مِنْهُمْ كُمُ لَيْسْتُمْ ۝ قَالُوا لَيْسَ بَيْنَنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضُ يَوْمٍ ۝  
قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَيْسْتُمْ ۝ قَابَعَثُوا أَحَدَكُمْ  
بِعِزَّتِكُمْ هَذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَى  
طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا  
يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۝ إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ  
يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعَذِّبُوكُمْ فِي صَلَاتِهِمْ ۝ وَكُنْ تَفْلِحُوا ۝ إِذَا  
أَبَدْنَا ۝ وَكَذَلِكَ أَغْتَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيُعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ

مَدِينَةٍ



अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि क़ियामत की घड़ी में कोई संदेह नहीं है। वह समय भी उल्लेखनीय है जब वे आपस में उनके मामले में छीन-झपट कर रहे थे। फिर उन्होंने कहा : “उनपर एक भवन बना दो। उनका रब उन्हें भली-भाँति जानता है।” और जो लोग उनके मामले में प्रभावी रहे उन्होंने कहा : “हम तो उनपर अवश्य एक उपासनागृह बनाएँगे।”

22. अब वे कहेंगे : “वे तीन थे और उनमें चौथा उनका कुत्ता था।” और वे यह भी कहेंगे : “वे पाँच थे और उनमें छठा उनका कुत्ता था।”

यह बिना निशाना देखे पत्थर चलाना है।<sup>1</sup> और वे यह भी कहेंगे : “वे सात थे और उनमें आठवाँ उनका कुत्ता था।” कह दो : “मेरा रब उनकी संख्या को भली-भाँति जानता है।” उनको तो थोड़े ही जानते हैं। तुम ज़ाहिरी बात के सिवा उनके सम्बन्ध में न झगड़ो और न उनमें से किसी से उनके विषय में कुछ पूछो।

23. और न किसी चीज़ के विषय में कभी यह कहो : “मैं कल इसे कर दूँगा।”

24. बल्कि अल्लाह की इच्छा ही लागू होती है। और जब तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद कर लो और कहो : “आशा है कि मेरा रब इससे भी क़रीब सही बात की ओर मार्गदर्शन कर दे।”

25. और वे अपनी गुफा में तीन सौ वर्ष रहे और नौ वर्ष उससे अधिक।

26. कह दो : “अल्लाह भली-भाँति जानता है जितना वे ठहरे।” आकाशों

الْكَافِرِينَ

سُبْحَانَكَ رَبِّيَ

اللَّهُ حَقٌّ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ  
بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا رَبُّهُمْ  
أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ  
عَلَيْهِمْ قَسْرًا ۖ سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَأَيْنَاهُمْ  
كَلْبَهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ  
رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ  
قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ بِعَدَّتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۚ  
فَلَا تُكَلِّمُهُمْ بِالْآيَةِ ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ  
فِيهِمْ أَحَدًا ۚ وَلَا تَقُولَنَّ لِشَايٍ إِنِّي فَاعِلٌ  
ذَٰلِكَ عَدًّا ۚ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَادْكُرْ رَجَبَكَ  
إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰ أَنْ يَهْدِيَنِّي رَبِّي لِأَقْرَبَ  
مِنْ هَٰذَا سَدًّا ۚ وَلِكَيْتُمْ فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ  
سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ۚ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا

سَدَّدَهُ



और धरती की छिपी बात का संबंध उसी से है। वह क्या ही देखनेवाला और सुननेवाला है! उससे इतर न तो उनका कोई संरक्षक है और न वह अपने प्रभुत्व और सत्ता में किसी को साझीदार बनाता है।

27. अपने रब की किताब, जो कुछ तुम्हारी ओर प्रकाशना (वह्य) हुई, पढ़ो। कोई नहीं जो उसके बोलों को बदलनेवाला हो और न तुम उससे हटकर शरण लेने की जगह पाओगे।

28. अपने आपको उन लोगों के साथ थाम रखो, जो प्रातःकाल और सायंकाल अपने रब को उसकी प्रसन्नता चाहते हुए पुकारते हैं और सांसारिक जीवन की शोभा की चाह में तुम्हारी आँखें उनसे न फिरे। और ऐसे व्यक्ति की बात न मानना जिसके दिल को हमने अपनी याद से गाफ़िल पाया है और वह अपनी इच्छा और वासना के पीछे लगा हुआ है और उसका मामला हद से आगे बढ़ गया है।

29. कह दो : “यह सत्य है तुम्हारे रब की ओर से। तो अब जो कोई चाहे माने और जो चाहे इनकार कर दे।” हमने तो अत्याचारियों के लिए आग तैयार कर रखी है, जिसकी क़नातों ने उन्हें घेर लिया है। यदि वे फ़रियाद करेंगे तो फ़रियाद के प्रत्युत्तर में उन्हें ऐसा पानी मिलेगा जो तेल की तलछट जैसा होगा; वह उनके मुँह भून डालेगा। बहुत ही बुरा है वह पेय और बहुत ही बुरा है वह विश्रामस्थल !

30. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, तो निश्चय ही

الْحَقِّقَاتِ

سُبْحَانَ الَّذِي

لَيْسَ شَاءَ لَهُ كَيْفُ السَّوَاتِ وَالْأَرْضِ، أَبْصُرْ بِهِ  
أَسْمِعْ مَا لَهُمْ قَمَرٌ دُونَهُ مِنْ وَجْهِهِ وَلَا يُشْرِكُ  
فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۝ وَأَتْلُ مَا أُوْحِيَ إِلَيْكَ مِنْ  
كِتَابِ رَبِّكَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ  
دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ  
يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدْوَةِ وَالْعَظِيمِ يُرِيدُونَ  
وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ  
الدُّنْيَا وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا  
وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرْطًا ۝ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ  
رَبِّكُمْ ۖ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ ۖ  
إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا ۖ أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۖ  
فَلَنْ يَسْتَغِيثُوا ۖ يُغَاثُّهَا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۖ  
بِئْسَ الشَّرَابُ ۖ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ

مَزَلُوا



किसी ऐसे व्यक्ति का प्रतिदान जिसने अच्छा कर्म किया हो, हम अकारथ नहीं करते।

31. ऐसे ही लोगों के लिए सदाबहार बाग़ हैं। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएँगे और वे हरे पतले और गाढ़े रेशमी कपड़े पहनेंगे और ऊँचे तख्तों पर तकिया लगाए होंगे। क्या ही अच्छा बदला है और क्या ही अच्छा विश्रामस्थल !

32. उनके समक्ष एक उपमा प्रस्तुत करो : दो व्यक्ति हैं। उनमें से एक को हमने अंगूरों के दो बाग़ दिए और उनके चारों ओर हमने खजूरों के वृक्षों की बाड़ लगाई और उन दोनों के बीच हमने खेती-बाड़ी रखी।

33. दोनों में से प्रत्येक बाग़ अपने फल लाया और इसमें कोई कमी नहीं की। और उन दोनों के बीच हमने एक नहर भी प्रवाहित कर दी।

34. उसे ख़ूब फल और पैदावार प्राप्त हुई। इसपर वह अपने साथी से, जबकि वह उससे बातचीत कर रहा था, कहने लगा : “मैं तुझसे माल और दौलत में बढ़कर हूँ और मुझे जनशक्ति भी अधिक प्राप्त है।”

35. वह अपने हक़ में ज़ालिम बनकर अपने बाग़ में प्रविष्ट हुआ। कहने लगा : “मैं ऐसा नहीं समझता कि यह कभी विनष्ट होगा।

36. और मैं नहीं समझता कि वह (क्रियामत की) घड़ी कभी आएगी। और यदि मैं वास्तव में अपने रब के पास पलटा भी तो निश्चय ही पलटने की

الْكَافِرِينَ

سُحُفِ الْوَيْلِ

أَمْثَلُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ  
عَمَلًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ  
تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ  
وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ  
مُتَشَكِّلِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نَبْذَرُ الثَّوَابَ ۖ وَحَسُنَتْ  
مُرُفَقَاتُهُمْ ۚ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا  
لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَ  
جَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زُرْعًا ۚ كَلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اتَتْ  
أَكْلَهُمَا وَلَمْ يُظْلِمُوا مِنْهُ شَيْئًا، وَفَجَّرْنَا خِلْفَهُمَا  
نَهْرًا ۚ وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ  
أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ لَفْرًا ۚ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ  
وَهُوَ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ ۚ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَذِهِ  
أَبَدًا ۚ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً، وَلَٰكِنْ زُودْتُ

مَدِينَةٍ



जगह इससे भी उत्तम पाऊँगा।”

37. उसके साथी ने उससे बातचीत करते हुए कहा : “क्या तू उस सत्ता के साथ कुफ़्र करता है जिसने तुझे मिट्टी से, फिर वीर्य से पैदा किया, फिर तुझे एक पूरा आदमी बनाया ?

38. लेकिन मेरा रब तो वही अल्लाह है और मैं किसी को अपने रब के साथ साझीदार नहीं बनाता।

39. और ऐसा क्यों न हुआ कि जब तूने अपने बाग़ में प्रवेश किया तो कहता : ‘जो अल्लाह चाहे, बिना अल्लाह के कोई शक्ति नहीं?’ यदि तू देखता है कि मैं धन और संतति में तुझसे कम हूँ,

40. तो आशा है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से अच्छा प्रदान करे और तेरे इस बाग़ पर आकाश से कोई कुक़ी (आपदा) भेज दे। फिर वह साफ़ मैदान होकर रह जाए।

41. या उसका पानी बिलकुल नीचे उतर जाए। फिर तू उसे ढूँढ़कर न ला सके।”

42. हुआ भी यही कि उसका सारा फल घिराव में आ गया। उसने उसमें जो कुछ लागत लगाई थी, उसपर वह अपनी हथेलियों को नचाता रह गया, और स्थिति यह थी कि वह बाग़ अपनी टट्टियों पर ढहा पड़ा था और वह कह रहा था : “क्या ही अच्छा होता कि मैंने अपने रब के साथ किसी को साझीदार न बनाया होता !”

43. उसका कोई जत्था न हुआ जो उसके और अल्लाह के बीच पड़कर

الْحَقُّ

سُورَةُ الْكَافِرَاتِ

إِلَى رَبِّي لَا جَدَنَ خَيْرًا مِنْهَا مُنْقَلَبًا ۖ قَالَ  
لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي  
خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّكَ  
رَجُلًا ۚ لَعَنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي  
أَحَدًا ۚ وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتُ مَا  
شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ إِنَّ تَرَبُّوْنَا أَقَلُّ  
وَمِنْكَ مَا لَا وَوَلَدًا ۚ فَعَسَى رَبِّي أَنْ يُؤْتِيَنِي  
خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ  
السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ۚ أَوْ يُصْبِحَ مَا وَهَا  
غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۚ وَأَحِيطَ بِثَمَرِهِ  
فَأَصْبَحَ يُغْلِبُ كَفْيَهُ عَلَىٰ مَا أَنْفَقَ فِيهَا وَهِيَ  
خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَلَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ  
بِرَبِّي أَحَدًا ۚ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ

مَذَلَّةً



उसकी सहायता करता और न उसे स्वयं बदला लेने की सामर्थ्य प्राप्त थी।

44. ऐसे अवसर पर काम बनाने का सारा अधिकार परम सत्य अल्लाह ही को प्राप्त है। वही बदला देने में सबसे अच्छा है और वही अच्छा परिणाम दिखाने की दृष्टि से भी सर्वोत्तम है।

45. और उनके समक्ष सांसारिक जीवन की उपमा प्रस्तुत करो : यह ऐसी है, जैसे पानी हो, जिसे हमने आकाश से उतारा तो उससे धरती की पौध घनी होकर परस्पर गुंथ गई। फिर वह चूरा-चूरा होकर रह गई, जिसे हवाएँ उड़ाए लिए फिरती हैं। अल्लाह को तो हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

46. माल और बेटे तो केवल सांसारिक जीवन की शोभा हैं, जबकि बाक़ी रहनेवाली नेकियाँ ही तुम्हारे रब के यहाँ परिणाम की दृष्टि से भी उत्तम हैं और आशा की दृष्टि से भी वही उत्तम हैं।

47. जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएँगे और तुम धरती को बिलकुल नग्न देखोगे और हम उन्हें इकट्ठा करेंगे तो उनमें से किसी एक को भी न छोड़ेंगे।

48. वे तुम्हारे रब के सामने पंक्तिबद्ध उपस्थित किए जाएँगे—“तुम हमारे सामने आ पहुँचे, जैसा हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था। नहीं, बल्कि तुम्हारा तो यह दावा था कि हम तुम्हारे लिए वादा किया हुआ कोई समय लाएँगे ही नहीं।”

49. किताब (कर्मपत्रिका) रखी जाएगी तो अपराधियों को देखोगे कि जो कुछ उसमें होगा उससे डर रहे हैं और कह रहे हैं : “हाय, हमारा दुर्भाग्य !

الْحَيَاتِ

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ

مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۖ هَذَا كَـ  
الْوَلَايَةِ لِلَّهِ الْحَقِّ ۖ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ۖ  
وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنزَلْنَاهُ  
مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ  
شَيْبًا يَتَذَرُّهُ الرِّيحُ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ  
مُقْتَدِرًا ۖ الْأَمْثَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ  
وَالْبَقِيَّةُ الصَّلَاحُ ۖ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ  
أَمَلًا ۖ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً ۖ  
وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۖ وَغَرَضُونَا  
عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا ۖ لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ  
أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ لَكُمْ مَوْعِدًا ۖ  
وَوَضِعَ الْكِتَابَ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ  
مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يُوْنِئْتَنَا مَالٍ هَذَا الْكِتَابِ

سُورَةُ



यह कैसी किताब है कि यह न कोई छोटी बात छोड़ती है न बड़ी, बल्कि सभी को इसने अपने अन्दर समाहित कर रखा है।" जो कुछ उन्होंने किया होगा सब मौजूद पाएँगे। तुम्हारा रब किसी पर जुल्म न करेगा।

50. याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा : "आदम को सजदा करो।" तो इबलीस के सिवा सबने सजदा किया। वह जिन्नों में से था। तो उसने अपने रब के आदेश का उल्लंघन किया। अब क्या तुम मुझसे इतर उसे और उसकी संतान को संरक्षक-मित्र बनाते हो?

हालाँकि वे तुम्हारे शत्रु हैं। क्या ही बुरा विकल्प है, जो ज़ालिमों के हाथ आया !

51. मैंने न तो आकाशों और धरती को उन्हें दिखाकर पैदा किया और न स्वयं उनको बनाने और पैदा करने के समय ही उन्हें बुलाया। मैं ऐसा नहीं हूँ कि गुमराह करनेवालों को अपनी बाहु-भुजा बनाऊँ।

52. याद करो जिस दिन वह कहेगा : "बुलाओ मेरे साझीदारों को, जिनके साझीदार होने का तुम्हें दावा था।" तो वे उनको पुकारेंगे, किन्तु वे उन्हें कोई उत्तर न देंगे और हम उनके बीच सामूहिक विनाश-स्थल निर्धारित कर देंगे।

53. अपराधी लोग आग को देखेंगे तो समझ लेंगे कि वे उसमें पड़नेवाले हैं और उससे बच निकलने की कोई जगह न पाएँगे।

54. हमने लोगों के लिए इस कुरआन में हर प्रकार के उत्तम विषयों को

الْمَكْنُوحَاتِ

سُبْحَانَكَ رَبِّيَ

لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا ۚ وَ  
وَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا ۚ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ  
أَحَدًا ۚ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ  
فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ  
عَنِ أَمْرِ رَبِّهِ أَتَتَّبِعُ وَنَهَىٰ وَذَرَيْتَهُ أَزْوَاجًا  
مِّنْ دُونِي ۚ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ  
بَدَلًا ۚ مَا أَشْهَدُكُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ  
وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ ۚ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّينَ  
عَصَدًا ۚ وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَاءِيَ  
الَّذِينَ زَعَمْتُمْ قَدْ دَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ  
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ۚ وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ  
فَطَلَّتْوَا أَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا  
مَصْرَفًا ۚ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ

مَذْمُومًا



तरह-तरह से बयान किया है, किन्तु मनुष्य सबसे बढ़कर झगड़ालू है।

55. आखिर लोगों को, जबकि उनके पास मार्गदर्शन आ गया तो इस बात से कि वे ईमान लाते और अपने रब से क्षमा चाहते, इसके सिवा किसी चीज़ ने नहीं रोका कि उनके लिए वही कुछ सामने आए जो पूर्व जनों के सामने आ चुका है, यहाँ तक कि यातना उनके सामने आ खड़ी हो।

56. रसूलों को हम केवल शुभ सूचना देनेवाले और सचेतकर्ता बनाकर भेजते हैं। किन्तु इनकार करनेवाले लोग हैं कि असत्य के सहारे झगड़ते हैं, ताकि सत्य को ढिगा दें। उन्होंने मेरी आयतों का और जो चेतावनी उन्हें दी गई उसका मज़ाक़ बना लिया है।

57. उस व्यक्ति से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के द्वारा समझाया गया, तो उसने उनसे मुँह फेर लिया और उसे भूल गया, जो सामान उसके हाथ आगे बढ़ा चुके हैं? निश्चय ही हमने उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं कि कहीं वे उसे समझ न लें और उनके कानों में बोझ डाल दिया (कि कहीं वे उसे सुन न लें)।<sup>1</sup> यद्यपि तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुलाओ, वे कभी भी मार्ग नहीं पा सकते।

58. तुम्हारा रब अत्यन्त क्षमाशील और दयावान है। यदि वह उन्हें उसपर पकड़ता जो कुछ कि उन्होंने कमाया है तो उनपर शीघ्र ही यातना ला देता।

الْمُتَكِبِّينَ

الْمُتَكِبِّينَ

مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرُ شُكْنٍ ۚ  
جَدَلًا ۚ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ  
الْهُدَىٰ ۚ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ ۚ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ  
سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝  
وَمَا تُنْزِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ  
وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا  
بِهِ الْحَقَّ ۚ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا أُنذِرُوا هُزُوًا ۝  
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ  
عَنْهَا وَلَيْسَىٰ مَا قَدَّمَتْ يَدَهُ إِلَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ  
قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ  
وَأَنْ تَذَرَهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ ۚ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ۝  
وَرَبُّكَ الْمَغْفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا  
كَسَبُوا لَتَجَلَ لَهُمُ الْعَذَابُ ۚ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ

سُورَةُ

1. जब कोई अल्लाह की आयतों से मुँह फेरता है, तो उसके दिल से समझने की क्षमता खत्म हो जाती है और उसके कान भी सुनकर मानो कुछ नहीं सुनते। उसे अल्लाह ज़बरदस्ती मार्ग पर नहीं लाता, बल्कि भटकने के लिए छोड़ देता है।



नहीं, बल्कि उनके लिए तो वादे का एक समय निश्चित है। उससे हटकर वे बच निकलने का कोई मार्ग न पाएँगे।

59. और ये बस्तियाँ वे हैं कि जब उन्होंने अत्याचार किया तो हमने उन्हें विनष्ट कर दिया, और हमने उनके विनाश के लिए एक समय निश्चित कर रखा था।

60. याद करो, जब मूसा ने अपने युवक सेवक से कहा : "जब तक कि मैं दो दरियाओं के संगम तक न पहुँच जाऊँ चलना नहीं छोड़ूँगा, चाहे मैं यँ ही दीर्घकाल तक सफ़र करता रहूँ।"

لَنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْجِلًا ۖ وَيُنَالُ الْفَرْجَ  
أَهْلَكَهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ  
مَوْجِدًا ۖ وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِفَتَاهُ لَا أَبْرُهُ حَتَّى  
أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ۖ فَلَمَّا بَلَغَا  
مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا بَسِيحًا خَوْفَهُمَا فَأَتَّخَذَ سَبِيلَهُ  
فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۖ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ إِنِّي  
عَذَاءٌ نَارًا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ۖ  
قَالَ أَوَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ  
الْحُوتَ ۖ وَمَا أَتَيْنِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ ۖ  
وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ۖ قَالَ ذَلِكَ  
مَا كُنَّا نَبْغِي ۖ فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا ۖ  
فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا اتَّخَذَهُ رَحْمَةً مِّنْ  
عِبَادِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ۖ قَالَ لَهُ

سَلِّمْ

61. फिर जब वे दोनों संगम पर पहुँचे तो वे अपनी मछली से गाफ़िल हो गए और उस (मछली) ने दरिया में सुरंग बनाती अपनी राह ली।

62. फिर जब वे वहाँ से आगे बढ़ गए तो उसने अपने सेवक से कहा : "लाओ, हमारा नाश्ता। अपने इस सफ़र में तो हमें बड़ी थकान पहुँची है।"

63. उसने कहा : "ज़रा देखिए तो सही, जब हम उस चट्टान के पास ठहरे हुए थे तो मैं मछली को भूल ही गया—और शैतान ही ने उसको याद रखने से मुझे गाफ़िल कर दिया—और उसने आश्चर्य रूप से दरिया में अपनी राह ली।"

64. (मूसा ने) कहा : "यही तो है जिसे हम तलाश कर रहे थे।" फिर वे दोनों अपने पदचिह्नों को देखते हुए वापस हुए।

65. फिर उन्होंने हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया, जिसे हमने अपने पास से दयालुता प्रदान की थी और जिसे अपने पास से ज्ञान प्रदान किया था।

66. मूसा ने उससे कहा : "क्या मैं आपके पीछे चलूँ, ताकि आप मुझे उस



ज्ञान और विवेक की शिक्षा दें, जो आपको दी गई है ?”

67. उसने कहा : “तुम मेरे साथ धैर्य न रख सकोगे,

68. और जो चीज़ तुम्हारे ज्ञान-परिधि से बाहर हो, उसपर तुम धैर्य कैसे रख सकते हो ?”

69. (मूसा ने) कहा : “यदि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्यवान पाएँगे। और मैं किसी मामले में भी आपकी अवज्ञा नहीं करूँगा।”

70. उसने कहा : “अच्छा, यदि तुम मेरे साथ चलते हो तो मुझसे किसी चीज़ के विषय में न पूछना, यहाँ तक कि मैं स्वयं ही तुमसे उसकी चर्चा करूँ।”

71. अन्ततः दोनों चले, यहाँ तक कि जब नौका में सवार हुए तो उसने उसमें दरार डाल दी। (मूसा ने) कहा : “आपने इसमें दरार डाल दी, ताकि उसके सवारों को डुबो दें ? आपने तो एक अनोखी हरकत कर डाली।”

72. उसने कहा : “क्या मैंने कहा नहीं था कि तुम मेरे साथ धैर्य न रख सकोगे ?”

73. कहा : “जो भूल-चूक मुझसे हो गई उसपर मुझे न पकड़िए और मेरे मामले में मुझे तंगी में न डालिए।”

74. फिर वे दोनों चले, यहाँ तक कि जब वे एक लड़के से मिले तो उसने उसे मार डाला। कहा : “क्या आपने एक अच्छी-भली जान की हत्या कर दी, बिना इसके कि किसी की हत्या का बदला लेना अभीष्ट हो ? यह तो आपने बहुत ही बुरा किया !”

الشعير

شعير

مَوْءِيَةً هَلْ أَتَيْتُكَ عَلَىٰ أَنْ تُعَلِّمَ مِنَّا  
عَلِمْتَ رُشْدًا ۖ قَالَ إِنَّكَ لَنْ تُسْتَطِيعَ  
مَعِيَ صَبْرًا ۖ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ  
بِهِ خُبْرًا ۖ قَالَ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا  
وَلَا أَعْوِي لَكَ أَمْرًا ۖ قَالَ فَإِنِ اشْتَغَفْتُ  
فَلَا تُشْغِلْنِي عَنْ شَيْءٍ وَحَتَّىٰ أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ  
ذِكْرًا ۖ فَانْطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ  
خَرَقَهَا ۖ قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا ۖ لَقَدْ  
جِئْتُ شَيْئًا مِّمَّا ۖ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ  
تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۖ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا  
كَيْبُتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي ۖ عُسْرًا ۖ  
فَانْطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا لَوِيَّا غُلْمًا تَقَتَّلَهُ ۖ قَالَ أَتَقَتَّلْتَ  
نَفْسًا ۖ كَيْفَ ۖ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۖ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُّكْرًا ۖ

مَرْثَم



75. उसने कहा : “क्या मैं तुमसे कहा नहीं था कि तुम मेरे साथ धैर्य न रख सकोगे ?”

76. कहा : “इसके बाद यदि मैं आपसे कुछ पूछूँ तो आप मुझे साथ न रखें। अब तो मेरी ओर से आप पूरी तरह उज्र को पहुँच चुके हैं।”

77. फिर वे दोनों चले, यहाँ तक कि जब एक बस्तीवालों के पास पहुँचे और उनसे भोजन माँगा, किन्तु उन्होंने उनके आतिथ्य से इनकार कर दिया। फिर वहाँ उन्हें एक दीवार मिली जो गिरा चाहती थी, तो उस व्यक्ति ने उसको खड़ा कर दिया। (मूसा ने) कहा : “यदि आप चाहते तो इसकी कुछ मज़दूरी ले सकते थे।”

78. उसने कहा : “यह मेरे और तुम्हारे बीच जुदाई का अवसर है। अब मैं तुमको उसकी वास्तविकता बताए दे रहा हूँ, जिसपर तुम धैर्य से काम न ले सके।”

79. वह जो नौका थी, कुछ निर्धन लोगों की थी जो दरिया में काम करते थे, तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ, क्योंकि आगे उनके परे एक सम्राट था जो प्रत्येक नौका को ज़बरदस्ती छीन लेता था।

80. और रहा वह लड़का, तो उसके माँ-बाप ईमान पर थे। हमें आशंका हुई कि वह सरकशी और कुफ़्र से उन्हें तंग करेगा।

81. इसलिए हमने चाहा कि उनका रब उन्हें इसके बदले दूसरी संतान दे, जो आत्मविकास में इससे अच्छा हो और दया-करुणा से अधिक निकट हो।

تَسْتَطِيعَ

قَالَ لَهُ

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ

صَبْرًا ۚ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ مِّنْ بَعْدِهَا فَلَا

تَضْمِنْنِي ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِن لَّدُنِّي عُذْرًا ۝ فَاَنْطَلَقَا

حَتّٰى اِذَا اَتَيَا اَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا اَهْلَهَا فَاَبَوْا

اَنْ يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُرِيدُ اَنْ

يَنْقُضَ فَاَقَامَهُ ۚ قَالَ كُوْفِرْتُمْ لَتَخَذَنَّ عَلَيْهِ

اَجْرًا ۝ قَالَ هٰذَا اِِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ

بِبَنَادِلٍ مَّا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝ اَمَّا التَّفِيْنَةُ

فَكَانَتْ لِمَسْكِيْنٍ يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ فَاَرْذَتْ اَنْ

اَعْيِبَهَا وَاَنَّ وِرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ

غَضَبًا ۝ وَاَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ اَبُوهُ مُؤْمِنًا

فَنُحِشِنَا اَنْ يُّهَيِّجَهُمَا طَغْيَانًا وَكُفْرًا ۝ فَاَرْزَنَّا

اَنْ يُبَدِّلَ لَهَا رَبُّهَا خَيْرًا اِمْنَةً زَكُوَّةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ۝

مَذَلَم

اَلَمْ اَقُلْ لَكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ



82. और रही यह दीवार तो यह दो अनाथ बालकों की है जो इस नगर में रहते हैं। और इसके नीचे उनका खज़ाना मौजूद है। और उनका बाप नेक था, इसलिए तुम्हारे रब ने चाहा कि वे अपनी युवावस्था को पहुँच जाएँ और अपना खज़ाना निकाल लें। यह तुम्हारे रब की दयालुता के कारण हुआ। मैंने तो अपने अधिकार से कुछ नहीं किया। यह है वास्तविकता उसकी जिसपर तुम धैर्य न रख सके।”

83. वे तुमसे जुलकरनैन के विषय में पूछते हैं। कह दो : “मैं तुम्हें उसका कुछ वृत्तान्त सुनाता हूँ।”

84. हमने उसे धरती में सत्ता प्रदान की थी और उसे हर प्रकार के संसाधन दिए थे।

85. अतएव उसने एक अभियान का आयोजन किया।

86. यहाँ तक कि जब वह सूर्यास्त-स्थल तक पहुँचा तो उसे मटमैले काले पानी के एक स्रोत में डूबते हुए पाया और उसके निकट उसे एक क्रौम मिली। हमने कहा : “ऐ जुलकरनैन ! तुझे अधिकार है कि चाहे तकलीफ़ पहुँचाए और चाहे उनके साथ अच्छा व्यवहार करे।”

87. उसने कहा : “जो कोई जुल्म करेगा उसे तो हम दण्ड देंगे। फिर वह अपने रब की ओर पलटेगा और वह उसे कठोर यातना देगा।

88. किन्तु जो कोई ईमान लाया और अच्छा कर्म किया, उसके लिए तो अच्छा बदला है और हम उसे अपना सहज एवं मृदुल आदेश देंगे।”

الْقَوْمِ

قَالَ لَهُ

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزُ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا لِرَحْمَةِ مِنْ رَبِّكَ وَمَا فَعَلْتَهُ عَنْ أَمْرِي ذَلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۖ وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ۖ قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ۚ إِنَّا مَكِّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَابْنَيْنِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۖ فَاتَّبَعِ سَبَبًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَِئْلَةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۚ قُلْنَا يَبْنَؤُا الْقَرْنَيْنِ أَمْ أَنْ تَعَذِّبَ وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ۖ قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نَعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا ثَكْرًا ۖ وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءٌ الْحَسَنَىٰ وَنُسْقَوْنَ لَهُ مِنْ

مَنْطِقَةٍ



89. फिर उसने एक और अभियान का आयोजन किया।

90. यहाँ तक कि जब वह सूर्योदय स्थल पर जा पहुँचा तो उसने उसे ऐसे लोगों पर उदित होते पाया जिनके लिए हमने सूर्य के मुक्काबले में कोई ओट नहीं रखी थी।

91. ऐसा ही हमने किया था और जो कुछ उसके पास था, उसकी हमें पूरी खबर थी।

92. उसने फिर एक अभियान का आयोजन किया,

93. यहाँ तक कि जब वह दो पर्वतों के बीच पहुँचा तो उसे उनके

इस किनारे कुछ लोग मिले, जो ऐसा लगता नहीं था कि कोई बात समझ पाते हों।

94. उन्होंने कहा : “ऐ ज़ुलकरनैन ! याजूज और माजूज इस भूभाग में उत्पात मचाते हैं। क्या हम तुम्हें कोई कर इस काम के लिए दें कि तुम हमारे और उनके बीच एक अवरोध निर्मित कर दो ?”

95. उसने कहा : “मेरे रब ने मुझे जो कुछ अधिकार एवं शक्ति दी है वह उत्तम है। तुम तो बस बल से मेरी सहायता करो। मैं तुम्हारे और उनके बीच एक सुदृढ़ दीवार बनाए देता हूँ।

96. मुझे लोहे के टुकड़े ला दो।” यहाँ तक कि जब दोनों पर्वतों के बीच के रिक्त स्थान को पाटकर बराबर कर दिया तो कहा : “धौको !” यहाँ तक कि जब उसे आग कर दिया तो कहा : “मुझे पिघला हुआ ताँबा ला दो, ताकि मैं उसपर उँडेल दूँ।”

97. तो न तो वे (याजूज, माजूज) उसपर चढ़कर आ सकते थे और न वे उसमें सेंध ही लगा सकते थे।

98. उसने कहा : “यह मेरे रब की दयालुता है, किन्तु जब मेरे रब के वादे का

الْقَوْمِ

قَالَ تَزِدُّ

أَمْرًا يُسْرًا ۖ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ  
الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ يَجْعَلْ لَهُم مِّنْ  
ذُرِّيَّتٍ سِوَا ۖ كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ۚ  
ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ  
دُونِهِمَا قَوْمًا ۖ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ۚ قَالُوا يَٰذَا  
الْقُرْنَيْنِ إِنَّا يَا جُوعٌ وَمَا جُوعٌ مُّفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ  
فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ  
سَدًّا ۚ قَالَ مَا مَكْنِي فِيهِ رَبِّي حَتَّىٰ كَأَعْيُنُونِي  
بِقُوَّةٍ أَجْعَلُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۚ أَنُؤْتِي رِزْقًا يُحْيِي  
حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا ۖ  
حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا ۖ قَالَ أَنُؤْتِي أَفْرَغٌ عَلَيْهِ قَطْرًا ۚ  
فَمَا اسْتَطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ۚ  
قَالَ هَٰذَا رَحْمَةٌ مِّن رَّبِّي ۖ فَإِذَا هِيَ بَعْدَ رَبِّي جَعَلَهُ

سَدًّا



समय आ जाएगा तो वह उसे ढाकर बराबर कर देगा, और मेरे रब का वादा सच्चा है।”

99. उस दिन हम उन्हें छोड़ देंगे कि वे एक-दूसरे से मौजों की तरह परस्पर गुत्थम-गुत्था हो जाएँगे। और “सूर” फूँका जाएगा। फिर हम उन सबको एक साथ इकट्ठा करेंगे।

100. और उस दिन जहन्नम को इनकार करनेवालों के सामने कर देंगे।

101. जिनके नेत्र मेरी अनुस्मृति की ओर से परदे में थे और जो कुछ सुन भी नहीं सकते थे।

102. तो क्या इनकार करनेवाले

इस खयाल में हैं कि मुझसे हटकर मेरे बन्दों को अपना हिमायती बना लें? हमने ऐसे इनकार करनेवालों के आतिथ्य-सत्कार के लिए जहन्नम तैयार कर रखा है।

103. कहो : “क्या हम तुम्हें उन लोगों की खबर दें, जो अपने कर्मों की दृष्टि से सबसे बढ़कर घाटा उठानेवाले हैं?”

104. ये वे लोग हैं जिनका प्रयास सांसारिक जीवन में अकारथ गया और वे यही समझते हैं कि वे बहुत अच्छा कर्म कर रहे हैं।

105. यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों का और उससे मिलन का इनकार किया। अतः उनके कर्म जान को लागू हुए, तो हम क्रियामत के दिन उन्हें कोई वज़न न देंगे।

106. उनका बदला वही जहन्नम है, इसलिए कि उन्होंने कुफ़्र की नीति अपनाई और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का उपहास किया।

107. निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके

الْقَفْرِ

قَالَ الْقَفْرِ

دَكَاةً، وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ۖ وَتَرَكُنَا بَعْضُهُمْ  
يَوْمَئِذٍ يَمُوتُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ  
جَمْعًا ۖ وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرْضًا ۚ  
الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا  
لَا يَسْمَعُونَ سَمْعًا ۖ أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ  
يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ دُونِي آلِافًا ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ  
لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ۖ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ  
أَعْمَالًا ۚ الَّذِينَ ضَلَّ سَعِيَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ  
يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ  
كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِمْ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا  
نَقِيمَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَرَأَىٰ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ وَهُمْ  
جَهَنَّمَ بِمَا كَفَرُوا وَتَتَّخِذُوا آيَتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ۚ  
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ

مَدِينَةٍ



आतिथ्य के लिए फिरदौस के बाग़ होंगे,

108. जिनमें वे सदैव रहेंगे, वहाँ से हटना न चाहेंगे।”

109. कहो : “यदि समुद्र मेरे रब के बोल को लिखने के लिए रोशनाई हो जाए तो इससे पहले कि मेरे रब के बोल समाप्त हों, समुद्र ही समाप्त हो जाएगा। यद्यपि हम उसके सदृश्य एक और भी समुद्र उसके साथ ला मिलायें।”

110. कह दो : “मैं तो केवल तुम्हीं जैसा एक मनुष्य हूँ। मेरी ओर प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य-प्रभु बस अकेला पूज्य-प्रभु है।

अतः जो कोई अपने रब से मिलन की आशा रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छा कर्म करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को साझी न बनाए।”



## 19. मरयम

(मक्का में उतरी— आयतें 98)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. काफ़० हा० या० ऐन० साद०।
2. वर्णन है तेरे रब की दयालुता का, जो उसने अपने बन्दे ज़करीया पर दर्शाई,
3. जबकि उसने अपने रब को चुपके-चुपके पुकारा।
4. उसने कहा : “मेरे रब ! मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई और सिर बुढ़ापे से भड़क उठा। और मेरे रब ! तुझे पुकारकर मैं कभी बेनसीब नहीं रहा।
5. मुझे अपने पीछे अपने भाई-बन्धुओं की ओर से भय है और मेरी पत्नी बाँझ है। अतः तू मुझे अपने पास से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर,



6. जो मेरा भी उत्तराधिकारी हो और याकूब के वंशज का भी उत्तराधिकारी हो। और उसे मेरे रब ! वांछनीय बना।”

7. (उत्तर मिला) : “ऐ ज़करीया ! हम तुझे एक लड़के की शुभ सूचना देते हैं, जिसका नाम यह्या होगा। हमने उससे पहले किसी को उसके जैसा नहीं बनाया।”

8. उसने कहा : “मेरे रब ! मेरे लड़का कहाँ से होगा, जबकि मेरी पत्नी बाँझ है और मैं बुढ़ापे की अंतिम अवस्था को पहुँच चुका हूँ ?”

9. कहा : "ऐसा ही होगा। तेरे रब ने कहा है कि यह मेरे लिए सरल है। इससे पहले मैं तुझे पैदा

10. उसने कहा : “मेरे रब ! मेरे लिए कोई निशानी निश्चित कर दे ।” कहा : “तेरी निशानी यह है कि तू भला-चंगा रहकर भी तीन रात (और दिन) लोगों से बात न करे ।”

11. अतः वह मेहराब से निकलकर अपने लोगों के पास आया और उनसे संकेतों में कहा : “प्रातः काल और संध्या समय तसबीह करते रहो।”

12-13. "ऐ यहुया ! किताब को मज़बूत थाम ले ।" हमने उसे बचपन ही में निर्णय-शक्ति प्रदान की, और अपने पास से नरमी और शौक्र और आत्मविकास । और वह बड़ा डरनेवाला था ।

14. और अपने माँ-बाप का हक पहचाननेवाला था। और वह सरकश अवज्ञाकारी न था।

15. "सलाम उसपर, जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन उसकी मृत्यु हो और जिस दिन वह जीवित करके उठाया जाए !"

16. और इस किताब में मरयम की चर्चा करो, जबकि वह अपने घरवालों से

قَالَ اللَّهُ ۖ يٰرَبِّىُّنِىْ وَرَبِّكَ مِنْ اِلٰى يَعْقُوْبُ ۚ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۚ يٰذِكْرِيْ ۙ اِنَّا نَبِيْرُكَ ۙ عَلِّمْنَا سَمٰىءُ نٰحِيْ ۙ لَمْ نَحْمِلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۚ قَالَ رَبِّ اَنْتَ يَكُوْنُ لِيْ عِلْمًا وَّكَانَتْ اَمْرًا لِّيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتَ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۚ قَالَ كَذٰلِكَ ۙ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلٰى هٰٓؤُنِىْ وَّقَدْ خَلَقْتَنِيْ مِنْ قَبْلُ وَاَمْرُكَ شَيْئًا ۚ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْ اٰيَةً ۙ قَالَ اِيْنُكَ اَلَا تُكَلِّمُ النَّاسَ ۚ ثَلَاثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۚ فَنَدِمَ عَلٰى قَوْمِهِ مِنَ الْمَحْرَابِ ۚ فَاَوْسَى الْاَوَّلٰى اَنْ سَتَحُوْا بِكُرْسٰٓى وَعَوِيًّا ۚ لِيُصْنِىْ خَلْدُ الْكِتٰبِ بِقُوَّةٍ وَّاَتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۚ وَحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَكَلٰوَةً ۚ وَكَانَ نَقِيًّا ۚ وَنَزَّلْنَاهُ الْوَلَدِيْهِ وَاَمْرًا يَكُنْ جَبَّارًا عَٰصِيًّا ۚ وَسَلَّمْ عَلٰىهِ يَوْمَ وُلِدَ ۙ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۚ وَاذْكُرْنِيْ الْكِتٰبِ مَرِيْمَ ۙ اِذْ اَنْتَبَذَتْ

anyway



अलग होकर एक पूर्वी स्थान पर चली गई।

17. फिर उसने उनसे परदा कर लिया। तब हमने उसके पास अपनी रूह (फ़रिश्ते) को भेजा और वह उसके सामने एक पूर्ण मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ।

18. वह बोल उठी : "मैं तुझसे बचने के लिए रहमान की पनाह माँगती हूँ; यदि तू (अल्लाह का) डर रखनेवाला है (तो यहाँ से हट जाएगा)।"

19. उसने कहा : "मैं तो केवल तेरे रब का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुझे नेकी और भलाई में बढ़ा हुआ लड़का दूँ।"

20. वह बोली : "मेरे कहाँ से लड़का होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं और न मैं कोई बदचलन हूँ?"

21. उसने कहा : "ऐसा ही होगा। तेरे रब ने कहा है कि 'यह मेरे लिए सहज है।' और ऐसा इसलिए होगा (ताकि हम तुझे) और ताकि हम उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएँ और अपनी ओर से एक दयालुता। यह तो एक ऐसी बात है जिसका निर्णय हो चुका है।"

22-23. फिर उसे उस (बच्चे) का गर्भ रह गया और वह उसे लिए हुए एक दूर के स्थान पर अलग चली गई। अन्ततः प्रसव पीड़ा उसे एक खजूर के तने के पास ले आई। वह कहने लगी : "क्या ही अच्छा होता कि मैं इससे पहले ही मर जाती और भूली-बिसरी हो गई होती!"

24-25. उस समय उसे उसके नीचे से पुकारा : "शोकाकुल न हो। तेरे रब ने तेरे नीचे एक स्रोत प्रवाहित कर रखा है। तू खजूर के उस वृक्ष के तने को पकड़कर अपनी ओर हिला। तेरे ऊपर ताज़ा पकी-पकी खजूरें टपक पड़ेंगी।

26. अतः तू खा और पी और आँखें ठंडी कर। फिर यदि तू किसी आदमी

مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۖ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ  
حِجَابًا ۖ فَلَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا  
سَوِيًّا ۖ قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتُ  
تَقِيًّا ۖ قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكَ غُلَامًا  
زَكِيًّا ۖ قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ  
أَكُ بَغِيًّا ۖ قَالَ كَذَلِكَ ۖ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلِيمٌ هَدِيدٌ  
وَلِيُفْعَلَهُ آيَةٌ لِلنَّاسِ وَرَحْمَةٌ مِّنَّا ۖ وَكَانَ أَمْرًا  
مَّقْضِيًّا ۖ فَمَمَّلَتْهُ فَاتَّخَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ۖ  
فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۖ قَالَتْ يَلَيْسَ لِي  
بِمَثْقَلٍ قَبْلُ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا مَنِيًّا ۖ فَتَنَادَاهَا مِنْ  
تَحْتِهَا أَلَا تَحْزَنِي ۖ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۖ وَ  
هُزِّي إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسْقِطُ عَلَيْكَ رَطْبًا  
جَنِيًّا ۖ فَكُلِي وَاشْرَبِي وَكُفِّي عَيْنًا ۖ فَمَا تَرَيْنَ مِنَ

مَذَلٍ



को देखे तो कह देना : 'मैंने तो रहमान के लिए रोज़े की मन्नत मानी है। इसलिए मैं आज किसी मनुष्य से न बोलूँगी।'

27. फिर वह उस बच्चे को लिए हुए अपनी क़ौम के लोगों के पास आई। वे बोले : "ऐ मरयम, तूने तो बड़ा ही आश्चर्य का काम कर डाला !

28. ऐ हारून की बहन ! न तो तेरा बाप ही कोई बुरा आदमी था और न तेरी माँ ही बदचलन थी।"

29. तब उसने उस (बच्चे) की ओर संकेत किया। वे कहने लगे : "हम उससे कैसे बात करें जो पालने में पड़ा हुआ एक बच्चा है ?"

30. उसने कहा : "मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया।

31. और मुझे बरकतवाला किया जहाँ भी मैं रहूँ, और मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की, जब तक कि मैं जीवित रहूँ।

32. और अपनी माँ का हक़ अंदा करनेवाला बनाया। और उसने मुझे सरकश और बेनसीब नहीं बनाया।

33. सलास है मुझपर जिस दिन कि मैं पैदा हुआ और जिस दिन कि मैं मरूँ और जिस दिन कि जीवित करके उठाया जाऊँ !"—

34. सच्ची और पक्की बात की दृष्टि से यह है मरयम का बेटा ईसा, जिसके विषय में वे संदेह में पड़े हुए हैं।

35. अल्लाह ऐसा नहीं कि वह किसी को अपना बेटा बनाए। महान् और उच्च है वह ! जब वह किसी चीज़ का फ़ैसला करता है तो बस उसे कह देता है : "हो जा !" तो वह हो जाती है।—

36. "और निस्संदेह अल्लाह मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी। अतः तुम

مَرْيَمَ

كَانَ

الْبَشَرِ أَحَدًا، فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ صَوْمًا فَلَنْ أَكَلِمَ الْيَوْمَ أَنسِيًّا ۖ فَآتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ ۖ قَالُوا  
يَمْرُؤُا لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ۖ يَا خُتَىٰ هَٰؤُلَاءِ مَا كَانَ  
أَبُوكَ أَمْرًا سَوًّا ۖ وَمَا كَانَتْ أُمُّكَ بَغِيًّا ۖ فَأَشَارَتْ  
إِلَيْهِ ۖ قَالُوا كَيْفَ تُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۖ فَكَلَّمْنِي  
إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ۖ آتَانِي الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۖ وَجَعَلَنِي  
مُبْرَكًا ۖ أَينَ مَا كُنْتُ ۖ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ  
وَأَدْعَاةَ حَيَاتٍ ۖ وَبَرًّا بِوَالِدَاتِي ۖ وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا  
شَقِيًّا ۖ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَ  
يَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۖ ذَلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۖ قَوْلَ الْحَقِّ  
الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۖ مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ  
وَلَدٍ ۖ سُبْحَنَهُ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّا يَقُولُ لَهُ كُنْ  
فَيَكُونُ ۚ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُ لَمَّا تَرْجِعُكُم مِّنْ عِبَادِهِ ۖ هَٰذَا

سَمِعَ



उसी की बन्दगी करो यही सीधा मार्ग है।”

37. किन्तु उनमें कितने ही गिरोहों ने पारस्परिक वैमनस्य के कारण विभेद किया, तो जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए बड़ी तबाही है एक बड़े दिन की उपस्थिति से।

38. भली-भाँति सुननेवाले और भली-भाँति देखनेवाले होंगे, जिस दिन वे हमारे सामने आएँगे ! किन्तु आज ये ज़ालिम खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

39. उन्हें पश्चात्ताप के दिन से डराओ, जबकि मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा, और उनका हाल यह है कि वे ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और वे ईमान नहीं ला रहे हैं।

40. धरती और जो भी उसके ऊपर है उसके वारिस हम ही रह जाएँगे और हमारी ही ओर उन्हें लौटना होगा।

41. और इस किताब में इबराहीम की चर्चा करो। निस्संदेह वह एक सत्यवान नबी था।

42. जबकि उसने अपने बाप से कहा : “ऐ मेरे बाप ! आप उस चीज़ को क्यों पूजते हैं, जो न सुने और न देखे और न आपके कुछ काम आए ?

43. ऐ मेरे बाप ! मेरे पास ऐसा ज्ञान आ गया है जो आपके पास नहीं आया। अतः आप मेरा अनुसरण करें, मैं आपको सीधा मार्ग दिखाऊँगा।

44. ऐ मेरे बाप ! शैतान की बन्दगी न कीजिए। शैतान तो रहमान का अवज्ञाकारी है।

45. ऐ मेरे बाप ! मैं डरता हूँ कि कहीं आपको रहमान की कोई यातना न आ पकड़े और आप शैतान के साथी होकर रह जाएँ।”

46. उसने कहा : “ऐ इबराहीम ! क्या तू मेरे उपास्यों से फिर गया है ?

صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۝  
فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ أَسْمِعْ  
بِهِمْ وَآلِهِمْ يَوْمَ يُأْتُونَنَا لَكِنَ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي  
ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ وَأَنذَرْنَاهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ  
الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّا نَحْنُ  
نَرْثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ۝ وَادْكُرْ  
فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ ۖ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۖ إِذْ  
قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ  
وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ۖ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ  
الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۖ  
يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ  
عَصِيًّا ۖ يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُسْكَكَ عَذَابٌ مِّنَ  
الرَّحْمَنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ۖ قَالَ أَرَأَيْتَ أَنْتَ



यदि तू बाज़ न आया तो मैं तुझपर पथराव कर दूँगा। तू अलग हो जा मुझसे मुदत के लिए!”

47. कहा : “सलाम है आपको ! मैं आपके लिए अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करूँगा। वह तो मुझपर बहुत मेहरबान है।

48. मैं आप लोगों को छोड़ता हूँ और उनको भी जिन्हें अल्लाह से हटकर आप लोग पुकारा करते हैं। मैं तो अपने रब को पुकारूँगा। आशा है कि मैं अपने रब को पुकारकर बेनसीब नहीं रहूँगा।”

49. फिर जब वह उन लोगों से और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पूजते थे उनसे अलग हो गया, तो हमने उसे इसहाक और याकूब प्रदान किए और हर एक को हमने नबी बनाया।

50. और उन्हें अपनी दयालुता से हिस्सा दिया। और उन्हें एक सच्ची उच्च ख्याति प्रदान की।

51. और इस किताब में मूसा की चर्चा करो। निस्संदेह वह चुना हुआ था और एक रसूल, नबी था।

52. हमने उसे ‘तूर’ के मुबारक छोर से पुकारा और रहस्य की बातें करने के लिए हमने उसे समीप किया।

53. और अपनी दयालुता से उसके भाई हारून को नबी बनाकर उसे दिया।

54. और इस किताब में इसमाईल की चर्चा करो। निस्संदेह वह वादे का सच्चा था और वह एक रसूल, नबी था।

55. और अपने लोगों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था। और वह अपने रब के यहाँ प्रीतिकर व्यक्ति था।

ترجمہ

تِلْكَ

عَنِ الْهَيْئَةِ يَأْتِيهِمْ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُ لَأَرْجُمَنَّكَ  
وَأَهْجُزَنِي نَبِيًّا ۖ قَالَ سَلِّمْ عَلَيْكَ ۖ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي ۖ  
إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ۖ وَأَعِزَّ لَكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ  
اللَّهِ وَأَدْعُوا رَبِّي ۚ عَنَى إِلَّا أَكُونُ بِدُعَاءِ رَبِّي  
شَقِيًّا ۖ فَلَمَّا أَعَزَّهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ  
اللَّهِ ۖ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۖ  
وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِنْ رَحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ  
صَدِّيقٍ عَلِيًّا ۖ وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ مُوسَى ۖ إِنَّهُ كَانَ  
مُخْلَصًا ۖ وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ۖ وَنَادَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ  
الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَكَرَّمْنَاهُ نَجِيًّا ۖ وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ  
رَحْمَتِنَا آخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا ۖ وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ إسماعِيلَ ۖ  
إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ ۖ وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ۖ وَكَانَ  
يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ

مُرْسَلًا



56. और इस किताब में इदरीस की भी चर्चा करो। वह अत्यन्त सत्यवान, एक नबी था।

57. हमने उसे उच्च स्थान पर उठाया था।

58. ये वे पैगम्बर हैं जो अल्लाह के कृपापात्र हुए, आदम की सन्तान में से और उन लोगों के वंशज में से जिनको हमने नूह के साथ सवार किया, और इबराहीम और इसराईल के वंशज में से और उनमें से जिनको हमने सीधा मार्ग दिखाया और चुन लिया। जब उन्हें रहमान की आयतें सुनाई जातीं तो वे सजदा करते और रोते हुए गिर पड़ते थे।

مَرْصُومًا ۝ وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ ۚ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۚ وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ ذُرِّيَةِ آدَمَ ۚ وَ مِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَةِ إِبْرَاهِيمَ ۚ وَإِسْرَءِيلَ ۚ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا سَبِيلًا ۚ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُ الرَّحْمَنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا ۚ تَخْلُفُ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَصَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَاتِ فَسُوفَ يَلْقَوْنَ غِيًّا ۚ إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ۚ جَنَّاتٌ عَذَبَ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ۚ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا وَلَهُمْ فِيهَا يَزُودُهُمْ فِيهَا بُكْرَةٌ وَعِشْيَا ۚ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَوَّعًا ۚ

59. फिर उनके पश्चात ऐसे बुरे लोग उनके उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंने नमाज़ को गँवाया और मन की इच्छाओं के पीछे पड़े। अतः जल्द ही वे गुमराही (के परिणाम) से दोचार होंगे।

60. किन्तु जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा कर्म करे, तो ऐसे लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे। उनपर कुछ भी जुल्म न होगा।—

61. अदन (रहने) के बाग़ जिनका रहमान ने अपने बन्दों से परोक्ष में होते हुए वादा किया है। निश्चय ही उसके वादे पर उपस्थित होना है।—

62. वहाँ वे 'सलाम' के सिवा कोई व्यर्थ बात नहीं सुनेंगे। उनकी रोज़ी उन्हें वहाँ प्रातः और संध्या समय प्राप्त होती रहेगी।

63. यह है वह जन्नत जिसका वारिस हम अपने बन्दों में से हर उस व्यक्ति को बनाएँगे, जो डर रखनेवाला हो।



64. हम तुम्हारे रब की आज्ञा के बिना नहीं उतरते। जो कुछ हमारे आगे है और जो कुछ हमारे पीछे है और जो कुछ इसके मध्य है सब उसी का है, और तुम्हारा रब भूलनेवाला नहीं है।

65. आकाशों और धरती का रब है और उसका भी जो इन दोनों के मध्य है। अतः तुम उसी की बन्दगी करो और उसकी बन्दगी पर जमे रहो। क्या तुम्हारे ज्ञान में उस जैसा कोई है ?

66. और मनुष्य कहता है : "क्या जब मैं मर गया तो फिर जीवित करके निकाला जाऊँगा ?"

67. क्या मनुष्य याद नहीं करता कि हम उसे इससे पहले पैदा कर चुके हैं, जबकि वह कुछ भी न था ?

68. अतः तुम्हारे रब की कसम ! हम अवश्य उन्हें और शैतानों को भी इकट्ठा करेंगे। फिर हम उन्हें जहन्नम के चतुर्दिक इस दशा में ला उपस्थित करेंगे कि वे घुटनों के बल झुके होंगे।

69. फिर प्रत्येक गिरोह में से हम अवश्य ही उसे छाँटकर अलग करेंगे जो उनमें से रहमान (कृपाशील प्रभु) के मुक्ताबले में सबसे बढ़कर सरकश रहा होगा।

70. फिर हम उन्हें भली-भाँति जानते हैं जो उसमें झोंके जाने के सर्वाधिक योग्य हैं।

71-72. तुममें से प्रत्येक को उसपर पहुँचना ही है। यह एक निश्चय पाई हुई बात है, जिसे पूरा करना तेरे रब के ज़िम्मे है। फिर हम डर रखनेवालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उसमें घुटनों के बल पड़ा छोड़ देंगे।

73. जब उन्हें हमारी खुली हुई आयतें सुनाई जाती हैं तो, जिन लोगों ने कुफ़्र किया, वे ईमान लानेवालों से कहते हैं : "दोनों गिरोहों में स्थान की दृष्टि से कौन

مَرْيَمَ

قَالَ لَهُ

وَمَا كُنَّا نَعْلَمُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا  
خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝ رَبُّ  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ  
لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ۝ وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ  
إِذَا مَاتَ مَا مَوْتَ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ۝ أَوْ لَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ  
أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ۝ فَوَرَبِّكَ  
لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ  
جِثًّا ۝ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى  
الرَّحْمَنِ عِتِيًّا ۝ ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أُولَىٰ بِهَا  
حِسَبًا ۝ فَلَنْ نَنْفَعَكُمْ إِلَّا وَأِردُهُمَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا  
مَّقْضِيًّا ۝ ثُمَّ نُنْجِي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ  
فِيهَا جِثًّا ۝ وَإِذَا نَسَلُ عَلَيْهِمُ ابْنَتَا بَيْتِنَا قَالَ  
الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ

مَرْيَمَ



उत्तम है और कौन मजलिस की दृष्टि से अधिक अच्छा है ?”

74. हालाँकि उनसे पहले हम कितनी ही नसलों को विनष्ट कर चुके हैं जो सामग्री और बाह्य भव्यता में इनसे कहीं अच्छी थीं !

75. कह दो : “जो गुमराही में पड़ा हुआ है उसके प्रति तो यही चाहिए कि रहमान उसकी रस्सी खूब ढीली छोड़ दे, यहाँ तक कि जब ऐसे लोग उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है—चाहे यातना हो या क्रियामत की घड़ी—तो वे उस समय जान लेंगे कि अपने स्थान की दृष्टि से कौन निकृष्ट और जत्थे की दृष्टि से अधिक कमज़ोर है ।”

76. और जिन लोगों ने मार्ग पा लिया है, अल्लाह उनके मार्गदर्शन में अभिवृद्धि प्रदान करता है और शेष रहनेवाली नेकियाँ ही तुम्हारे रब के यहाँ बदले और अंतिम परिणाम की दृष्टि से उत्तम हैं ।

77-78. फिर क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने हमारी आयतों का इनकार किया और कहा : “मुझे तो अवश्य ही धन और संतान मिलने को है ?” क्या उसने परोक्ष को झाँककर देख लिया है, या उसने रहमान से कोई वचन ले रखा है ?

79-80. कदापि नहीं, हम लिखेंगे जो कुछ वह कहता है और उसके लिए हम यातना को दीर्घ करते चले जाएँगे । और जो कुछ वह बताता है उसके वारिस हम होंगे और वह अकेला ही हमारे पास आएगा ।

81-82. और उन्होंने अल्लाह से इतर अपने कुछ पूज्य-प्रभु बना लिए हैं, ताकि वे उनके लिए शक्ति का कारण बनें । कुछ नहीं, ये उनकी बन्दगी का इनकार करेंगे और उनके विरोधी बन जाएँगे ।—

83. क्या तुमने देखा नहीं कि हमने शैतानों को छोड़ रखा है, जो इनकार

मन्ज़र

मन्ज़र

مَقَامًا تَأْخَسِرُ نَدِيًّا ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ  
هُمْ أَحْسَنُ أَكْثَارًا وَرُبِّيًّا ۝ قُلْ مَن كَانَ فِي الضَّلَالَةِ  
فَلْيَحْمَدْ ذُلَّهُ الرَّحْمَنُ مَدَّةً حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ  
إِنَّمَا الْعَذَابُ وَامَّا السَّاعَةُ فَسَيَعْلَمُونَ ۝ مَن هُوَ  
شَرٌّ مَّكَارًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ۝ وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ  
اهْتَدَوْا هُدًى ۝ وَالْبَقِيَّةُ الضَّالِّينَ خَيْرٌ عِندَ  
رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَّرَدًّا ۝ أَكْذَبَتْ آلِ نُوَيْسَ كَقَوْمِ  
يَأْتِيَنَا وَقَالَ لَأَوْثَيْنَ مَا لَا يُؤَلِّدُنَا ۝ أَطْلَمَ الْعَيْبُ  
أَمِ اتَّخَذَ عِندَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۝ كَلَّا سَكَتُبُ مَا  
يَقُولُ وَتَسْأَلُهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدَّةً ۝ وَنَزِيلُهُ مَا  
يَقُولُ وَيَأْتِيَنَا قُرْآنًا ۝ وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً  
لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ۝ كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِوَبَاءِ دَرِينِ  
وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۝ الْفَرَكْرَ أَكْبَارًا ۝ أَرْسَلْنَا

मन्ज़र



करनेवालों पर नियुक्त हैं ?—

84. अतः तुम उनके लिए जल्दी न करो। हम तो बस उनके लिए (उनकी बातें) गिन रहे हैं।

85-86-87. याद करो जिस दिन हम डर रखनेवालों को सम्मानित गिरोह के रूप में रहमान के पास इकट्ठा करेंगे। और अपराधियों को जहन्नम के घाट की ओर प्यासा हाँक ले जाएँगे। उन्हें सिफ़ारिश का अधिकार प्राप्त न होगा। सिवाय उसके, जिसने रहमान के यहाँ से अनुमोदन प्राप्त कर लिया हो।

88. वे कहते हैं : “रहमान ने किसी को अपना बेटा बनाया है।”

89. अत्यन्त भारी बात है, जो तुम घड़ लाए हो !

90-91-92. निकट है कि आकाश इससे फट पड़े और धरती टुकड़े-टुकड़े हो जाए और पहाड़ धमाके के साथ गिर पड़े, इस बात पर कि उन्होंने रहमान के लिए बेटा होने का दावा किया ! जबकि रहमान की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है कि वह किसी को अपना बेटा बनाए।

93. आकाशों और धरती में जो कोई भी है एक बन्दे के रूप में रहमान के पास आनेवाला है।

94. उसने उनका आकलन कर रखा है और उन्हें अच्छी तरह गिन रखा है।

95-96. और उनमें से प्रत्येक क्रियामत के दिन उस अकेले (रहमान) के सामने उपस्थित होगा। निस्संदेह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए शीघ्र ही रहमान उनके लिए प्रेम उत्पन्न कर देगा।

97. अतः हमने इस वाणी को तुम्हारी भाषा में इसी लिए सहज एवं उपयुक्त बनाया है, ताकि तुम इसके द्वारा डर रखनेवालों को शुभ सूचना दो और झगड़ालू लोगों को इसके द्वारा डराओ।

الشَّيْطَانِ عَلَى الْكَافِرِينَ تَوَرَّهُمُ آرَاءَ فَلَا تُجِبَلْ  
عَلَيْهِمْ إِنَّا نَعْدُلُهُمْ عَذَابًا يَوْمَ نَحْشُرُ الشَّقِيقِينَ إِلَى  
الرَّحْمَنِ وَقَدْ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَمِيزِينَ إِلَى جَهَنَّمَ وَنُذَارًا  
لَّا يُمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ  
عَهْدًا وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا لَقَدْ جِئْتُمْ  
شَيْئًا إِذَا تَكَادُ السَّمُوتُ يَنْفَطِرُنَ مِنْهُ وَتَضَعُ  
الْأَرْضُ وَجْهَهَا لِمَا كُذِّبَتْ عَنْهَا وَأَنْ دَعَا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا  
وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا إِنْ كُلُّ مَنْ فِي  
السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتَى الرَّحْمَنِ عَبْدًا لَقَدْ أَخْصَمْنَاهُمْ  
وَعَدْنَاهُمْ عَذَابًا وَكَلَّهْمُ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَرْدًا إِنْ  
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ  
وَدًّا وَإِنَّا لَنَسْنَاهُ بِلسَانِكَ لِنُبَشِّرَ بِهِ الشَّقِيقِينَ وَ  
نُنَذِرُ بِهِ قَوْمًا لَدًّا وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ



98. उनसे पहले कितनी ही नसलों को हम विनष्ट कर चुके हैं। क्या उनमें किसी की आहट तुम पाते हो या उनकी कोई भनक सुनते हो ?

## 20. ता० हा०

(मक्का में उतरी— आयतें 135)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. ता० हा०। हमने तुमपर यह कुरआन इसलिए नहीं उतारा है कि तुम मशक्कत में पड़ जाओ।

3-4. यह तो बस एक अनुस्मृति है, उसके लिए जो डरे, भली-भाँति अवतरित हुआ है उस सत्ता की ओर से, जिसने पैदा किया है धरती और उच्च आकाशों को।

5. वह रहमान, जो राजासन पर विराजमान हुआ।

6. उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है और जो कुछ इन दोनों के मध्य है और जो कुछ आर्द्र मिट्टी के नीचे है।

7. तुम चाहे बात पुकार कर कहो (या चुपके से), वह तो छिपी हुई और अत्यन्त गुप्त बात को भी जानता है।

8. अल्लाह, कि उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। उसके नाम बहुत ही अच्छे हैं।

9-10. क्या तुम्हें मूसा की भी खबर पहुँची ? जबकि उसने एक आग देखी तो उसने अपने घरवालों से कहा : "ठहरो ! मैंने एक आग देखी है। शायद कि तुम्हारे लिए उसमें से कोई अंगारा ले आऊँ या उस आग पर मैं मार्ग का पता पा लूँ।"

11. फिर जब वह वहाँ पहुँचा तो पुकारा गया : "ऐ मूसा !

12. मैं ही तेरा रब हूँ। अपने जूते उतार दे। तू पवित्र घाटी 'तुवा' में है।

13. मैंने तुझे चुन लिया है। अतः सुन, जो कुछ प्रकाशना की जाती है।

هَلْ نَحْشُ وَنُحْمُ مِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۖ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

طه ۖ مَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْفَى ۖ إِلَّا تَذَكُّرًا ۖ

لِمَنْ يَخْشَى ۖ تَنْزِيلًا مِمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمُوتِ

الْعُلَى ۖ الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ۖ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ

وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَى ۖ وَإِنْ

تَجَهَّرْ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۖ اللَّهُ لَا إِلَهَ

إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ۖ وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۖ

إِذْ رَأَى نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا ۖ

لَعَلَّ إِنِّي اتَّيْتُكُمْ مِنْهَا يَقْبَسَ ۖ أَوْ أَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۖ

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَمْوَسَى ۖ إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ

نَعْلَيْكَ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۖ وَأَنَا اخْتَرْتُكَ



14. निस्संदेह मैं ही अल्लाह हूँ । मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं । अतः तू मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर ।

15. निश्चय ही वह (क्रियामत की) घड़ी आनेवाली है— शीघ्र ही उसे लाऊँगा, उसे छिपाए रखता हूँ— ताकि प्रत्येक व्यक्ति जो प्रयास वह करता है, उसका बदला पाए ।

16. अतः जो कोई उसपर ईमान नहीं लाता और अपनी वासना के पीछे पड़ा है, वह तुझे उससे रोक न दे, अन्यथा तू विनष्ट हो जाएगा ।

17-18. और ऐ मूसा ! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है ?" उसने

कहा : "यह मेरी लाठी है । मैं इसपर टेक लगाता हूँ और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ और इससे मेरी दूसरी ज़रूरतें भी पूरी होती हैं ।"

19-20. कहा : "डाल दे उसे, ऐ मूसा !" अतः उसने उसे डाल दिया । सहसा क्या देखते हैं कि वह एक साँप है, जो दौड़ रहा है ।

21. कहा : "इसे पकड़ ले और डर मत । हम इसे इसकी पहली हालत पर लौटा देंगे ।

22. और अपने हाथ अपने बाजू की ओर समेट ले । वह बिना किसी ऐब के रौशन दूसरी निशानी के रूप में निकलेगा ।

23. इसलिए कि हम तुझे अपनी बड़ी निशानियाँ दिखाएँ ।

24. तू फिरऔन के पास जा । वह बहुत सरकश हो गया है ।"

25. उसने निवेदन किया : "मेरे रब ! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे ।

26. और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर दे ।

27-28. और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे । कि वे मेरी बात समझ सकें ।

29. और मेरे लिए अपने घरवालों में से एक सहायक नियुक्त कर दे,

فَاسْمِعْ لِمَا يُؤْتِي ۝ إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا  
فَاعْبُدْنِي ۝ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ۝ إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ  
أَكَادُ أَخْفِيهَا لِتَجْزِيَهُ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۝ فَلَا  
يُضِدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ ۝ فَتَرْدَى ۝  
وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يُمُوسَى ۝ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۝ أَتَوَكَّؤُا  
عَلَيْهَا وَاهْتَسِبُ بِهَا عَلَىٰ غَيْبِي ۝ وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ  
أُخْرَىٰ ۝ قَالَ أَلْقِهَا يُمُوسَى ۝ فَالْقَهَا ۝ فَإِذَا هِيَ حَبِيبَةٌ  
تَلْفُفٌ ۝ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَحْزَنْ ۝ سَنُعِيدُهَا سِيَارتَهَا  
الْأُولَىٰ ۝ وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ وَخُذْ بِبِضْءٍ مِّنْ  
غَيْرِ مَنَاسِكٍ ۝ أُخْرَىٰ ۝ لِنُرِيكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَىٰ ۝  
إِذْ هَبْنَا فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي  
صَدْرِي ۝ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۝ فَأَخْلَلْنَا عَصِيَّةً مِّنْ لِّسَانِي ۝  
يَفْقَهُوا قَوْلِي ۝ وَاجْعَلْ لِّي وَزِيرًا مِّنْ أَهْلِي ۝

مَرْثَىٰ



30. हारून को, जो मेरा भाई है।

31. उसके द्वारा मेरी कमर मज़बूत कर।

32. और उसे मेरे काम में शरीक कर दे,

33. कि हम अधिक से अधिक तेरी तसबीह करें।

34. और तुझे ख़ूब याद करें।

35. निश्चय ही तू हमें ख़ून देख रहा है।”

36. कहा : “दिया गया तुझे जो तूने माँगा, ऐ मूसा !

37. हम तो तुझपर एक बार और भी उपकार कर चुके हैं।

38. जब हमने तेरी माँ के दिल में यह बात डाली थी, जो अब प्रकाशना की जा रही है,

39. कि ‘उसको संदूक में रख दे; फिर उसे दरिया में डाल दे; फिर दरिया उसे तट पर डाल दे. कि उसे मेरा शत्रु और उसका शत्रु उठा ले।’ मैंने अपनी ओर से तुझपर अपना प्रेम डाला। (ताकि तू सुरक्षित रहे) और ताकि मेरी आँख के सामने तेरा पालन-पोषण हो।

40. याद कर जबकि तेरी बहन जाती और कहती थी : ‘क्या मैं तुम्हें उसका पता बता दूँ जो इसका पालन-पोषण अपने ज़िम्मे ले ले?’ इस प्रकार हमने फिर तुझे तेरी माँ के पास पहुँचा दिया, ताकि उसकी आँख ठंडी हो और वह शोकाकुल न हो। और याद कर, तूने एक व्यक्ति की हत्या कर दी थी। फिर हमने तुझे उस ग़म से छुटकारा दिया। और हमने तुझे भली-भाँति परखा। फिर तू कई वर्ष मदयन के लोगों में ठहरा रहा। फिर ऐ मूसा ! तू खास समय पर आ गया है।

41. हमने तुझे अपने लिए तैयार किया है।

42. जा, तू और तेरा भाई मेरी निशानियों के साथ; और मेरी याद में ढीले मत पड़ना।

قُلْ

قَالَ لَهُ

هَرُونَ أَخِي ۖ اشْدُدْ يَدَیْكَ اَنْصُرْنِیْ ۖ وَ اَشْرِكْهُ فِیْ  
اَمْرِیْ ۚ کُنْتَ بِمَا بَصِیْرًا ۚ وَ نَذَرْتُكَ کَثِیْرًا ۚ اِنَّکَ  
کُنْتَ بِمَا بَصِیْرًا ۚ قَالَ قَدْ اُوْتِیْتَ سُوْلُکَ یَمُوْسَ ۚ  
وَلَقَدْ مَنَّا عَلَیْکَ مَرَّةً اُخْرٰی ۚ اِذَا زَحٰینًا اِلٰی اُوتِکَ  
مَا یُوْحٰی ۚ اِنْ اَقْبَلْ فِیْهِ فِی الْاَبَابِ فَقَدْ فِیْهِ فِی  
الْیَمِّ فَلِیَلْقِیْهِ الْیَمُّ یَا تَسَاحِلُ یَا خُذْهُ عَدُوْلٰی وَ  
عَدُوْلَهُ ۚ وَ اَلْقِیْتُ عَلَیْکَ مَحَبَّةً مِّنِّیْ ۚ وَ لَوَصَّصَ عَلٰی  
عَیْنِیْ ۚ اِذَا تَشِیْ اُخْتُکَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدْرٰکُمْ عَلٰی مَنْ  
یَّکْفُلُهُ ۚ فَرَجَعْنَاکَ اِلٰی اُوتِکَ ۚ تَقْرَءُ عَلَیْهَا وَ لَا  
تَحْزَنُ ۚ وَ قَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّیْنَاکَ مِنَ الْغَمِّ وَ قَتَلْتَکَ  
ثَمُوْدًا ۚ فَلِیثَّتْ بَنِیْنِ فِیْ اَهْلِ مَدِیْنٍ ۚ ثُمَّ جِئْتُ  
عَلٰی قَدْرِ یَمُوْسَ ۚ وَ اَصْطَفَعْتُکَ لِیَنْفِیْسِیْ ۚ اِذْ هَبْ  
اَنْتَ وَ اَخُوکَ یَا بَنِیْ وَ لَا تَزِنَا فِیْ ذٰکِرِیْ ۚ اِذَا هَبْنَا

مَنْزِلَہ



43. जाओ दोनों, फिरऔन के पास, वह सरकश हो गया है।

44. उससे नर्म बात करना, कदाचित्त वह ध्यान दे या डरे।”

45. दोनों ने कहा : “ऐ हमारे रब ! हमें इसका भय है कि वह हमपर ज्यादाती करे या सरकशी करने लग जाए।”

46. कहा : “डरो नहीं, मैं तुम्हारे साथ हूँ। सुनता और देखता हूँ।

47. अतः जाओ उसके पास और कहो : ‘हम तेरे रब के रसूल हैं। इसराईल की संतान को हमारे साथ भेज दे। और उन्हें यातना न दे। हम तेरे पास तेरे रब की निशानी लेकर आए हैं। और सलामती है उसके लिए जो सन्मार्ग का अनुसरण करे !

48. निस्संदेह हमारी ओर प्रकाशना हुई है कि यातना उसके लिए है, जो झुठलाए और मुँह फेरे’।”

49. उसने कहा : “अच्छा, तुम दोनों का रब कौन है, ऐ मूसा ?”

50. कहा : “हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसकी आकृति दी, फिर तदनुकूल निर्देशन किया।”

51. उसने कहा : “अच्छा तो उन नस्तों का क्या हाल है, जो पहले थीं ?”

52. कहा : “उसका ज्ञान मेरे रब के पास एक किताब में सुरक्षित है। मेरा रब न चूकता है और न भूलता है।”——

53. “वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को पालना (बिछौना) बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते निकाले और आकाश से पानी उतारा। फिर हमने उसके द्वारा विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे निकाले।

54. खाओ और अपने चौपायों को भी चराओ ! निस्संदेह इसमें बुद्धिमानों

قُلُوبُهُمْ

فَالْأَنفُسُ

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۖ فَتَوَلَّاهُ قَوْلًا لَّيْسَ لَكَ  
يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ۚ قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَمُنَادُكَ أَنْ تَنْزِلَ  
عَلَيْنَا أَوْ أَنْ يُطْفِئَ ۖ قَالَ لَا تُخَفَاكَ رَبِّي مَعَكُمْ  
أَنْتُمْ وَآرِي ۖ فَنَاتِيَهُ قَوْلًا إِنَّكَ رَسُولُكَ فَارْسُلْ  
مَعَنَا بَيْنَ أَسْرَةٍ نِيلَ ۖ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۚ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ  
مِّنْ رَبِّكَ ۚ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ۚ إِنَّكَ قَدْ  
أَنْصَرْتَ الْيَتَامَىٰ أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۖ قَالِ  
فَمَنْ رَبُّكُمَا يُؤْتِيهِ ۖ قَالِ رَبَّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ  
حَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ۖ قَالِ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ۖ  
قَالِ عَلِمْتُهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَا يَعْزِلُ رَبِّي وَلَا يُنْسِي  
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَوَسَّلَكَ لَكُمْ فِيهَا  
سُبُلًا وَانْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَخَرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا  
مِّنْ ثَبَاتٍ شَجَرَةٍ ۖ كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۚ إِنَّ فِي

سُورَةٍ







64. अतः तुम सब मिलकर अपना उपाय जुटा लो, फिर पंक्तिबद्ध होकर आओ। आज जो प्रभावी रहा, वही सफल है।”

65. वे बोले : “ऐ मूसा ! या तो तुम फेंको या फिर हम पहले फेंकते हैं।”

66. कहा : “नहीं, बल्कि तुम्हीं फेंको।” फिर अचानक क्या देखते हैं कि उनकी रस्सियाँ और उनकी लाठियाँ उनके जादू से उसके खयाल में दौड़ती हुई प्रतीत हुई।

67. और मूसा अपने जी में डरा।

68. हमने कहा : “मत डर ! निस्संदेह तू ही प्रभावी रहेगा।

69. और डाल दे जो तेरे दाहिने हाथ में है। जो कुछ उन्होंने रचा है, वह उसे निगल जाएगा। जो कुछ उन्होंने रचा है, वह तो बस जादूगर का स्वांग है और जादूगर सफल नहीं होता, चाहे वह जैसे भी आए।”

70. अन्ततः जादूगर सजदे में गिर पड़े, बोले : “हम हारून और मूसा के रब पर ईमान ले आए।”

71. उसने कहा : “तुमने मान लिया उसको, इससे पहले कि मैं तुम्हें इसकी अनुज्ञा देता ? निश्चय ही यह तुम सबका प्रमुख है, जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। अच्छा, अब मैं तुम्हारा हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से कटवा दूँगा और खजूर के तनों पर तुम्हें सूली दे दूँगा। तब तुम्हें अवश्य ही मालूम हो जाएगा कि हममें से किसकी यातना अधिक कठोर और स्थायी है !”

قَالَ لَهُ

قَالَ لَهُ

الْمَثَلُ ۖ فَاجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ارْتَأَوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ  
 أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَى ۚ قَالُوا يُمُونُ لَمَّا أَنْ  
 سُلِقَ ۚ وَإِنَّمَا أَنْ تَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَى ۚ قَالَ  
 بَلْ أَلْقُوا ۚ فَإِذَا حِبالُهُمْ وَعَصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ  
 مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْفَى ۚ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ  
 خِيفَةً مُوسَى ۚ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ  
 الْأَعْلَى ۚ وَأَلْقَى مَا فِي يَمِينِكَ تَلَقَّتْ مَا صَنَعُوا  
 إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سِحْرٍ وَلَا يُفْلِحُ السَّاجِرُ حَيْثُ أَتَى ۚ  
 قَالَتِ السَّحَرَةُ مُبْتَدًا قَالُوا أَمَّا بِرَبِّ هَارُونَ  
 وَمُوسَى ۚ قَالَ أَمْنُكُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنَى لَكُمْ دِرَاسَةً  
 لَكَيْزِكُمُ الَّذِي عَلَيْكُمْ السَّحَرَةُ ۚ فَلَا قَطْعَ أَيْدِيكُمْ  
 وَأَنْهَكُمْ مَنْ خِلَافٍ وَلَا وَصْلَ بَيْنَكُمْ فِي جُدُوعِ  
 النَّخْلِ ۚ وَتَعْلَمُونَ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَى ۚ قَالُوا

مَرْثَى



72. उन्होंने कहा : "जो स्पष्ट निशानियाँ हमारे सामने आ चुकी हैं उनके मुकाबले में सौगंध है उस सत्ता की, जिसने हमें पैदा किया है, हम कदापि तुझे प्राथमिकता नहीं दे सकते। तो जो कुछ तू फ़ैसला करनेवाला है, कर ले। तू बस इसी सांसारिक जीवन का फ़ैसला कर सकता है।

73. हम तो अपने रब पर ईमान ले आए, ताकि वह हमारी ख़ताओं को माफ़ कर दे और इस जादू को भी जिसपर तूने हमें बाध्य किया। अल्लाह ही उत्तम और शेष रहनेवाला है।"—

لَنْ تُؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي  
فُطِرْنَا فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضٍ ۚ إِنَّمَا تَقْضِي هَذِهِ  
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۚ إِنَّمَا أَمْثَلُ رَبِّنَا لِلْغَافِرِينَ مَا كُنَّا  
وَمَا أَكْرَهْتُنَا عَلَيْهِ مِنَ التَّحَرُّهِ ۚ وَاللَّهُ خَيْرٌ  
وَأَبْقَىٰ ۚ إِنَّهُ مُنِ يَأْتِ رَبَّهُ مُجِيبًا ۚ فَإِنَّ لَهُ  
جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۚ وَمَنْ يَأْتِهِ  
مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ  
الْعُلَىٰ ۚ جَنَّاتٌ عِدْنُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ  
ۚ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ مَنْ عَزَاكَ ۚ  
وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ ۚ أَنْ أَسْرِ بِعِمَّا دِي  
فَاصْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۚ لَا تَخَفْ  
دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ ۚ فَاتَّبَعَهُمْ فَرَعُونُ ۚ يَعْجُونَ  
فَعَشِيَهُمْ مِنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۚ وَأَصْلُ فَرَعُونَ

مَزْلَم

74. सत्य यह है कि जो कोई अपने रब के पास अपराधी बनकर आया उसके लिए जहन्नम है, जिसमें न वह मरेगा और न जिएगा।

75. और जो कोई उसके पास मोमिन होकर आया, जिसने अच्छे कर्म किए होंगे, तो ऐसे लोगों के लिए तो ऊँचे दर्जे हैं।

76. अदन के बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। यह बदला है उसका जिसने स्वयं को विकसित किया।—

77. और हमने मूसा की ओर प्रकाशना की : "रातों रात मेरे बन्दों को लेकर निकल पड़, और उनके लिए दरिया में सूखा मार्ग निकाल ले। न तो तुझे पीछा किए जाने और पकड़े जाने का भय हो और न किसी अन्य चीज़ से तुझे डर लगे।"

78. फ़िरऔन ने अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया। अन्ततः पानी उनपर छा गया, जैसाकि उसे उनपर छा जाना था।



79. फिरऔन ने अपनी क़ौम को पथभ्रष्ट किया और मार्ग न दिखाया।

80. ऐ इसराईल की सन्तान ! हमने तुम्हें तुम्हारे शत्रु से छुटकारा दिया और तुमसे तूर के दाहिने छोर का वादा किया और तुमपर मन्न और सलवा उतारा :

81. "खाओ, जो कुछ पाक अच्छी चीज़ें हमने तुम्हें प्रदान की हैं, किन्तु इसमें हद से आगे न बढ़ो कि तुमपर मेरा प्रकोप टूट पड़े और जिस किसी पर मेरा प्रकोप टूटा, वह तो गिरकर ही रहा।

82. और जो तौबा कर ले और ईमान लाए और अच्छा कर्म करे, फिर सीधे मार्ग पर चलता रहे, उसके लिए निश्चय ही मैं अत्यन्त क्षमाशील हूँ।"—

83. "और अपनी क़ौम को छोड़कर तुझे शीघ्र आने पर किस चीज़ ने उभारा, ऐ मूसा ?"

84. उसने कहा : "वे मेरे पीछे ही हैं और मैं जल्दी बढ़कर आया तेरी ओर, ऐ रब ! ताकि तू राज़ी हो जाए।"

85. कहा : "अच्छा, तो हमने तेरे पीछे तेरी क़ौम के लोगों को आज़माइश में डाल दिया है। और सामरी ने उन्हें पथभ्रष्ट कर डाला।"

86. तब मूसा अत्यन्त क्रोध और खेद में डूबा हुआ अपनी क़ौम के लोगों की ओर पलटा। कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! क्या तुमसे तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था ? क्या तुमपर लम्बी मुदत गुज़र गई या तुमने यही चाहा कि

قُلُوبُهُ

قُلُوبُهُ

قَوْمَهُ وَمَاهِدْ ۖ يَبَيِّنُ اِسْرَآءِئِلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ  
مِنْ عَذُوْبِكُمْ وَاَعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْاَيْمَنِ  
وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّٰ وَالسَّلْوٰ ۖ كُلُوْا مِنْ  
كُلِّبَسْتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ  
عَلَيْكُمْ عَذَابِيْ ۚ وَمَنْ يَحِلَّ عَلَيْهِ عَذَابِيْ فَقَدْ  
هُوَ ۖ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاَمِنَ وَعَمِلَ  
صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰ ۚ وَمَا اَعْجَلَكُمْ عَنْ قَوْمِكِ  
يَوْمَئِذٍ ۚ قَالَ هُمْ اَوْلَآءُ عَلٰى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ  
اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰ ۚ قَالَ فَاَنَّا قَدْ نُنَّا قَوْمَكَ  
مِنْ بَعْدِكَ وَاَضَلَّاهُمُ السَّامِرِيُّ ۚ فَرْجَهُ  
مُوْتًا اِلٰى قَوْمِهِ عَضْبَانَ اَسْفَا ۚ قَالَ يَغْوُوْا  
اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعَدًّا حَسَنًا ۚ اَفَطَاٰ  
عَلَيْكُمْ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ

مَزَلِ



तुमपर तुम्हारे रब का प्रकोप ही टूटे कि तुमने मेरे वादे के विरुद्ध आचरण किया ?”

87. उन्होंने कहा : “हमने आपसे किए हुए वादे के विरुद्ध अपने अधिकार से कुछ नहीं किया, बल्कि लोगों के ज़ेवरों के बोझ हम उठाए हुए थे, फिर हमने उनको (आग में) फेंक दिया, सामरी ने इसी तरह प्रेरित किया था।” —

88. और उसने उनके लिए एक बछड़ा ढालकर निकाला, एक धड़ जिसकी आवाज़ बैल की थी। फिर उन्होंने कहा : “यही तुम्हारा इष्ट-पूज्य है और मूसा का भी इष्ट-पूज्य, किन्तु वह भूल गया है।”

89. क्या वे देखते न थे कि न वह किसी बात का उन्हें उत्तर देता है और न उसे उनकी हानि का कुछ अधिकार प्राप्त है और न लाभ का ?

90. और हारून इससे पहले उनसे कह भी चुका था कि “मेरी क़ौम के लोगो ! तुम इसके कारण बस फ़ितने में पड़ गए हो। तुम्हारा रब तो रहमान है। अतः तुम मेरा अनुसरण करो और मेरी बात मानो।”

91. उन्होंने कहा : “जब तक मूसा लौटकर हमारे पास न आ जाए, हम तो इससे ही लगे बैठे रहेंगे।”

92-93. उसने कहा : “ऐ हारून ! जब तुमने देखा कि ये पथभ्रष्ट हो गए हैं, तो किस चीज़ ने तुम्हें रोका कि तुमने मेरा अनुसरण न किया ? क्या तुमने मेरे आदेश की अवहेलना की ?”

94. उसने कहा : “ऐ मेरी माँ के बेटे ! मेरी दाढ़ी न पकड़ और न मेरा सिर ! मैं डरा कि तू कहेगा कि ‘तूने इसराईल की संतान में फूट डाल दी और

قَالَ الرَّبُّ  
غَضَبْتُ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمْ مَوْعِدِي ۖ قَالُوا مَا  
أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلِكِنَا وَلَكِنَّا حَبَلْنَا أَوْسَارًا  
مِنْ زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَدْ فَتَنَّاكَ فَكُذِّبَكَ الْفَى  
السَّامِرِيُّ ۖ فَأَخْرَجَهُمْ عَجَلًا جَسَدًا لَهُ خُورٌ  
فَقَالُوا هَذَا إِلَهُكُمْ وَإِلَهُ مُوسَى ۖ فَتَنِي ۖ  
أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا ۖ وَلَا يَمْلِكُ  
لَهُمْ صَدْرًا وَلَا نَفْعًا ۖ وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِنْ  
قَبْلُ يَقَوْمِ إِنَّكُمْ تَقْتُلُونَ بَنِي ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ  
فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي ۖ قَالُوا لَنْ نَتَّبِعَكَ عَلَيْهِ  
غَكْفَيْنَ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَى ۖ قَالَ يُفْتَرُونَ مَا  
مَنْعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ صَلُّوا ۖ أَلَا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ  
أَمْرِي ۖ قَالَ يَبْنَؤُمْرًا تَأْخُذُ بِلُحِيَّتِي وَلَا يَرَأِيَنِي  
إِلَّاهِي خَشِيتُ أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَءِيلَ

مَزَلِمٍ



मेरी बात पर ध्यान न दिया' ।”

95. (मूसा ने) कहा : “ऐ सामरी ! तेरा क्या मामला है ?”

96. उसने कहा : “मुझे उसकी सूझ प्राप्त हुई, जिसकी सूझ उन्हें प्राप्त न हुई। फिर मैंने रसूल के पद-चिह्न से एक मुट्ठी उठा ली। फिर उसे डाल दिया और मेरे जी ने मुझे कुछ ऐसा ही सुझाया।”

97. कहा : “अच्छा, तू जा ! अब इस जीवन में तेरे लिए यही है कि कहता रहे : ‘कोई छुए नहीं !’ और निश्चय ही तेरे लिए एक निश्चित वादा है, जो तुझपर से कदापि न टलेगा। और देख अपने इष्ट-पूज्य को जिसपर तू रीझा-जमा बैठा था ! हम उसे जला डालेंगे, फिर उसे चूर्ण-विचूर्ण करके दरिया में बिखेर देंगे।”

98. “तुम्हारा पूज्य-प्रभु तो बस वही अल्लाह है, जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। वह अपने ज्ञान से हर चीज़ पर हावी है।”

99. इस प्रकार विगत वृत्तांत हम तुम्हें सुनाते हैं और हमने तुम्हें अपने पास से एक अनुस्मृति प्रदान की है।

100. जिस किसी ने उससे मुँह मोड़ा, वह निश्चय ही क्रियामत के दिन एक बोझ उठाएगा।

101. ऐसे लोग सदैव इसी वबाल में पड़े रहेंगे और क्रियामत के दिन उनके हक़ में यह बहुत ही बुरा बोझ सिद्ध होगा।

102. जिस दिन सूर फूँका जाएगा और हम अपराधियों को उस दिन इस दशा में इकट्ठा करेंगे कि उनकी आँखें नीली पड़ गई होंगी।

103. वे आपस में चुपके-चुपके कहेंगे कि “तुम बस दस ही दिन ठहरे हो।”

قَالَ

قَالَ

وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ۚ قَالَ مَا خَطْبُكَ يَا مَرْيَمُ ۚ  
قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً  
مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّكْتُ لِي  
نَفْسِي ۚ قَالَ قَدْ ذَهَبَ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَوةِ أَن  
تَقُولِ لَا مِسَاسَ ۚ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تَحْلُقَهُ  
وَأَنْظُرِي إِلَى إِلَهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا  
لَنْ نَنْسِفَهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۚ إِنَّنَا إِلَهُكُمُ  
اللَّهُ الَّذِي لَدَالِهِ إِلَّا هُوَ وَيَسْمُ كُلُّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ  
كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ  
أَتَيْنَكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ۚ مَنِ اعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ  
يَجْعَلْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَزْرًا ۚ خَلِدِينَ فِيهِ وَسَاءَ لَهُمْ  
يَوْمَ الْقِيَمَةِ حِمْلًا ۚ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ  
الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۚ يَخْتَصِمُونَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ

مَرْيَمَ



104. हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ वे कहेंगे, जबकि उनका सबसे अच्छी सम्मतिवाला कहेगा : “तुम तो बस एक ही दिन ठहरे हो।”

105. वे तुमसे पर्वतों के विषय में पूछते हैं। कह दो : “मेरा रब उन्हें धूल की तरह उड़ा देगा,

106. और धरती को एक समतल चटियल मैदान बनाकर छोड़ेगा।

107. तुम उसमें न कोई सिलवट देखोगे और न ऊँच-नीच।”

108. उस दिन वे पुकारनेवाले के पीछे चल पड़ेंगे और उसके

सामने कोई अकड़ न दिखाई जा सकेगी। आवाज़ें रहमान के सामने दब जाएँगी। एक हल्की मन्द आवाज़ के अतिरिक्त तुम कुछ न सुनेगे।

109. उस दिन सिफ़ारिश काम न आएगी। यह और बात है कि किसी के लिए रहमान अनुज्ञा दे और उसके लिए बात करने को पसन्द करे।

110. वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, किन्तु वे अपने ज्ञान से उसपर हावी नहीं हो सकते।

111. चेहरे उस जीवन्त, शाश्वत सत्ता के आगे झुके होंगे। असफल हुआ वह जिसने ज़ुल्म का बोझ उठाया।

112. किन्तु जो कोई अच्छे कर्म करे और हो वह मोमिन, तो उसे न तो किसी ज़ुल्म का भय होगा और न हक़ मारे जाने का।

113. और इस प्रकार हमने इसे अरबी कुरआन के रूप में अवतरित किया है और हमने इसमें तरह-तरह से चेतावनियाँ दी हैं, ताकि वे डर रखें या यह

قَالَ الْغَفِيرُ  
لَيْشْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ۖ نَعْنُ أَكْمَرًا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ  
أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ لَيْشْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ۖ وَيَسْأَلُونَكَ  
عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۖ فَيَذَرُهَا  
قَاعًا صَفْصَفًا ۖ لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۖ  
يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ ۖ وَخَشَعَتِ  
الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ۖ  
يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ  
وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ۖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا  
خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ۖ وَعَدَّتِ الْوُجُوهُ  
لِلنَّحْيِ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَسَلَ ظُلْمًا ۖ وَمَنْ  
يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَفُ  
ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ۖ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا  
وَوَضَرْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ

مَزِيدٌ



उन्हें होश दिलाए।

114. अतः सर्वोच्च है अल्लाह, सच्चा सम्राट ! कुरआन के (फ़ैसले के) सिलसिले में जल्दी न करो, जब तक कि वह पूरा न हो जाए। तेरी ओर उसकी प्रकाशना हो रही है। और कहो : “मेरे रब, मुझे ज्ञान में अभिवृद्धि प्रदान कर।”

115. और हमने इससे पहले आदम से एक वचन लिया था, किन्तु वह भूल गया और हमने उसमें इरादे की मज़बूती न पाई।

116. और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि “आदम को सजदा करो।” तो उन्होंने सजदा किया सिवाय इबलीस के, वह इनकार कर बैठा।

117. इसपर हमने कहा : “ऐ आदम ! निश्चय ही यह तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का शत्रु है। ऐसा न हो कि यह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा दे और तुम तकलीफ़ में पड़ जाओ।

118. तुम्हारे लिए तो ऐसा है कि न तुम यहाँ भूखे रहोगे और न नंगे।

119. और यह कि न यहाँ प्यासे रहोगे और न धूप की तकलीफ़ उठाओगे।”

120. फिर शैतान ने उसे उकसाया। कहने लगा : “ऐ आदम ! क्या मैं तुझे शाश्वत जीवन के वृक्ष का पता दूँ और ऐसे राज्य का जो कभी जीर्ण न हो ?”

121. अन्ततः उन दोनों ने उसमें से खा लिया, जिसके परिणामस्वरूप उनकी छिपाने की चीज़ें उनके आगे खुल गईं और वे दोनों अपने ऊपर जन्नत के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे। और आदम ने अपने रब की अवज्ञा की, तो वह मार्ग से भटक गया।

122. इसके पश्चात उसके रब ने उसे चुन लिया और दोबारा उसकी ओर

عَلَّمَ

عَلَّمَ

أَوْ يُحَدِّثُ لَهُمْ وَكُرًّا ۖ فَخَرَّ عَلَىٰ اللَّهِ السَّجْدَ الْحَقُّ ۖ  
وَلَا تُعْجِلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَىٰ إِلَيْكَ  
وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۖ وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ  
آدَمَ مِنْ قَبْلِ نَسِيِّ وَلَمْ نَجِدْ لَهُ عَزْمًا ۖ وَ  
إِذْ قُلْنَا لِلْمَلَكِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا  
إِبْلِيسَ ۖ أَنَّىٰ ۖ قُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَذَا عَدُوٌّ لَكَ  
فَلْزُوجِكَ فَلَا يُخْرِجُكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰ ۖ  
إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ۖ وَأَنَّكَ  
لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ۖ قَوْسَوَسَ إِلَيْهِ  
الشَّيْطَانُ قَالَ يَا آدَمُ هَلْ أَذُكَ عَلَىٰ شَجَرَةٍ  
الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلَىٰ ۖ فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ  
لَهُمَا سَوَاتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِنْ  
وَرَقِ الْجَنَّةِ ۖ وَعَصَىٰ آدَمُ رَبَّهُ فَغَوَىٰ ۖ ثُمَّ

مَنْ



ध्यान दिया और उसका मार्गदर्शन किया ।

123. कहा : “तुम दोनों के दोनों यहाँ से उतरो ! तुम्हारे कुछ लोग कुछ के शत्रु होंगे । फिर यदि मेरी ओर से तुम्हें मार्गदर्शन पहुँचे, तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुपालन किया, वह न तो पथभ्रष्ट होगा और न तकलीफ़ में पड़ेगा ।

124. और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुँह मोड़ा तो उसका जीवन संकीर्ण होगा और क्रियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएँगे ।”

125. वह कहेगा : “ऐ मेरे रब ! तूने मुझे अंधा क्यों उठाया, जबकि मैं आँखोंवाला था ?”

126. वह कहेगा : “इसी प्रकार (तू संसार में अंधा रहा था) । तेरे पास मेरी आयतें आई थीं, तो तूने उन्हें भुला दिया था । उसी प्रकार आज तुझे भुलाया जा रहा है ।”

127. इसी प्रकार हम उसे बदला देते हैं जो मर्यादा का उल्लंघन करे और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए । और आखिरत की यातना तो अत्यन्त कठोर और अधिक स्थायी है ।

128. फिर क्या उनको इससे भी मार्ग न मिला कि हम उनसे पहले कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर चुके हैं, जिनकी बस्तियों में वे चलते-फिरते हैं ? निस्संदेह बुद्धिमानों के लिए इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं ।

129. यदि तेरे रब की ओर से पहले ही एक बात निश्चित न हो गई होती और एक अवधि नियत न की जा चुकी होती, तो अवश्य ही उन्हें यातना आ पकड़ती ।

130. अतः जो कुछ वे कहते हैं उसपर धैर्य से काम लो और अपने रब का

قَالَ الْكَافِرُ  
اجْتَبَيْتُهُ رَبَّهُ فَمَتَّابٌ عَلَيْهِ وَهَذَا ۝ قَالَ الْهَاطِلُ  
مِنْهَا بِحَرِيصًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۝ يَا بَنِي آدَمَ  
خُذُوا زِينَتَكُمْ مِمَّا فِي بَيْوتِكُمْ وَلَا يَخُفْ ۝  
وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً  
ضَنْكًا وَذَرْئَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝ أَعْمَى ۝ قَالَ رَبِّ لِمَ  
حَشَرْتَنِي أَعْمَى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ۝ قَالَ كَذَلِكَ  
أَتَّكَ أَيْنَمَا فَنَسِيْتَهَا ۝ وَكَذَلِكَ الْيَوْمَ تُنْفَخُ  
وَكَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِآيَاتِ رَبِّهِ ۝  
وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقَى ۝ أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ  
كَمَرًا هَدَيْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ يَنْتَوُونَ فِي  
مَسْكِنِهِمْ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَى ۝  
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَ  
أَجَلٌ مُّسَمًّى ۝ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ



गुणगान करो, सूर्योदय से पहले और उसके डूबने से पहले, और रात की घड़ियों में भी तसबीह करो और दिन के किनारों पर भी, ताकि तुम राज़ी हो जाओ।

131. और उसकी ओर आँख उठाकर न देखो, जो कुछ हमने उनमें से विभिन्न लोगों को उपभोग के लिए दे रखा है, ताकि हम उसके द्वारा उन्हें आज्ञामाएँ। वह तो बस सांसारिक जीवन की शोभा है। तुम्हारे रब की रोज़ी उत्तम भी है और स्थायी भी।

132. और अपने लोगों को नमाज़ का आदेश करो और स्वयं भी उसपर जमे रहो। हम तुमसे कोई रोज़ी नहीं माँगते। रोज़ी हम ही तुम्हें देते हैं, और अच्छा परिणाम तो धर्मपरायणता ही के लिए निश्चित है।

133. और वे कहते हैं कि “यह अपने रब की ओर से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाता?” क्या उनके पास उसका स्पष्ट प्रमाण नहीं आ गया, जो कुछ कि पहले की पुस्तकों में उल्लिखित है?

134. यदि हम उसके पहले इन्हें किसी यातना से विनष्ट कर देते तो ये कहते कि “ऐ हमारे रब, तूने हमारे पास कोई रसूल क्यों न भेजा कि इससे पहले कि हम अपमानित और रुसवा होते, तेरी आयतों का अनुपालन करने लगते?”

135. कह दो : “हर एक प्रतीक्षा में है। अतः अब तुम भी प्रतीक्षा करो। शीघ्र ही तुम जान लोगे कि कौन सीधे मार्गवाले हैं और किनको मार्गदर्शन प्राप्त है।”

قَالَ الْغَرَمُ  
يَحْمَدُونَكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا  
وَمِنْ أَنَاثَى الْيَلِ قَسِيمٍ وَأَطْرَافِ النَّهَارِ لَعَلَّكَ  
تَرْضَاهُ ۝ وَلَا تُكَدِّنْ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ  
الْأَوَّابَ مِنْهُمْ رَهْرَهً الْحَيَاقَةُ الدُّنْيَا ۚ لِنَقْتَتِلَهُمْ  
فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۚ وَأَمُرَ أَهْلَكَ  
بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۚ لَا تَسْأَلُكَ رِزْقًا نَّحْنُ  
نَرْزُقُكَ ۚ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ۝ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا  
يَأْتِينَنَا بِآيَةٍ مِنْ رَبِّهِ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِمْ بَيِّنَةٌ مَا فِي  
الْصُّفْرِ الْأَوَّلِ ۚ وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ مِنْ  
قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْ كُنَّا نَرَىٰ إِلَيْنَا رَسُولًا  
فَتَنَّبِئِهِ أَيْنَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْذِرَ ۚ وَكُنْزِهِ ۝  
قُلْ كُلٌّ مَتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۚ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ  
أَصْحَبُ الْوَسْطَايِ السَّيِّئَةِ وَمَنْ أَهْتَدَىٰ ۚ



## 21. अल-अंबिया

(मक्का में उतरी— आयतें 112)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. निकट आ गया लोगों का  
हिसाब और वे हैं कि असावधान  
कतराते जा रहे हैं।

2. उनके पास जो ताज्रा  
अनुस्मृति भी उनके रब की ओर से  
आती है, उसे वे हँसी-खेल करते  
हुए ही सुनते हैं।

3. उनके दिल दिलचस्पियों में  
खोए हुए होते हैं। उन्होंने चुपके-  
चुपके कानाफूसी की— अर्थात्

अत्याचार की नीति अपनानेवालों ने कि “यह तो बस तुम जैसा ही एक मनुष्य  
है। फिर क्या तुम देखते-बूझते जादू में फँस जाओगे?”

4. उसने कहा : “मेरा रब जानता है उस बात को जो आकाश और धरती में  
हो। और वह भली-भाँति सब कुछ सुनने, जाननेवाला है।”

5. नहीं, बल्कि वे कहते हैं : “ये तो संप्रमित स्वप्न हैं, बल्कि उसने इसे  
स्वयं ही घड़ लिया है, बल्कि वह एक कवि है ! उसे तो हमारे पास कोई  
निशानी लानी चाहिए, जैसे कि (निशानियाँ देकर) पहले के रसूल भेजे गए  
थे।”

6. इनसे पहले कोई बस्ती भी, जिसको हमने विनष्ट किया, ईमान न लाई।  
फिर क्या ये ईमान लाएँगे ?

7. और तुमसे पहले भी हमने पुरुषों ही को रसूल बनाकर भेजा, जिनकी  
ओर हम प्रकाशना करते थे।—यदि तुम्हें मालूम न हो तो ज़िक्रवालों  
(किताबवालों) से पूछ लो।—

الْأَنْبِيَاءُ

الْأَنْبِيَاءُ



سَمَاء



8. उनको हमने कोई ऐसा शरीर नहीं दिया था कि वे भोजन न करते हों और न वे सदैव रहनेवाले ही थे।

9. फिर हमने उनके साथ वादे को सच्चा कर दिखाया और उन्हें हमने छुटकारा दिया, और जिसे हम चाहें उसे छुटकारा मिलता है। और मर्यादाहीनों को हमने विनष्ट कर दिया।

10. लो, हमने तुम्हारी ओर एक किताब अवतरित कर दी है, जिसमें तुम्हारे लिए याददिहानी है। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

11. कितनी ही बस्तियों को, जो ज़ालिम थीं, हमने तोड़कर रख दिया और उनके बाद हमने दूसरे लोगों को उठाया।

12. फिर जब उन्हें हमारी यातना का आभास हुआ तो लगे वहाँ से भागने।

13. (कहा गया : ) “भागो नहीं ! लौट चलो, उसी भोग-विलास की ओर जो तुम्हें प्राप्त था और अपने घरों की ओर ताकि तुमसे पूछा जाए।”

14. कहने लगे : “हाय हमारा दुर्भाग्य ! निस्संदेह हम ज़ालिम थे।”

15. फिर उनकी निरन्तर यही पुकार रही, यहाँ तक कि हमने उन्हें ऐसा कर दिया जैसे कटी हुई खेती, बुझी हुई आग हो।

16. और हमने आकाश और धरती को और जो कुछ इनके मध्य है कुछ इस प्रकार नहीं बनाया कि हम कोई खेल करनेवाले हों।

17. यदि हम कोई खेल-तमाशा करना चाहते तो अपने ही पास से कर लेते, यदि हम ऐसा करने ही वाले होते।

18. नहीं, बल्कि हम तो असत्य पर सत्य की चोट लगाते हैं, तो वह उसका

الْأَنْبِيَاءُ

بَقَرَتِ

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَدًا لَا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَمَا  
كَانُوا خَالِدِينَ ۝ ثُمَّ صَدَقْنَاهُمُ الْوَعْدَ فَأَنْجَيْنَاهُمْ  
وَمَنْ نَشَاءُ وَأَهْلَكْنَا السُّرِيفِينَ ۝ لَقَدْ أَنْزَلْنَا  
إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَكَمْ  
قَصَمْنَا مِنْ قُرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَأَنْشَأْنَا  
بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝ فَلَمَّا أَحْسَوْا بِبَأْسِنَا إِذَا  
هُمْ مِنْهَا يَبْزُقُونَ ۝ لَا تَرْكُضُوا وَارْجِعُوا إِلَى مَا  
أُتِرْتُمْ فِيهِ وَمَسْكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَسْكُلُونَ ۝ قَالُوا  
يُونُسَ إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ فَمَا زَالَتْ تِلْكَ  
دَعْوَاهُمْ حَتَّى جَعَلْنَاهُمْ حُطْبَلَاءَ ۝ وَمَا  
خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَعِبِينَ ۝ كُو  
أَرَدْنَا أَنْ نَتَّخِذَ لَهُمْ لَا تَتَّخِذُهُ مِنْ لَدُنَّا ۝  
إِنْ كُنَّا فَعَلِينَ ۝ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى

مَزَلٍ



सिर तोड़ देता है। फिर क्या देखते हैं कि वह मिटकर रह जाता है और तुम्हारे लिए तबाही है उन बातों के कारण जो तुम बनाते हो !

19. और आकाशों और धरती में जो कोई है उसी का है। और जो (फ़रिश्ते) उसके पास हैं वे न तो अपने को बड़ा समझकर उसकी बन्दगी से मुँह मोड़ते हैं और न वे थकते हैं।

20. रात और दिन तसबीह करते रहते हैं, दम नहीं लेते।

21. (क्या उन्होंने आकाश से कुछ पूज्य बना लिए हैं) .... या उन्होंने धरती से ऐसे इष्ट-पूज्य बना लिए हैं, जो पुनर्जीवित करते हों ?

22. यदि इन दोनों (आकाश और धरती) में अल्लाह के सिवा दूसरे इष्ट-पूज्य भी होते तो दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती। अतः महान और उच्च है अल्लाह, राजासन का स्वामी, उन बातों से जो ये बयान करते हैं।

23. जो कुछ वह करता है उससे उसकी कोई पूछ नहीं हो सकती, किन्तु इनसे पूछ होगी।

24. (क्या ये अल्लाह के हक़ को नहीं पहचानते) या उसे छोड़कर इन्होंने दूसरे इष्ट-पूज्य बना लिए हैं (जिसके लिए इनके पास कुछ प्रमाण है) ? कह दो : "लाओ, अपना प्रमाण ! यह अनुस्मृति है उनकी जो मेरे साथ हैं और अनुस्मृति है उनकी जो मुझसे पहले हुए हैं, किन्तु बात यह है कि इनमें अधिकतर सत्य को जानते नहीं, इसलिए कतरा रहे हैं।

25. हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा, उसकी ओर यही प्रकाशना की कि "मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तुम मेरी ही बन्दगी करो।"

26. और वे कहते हैं कि "रहमान संतान रखता है।" महान है वह ! बल्कि

الْأَنبِيَاءُ

الْبَاطِلُ

الْبَاطِلُ قِيدَمَفْعَةٌ فَإِذَا مَوَزَاهِقُ، وَلَكُمْ الْوَيْلُ  
مَتَا تَصِفُونَ ۝ وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ  
وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ  
وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ۝ يَسْتَبْخِرُونَ الْيَلَّ وَالنَّهَارَ  
لَا يَفْتُرُونَ ۝ أَمْ اتَّخَذُوا إِلَهَهُ مِنَ الْأَرْضِ  
هُمْ يُنْشِرُونَ ۝ كَوْنًا فِيهِمَا إِلَهٌ إِلَّا اللَّهُ  
لَقَدْ نَاءَ، قُسْبَحَنَ اللَّهُ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا  
يَصِفُونَ ۝ لَا يَسْتَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْتَلُونَ ۝  
أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلُومًا بَرَاهَانَكُمْ،  
هَذَا ذِكْرٌ مِنْ مَعِيَ وَذِكْرٌ مِنْ قَبْلِي، بَلْ أَكْثَرُهُمْ  
لَا يَعْلَمُونَ ۝ الْحَقُّ فَهُمْ مُعْرِضُونَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا  
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوْحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا  
إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ

مَزَلٌ



वे तो प्रतिष्ठित बन्दे हैं।<sup>1</sup>

27. उससे आगे बढ़कर नहीं बोलते और उसके आदेश का पालन करते हैं।

28. वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और वे किसी की सिफारिश नहीं करते सिवाय उसके जिसके लिए अल्लाह पसन्द करे। और वे उसके भय से डरते रहते हैं।

29. और जो उनमें से यह कहे कि "उसके सिवा मैं भी एक इष्ट-पूज्य हूँ।" तो हम उसे बदले में जहन्नम देंगे। ज़ालिमों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं।

30. क्या उन लोगों ने जिन्होंने इनकार किया, देखा नहीं कि ये आकाश और धरती बन्द थे। फिर हमने उन्हें खोल दिया। और हमने पानी से हर जीवित चीज़ बनाई, तो क्या वे मानते नहीं?

31. और हमने धरती में अटल पहाड़ रख दिए, ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह उन्हें लेकर दुलक जाए और हमने उसमें ऐसे दर्रे बनाए कि रास्तों का काम देते हैं, ताकि वे मार्ग पाएँ।

32. और हमने आकाश को एक सुरक्षित छत बनाया, किन्तु वे हैं कि उसकी निशानियों से कतरा जाते हैं।

33. वही है जिसने रात और दिन बनाए और सूर्य और चन्द्र भी। प्रत्येक अपने-अपने कक्ष में तैर रहा है।

وَلَدًا سُبْحَنَهُ ۖ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ۝ لَا يَسْأَلُونَ  
بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ ۝ يَعْلَمُ مَا  
بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ  
ارْتَضَىٰ وَهُوَ مِنَ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ۝ وَمَنْ  
يَقُلْ مِنْهُمْ لِحُجَّتِ إِيَّاهُ مِنْ دُونِهِ ۖ فَذَلِكَ نَجْزِيهِ  
جَهَنَّمَ ۖ كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝ أَوَلَمْ يَرِ  
الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا  
رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ  
حَيٍّ ۖ أَكَلَا يُوقِنُونَ ۝ وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ  
أَنْ يَّمِيدَ بِهَمْ ۖ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا مَّسْبُورًا  
لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝ وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَفْفًا  
مَّحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ۝ وَهُوَ  
الَّذِي خَلَقَ الْإِنْسَانَ وَالنَّهَارَ وَاللَّيْلَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ

1. अर्थात् ये लोग जिनको अल्लाह की संतान ठहराते हैं, वे उसकी संतान नहीं, बल्कि उसके प्रतिष्ठित बन्दे हैं।



34. हमने तुमसे पहले भी किसी आदमी के लिए अमरता नहीं रखी। फिर क्या यदि तुम मर गए तो वे सदैव रहनेवाले हैं?

35. हर जीव को मौत का मज़ा चखना है और हम अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डालकर तुम सबकी परीक्षा करते हैं। अन्ततः तुम्हें हमारी ही ओर पलटकर आना है।

36. जिन लोगों ने इनकार किया वे जब तुम्हें देखते हैं तो तुम्हारा उपहास ही करते हैं। (कहते हैं :) "क्या यही वह व्यक्ति है, जो तुम्हारे इष्ट-पूज्यों की बुराई के साथ चर्चा करता है?" और उनका अपना हाल यह है कि वे रहमान के ज़िक्र (स्मरण) से इनकार करते हैं।

37. मनुष्य उतावला पैदा किया गया है। मैं तुम्हें शीघ्र ही अपनी निशानियाँ दिखाए देता हूँ। अतः तुम मुझसे जल्दी मत मचाओ।

38. वे कहते हैं कि "यह वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो?"

39. अगर इनकार करनेवाले उस समय को जानते, जबकि वे न तो अपने चेहरों की ओर से आग को रोक सकेंगे और न अपनी पीठों की ओर से और न उन्हें कोई सहायता ही पहुँच सकेगी तो (यातना की जल्दी न मचाते)।

40. बल्कि वह अचानक उनपर आएगी और उन्हें स्तब्ध कर देगी। फिर न उसे वे फेर सकेंगे और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी।

41. तुमसे पहले भी रसूलों की हँसी उड़ाई जा चुकी है, किन्तु उनमें से जिन

الْأَنْبِيَاءُ

الْقُرْآنِ

كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِنْ  
قَبْلِكَ الْخُلْدَ أَفَإِنْ مِتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ۝  
كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۚ وَنَبْلُوكُمْ بِالشَّرِّ  
وَالْغَيْرِ فِتْنَةً ۚ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝ وَإِذَا  
رَأَى الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَحْذَرُونَكَ إِلَّا هُزُوءًا  
أَوْ الْكِبْرَ الَّذِي يَذْكُرُ إِلَهُكُمْ ۚ وَهُمْ يَذْكُرُ الْرَّحْمَنَ  
هُمْ كَفَرُوا ۚ خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُورِيكُمْ  
آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا  
الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ  
كَفَرُوا حِينَ لَا يَكْفُونُ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا  
عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝ بَلْ تَأْتِيهِمْ  
بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدْمًا وَلَا هُمْ  
يُنظَرُونَ ۝ وَلَقَدْ اسْتَهْزَى بِرُسُلٍ مِنْ

مِثْلِهِ



लोगों ने उनकी हँसी उड़ाई थी उन्हें उसी चीज़ ने आ घेरा, जिसकी वे हँसी उड़ाते थे।

42. कहो कि “कौन रहमान के मुक़ाबले में रात-दिन तुम्हारी रक्षा करेगा? बल्कि बात यह है कि वे अपने रब की याददिहानी से कतरा रहे हैं।

43. (क्या वे हमें नहीं जानते) या हमसे हटकर उनके और भी इष्ट-पूज्य हैं, जो उन्हें बचा लें? वे तो स्वयं अपनी ही सहायता नहीं कर सकते हैं और न हमारे मुक़ाबले में उनका कोई साथ ही दे सकता है।

44. बल्कि बात यह है कि हमने उन्हें और उनके बाप-दादा को सुख-सुविधा की सामग्री प्रदान की, यहाँ तक कि इसी दशा में एक लम्बी मुद्दत उनपर गुज़र गई, तो क्या वे देखते नहीं कि हम इस भूभाग को उसके चतुर्दिक से घटाते हुए बढ़ रहे हैं?¹ फिर क्या वे अभिमानी रहेंगे?

45. कह दो : “मैं तो बस प्रकाशना के आधार पर तुम्हें सावधान करता हूँ।” किन्तु बहरे पुकार को नहीं सुनते, जबकि उन्हें सावधान किया जाए।

46. और यदि तुम्हारे रब की यातना का कोई झोंका भी उन्हें छू जाए तो वे कहने लगें : “हाय, हमारा दुर्भाग्य ! निस्संदेह हम ज़ालिम थे।”

47. और हम वज़नी, अच्छे न्यायपूर्ण कामों को क्रियामत के दिन के लिए रख रहे हैं। फिर किसी व्यक्ति पर कुछ भी जुल्म न होगा, यद्यपि वह (कर्म) राई के दाने ही के बराबर हो, हम उसे ला उपस्थित करेंगे। और हिसाब करने

الْأَنْبِيَاءُ

النَّبِيُّ

قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ قُلْ مَنْ يَكْلَأُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ ۚ بَلْ عَنْ ذِكْرِ سَرَابِهِمْ مُعْرِضُونَ ۝ أَمَرَكُمُ اللَّهُ تَنْفَعُهُمْ مِنْ دُونِنَا لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِنَّا يُصِيبُونَ ۝ بَلْ مَثَلْنَا هَؤُلَاءِ وَأَبَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ أَكُفُّوا أَعْيُنُهُمْ الْغُلِيَّةَ ۝ قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۚ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنْذَرُونَ ۝ وَلَكِنْ مَثَلُهُمْ نَفْحَةٌ مِنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يُوَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ وَنَضْمُ الْمَوَازِينِ ۚ الْقِطْرَ لِیَوْمِ الْقِيَمَةِ ۚ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ۚ وَإِنْ كَانَ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۚ وَكُفًى

سُورَةُ

1. अर्थात् कुफ़्र और इनकार करनेवालों के हाथ से धरती निकलती चली जा रही है।



के लिए हम काफ़ी हैं।

48. और हम मूसा और हारून को कसौटी और रौशनी और याददिहानी प्रदान कर चुके हैं, उन डर रखनेवालों के लिए,

49. जो परोक्ष में रहते हुए अपने रब से डरते हैं और उन्हें क्रियामत की घड़ी का भय लगा रहता है।

50. और यह बरकतवाली अनुस्मृति है, जिसको हमने अवतारित किया है। तो क्या तुम्हें इससे इनकार है?

51. और इससे पहले हमने इबराहीम को उसकी हिदायत और समझ दी थी—और हम उसे भली-भाँति जानते थे।—

52. जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा : “ये मूर्तियाँ क्या हैं, जिनसे तुम लगे बैठे हो?”

53. वे बोले : “हमने अपने बाप-दादा को इन्हीं की पूजा करते पाया है।”

54. उसने कहा : “तुम भी और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली गुमराही में हो।”

55. उन्होंने कहा : “क्या तू हमारे पास सत्य लेकर आया है या यूँ ही खेल कर रहा है?”

56. उसने कहा : “नहीं, बल्कि बात यह है कि तुम्हारा रब आकाशों और धरती का रब है, जिसने उनको पैदा किया है और मैं इसपर तुम्हारे सामने गवाही देता हूँ।

57. और अल्लाह की क़सम ! इसके पश्चात कि तुम पीठ फेरकर लौटो, मैं तुम्हारी मूर्तियों के साथ अवश्य एक चाल चलूँगा।”

58. अतएव उसने उन्हें खण्ड-खण्ड कर दिया सिवाय उनकी एक बड़ी के,

بَنَّا حَسْبَيْنَ ۖ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى وَهَارُونَ  
الْفُرْقَانَ وَضِيَاءً وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ۚ الَّذِينَ  
يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ۝  
وَهَٰذَا ذِكْرُ مُوسَىٰ إِذْ نَزَّلْنَاهُ ۖ أَفَآتَمْنَا لَهُ مُنْكَرُونَ ۚ  
وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِن قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ  
عَلِيمِينَ ۖ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَٰذِهِ السَّمَائِيلُ  
الَّتِي أَنتُمْ لَهَا عَٰكِفُونَ ۖ قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا  
لَهَا عِبَادِينَ ۖ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمْ  
فِي صُلْبٍ مُّبِينِينَ ۖ قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ  
أَنتَ مِنَ اللَّاعِبِينَ ۖ قَالَ بَلْ رَبُّكُمْ رَبُّ  
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ ۖ وَأَنَا عَلَىٰ  
ذٰلِكُمْ مِنَ الشَّٰهِدِينَ ۖ وَتَاللّٰهِ لَأَكِيدَنَّ  
أَصْنَآمَكُمْ بَعْدَ أَن تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ۖ فَجَعَلْنَاهُمْ



कदाचित वे उसकी ओर रुजू करें।

59. वे कहने लगे : "किसने हमारे देवताओं के साथ यह हरकत की है? निश्चय ही वह कोई ज़ालिम है।"

60. (कुछ लोग) बोले : "हमने एक नवयुवक को, जिसे इबराहीम कहते हैं, उनके विषय में कुछ कहते सुना है।"

61. उन्होंने कहा : "तो उसे ले आओ लोगों की आँखों के सामने कि वे भी गवाह रहें।"

62. उन्होंने कहा : "क्या तूने हमारे देवों के साथ यह हरकत की है, ऐ इबराहीम !"

63. उसने कहा : "नहीं, बल्कि उनके इस बड़े ने की होगी, उन्हीं से पूछ लो, यदि वे बोलते हों।"

64. तब वे अपनी ओर पलटे और कहने लगे : "वास्तव में, ज़ालिम तो तुम्हीं लोग हो।"

65. किन्तु फिर वे बिलकुल औंधे हो रहे। (फिर बोले :) "तुझे तो मालूम है कि ये बोलते नहीं।"

66. उसने कहा : "फिर क्या तुम अल्लाह से इतर उसे पूजते हो, जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुँचा सके और न तुम्हें कोई हानि पहुँचा सके ?

67. धिक्कार है तुमपर, और उनपर भी, जिनको तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते हो ! तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?"

68. उन्होंने कहा : "जला दो उसे, और सहायक हो अपने देवताओं के, यदि तुम्हें कुछ करना है।"

69. हमने कहा : "ऐ आग ! ठंडी हो जा और सलामती बन जा इबराहीम पर !"

الْأَنْبِيَاءُ

الْقُرْآنِ

جُذُودًا إِلَّا كَثِيرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ﴿٥٩﴾  
 قَالُوا مَنْ فَعَلَ هَذَا بِالْهَيْتِنَا إِنَّهُ لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٦٠﴾  
 قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ ﴿٦١﴾  
 قَالُوا بِهِ عَلَى أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ﴿٦٢﴾  
 قَالُوا أَنْتَ فَعَلْتَ هَذَا بِالْهَيْتِنَا يَا إِبْرَاهِيمُ ﴿٦٣﴾  
 قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَثِيرٌ مِنْهُمْ هَذَا فَسَلَوْهُمْ إِنْ كَانُوا يَنْطِقُونَ ﴿٦٤﴾  
 فَرَجَعُوا إِلَيْهِ أَنْفُسُهُمْ فَفَالُوا أَلَّكُمْ ﴿٦٥﴾  
 أَنْتُمْ الظَّالِمُونَ ﴿٦٦﴾ ثُمَّ تَوَسَّوْا عَلَى رُءُوسِهِمْ ، لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا هَؤُلَاءِ يَنْطِقُونَ ﴿٦٧﴾  
 قَالَ أَفَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٨﴾  
 إِنْ لَكُمْ وَلِيَاتُ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٩﴾  
 قَالُوا احْرِقْوهُ وَأَصْرُوا إِلَهُتَكُمْ ﴿٧٠﴾  
 إِنْ كُنْتُمْ قَوْلِينَ ﴿٧١﴾ قُلْنَا يَبْنَؤُا كَوْفِي بَرْدًا ﴿٧٢﴾

مَزَلٍ



70. उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही, किन्तु हमने उन्हीं को घाटे में डाल दिया।

71. और हम उसे और लूत को बचाकर उस भूभाग की ओर निकाल ले गए, जिसमें हमने दुनियावालों के लिए बरकतें रखी थीं।

72. और हमने उसे इसहाक़ प्रदान किया और तदधिक याकूब भी। और प्रत्येक को हमने नेक बनाया।

73. और हमने उन्हें नायक बनाया कि वे हमारे आदेश से मार्ग दिखाते थे और हमने उनकी ओर नेक कामों के करने और नमाज़ की पाबन्दी करने और ज़कात देने की प्रकाशना की, और वे हमारी बन्दगी में लगे हुए थे।

74. और रहा लूत तो उसे हमने निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया और उसे उस बस्ती से छुटकारा दिया जो गन्दे कर्म करती थी। वास्तव में वह बहुत ही बुरी और अवज्ञाकारी क्रौम थी।

75. और उसको हमने अपनी दयालुता में प्रवेश कराया। निस्संदेह वह अच्छे लोगों में से था।

76. और नूह की भी चर्चा करो, जबकि उसने इससे पहले हमें पुकारा था, तो हमने उसकी सुन ली और हमने उसे और उसके लोगों को बड़े क्लेश से छुटकारा दिया।

77. और उस क्रौम के मुक़ाबले में जिसने हमारी आयतों को झुठला दिया था, हमने उसकी सहायता की। वास्तव में वे बुरे लोग थे। अतः हमने उन

الْأَنْبِيَاءُ

الْقُرْآنِ

وَسَلَّمْنَا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۖ وَآرَادُوا بِهِ كَيْدًا  
فَجَعَلْنَاهُمُ الْآخِرِينَ ۖ وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِذْ  
الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ۖ وَوَهَبْنَا  
لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۚ وَكَلاً جَعَلْنَا  
ضُلُوحِينَ ۖ وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يُهْدُونَ بِأَمْرِنَا  
وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْغَيْرَاتِ وَالْقَامِرَ الصَّلَوةَ وَ  
إِيتَاءَ الزَّكَاةِ ۚ وَكَانُوا لَنَا عِبْدِينَ ۖ وَلُوطًا  
أَتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي  
كَانَتْ تَعْمَلُ الْخَبِيثَاتِ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ  
فَاقْبَلِينَ ۖ وَأَدْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۖ  
وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ  
وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۖ وَنَصَرْنَاهُ  
مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا

مَنْزِلَهُ



सबको डुबो दिया ।

78. और दाऊद और सुलैमान पर भी हमने कृपा-दृष्टि की । याद करो जबकि वे दोनों खेती के एक झगड़े का निबटारा कर रहे थे, जब रात को कुछ लोगों की बकरियाँ उसे रौंद गई थीं । और उनका (क्रौम के लोगों का) फ़ैसला हमारे सामने था ।

79. तब हमने उसे सुलैमान को समझा दिया और यूँ तो हरेक को हमने निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया था । और दाऊद के साथ हमने पहाड़ों को वशीभूत कर दिया था, जो तसबीह करते थे, और पक्षियों को भी । और ऐसा करनेवाले हम ही थे ।

80. और हमने उसे तुम्हारे लिए एक परिधान<sup>1</sup> (बनाने) की शिल्प-कला भी सिखाई थी, ताकि युद्ध में वह तुम्हारी रक्षा करे । फिर क्या तुम आभार मानते हो ?

81. और सुलैमान के लिए हमने तेज़ वायु को वशीभूत कर-दिया था, जो उसके आदेश से उस भूभाग की ओर चलती थी जिसे हमने बरकत दी थी । हम तो हर चीज़ का ज्ञान रखते हैं ।

82. और कितने ही शैतानों को भी अधीन किया था, जो उसके लिए गोते लगाते और इसके अतिरिक्त दूसरा काम भी करते थे । और हम ही उनको संभालनेवाले थे ।

83. और अय्यूब पर भी दया दर्शाई । याद करो जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि “मुझे बहुत तकलीफ़ पहुँची है, और तू सबसे बढ़कर दयावान है ।”

84. अतः हमने उसकी सुन ली और जिस तकलीफ़ में वह पड़ा था उसको दूर

قَوْمَ سُوءٍ فَاعْرِفْنَهُمْ اجْمَعِينَ ۝ وَدَاوُدَ وَ  
سُلَيْمَانَ اِذْ يَخْلُكُنِ فِي الْحَرْبِ اِذْ نَفَثَتْ فِيهِ  
عَاقِمُ الْقَوْمِ وَكُنَّا لِحَكِيمِهِمْ شَاهِدِينَ ۝ فَفَهَّمْنَاهَا  
سُلَيْمَانَ ۝ وَكُلًّا اَتَيْنَا حُكْمًا وَعِلْمًا ۝ وَسَخَّرْنَا  
مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يَسْبَحْنَ وَالظَّيْرَ وَكُنَّا فَوَاحِشٍ  
وَعَلَّمْنَاهُ صَنْعَةَ لَبُوسٍ لَّكُمْ لِيَتُحْصِنَكُمْ مِنْ  
بَاسِكُمْ ۝ فَهَلْ اَنْتُمْ شَاكِرُونَ ۝ وَلِسُلَيْمَانَ  
الزَّيْتِ عَاصِفَةً تَجْرِي بِاَمْرِ رَبِّ اِلَى الْاَرْضِ الْيَتَّى  
بُرُكْنَا فِيهَا ۝ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمِينَ ۝ وَ مِنْ  
الشَّيْطَانِ مَنْ يَغْوُصُونَ لَهُ وَيُضِلُّونَ عَمَّا دُونُ  
ذَلِكَ ۝ وَكُنَّا لَهُمْ حُفُوظِينَ ۝ وَ اَيُّوبَ اِذْ  
نَادَى رَبَّهُ اِنِّى مَسْنِي الضُّرَّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ  
الرَّحِيمِينَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكُشَفْنَا مَا بِهِ مِنْ

مَزَلٍ







91. और वह नारी जिसने अपने सतीत्व की रक्षा की थी, हमने उसके भीतर अपनी रूह फूँकी और उसे और उसके बेटे को सारे संसार के लिए एक निशानी बना दिया।

92. “निश्चय ही यह तुम्हारा समुदाय एक ही समुदाय है और मैं तुम्हारा रब हूँ। अतः तुम मेरी बन्दगी करो।”

93. किन्तु उन्होंने आपस में अपने मामले को<sup>1</sup> टुकड़े-टुकड़े कर डाला।—प्रत्येक को हमारी ओर पलटना है।—

94. फिर जो अच्छे कर्म करेगा, शर्त यह कि वह मोमिन हो, तो उसके प्रयास की उपेक्षा न होगी। हम तो उसके लिए उसे लिख रहे हैं।

95. और किसी बस्ती के लिए असंभव है जिसे हमने विनष्ट कर दिया कि उसके लोग (क्रियामत के दिन दण्ड पाने हेतु) न लौटें।

96. यहाँ तक कि वह समय आ जाए जब याजूज और माजूज<sup>2</sup> खोल दिए जाएँगे। और वे हर ऊँची जगह से निकल पड़ेंगे।

97. और सच्चा वादा निकट आ लगेगा, तो क्या देखेंगे कि उन लोगों की आँखें फटी की फटी रह गई हैं, जिन्होंने इनकार किया था : “हाय, हमारा दुर्भाग्य ! हम इसकी ओर से असावधान रहे, बल्कि हम ही अत्याचारी थे।”

98. “निश्चय ही तुम और वह कुछ जिनको तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हो। तुम उसके घाट उतरोगे।”

99. यदि ये पूज्य होते, तो उसमें न उतरते। और वे सब उसमें सदैव रहेंगे भी।

الْأَنْبِيَاءُ

الْأَنْبِيَاءُ

وَالَّتِي أَحْصَيْنَا فَرْجَهَا فَنَنْفَخَنَّا فِيهَا مِنْ رُوحِنَا  
وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ۝ إِنَّ هَذِهِ  
أَمْثَلُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ۝  
وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ كَلَّالِينَ ۖ نَرْجِعُوهُمْ  
فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ  
لِسُلُوبِهِ ۖ وَأَنَا لَهُ كَاتِبُونَ ۖ وَحَرُّهُ عَلَى قَرْيَةٍ  
أَهْلُكْنَاهَا أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ  
يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ ۝  
وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقِّ فَإِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ  
أَبْصَارُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يَوْنِلَيْكَ أَمْرُكَ فَمِنَ  
غَفْلَةٍ ۖ مِنْ هَذَا بَلَّ كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ إِنَّكُمْ وَمَا  
تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۖ أَنتُمْ لَهَا  
وَارِدُونَ ۝ لَوْ كَانَ هُوَ اللَّهُ إِيَّاهُ وَرَدُّوهُمَا

مَذَلَّةً

1. अर्थात् अपने दीन-धर्म को।

2. ये कौम के नाम हैं।



100. उनके लिए वहाँ शोर गुल होगा और वे वहाँ कुछ भी नहीं सुन सकेंगे ।

101. रहे वे लोग जिनके लिए पहले ही हमारी ओर से अच्छे इनाम का वादा हो चुका है, वे उससे दूर रहेंगे ।

102. वे उसकी आहट भी नहीं सुनेंगे और अपनी मनचाही चीज़ों के मध्य सदैव रहेंगे ।

103. वह सबसे बड़ी घबराहट उन्हें ग़म में न डालेगी । फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे : “यह तुम्हारा वही दिन है, जिसका तुमसे वादा किया जाता रहा है ।”

104. जिस दिन हम आकाश को लपेट लेंगे जैसे पंजी में पन्ने लपेटे जाते हैं, जिस प्रकार पहले हमने सृष्टि का आरंभ किया था उसी प्रकार हम उसकी पुनरावृत्ति करेंगे । यह हमारे ज़िम्मे एक वादा है । निश्चय ही हमें यह करना है ।

105. और हम ज़बूर में याददिहानी के पश्चात लिख चुके हैं कि “धरती के वारिस<sup>1</sup> मेरे अच्छे बन्दे होंगे ।”

106. इसमें बन्दगी करनेवाले लोगों के लिए एक संदेश है ।

107. हमने तुम्हें सारे संसार के लिए बस सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है ।

108. कहो : “मेरे पास तो बस यह प्रकाशना की जाती है कि ‘तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला पूज्य-प्रभु है । फिर क्या तुम आज्ञाकारी होते हो’ ?”

الْأَنْبِيَاءُ

الْأَنْبِيَاءُ

وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ لَهُمْ فِيهَا زَوْجُهُمْ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْعَوْنَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ ۖ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ۖ لَا يَسْعَوْنَ حَرِيمَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَكَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ۖ لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَرَجُ ۖ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۖ يَوْمَ نُظِفَ السَّمَاءُ كُلِّهَا لِنُجَلِّ لِلْكَتَبِ ۖ كَمَا بَدَأْنَا أَزْوَاجَ كُلِّ شَيْءٍ نُّوعَيْنَا ۖ وَوَعْدًا عَلَيْنَا ۖ إِنْ كُنَّا فَعَلِينَ ۖ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ۖ إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِّقَوْمٍ غَيْرٍ ۖ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ۖ قُلْ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِرَبِّ أُنثَىٰ ۖ إِنَّكُمْ مُّسْلِمُونَ ۖ

مَدَن

1. अर्थात् जन्नत की धरती के वारिस या उस भूमि के वारिस जहाँ सत्य और असत्य में संघर्ष हो ।



109. फिर यदि वे मुँह फेरें तो कह दो : “मैंने तुम्हें सामान्य रूप से सावधान कर दिया है। अब मैं यह नहीं जानता कि जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है वह निकट है या दूर।”

110. निश्चय ही वह ऊँची आवाज़ में कही हुई बात को जानता है और उसे भी जानता है जो तुम छिपाते हो।

111. मुझे नहीं मालूम कि कदाचित्त यह तुम्हारे लिए एक परीक्षा हो और एक नियत समय तक के लिए जीवन-सुख।

112. उसने कहा : “ऐ मेरे रब, सत्य का फ़ैसला कर दे ! और हमारा रब रहमान है। उसी से सहायता की प्रार्थना है, उन बातों के मुक़ाबले में जो तुम लोग बयान करते हो।”



## 22. अल-हज

(मक्का में उतरी— आयतें 78)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ लोगो ! अपने रब का डर रखो ! निश्चय ही क्रियामत की घड़ी का भूकम्प बड़ी भयानक चीज़ है।

2. जिस दिन तुम उसे देखोगे, हाल यह होगा कि प्रत्येक दूध पिलानेवाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और प्रत्येक गर्भवती अपना गर्भभार रख देगी। और लोगों को तुम नशे में देखोगे, हालाँकि वे नशे में न होंगे, बल्कि अल्लाह की यातना है ही बड़ी कठोर चीज़।

3. लोगों में कोई ऐसा भी है, जो ज्ञान के बिना अल्लाह के विषय में



झगड़ता है और प्रत्येक सरकश शैतान का अनुसरण करता है।

4. जबकि उसके लिए लिख दिया गया है कि जो उससे मित्रता का सम्बन्ध रखेगा उसे वह पथभ्रष्ट करके रहेगा और उसे दहकती अग्नि की यातना की ओर ले जाएगा।

5. ऐ लोगो ! यदि तुम्हें दोबारा जी उठने के विषय में कोई संदेह हो तो देखो, हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर लोथड़े से, फिर माँस की बोटी से जो बनावट में पूर्ण दशा में भी होती है और अपूर्ण दशा में भी,

ताकि हम तुमपर स्पष्ट कर दें और हम जिसे चाहते हैं एक नियत समय तक गर्भाशयों में ठहराए रखते हैं। फिर तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकाल लाते हैं। फिर (तुम्हारा पालन-पोषण होता है) ताकि तुम अपनी युवावस्था को प्राप्त हो और तुममें से कोई तो पहले मर जाता है और कोई बुढ़ापे की जीर्ण अवस्था की ओर फेर दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप, जानने के पश्चात वह कुछ भी नहीं जानता। और तुम भूमि को देखते हो कि सूखी पड़ी है। फिर जहाँ हमने उसपर पानी बरसाया कि वह फबक उठी और वह उभर आई और उसने हर प्रकार की शोभायमान चीज़ें उगाई।

6. यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है और वह मुर्दों को जीवित करता है

النَّمِ

الْقُرْآنِ

فِي اللَّهِ يَغْفِرُ لَهُمْ وَيُثَبِّتُ كُلَّ شَيْطَانٍ مُّرِيدٍ ۝  
كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُ يُضِلُّهُ وَ  
يَهْدِيهِ إِلَى عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ  
إِن كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُمْ  
مِّن نُّرَابٍ ثُمَّ مِّنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ  
مُضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنَبَيِّنَ لَكُمْ  
وَنُقَرِّرُ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَدَّدٍ  
ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشَدَّكُمْ  
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفَّىٰ وَمِنْكُمْ مَّنْ يَّرْجُدُ إِلَىٰ  
أَرْذَلِ الْعُمُرِ لَكُمْ يُعَلِّمُ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا  
وَنَرَى الْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا  
الْمَاءَ اهْتَرَّتْ وَرَبَتْ وَأَنْبَتَتْ مِن كُلِّ زَوْجٍ  
بَهِيجٍ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُخَبِّرُ

مَزِيدٌ



और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

7. और यह कि क़ियामत की घड़ी आनेवाली है, इसमें कोई संदेह नहीं है। और यह कि अल्लाह उन्हें उठाएगा जो क़ब्रों में हैं।

8-9. और लोगों में कोई ऐसा है जो किसी ज्ञान, मार्गदर्शन और प्रकाशमान किताब के बिना अल्लाह के विषय में (घमण्ड से) अपने पहलू मोड़ते हुए झगड़ता है, ताकि अल्लाह के मार्ग से भटका दे। उसके लिए दुनिया में भी रुसवाई है और क़ियामत के दिन हम उसे जलने की यातना का मज़ा चखाएँगे।

10. (कहा जाएगा :) यह उसके कारण है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा था और इसलिए कि अल्लाह बन्दों पर तनिक भी ज़ुल्म करनेवाला नहीं।

11. और लोगों में कोई ऐसा है, जो एक किनारे पर रहकर अल्लाह की बन्दगी करता है। यदि उसे लाभ पहुँचा तो उससे संतुष्ट हो गया और यदि उसे कोई आज्रमाइश पेश आ गई तो औंधा होकर पलट गया। दुनिया भी खोई और आखिरत भी। यही है खुला घाटा।

12. वह अल्लाह को छोड़कर उसे पुकारता है, जो न उसे हानि पहुँचा सके और न उसे लाभ पहुँचा सके। यही है परले दर्जे की गुमराही।

13. वह उसको पुकारता है जिससे पहुँचनेवाली हानि उससे अपेक्षित लाभ

النَّاسِ

النَّاسِ

الْعَوْدِ وَأَنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ وَأَنَّ السَّاعَةَ  
 آتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا ۚ وَأَنَّ اللَّهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي  
 الْقُبُورِ ۚ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ  
 بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ۚ ثَانِيًا  
 عَظُمَ لَهُ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّهُ فِي الدُّنْيَا  
 خِزْيٌ وَنُذْيِقُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَذَابَ الْحَرِيقِ ۚ  
 ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتَ يَدَكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ  
 لِّلْعَالَمِينَ ۚ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْبُدُ اللَّهَ عَلَى  
 حَرْفٍ ۚ فَإِنْ أَصَابَهُ خَيْرٌ اطْمَأَنَّ بِهِ ۚ وَإِنْ  
 أَصَابَتْهُ فَِتْنَةٌ انْقَلَبَ عَلَىٰ وَجْهِهِ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا  
 وَالْآخِرَةَ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۚ يَدْعُوا  
 مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَمَا لَا يَضُرُّهُ ۚ وَمَا لَا يَنْفَعُهُمْ ذَلِكَ  
 هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ۚ يَدْعُوا لِمَنْ ضَرَّةٌ أَكْرَبُ

مَزَل



की अपेक्षा अधिक निकट है। बहुत ही बुरा संरक्षक है वह और बहुत ही बुरा साथी !

14. निश्चय ही अल्लाह उन लोगों को, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, ऐसे बागों में दाखिल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। निस्संदेह अल्लाह जो चाहे करे।

15. जो कोई यह समझता है कि अल्लाह दुनिया और आखिरत में उसकी (रसूल की) कदापि कोई सहायता न करेगा तो उसे चाहिए कि वह आकाश की ओर एक रस्सी ताने, फिर (अल्लाह की सहायता के सिलसिले को) काट दे। फिर देख ले कि क्या उसका उपाय उस चीज़ को दूर कर सकता है जो उसे क्रोध में डाले हुए है।

16. इसी प्रकार हमने इस (कुरआन) को स्पष्ट आयतों के रूप में अवतरित किया। और बात यह है कि अल्लाह जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है।

17. जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और साबिई और ईसाई और मजूस और जिन लोगों ने शिर्क किया—इन सबके बीच अल्लाह क्रियामत के दिनें फ़ैसला कर देगा। निस्संदेह अल्लाह की दृष्टि में हर चीज़ है।

18. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ही को सजदा करते हैं वे सब जो आकाशों में हैं और जो धरती में हैं, और सूर्य, चन्द्रमा, तारे, पहाड़, वृक्ष, जानवर और बहुत-से मनुष्य? और बहुत-से ऐसे हैं जिनपर यातना का औचित्य सिद्ध

الْمَنَعُ

الْقُرْبُ

مِنْ نَفْعِهِ ۚ لَيْسَ الْمَوْلَىٰ وَلَيْسَ الْعَشِيرُ ۚ إِنَّ  
اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ  
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا  
يُرِيدُ ۚ مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي  
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ  
ثُمَّ لِيُقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُدْهِبَنَّ كَيْدَهُ مَا يَغِيطُ ۚ  
وَكَذَٰلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي  
مَنْ يُرِيدُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا  
وَالضَّالِّينَ وَالنَّاصِرَةَ وَالْمُجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ  
إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ  
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۚ الْخُرُوجُ أَنَّ اللَّهَ يَنْجُدُ لَهُ  
مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَ  
الْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ

مَنْزِلُهُ



हो चुका है, और जिसे अल्लाह अपमानित करे उसे सम्मानित करनेवाला कोई नहीं। निस्संदेह अल्लाह जो चाहे करता है।

19. ये दो विवादी हैं, जो अपने रब के विषय में आपस में झगड़े। अतः जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिए आग के वस्त्र काटे जा चुके हैं। उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा।

20. इससे जो कुछ उनके पेटों में है, वह पिघल जाएगा और खालें भी।

21. और उनके लिए (दण्ड देने को) लोहे के गुर्ज़ होंगे।

22. जब कभी भी वे घबराकर उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिए जाएँगे और (कहा जाएगा :) "चखो दहकती आग की यातना का मज़ा!"

23. निस्संदेह अल्लाह उन लोगों को, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ वे सोने के कंगनों और मोती से आभूषित किए जाएँगे और वहाँ उनका परिधान रेशमी होगा।

24. निर्देशित किया गया उन्हें अच्छे पाक बोल की ओर और उनको प्रशंसित अल्लाह का मार्ग दिखाया गया।

25. जिन लोगों ने इनकार किया और वे अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और

الْحَمْدُ لِلَّهِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ

وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ. وَمَن يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ. إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ. هَٰؤُلَاءِ حُطِّمُوا أَصْنَانٌ خِطْمُوا فِي رُءُوسِهِمْ. فَأَلَذِّينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ شِيَابٌ مِّن شَامِرٍ. يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ. يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ. وَلَهُمْ مَقَامٌ مِّنْ حَدِيدٍ. كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا. وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ. إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ. وَهُنَا الرُّسُلُ الطَّيِّبَةُ مِنَ الْقَوْلِ. وَهُدًى لِّلَّذِينَ كَفَرُوا

مِثْلِهِ



प्रतिष्ठित मस्जिद (काबा) से, जिसे हमने सब लोगों के लिए ऐसा बनाया है कि उसमें बराबर है वहाँ का रहनेवाला और बाहर से आया हुआ। और जो व्यक्ति उस (प्रतिष्ठित मस्जिद) में कुटिलता अर्थात् ज़ुल्म के साथ कुछ करना चाहेगा, उसे हम दुखद यातना का मज़ा चखाएँगे।

26. याद करो जब कि हमने इबराहीम के लिए अल्लाह के घर को ठिकाना बनाया, इस आदेश के साथ कि “मेरे साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराना और मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करनेवालों और खड़े होने और झुकने और सजदा करनेवालों के लिए पाक-साफ़ रखना।”

27. और लोगों में हज के लिए उद्घोषणा कर दो कि “वे प्रत्येक गहरे मार्ग से, पैदल भी और दुबली-दुबली ऊँटनियों पर, तेरे पास आएँ।

28. ताकि वे उन लाभों को देखें जो वहाँ उनके लिए रखे गए हैं। और कुछ ज्ञात और निश्चित दिनों में उन चौपाए अर्थात् मवेशियों पर अल्लाह का नाम लें<sup>1</sup>, जो उसने उन्हें दिए हैं। फिर उसमें से स्वयं भी खाओ और तंगहाल मुहताज को भी खिलाओ।”

29. फिर उन्हें चाहिए कि अपना मैल-कुचैल दूर करें और अपनी मन्नतें पूरी करें और इस पुरातन घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें।

30. इन बातों का ध्यान रखो और जो कोई अल्लाह द्वारा निर्धारित मर्यादाओं

وَيُصَدِّقُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ  
الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْ  
بَادِيَ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِالْحَادِ يَظْلَمْ تُدْنِيهِ  
مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۖ وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ  
الْبَيْتِ أَنْ لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ  
لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ۝  
وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَى  
كُلِّ مَضَامِيرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ۝  
لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي  
آيَاتٍ مَعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَيْمَاتٍ  
الْأَنْعَامِ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا أَمْرَ الْفَقِيرِ ۝  
ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا  
بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۝ ذَٰلِكَ دَوْمَنْ يَعْظُمُ حُرْمَتِ

مَنْزِل

1. अर्थात् अल्लाह का नाम लेकर उनको ज़िब्ह करें।



का आदर करे, तो यह उसके रब के यहाँ उसी के लिए अच्छा है। और तुम्हारे लिए चौपाए हलाल हैं, सिवाय उनके जो तुम्हें बताए गए हैं। तो मूर्तियों की गन्दगी से बचो और बचो झूठी बात से।

31. इस तरह कि अल्लाह ही की ओर के होकर रहो। उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ, क्योंकि जो कोई अल्लाह के साथ साझी ठहराता है तो मानो वह आकाश से गिर पड़ा। फिर चाहे उसे पक्षी उचक ले जाएँ या वायु उसे किसी दूरवर्ती स्थान पर फेंक दे।

اللَّهُ فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَأُحِلَّتْ لَكُمْ  
الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَلَا تُجْتَنِبُوا الزُّجُجَ  
مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّوْرِ ۚ حُنَفَاءَ  
بِاللَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ  
فَكَانَ تَخْرُجَ مِنَ السَّمَاءِ فَتُخَطِّفُهُ الْوَيْلُ أَوْ  
تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحَابٍ ۚ ذَٰلِكَ  
وَمَنْ يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ ۚ  
لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَدَّدٍ ثُمَّ مَحْمِلُهَا  
إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۚ وَبِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا  
لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةٍ  
وَالْعَمَلِ ۚ وَاللَّهُ وَاحِدٌ فَلَهُ أَسْلِمُوا ۚ  
وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ۚ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ  
وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالضَّالِّينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُمْ

سُورَةُ

32. इन बातों का खयाल रखो। और जो कोई अल्लाह के नाम लगी चीज़ों का आदर करे, तो निस्संदेह वे (चीज़ें) दिलों के तक्वा (धर्मपरायणता) से संबंध रखती हैं।

33. उनमें एक निश्चित समय तक तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं। फिर उनको उस पुरातन घर तक (कुरबानी के लिए) पहुँचना है।

34. और प्रत्येक समुदाय के लिए हमने कुरबानी का विधान किया, ताकि वे उन जानवरों अर्थात् मवेशियों पर अल्लाह का नाम लें, जो उसने उन्हें प्रदान किए हैं। अतः तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला पूज्य-प्रभु है। तो उसी के आज्ञाकारी बनकर रहो और विनम्रता अपनानेवालों को शुभ सूचना दे दो।

35. ये वे लोग हैं कि जब अल्लाह को याद किया जाता है तो उनके दिल दहल जाते हैं और जो मुसीबत उनपर आती है उसपर धैर्य से काम लेते हैं और



नमाज़ को कायम करते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं।

36. (कुरबानी के) ऊँटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों में से बनाया है। तुम्हारे लिए उनमें भलाई है। अतः खड़ा करके उनपर अल्लाह का नाम लो। फिर जब उनके पहलू भूमि से आ लगे तो उनमें से स्वयं भी खाओ और संतोष से बैठनेवालों को भी खिलाओ और माँगनेवालों को भी। ऐसा ही करो। हमने उनको तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया है, ताकि तुम कृतज्ञता दिखाओ।

وَالْمُحْسِنِينَ الصَّلَاةَ، وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝  
وَالْبُدْنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۖ قَاذِرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافٍ ۚ  
قَاذَا وَجَبَتْ جُذُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا  
الْقَائِمَ وَالْمُعْتَصِمَ ۚ كَذَلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ  
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ لَنْ يُنَالَهُ اللَّهُ لُحُومُهَا  
وَلَا دِمَآؤُهَا وَلَكِنْ يُنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنْكُمْ ۚ  
كَذَلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا  
هَدَاكُمْ ۚ وَتَقِيرَ الْمُحْسِنِينَ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ  
عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ  
كَفُورٍ ۚ أُوذِنَ لِلَّذِينَ يُقْتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظَلَمُوا ۚ  
وَلِإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ۚ الَّذِينَ  
أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَنْ يَقُولُوا

37. न उनके माँस अल्लाह को पहुँचते हैं और न उनके रक्त। किन्तु उसे तुम्हारा तक्रवा (धर्मपरायणता) पहुँचता है। इस प्रकार उसने उन्हें तुम्हारे लिए वशीभूत किया है, ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो, इसपर कि उसने तुम्हारा मार्गदर्शन किया और सुकर्मियों को शुभ सूचना दे दो।

38. निश्चय ही अल्लाह उन लोगों की ओर से प्रतिरक्षा करता है, जो ईमान लाए। निस्संदेह अल्लाह किसी विश्वासघाती, अकृतज्ञ को पसन्द नहीं करता।

39. अनुमति दी गई उन लोगों को जिनके विरुद्ध युद्ध किया जा रहा है, क्योंकि उनपर जुल्म किया गया—और निश्चय ही अल्लाह उनकी सहायता की पूरी सामर्थ्य रखता है।—

40. ये वे लोग हैं जो अपने घरों से नाहक निकाले गए, केवल इसलिए कि वे कहते हैं कि “हमारा रब अल्लाह है।” यदि अल्लाह लोगों को एक-दूसरे



के द्वारा हटाता न रहता तो मठ और गिरजा और यहूदी प्रार्थना भवन और मस्जिदें, जिनमें अल्लाह का अधिक नाम लिया जाता है, सब ढा दी जातीं। अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा, जो उसकी सहायता करेगा—निश्चय ही अल्लाह बड़ा बलवान, प्रभुत्वशाली है।—

41. ये वे लोग हैं कि यदि धरती में हम उन्हें सत्ता प्रदान करें तो वे नमाज़ का आयोजन करेंगे और ज़कात देंगे और भलाई का आदेश करेंगे और बुराई से रोकेंगे। और सब मामलों का अंतिम परिणाम अल्लाह ही के हाथ में है।

رَبَّنَا اللَّهُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ  
بِبَعْضٍ لَهْتُمْ صَاوِمِعٌ وَبِيعٌ وَصَلَوْتُ وَ  
مَسْجِدٌ يُذَكِّرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا  
وَلَيُصْرِكَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ مَارَتْ اللَّهُ لَقَوِي  
عَزِيزٌ ۝ الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ  
أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَآمَرُوا  
بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ وَاللَّهُ عَاقِبَةُ  
الْأُمُورِ ۝ وَإِنْ يَكْذِبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ  
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودٌ ۝ وَقَوْمُ  
إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ۝ وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ وَكَذَّبَ  
مُوسَىٰ فَأَمْلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ  
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝ فَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ  
أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ

42-44. यदि वे तुम्हें झुठलाते हैं तो उनसे पहले नूह की क़ौम, आद और समूद और इबराहीम की क़ौम और लूत की क़ौम और मदनवाले भी झुठला चुके हैं और मूसा को भी झुठलाया जा चुका है। किन्तु मैंने इनकार करनेवालों को मुहलत दी, फिर उन्हें पकड़ लिया। तो कैसी रही मेरी यंत्रणा !

45. कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हमने विनष्ट कर दिया इस दशा में कि वे ज़ालिम थीं, तो वे अपनी छतों के बल गिरी पड़ी हैं। और कितने ही परित्यक्त



(उजाड़) कुएँ पड़े हैं और कितने ही पक्के महल भी !

46. क्या वे धरती में चले फिर नहीं हैं कि उनके दिल होते जिनसे वे समझते या (कम से कम) कान होते जिनसे वे सुनते ? बात यह है कि आँखे अंधी नहीं हो जाती, बल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में होते हैं ।

47. और वे तुमसे यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं ! अल्लाह कदापि अपने वादे के विरुद्ध न करेगा । किन्तु तुम्हारे रब के यहाँ एक दिन, तुम्हारी गणना के अनुसार, एक हजार वर्ष जैसा है ।

48. कितनी ही बस्तियाँ हैं जिनको मैंने मुहलत दी इस दशा में कि वे ज़ालिम थीं । फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया और अन्ततः आना तो मेरी ही ओर है ।

49. कह दो : "ऐ लोगो ! मैं तो तुम्हारे लिए बस एक साफ़-साफ़ सचेत करनेवाला हूँ ।"

50. फिर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए क्षमादान और सम्मानपूर्ण आजीविका है ।

51. किन्तु जिन लोगों ने हमारी आयतों को नीचा दिखाने की कोशिश की, वही भड़कती आगवाले हैं ।

52. तुमसे पहले जो रसूल और नबी भी हमने भेजा, तो जब भी उसने कोई

الْمَعْرِفَةِ

بِقُدْرَتِهِ

عُدُوشَهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَقَصْرِ مَشِيدٍ ۝  
 أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُمْ قُلُوبٌ  
 يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا، فَإِنَّهَا لَا  
 تَعْقَى الْأَبْصَارَ وَلَكِنْ تَعْقَى الْقُلُوبُ الَّتِي  
 فِي الصُّدُورِ ۝ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَ  
 لَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۚ وَإِنْ يَوْمًا عِنْدَ  
 رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ۝ وَكَانَ مِنْ  
 قُرَيْبِهِ أَمَلِيَّتٌ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ  
 أَخَذَتْهَا، وَإِلَى الْمَصِيرِ ۝ قُلْ يَأَيُّهَا  
 النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ فَالَّذِينَ  
 آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ  
 كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُهْلِكِينَ  
 أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ

مَذَلَةٍ



कामना की तो शैतान ने उसकी कामना में विघ्न डाला। इस प्रकार जो कुछ भी शैतान विघ्न डालता है, अल्लाह उसे मिटा देता है।<sup>1</sup> फिर अल्लाह अपनी आयतों को सुदृढ़ कर देता है।—अल्लाह सर्वज्ञ, बड़ा तत्त्वदर्शी है।—

53. ताकि शैतान के डाले हुए विघ्न को उन लोगों के लिए आजमाइश बना दे जिनके दिलों में रोग है और जिनके दिल कठोर हैं।—निस्संदेह ज़ालिम परले दर्जे के विरोध में ग्रस्त हैं।—

54. और ताकि वे लोग जिन्हें ज्ञान मिला है, जान लें कि यह तुम्हारे रब की ओर से सत्य है। अतः वे इसपर ईमान लाएँ और उसके सामने उनके दिल झुक जाएँ और निश्चय ही अल्लाह ईमान लानेवालों को अवश्य सीधा मार्ग दिखाता है।

55. जिन लोगों ने इनकार किया वे सदैव इसकी ओर से संदेह-में पड़े रहेंगे, यहाँ तक कि क़ियामत की घड़ी अचानक उनपर आ जाए या एक अशुभ दिन की यातना उनपर आ पहुँचे।

56. उस दिन बादशाही अल्लाह ही की होगी। वह उनके बीच फ़ैसला कर देगा। अतः जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे नेमत भरी

الْبَشَرِ  
قَبْلَكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَوَلَّى الْفَلَكِ  
الشَّيْطَانُ فِي أَمْنِيَّتِهِ . فَيَنْسُخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي  
الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكُمُ اللَّهُ أَيْتِهِ . وَاللَّهُ عَلِيمٌ  
حَكِيمٌ . لِيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ فِتْنَةً  
لِّلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ  
وَأَنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ . وَلِيَعْلَمَ  
الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّ الْحَقَّ مِنْ رَبِّكَ  
فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ . وَإِنَّ اللَّهَ  
لَهَادِ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ .  
وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ  
حَتَّى تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ  
يَوْمٍ عَقِيمٍ . أَلَمْ لِكَ يَوْمَئِذٍ تَنَزَّلُ  
بَيْنَهُمْ . فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي

1. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पहले पैग़म्बरों की शिक्षाओं में लोगों ने शैतान के बहकावे में आकर बहुत-सी ग़लत बातें सम्मिलित कर दीं, विशेष रूप से यहूदियों और बहुदेववादी जातियों ने ऐसी ही हरकतें की हैं। जब क़ुरआन अवतरित हुआ तो उसने ऐसी सभी ग़लत और गुमराही की बातों का खण्डन करके नबियों की वास्तविक शिक्षाओं को स्पष्ट कर दिया।



जनतों में होंगे ।

57. और जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, उनके लिए अपमानजनक यातना है ।

58. और जिन लोगों ने अल्लाह के मार्ग में घरबार छोड़ा, फिर मारे गए या मर गए, अल्लाह अवश्य उन्हें अच्छी आजीविका प्रदान करेगा । और निस्संदेह अल्लाह ही उत्तम आजीविका प्रदान करनेवाला है ।

59. वह उन्हें ऐसी जगह प्रवेश कराएगा जिससे वे प्रसन्न हो जाएँगे । और निश्चय ही अल्लाह सर्वज्ञ, अत्यन्त सहनशील है ।

60. यह बात तो सुन ली । और जो कोई बदला ले, वैसा ही जैसा उसके साथ किया गया और फिर उसपर ज्यादाती की गई, तो अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा । निश्चय ही अल्लाह दरगुज़र करनेवाला, (छोड़ देनेवाला) बहुत क्षमाशील है ।

61. यह इसलिए कि अल्लाह ही है जो रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है और दिन को रात में पिरोता हुआ ले आता है । और यह कि अल्लाह सुनता, देखता है ।

62. यह इसलिए भी कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वे उसको छोड़कर पुकारते हैं, वे सब असत्य हैं, और यह कि अल्लाह ही सर्वोच्च, महान है ।

63. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह आकाश से पानी बरसाता है, तो धरती

الْقَتَبِ  
جَنَّتِ النَّعِيمِ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا  
فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ وَالَّذِينَ  
هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قَاتَلُوا أَوْ مَاتُوا  
لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ  
خَبِيرُ الزُّرْقَيْنِ ۝ لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ ۚ  
وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝ ذَٰلِكَ ۚ وَمَنْ  
عَاقَبْ يُوَسِّلْ مَا عَاقَبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ  
لَيُخْصِرْنَّهُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُو غَفُورٌ ۝ ذَٰلِكَ  
بِأَنَّ اللَّهَ يُؤَيِّلُ الْيَلَّ فِي النَّهَارِ وَيُؤَيِّلُ النَّهَارَ  
فِي الْيَلِّ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّ  
اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ  
الْبَاطِلُ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝ أَلَمْ  
تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَتُصْبِحُ

مَنْزِلَةً



हरी-भरी हो जाती है? निस्संदेह अल्लाह सूक्ष्मदर्शी, खबर रखने-वाला है।

64. उसी का है जो कुछ आकाशों में और जो कुछ धरती में है। निस्संदेह अल्लाह ही निस्पृह प्रशंसनीय है।

65. क्या तुमने देखा नहीं कि धरती में जो कुछ भी है उसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए वशीभूत कर रखा है और नौका को भी कि उसके आदेश से दरिया में चलती है, और उसने आकाश को धरती पर गिरने से रोक रखा है। उसकी अनुज्ञा हो तो बात दूसरी है।

निस्संदेह अल्लाह लोगों के हक में बड़ा करुणाशील, दयावान है।

66. और वही है जिसने तुम्हें जीवन प्रदान किया। फिर वही तुम्हें मृत्यु देता है और फिर वही तुम्हें जीवित करनेवाला है। निस्संदेह मानव बड़ा ही अकृतज्ञ है।

67. प्रत्येक समुदाय के लिए हमने बन्दगी की एक रीति निर्धारित कर दी है, जिसका पालन उसके लोग करते हैं। अतः इस मामले में वे तुमसे झगड़ने की राह न पाएँ। तुम तो अपने रब की ओर बुलाए जाओ। निस्संदेह तुम सीधे मार्ग पर हो।

68. और यदि वे तुमसे झगड़ा करें तो कह दो कि "तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

69. अल्लाह क्रियामत के दिन तुम्हारे बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा, जिसमें तुम विभेद करते हो।"

70. क्या तुम्हें नहीं मालूम कि अल्लाह जानता है जो कुछ आकाश और

الْقُرْآنِ

الْقُرْآنِ

الْأَرْضُ مُخْضَرَّةٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۚ لَهُ مَا  
فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ  
الْعَزِيزُ الْحَمِيدُ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مِمَّا  
فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۚ  
وَيُسَبِّحُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَّ عَلَى الْأَرْضِ ۚ لَا يَأْذَنُ بِهِ  
اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَكَرُوفٌ رَجِيمٌ ۚ وَ  
هُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۚ  
إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ۚ لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا  
مِنْكُمْ نَاسِكُونَ ۚ فَلَا يُنَازِعُكَ فِي الْأَمْرِ  
وَأَذْعُ إِلَى رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُسْتَقِيمٍ ۚ  
وَإِنْ جَدَلُواكَ فَقُلِ اللَّهُ أَغْلَبُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۚ  
اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ  
تَخْتَلِفُونَ ۚ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي

بِزْلِهِ







चाहिए थी। निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त बलवान, प्रभुत्वशाली है।

75. अल्लाह फ़रिश्तों में से संदेशवाहक चुनता है और मनुष्यों में से भी। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।

76. वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

77. ऐ ईमान लानेवालो ! झुको और सजदा करो और अपने रब की बन्दगी करो और भलाई करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

78. और परस्पर मिलकर जिहाद

करो अल्लाह के मार्ग में, जैसा कि जिहाद का हक़ है। उसने तुम्हें चुन लिया है—और धर्म के मामले में तुमपर कोई तंगी और कठिनाई नहीं रखी। तुम्हारे बाप इबराहीम के पंथ को तुम्हारे लिए पसन्द किया। उसने इससे पहले तुम्हारा नाम मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा था और इस ध्येय से—ताकि रसूल तुमपर गवाह हो और तुम लोगों पर गवाह हो। अतः नमाज़ का आयोजन करो और ज़कात दो और अल्लाह को मज़बूती से पकड़े रहो। वही तुम्हारा संरक्षक है। तो क्या ही अच्छा संरक्षक है और क्या ही अच्छा सहायक !

اَشْرَبْنَا  
اَللّٰهُ حَقَّ قَدْرِهِۦ ۚ اِنَّ اَللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ اَللّٰهُ  
يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ۚ  
اِنَّ اَللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا  
وَمَا خَلَقْنٰهُمْ ۚ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اَللّٰهُ تَرْجِعُ الْاُمُوْرَ ۝  
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِزْكُوْا وَاَسْبِغُوْا وَاَعْبُدُوْا  
رَبَّكُمْ وَاَفْعَلُوْا الْحَسَنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَجَاهِدُوْا  
فِيْ سَبِيْلِ اَللّٰهِ حَتّٰى جِهَادُكُمْ ۚ هُوَ اَجْتَنِبَكُمْ وَمَا جَعَلَ  
عَلَيْكُمْ فِى الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ۚ مِّلَّةَ اٰبِيْكُمْ  
اِبْرٰهِيْمَ ۚ هُوَ مَسْكُوْمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۚ مِنْ قَبْلُ  
وَفِىْ هٰذَا لَيَكُوْنُ الرَّسُوْلُ شٰهِيْدًا عَلَيْكُمْ  
وَتَكُوْنُوْا شٰهَدًاۤاۤ عَلَى النَّاسِ ۚ فَاَقِمُوْا  
الصَّلٰوةَ وَاَتُوْا الزَّكٰوةَ وَاَعْتَصِمُوْا بِاَللّٰهِ ۚ هُوَ  
مَوْلٰكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

ग



## 23. अल-मोमिनून

(मक्का में उतरी— आयतें 118)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. सफल हो गए ईमानवाले,
2. जो अपनी नमाज़ों में विनम्रता  
अपनाते हैं;
3. और जो व्यर्थ बातों से पहलू  
बचाते हैं;
4. और जो ज़कात अदा करते हैं;
5. और जो अपने गुप्तांगों की  
रक्षा करते हैं—

6. सिवाय इस सूरत के कि  
अपनी पत्नियों या लौण्डियों के  
पास जाएँ कि इसपर वे निन्दनीय नहीं हैं।

7. परन्तु जो कोई इसके अतिरिक्त कुछ और चाहे तो ऐसे ही लोग  
सीमोल्लंघन करनेवाले हैं।—

8. और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं;
9. और जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं;
10. वही वारिस होनेवाले हैं।
11. जो फ़िरदौस की विरासत पाएँगे। वे उसमें सदैव रहेंगे।
12. हमने मनुष्य को मिट्टी के सत से बनाया।
13. फिर हमने उसे एक सुरक्षित ठहरने की जगह टपकी हुई नूँद बनाकर  
रखा।

14. फिर हमने उस बूँद को लोथड़े का रूप दिया; फिर हमने उस लोथड़े को





बोटी का रूप दिया; फिर हमने बोटी की हड्डियाँ बनाई; फिर हमने उन हड्डियों पर मांस चढ़ाया; फिर हमने उसे एक दूसरा ही सर्जन रूप देकर खड़ा किया। अतः बहुत ही बरकतवाला है अल्लाह, सबसे उत्तम स्रष्टा !

15. फिर तुम अवश्य मरनेवाले हो।

16. फिर क़ियामत के दिन तुम निश्चय ही उठाए जाओगे।

17. और हमने तुम्हारे ऊपर सात रास्ते बनाए हैं। और हम सृष्टि-कार्य से गाफ़िल नहीं।

18. और हमने आकाश से एक अंदाज़े के साथ पानी उतारा। फिर हमने उसे धरती में ठहरा दिया, और उसे विलुप्त करने की सामर्थ्य भी हमें प्राप्त है।

19. फिर हमने उसके द्वारा तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किए। तुम्हारे लिए उनमें बहुत-से फल हैं (जिनमें तुम्हारे लिए कितने ही लाभ हैं) और उनमें से तुम खाते हो।

20. और वह वृक्ष भी जो सैना पर्वत से निकलता है, जो तेल और खानेवालों के लिए सालन लिए हुए उगता है।

21. और निश्चय ही तुम्हारे लिए चौपायों में भी एक शिक्षा है। उनके पेटों में जो कुछ है उसमें से हम तुम्हें पिलाते हैं। और तुम्हारे लिए उनमें बहुत-से फ़ायदे हैं और उन्हें तुम खाते भी हो।

22. और उनपर और नौकाओं पर तुम सवार होते हो।

23. हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा तो उसने कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके सिवा तुम्हारा और कोई

النَّاسُ

لَهُ الْقُدْرَةُ

الْعَلَقَةَ مَضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمَضْغَةَ عِظًا فَكُنُوزًا الْعِظَ  
لَحْمًا ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبَرَّكَ اللَّهُ أَحْسَنُ  
الْخَالِقِينَ ثُمَّ إِنْ كُنْتُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُونَ ثُمَّ إِنْ كُنْتُمْ  
يَوْمَ الْقِيَمَةِ تُبْعَثُونَ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فِرْعَوْنَ سَبْعَ طَرَائِقَ  
فَمَا كُنَّا مِنَ الْخَلْقِ غَافِلِينَ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً  
بَقْدَرٍ فَأَنْشَأْنَاهُ فِي الْأَرْضِ عِشْرَةً وَهَاجَرُوا فِيهَا  
لَقَدْ بَرَأْنَا الْإِنْسَانَ أَكْبَرًا ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ  
إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ  
فِي بَطُونٍ وَمَنْظُورٍ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا  
تَأْكُلُونَ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ وَلَقَدْ  
أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَى قَوْمِهِ فَقَالَ يَتُوبُوا لِعِبَادَةِ اللَّهِ مَا

مَزَلُهُ



इष्ट-पूज्य नहीं है। तो क्या तुम डर नहीं रखते ?”

24. इसपर उसकी क्रौम के सरदार, जिन्होंने इनकार किया था, कहने लगे : “यह तो बस तुम्हीं जैसा एक मनुष्य है। चाहता है कि तुमपर श्रेष्ठता प्राप्त करे।”

“अल्लाह यदि चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता। यह बात तो हमने अपने अगले बाप-दादा के समयों में सुनी ही नहीं।

25. यह तो बस एक उन्मादग्रस्त व्यक्ति है। अतः एक समय तक इसकी प्रतीक्षा कर लो।”

26. उसने कहा : “ऐ मेरे रब ! इन्होंने मुझे जो झुठलाया है, इसपर तू मेरी सहायता कर।”

27. तब हमने उसकी ओर प्रकाशना की कि “हमारी आँखों के सामने और हमारी प्रकाशना के अनुसार नौका बना, और फिर जब हमारा आदेश आ जाए और तूफ़ान उमड़ पड़े तो प्रत्येक प्रजाति में से एक-एक जोड़ा उसमें रख ले और अपने लोगों को भी, सिवाय उनके जिनके विरुद्ध पहले फ़ैसला हो चुका है। और अत्याचारियों के विषय में मुझसे बात न करना। वे तो डूबकर रहेंगे।

28. फिर जब तू नौका पर सवार हो जाए और तेरे साथी भी तो कह : ‘प्रशंसा है अल्लाह की, जिसने हमें ज़ालिम लोगों से छुटकारा दिया।’

29. और कह : ‘ऐ मेरे रब ! मुझे बरकतवाली जगह उतार। और तू सबसे अच्छा मेज़बान है।’

30. निस्संदेह इसमें कितनी ही निशानियाँ हैं और परीक्षा तो हम करते ही हैं।

لَكُمْ مِّنَ إِلَهِ غَيْرِهِ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۚ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً مِّنَ سَمَواتٍ ۚ هَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَبَرِّضُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ۚ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي ۖ بِمَا كَذَّبُونِ ۚ فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اصْنَعْ الْفُلَكَ بِأَعْيُنِنَا ۚ وَوَحَيْنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُورُ ۚ فَاسْلُكْ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تَحْطِيطُنَّ فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُمْ مُّعْرِضُونَ ۚ فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلِكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّيْنَاكَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۚ وَقُلْ رَبِّ انزِلْنِي مُنزَلًا مُّبَرَّكًا ۚ وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ وَلَئِن كُنَّا

مُزَلِّينَ



31. फिर उनके पश्चात हमने एक दूसरी नस्ल को उठाया;

32. और उनमें हमने स्वयं उन्हीं में से एक रसूल भेजा कि "अल्लाह की बन्दगी करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई इष्ट-पूज्य नहीं। तो क्या तुम डर नहीं रखते?"

33. उसकी क्रौम के सरदार, जिन्होंने इनकार किया और आखिरत के मिलन को झुठलाया और जिन्हें हमने सांसारिक जीवन में सुख प्रदान किया था, कहने लगे : "यह तो बस तुम्हीं जैसा एक मनुष्य है। जो कुछ तुम खाते हो, वही यह भी खाता है और जो कुछ तुम पीते हो, वही यह भी पीता है।

34. यदि तुम अपने ही जैसे एक मनुष्य के आज्ञाकारी हुए तो निश्चय ही तुम घाटे में पड़ गए।

35. क्या यह तुमसे वादा करता है कि जब तुम मरकर मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जाओगे तो तुम निकाले जाओगे?

36. दूर की बात है, बहुत दूर की, जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है!

37. वह तो बस हमारा यही सांसारिक जीवन ही है। (यही) हम मरते और जीते हैं। हम कोई दोबारा उठाए जानेवाले नहीं हैं।

38. वह तो बस एक ऐसा व्यक्ति है जिसने अल्लाह पर झूठ घड़ा है। हम उसे कदापि माननेवाले नहीं।"

39. उसने कहा : "ऐ मेरे रब ! उन्होंने जो मझे झुठलाया, उसपर तू मेरी सहायता कर।"

40. कहा : "शीघ्र ही वे पछताकर रहेंगे।"

41. फिर घटित होनेवाली बात के अनुसार उन्हें एक प्रचण्ड आवाज़ ने आ

الْمُؤْمِنِينَ

الْقُلُوبِ

لَمُبْتَلِينَ ۖ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۖ  
فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنْ ااعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ  
مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۖ وَقَالَ السَّكَّانُ مِنْ  
قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِإِلْقَاءِ الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَاهُمْ  
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ ۖ يَأْكُلُ  
مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ۖ وَلَئِنْ  
أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذَا لَخَسِرُونَ ۖ أَلَيْسَ لَكُمْ  
أَنْتُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنْتُمْ تُخْرَجُونَ ۖ  
هِيَ هَاتِ هِيَ هَاتِ لِمَا تُوْعَدُونَ ۖ إِنَّ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا  
الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۖ إِنَّ هُوَ إِلَّا  
رَجُلٌ أَفْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ۖ  
قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كُذِّبْتُ ۖ قَالَ عَنَّا قَلِيلٌ  
لِيُصِصْنَ نَدِيمِينَ ۖ فَاخْذُثَّهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ

مَذْمُومِينَ



लिया और हमने उन्हें कूड़ा-ककट बनाकर रख दिया। अतः फिटकार है, ऐसे अत्याचारी लोगों पर !

42. फिर हमने उनके पश्चात दूसरी नस्लों को उठाया।

43. कोई समुदाय न तो अपने निर्धारित समय से आगे बढ़ सकता है और न पीछे रह सकता है।

44. फिर हमने निरन्तर अपने रसूल भेजे। जब भी कभी किसी समुदाय के पास उसका रसूल आया, तो उसके लोगों ने उसे झुठला दिया। अतः हम एक को दूसरे के पीछे (विनाश के लिए) लगाते चले गए और हमने उन्हें ऐसा कर दिया

कि वे कहानियाँ होकर रह गए। फिटकार हो उन लोगों पर जो ईमान न लाएँ !

45-46. फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को अपनी निशानियों और खुले प्रमाण के साथ फिरौन और उसके सरदारों की ओर भेजा। किन्तु उन्होंने अहंकार किया। वे थे ही सरकश लोग।

47. तो वे कहने लगे : “क्या हम अपने ही जैसे दो मनुष्यों की बात मान लें, जबकि उनकी क़ौम हमारी गुलाम भी है ?”

48. अतः उन्होंने उन दोनों को झुठला दिया और विनष्ट होनेवालों में सम्मिलित होकर रहे।

49. और हमने मूसा को किताब प्रदान की, ताकि वे लोग मार्ग पा सकें।

50. और मरयम के बेटे और उसकी माँ को हमने एक निशानी बनाया। और हमने उन्हें रहने योग्य स्रोतवाली ऊँची जगह शरण दी :

51. “ऐ पैग़म्बरो ! अच्छी पाक चीज़ें खाओ और अच्छा कर्म करो। जो कुछ तुम करते हो उसे मैं जानता हूँ।

الْقَوْمِ

كَذَّابِينَ

عُثْنَا، فَبَعْدَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ  
بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا  
وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝ ثُمَّ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِتْرَاءَ كُلِّ  
جَاهٍ أُمَّةٍ رُسُولًا كَذَّبُوهُ فَأَتَيْنَا بَعْضَهُمْ  
بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ فَبَعْدَ الْقَوْمِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ ثُمَّ  
أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ  
مُّبِينٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَانكَبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا  
عَالِينَ ۝ فَقَالُوا آلُؤُسُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا  
عِبَادُونَ ۝ فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ۝  
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝ وَ  
جَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَآمَةَ آيَةً وَأَوْيَيْنَهُمَا إِلَىٰ رَبْوَةٍ  
ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ۝ يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُّوا مِنَ  
الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝

مَنْظَر



52. और निश्चय ही यह तुम्हारा समुदाय, एक ही समुदाय है और मैं तुम्हारा रब हूँ। अतः मेरा डर रखो।”

53. किन्तु उन्होंने स्वयं अपने मामले (धर्म) को परस्पर टुकड़े-टुकड़े कर डाला। हर गिरोह उसी पर खुश है, जो कुछ उसके पास है।

54. अच्छा तो उन्हें उनकी अपनी बेहोशी में डूबे हुए ही एक समय तक छोड़ दो।

55-56-57. क्या वे यह समझते हैं कि हम जो उनकी धन और सन्तान से सहायता किए जा रहे हैं, तो यह उनके लिए भलाइयों में कोई जल्दी कर रहे हैं? नहीं, बल्कि उन्हें इसका एहसास नहीं है। निश्चय ही जो लोग अपने रब के भय से काँपते रहते हैं;

58. और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं;

59. और जो लोग अपने रब के साथ किसी को साझी नहीं ठहराते;

60. और जो लोग देते हैं, जो कुछ देते हैं और हाल यह होता है कि दिल उनके काँप रहे होते हैं, इसलिए कि उन्हें अपने रब की ओर पलटनो है;

61-62. यही वे लोग हैं, जो भलाइयों में जल्दी करते हैं और यही उनके लिए अग्रसर रहनेवाले हैं। हम किसी व्यक्ति पर उसकी समाई (क्षमता) से बढ़कर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालते और हमारे पास एक किताब है, जो ठीक-ठीक बोलती है, और उनपर जुल्म नहीं किया जाएगा।

63. बल्कि उनके दिल इसकी (सत्य धर्म की) ओर से हटकर (वसवसों और गफ़लतों आदि के) भँवर में पड़े हुए हैं और उससे (ईमानवालों की नीति से) हटकर उनके कुछ और ही काम हैं। वे उन्हीं को करते रहेंगे;

64. यहाँ तक कि जब हम उनके खुशहाल लोगों को यातना में पकड़ेंगे तो क्या देखते हैं कि वे विलाप और फ़रियाद कर रहे हैं।

الْمُؤْمِنُونَ

قُلْ اللَّهُمَّ

وَلَا هِدَىٰ أُمَّتَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ  
فَتَقَطُّوا أَعْرَاسَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ  
فَرِحُونَ ۖ قَدْ زُفِرَ لَهُمْ فِي عَمَتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۖ أَيْخَسِبُونَ  
أَنَّا نُمِدُّهُمْ بِهِ مِنْ مَّالٍ وَبَيْنِينَ ۖ نَسْأِرُ كُمْ فِي  
الْغَيْبِ ۖ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشْيَةِ  
رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ۖ  
وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْكِرُونَ ۖ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا  
أُتُوا وَقُلُوبُهُمْ وَجَعَتْ ۖ أَلَيْسَ لَهُمْ رُجُوعٌ ۖ  
أُولَٰئِكَ يُسْرِعُونَ فِي الْغَيْبِ ۖ وَهُمْ لَهَا شَاقُونَ ۖ وَلَا  
تُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ نُولِيكَ مَكْتُبًا يَنْطِقُ  
بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۖ بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي عَمَةٍ مِنْ  
هَذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِنْ دُونِ ذَٰلِكَ ۖ هُمْ لَهَا عَمِلُونَ ۖ  
حَمْرًا ۖ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيَهُمْ بِالْعِزَابِ ۖ إِذَا هُمْ يَجْرُونَ ۖ

سُورَةُ



65. (कहा जाएगा :) “आज चिल्लाओ मत, तुम्हें हमारी ओर से कोई सहायता मिलनेवाली नहीं।

66-67. तुम्हें मेरी आयतें सुनाई जाती थीं, तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाते थे। हाल यह था कि इसके कारण स्वयं को बड़ा समझते थे, उसे एक कहानी कहनेवाला ठहराकर छोड़ चलते थे।

68. क्या उन्होंने इस वाणी पर विचार नहीं किया या उनके पास वह चीज़ आ गई जो उनके पहले बाप-दादा के पास न आई थी?

69. या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं, इसलिए उसका इनकार कर रहे हैं?

70. या वे कहते हैं : “उसे उन्माद हो गया है।” नहीं, बल्कि वह उनके पास सत्य लेकर आया है। किन्तु उनमें अधिकांश को सत्य अप्रिय है।

71. और यदि सत्य कहीं उनकी इच्छाओं के पीछे चलता तो समस्त आकाश और धरती और जो भी उनमें है, सबमें बिगाड़ पैदा हो जाता। नहीं, बल्कि हम उनके पास उनके हिस्से की अनुस्मृति लाए हैं। किन्तु वे अपनी अनुस्मृति से कतरा रहे हैं।

72. या तुम उनसे कुछ शुल्क माँग रहे हो? तुम्हारे रब का दिया ही उत्तम है। और वह सबसे अच्छी रोज़ी देनेवाला है।

73. और वास्तव में तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुला रहे हो।

74. किन्तु जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते वे इस मार्ग से हटकर चलना चाहते हैं।

75. यदि हम (किसी आज्ञामांश में डालने के पश्चात) उनपर दया करते और जिस तकलीफ़ में वे होते उसे दूर कर देते तो भी वे अपनी

الْمُؤْمِنِينَ

الَّذِينَ

لَا تَجْرُوا الْيَوْمَ إِلَيْكُمْ فَيَكُنْ أَنتُمْ حَرَجًا ۖ قَدْ كَانَتْ  
الْآيَةُ تَحْتَ أَعْيُنِكُمْ ۖ قُلْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ تَنْكُصُونَ ۖ  
مُسْتَكْبِرِينَ بِهِ سِرًّا تَنْهَجُونَ ۖ أَفَلَمْ يَذَرُوا  
الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ۖ  
أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ۖ أَمْ  
يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلْ جَاءَهُمُ بِالْحَقِّ وَكَثُرُوا  
إِلْحَاقُ كِرْهُونَ ۖ وَلَوْ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ  
السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ بَلْ أَتَيْنَهُمْ بِذِكْرِهِمْ  
فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُعْرِضُونَ ۖ أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا  
فَحَرَامٌ عَلَيْكَ ۚ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الزَّرْقَانِ ۖ وَإِنَّكَ  
لَتَذْعُرُهُمْ فِي صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ وَإِنَّ الَّذِينَ  
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنُكَيِّبُونَ ۖ وَلَوْ  
رَهْمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ قُرْبُهُ لَاجْتِوَاءٍ فِي طَعْنِهِمْ

مَنْ



सरकशी में हठात् बहकते रहते ।

76. यद्यपि हमने उन्हें यातना में पकड़ा, फिर भी वे अपने रब के आगे न तो झुके और न वे गिड़गिड़ाते ही थे ।

77. यहाँ तक कि जब हम उनपर कठोर यातना का द्वार खोल दें तो क्या देखेंगे कि वे उसमें निराश होकर रह गए हैं ।

78. और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए । तुम कृतज्ञता थोड़े ही दिखाते हो !

79. वही है जिसने तुम्हें धरती में पैदा करके फैलाया और उसी की ओर तुम इकट्ठे होकर जाओगे ।

80. और वही है जो जीवन प्रदान करता और मृत्यु देता है और रात और दिन का उलट-फेर उसी के अधिकार में है । फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?

81. नहीं, बल्कि वे लोग वही कुछ कहते हैं जो उनके पहले के लोग कह चुके हैं ।

82. उन्होंने कहा : “क्या जब हम मरकर मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जाएँगे, तो क्या हमें दोबारा जीवित करके उठाया जाएगा ?

83. यह वादा तो हमसे और इससे पहले हमारे बाप-दादा से होता आ रहा है । कुछ नहीं, यह तो बस अगलों की कहानियाँ हैं ।”

84. कहो : “यह धरती और जो भी इसमें आबाद हैं, वे किसके हैं, बताओ यदि तुम जानते हो ?”

85. वे बोल पड़ेंगे : “अल्लाह के !” कहो : “फिर तुम होश में क्यों नहीं आते ?”

86. कहो : “सातों आकाशों का मालिक और महान राजासन का स्वामी कौन है ?”

87. वे कहेंगे : “सब अल्लाह के हैं ।” कहो : “फिर डर क्यों नहीं रखते ?”

الْمُؤْمِنُونَ

الْمُؤْمِنُونَ

يَعْمَهُونَ ۝ وَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَرُّوا  
لِرَبِّهِمْ وَمَا يَضُرُّهُمْ ۝ كَذَّبُوا إِذَا فَتَنَّا عَلَيْهِمُ آبَاءَهُمْ  
عَذَابَ شَدِيدٍ ۝ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبِيلُونَ ۝ وَهُوَ  
الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا  
مَّا تَشْكُرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَ  
إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ  
اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ بَلْ قَالُوا  
وَسُئْلَ مَا قَالِ الْأَوَّلُونَ ۝ قَالُوا إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا  
وَعِظَامًا مَا نَاكِبُهُمْ شُئُونٌ ۝ لَقَدْ وَعِدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا  
هَذَا مِنْ قَبْلُ إِن هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ قُلْ  
لِمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ سَيَقُولُونَ  
لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ  
وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا

مَذَرُ



88. कहो : “हर चीज़ की बादशाही किसके हाथ में है, वह जो शरण देता है और जिसके मुक्काबले में कोई शरण नहीं मिल सकती, बताओ यदि तुम जानते हो ?”

89. वे बोल पड़ेंगे : “अल्लाह की ।” कहो : “फिर कहाँ से तुमपर जादू चल जाता है ?”

90. नहीं, बल्कि हम उनके पास सत्य लेकर आए हैं और निश्चय ही वे झूठे हैं ।

91. अल्लाह ने अपना कोई बेटा नहीं बनाया और न उसके साथ कोई अन्य पूज्य-प्रभु है । ऐसा होता तो प्रत्येक पूज्य-प्रभु अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता और उनमें से एक-दूसरे पर चढ़ाई कर देता । महान और उच्च है अल्लाह उन बातों से, जो वे बयान करते हैं;

92. जाननेवाला है छुपे और खुले का । सो वह उच्चतर है उस शिर्क से जो वे करते हैं !

93-94. कहो : “ऐ मेरे रब ! जिस चीज़ का वादा उनसे किया जा रहा है, वह यदि तू मुझे दिखाए ता मेरे रब ! मुझे उन अत्याचारी लोगों में सम्मिलित न करना ।”

95-96. निश्चय ही हमें इसकी सामर्थ्य प्राप्त है कि हम उनसे जो वादा कर रहे हैं वह तुम्हें दिखा दें । बुराई को उस ढंग से दूर करो, जो सबसे उत्तम हो । हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ बातें वे बनाते हैं ।

97. और कहो : “ऐ मेरे रब ! मैं शैतान की उकसाहटों से तेरी शरण चाहता हूँ ।

98. और मेरे रब ! मैं इससे भी तेरी शरण चाहता हूँ कि वे मेरे पास आएँ ।” —

99-100. यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु आ गई तो वह कहेगा : “ऐ मेरे रब ! मुझे लौटा दे । — ताकि जिस (संसार) को मैं छोड़ आया हूँ उसमें अच्छा

الْمُؤْمِنِينَ

قُلْ اللَّهُمَّ

تَقُولُونَ ۖ قُلْ مَنْ يَدِينُكُمْ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ  
وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِلَّا أَنْ كُنْتُمْ تَقُولُونَ ۖ سَيَقُولُونَ فَبِئْسَ  
قُلْ قَالِي تُشْعِرُونَ ۖ بَلْ أَتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ  
لَكَاذِبُونَ ۖ مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ  
مِنْ الذَّكَوَّةِ إِذَا أَذْهَبَ كُلَّ إِلَهٍ مِمَّا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ  
عَلَىٰ بَعْضٍ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ۖ عَلِيمُ الْغَيْبِ وَ  
الشَّهَادَةِ فَتَعَلَّىٰ عَنَّا يَسِرُّونَ ۖ قُلْ رَبِّ إِمَّا تُبْرِئُنِي  
مَا يُوْعَدُونَ ۖ رَبِّ فَلَا تُجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۖ  
وَرِنَا عَلَىٰ أَنْ تُبْرِكَ مَا نُوْعِدُهُمْ لَقَدْ بُرِرْنَا وَإِنَّمَا الْإِنسَانُ  
هُوَ أَحْسَنُ الْبَرِيَّةِ ۖ نَعْنُ أَكْمَرُ بِمَا يُصِفُونَ ۖ وَ  
قُلْ رَبِّ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ۖ وَأَعُوْذُ  
بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُنِي ۖ حَقٌّ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ  
قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ۖ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ

مَدَن







याद को भुला बैठे और तुम उनपर हँसते रहे।

111. आज मैंने उनके धैर्य का यह बदला प्रदान किया कि वही हैं जो सफलता को प्राप्त हुए।”

112. वह कहेगा : “तुम धरती में कितने वर्ष रहे ?”

113. वे कहेंगे : “एक दिन या एक दिन का कुछ भाग। गणना करनेवालों से पूछ लीजिए।”

114. वह कहेगा : “तुम ठहरे थोड़े ही, क्या अच्छा होता तुम जानते होते !

115. तो क्या तुमने यह समझा था कि हमने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और यह कि तुम्हें हमारी ओर लौटना नहीं है ?”

116. तो सर्वोच्च है अल्लाह, सच्चा सम्राट ! उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं, स्वामी है महिमाशाली सिंहासन का।

117. और जो कोई अल्लाह के साथ किसी दूसरे पूज्य को पुकारे, जिसके लिए उसके पास कोई प्रमाण नहीं, तो बस उसका हिसाब उसके रब के पास है। निश्चय ही इनकार करनेवाले कभी सफल नहीं होंगे।

118. और कहो : “मेरे रब ! मुझे क्षमा कर दे और दया कर। तू तो सबसे अच्छा दया करनेवाला है।”

سُورَةُ النُّورِ

قَدْ أَفْلَحَ

ذِكْرُنْ وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ تَضَحَّكُونَ ۚ إِنِّي جَذَيْتُهُمْ  
الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا ۖ إِنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ۚ قُلْ كَفَر  
لَيْسَتْ فِي الْأَرْضِ عِدَّةٌ سِنِينَ ۚ قَالُوا لَيْسَ بِنَا يَوْمًا أَوْ  
بَعْضَ يَوْمٍ فَتُلِ الْعَادَّةَ ۚ قُلْ إِنْ لَيْسَ إِلَّا قَلِيلًا  
لَوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۚ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّنا خَلَقْنَاكُمْ  
عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ۚ قَتَلَ اللَّهُ الْمَلِكُ  
الْحَقِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ۚ وَمَنْ  
يَذُءْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا يُرْهَانَ لَهُ بِهِ ۖ فَإِنَّا  
حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۚ وَقُلْ  
رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۚ  
سُورَةُ النُّورِ مَدَنِيَّةٌ ۚ (٢٤: ١-٦٤)  
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
سُورَةُ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَاهَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ

مَنْزِلٌ

## 24. अन-नूर

(मदीना में उतरी— आयतें 64)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. यह एक (महत्वपूर्ण) सूरा है, जिसे हमने उतारा है। और इसे हमने अनिवार्य



किया है, और इसमें हमने स्पष्ट आयतें (आदेश) अवतरित की हैं। कदाचित्त तुम शिक्षा ग्रहण करो।

2. व्यभिचारिणी और व्यभिचारी — इन दोनों में से प्रत्येक को सौ कोड़े मारो और अल्लाह के धर्म (क़ानून) के विषय में तुम्हें उनपर तरस न आए, यदि तुम अल्लाह और अंतिम दिन को मानते हो। और उन्हें दण्ड देते समय मोमिनों में से कुछ लोगों को उपस्थित रहना चाहिए।

3. व्यभिचारी किसी व्यभिचारिणी या बहुदेववादी स्त्री से ही निकाह करता है। और (इसी प्रकार) व्यभिचारिणी, किसी व्यभिचारी या बहुदेववादी से ही निकाह करती है।<sup>1</sup> और यह मोमिनों पर हराम है।

4. और जो लोग शरीफ़ एवं पाकदामन स्त्रियों पर तोहमत लगाएँ, फिर चार गवाह न लाएँ, उन्हें अस्सी कोड़े मारो और उनकी गवाही कभी भी स्वीकार न करो—वही हैं जो अवज्ञाकारी हैं।—

5. सिवाय उन लोगों के जो इसके पश्चात् तौबा कर लें और सुधार कर लें। तो निश्चय ही अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

6. और जो लोग अपनी पत्नियों पर दोषारोपण करें और उनके पास स्वयं उनके अपने सिवा गवाह मौजूद न हों, तो उनमें से एक (अर्थात् पति) चार बार अल्लाह की क़सम खाकर यह गवाही दे कि वह बिलकुल सच्चा है।

7. और पाँचवीं बार यह गवाही दे कि यदि वह झूठा हो तो उसपर अल्लाह

لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ  
وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةً جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ  
فِي دِينِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ  
وَلَيْسَ هَذَا عَذَابٌ يُكَافَأُ عَنْهُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ الزَّانِي  
لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً ۝ وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا  
إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ۝ وَحُزِمَ ذَلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝  
وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ  
شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ  
شَهَادَةً أَبَدًا ۝ وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ  
تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۝ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ  
رَّحِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ  
شُهَدَاءُ إِلَّا أَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَادَاتٍ  
بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۝ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ

1. मालूम हुआ कि अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराना उसी प्रकार का घृणित कर्म है, जिस प्रकार का घृणित कर्म व्यभिचार और कुकर्म है।



की फिटकार हो।

8. पत्नी से भी सज़ा को यह बात टाल सकती है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खाकर गवाही दे कि वह बिलकुल झूठा है।

9. और पाँचवीं बार यह कहे कि उसपर (उस स्त्री पर) अल्लाह का प्रकोप हो, यदि वह सच्चा हो।

10. यदि तुमपर अल्लाह की उदार कृपा और उसकी दया न होती (तो तुम संकट में पड़ जाते), और यह कि अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

11. जो लोग तोहमत घड़ लाए हैं वे तुम्हारे ही भीतर की एक टोली है। तुम उसे अपने लिए बुरा मत समझो, बल्कि वह भी तुम्हारे लिए अच्छा ही है। उनमें से प्रत्येक व्यक्ति के लिए उतना ही हिस्सा है जितना गुनाह उसने कमाया, और उनमें से जिस व्यक्ति ने उसकी ज़िम्मेदारी का एक बड़ा हिस्सा अपने सिर लिया उसके लिए बड़ी यातना है।

12. ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुम लोगों ने उसे सुना था, तब मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियाँ अपने आपसे<sup>1</sup> अच्छा गुमान करते और कहते कि “यह तो खुली तोहमत है?”

13. आखिर वे इसपर चार गवाह क्यों न लाए?<sup>2</sup> अब जबकि वे गवाह नहीं लाए, तो अल्लाह की दृष्टि में वही झूठे हैं।

14. यदि तुमपर दुनिया और आखिरत में अल्लाह की उदार कृपा और उसकी दयालुता न होती तो जिस बात में तुम पड़ गए उसके कारण तुम्हें एक

مَنْزِلَةٌ

مَنْزِلَةٌ

اللَّهُ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَذِبِينَ وَيَدْرَأُ عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعُ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَذِبِينَ وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِنْكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَكُمْ بَلْ هُوَ حَازِلٌ لَكُمْ بِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِالْغَيْبِ حَزِينًا وَقَالُوا هَذَا الْإِفْكُ مُبِينٌ لَوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِمْ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالْشُهَدَاءِ فَقَالَ بَكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَذِبُونَ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَكُنْتُمْ فِي مَنَا

مَنْزِلَةٌ

1. अर्थात् अपने लोगों के प्रति।

2. कि इस प्रकार अपने को सच्चा सिद्ध कर सकते।



बड़ी यातना आ लेती ।

15. सोचो, जब तुम एक-दूसरे से उस (झूठ) को अपनी ज़बानों पर लेते जा रहे थे और तुम अपने मुँह से वह कुछ कहे जा रहे थे, जिसके विषय में तुम्हें कोई ज्ञान न था और तब उसे एक साधारण बात समझ रहे थे; हालाँकि अल्लाह के निकट वह एक भारी बात थी ।

16. और ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुमने उसे सुना था तो कह देते : “हमारे लिए उचित नहीं कि हम ऐसी बात ज़बान पर लाएँ । महान और उच्च है तू (ऐ अल्लाह) ! यह तो एक बड़ी तोहमत है ?”

أَفَصَلُّمُ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۖ لَّئِنْ تَلَقَّوْنَهُ بِالسَّتِيقَاتِ ۖ وَ تَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَ تَحْسِبُونَهُ هَيِّئًا ۖ وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ۖ وَلَوْ لَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا الْفُسْكَانِ ۖ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ۖ يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا ۖ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَيَتَذَكَّرُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ ۖ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۖ إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۖ وَلَوْ لَا قَضَى اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتَهُ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۖ وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالتَّنَكُّرِ ۖ وَلَوْ لَا قَضَى اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتَهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ مِمَّنْ

17. अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा न करना, यदि तुम मोमिन हो ।

18. अल्लाह तो आयतों को तुम्हारे लिए खोल-खोलकर बयान करता है । अल्लाह तो सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है ।

19. जो लोग चाहते हैं कि उन लोगों में जो ईमान लाए हैं, अश्लीलता फैले, उनके लिए दुनिया और आखिरत (लोक-परलोक) में दुखद यातना है । और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते ।

20. और यदि तुमपर अल्लाह का उदार अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती (तो अवश्य ही तुमपर यातना आ जाती) और यह कि अल्लाह बड़ा करुणामय, अत्यन्त दयावान है ।

21. ऐ ईमान लानेवालो ! शैतान के पद-चिह्नों पर न चलो । जो कोई शैतान के पद-चिह्नों पर चलेगा तो वह तो उसे अश्लीलता और बुराई का आदेश देगा । और यदि अल्लाह का उदार अनुग्रह और उसकी दयालुता तुमपर न होती तो



तुममें से कोई भी आत्म-विकास को प्राप्त न कर सकता। किन्तु अल्लाह जिसे चाहता है, सँवारता-निखारता है। अल्लाह तो सब कुछ सुनता, जानता है।

22. तुममें जो बड़ाईवाले और सामर्थ्यवान हैं, वे नातेदारों, मुहताजों और अल्लाह की राह में घरबार छोड़नेवालों को देने से बाज़ रहने की कसम न खा बैठें। उन्हें चाहिए कि क्षमा कर दें और उनसे दरगुज़र करें। क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा करे? अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

أَحَدٌ أَبَدًا ۖ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُرِيتُكَ مِنَ يَسَاءِ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۖ وَلَا يَأْتِلُ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعْيُ أَنْ يُوْتُوا أُولَى الْقُرْبَىٰ وَالسَّكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۚ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لَعُنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ يَوْمَ تُشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ يَوْمَ لَا يُؤْفِكُهُمُ اللَّهُ دِينَهُمْ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ۚ أَلْحَيْتُهُ لِلْخَائِشِينَ وَالْخَائِشُونَ لِلْخَائِشَاتِ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ

23. निस्संदेह जो लोग शरीफ़, पाकदामन, भोली-भाली बेखबर ईमानवाली स्त्रियों पर तोहमत लगाते हैं उनपर दुनिया और आखिरत में फिटकार है। और उनके लिए एक बड़ी यातना है।

24. जिस दिन कि उनकी ज़बानें और उनके हाथ और उनके पाँव उनके विरुद्ध उसकी गवाही देंगे, जो कुछ वे करते रहे थे,

25. उस दिन अल्लाह उन्हें उनका ठीक बदला पूरी तरह दे देगा जिसके वे पात्र हैं। और वे जान लेंगे कि निस्संदेह अल्लाह ही सत्य है खुला हुआ, प्रकट कर देनेवाला।

26. गन्दी चीज़ें गन्दे लोगों के लिए हैं और गन्दे लोग गन्दी चीज़ों के लिए, और अच्छी चीज़ें अच्छे लोगों के लिए हैं और अच्छे लोग अच्छी चीज़ों के लिए। वे लोग उन बातों से बरी हैं, जो वे कह रहे हैं। उनके लिए क्षमा और सम्मानित आजीविका है।

27. ऐ ईमान लानेवालो ! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में प्रवेश न करो,



जब तक कि रज़ामन्दी हासिल न कर लो और उन घरवालों को सलाम न कर लो। यही तुम्हारे लिए उत्तम है, कदाचित्त तुम ध्यान रखो।

28. फिर यदि उनमें किसी को न पाओ, तो उनमें प्रवेश न करो जब तक कि तुम्हें अनुमति प्राप्त न हो। और यदि तुमसे कहा जाए कि वापस हो जाओ तो वापस हो जाओ, यही तुम्हारे लिए अधिक अच्छी बात है। अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम करते हो।

29. इसमें तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं है कि तुम ऐसे घरों में प्रवेश करो जिनमें कोई न रहता हो, जिनमें तुम्हारे फ़ायदे की कोई चीज़ हो। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम प्रकट करते हो और जो कुछ छिपाते हो।

30. ईमानवाले पुरुषों से कह दो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। यही उनके लिए अधिक अच्छी बात है। अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर रहती है, जो कुछ वे किया करते हैं।

31. और ईमानवाली स्त्रियों से कह दो कि वे भी अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपने शृंगार प्रकट न करें, सिवाय उसके जो उनमें खुला रहता है। और अपने सीनों (वक्षस्थल) पर अपने दुपट्टे डाले रहें और अपना शृंगार किसी पर ज़ाहिर न करें सिवाय अपने पतियों के या अपने बापों के या अपने पतियों के बापों के या अपने बेटों के या अपने पतियों के बेटों के या अपने भाइयों के या अपने भतीजों के या अपने भांजों

النّور

قَدْ اُنْزِلَتْ

بَيِّنَاتٍ لِّكُمْ حَتّٰى تَسَآئِلُوْا وَتَسْأَلُوْا عَآلِهِيْهَاۙ ذٰلِكُمْ  
خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَۙ ۝ۚ وَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَا  
اَحَدًاۙ فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْۙ ۝ۚ وَاِنْ قِيلَ  
لَكُمْۙ اِرْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَرْكَىٰ لَكُمْۙ وَاللّٰهُ بِمَا  
تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌۙ ۝ۚ كَيْسَ عَلَيْنَكُمۙ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا  
بِيَوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍۙ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْۙ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا  
تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَۙ ۝ۚ قُلْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَغْضُوْا  
مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْۙ ذٰلِكَ اَزْكٰى  
لَهُمْۙ وَاِنْ اللّٰهُ خَبِيْرٌۙ بِمَا يَصْنَعُوْنَۙ ۝ۚ وَقُلْ لِلْمُؤْمِنٰتِ  
يَغْضِضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ  
وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّۙ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ  
بِخُمْرِهِنَّ عَلٰى رُءُوْسِهِنَّۙ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ  
اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّۙ اَوْ اٰبَآئِهِنَّۙ اَوْ اٰبَآئِ بُعُوْلَتِهِنَّۙ اَوْ

مَدَن



के या अपने मेल-जोल की स्त्रियों के या जो उनकी अपनी मिल्कियत में हों उनके, या उन अधीनस्थ पुरुषों के जो उस अवस्था को पार कर चुके हों जिसमें स्त्री की ज़रूरत होती है, या उन बच्चों के जो स्त्रियों के परदे की बातों से परिचित न हों। और स्त्रियाँ अपने पाँव धरती पर मारकर न चलें कि अपना जो शृंगार छिपा रखा हो, वह मालूम हो जाए। ऐ ईमानवालो! तुम सब मिलकर अल्लाह से तौबा करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

32. तुममें जो बेजोड़े के हों और तुम्हारे गुलामों और तुम्हारी लौंडियों में जो नेक और योग्य हों, उनका विवाह कर दो। यदि वे गरीब होंगे तो अल्लाह अपने उदार अनुग्रह से उन्हें समृद्ध कर देगा। अल्लाह बड़ी समाईवाला, सर्वज्ञ है।

33. और जो विवाह का अवसर न पा रहे हों उन्हें चाहिए कि पाकदामनी अपनाए रहें, यहाँ तक कि अल्लाह अपने उदार अनुग्रह से उन्हें समृद्ध कर दे। और जिन लोगों पर तुम्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो उनमें से जो लोग लिखा-पढ़ी के इच्छुक हों<sup>1</sup> उनसे लिखा-पढ़ी कर लो, यदि तुम्हें मालूम हो कि उनमें भलाई है। और उन्हें अल्लाह के माल में से दो, जो उसने तुम्हें प्रदान किया है। और अपनी लौंडियों को सांसारिक जीवन-सामग्री की चाह में

النُّور

قُلْ الْعَلَمُ

أَبْنَائِهِمْ أَوْ أَبْنَاءَ بُعُولَتِهِمْ أَوْ إِخْوَانِهِمْ أَوْ  
بَنِي إِخْوَانِهِمْ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِمْ أَوْ نِسَائِهِمْ أَوْ مَا  
مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ أَوِ الشُّعْبَةِ غَيْرِ أُولَى الْإِرْبَةِ  
مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَى عَوْرَتِ  
النِّسَاءِ سَوَآءٌ يَضْرِبُونَ بِأَنِجْلِهِمْ لَكُمْ مَا يَخْفَى مِنْ  
زِينَتِهِمْ وَتَوْبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَا الْمُؤْمِنُونَ  
لَكُمْ تَغْلِيحُونَ ۝ وَأَنكِحُوا الْأَيَالَى وَاصْطَلِبِينَ  
مِنْ عِبَادِكُمْ وَامَّا بَيْنَكُمْ إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِيكُمُ  
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ وَلِيَسْتَفْهِفَ  
الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ زَكَاةً حَتَّى يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ  
فَضْلِهِ ۝ وَالَّذِينَ يَبْتِغُونَ الْكِسْفَ مِنَّا مَلَكَتْ  
أَيْمَانُكُمْ فَكَايَبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۚ وَإِذَا تَوَّعْتُمْ  
قُلُوبَ مَالِ اللَّهِ الَّذِي أَشْكُرُهُ وَلَا تَكْرَهُوا فَتَيَبِكُمْ

مَلِكٌ

1. अर्थात माल की शर्त पर अपनी आज्ञादी के लिए लिखा-पढ़ी करनी चाहिए।



व्यभिचार के लिए बाध्य न करो, जबकि वे पाकदामन रहना भी चाहती हों। और इसके लिए जो कोई उन्हें बाध्य करेगा, तो निश्चय ही अल्लाह उनके बाध्य किए जाने के पश्चात अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

34. हमने तुम्हारी ओर खुली हुई आयतें उतार दी हैं और उन लोगों की मिसालें भी पेश कर दी हैं, जो तुमसे पहले गुजरे हैं, और डर रखनेवालों के लिए नसीहत भी।

35-37. अल्लाह आकाशों और धरती का प्रकाश है। (मोमिन के दिल में) उसके प्रकाश की मिसाल

ऐसी है जैसे एक ताक़ है, जिसमें एक चिराग़ है— वह चिराग़ एक फ़ानूस में है। वह फ़ानूस ऐसा है मानो चमकता हुआ कोई तारा है।— वह चिराग़ ज़ैतून के एक बरकतवाले वृक्ष के तेल से जलाया जाता है, जो न पूर्वी है न पश्चिमी। उसका तेल आप ही आप भड़का पड़ता है, यद्यपि आग उसे न भी छूए। प्रकाश पर प्रकाश!— अल्लाह जिसे चाहता है अपने प्रकाश के प्राप्त होने का मार्ग दिखा देता है। अल्लाह लोगों के लिए मिसालें प्रस्तुत करता है। अल्लाह तो हर चीज़ जानता है।— उन घरों में जिनको ऊँचा करने और जिनमें अपने नाम के याद करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, उनमें ऐसे लोग प्रभात काल और संध्या समय उसकी तसबीह करते हैं जिन्हें अल्लाह की याद

अल्फ़ा

अल्फ़ा

عَلَى الْبَقَاءِ إِنْ أَرَدْنَاهُمْ نَحْنُ الْمُنْتَقِبُونَ لِيُثْبِتُوا عَرْضَ الْحَيَاةِ  
الدُّنْيَا وَمَنْ يُكْرِهْهُمْ قَانَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِمْ  
عَقُورٌ نَجِيمٌ ۖ وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُبِينَاتٍ  
وَمَثَلًا لِقَوْمٍ الَّذِينَ حَقَلُوا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً  
لِلْمُتَّقِينَ ۚ اللَّهُ تَوَّابٌ أَلِيمٌ ۚ وَالْأَرْضُ ۖ مَثَلُ  
ثَوْرٍ كَوْكَبٌ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۚ الْمِصْبَاحُ فِي رُجَاةٍ  
الرُّجُلِ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُبَارَكَةٍ  
زَيْتُونَةٍ ۖ لَا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ ۚ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضْفَىٰ ۖ وَلَوْ  
لَمْ تَكُنْ لَأَرَأَوْهُ عَلَى ثَوْبٍ يُهْدَىٰ ۚ اللَّهُ لَنُورًا ۚ مَنْ  
يَشَاءُ ۖ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۖ وَاللَّهُ بِكُلِّ  
شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ فِي يَوْمٍ أُخِذَ الْإِثْمُ ۚ أَنْ تَرْقَمَ ۚ وَيَذْكُرَ  
فِيهَا أَسْمَاءَ ۖ يَلْبَسُونَ فِيهَا الْغَدَدُ ۖ وَالْأَصَالُ ۚ  
رِجَالٌ ۖ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ

مَثَلُهُ



और नमाज़ कायम करने और ज़कात देने से न तो व्यापार गाफ़िल करता है और न क्रय-विक्रय। वे उस दिन से डरते रहते हैं जिसमें दिल और आँखें विकल हो जाएँगी,

38. ताकि अल्लाह उन्हें बदला प्रदान करे। उनके अच्छे से अच्छे कामों का, और अपने उदार अनुग्रह से उन्हें और अधिक प्रदान करे। अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है।

39. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनके कर्म चटियल मैदान में मरीचिका की तरह हैं कि प्यासा उसे पानी समझता है, यहाँ तक कि जब वह उसके पास पहुँचा तो उसे कुछ भी न पाया। अलबत्ता अल्लाह ही को उसके पास पाया, जिसने उसका हिसाब पूरा-पूरा चुका दिया। और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब करता है।

40. या फिर जैसे एक गहरे समुद्र में अँधेरे, लहर के ऊपर लहर छा रही हैं; उसके ऊपर बादल है, अँधेरे हैं एक पर एक। जब वह<sup>1</sup> अपना हाथ निकाले तो उसे वह सुझाई देता प्रतीत न हो। जिसे अल्लाह ही प्रकाश न दे फिर उसके लिए कोई प्रकाश नहीं।

41. क्या तुमने नहीं देखा कि जो कोई भी आकाशों और धरती में है, अल्लाह की तसबीह (गुणगान) कर रहा है और पंख पसारे हुए पक्षी भी? हर एक अपनी नमाज़ और तसबीह से परिचित है। अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ वे करते हैं।

النور

تذكرة

لِقَامِ الصَّلَاةِ وَآيَاتِهِ الزُّكُورَةِ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ  
فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ لِيَجْزِيَ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا  
عَمِلُوا وَيَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ  
يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ  
كَسْرَابٍ يَقِيعُهُ يَحِبُّهُ الظَّالِمُونَ مَا ذُحِّتْ إِذَا جَاءَهُ  
لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ فَوْقَهُ حِسَابًا  
وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ أَوْ كَظُلُمٍ فِي بَعْضِ لَيْلٍ  
يَفْشَاهُ مُوْجٌ مِنْ فَوْقِهِ مُوْجٌ مِنْ فَوْقِهِ سَحَابٌ  
ظَلُمْتُ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ  
يَكُنْ يَرِيهَا وَمَنْ لَمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ  
مِنْ نُورٍ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ  
وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرِ صَفْقٌ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَ  
تَسْبِيحَهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝ وَهُوَ مُلْكُ

مَدَن



42. अल्लाह ही के लिए है आकाशों और धरती का राज्य। और अल्लाह ही की ओर लौटकर जाना है।

43. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह बादल को चलाता है। फिर उनको<sup>1</sup> परस्पर मिलाता है। फिर उसे तह पर तह कर देता है। फिर तुम देखते हो कि उसके बीच से मेह बरसता है? और आकाश से—उसमें जो पहाड़ हैं (बादल जो पहाड़ जैसे प्रतीत होते हैं उनसे) — ओले बरसाता है। फिर जिस पर चाहता है गिराता है और जिससे चाहता है, उसे हटा देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि बिजली की चमक निगाहों को उचक ले जाएगी।

44. अल्लाह ही रात और दिन का उलट-फेर करता है। निश्चय ही आँखें रखनेवालों के लिए इसमें एक शिक्षा है।

45. अल्लाह ने हर जीवधारी को पानी से पैदा किया, तो उनमें से कोई अपने पेट के बल चलता है और कोई उनमें दो टाँगों पर चलता है और कोई उनमें चार (टाँगों) पर चलता है। अल्लाह जो चाहता है, पैदा करता है। निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

46. हमने सत्य को प्रकट कर देनेवाली आयतें उतार दी हैं। आगे अल्लाह जिसे चाहता है सीधे मार्ग की ओर लगा देता है।

47. वे मुनाफ़िक़ लोग कहते हैं कि “हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हमने आज्ञापालन स्वीकार किया।” फिर इसके पश्चात उनमें से

النُّسُوتِ وَالْأَرْضِ، وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَّامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ وَيُنَزِّلُ مِنْ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيُضِرُّهُ عَنْ مَنْ يَشَاءُ يَكَادُ سَنَا بَرْقُهُ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۝ يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ، إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَّاءٍ، فَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَى بَطْنِهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَى رِجْلَيْنِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَى أَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ، وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ فَرِيقًا







जिसका बोझ उसपर डाला गया है, और तुम उसके ज़िम्मेदार हो जिसका बोझ तुमपर डाला गया है। और यदि तुम आज्ञा का पालन करोगे तो मार्ग पा लोगे। और रसूल पर तो बस साफ़-साफ़ (संदेश) पहुँचा देने ही की ज़िम्मेदारी है।

55. अल्लाह ने उन लोगों से, जो तुममें से ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वादा किया है कि वह उन्हें धरती में अवश्य सत्ताधिकार प्रदान करेगा, जैसे उसने उनसे पहले के लोगों को सत्ताधिकार प्रदान किया था।

और उनके लिए अवश्य उनके उस धर्म को जमाव प्रदान करेगा जिसे उसने उनके लिए पसन्द किया है। और निश्चय ही उनके वर्तमान भय के पश्चात उसे उनके लिए शान्ति और निश्चिन्तता में बदल देगा। वे मेरी बन्दगी करते हैं, मेरे साथ किसी चीज़ को साझी नहीं बनाते। और जो कोई इसके पश्चात इनकार करे, तो ऐसे ही लोग अवज्ञाकारी हैं।

56. नमाज़ का आयोजन करो और ज़कात दो और रसूल की आज्ञा का पालन करो, ताकि तुमपर दया की जाए।

57. यह कदापि न समझो कि इनकार की नीति अपनानेवाले धरती में क़ाबू से बाहर निकल जानेवाले हैं। उनका ठिकाना आग है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

58. ऐ ईमान लानेवालो ! जो तुम्हारी मिल्कियत में हों और तुममें जो अभी युवावस्था को नहीं पहुँचे हैं, उनको चाहिए कि तीन समयों में तुमसे अनुमति लेकर तुम्हारे पास आएँ : प्रभात काल की नमाज़ से पहले और जब दोपहर

अन-नूर

अन-नूर

عَلَيْهِ مَا حُمِلَ وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِلْتُمْ ۚ وَإِنْ تُطِيعُوا  
 بَيْنَهُمْ وَمَا عَلَى الرُّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝  
 وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ  
 لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ  
 قَبْلِهِمْ ۚ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ  
 وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي لَا  
 يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ  
 هُمُ الْفَاسِقُونَ ۚ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ  
 وَاطِيعُوا الرُّسُولَ لَعَلَّكُمْ تَرْحَمُونَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ  
 الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِي النَّارِ  
 وَلَيْسَ الْمَصِيرُ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنَكُمْ  
 الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ  
 ثَلَاثَ مَرَّاتٍ مِنْ قَبْلِ صَلَواتِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ

مَنْزِلَهُ



को तुम (आराम के लिए) अपने कपड़े उतार रखते हो और रात्रि की नमाज़ के पश्चात— ये तीन समय तुम्हारे लिए परदे के हैं। इनके पश्चात न तो तुमपर कोई गुनाह है और न उनपर। वे तुम्हारे पास अधिक चक्कर लगाते हैं। तुम्हारे ही कुछ अंश परस्पर कुछ अंश के पास आकर मिलते हैं।<sup>1</sup> इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों को स्पष्ट करता है। अल्लाह भली-भाँति जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

59. और जब तुममें से बच्चे युवावस्था को पहुँच जाएँ तो उन्हें चाहिए कि अनुमति ले लिया करें जैसे उनसे पहले लोग अनुमति लेते रहे हैं। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों को स्पष्ट करता है। अल्लाह भली-भाँति जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

60. जो स्त्रियाँ युवावस्था से गुज़रकर बैठ चुकी हों, जिन्हें विवाह की आशा न रह गई हो, उनपर कोई दोष नहीं कि वे अपने कपड़े (चादरें) उतारकर रख दें<sup>2</sup> जबकि वे शृंगार का प्रदर्शन करनेवाली न हों। फिर भी वे इससे बचें तो उनके लिए अधिक अच्छा है। अल्लाह भली-भाँति सुनता, जानता है।

61. न अंधे के लिए कोई हरज है, न लँगड़े के लिए कोई हरज है और न रोगी के लिए कोई हरज है और न तुम्हारे अपने लिए इस बात में कि तुम अपने घरों से खाओ या अपने बापों के घरों से या अपनी माँओं के घरों से या

अल्लह

तुम्हारे

ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلَوةِ الْعِشَاءِ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَّكُم مِّنْ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ طَوَّفُونَ عَلَيْكُمْ بِعُصْمٍ عَلَىٰ بَعْضِ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ  
وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ  
وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَن يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ وَأَن يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ  
لَيْسَ عَلَى الْأَعْي حَرَمٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَمٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَمٌ وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَن تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ

مَلَائِكَةٍ

1. अर्थात् इनका तुम्हारे पास बराबर आना-जाना लगा रहता है। नितांत निकट सम्बन्ध होने के कारण उनको अपना अंश कहा गया है।

2. अर्थात् बड़ी बूढ़ी स्त्रियाँ यदि थोड़े आवश्यक वस्त्रों में रहें, तो इसकी गुंजाइश है।



अपने भाइयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चाचाओं के घरों से या अपनी फूफियों (बुआओं) के घरों से या अपने मामाओं के घरों से या अपनी खालाओं के घरों से या जिसकी कुंजियों के मालिक हुए हो या अपने मित्र के यहाँ। इसमें तुम्हारे लिए कोई हरज नहीं कि तुम मिलकर खाओ या अलग-अलग। हाँ, अलबत्ता जब घरों में जाया करो तो अपने लोगों को सलाम किया करो, अभिवादन अल्लाह की ओर से नियत किया हुआ, बरकतवाला और अत्यधिक पाक। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों को स्पष्ट करता है, ताकि तुम बुद्धि से काम लो।

62. मोमिन तो बस वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर पक्का ईमान रखते हैं। और जब किसी सामूहिक मामले के लिए उसके साथ हों तो चले न जाएँ जब तक कि उससे अनुमति न प्राप्त कर लें। (ऐ नबी!) जो लोग (आवश्यकता पड़ने पर) तुमसे अनुमति ले लेते हैं, वही लोग अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं, तो जब वे अपने किसी काम के लिए अनुमति चाहें तो उनमें से जिसको चाहो अनुमति दे दिया करो, और उन लोगों के लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना किया करो। निस्संदेह अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

ثُمَّ لِيَذَرَ  
أَمْهَاتِكُمْ أَوْ بَيُوتَ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بَيُوتَ أَخَوَاتِكُمْ  
أَوْ بَيُوتَ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بَيُوتَ عَمَّتِكُمْ أَوْ بَيُوتَ  
أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بَيُوتَ خَلَتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتُمْ مَفَاتِحَهُ  
أَوْ صَدِيقَكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَاْكُلُوا  
بِمَعِينَا أَوْ أَهْتَاتَا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا  
عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبْرَكَةٌ  
طَيِّبَةٌ ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ  
تَعْقِلُونَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللهِ  
وَرَسُولِهِ ۖ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَى أَمْرٍ جَامِعٍ لَمْ  
يَذْهَبُوا حَتَّى يَسْتَأْذِنُوا مِنَ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ  
أُولَئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَرَسُولِهِ ۖ فَإِذَا  
اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأَذَنْ لِمَنْ شِئْتَ  
مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝



63. अपने बीच रसूल के बुलाने को तुम आपस में एक-दूसरे जैसा बुलाना न समझना। अल्लाह उन लोगों को भली-भाँति जानता है जो तुममें से ऐसे हैं कि (एक-दूसरे की) आड़ लेकर चुपके से खिसक जाते हैं। अतः उनको, जो उसके आदेश की अवहेलना करते हैं, डरना चाहिए कि कहीं ऐसा न हो कि उनपर कोई आज्रमाइश आ पड़े या उनपर कोई दुखद यातना आ जाए।

64. सुन लो ! आकाशों और धरती में जो कुछ भी है, अल्लाह का है। वह जानता है तुम जिस (नीति) पर हो। और जिस दिन वे उसकी ओर पलटेंगे, तो जो कुछ उन्होंने किया होगा वह उन्हें बता देगा। अल्लाह तो हर चीज़ को जानता है।



## 25. अल-फ़ुरक़ान

(मक्का में उतरी— आयतें 77)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. बड़ी बरकतवाला है वह जिसने यह फ़ुरक़ान<sup>1</sup> अपने बन्दे पर अवतरित किया, ताकि वह सारे संसार के लिए सावधान करनेवाला हो।

2. वह जिसका राज्य है आकाशों और धरती पर, और उसने न तो किसी को अपना बेटा बनाया और न राज्य में उसका कोई साझी है। उसने हर चीज़ को पैदा किया; फिर उसे ठीक अन्दाज़े पर रखा।

1. अर्थात् सत्य और असत्य का अन्तर स्पष्ट करनेवाली किताब।



3. फिर भी उन्होंने उससे हटकर ऐसे इष्ट-पूज्य बना लिए जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते, बल्कि वे स्वयं पैदा किए जाते हैं। उन्हें न तो अपनी हानि का अधिकार प्राप्त है और न लाभ का। और न उन्हें मृत्यु का अधिकार प्राप्त है और न जीवन का और न दोबारा जीवित होकर उठने का।

4. जिन लोगों ने इनकार किया उनका कहना है : "यह तो बस मनघड़त है जो उसने स्वयं ही घड़ लिया है। और कुछ दूसरे लोगों ने इस काम में उसकी सहायता की है।" वे तो जुल्म और झूठ ही के ध्येय से आए।

5. कहते हैं : "ये अगलों की कहानियाँ हैं, जिनको उसने लिख लिया है तो वही उसके पास प्रभात काल और संध्या समय लिखाई जाती हैं।"

6. कहो : "उसे अवतरित किया है उसने, जो आकाशों और धरती के रहस्य जानता है। निश्चय ही वह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।"

7. उनका यह भी कहना है : "इस रसूल को क्या हुआ कि यह खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है? क्यों न इसकी ओर कोई फ़रिश्ता उतरा कि वह इसके साथ रहकर सावधान करता ?

8. या इसकी ओर कोई खज़ाना ही डाल दिया जाता या इसके पास कोई बाग़ होता, जिससे यह खाता।" और इन ज़ालिमों का कहना है : "तुम लोग तो





बस एक ऐसे व्यक्ति के पीछे चल रहे हो जो जादू का मारा हुआ है !”

9. देखो, उन्होंने तुमपर कैसी-कैसी फन्नियाँ कसीं। तो वे बहक गए हैं। अब उनमें इसकी सामर्थ्य नहीं कि कोई मार्ग पा सकें !

10. बरकतवाला है वह, जो यदि चाहे तो तुम्हारे लिए इससे भी उत्तम प्रदान करे, बहुत-से बाग़ जिनके नीचे नहरें बह रही हों, और तुम्हारे लिए बहुत-से महल तैयार कर दे।

11. नहीं, बल्कि बात यह है कि वे लोग क्रियामत की घड़ी को झुठला चुके हैं। और जो उस घड़ी को झुठला दे, उसके लिए हमने दहकती आग तैयार कर रखी है।

12. जब वह उनको दूर से देखेगी तो वे उसके बिफरने और साँस खींचने की आवाज़ें सुनेंगे।

13. और जब वे उसकी किसी तंग जगह जकड़े हुए डाले जाएँगे, तो वहाँ विनाश को पुकारने लगेंगे।

14. (कहा जाएगा : ) “आज एक विनाश को मत पुकारो, बल्कि बहुत-से विनाशों को पुकारो !”

15. कहो : “यह अच्छा है या वह शाश्वत जन्नत, जिसका वादा डर रखनेवालों से किया गया है ? यह उनका बदला और अंतिम मंज़िल होगी।”

تَفَكَّرُوا

تَفَكَّرُوا

وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّضْمُورًا  
أَنْظَرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا  
فَلَا يَسْتَظْهِمُونَ سَبِيلًا ۚ سَبْرَكَ الَّذِي  
إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِنْ ذَلِكَ جَنَّاتٍ  
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَيَجْعَلُ لَكَ  
قُصُورًا ۝ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا  
لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۖ إِذَا رَأَتْهُمْ  
مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَ  
رَفِيرًا ۖ وَإِذَا أَلْقَاوْهَا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُقَرَّبِينَ  
دَعَا هُنَالِكَ شُورًا ۚ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ شُورًا  
وَاحِدًا وَادْعُوا شُورًا كَثِيرًا ۚ قُلْ أَذَلِكَ خَيْرٌ  
أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ  
لَهُمْ جَزَاءً وَاصِيًّا ۖ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ

مَذَل



16. उनके लिए उसमें वह सबकुछ होगा, जो वे चाहेंगे। उसमें वे सदैव रहेंगे। यह तुम्हारे रब के ज़िम्मे एक ऐसा वादा है जो प्रार्थनीय है।

17. और जिस दिन उन्हें इकट्ठा किया जाएगा और उनको भी जिन्हें वे अल्लाह को छोड़कर पूजते हैं, फिर वह कहेगा : "क्या मेरे बन्दों को तुमने पथभ्रष्ट किया था या वे स्वयं मार्ग छोड़ बैठे थे?"

18. वे कहेंगे : "महान और उच्च है तू! यह हमसे नहीं हो सकता था कि तुझे छोड़कर दूसरे संरक्षक बनाएँ। किन्तु हुआ यह कि तूने उन्हें और उनके बाप-दादा को अत्यधिक सुख-सामग्री दी, यहाँ तक कि वे अनुस्मृति को भुला बैठे और विनष्ट होनेवाले लोग होकर रहे।"

19. अतः इस प्रकार वे तुम्हें उस बात में, जो तुम कहते हो झूठा ठहराए हुए हैं। अब न तो तुम यातना को फेर सकते हो और न कोई सहायता ही पा सकते हो। जो कोई तुममें से ज़ुल्म करे उसे हम बड़ी यातना का मज़ा चखाएँगे।

20. और तुमसे पहले हमने जितने रसूल भी भेजे हैं, वे सब खाना खाते और बाज़ारों में चलते फिरते थे। हमने तो तुम्हें परस्पर एक को दूसरे के लिए आजमाइश बना दिया है : "क्या तुम धैर्य दिखाते हो?" तुम्हारा रब तो सबकुछ देखता है।

الْقُرْآن

کِنَ الْفَتَہ

خَلِيدِينَ ۖ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا ۝ وَ  
يَوْمَ يَخْلَسُ مِنْهُمْ مِمَّا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ  
فَيَقُولُ ۖ أَأَنْتُمْ أَصْلَلْتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ  
هُمْ صَلَّوْا السَّبِيلَ ۚ قَالُوا سُبْحَنَكَ مَا كَانَ  
يَنْبَغِي لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ  
أُولَٰئِكَ وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَأَبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا  
الذِّكْرَ ۖ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ۝ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ  
بِمَا تَقُولُونَ ۖ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا  
وَمَنْ يَظْلِمِ مَنَاجِمَ نَذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ۝  
وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا  
إِنَّهُمْ كَيَّا كِلُونَ الطَّعَامَ وَ يَمْشُونَ فِي  
الْأَسْوَاقِ ۖ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً  
ۚ أَنْصَبُوا ۖ وَكَانَ رَبُّكَ بِبُخِيلٍ

مَنَاجِمَ



21. जिन्हें हमसे मिलने की आशंका नहीं, वे कहते हैं : "क्यों न फ़रिश्ते हमपर उतरे या फिर हम अपने रब को देखते?" उन्होंने अपने जी में बड़ा घमण्ड किया और बड़ी सरकशी पर उतर आए।

22. जिस दिन वे फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन अपराधियों के लिए कोई खुशखबरी न होगी और वे पुकार उठेंगे "पनाह ! पनाह ! !"

23. हम बढ़ेंगे उस कर्म की ओर जो उन्होंने किया होगा और उसे उड़ती धूल कर देंगे।

24. उस दिन जन्नतवाले ठिकाने की दृष्टि से अच्छे होंगे और आरामगाह की दृष्टि से भी अच्छे होंगे।

25. उस दिन आकाश एक बादल के साथ फटेगा और फ़रिश्ते भली प्रकार उतारे जाएंगे।

26. उस दिन वास्तविक राज्य रहमान का होगा और वह दिन इनकार करनेवालों के लिए बड़ा ही मुश्किल होगा।

27. उस दिन अत्याचारी अपने हाथ चबाएगा। कहेगा : "ऐ काश ! मैंने रसूल के साथ मार्ग अपनाया होता !

28. हाय मेरा दुर्भाग्य ! काश, मैंने अमुक व्यक्ति को मित्र न बनाया होता !

29. उसने मुझे भटकाकर अनुस्मृति से विमुख कर दिया, इसके पश्चात कि वह मेरे पास आ चुकी थी। शैतान तो समय पर मनुष्य का साथ छोड़ ही देता है।"

30. रसूल कहेगा : "ऐ मेरे रब ! निस्संदेह मेरी क़ौम के लोगों ने इस कुरआन

وَالَّذِينَ لَا يَرْجُونَ عَذَابَ اللَّهِ الْكَبِيرِ ۚ  
الْمَلِكُ أَوْ تَرَىٰ رَبَّنَا ۖ لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ  
وَعَتَوْا عُتُوًّا كَبِيرًا ۖ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَ  
يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حَجْرًا مَّحْجُورًا وَقَدْ مَنَّا  
إِلَىٰ مَا عَمِلْنَا مِنْ غَمَلٍ نَجْمَنَّهُ هَبَاءً مَنْثُورًا أَهْضَبُ  
الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا ۖ وَيَوْمَ  
نُثْقِقُ السَّمَاءَ بِالسَّعَابِ وَنُزِّلُ الْمَلَائِكَةَ تَنْزِيلًا ۚ  
أَلَمْ نَكُنْ يَوْمَئِذٍ الْحَقَّ لِلرَّحْمَنِ ۖ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى  
الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ۖ وَيَوْمَ يَعْصُ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ  
يَقُولُ يُلَيِّتُنِي أَخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ۖ يُؤْيِلُنِي  
لَيْتَنِي لَمْ أَخَذْ فَلَانًا خَلِيلًا ۖ لَقَدْ أَصَلَّنِي عَنِ  
الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ  
خَذُولًا ۖ وَقَالَ الرَّسُولُ يَرَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا

مَزَلًا



को व्यर्थ बकवास की चीज़ ठहरा लिया था ।”

31. और इसी तरह हमने अपराधियों में से प्रत्येक नबी के लिए शत्रु बनाया । मार्गदर्शन और सहायता के लिए तो तुम्हारा रब ही काफ़ी है ।

32. और जिन लोगों ने इनकार किया उनका कहना है कि “उसपर पूरा कुरआन एक ही बार में क्यों नहीं उतरा ?” ऐसा इसलिए किया गया ताकि हम इसके द्वारा तुम्हारे दिल को मज़बूत रखें और हमने इसे एक उचित क्रम में रखा ।

33. और जब कभी भी वे तुम्हारे पास कोई आक्षेप की बात लेकर आएँगे तो हम तुम्हारे पास पक्की-सच्ची चीज़ ले आएँगे ! इस दशा में कि वह स्पष्टीकरण की दृष्टि से उत्तम है ।

34. जो लोग औंधे मुँह जहन्नम की ओर ले जाए जाएँगे वही स्थान की दृष्टि से बहुत बुरे हैं, और मार्ग की दृष्टि से भी बहुत भटके हुए हैं ।

35. हमने मूसा को किताब प्रदान की और उसके भाई हारून को सहायक के रूप में उसके साथ किया ।

36. और कहा कि “तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया है ।” अन्ततः हमने उन लोगों को विनष्ट करके रख दिया ।

37. और नूह की क़ौम को भी, जब उन्होंने रसूलों को झुठलाया तो हमने उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए उन्हें एक निशानी बना दिया, और उन ज़ालिमों के लिए हमने एक दुखद यातना तैयार कर रखी है ।

38-39. और आद और समूद और अर-रस्सवालों और उस बीच की बहुत-सी नस्लों को भी विनष्ट किया । प्रत्येक के लिए हमने मिसालें बयान

الْقُرْآنِ

تَكَلَّمَ بِهِ

هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ۝ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ  
عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِينَ ۝ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ هَادِيًّا وَنَصِيرًا ۝  
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً  
وَاحِدَةً ۚ كَذَلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ وَرَتَّلْنَاهُ  
تَرْتِيلًا ۝ وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ  
تَفْسِيرًا ۝ الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ  
جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝ وَلَقَدْ  
آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَارُونَ  
وَرِيزًا ۝ فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا  
بِآيَاتِنَا فَدَمَّرْنَاهُمْ تَدْمِيرًا ۝ وَقَوْمُ نُوحٍ لَّمَّا كَذَبُوا  
الرَّسْلَ أَغْرَقْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ آيَةً ۚ وَأَعْتَدْنَا  
لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ وَعَادًا وَثَمُودًا ۚ وَأَصْحَابَ  
الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَلِكَ كَثِيرًا ۚ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ

مَثَلًا



कीं। अन्ततः प्रत्येक को हमने पूरी तरह विध्वस्त कर दिया।

40. और उस बस्ती पर से तो वे हो आए हैं जिसपर बुरी वर्षा बरसी; तो क्या वे उसे देखते नहीं रहे हैं? नहीं, बल्कि वे दोबारा जीवित होकर उठने की आशा ही नहीं रखते रहे हैं।

41. वे जब भी तुम्हें देखते हैं तो तुम्हारा मज़ाक़ बना लेते हैं कि "क्या यही है, जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है?"

42. इसने तो हमें भटकाकर हमको हमारे प्रभु-पूज्यों से फेर ही दिया होता, यदि हम उनपर

मज़बूती से ज़म न गए होते।" शीघ्र ही वे जान लेंगे जब वे यातना को देखेंगे, कि कौन मार्ग से बहुत भटक गया था।

43. क्या तुमने उसको भी देखा, जिसने अपना प्रभु अपनी (तुच्छ) इच्छा को बना रखा है? तो क्या तुम उसका ज़िम्मा ले सकते हो।

44. या तुम समझते हो कि उनमें अधिकतर सुनते और समझते हैं? वे तो बस चौपायों की तरह हैं, बल्कि उनसे भी अधिक पथभ्रष्ट!

45. क्या तुमने अपने रब को नहीं देखा कि कैसे फैलाई छाया? यदि वह चाहता तो उसे स्थिर रखता। फिर हमने सूर्य को उसका पता देनेवाला बनाया,

46. फिर हम उसको धीरे-धीरे अपनी ओर समेट लेते हैं।

47. वही है जिसने रात्रि को तुम्हारे लिए वस्त्र और निद्रा को सर्वथा विश्राम एवं शांति बनाया और दिन को जी उठने का समय बनाया।

48. और वही है जिसने अपनी दयालुता (वर्षा) के आगे-आगे हवाओं को शुभ सूचना बनाकर भेजता है, और हम ही आकाश से स्वच्छ जल

الْقُرْآنِ

الْقُرْآنِ

الْأَمْثَالِ وَكُلًّا تَبَرْنَا تَبِيرًا ۖ وَلَقَدْ أَنزَلْنَا عَلَى الْقَرْيَةِ  
الَّتِي أَمْطَرْنَا مَطَرًا نَسْوًا أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرْتَوْنها ۚ بَلْ  
كَانُوا لَا يَتَذَكَّرُونَ نَشُورًا ۖ وَإِذَا رَأَوْكَ إِذَا يَقْضُونَكَ  
إِلَّا هُزُوءًا هَذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ۖ إِنْ كَادَ  
لَيُضِلَّنَا عَنْ الْهَدْيِ لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ  
يَعْلَمُونَ حِينَ يَأْتُونَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلَّ سَبِيلًا ۚ  
أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ ۚ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ  
وَكِيلًا ۚ أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ  
إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۚ أَلَمْ نَعْرِ  
إِلَى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا  
تَحْتِ الْجَعَلْنَا الشَّمْسُ عَلَيْهِ دَلِيلًا ۚ ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا  
قَبْضًا يَسِيرًا ۚ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا  
وَالنُّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ۚ وَهُوَ الَّذِي

مِثْلَهُ



उतारते हैं।

49. ताकि हम उसके द्वारा निर्जीव भू-भाग को जीवन प्रदान करें और उसे अपने पैदा किए हुए बहुत-से चौपायों और मनुष्यों को पिलाएँ।

50. उसे हमने उनके बीच विभिन्न ढंग से पेश किया है, ताकि वे ध्यान दें। परन्तु अधिकतर लोगों ने इनकार और अकृतज्ञता के अतिरिक्त दूसरी नीति अपनाने से इनकार ही किया।

51. यदि हम चाहते तो हर बस्ती में एक डरानेवाला भेज देते।

52. अतः इनकार करनेवालों की बात न मानना और इस (कुरआन) के द्वारा उनसे जिहाद करो, बड़ा जिहाद ! (जी तोड़ कोशिश)

53. वही है जिसने दो समुद्रों को मिलाया। यह स्वादिष्ट और मीठा है और यह खारी और कड़ुआ। और दोनों के बीच उसने एक परदा डाल दिया है और एक पृथक् करनेवाली रोक रख दी है।

54. और वही है जिसने पानी से एक मनुष्य पैदा किया। फिर उसे वंशगत सम्बन्धों और ससुराली रिश्तेवाला बनाया। तुम्हारा रब बड़ा ही सामर्थ्यवान है।

55. अल्लाह से इतर वे उनको पूजते हैं जो न उन्हें लाभ पहुँचा सकते हैं और न ही उन्हें हानि पहुँचा सकते हैं। और ऊपर से यह भी कि इनकार करनेवाला अपने रब का विरोधी और उसके मुक्काबले में दूसरों का सहायक बना हुआ है।

56-57. और हमने तो तुमको शुभ-सूचना देनेवाला और सचेतकर्ता बनाकर भेजा है। कह दो : "मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता सिवाय इसके कि जो कोई चाहे अपने रब की ओर ले जानेवाला मार्ग अपना ले।"

58. और उस अल्लाह पर भरोसा करो जो जीवन्त और अमर है और उसका

الفرقان

سورة الفرقان

أَنسَلِ الزَّيْجَ بَشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۖ وَأَنزَلْنَا مِنَ  
السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ۚ لِنُغْيَ بِهِ بَلَدَةً تَيْثًا وَسُقْيَا ۚ  
مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا وَأَنَاسِي كَثِيرًا ۖ وَلَقَدْ صَرَّفْنَاهُ  
بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا ۚ فَأَبَى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ۖ وَكَوْ  
شِلْنَا لِبَعْضِنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ تَذْيِيرًا ۚ فَلَا تُطِيعُ الْكَافِرِينَ  
وَجَاهِدْهُمْ بِهِ جَهَادًا كَبِيرًا ۚ وَهُوَ الَّذِي مَرَّبَّ الْبَصِيرِينَ  
هَذَا عَذَابٌ قَرِيبٌ ۖ وَهَذَا مِثْلُ آبٍ ۖ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا  
بَرْزَخًا وَجَهْرًا مَّخْجُورًا ۚ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ  
بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ۚ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ۖ وَ  
يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۚ وَكَانَ  
الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَ  
تَذْيِيرًا ۚ قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ شَاءَ  
أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۚ وَتَوَكَّلْ عَلَىٰ الْحَيِّ الَّذِي

سُورَةُ



गुणगान करो। वह अपने बन्दों के गुनाहों की खबर रखने के लिए काफ़ी है,

59. जिसने आकाशों और धरती को और जो कुछ उन दोनों के बीच है छह दिनों में पैदा किया, फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। रहमान है वह! अतः पूछो उससे जो उसकी खबर रखता है।

60. उन लोगों से जब कहा जाता है कि "रहमान को सजदा करो" तो वे कहते हैं : "और रहमान क्या होता है? क्या जिसे तू हमसे कह दे उसी को हम सजदा करने लगे?" और यह चीज़ उनकी घृणा को और बढ़ा देती है।

61. बड़ी बरकतवाला है वह, जिसने आकाश में बुर्ज (नक्षत्र, बनाए और उसमें एक चिराग और एक चमकता चाँद बनाया।

62. और वही है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आनेवाला बनाया, उस व्यक्ति के लिए (निशानी) जो चेतना चाहे या कृतज्ञ होना चाहे।

63. रहमान के (प्रिय) बन्दे वही हैं जो धरती पर नम्रतापूर्वक चलते हैं और जब जाहिल उनके मुँह आएँ तो कह देते हैं : "तुमको सलाम!"

64. जो अपने रब के आगे सजदे में और खड़े रातें गुज़ारते हैं;

65. जो कहते हैं कि "ऐ हमारे रब! जहन्नम की यातना को हमसे हटा दे।" निश्चय ही उसकी यातना चिमटकर रहनेवाली है।

66. निश्चय ही वह जगह ठहरने की दृष्टि से भी बुरी है और स्थान की दृष्टि से भी।

67. जो खर्च करते हैं तो न तो अपव्यय करते हैं और न ही तंगी से काम

لَا مَمُوتَ وَسَيَتُوحَدُّ ۖ وَكَفَىٰ بِهِ يَذُنُوبَ عِبَادٍ ۖ خَبِيرًا ۝  
الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ  
أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَنُ فَسَلِّمْ  
خَبِيرًا ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا  
الرَّحْمَنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ تُغَوَّاتٍ ۚ تَبَرُّكُ  
الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَ  
قَمَرًا مُنِيرًا ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً  
لِّمَن أَرَادَ أَن يَذْكُرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ۝ وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ  
الَّذِينَ يَسْتَوُونَ عَلَى الْأَرْضِ مُوقِنًا ۖ وَإِذَا خَاطَبَهُمُ  
الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ۝ وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ  
سُجَّدًا وَقِيَامًا ۝ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا  
عَذَابَ جَهَنَّمَ ۚ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۚ إِنَّهَا سَاءَتْ  
مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝ وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا



लेते हैं, बल्कि वे इनके बीच मध्यमार्ग पर रहते हैं।

68. जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे इष्ट-पूज्य को नहीं पुकारते और न नाहक किसी जीव को जिस (के क़त्ल) को अल्लाह ने हaram किया है, क़त्ल करते हैं। और न वे व्यभिचार करते हैं—जो कोई यह काम करे वह गुनाह के वबाल से दोचार होगा।

69. क्रियामत के दिन उसकी यातना बढ़ती चली जाएगी। और वह उसी में अपमानित होकर स्थायी रूप से पड़ा रहेगा।

70. सिवाय उसके जो पलट आया

और ईमान लाया और अच्छा कर्म किया, तो ऐसे लोगों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा। और अल्लाह है भी अत्यन्त क्षमाशील, दयावान।

71. और जिसने तौबा की और अच्छा कर्म किया, तो निश्चय ही वह अल्लाह की ओर पलटता है, जैसा कि पलटने का हक़ है।

72. जो किसी झूठ और असत्य में सम्मिलित नहीं होते और जब किसी व्यर्थ के कामों के पास से गुज़रते हैं, तो श्रेष्ठतापूर्वक गुज़र जाते हैं,

73-74. जो ऐसे हैं कि जब उनके रब की आयतों के द्वारा उन्हें याददिलहानी कराई जाती है तो उन (आयतों) पर वे अंधे और बहरे होकर नहीं गिरते।<sup>1</sup> और जो कहते हैं : “ऐ हमारे रब ! हमें हमारी अपनी पत्नियों और हमारी अपनी संतान से आँखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें डर रखनेवालों का नायक बना दे।”

75. यही वे लोग हैं जिन्हें, इसके बदले में कि वे जमे रहे, उच्च भवन प्राप्त होगा, तथा ज़िन्दाबाद और सलाम से उनका वहाँ स्वागत होगा।

الَّذِينَ

نَقَالَ الَّذِينَ

وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ۝ وَالَّذِينَ لَا  
يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي  
حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۝ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ  
أَثَامًا ۝ يُضْعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَيُغْلَدُ  
فِيهِ مُهَابًا ۝ إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا  
فَأُولَئِكَ يَبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۝ وَكَانَ اللَّهُ  
عَفُورًا رَحِيمًا ۝ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ  
إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ۝ وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا  
بِالْغُفُورِ مَرُّوا كِرَامًا ۝ وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ  
لَمْ يَخْرُجُوا عَلَيْهَا ضَحًا وَعُمُيَانًا ۝ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ  
رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا ذُرِّيَّتًا قَرَّةَ أَعْيُنٍ وَ  
اجْعَلْ لَنَا لِمَتَّقِينَ إِمَامًا ۝ أُولَئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ  
مِمَّا صَبَّوْا وَيَلْقَوْنَ فِيهَا زَوْجَاتٍ مُطَهَّرَاتٍ ۝

مَنْ

1. अर्थात् वे अल्लाह की आयतों को सुनते और उनसे पूरा-पूरा फ़ायदा उठाते हैं।



76. वहाँ वे सदैव रहेंगे। बहुत ही अच्छी है वह ठहरने की जगह और स्थान।

77. कह दो : "मेरे रब को तुम्हारी कोई परवाह नहीं अगर तुम (उसको) न पुकारो। अब जबकि तुम झुठला चुके हो, तो शीघ्र ही वह चीज़ चिमट जानेवाली होगी।"

## 26. अश-शुअरा

(मक्का में उतरी—आयतें 227)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ता० सीन० मीम०।
2. ये स्पष्ट किताब की आयतें हैं।
3. शायद इसपर कि वे ईमान नहीं लाते, तुम अपने प्राण ही खो बैठोगे।
4. यदि हम चाहें तो उनपर आकाश से एक निशानी उतार दें। फिर उनकी गर्दन उससे आगे झुकी रह जाएँ।
5. उनके पास रहमान की ओर से जो नवीन अनुस्मृति भी आती है, वे उससे मुँह फेर ही लेते हैं।
6. अब जबकि वे झुठला चुके हैं, तो शीघ्र ही उन्हें उसकी हकीकत मालूम हो जाएगी, जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते रहे हैं।
- 7-8. क्या उन्होंने धरती को नहीं देखा कि हमने उसमें कितने ही प्रकार की उमदा चीज़ें पैदा की हैं? निश्चय ही इसमें एक बड़ी निशानी है, इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।
9. और निश्चय ही तुम्हारा रब ही है जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।





10-11. और जबकि तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा कि “जालिम लोगों के पास जा—फ़िरऔन की क़ौम के पास—क्या वे डर नहीं रखते?”

12. उसने कहा : “ऐ मेरे रब ! मुझे डर है कि वे मुझे झुठला देंगे,

13. और मेरा सीना घुटता है और मेरी ज़बान नहीं चलती। इसलिए हाज़रून की ओर भी संदेश भेज दे।

14. और मुझपर उनके यहाँ के एक गुनाह का बोझ भी है। इसलिए मैं डरता हूँ कि वे मुझे मार डालेंगे।”

15. कहा : “कदापि नहीं, तुम दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ। हम तुम्हारे साथ हैं, सुनने को मौजूद हैं।

16-17. अतः तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो कि ‘हम सारे संसार के रब के भेजे हुए हैं कि तू इसराईल की संतान को हमारे साथ जाने दे’।”

18. (फ़िरऔन ने) कहा : “क्या हमने तुझे जबकि तू बच्चा था, अपने यहाँ पाला नहीं था? और तू अपनी अवस्था के कई वर्षों तक हममें रहा,

19. और तूने अपना वह काम किया, जो किया। तू बड़ा ही कृतघ्न है।”

20. कहा : “ऐसा तो मुझसे उस समय हुआ जबकि मैं चूक गया था।

21. फिर जब मुझे तुम्हारा भय हुआ तो मैं तुम्हारे यहाँ से भाग गया। फिर मेरे रब ने मुझे निर्णय-शक्ति प्रदान की और मुझे रसूलों में सम्मिलित किया।

22. यही वह उदार अनुग्रह है जिसका एहसान तू मुझपर जताता है कि तूने इसराईल की संतान को गुलाम बना रखा है।”

23. फ़िरऔन ने कहा : “और यह सारे संसार का रब क्या होता है?”

24. उसने कहा : “आकाशों और धरती का रब और जो कुछ इन दोनों के मध्य

مُشْتَرِكِهِ

قَالَ رَبِّي

الْعَالَمِينَ ۖ قَوْمُ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُونَ ۚ قَالَ رَبِّ  
إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَلِّمُونِي ۚ وَيُضَيِّقُوا صَدْرِي ۚ وَلَا  
يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأُرْسِلُ إِلَى هَرُونَ ۚ وَلَهُمْ عَلَى  
ذُنُوبٍ فَكَخَافُ أَنْ يُقَاتِلُونِي ۚ قَالَ كَلَّا ۖ فَادْهَبَا  
بِنَايَتِنَا إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَمِعُونَ ۚ فَاتَّبَعَا فِرْعَوْنَ فَقَوْلَا  
إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ أَنْ أَرْسِلَ مَعَنَا بَنِي  
إِسْرَءِيلَ ۖ قَالَ أَلَمْ تُرَبِّنَا ذَيْنَا وَلِيْنَا ۖ وَلَيْسَتْ  
فِيْنَا مِنْ عَمْرِكَ سَمِينٌ ۚ وَفَعَلْتَ فَعَلْتِكَ الْفَعْلُ  
فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۚ قَالَ فَعَلْتُمَا إِذَا وَآنَا  
مِنَ الضَّالِّينَ ۚ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبُ  
لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۚ وَتِلْكَ  
نِعْمَةٌ مِّنْهُمَا عَلَى أَنْ عَبَدْتَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ قَالَ  
فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۚ قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ

مَرْوَى



है उसका भी, यदि तुम्हें यक़ीन हो।”

25. उसने अपने आस-पास वालों से कहा: “क्या तुम सुनते नहीं हो?”

26. कहा: “तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप-दादा का रब।”

27. बोला: “निश्चय ही तुम्हारा यह रसूल, जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, बिल्कुल ही पागल है।”

28. उसने कहा: “पूर्व और पश्चिम का रब और जो कुछ उनके बीच है उसका भी, यदि तुम कुछ बुद्धि रखते हो।”

29. बोला: “यदि तूने मेरे सिवा किसी और को पूज्य एवं प्रभु बनाया, तो मैं तुझे बन्दी बनाकर रहूँगा।”

30. उसने कहा: “क्या यदि मैं तेरे पास एक स्पष्ट चीज़ ले आऊँ तब भी?”

31. बोला: “अच्छा, वह ले आ; यदि तू सच्चा है।”

32. फिर उसने अपनी लाठी डाल दी, तो अचानक क्या देखते हैं कि वह एक प्रत्यक्ष अजगर है।

33. और उसने अपना हाथ बाहर खींचा तो फिर क्या देखते हैं कि वह देखनेवालों के सामने चमक रहा है।

34. उसने अपने आस-पास के सरदारों से कहा: “निश्चय ही यह एक बड़ा ही प्रवीण जादूगर है।

35. चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी अपनी भूमि से निकाल बाहर करे; तो अब तुम क्या कहते हो?”

36-37. उन्होंने कहा: “इसे और इसके भाई को अभी टाले रखिए, और एकत्र करनेवालों को नगरों में भेज दीजिए कि वे प्रत्येक प्रवीण जादूगर को आपके पास ले आएँ।”

38. अतएव एक निश्चित दिन के नियत समय पर जादूगर एकत्र कर लिए गए।

وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ۝ قَالَ لَنْ  
خَوْلَهُ إِلَّا نَسْمُوعُونَ ۝ قَالَ رَبُّكُمْ رَبُّ آبَائِكُمْ  
الْأَوَّلِينَ ۝ قَالَ إِنْ رَسُولُكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ  
لَمَجْنُونٌ ۝ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا  
إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ۝ قَالَ لَئِنْ أَخَذْتُ إِلَهًا غَيْرِي  
لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُودِينَ ۝ قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ  
مُّبِينٍ ۝ قَالَ فَأْتِ بِهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝  
فَأَلْفَ عَصَاةٍ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۝ وَنَزَعَ يَدَهُ  
فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنّٰظِرِينَ ۝ قَالَ لِمَوْلَا خَوْلَهُ إِنْ  
هَذَا السّٰحِرُ عَلِيمٌ ۝ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَنْعَامِكُمْ  
بِحِجْرَةٍ ۝ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ۝ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَبْعَثْ  
فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۝ يَا تَوَكُّلْ بِكُلِّ شَعْبٍ عَلَيْهِمْ  
فَجِئِمَ السّٰحِرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝ وَقِيلَ



39. और लोगों से कहा गया :  
“क्या तुम भी एकत्र होते हो ?”

40. कदाचित हम जादूगरों ही के अनुयायी रह जाएँ, यदि वे विजयी हुए।

41. फिर जब जादूगर आए तो उन्होंने फिरऔन से कहा : “क्या हमारे लिए कोई प्रतिदान भी है, यदि हम प्रभावी रहे ?”

42. उसने कहा : “हाँ, और निश्चय ही तुम तो उस समय निकटतम लोगों में से हो जाओगे।”

43. मूसा ने उनसे कहा : “डालो, जो कुछ तुम्हें डालना है।”

44. तब उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डाल दीं और बोले : “फिरऔन के प्रताप से हम ही विजयी रहेंगे।”

45. फिर मूसा ने अपनी लाठी फेंकी तो क्या देखते हैं कि वह उस स्वाँग को, जो वे रचाते थे, निगलती जा रही है।

46. इसपर जादूगर सजदे में गिर पड़े।

47. वे बोल उठे : “हम सारे संसार के रब पर ईमान ले आए—

48. मूसा और हारून के रब पर !”

49. उसने कहा : “तुमने उसको मान लिया, इससे पहले कि मैं तुम्हें अनुमति देता। निश्चय ही वह तुम सबका प्रमुख है, जिसने तुमको जादू सिखाया है। अच्छा, शीघ्र ही तुम्हें मालूम हुआ जाता है ! मैं तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से कटवा दूँगा और तुम सभी को सूली पर चढ़ा दूँगा।”

50. उन्होंने कहा : “कुछ हरज नहीं; हम तो अपने रब ही की ओर पलटकर जानेवाले हैं।

51. हमें तो इसी की लालसा है कि हमारा रब हमारी खताओं को क्षमा कर

وَقَالَ لِّلَّذِينَ

وَقَالَ لِّلَّذِينَ

لِّلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُجْتَمِعُونَ ۚ لَعَلَّكُمْ أَنْتِبِ السَّحَرَةَ  
إِنْ كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ۖ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا  
إِغْرِمُونَا بِرَبِّكَ لِأَجْرٍ إِنْ كُنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبِينَ ۖ  
قَالَ نَعَمْ وَإِنِّكُمْ إِذَا إِلَهَ الْمُقَرَّبِينَ ۖ قَالَ لَهُمْ مُوسَى  
الْقَوَامَ أَنْتُمْ مُلْقَوْنَ ۖ فَالْقُوا حَبَالَهُمْ وَعَصِيَّتَهُمْ  
وَقَالُوا بِعِزَّةِ رَبِّكَ فَارْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ۖ فَأُلْقِيَ  
مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثَلْجٌ مُّاءٍ يَنفُكُونَ ۖ فَأُلْقِيَ  
السَّحَرَةُ سُجُودِينَ ۖ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ  
رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ۖ قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ  
أُذِنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَيْدٌ كَرِيمٌ ۚ الَّذِي عَلَّمَكَ السَّحَرَ  
فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ لَا قُطْعَانَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِمَّنْ  
خِلَافٍ وَلَا وَصِيَّتَكُمْ أَجْمَعِينَ ۖ قَالُوا لَا ضَيْرَ  
إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۖ إِنَّا نَنْظُرُ أَنْ يُغْفَرَ لَنَا

مَنْ



दे, क्योंकि हम सबसे पहले ईमान लाए।”

52. हमने मूसा की ओर प्रकाशना की : “मेरे बन्दों को लेकर रातों-रात निकल जा। निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जाएगा।”

53-56. इसपर फिरऔन ने एकत्र करनेवालों को नगरों में भेजा कि “यह गिरे-पड़े थोड़े लोगों का एक गिरोह है, और ये हमें क्रुद्ध कर रहे हैं। और हम चौकन्ना रहनेवाले लोग हैं।”

57-58. इस प्रकार हम उन्हें बागों और स्रोतों और खजानों और अच्छे स्थान से निकाल लाए।

59. ऐसा ही हम करते हैं और इनका वारिस हमने इसराईल की संतान को बना दिया।

60. सुबह-तड़के उन्होंने उनका पीछा किया।

61. फिर जब दोनों गिरोहों ने एक-दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा : “हम तो पकड़े गए !”

62. उसने कहा : “कदापि नहीं, मेरे साथ मेरा रब है। वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा।”

63. तब हमने मूसा की ओर प्रकाशना की : “अपनी लाठी सागर पर मार।” तो वह फट गया और (उसका) प्रत्येक टुकड़ा एक बड़े पहाड़ की भाँति हो गया।

64. और हम दूसरों को भी निकट ले आए।

65. हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ थे, बचा लिया।

66. और दूसरों को डुबो दिया।

67. निस्संदेह इसमें एक बड़ी निशानी है। इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।

مُشَرَّاه

وَمَا كَانَ لِلَّذِينَ

رَبَّنَا خَطِئْنَا أَنْ كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَأَوْحَيْنَا  
إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي إِنَّكَ مُتَّبَعُونَ ۖ  
فَأَرْسَلْ فِرْعَوْنَ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۖ إِنَّ هَؤُلَاءِ  
لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ۖ وَأَنَّهُمْ لَنَا لَآفَاطُونَ ۖ وَ  
إِنَّا لَجَمِيعٌ خَالِدُونَ ۖ فَأَخْرَجْنَهُمْ مِنْ جَنَّتِ وَ  
عَيْوُنَ ۖ وَكُنُوزَ وَمَقَامِرَ كَرِيمٍ ۖ كَذَٰلِكَ ۖ وَ  
أَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ فَاتَّبَعُوهُمْ مُشْرِقِينَ ۖ  
فَلَمَّا تَرَاءَ الْأَجْمَعِينَ قَالَ أَصْحَابُ مُوسَىٰ إِنَّا لَمَذْكُورُونَ ۖ  
قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۖ فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ  
مُوسَىٰ أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ  
فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ۖ وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْأَخْرِينَ ۖ وَ  
أَنجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ۖ ثُمَّ أَعْرَفْنَا  
الْأَخْرِينَ ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ

مَذْكُورِينَ



68. और निश्चय ही तुम्हारा रब ही है जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

69-70. और उन्हें इबराहीम का वृत्तान्त सुनाओ, जबकि उसने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा : "तुम क्या पूजते हो ?"

71. उन्होंने कहा : "हम बुतों की पूजा करते हैं, हम तो उन्हीं की सेवा में लगे रहेंगे।"

72. उसने कहा : "क्या ये तुम्हारी सुनते हैं, जब तुम पुकारते हो,

73-76. या ये तुम्हें कुछ लाभ या हानि पहुँचाते हैं ?" उन्होंने कहा : "नहीं, बल्कि हमने तो अपने

बाप-दादा को ऐसा ही करते पाया है।" उसने कहा : "क्या तुमने उनपर विचार भी किया कि जिन्हें तुम पूजते हो, तुम और तुम्हारे पहले के बाप-दादा ?

77. वे सब तो मेरे शत्रु हैं, सिवाय सारे संसार के रब के,

78. जिसने मुझे पैदा किया और फिर वही मेरा मार्गदर्शन करता है।

79. और वही है जो मुझे खिलाता और पिलाता है।

80. और जब मैं बीमार होता हूँ, तो वही मुझे अच्छा करता है।

81. और वही है जो मुझे मारेगा, फिर मुझे जीवित करेगा।<sup>1</sup>

82. और वही है जिससे मुझे इसकी आकांक्षा है कि बदला दिए जाने के दिन वह मेरी ख़ता माफ़ कर देगा।

83-84. ऐ मेरे रब ! मुझे निर्णय-शक्ति प्रदान कर और मुझे योग्य लोगों के साथ मिला। और बाद के आनेवालों में मुझे सच्ची ख्याति प्रदान कर।

85. और मुझे नेमत भरी जन्नत के वारिसों में सम्मिलित कर।

أَشْرَفَ

قَالَ الْوَيْلُ

مُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ وَاشْتَ  
عَلَيْهِمْ نَبَأُ إِبْرَاهِيمَ ۖ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ۖ  
قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَّلُهَا عِصْفِينَ ۖ قَالَ هَلْ  
يَسْمَعُونَكُمُ إِذْ تَدْعُونَ ۖ أَوْ يَنْفَعُوكُمُ أَوْ يَضُرُّونَ ۖ  
قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ۖ قَالَ  
أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۖ أَنْتُمْ وَ آبَاؤُكُمْ  
الْأَقْدَمُونَ ۖ فَأَنْتُمْ عَدُوٌّ لِيَ إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ۖ  
الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ۖ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَ  
يَسْقِينِي ۖ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِي ۖ وَالَّذِي  
يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِي ۖ وَالَّذِي أَطْعَمُنِي أَنْ يَقْدِرَ لِيَ  
خُبْرِي يَوْمَ الدِّينِ ۖ رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَارْحَمْنِي  
بِالصُّلَحِينَ ۖ وَاجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي  
الْآخِرِينَ ۖ وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ۖ

سَبَّحَهُ

1. यह अनुवाद भी कर सकते हैं : "जो मुझे मारता और जीवित करता है।"



86. और मेरे बाप को क्षमा कर दे। निश्चय ही वह पथभ्रष्ट लोगों में से है।

87-88. और मुझे उस दिन रुसवा न कर, जब लोग जीवित करके उठाए जाएँगे। जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद,

89. सिवाय इसके कि कोई भला-चंगा दिल लिए हुए अल्लाह के पास आया हो।”

90. और डर रखनेवालों के लिए जन्नत निकट लाई जाएगी।

91. और भड़कती आग पथभ्रष्ट लोगों के लिए प्रकट कर दी जाएगी।

92-93. और उनसे कहा जाएगा :

“कहाँ हैं वे जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते रहे हो? क्या वे तुम्हारी कुछ सहायता कर रहे हैं या अपना ही बचाव कर सकते हैं?”

94-95-96. फिर वे उसमें औंधे झोंक दिए जाएँगे, वे और बहके हुए लोग और इबलीस की सेनाएँ, सबके सब। वे वहाँ आपस में झगड़ते हुए कहेंगे :

97. “अल्लाह की क़सम ! निश्चय ही हम खुली गुमराही में थे।

98. जबकि हम तुम्हें सारे संसार के रब के बराबर ठहरा रहे थे।

99. और हमें तो बस उन अपराधियों ने ही पथभ्रष्ट किया।

100-101. अब न हमारा कोई सिफ़ारिशी है, और न घनिष्ठ मित्र।

102. क्या ही अच्छा होता कि हमें एक बार फिर पलटना होता, तो हम मोमिनों में से हो जाते !”

103. निश्चय ही इसमें एक बड़ी निशानी है। इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।

104. और निस्संदेह तुम्हारा रब ही है जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

105. नूह की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया;

الشُّعَرَاءُ

قَالَ لَهُمْ

وَأَعْرِضْ لِرَبِّكَ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الصَّاحِلِينَ ۝ وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ۝ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ۝ إِلَّا مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝ وَأَزْلَفَتْ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝ وَبُزْزِيتِ الْجَحِيمُ لِلْغَوِينَ ۝ وَقِيلَ لَكُمْ أَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۝ مِنْ دُونِ اللَّهِ هَلْ يَنْصُرُكُمْ أَوْ يُنْصِرُونَ ۝ فَكَلْبُوا فِيهَا هُمْ وَالْعَاوَنَ ۝ وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ۝ قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ۝ تَأْتُوا مِنْ لَدُنْهِ صَلْبًا مُمِيتًا ۝ إِذْ تُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَمَا أَصْلَكُمْ إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ۝ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ۝ وَلَا صِدِّيقٍ حَمِيمٍ ۝ فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةٌ فَنُكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۝ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ

مَنْ



106. जबकि उनसे उनके भाई नूह ने कहा : “क्या तुम डर नहीं रखते ?

107. निस्संदेह मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ ।

108. अतः अल्लाह का डर रखो और मेरा कहा मानो ।

109. मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता । मेरा बदला तो बस सारे संसार के रब के ज़िम्मे है ।

110. अतः अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा का पालन करो ।”

111. उन्होंने कहा : “क्या हम तेरी बात मान लें, जबकि तेरे पीछे तो अत्यन्त नीच लोग चल रहे हैं ?”

112-113-114-115. उसने कहा :

“मुझे क्या मालूम कि वे क्या करते रहे हैं ? उनका हिसाब तो बस मेरे रब के ज़िम्मे है । क्या ही अच्छा होता कि तुममें चेतना होती । और मैं ईमानवालों को धुत्कारनेवाला नहीं हूँ । मैं तो बस स्पष्ट रूप से एक सावधान करनेवाला हूँ ।”

116. उन्होंने कहा : “यदि तू बाज़ न आया ऐ नूह, तो तू संगसार<sup>1</sup>-होकर रहेगा ।”

117. उसने कहा : “ऐ मेरे रब ! मेरी क़ौम के लोगों ने तो मुझे झुठला दिया ।

118. अब मेरे और उनके बीच दो टूक फ़ैसला कर दे और मुझे और जो ईमानवाले मेरे साथ हैं, उन्हें बचा ले !”

119. अतः हमने उसे और जो उसके साथ भरी हुई नौका में थे बचा लिया ।

120. और उसके पश्चात शेष लोगों को डुबो दिया ।

121. निश्चय ही इसमें एक बड़ी निशानी है । इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं ।

122. और निस्संदेह तुम्हारा रब ही है जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है ।

الْقَارُونَ

تَقَالِ الْقَتِيلَ

لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَّا تَتَّقُونَ ؕ إِنِّي لَكُم رَسُولٌ  
أَوِّينَ ؕ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا أَنزَلْنَا عَلَيْكُمْ  
وَمِنَ الْجِبْرِ إِنَّ أَخِي الْأَعْلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ؕ فَاتَّقُوا  
اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ وَاتَّبِعَا  
الْأَرْذَلُونَ ؕ قَالَ وَمَا عَلَيَّ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ؕ  
إِنْ حَسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ؕ وَمَا أَنَا  
بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ؕ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ؕ قَالُوا  
لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ يَنُوحًا يَنُوحُ لَنَكُونَنَّ مِنَ الْمُتَّبِعِينَ ؕ  
قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّابُونَ ؕ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ  
فَصًّا وَتَجَنَّبْ مِنِّي وَأَمَّا قَوْمِي مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ؕ فَانجِيْنَهُ  
وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ؕ ثُمَّ أَعْرَفْنَا بِعَدُوِّ  
الْبَاقِينَ ؕ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ  
مُؤْمِنِينَ ؕ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُو الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ؕ كَذَّابَتْ

مَرْيَمَ



123. आद ने रसूलों को झुठलाया ।

124. जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा : “क्या तुम डर नहीं रखते ?

125. मैं तो तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ ।

126. अतः तुम अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा मानो ।

127-128 मैं इस काम पर तुमसे कोई प्रतिदान नहीं माँगता । मेरा प्रतिदान तो बस सारे संसार के रब के ज़िम्मे है । क्या तुम प्रत्येक उच्च स्थान पर व्यर्थ एक स्मारक का निर्माण करते रहोगे ?

عَادُ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ هُودُ ۖ أَكَلَا  
تَشْقُونَ ۖ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَ  
أَطِيعُوا ۖ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجُورِي  
إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ أَتَنْبُونَ كُلَّ رِيعٍ أُيِّتَ  
تَغِيثُونَ ۖ وَتَخَذُونَ مِصَالَةً لَّكُمْ تَعْلُدُونَ ۖ  
وَإِذَا بَطِشْتُمْ بَطِشْتُمْ جَبَّارِينَ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَ  
أَطِيعُوا ۖ وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْمَلُونَ ۖ  
أَمَدَّكُمْ بِالْعَاصِ وَبَيْنِينَ ۖ وَجَنَّتْ وَعْيُوتٌ ۖ سَارَتْ  
أَجْفَافٌ عَلَيْهِمْ ۖ عَذَابٌ يَوْمَ عَظِيمٍ ۖ قَالُوا سَوَاءٌ  
عَلَيْنَا أَوْعَلَّتْ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَعَّادِينَ ۖ وَإِنْ هَذَا  
إِلَّا خُلُقٌ الْأَوَّلِينَ ۖ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ ۖ فَكَذَّبُوهُ  
فَأَهْلَكْنَاهُمْ ۖ إِنْ فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ  
مُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ كَذَّبَتْ

129. और भव्य महल बनाते रहोगे, मानो तुम्हें सदैव रहना है ?

130. और जब किसी पर हाथ डालते हो तो बिलकुल निर्दय अत्याचारी बनकर हाथ डालते हो !

131. अतः अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा का पालन करो ।

132. उसका डर रखो जिसने तुम्हें वे चीज़ें पहुँचाईं जिनको तुम जानते हो ।

133. उसने तुम्हारी सहायता की चौपायों और बेटों से,

134. और बागों और स्रोतों से ।

135. निश्चय ही मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन की यातना का भय है ।”

136-137. उन्होंने कहा : “हमारे लिए बराबर है चाहे तुम नसीहत करो या नसीहत करनेवाले न बनो । यह तो बस पहले लोगों की पुरानी आदत है ।

138. और हमें कदापि यातना न दी जाएगी ।”

139. अन्ततः उन्होंने उन्हें झुठला दिया तो हमने उनको विनष्ट कर दिया । बेशक इसमें एक बड़ी निशानी है । इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं ।

140. और बेशक तुम्हारा रब ही है, जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है ।



141. समूद ने रसूलों को झुठलाया,

142. जबकि उसके भाई सालेह ने उनसे कहा : “क्या तुम डर नहीं रखते ?

143. निस्संदेह मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ ।

144. अतः तुम अल्लाह का डर रखो और मेरी बात मानो ।

145. मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता । मेरा बदला तो बस सारे संसार के सब के ज़िम्मे है ।

146. क्या तुम यहाँ जो कुछ है उसके बीच, निश्चिन्त छोड़ दिए जाओगे,

كَشَرَك

فَقَالَ لَدِينِهِ

تَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ ضَلِيمٌ ۖ لَا تَتَّبِعُونَهُ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونَ ۖ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَنْجِرْتُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هُمْنًا أُمْنِينَ ۖ فِي جَنَّتٍ وَعُيُونٍ ۖ وَزُرُوعٍ وَ تُخَيْلٍ طَلْعُهَا هَضْبٌ ۖ وَتَنْحَوْنَ مِنَ الْجِبَالِ يَتُوتًا فَرِهِينَ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونَ ۖ وَلَا تُطِيعُوا أَهْلَ السُّرُوفِينَ ۖ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ۖ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَخَّرِينَ ۖ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا ۖ فَأْتِ بِآيَةٍ ۖ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۖ قَالَ هَذِهِ نَاقَةٌ لَهَا شِرْبٌ وَلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَعْلُومٍ ۖ وَلَا تَنْسَوْهَا يَوْمَ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۖ فَعَقَرُوهَا فَانْجَبُوا نَذِيرِينَ ۖ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۖ

مَذَلَّة

147-148. बागों और स्रोतों और खेतों और उन खजूरों में जिनके गुच्छे तरो ताज़ा और गुँथे हुए हैं ?

149. तुम पहाड़ों को काट-काटकर इतराते हुए घर बनाते हो ?

150. अतः अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा का पालन करो-।

151-152. और उन हद से गुज़र जानेवालों की आज्ञा का पालन न करो, जो धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं, और सुधार का काम नहीं करते ।”

153-154. उन्होंने कहा : “तू तो बस जादू का मारा हुआ है । तू बस हमारे ही जैसा एक आदमी है । यदि तू सच्चा है, तो कोई निशानी ले आ ।”

155. उसने कहा : “यह ऊँटनी है । एक दिन पानी पीने की बारी इसकी है और एक नियत दिन की बारी पानी लेने की तुम्हारी है ।

156. तकलीफ़ पहुँचाने के लिए इसे हाथ न लगाना, अन्यथा एक बड़े दिन की यातना तुम्हें आ लेगी ।”

157. किन्तु उन्होंने उसकी कूचें काट दीं । फिर पछताते रह गए ।

158. अन्ततः यातना ने उन्हें आ दबोचा । निश्चय ही इसमें एक बड़ी निशानी



है। इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।

159. और निस्संदेह तुम्हारा रब ही है जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

160. लूत की क़ौम के लोगों ने रसूलों को झुठलाया;

161. जबकि उनके भाई लूत ने उनसे कहा : “क्या तुम डर नहीं रखते ?

162. मैं तो तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।

163. अतः अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा का पालन करो।

164. मैं इस काम पर तुमसे कोई प्रतिदान नहीं माँगता, मेरा प्रतिदान तो बस सारे संसार के रब के ज़िम्मे है।

165. क्या सारे संसारवालों में से तुम ही ऐसे हो जो पुरुषों के पास जाते हो,

166. और अपनी पत्नियों को, जिन्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए पैदा किया, छोड़ देते हो ? इतना ही नहीं, बल्कि तुम हद से आगे बढ़े हुए लोग हो।”

167. उन्होंने कहा : “यदि तू बाज़्र न आया, ऐ लूत ! तो तू अवश्य ही निकाल बाहर किया जाएगा।”

168-169. उसने कहा : “मैं तुम्हारे कर्म से अत्यन्त विरक्त हूँ। ऐ मेरे रब ! मुझे और मेरे लोगों को, जो कुछ ये करते हैं उसके परिणाम से, बचा ले।”

170-171. अन्ततः हमने उसे और उसके सारे लोगों को बचा लिया; सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रह जानेवालों में थी।

172-173. फिर शेष दूसरे लोगों को हमने विनष्ट कर दिया। और हमने उनपर एक बरसात बरसाई। और यह चेताए हुए लोगों की बहुत ही बुरी वर्षा थी।

174. निश्चय ही इसमें एक बड़ी निशानी है। इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।

اشعرا

سورة الشعرا

إِن فِي ذَلِكَ لَآيَةً، وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُونَ ۖ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا أَنفَلَكُم عَلَيْهِ مِنْ خَيْرٍ ۖ إِنِّي أَخَذْتُ الْعَالَمِينَ ۖ أَتَأْتُونَ الذَّكَرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ۖ وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رِبَّكُمْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ۖ قَالُوا لَيْنَ لَمْ تَنْتَهَ يَلُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ۖ قَالَ إِنِّي لَعَلَّكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ۖ رَبِّ يَخْفَىٰ وَأَهْلِي بِمَا يَعْلَمُونَ ۖ فَنَجِّنْهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۖ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَيْرِينَ ۖ ثُمَّ دَفَرْنَا الْآخَرِينَ ۖ وَآمَظْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً، وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ

سورة



175. और निश्चय ही तुम्हारा रब बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

176. अल-ऐकावालों ने रसूलों को झुठलाया।

177. जबकि शुऐब ने उनसे कहा : "क्या तुम डर नहीं रखते ?

178. मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।

179. अतः अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा का पालन करो।

180. मैं इस काम पर तुमसे कोई प्रतिदान नहीं माँगता। मेरा प्रतिदान तो बस सारे संसार के रब के ज़िम्मे है।

رَبِّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ كَذَّبَ أَصْحَابُ لَيْكَةِ  
الرُّسُلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝  
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝  
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ  
الْعَالَمِينَ ۝ أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝  
وزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۝ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ  
أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ وَ  
اتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأُولَى ۝ قَالُوا  
إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝ وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا  
وَلَنْ نُظْنُكَ لَيْسَ الْكَذِبِينَ ۝ فَاسْقِطْ عَلَيْنا كِسْفًا  
مِّنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّ  
اعْلَمْ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ فَلَذَّبُوهُ فَاتَّخَذَهُمْ عَذَابُ  
يَوْمِ الظُّلُمِ ۖ إِنَّهُ كَانَ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ إِنَّ

181. तुम पूरा-पूरा पैमाना भरो और घाटा न दो।

182. और ठीक तराजू से तौलो।

183. और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दो और धरती में बिगाड़ और फ़साद मचाते मत फिरो।

184. उसका डर रखो जिसने तुम्हें और पिछली नस्लों को पैदा किया है।"

185. उन्होंने कहा : "तू तो बस जादू का मारा हुआ है।

186. और तू बस हमारे ही जैसा एक आदमी है और हम तो तुझे झूठा समझते हैं।

187. फिर तू हमपर आकाश का कोई टुकड़ा गिरा दे, यदि तू सच्चा है।"

188. उसने कहा : "मेरा रब भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।"

189. किन्तु उन्होंने उसे झुठला दिया। फिर छायावाले दिन<sup>1</sup> की यातना ने आ लिया। निश्चय ही वह एक बड़े दिन की यातना थी।

1. यातना छाया अर्थात् बादलों के रूप में प्रकट हुई थी।



190. निस्संदेह इसमें एक बड़ी निशानी है। इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।

191. और निश्चय ही तुम्हारा रब ही है, जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

192. निश्चय ही यह (कुरआन) सारे संसार के रब की अवतरित की हुई चीज़ है।

193-195. इसको स्पष्ट अरबी भाषा में लेकर तुम्हारे हृदय पर एक विश्वसनीय आत्मा उतरी है, ताकि तुम सावधान करनेवाले हो।

196. और निस्संदेह यह पिछले लोगों की किताबों में भी मौजूद है।

197. क्या यह उनके लिए कोई निशानी नहीं है कि इसे बनी इसराईल के विद्वान जानते हैं?

198. यदि हम इसे ग़ैर अरबी भाषी पर भी उतारते,

199. और वह इसे उन्हें पढ़कर सुनाता तब भी वे इसे माननेवाले न होते।

200. इसी प्रकार हमने इसे अपराधियों के दिलों में पैठाया है।

201. वे इसपर ईमान लाने को नहीं, जब तक कि दुखद यातना न देख लें।

202. फिर जब वह अचानक उनपर आ जाएगी और उन्हें खबर भी न होगी,

203. तब वे कहेंगे : "क्या हमें कुछ मुहलत मिल सकती है?"

204. तो क्या वे लोग हमारी यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं?

205. क्या तुमने कुछ विचार किया? यदि हम उन्हें कुछ वर्षों तक सुख भोगने दें;

206. फिर उनपर वह चीज़ आ जाए, जिससे उन्हें डराया जाता रहा है;

207. तो जो सुख उन्हें मिला होगा वह उनके कुछ काम न आएगा।

الْقُرْآنِ

تَقَالِ الْقُرْآنِ

فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ، وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ  
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ  
رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ۖ عَلَى  
قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ۖ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ  
مُسَبِّحٍ ۖ وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ۖ أَوَلَمْ يَكُنْ  
لَهُمْ آيَةٌ أَنْ يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ وَلَوْ  
نَزَّلْنَاهُ عَلَى بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ۖ فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا  
كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ۖ كَذَلِكَ سَكَنَهُ فِي قُلُوبِ  
الْمُجْرِمِينَ ۖ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّى يَرَوُا الْعَذَابَ  
الْكَلِيمَ ۖ فَيَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ  
فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُونَ ۖ أَفَسِعَدَابُنَا  
يَنْتَعِجُونَ ۖ أَفَرَأَيْتَ إِنْ مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ۖ ثُمَّ  
جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ۖ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ تَاكَاثُرُهَا

سَلَامَةٍ



208-209. हमने किसी बस्ती को भी इसके बिना विनष्ट नहीं किया कि उसके लिए सचेत करनेवाले याददिहानी के लिए मौजूद रहे हैं। हम कोई ज़ालिम नहीं हैं।

210-211. इसे शैतान लेकर नहीं उतरे हैं। न यह उन्हें फबता ही है और न ये उनके बस का ही है।

212. वे तो इसके सुनने से भी दूर रखे गए हैं।

213. अतः अल्लाह के साथ दूसरे इष्ट-पूज्य को न पुकारना, अन्यथा तुम्हें भी यातना दी जाएगी।

214. और अपने निकटतम नातेदारों को सचेत करो।

215. और जो ईमानवाले तुम्हारे अनुयायी हो गए हैं, उनके लिए अपनी भुजाएँ बिछाए रखो।

216. किन्तु यदि वे तुम्हारी अवज्ञा करें तो कह दो : “जो कुछ तुम करते हो, उसकी ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूँ।”

217-218. और उस प्रभुत्वशाली और दया करनेवाले पर भरोसा रखो जो तुम्हें देख रहा होता है, जब तुम खड़े होते हो।

219. और सजदा करनेवालों में तुम्हारी चलत-फिरत को भी वह देखता है।

220. निस्संदेह वह भली-भाँति सुनता-जानता है।

221. क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किसपर उतरते हैं ?

222. वे प्रत्येक ढोंग रचनेवाले गुनाहगार पर उतरते हैं।

223. वे कान लगाते हैं और उनमें से अधिकतर झूठे होते हैं।

224. रहे कवि, तो उनके पीछे बहके हुए लोग ही चला करते हैं।——

225. क्या तुमने देखा नहीं कि वे हर घाटी में बहके फिरते हैं,

226. और कहते वह हैं जो करते नहीं?——

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾  
 ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا تَنْفَعُ الشَّيْطَانُ  
 وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَلْبِغُونَ ﴿٢١٠﴾ إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ  
 لَعَمْرُؤُنَّ ﴿٢١١﴾ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَاوَنُوا  
 مِنَ الْمَعْدِنِ ﴿٢١٢﴾ وَالَّذِي عَشِيرَتُكَ الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٣﴾  
 وَلِخَفِضِ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٤﴾  
 فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنَّي بِرَبِّكُمْ أَتَعْمَلُونَ ﴿٢١٥﴾ وَتَوَكَّلْ  
 عَلَى الْعَرْشِ الرَّحِيمِ ﴿٢١٦﴾ الَّذِي يَرِيكَ جِبْنَ تَقُومُوا وَ  
 تَقْلُبُكَ فِي السَّجْدِينَ ﴿٢١٧﴾ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢١٨﴾ هَلْ  
 أَبَدْتُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيْطَانُ ﴿٢١٩﴾ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ  
 أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٠﴾ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ كَذِبُونَ ﴿٢٢١﴾  
 وَالشُّعْرَاءَ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٢﴾ أَلَمْ تَرَأَهُمْ فِي كُلِّ  
 وَادٍ يَهْمُونَ ﴿٢٢٣﴾ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٤﴾



227. वे नहीं जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और अल्लाह को अधिक याद किया। और इसके बाद कि उनपर जुल्म किया गया तो उन्होंने उसका प्रतिकार किया और जिन लोगों ने जुल्म किया, उन्हें जल्द ही मालूम हो जाएगा कि वे किस जगह पलटते हैं।

## 27. अन-नम्ल

(मक्का में उतरी— आयतें 93)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ता० सीन०। ये आयतें हैं कुरआन और एक स्पष्ट किताब की।

2. मार्गदर्शन है और शुभ-सूचना उन ईमानवालों के लिए,

3. जो नमाज़ का आयोजन करते हैं और ज़कात देते हैं और वही हैं जो आखिरत पर विश्वास रखते हैं।

4. रहे वे लोग जो आखिरत को नहीं मानते, उनके लिए हमने उनकी करतूतों को शोभायमान बना दिया है। अतः वे भटकते फिरते हैं।

5. वही लोग हैं, जिनके लिए बुरी यातना है और वही हैं जो आखिरत में अत्यन्त घाटे में रहेंगे।

6. निश्चय ही तुम यह कुरआन एक बड़े तत्त्वदर्शी, ज्ञानवान (प्रभु) की ओर से पा रहे हो।

7. याद करो जब मूसा ने अपने घरवालों से कहा कि "मैंने एक आग-सी देखी है। मैं अभी वहाँ से तुम्हारे पास कोई खबर लेकर आता हूँ या तुम्हारे





पास कोई दहकता अंगार लाता हूँ ताकि तुम तापो।”

8. फिर जब वह उसके पास पहुँचा तो उसे आवाज़ आई कि “मुबारक है वह, जो इस आग में है और जो इसके आस-पास है। महान और उच्च है अल्लाह, सारे संसार का रब !

9. ऐ मूसा ! वह तो मैं अल्लाह हूँ, अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी !

10. तू अपनी लाठी डाल दे।” जब मूसा ने देखा कि वह बल खा रही है जैसे वह कोई साँप हो, तो वह पीठ फेरकर भागा और पीछे मुड़कर न देखा। “ऐ मूसा ! डर मत। निस्संदेह रसूल मेरे पास डरा नहीं करते,

11. सिवाय उसके जिसने कोई ज़्यादती की हो। फिर बुराई के पश्चात उसे भलाई से बदल दिया, तो मैं भी बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान हूँ।

12. अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल। वह बिना किसी खराबी के उज्ज्वल चमकता निकलेगा। ये नौ निशानियों में से हैं फिरौन और उसकी क्रौम की ओर भेजने के लिए। निश्चय ही वे अवज्ञाकारी लोग हैं।”

13. किन्तु जब आँखें खोल देनेवाली हमारी निशानियाँ उनके पास आई तो उन्होंने कहा : “यह तो खुला हुआ जादू है।”

14. उन्होंने जुल्म और सरकशी से उनका इनकार कर दिया, हालाँकि उनके जी को उनका विश्वास हो चुका था। अब देख लो इन बिगाड़ पैदा करनेवालों का क्या परिणाम हुआ ?

15. हमने दाऊद और सुलैमान को बड़ा ज्ञान प्रदान किया था, (उन्होंने उसके

بِشَہَابٍ قَبَسٍ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهَا  
نُوحِي أَنْ بُعِثَ مِنْ فِي النَّارِ وَمَنْ خَوْلَاهَا وَ  
سُجِنَ اللَّهُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ يُمُوسَى إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ  
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَالْقَصَاكَ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَزُّ  
كَأَنَّمَا جَانٌّ وَلَمْ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۝ يُمُوسَى  
لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدُنِّي الْمَهْلُوكُونَ ۝ إِلَّا  
مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حِسًّا بَعْدَ سُوءٍ فَلَا فِي غَفْوَرٍ  
رَحْمَتِي ۝ وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخَرُّجَ بَيْضَاءَ  
مِنْ غَيْرِ سُوءٍ فِي آيَاتٍ إِلَى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ ۝  
إِنَّهُمْ كَانُوا أَقْوَمًا فَسِقَاتِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ آيَاتُنَا  
مُبْصِرَةً قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ وَبَجَدُوا بِهَا  
وَأَسْتَيْقِنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلُمًا وَعُلُوًّا فَانْظُرْ كَيْفَ  
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ



महत्त्व को जाना) और उन दोनों ने कहा : “सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है<sup>1</sup>, जिसने हमें अपने बहुत-से ईमानवाले बन्दों के मुकाबले में श्रेष्ठता प्रदान की।”

16. दाऊद का उत्तराधिकारी सुलैमान हुआ और उसने कहा : “ऐ लोगो ! हमें पक्षियों की बोली सिखाई गई है और हमें हर चीज़ दी गई है। निस्संदेह यह स्पष्ट बड़ाई है।”

17. सुलैमान के लिए जिन और मनुष्य और पक्षियों में से उसकी सेनाएँ एकत्र की गईं फिर उनकी दर्जाबन्दी की जा रही थी।

18. यहाँ तक कि जब वे चींटियों की घाटी में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा : “ऐ चींटियो ! अपने घरों में प्रवेश कर जाओ। कहीं सुलैमान और उसकी सेनाएँ तुम्हें कुचल न डालें और उन्हें एहसास भी न हो।”

19. तो वह उसकी बात पर प्रसन्न होकर मुस्कराया और कहा : “मेरे रब ! मुझे संभाले रख कि मैं तेरी उस कृपा पर कृतज्ञता दिखाता रहूँ जो तूने मुझपर और मेरे माँ-बाप पर की है। और यह कि अच्छा कर्म करूँ जो तुझे पसन्द आए और अपनी दयालुता से मुझे अपने अच्छे बन्दों में दाखिल कर।”

20. उसने पक्षियों की जाँच-पड़ताल की तो कहा : “क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूँ (वह यहीं कहीं है) या वह गायब हो गया है ?

الْقُرْآنُ

زَكَرِيَّا

وَسُلَيْمِنَ عِلْمًا. وَقَالَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي فَضَّلَنَا  
عَلَى كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَزَكَرِيَّا  
سُلَيْمِنَ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عَلِمْنَا مَنَاطِقَ  
الطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ  
الْمُبِينُ ۝ وَخُشِرَ لِسُلَيْمِنَ جُنُودُهُ مِنَ الرِّجَنِ وَ  
الْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا  
عَلَىٰ وَادِ النَّمْلِ ۖ قَالَتْ نَعْلُهُ يَا أَيُّهَا النَّمْلُ  
ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمْ ۖ لَا يَخْطُبُكُمْ سُلَيْمِنُ وَجُنُودُهُ ۖ  
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ فَنَسَبَ مَضْجَعًا مِّنْ قَوْلِهَا وَ  
قَالَ رَبِّ أَوْرِعْنِي أَن أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ  
عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَن أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ  
وَأُدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ۝ وَ  
تَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدُودَ ۖ أَمْ كَانِ

مَذْلُومًا







30. वह सुलैमान की ओर से है और वह यह है कि 'अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

31. यह कि मेरे मुक़ाबले में सरकशी न करो और आज्ञाकारी बनकर मेरे पास आओ।"

32. उसने कहा : "ऐ सरदारो ! मेरे मामले में मुझे परामर्श दो। मैं किसी मामले का फ़ैसला नहीं करती, जब तक कि तुम मेरे पास मौजूद न हो।"

33. उन्होंने कहा : "हम शक्तिशाली हैं, और हमें बड़ी युद्ध-क्षमता प्राप्त है। आगे मामले का अधिकार आपको है, अतः आप देख लें कि आपको क्या आदेश देना है।"

34. उसने कहा : "सम्राट जब किसी बस्ती में प्रवेश करते हैं, तो उसे खराब कर देते हैं और वहाँ के प्रभावशाली लोगों को अपमानित करके रहते हैं। और वे ऐसा ही करेंगे।

35. मैं उनके पास एक उपहार भेजती हूँ; फिर देखती हूँ कि दूत क्या उत्तर लेकर लौटते हैं।"

36. फिर जब वह सुलैमान के पास पहुँचा तो उसने (सुलैमान ने) कहा : "क्या तुम माल से मेरी सहायता करोगे, तो जो कुछ अल्लाह ने मुझे दिया है वह उससे कहीं उत्तम है, जो उसने तुम्हें दिया है ? बल्कि तुम्हीं लोग हो जो अपने उपहार से प्रसन्न होते हो !

37. उनके पास वापस जाओ। हम उनपर ऐसी सेनाएँ लेकर आएँगे, जिनका मुक़ाबला वे न कर सकेंगे और हम उन्हें अपमानित करके वहाँ से निकाल देंगे कि वे पस्त होकर रहेंगे।"

38. उसने (सुलैमान ने) कहा : "ऐ सरदारो ! तुममें कौन उसका सिंहासन

وَقَالَ الْمَلِكُ  
كُونُوا ۖ إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ  
الرَّحِيمِ ۖ أَلَا تَعْلَمُونَ عَلَىٰ وَأَتُونِي مُسْلِمِينَ ۚ قَالَتْ  
يَا أَيُّهَا الْمَلِكُ أَفْتُونِي فِي أَمْرِي ۖ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً  
أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ۖ قَالُوا نَحْنُ أَوْلَىٰ بِقُورٍ وَأُولُوا  
بِأَيْسَ شَدِيدٍ ۖ وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانْظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ۚ  
قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَ  
جَعَلُوا أَعْرَازَ أَهْلِهَا آذِلَّةً ۚ وَكَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ۚ  
وَأَتَىٰ مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ ۖ قَنْظَرَتْهُ بِمِ يَرْجِعُ  
الْمُرْسَلُونَ ۖ فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتَشْهَدُونَ  
بِمَالٍ ۚ قَالُوا نَحْنُ اللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّا أَتَيْتُكُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ  
بِهَدِيَّتِكُمْ أَفْرَحُونَ ۚ إِنْ رَجِعْ إِلَيْهِمْ فَعَلْنَا تَتَنَّهُمْ  
يَحْمُودٌ ۚ لَا قَبْلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِنْهَا آذِلَّةً  
وَهُمْ مُصْغَرُونَ ۚ قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلِكُ أَيُّكُمْ



लेकर मेरे पास आता है, इससे पहले कि वे लोग आज्ञाकारी होकर मेरे पास आएँ ?”

39. जिन्नों में से एक बलिष्ठ निर्भीक ने कहा : “मैं उसे आपके पास ले आऊँगा। इससे पहले कि आप अपने स्थान से उठें। मुझे इसकी शक्ति प्राप्त है और मैं अमानतदार भी हूँ।”

40. जिस व्यक्ति के पास किताब का ज्ञान था, उसने कहा : “मैं आपकी पलक झपकने से पहले उसे आपके पास लाए देता हूँ।” फिर जब उसने उसे अपने पास रखा हुआ देखा तो कहा :

“यह मेरे रब का उदार अनुग्रह है, ताकि वह मेरी परीक्षा करे कि मैं कृतज्ञता दिखाता हूँ या कृतघ्न बनता हूँ। जो कृतज्ञता दिखलाता है, तो वह अपने लिए ही कृतज्ञता दिखलाता है और वह जिसने कृतघ्नता दिखाई, तो मेरा रब निश्चय ही निस्पृह, बड़ा उदार है।”

41. उसने कहा कि : “उसके लिए उसके सिंहासन का रूप बदल दो। देखें वह वास्तविकता को पा लेती है या उन लोगों में से होकर रह जाती है, जो वास्तविकता को नहीं पाते।”

42. जब वह आई तो कहा गया : “क्या तुम्हारा सिंहासन ऐसा ही है ?” उसने कहा : “यह तो जैसे वही है, और हमें तो इससे पहले ही ज्ञान प्राप्त हो चुका था; और हम आज्ञाकारी हो गए थे।”

43. अल्लाह से हटकर वह दूसरे को पूजती थी। इसी चीज़ ने उसे रोक रखा था। निस्संदेह वह एक इनकार करनेवाली क्रौम में से थी।

44. उससे कहा गया कि : “महल में प्रवेश करो।” तो जब उसने उसे देखा

مَلِكًا

مَلِكًا

يَأْتِيَنِي بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ۝ قَالَ  
عَفْرَيْتُ مِنَ الْجِنَّ أَنَا أَتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ  
مِنْ مَقَامِكَ ۝ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٍّ أَمِينٌ ۝ قَالَ  
الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ  
أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۝ فَلَمَّا رَأَاهُ مُسْتَقَرًّا عِنْدَهُ  
قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِي رَبِّي تَلِيَهُ لَوْنِي ۝ أَشْكُرَ أَمْ  
أَكْفُرُ ۝ وَمَنْ شَكَرْنَا نَشْكُرْ لَهُ ۝ وَمَنْ كَفَرَ  
فَإِن رَّبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ ۝ قَالَ تَكَرُّوا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ  
أَتَهْتَدِي أَمْرًا تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ۝ فَلَمَّا  
جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا عَرْشُكَ ۝ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ ۝ وَ  
أَوْتَيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ۝ وَصَدَّهَا  
مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۝ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ  
كَافِرِينَ ۝ قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۝ فَلَمَّا رَأَتْهُ

مَلِكًا



तो उसने उसको गहरा पानी समझा और उसने अपनी दोनों पिंडलियाँ खोल दीं।<sup>1</sup> उसने कहा : "यह तो शीशे से निर्मित महल है।" बोली : "ऐ मेरे रब ! निश्चय ही मैंने अपने आपपर ज़ुल्म किया। अब मैंने सुलैमान के साथ अपने आपको अल्लाह के समर्पित कर दिया, जो सारे संसार का रब है।"

45. और समूद की ओर हमने उनके भाई सालेह को भेजा कि : "अल्लाह की बन्दगी करो।" तो क्या देखते हैं कि वे दो गिरोह होकर आपस में झगड़ने लगे।

46. उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम

के लोगो, तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचा रहे हो ? तुम अल्लाह से क्षमा याचना क्यों नहीं करते ? कदाचित तुमपर दया की जाए।

47. उन्होंने कहा : "हमने तुम्हें और तुम्हारे साथ वालों को अपशकुन पाया है।" उसने कहा : "तुम्हारा शकुन-अपशकुन तो अल्लाह के पास है, बल्कि बात यह है कि तुम लोग आज्रमाए जा रहे हो।"

48. नगर में नौ जत्थेदार थे जो धरती में बिगाड़ पैदा करते थे, सुधार का काम नहीं करते थे।

49. वे आपस में अल्लाह की क़समें खाकर बोले : "हम अवश्य उसपर और उसके घरवालों पर रात को छापा मारेगे। फिर उसके वली (परिजन) से कह देंगे कि हम उसके घरवालों के विनाश के अवसर पर मौजूद न थे। और हम बिलकुल सच्चे हैं।"

50. वे एक चाल चले और हमने भी एक चाल चली और उन्हें

وَقَالَ الَّذِينَ  
حَبِيبَتُهُ لُجَّةٌ وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ  
صَرَحٌ مُمَرَّدٌ مِنْ قَوَارِيرَ ۚ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ  
نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ  
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنْ  
اعْبُدُوا اللَّهَ ۚ فَإِذَا هُمْ فِرْقَانِ يَخْتَصِمُونَ ۖ  
قَالَ يَقُومُوا لِمَ تَسْعَجُونَ بِلِقَائِي ۖ قِيلَ  
الْحَسَنَةُ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۖ  
قَالُوا أَطِيعُوا بَكَ وَبَيْنَ مَعَكَ ۚ قَالَ ظَنُّكُمْ  
عِنْدَ اللَّهِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ۖ وَكَانَ فِي  
الْمَدِينَةِ نِسْعَةٌ رَهْطٌ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا  
يُصْلِحُونَ ۖ قَالُوا اتَّقُوا اللَّهَ يَا اللَّهُ لِنَبِيِّنَا  
أَهْلُهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ  
أَهْلِهِ ۚ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۖ وَمَكْرُؤًا مَكْرًا وَمَكْرُؤًا



खबर तक न हुई।

51. अब देख लो, उनकी चाल का कैसा परिणाम हुआ! हमने उन्हें और उनकी क़ौम—सबको विनष्ट करके रख दिया।

52. अब ये उनके घर उनके ज़ुल्म के कारण उजड़े पड़े हुए हैं। निश्चय ही इसमें एक बड़ी निशानी है उन लोगों के लिए जो जानना चाहें।

53. और हमने उन लोगों को बचा लिया, जो ईमान लाए और डर रखते थे।

54. और लूत को भी भेजा, जब उसने अपनी क़ौम के लोगों से कहा : “क्या तुम आँखों देखते हुए अश्लील कर्म करते हो ?

55. क्या तुम स्त्रियों को छोड़कर अपनी काम-तृप्ति के लिए पुरुषों के पास जाते हो ? बल्कि बात यह है कि तुम बड़े ही जाहिल लोग हो।”

56. परन्तु उसकी क़ौम के लोगों का उत्तर इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा : “निकाल बाहर करो लूत के घरवालों को अपनी बस्ती से। ये लोग सुथराई को बहुत पसंद करते हैं।”

57. अन्ततः हमने उसे और उसके घरवालों को बचा लिया सिवाय उसकी स्त्री के। उसके लिए हमने नियत कर दिया था कि वह पीछे रह जानेवालों में से होगी।

58. और हमने उनपर एक बरसात बरसाई और वह बहुत ही बुरी बरसात थी उन लोगों के हक़ में, जिन्हें सचेत किया जा चुका था।

59. कहो : “प्रशंसा अल्लाह के लिए है और सलाम है उसके उन बन्दों पर जिन्हें उसने चुन लिया। क्या अल्लाह अच्छा है या वे जिन्हें वे साझी ठहरा रहे हैं ?

مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ  
عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۝ أَنَا ذَمَرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ۝  
فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةٌ بِمَا ظَلَمُوا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ  
لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ وَانْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَ  
كَانُوا يَتَّقُونَ ۝ وَلَوْطَا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ  
الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْغِضُونَ ۝ أَأَنْتُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ  
شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّجْهَلُونَ ۝  
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُو آلَ لُوطٍ  
مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ۚ فَانْجَيْنَاهُ  
وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۚ قَدَرْنَاهَا مِّنَ الْغَافِرِينَ ۝ وَ  
أَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۚ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۚ  
قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ  
اضْطَفَى ۚ اللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ۚ

سُورَةُ



60. (तुम्हारे पूज्य अच्छे हैं) या वह जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और तुम्हारे लिए आकाश से पानी बरसाया; फिर उसके द्वारा हमने रमणीय उद्यान उगाए? तुम्हारे लिए सम्भव न था कि तुम उनके वृक्षों को उगाते। —क्या अल्लाह के साथ कोई और प्रभु-पूज्य है? नहीं, बल्कि वही लोग मार्ग से हटकर चले जा रहे हैं!

61. या वह जिसने धरती को ठहरने का स्थान बनाया और उसके बीच-बीच में नदियाँ बहाई और उसके लिए मज़बूत पहाड़

बनाए और दो समुद्रों के बीच एक रोक लगा दी। क्या अल्लाह के साथ कोई और प्रभु पूज्य है? नहीं, उनमें से अधिकतर जानते ही नहीं!

62. या वह जो व्यग्र की पुकार सुनता है, जब वह उसे पुकारे और तकलीफ़ दूर कर देता है और तुम्हें धरती में अधिकारी बनाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और पूज्य-प्रभु है? तुम ध्यान थोड़े ही देते हो।

63. या वह जो थल और जल के अँधेरों में तुम्हारा मार्गदर्शन करता है और जो अपनी दयालुता<sup>1</sup> के आगे हवाओं को शुभ-सूचना बनाकर भेजता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और प्रभु-पूज्य है? उच्च है अल्लाह, उस शिर्क से जो वे करते हैं।

64. या वह जो सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर उसकी पुनरावृत्ति भी करता है, और जो तुमको आकाश और धरती से रोज़ी देता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और प्रभु पूज्य है? कहो: “लाओ अपना प्रमाण, यदि तुम सच्चे हो।”

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ إِذَا أَثَارُوا الْأَرْضَ أَخْرَجَ لَهَا جَوْشَرَهَا وَإِنَّهُمْ لَرَوَايَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ إِذَا أَثَارُوا الْأَرْضَ أَخْرَجَ لَهَا جَوْشَرَهَا وَإِنَّهُمْ لَرَوَايَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ إِذَا أَثَارُوا الْأَرْضَ أَخْرَجَ لَهَا جَوْشَرَهَا وَإِنَّهُمْ لَرَوَايَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ إِذَا أَثَارُوا الْأَرْضَ أَخْرَجَ لَهَا جَوْشَرَهَا وَإِنَّهُمْ لَرَوَايَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

1. दयालुता से अभिप्रेत यहाँ वर्षा है।



65. कहो : “आकाशों और धरती में जो भी हैं, अल्लाह के सिवा किसी को भी परोक्ष का ज्ञान नहीं है। और न उन्हें इसकी चेतना प्राप्त है कि वे कब उठाए जाएंगे।”

66. बल्कि आखिरत के विषय में उनका ज्ञान पक्का हो गया है<sup>1</sup>, बल्कि ये उसकी ओर से कुछ संदेह में हैं, बल्कि वे उससे अंधे हैं।

67-68. जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं कि : “क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे और हमारे बाप-दादा भी, तो क्या वास्तव में हम (जीवित करके) निकाले जाएंगे? इसका वादा तो इससे पहले भी किया जा चुका है, हमसे भी और हमारे बाप-दादा से भी। ये तो बस पहले लोगों की कहानियाँ हैं।”

69. कहो कि : “धरती में चलो-फिरो और देखो कि अपराधियों का कैसा परिणाम हुआ।”

70-71. उनके प्रति शोकाकुल न हो और न उस चाल से दिल तंग हो, जो वे चल रहे हैं। वे कहते हैं : “यह वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो?”

72. कहो : “जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो बहुत सम्भव है कि उसका कोई हिस्सा तुम्हारे पीछे ही लगा हो।”

73. निश्चय ही तुम्हारा रब तो लोगों पर उदार अनुग्रह करनेवाला है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखाते।

74-75. निश्चय ही तुम्हारा रब भली-भाँति जानता है, जो कुछ उनके सीने छिपाए हुए हैं और जो कुछ वे प्रकट करते हैं। आकाश और धरती में छिपी कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो एक स्पष्ट किताब में मौजूद न हो।

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۖ بَلِ أَدْرَكَ عَلَيْهِمْ فِي الْأَخْرَاقِ ۖ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْهَا بَلْ هُمْ عَنْهَا غَمُونَ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاءُؤُنَا أَیْسًا نُنْخَرِجُونَ ۖ لَقَدْ وَعِدْنَا هَٰذَا نَحْنُ وَآبَاءُؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۖ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۖ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَلَّتٍ مِمَّا يَمْكُرُونَ ۖ وَيَقُولُونَ مَتَى هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ قُلْ عَسَى أَنْ يَكُونَ رَوْفٌ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا لَكُمْ صُدُّوهُمْ وَمَا يَعْلَمُونَ ۖ وَمَا مِنْ عِلَاقَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۖ وَإِنَّ هَٰذَا



76. निस्संदेह यह कुरआन इसराईल की संतान को अधिकतर ऐसी बातें खोलकर सुनाता है जिनके विषय में उनमें मतभेद है।

77. और निस्संदेह यह तो ईमानवालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है।

78. निश्चय ही तुम्हारा रब उनके बीच अपने हुक्म से फ़ैसला कर देगा। वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ है।

79. अतः अल्लाह पर भरोसा रखो। निश्चय ही तुम स्पष्ट सत्य पर हो।

80-81. तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो, जबकि वे पीठ देकर फिरे भी जा रहे हों। और न तुम अन्धों को उनकी गुमराही से हटाकर राह पर ला सकते हो। तुम तो बस उन्हीं को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाना चाहें। अतः वही आज्ञाकारी होते हैं।

82. और जब उनपर बात पूरी हो जाएगी, तो हम उनके लिए धरती का प्राणी सामने लाएँगे जो उनसे बातें करेगा कि "लोग हमारी आयतों पर विश्वास नहीं करते थे।"

83. और जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय में से एक गिरोह, ऐसे लोगों का जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं, घेर लाएँगे। फिर उनकी दर्जाबन्दी की जाएगी।

84. यहाँ तक कि जब वे आ जाएँगे तो वह कहेगा : "क्या तुमने मेरी आयतों को झुठलाया, हालाँकि अपने ज्ञान से तुम उनपर हावी न थे या फिर तुम क्या करते थे?"

85. और बात उनपर पूरी होकर रहेगी, इसलिए कि उन्होंने जुल्म किया। अतः वे कुछ बोल न सकेंगे।

النمل

النمل

الْقُرْآنَ يُقْضَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ  
يَخْتَلِفُونَ ۖ وَلَئِنَّ لَهْدَىٰ وَرَحْمَةً يَلْمُؤْمِنِينَ ۖ إِنَّ  
رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۖ  
فَتَوَخَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۖ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ  
الْمَوْتَى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۖ  
وَمَا أَنْتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَنْ ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِنَّ تُسْمِعُ إِلَّا  
مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْمِعُونَ ۖ وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ  
عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ مَقَابِرَهُمْ مِنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۖ أَنَّ  
النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۖ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ  
أُمَّةٍ فَوْجًا مِمَّنْ يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ۖ حَتَّىٰ  
إِذَا جَاءَهُمْ وَقَالَ أَكْذَبْتُمْ بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا  
أَمَّا أَنْ كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا  
ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَنْطِقُونَ ۖ الْحَرِيرُوا أَنَا جَعَلْنَا النَّيْلَ

مَذْلُومًا



86. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने रात को (अँधेरी) बनाया, ताकि वे उसमें शान्ति और चैन प्राप्त करें। और दिन को प्रकाशमान बनाया (कि उसमें काम करें)? निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो ईमान ले आएँ।

87. और खयाल करो जिस दिन सूर (नरसिंघा) में फूँक मारी जाएगी और जो आकाशों और धरती में हैं, घबरा उठेंगे, सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह चाहे— और सब कान दबाए उसके समक्ष उपस्थित हो जाएँगे।

88. और तुम पहाड़ों को देखकर समझते हो कि वे जमे हुए हैं, हालाँकि वे चल रहे होंगे, जिस प्रकार बादल चलते हैं। यह अल्लाह की कारीगरी है, जिसने हर चीज़ को सुदृढ़ किया। निस्संदेह वह उसकी खबर रखता है, जो कुछ तुम करते हो।

89. जो कोई सुचरित लेकर आया उसको उससे भी अच्छा प्राप्त होगा; और ऐसे लोग घबराहट से उस दिन निश्चिन्त होंगे।

90. और जो कुचरित लेकर आया तो ऐसे लोगों के मुँह आग में औंधे होंगे। (और उनसे कहा जाएगा: ) “क्या तुम उसके सिवा किसी और चीज़ का बदला पा रहे हो, जो तुम करते रहे हो?”

91. मुझे तो बस यही आदेश मिला है कि इस नगर (मक्का) के रब की बन्दगी करूँ, जिसने इसे आदरणीय ठहराया और उसी की हर चीज़ है। और मुझे आदेश मिला है कि मैं आज्ञाकारी बनकर रहूँ।

92. और यह कि कुरआन पढ़कर सुनाऊँ। अब जिस किसी ने संमार्ग ग्रहण किया वह अपने ही लिए संमार्ग ग्रहण करेगा। और जो पथभ्रष्ट रहा तो कह दो: “मैं तो बस एक सचेत करनेवाला ही हूँ।”

لَيْسَ كُنُوفُهُمْ مُبْصِرَاتٌ رَأَتْ فِي ذَلِكَ لَا يَتَّبِعُونَ يُؤْمِنُونَ ۖ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَكْفَرُوا مَن فِي السَّمُوتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ ۚ وَكُلُّ أَتَوَةٍ ذَاخِرِينَ ۖ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسِبُهَا جَائِدَةً وَهِيَ تَمْرٌ مِّمَّا تَصَابُ صُنِعَ اللَّهُ الَّذِي أَتَقَنَ كُلُّ شَيْءٍ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ۖ مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ ذُرَىٰ يُؤْمِنُونَ أَوْفُونَ ۖ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكَيْتٌ وَجُوهُهُمْ فِي النَّارِ ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَذِهِ الْبَلَدَةِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۚ وَإِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۚ وَإِنْ أَتَلَوْا الْقُرْآنَ ۖ فَمِنْ أُمَّتٍ إِذٍ إِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ۖ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيُرِيكُمْ



93. और कहो : “सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है । जल्द ही वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा देगा और तुम उन्हें पहचान लोगे । और तेरा रब उससे बेखबर नहीं है, जो कुछ तुम सब कर रहे हो ।”

## 28. अल-क्रसस

(मक्का में उतरी—आयतें 88)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. ता० सीन० मीम० ।
2. (जो आयतें अवतरित हो रही हैं) वे स्पष्ट किताब की आयतें हैं ।
3. हम तुम्हें मूसा और फ़िरऔन

का कुछ वृत्तान्त ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाना चाहें ।

4. निस्संदेह फ़िरऔन ने धरती में सरकशी की और उसके निवासियों को विभिन्न गिरोहों में विभक्त कर दिया । उनमें से एक गिरोह को कमज़ोर कर रखा था । वह उनके बेटों की हत्या करता और उनकी स्त्रियों को जीवित रहने देता । निश्चय ही वह बिगाड़ पैदा करनेवालों में से था ।

5. और हम यह चाहते थे कि उन लोगों पर उपकार करें, जो धरती में कमज़ोर पड़े थे और उन्हें नायक बनाएँ और उन्हीं को वारिस बनाएँ ।

6. और धरती में उन्हें सत्ताधिकार प्रदान करें और उनकी ओर से फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाओं को वह कुछ दिखाएँ, जिसकी उन्हें आशंका थी ।

7. हमने मूसा की माँ को संकेत किया कि : “उसे दूध पिला । फिर जब तुझे उसके विषय में भय हो, तो उसे दरिया में डाल दे और न तुझे कोई भय हो और





न तू शोकाकुल हो। हम उसे तेरे पास लौटा लाएँगे और उसे रसूल बनाएँगे।”

8. अन्ततः फ़िरऔन के लोगों ने उसे उठा लिया, ताकि परिणाम-स्वरूप वह उनका शत्रु और उनके लिए दुख बने। निश्चय ही फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाओं से बड़ी चूक हुई।

9. फ़िरऔन की स्त्री ने कहा कि : “यह मेरी और तुम्हारी आँखों की ठंडक है। इसकी हत्या न करो, कदाचित्त यह हमें लाभ पहुँचाए या हम इसे अपना बेटा ही बना लें।” और वे (परिणाम से) बेखबर थे।

10. और मूसा की माँ का हृदय विचलित हो गया। निकट था कि वह उसको प्रकट कर देती, यदि हम उसके दिल को इस ध्येय से न सँभालते कि वह मोमिनों में से हो।

11. उसने उसकी बहन से कहा कि : “तू उसके पीछे-पीछे जा।” अतएव वह उसे दूर ही दूर से देखती रही और वे महसूस नहीं कर रहे थे।

12. हमने पहले ही से दूध पिलानेवालियों को उसपर हराम कर दिया।<sup>1</sup> अतः उसने (मूसा की बहन ने) कहा कि : “क्या मैं तुम्हें ऐसे घरवालों का पता बताऊँ जो तुम्हारे लिए इसके पालन-पोषण का ज़िम्मा लें और इसके शुभ-चिंतक हों?”

13. इस प्रकार हम उसे उसकी माँ के पास लौटा लाए, ताकि उसकी आँख ठंडी हो और वह शोकाकुल न हो और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं।

الْقَصَصِ

النَّاسِ عَلَى

رَأَدُّهُ إِلَيْكَ وَجَاءَ لَوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَالْقَطْعُ  
 أَلْ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۚ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَ  
 هَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِبِينَ ۝ وَقَالَتِ امْرَأَتُ  
 فِرْعَوْنَ قُرْتُ عَيْنِي فِي ذَلِكَ ۖ لَا تَقْتُلُوهُ ۖ عَسَى أَنْ  
 يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۚ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَأَصْبَحَ  
 فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فِرْعَاوِينَ ۚ كَادَتْ لَتُبْدِي بِهِ لَوْلَا  
 أَنْ رَبَّنَا عَلَّ قَلْبَهَا لَتَكُونِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَ  
 قَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ ۖ فَبَصَّرَتْ بِهِ عَنْ جُنُبٍ وَهُمْ  
 لَا يَشْعُرُونَ ۖ وَحَرَمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ  
 فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ  
 وَهُمْ لَهُ نِصْحُونَ ۖ فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَقَرَّ  
 عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَلَنَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنْ  
 أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۚ وَلَنَبْلُوَنَّ أَشَدَّهُ ۚ وَاسْتَوَىٰ

مِثْلَهُ

1. अर्थात् मूसा ने किसी औरत का दूध न पिया।



14. और जब वह अपनी जवानी को पहुँचा और भरपूर हो गया, तो हमने उसे निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया। और सुकमी लोगों को हम इसी प्रकार बदला देते हैं।

15. उसने नगर में ऐसे समय प्रवेश किया जबकि वहाँ के लोग बेखबर थे। उसने वहाँ दो आदमियों को लड़ते पाया। यह उसके अपने गिरोह का था और यह उसके शत्रुओं में से था। जो उसके गिरोह में से था उसने उसके मुक़ाबले में, जो उसके शत्रुओं में से था, सहायता के लिए उसे पुकारा। मूसा ने उसे घूँसा मारा

أَتَيْنَهُ حُكْمًا وَعِلْمًا. وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ دَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَى حِينٍ غَفْلَةٍ مِنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَذَا مِنْ شِيعَةِ هَذَا وَهَذَا مِنْ عَدُوِّهِ ۖ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ ۖ فَوَكَّلَهُ مُوَسًى فَقَضَى عَلَيْهِ ۖ قَالَ هَذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُضِلٌّ مُبِينٌ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قَالَ رَبِّ إِنَّمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا لِلْمُجْرِمِينَ ۝ فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ۖ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَتَضَرَّعُهُ ۖ قَالَ لَهُ مُوَسًى إِنَّكَ لَعَوِيُّ مُبِينٌ ۝ فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَهُمَا ۖ قَالَ يَمُوسَى أَرِيدُ أَنْ تُقَاتِلَنِي كَمَا قَاتَلْتَ نَفْسًا

और उसका काम तमाम कर दिया। कहा : “यह शैतान की कार्यवाही है। निश्चय ही वह खुला पथभ्रष्ट करनेवाला शत्रु है।”

16. उसने कहा : “ऐ मेरे रब, मैंने अपने आपपर जुल्म किया। अतः तू मुझे क्षमा कर दे।” अतएव उसने उसे क्षमा कर दिया। निश्चय ही वही बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

17. उसने कहा : “ऐ मेरे रब ! जैसे तूने मुझपर अनुकम्पा दर्शाई है, अब मैं भी कभी अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा।”

18. फिर दूसरे दिन वह नगर में डरता, टोह लेता हुआ प्रविष्ट हुआ। इतने में अचानक क्या देखता है कि वही व्यक्ति जिसने कल उससे सहायता चाही थी, उसे पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा : “तू तो प्रत्यक्ष बहका हुआ व्यक्ति है।”

19. फिर जब उसने इरादा किया कि उस व्यक्ति को पकड़े, जो उन दोनों का शत्रु था, तो वह बोल उठा : “ऐ मूसा, क्या तू चाहता है कि मुझे मार डाले,



जिस प्रकार तूने कल एक व्यक्ति को मार डाला? धरती में बस तू निर्दय अत्याचारी बनकर रहना चाहता है और यह नहीं चाहता कि सुधार करनेवाला हो।”

20. इसके पश्चात एक आदमी नगर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया। उसने कहा : “ऐ मूसा, सरदार तेरे विषय में परामर्श कर रहे हैं कि तुझे मार डालें। अतः तू निकल जा! मैं तेरा हितैषी हूँ।”

21. फिर वह वहाँ से डरता और खतरा भाँपता हुआ निकल खड़ा हुआ। उसने कहा : “ऐ मेरे रब! मुझे ज़ालिम लोगों से छुटकारा दे।”

22. जब उसने मदन का रुख किया तो कहा : “आशा है, मेरा रब मुझे ठीक रास्ते पर डाल देगा।”

23. और जब वह मदन के पानी पर पहुँचा तो उसने उसपर पानी पिलाते लोगों का एक गिरोह पाया। और उनसे हटकर एक ओर दो स्त्रियों को पाया, जो अपने जानवरों को रोक रही थीं। उसने कहा : “तुम्हारा क्या मामला है?” उन्होंने कहा : “हम उस समय तक पानी नहीं पिला सकते, जब तक ये चरवाहे अपने जानवर निकाल न ले जाएँ, और हमारे बाप बहुत ही बूढ़े हैं।”

24. तब उसने उन दोनों के लिए पानी पिला दिया। फिर छाया की ओर पलट गया और कहा : “ऐ मेरे रब, जो भलाई भी तू मेरी ओर उतार दे, मैं उसका ज़रूरतमंद हूँ।”

25. फिर उन दोनों में से एक लजाती हुई उसके पास आई। उसने कहा : “मेरे बाप आपको बुला रहे हैं, ताकि आपने हमारे लिए (जानवरों को) जो पानी

بِالْأَمْسِ إِنْ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي  
الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَجَاءَ  
رَجُلٌ مِنْ أَقْصَا الْمَدْيَنَةِ يَسْعَى قَالَ يَمُوسَى إِنَّ  
الْمَلَأَ يَأْتِيكَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ  
النَّاصِحِينَ ۝ فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي  
مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تَلَفَّاءَ مَدْيَنَ قَالَ  
عَلَى رَأْيِي أَنْ يَهْدِيَ بَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ وَلَمَّا وَرَدَ  
مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِنَ النَّاسِ يَسْقُونَ ۝ وَ  
وَجَدَ مِنْ دُونِهِمْ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا  
قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّى يُصَدَّى الرِّعَاءُ بَدُو أَبُونَا شَيْخٌ  
كَبِيرٌ ۝ فَسَقِيَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّى إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ  
إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ۝ فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا  
تَسْتَشِي عَلَى اسْتِحْيَاءٍ قَالَتْ إِنَّ ابْنِي يَدْعُوكَ لِجَعِزِكَ

مَثَلًا



पिलाया है, उसका बदला आपको दें।" फिर जब वह उसके पास पहुँचा और उसे अपने सारे वृत्तान्त सुनाए तो उसने कहा : "कुछ भय न करो। तुम ज़ालिम लोगों से छुटकारा पा गए हो।"

26. उन दोनों स्त्रियों में से एक ने कहा : "ऐ मेरे बाप ! इसको मज़दूरी पर रख लीजिए। अच्छा व्यक्ति, जिसे आप मज़दूरी पर रखें, वही है जो बलवान, अमानतदार हो।"

27. उसने कहा : "मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दोनों बेटियों में से एक का विवाह तुम्हारे साथ इस

शर्त पर कर दूँ कि तुम आठ वर्ष तक मेरे यहाँ नौकरी करो। और यदि तुम दस वर्ष पूरे कर दो, तो यह तुम्हारी ओर से होगा। मैं तुम्हें कठिनाई में डालना नहीं चाहता। यदि अल्लाह ने चाहा तो तुम मुझे नेक पाओगे।"

28. कहा : "यह मेरे और आपके बीच निश्चय हो चुका। इन दोनों अवधियों में से जो भी मैं पूरी कर दूँ, तो तुझपर कोई ज़्यादती नहीं होगी। और जो कुछ हम कह रहे हैं, उसके विषय में अल्लाह पर भरोसा काफ़ी है।"

29. फिर जब मूसा ने अवधि पूरी कर दी और अपने घरवालों को लेकर चला तो तूर की ओर उसने एक आग-सी देखी। उसने अपने घरवालों से कहा : "ठहरो, मैंने एक आग का अवलोकन किया है। कदाचित मैं वहाँ से तुम्हारे पास कोई खबर ले आऊँ या उस आग से कोई अंगारा ही, ताकि तुम ताप सको।"

30. फिर जब वह वहाँ पहुँचा तो दाहिनी घाटी के किनारे से शुभ क्षेत्र में वृक्ष

النّس

النّس

أَجْرَمَا سَقَيْتَ لَنَا. فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَضَّ عَلَيْهِ  
الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ نَجَوْتُ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝  
قَالَتْ إِحْدَاهُمَا يَا أَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ. إِنَّ خَيْرَ مَنِ  
اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ ۝ قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُكَلِّمَكَ  
إِحْدَى ابْنَتَي هَاتَيْنِ عَلَى أَنْ تَأْجُرَنِي ثِنْتِي حَبْجٍ  
فَإِنْ أَتَمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ. وَمَا أُرِيدُ أَنْ  
أُشْقَ عَلَيْكَ سَعْدِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝  
قَالَ ذَلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ  
فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ وَاللَّهُ عَلَى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ۝  
فَلَمَّا قَضَى مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ  
مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا. قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَعَلَّ آتِيكُمْ مِنْهَا بَخِيرٌ أَوْ جَدَدٌ  
مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۝ فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ مِنْ

مِنْ



से आवाज़ आई : “ऐ मूसा ! मैं ही अल्लाह हूँ, सारे संसार का रब !”

31. और यह कि<sup>1</sup> “डाल दे अपनी लाठी।” फिर जब उसने उसे देखा कि वह बल खा रही है, जैसे कोई साँप हो तो वह पीठ फेरकर भागा और पीछे मुड़कर भी न देखा। “ऐ मूसा ! आगे आ और भय न कर। निस्संदेह तेरे लिए कोई भय की बात नहीं।

32. अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल। बिना किसी खराबी के चमकता हुआ निकलेगा। और भय के समय अपनी भुजा को अपने से मिलाए रख<sup>2</sup>। ये दो निशानियाँ हैं तेरे रब की ओर से फिरऔन और उसके दरबारियों के पास लेकर जाने के लिए। निश्चय ही वे बड़े अवज्ञाकारी लोग हैं।”<sup>3</sup>

33. उसने कहा : “ऐ मेरे रब ! मुझसे उनके एक आदमी की जान गई है। इसलिए मैं डरता हूँ कि वे मुझे मार डालेंगे।

34. मेरे भाई हारून की ज़बान मुझसे बढ़कर धाराप्रवाह है। अतः उसे मेरे साथ सहायक के रूप में भेज कि वह मेरी पुष्टि करे। मुझे भय है कि वे मुझे झुठलाएँगे।”

35. कहा : “हम तेरे भाई के द्वारा तेरी भुजा मज़बूत करेंगे, और तुम दोनों को एक ओज प्रदान करेंगे कि वे फिर तुम तक न पहुँच सकेंगे। हमारी

شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يُمُوسَى إِلَيَّ أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَلْيَئْزَأْهَا تَهْتَكُهَا جَانٌّ وَلَى مُذَبِّرًا وَلَمْ يَعْقِبْهُ يُمُوسَى أَقْبَلَ وَلَا تَخَفْ ۝ إِنَّكَ مِنَ الْأُمْنِينَ ۝ أَسْلَفَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْشَى بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۝ وَأَضْمَمُ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ ۝ فَذَلِكَ بَرَهَانِي مِنْ رَبِّكَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّ ارْنِي ۝ قُلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۝ وَإِنِّي هَارُونَ هُوَ أَقْصَىٰ مِنِّي بَسَاتًا ۝ فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رَدًّا يُضَدِّقُنِي ۝ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝ قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا ۝ فَلَا يَمَسُّوْنَ إِلَيْكُمَا ۝ يَا بَنِيَّ ۝ أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَا ۝

1. और यह आवाज़ भी आई।

2. अर्थात् बिलकुल निश्चिन्त रह, जैसे पक्षी निश्चिन्त अवस्था में अपने पंखों को समेटे रखता है।

3. अर्थात् उन्हें उनकी अवज्ञा के बुरे परिणाम से डरा।



निशानियों के कारण तुम दोनों और जो तुम्हारे अनुयायी होंगे वे ही प्रभावी होंगे।”

36. फिर जब मूसा उनके पास हमारी खुली-खुली निशानियाँ लेकर आया तो उन्होंने कहा : “यह तो बस घड़ा हुआ जादू है। हमने तो यह बात अपने अगले बाप-दादा में कभी सुनी ही नहीं।”

37. मूसा ने कहा : “मेरा रब उस व्यक्ति को भली-भाँति जानता है जो उसके यहाँ से मार्गदर्शन लेकर आया है, और उसको भी जिसके लिए अंतिम घर है। निश्चय ही ज़ालिम सफल नहीं होते।”

38. फिरऔन ने कहा : “ऐ दरबारवालो, मैं तो अपने सिवा तुम्हारे किसी प्रभु को नहीं जानता। अच्छा तो ऐ हामान ! तू मेरे लिए ईंटें आग में पकवा। फिर मेरे लिए एक ऊँचा महल बना कि मैं मूसा के प्रभु को झाँक आऊँ। मैं तो उसे झूठा समझता हूँ।”

39. उसने और उसकी सेनाओं ने धरती में नाहक घमण्ड किया और समझा कि उन्हें हमारी ओर लौटना नहीं है।

40. अन्ततः हमने उसे और उसकी सेनाओं को पकड़ लिया और उन्हें गहरे पानी में फेंक दिया। अब देख लो कि ज़ालिमों का कैसा परिणाम हुआ।

41. और हमने उन्हें आग की ओर बुलानेवाले पेशवा बना दिया और क्रियामत के दिन उन्हें कोई सहायता प्राप्त न होगी।

الْقَصَصُ

سُورَةُ الْقَصَصِ

الْغُلَيُّونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ  
قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُفْتَرٍ وَمَا سَمِعْنَا بِهَذَا  
فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَى رَبِّي أَعْلَمُ  
بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِ رَبِّهِ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ  
عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝ وَقَالَ  
فِرْعَوْنُ يَأْتِيهَا الْمَلَائِكَةُ لَئِيْلَتَ لَكُمْ مِنَ الْإِلَهِ غَيْرِي  
فَأَوْقِدْ لِي يَهَامُنُ عَلَى الطَّيْنِ فَأَجْعَلَ لِي صَرْحًا  
تَعْلَىٰ أَظْلَعُ إِلَيَّ إِلَهَ مُوسَىٰ ۚ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ مِنَ  
الْكَاذِبِينَ ۝ وَاسْتَكَبَرَهُ وَجُودُهُ فِي الْأَرْضِ  
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا أَنَّهُم إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ۝  
فَأَخَذْنَاهُ وَجُودَهُ فَنَبَذْنَاهُ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ  
كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝ وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يَذْعُونَ  
إِلَى النَّارِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يُنصَرُونَ ۚ وَاتَّبَعْنَاهُمْ

سُورَةُ الْقَصَصِ

1. यह बात उसने परिहास के रूप में कही। उसने यह न जाना कि वास्तव में मूसा के साथ ही वह परिहास नहीं कर रहा है, बल्कि यह अल्लाह की प्रतिष्ठा के प्रति ऐसी धृष्टता है, जिसका दण्ड उसे अवश्य मिलेगा।



42. और हमने इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी और क़ियामत के दिन वही बदहाल होंगे।

43. और अगली नस्लों को विनष्ट कर देने के पश्चात हमने मूसा को किताब प्रदान की, लोगों के लिए अन्तर्दृष्टियों की सामग्री, मार्गदर्शन और दयालुता बनाकर, ताकि वे ध्यान दें।

44. तुम तो (नगर के) पश्चिमी किनारे पर नहीं थे, जब हमने मूसा को बात की निर्णित सूचना दी थी, और न तुम गवाहों में से थे।

45. लेकिन हमने बहुत-सी नस्लें

उठाई और उनपर बहुत समय बीत गया। और न तुम मदयनवालों में रहते थे कि उन्हें हमारी आयतें सुना रहे होते, किन्तु रसूलों को भेजनेवाले हम ही रहे हैं।

46. और तुम तूर के अंचल में भी उपस्थित न थे जब हमने पुकारा था, किन्तु यह तुम्हारे रब की दयालुता है— ताकि तुम ऐसे लोगों को सचेत कर दो जिनके पास तुमसे पहले कोई सचेत करनेवाला नहीं आया, ताकि वे ध्यान दें।

47. (हम रसूल बनाकर न भेजते) यदि यह बात न होती कि जो कुछ उनके हाथ आगे भेज चुके हैं उसके कारण जब उनपर कोई मुसीबत आए तो वे कहने लगें : “ऐ हमारे रब, तूने क्यों न हमारी ओर कोई रसूल भेजा कि हम तेरी आयतों का (अनुसरण) करते और मोमिन होते ?”

أَلَمْ نَقُلْ  
فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً، وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ هُمْ مِنَ  
الْمَقْبُوحِينَ ۖ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ  
مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى  
وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۖ وَمَا كُنْتَ بِمَنْبِ  
الْعَرَبِ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ  
الشَّاهِدِينَ ۖ وَلَكِنَّا أَنْشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ  
الْعُمُرُ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًّا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوا  
عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا، وَلَكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ۖ وَمَا كُنْتَ  
بِمَنْبِ الظُّلُمِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِنْ رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ  
لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَشْهَمَ مِنْ نَذِيرٍ ۖ مِنْ قَبْلِكَ  
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۖ وَلَوْ أَنَّ تَوْصِيَهُمْ مُّصِيبَةٌ  
بِمَا قَدْ مَتَّ أَيْدِيَهُمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْكَ أَرْسَلْتَ  
إِلَيْنَا رَسُولًا فَنُتَّبِعِ آيَاتِكَ وَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ



48. फिर जब उनके पास हमारे यहाँ से सत्य आ गया तो वे कहने लगे कि : “जो चीज़<sup>1</sup> मूसा को मिली थी उसी तरह की चीज़ इसे क्यों न मिली?” क्या वे उसका इनकार नहीं कर चुके हैं, जो इससे पहले मूसा को प्रदान किया गया था? उन्होंने कहा : “दोनों जादू हैं<sup>2</sup> जो एक-दूसरे की सहायता करते हैं।” और कहा : “हम तो हरेक का इनकार करते हैं।”

49. कहो : “अच्छा तो लाओ अल्लाह के यहाँ से कोई ऐसी किताब, जो इन दोनों से बढ़कर मार्गदर्शन करनेवाली हो कि मैं उसका अनुसरण करूँ, यदि तुम सच्चे हो?”

50. अब यदि वे तुम्हारी माँग पूरी न करें तो जान लो कि वे केवल अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हैं। और उस व्यक्ति से बढ़कर भटका हुआ कौन होगा जो अल्लाह की ओर से किसी मार्गदर्शन के बिना अपनी इच्छा पर चले? निश्चय ही अल्लाह ज़ालिम लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

51. और हम उनके लिए वाणी बराबर अवतरित करते रहे, शायद वे ध्यान दें।

52. जिन लोगों को हमने इससे पूर्व किताब दी थी, वे इसपर ईमान लाते हैं।

53. और जब यह उनको पढ़कर सुनाया जाता है तो वे कहते हैं : “हम इसपर ईमान लाए। निश्चय ही यह सत्य है हमारे रब की ओर से। हम तो इससे पहले ही से मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।”

54. ये वे लोग हैं जिन्हें उनका प्रतिदान दुगना दिया जाएगा, क्योंकि वे जमे रहे और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं और जो कुछ रोज़ी हमने उन्हें दी

الْقَصَصِ

أَشْنُ حَقَّقَ

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ  
وَشَلَّ مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ ۖ أَوَلَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ  
مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوا سِحْرَانِ تَظَاهَرَا ۖ وَقَالُوا إِنَّا بِكُلِّ  
كَافِرُونَ ۝ قُلْ فَأَنذَرْتُكُمْ يَوْمَ يَكْتُبُ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ  
أَهْدَىٰ مِنْهُمَا أَتَّبَعُهُ ۚ إِنَّ كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَإِنْ لَمْ  
يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا يُجِيبُونَ ۚ أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَمَنْ  
أَضَلَّ مَسِيرًا ابْتِغَاءَ هَوَاهُ يُغَيِّرْهُدًى ۚ مِنَ اللَّهِ  
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَقَدْ  
وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا  
الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذَا يُتْلَىٰ  
عَلَيْهِمْ قَالُوا أَمَّا بِرَبِّنَا لَا تُنَا ۚ كُنَّا  
مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ يُؤْتُونَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ  
بِمَا صَبَرُوا وَيَبْدَأُونَ بِالْحَسَنَةِ ۚ السَّيِّئَةِ ۚ وَمِمَّا

مَذَلَّ



है, उसमें से खर्च करते हैं।

55. और जब वे व्यर्थ बात सुनते हैं तो यह कहते हुए उससे किनारा खींच लेते हैं कि : “हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म हैं। तुमको सलाम है ! जाहिलों को हम नहीं चाहते।”

56. तुम जिसे चाहो राह पर नहीं ला सकते, किन्तु अल्लाह जिसे चाहता है राह दिखाता है, और वही राह पानेवालों को भली-भाँति जानता है।

57. वे कहते हैं : “यदि हम तुम्हारे साथ इस मार्गदर्शन का अनुसरण करें तो अपने भू-भाग से उचक लिए जाएँगे।” क्या खतरों से सुरक्षित हरम<sup>1</sup> में हमने उन्हें ठिकाना नहीं दिया, जिसकी ओर हमारी ओर से रोज़ी के रूप में हर चीज़ की पैदावार खिंची चली आती है ? किन्तु उनमें से अधिकतर जानते नहीं।

58. हमने कितनी ही बस्तियों को विनष्ट कर डाला, जिन्होंने अपनी गुज़र-बसर के संसाधन पर इतराते हुए अकृतज्ञता दिखाई। तो वे हैं उनके घर, जो उनके बाद आबाद थोड़े ही हुए। अन्ततः हम ही वारिस हुए।

59. तेरा रब तो बस्तियों को विनष्ट करनेवाला नहीं जब तक कि उनकी केन्द्रीय बस्ती में कोई रसूल न भेज दे, जो उन्हें हमारी आयतें सुनाए। और हम बस्तियों को विनष्ट करनेवाले नहीं सिवाय इस स्थिति के कि वहाँ के रहनेवाले ज़ालिम हों।

60. जो चीज़ भी तुम्हें प्रदान की गई है वह तो सांसारिक जीवन की सामग्री

رَزَقْنَهُمْ يُنْفِقُونَ ۖ وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا تَبْتَغِ الْجَاهِلِينَ ۝ إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝ وَقَالُوا إِنْ تَتَّبِعِ الْهَذَىٰ مَعَكَ تَخْطِفُ مِنْ أََرْضِنَا أَوْ لَمْ تُنْكِنْ لَنَا حَرَمًا أَوْثَانًا يُحِبُّ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ وَزَرْعًا مِنْ لَدُنَّا وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَكُنْ أَهْلُكُنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطَرَتْ مَوَاسِقَهَا فَجَلَّتْ عَنْهُمْ لَمْ تَسْكُنْ مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۚ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ۝ وَمَا أَوْتَيْنَاهُمْ مِنْ شَيْءٍ

مَذْهَبُهُ



और उसकी शोभा है। और जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम और शेष रहनेवाला है, तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?

61. भला वह व्यक्ति जिससे हमने अच्छा वादा किया है और वह उसे पानेवाला भी हो, वह उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जिसे हमने सांसारिक जीवन की सामग्री दे दी हो, फिर वह क्रियामत के दिन पकड़कर पेश किया जानेवाला हो ?

62. खयाल करो, जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा : “कहाँ है मेरे वे साझीदार जिनका तुम्हें दावा था ?”

فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ أَقْمَنَ وَعَدْنَاهُ وَعَدًا حَسَنًا فَهُوَ لَا يَخِينُ ۚ كَمَنْ مَتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا ۖ أَغْوَيْنَاهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۖ تَبَرَأْنَا إِلَيْكَ مَا كَانُوا إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ۝ وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ۖ فَعِيَّتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ ۖ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ۖ فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَغُفِرَ ۖ إِنَّهُ يَكُونُ مِنَ الْمُفْلِحِينَ

63. जिनपर बात पूरी हो चुकी होगी, वे कहेंगे : “ऐ हमारे रब ! ये वे लोग हैं जिन्हें हमने बहका दिया था। जैसे हम स्वयं बहके थे, इन्हें भी बहकाया। हमने तेरे आगे स्पष्ट कर दिया कि इनसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं। ये हमारी बन्दगी तो करते नहीं थे ?”<sup>1</sup>

64. कहा जाएगा : “पुकारो, अपने ठहराए हुए साझीदारों को !” तो वे उन्हें पुकारेंगे, किन्तु वे उनको कोई उत्तर न देंगे। और वे यातना देखकर रहेंगे। काश, वे मार्ग पानेवाले होते !

65. और खयाल करो, जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा : “तुमने रसूलों को क्या उत्तर दिया था ?”

66. उस दिन उन्हें बातें न सूझेंगी, फिर वे आपस में भी पूछताछ न करेंगे।

67. अलबत्ता जिस किसी ने तौबा कर ली और वह ईमान ले आया और अच्छा कर्म किया, तो आशा है कि वह सफल होनेवालों में से होगा।

1. अर्थात् ये तो गुमराह अपनी इच्छा से हुए, हमने इसके लिए इन्हें विवश नहीं किया था।



68. तेरा रब पैदा करता है जो कुछ चाहता है और ग्रहण करता है जो चाहता है। उन्हें कोई अधिकार प्राप्त नहीं। अल्लाह महान और उच्च है उस शिर्क से, जो वे करते हैं।

69. और तेरा रब जानता है जो कुछ उनके सीने छिपाते हैं और जो कुछ वे लोग व्यक्त करते हैं।

70. और वही अल्लाह है, उसके सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं। सारी प्रशंसा उसी के लिए है पहले और पिछले जीवन में<sup>1</sup> फ़ैसले का अधिकार उसी को है और उसी की ओर तुम लौटकर जाओगे।

71. कहो : “क्या तुमने विचार किया कि यदि अल्लाह क्रियामत के दिन तक सदैव के लिए तुमपर रात कर दे तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन इष्ट-पूज्य है जो तुम्हारे पास प्रकाश लाए? तो क्या तुम सुनते नहीं?”

72. कहो : “क्या तुमने विचार किया? यदि अल्लाह क्रियामत के दिन तक सदैव के लिए तुमपर दिन कर दे तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन इष्ट-पूज्य है जो तुम्हारे लिए रात लाए जिसमें तुम आराम पाते हो? तो क्या तुम देखते नहीं?”

73. उसने अपनी दयालुता से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए, ताकि तुम उसमें (रात में) आराम पाओ और ताकि तुम (दिन में) उसका अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम कृतज्ञता दिखाओ।”

74. खयाल करो, जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा : “कहाँ हैं मेरे

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ  
الْخَيْرَةُ سُبْحَنَ اللَّهِ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ  
وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ  
وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْحُكْمُ فِي الْأُولَى وَالْآخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ قُلْ  
أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ الْيَلَّ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ  
الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَفَلَا  
تَسْمَعُونَ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ  
النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَفَلَا تُبْصِرُونَ  
وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ الْيَلَّ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا  
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ  
وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ



वे साझीदार, जिनका तुम्हें दावा था ?”

75. और हम प्रत्येक समुदाय में से एक गवाह निकाल लाएँगे<sup>1</sup> और कहेंगे : “लाओ अपना प्रमाण ।” तब वे जान लेंगे कि सत्य अल्लाह की ओर से है और जो कुछ वे घड़ते थे, वह सब उनसे गुम होकर रह जाएगा ।

76. निश्चय ही क़ारून मूसा की क़ौम में से था, फिर उसने उनके विरुद्ध सिर उठाया और हमने उसे इतने खज़ाने दे रखे थे कि उनकी कुंजियाँ एक बलशाली दल को भारी पड़ती थीं । जब उससे उसकी क़ौम के लोगों ने कहा : “इतरा मत, अल्लाह इतरानेवालों को पसन्द नहीं करता ।

77. जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसमें आखिरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर, जैसा कि अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है, और धरती में बिगाड़ मत चाह । निश्चय ही अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नहीं करता ।”

78. उसने कहा : “मुझे तो यह मेरे अपने व्यक्तिगत ज्ञान के कारण मिला है ।” क्या उसने यह नहीं जाना कि अल्लाह उससे पहले कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर चुका है जो शक्ति में उससे बढ़-चढ़कर और बाहुल्य में उससे

كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ۝ فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝ إِنَّ قَابُوُونَ كَانَ مِنْ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۝ وَأَتَيْنَاهُ مِنَ الْكُتُوبِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءُ بِالْعُصْبَةِ ۝ أُولَئِكَ الْقَوْمُ إِذْ قَالُوا لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفَرُّوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرَّاجِينَ ۝ وَابْتَغَ فَبِمَا آثَرَ اللَّهُ الْبَادِرَ الْأَخْرَجَ وَلَا تَمْسُ نُصَيْبِكَ مِنَ الدُّنْيَا ۝ وَأَحْسَنَ كَمَالًا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝ قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۝ أَوَلَمْ يَعْلَم أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَآكْثَرُ جَمْعًا وَلَا يُسْئَلُ

مَذَل

1. अर्थात् इनकार और शिर्क में जो उनका अगुआ रहा होगा उसे अल्लाह के सामने पेश होना पड़ेगा ।



अधिक थीं? अपराधियों से तो (उनकी तबाही के समय) उनके गुनाहों के विषय में पूछा भी नहीं जाता।

79. फिर वह अपनी क़ौम के सामने अपने ठाठ-बाट में निकला। जो लोग सांसारिक जीवन के चाहनेवाले थे, उन्होंने कहा : “क्या ही अच्छा होता जैसा कुछ क़ारून को मिला है, हमें भी मिला होता ! वह तो बड़ा भाग्यशाली है।”

80. किन्तु जिनको ज्ञान प्राप्त था, उन्होंने कहा : “अफ़सोस तुमपर ! अल्लाह का प्रतिदान उत्तम है, उस व्यक्ति के लिए जो ईमान लाए और अच्छा कर्म करे, और यह बात उन्हीं के दिलों में पड़ती है जो धैर्यवान होते हैं।”

81. अन्ततः हमने उसको और उसके घर को धरती में धँसा दिया। और कोई ऐसा गिरोह न हुआ जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी सहायता करता, और न वह स्वयं अपना बचाव कर सका।

82. अब वही लोग, जो कल उसके पद की कामना कर रहे थे, कहने लगे : “अफ़सोस हम भूल गए थे कि अल्लाह अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा करता है और जिसे चाहता है नपी-तुली देता है। यदि अल्लाह ने हमपर उपकार न किया होता तो हमें भी धँसा देता। अफ़सोस हम भूल गए थे कि इनकार करनेवाले सफल नहीं हुआ करते।”

83. आखिरत का घर हम उन लोगों के लिए खास कर देंगे जो न तो धरती

الْقَوْمِ

الْمُتَّقِينَ

عَنْ دُلُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ۝ فَخَرَجَ عَلَى قَوْمِهِ  
فِي زِينَتِهِ ۚ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا  
يَلَيْتَ كُنَّا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ ۚ إِنَّهُ لَكَا وَهَيَّ  
عَظِيمٍ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيَلَكُمْ  
ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنَ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا وَلَا  
يُلْقِيهَا إِلَّا الصُّبْرُونَ ۝ فَخَسَفْنَا بِهِ وَبَدَارِهِ  
الْأَرْضَ ۚ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ  
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِينَ ۝  
وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ  
وَيْكَانَ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ  
عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَوْلَا أَن مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ  
بِنَاءُ وَيْكَانَ لَهُ لَا يَفْلَحُ الْكَافِرُونَ ۚ تِلْكَ الدَّارُ  
الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي

مَثَلِهِ



में अपनी बड़ाई चाहते हैं और न बिगाड़। परिणाम तो अन्ततः डर रखनेवालों के पक्ष में है।

84. जो कोई अच्छा आचरण लेकर आया उसे उससे उत्तम प्राप्त होगा, और जो बुरा आचरण लेकर आया तो बुराइयाँ करनेवालों को तो बस वही मिलेगा जो वे करते थे।

85. जिसने इस कुरआन की ज़िम्मेदारी तुमपर डाली है, वह तुम्हें उसके (अच्छे) अंजाम तक ज़रूर पहुँचाएगा। कहो : "मेरा रब उसे भली-भाँति जानता है जो मार्गदर्शन लेकर आया, और उसे भी जो खुली गुमराही में पड़ा है।"

86. तुम तो इसकी आशा नहीं रखते थे कि तुम्हारी ओर किताब उतारी जाएगी। इसकी संभावना तो केवल तुम्हारे रब की दयालुता के कारण हुई। अतः तुम इनकार करनेवालों के पृष्ठपोषक न बनो।

87. और वे तुम्हें अल्लाह की आयतों से रोक न पाएँ, इसके पश्चात् कि वे तुमपर अवतरित हो चुकी हैं। और अपने रब की ओर बुलाओ और बहुदेववादियों में कदापि सम्मिलित न होना।

88. और अल्लाह के साथ किसी और इष्ट-पूज्य को न पुकारना। उसके सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं। हर चीज़ नाशवान है सिवाय उसके स्वरूप के। फ़ैसला और आदेश का अधिकार उसी को प्राप्त है और उसी की ओर तुम सबको लौटकर जाना है।

الْأَرْضِ وَلَا فسادًا. وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝  
مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۚ وَمَنْ  
جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ  
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ قُرْآنَ  
عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَأَوْا إِلَهُ مَعَادٍ ۚ قُلْ رَبِّي  
أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ ۖ وَمَنْ هُوَ قَبْلِي  
مُضِلٌّ ۚ وَمَا كُنْتُ شَرِيعًا أَنْ يُلْقَىٰ إِلَيْكَ  
الْكِتَابُ ۚ إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ ۚ فَلَا تَكُونَنَّ  
ظَهِيرًا لِلْكَافِرِينَ ۚ وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ  
إِذْ أُنْزِلَتْ إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ  
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۚ  
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ مَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ  
لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝



## 29. अल-अनकबूत

(मक्का में उतरी— आयतें 69)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० मीम० ।  
2. क्या लोगों ने यह समझ रखा  
है कि वे इतना कह देने मात्र से  
छोड़ दिए जाएँगे कि “हम ईमान  
लाए”, और उनकी परीक्षा न की  
जाएगी ?

3. हालाँकि हम उन लोगों की  
परीक्षा कर चुके हैं जो इनसे पहले  
गुज़र चुके हैं। अल्लाह तो उन  
लोगों को मालूम करके रहेगा<sup>1</sup>, जो  
सच्चे हैं। और वह झूठों को भी मालूम करके रहेगा।

4. या उन लोगों ने, जो बुरे कर्म करते हैं, यह समझ रखा है कि वे हमारे  
काबू से बाहर निकल जाएँगे ? बहुत बुरा है जो फ़ैसला वे कर रहे हैं।

5. जो व्यक्ति अल्लाह से मिलने की आशा रखता है तो अल्लाह का नियत  
समय तो आने ही वाला है। और वह सब कुछ सुनता, जानता है।

6. और जो व्यक्ति (अल्लाह के मार्ग में) संघर्ष करता है वह तो स्वयं अपने  
ही लिए संघर्ष करता है। निश्चय ही अल्लाह सारे संसार से निस्पृह है।

7. और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए हम उनसे उनकी  
बुराइयों को दूर कर देंगे और उन्हें अवश्य ही उसका प्रतिदान प्रदान करेंगे, जो  
कुछ अच्छे कर्म वे करते रहे होंगे।

8. और हमने मनुष्य को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की  
ताकीद की है। किन्तु यदि वे तुझपर ज़ोर डालें कि तू किसी ऐसी चीज़ को मेरा



1. अर्थात् उन्हें ज़ाहिर करके रहेगा।



साझी ठहराए जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मान। मेरी ही ओर तुम सबको पलटकर आना है, फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।

9. और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए हम उन्हें अवश्य अच्छे लोगों में सम्मिलित करेंगे।

10. लोगों में ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि “हम अल्लाह पर ईमान लाए”, किन्तु जब अल्लाह के मामले में वे सताए गए तो उन्होंने लोगों की ओर से आई हुई आज्रमाइश को अल्लाह की यातना जैसी समझ लिया। अब यदि तेरे

रब की ओर से सहायता पहुँच गई तो कहेंगे : “हम तो तुम्हारे साथ थे।” क्या जो कुछ दुनियावालों के सीनों में है उसे अल्लाह भली-भाँति नहीं जानता ?

11. अल्लाह तो उन लोगों को मालूम करके रहेगा जो ईमान लाए, और वह कपटाचारियों को भी मालूम करके रहेगा।

12. और इनकार करनेवाले ईमान लानेवालों से कहते हैं : “तुम हमारे मार्ग पर चलो, हम तुम्हारी खताओं का बोझ उठा लेंगे।” हालाँकि वे उनकी खताओं में से कुछ भी उठानेवाले नहीं हैं। वे निश्चय ही झूठे हैं।

13. हाँ, अवश्य वे अपने बोझ भी उठाएँगे और अपने बोझों के साथ और बहुत-से बोझ भी। और क्रियामत के दिन अवश्य उनसे उसके विषय में पूछा जाएगा जो कुछ झूठ वे घड़ते रहे होंगे।

14. हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा। और वह पचास साल कम एक हज़ार वर्ष उनके बीच रहा। अन्ततः उनको तूफ़ान ने इस दशा में आ

الْمُؤْمِنُونَ

الْمُؤْمِنُونَ

بِهِ وَلَمْ فَلَا تُطْعَمُهُمَا. إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأَنْتَبِهُكُمْ بِمَا  
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ  
لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ  
آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةً لِلنَّاسِ  
كَعَذَابٍ لِلَّهِ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِنْ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ  
إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۝ أُولَٰئِكَ اللَّهُ يَاعْلَمُ بِمَا فِي صُدُورِ  
الْعَالَمِينَ ۝ وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ  
الْمُنَافِقِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا  
اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ  
مِنْ خَطِيئَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۝ إِنَّهُمْ لَكَذِبُونَ ۝ وَلَيَعْلَمَنَّ  
أَتَقَالَهُمْ وَأَتَقَالَا مَعَهُ أَثْقَالَهُمْ ۝ وَلَيَسْئَلُنَّ يَوْمَ  
الْقِيَامَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا  
إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَمَّتْ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا

مَزْلُومٌ



कड़ा कि वे अत्याचारी थे ।

15. फिर उसको और नौकावालों को हमने बचा लिया और उसे सारे संसार के लिए एक निशानी बना दिया ।

16. और इबराहीम को भी भेजा, जबकि उसने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि : “अल्लाह की बन्दगी करो और उसका डर रखो । यह तुम्हारे लिए अच्छा है, यदि तुम जानो ।

17. तुम तो अल्लाह से हटकर बस मूर्तियों को पूज रहे हो और झूठ घढ़ रहे हो । तुम अल्लाह से हटकर जिनको पूजते हो वे तुम्हारे लिए रोज़ी का भी अधिकार नहीं रखते । अतः तुम अल्लाह ही के यहाँ रोज़ी तलाश करो और उसी की बन्दगी करो और उसके आभारी बनो । तुम्हें उसी की ओर लौटकर जाना है ।

18. और यदि तुम झुठलाते हो तो तुमसे पहले कितने ही समुदाय झुठला चुके हैं । रसूल पर तो बस केवल स्पष्ट रूप से (सत्य संदेश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है ।”——

19. क्या उन्होंने देखा नहीं कि अल्लाह किस प्रकार पैदाइश का आरम्भ करता है और फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है ? निस्संदेह यह अल्लाह के लिए अत्यन्त सरल है ।

20. कहो कि : “धरती में चलो-फिरो और देखो कि उसने किस प्रकार पैदाइश का आरम्भ किया । फिर अल्लाह पश्चात्कर्ती उठान उठाएगा । निश्चय ही अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है ।

21. वह जिसे चाहे यातना दे और जिसपर चाहे दया करे । और उसी की

الْأَنكَبُوتِ

النَّازِعَاتِ

فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝ فَأَنجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ التَّيْمِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ۝ وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ذَرِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِندَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَلَن تَجْلُوا بِنَا أَفَعَدَّ كَذَبٌ أَمْ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ مَرَّةً ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ قُلْ وَسِعَ فِي الْأَنْفُسِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنْشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ

سورة



ओर तुम्हें पलटकर जाना है ।”

22. तुम न तो धरती में क़ाबू से बाहर निकल सकते हो और न आकाश में । और अल्लाह से हटकर न तो तुम्हारा कोई मित्र है और न सहायक ।

23. और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों और उससे मिलने का इनकार किया, वही लोग हैं जो मेरी दयालुता से निराश हुए और वही हैं जिनके लिए दुखद यातना है ।—

24. फिर उसकी क़ौम के लोगों का उत्तर इसके सिवा और कुछ न था कि उन्होंने कहा, “मार डालो उसे या जला दो उसे !” अंततः

अल्लाह ने उसको आग से बचा लिया । निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो ईमान लाएँ ।

25. और उसने कहा कि : “अल्लाह से हटकर तुमने कुछ मूर्तियों को केवल सांसारिक जीवन में अपने पारस्परिक प्रेम के कारण पकड़ रखा है । फिर क़ियामत के दिन तुममें से एक-दूसरे का इनकार करेगा और तुममें से एक-दूसरे पर लानत करेगा । तुम्हारा ठौर-ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई सहायक न होगा ।”

26. फिर लूत ने उसकी बात मानी और उसने<sup>1</sup> कहा : “निस्संदेह मैं अपने रब की ओर हिजरत करता हूँ ।<sup>2</sup> निस्संदेह वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है ।”

27. और हमने उसे इसहाक़ और याकूब प्रदान किए और उसकी संतति में



1. अर्थात् इबराहीम (अलै०) ।

2. अर्थात् अपने रब के लिए घरबार छोड़ता हूँ ।



नुबूवत (पैगम्बरी) और किताब का सिलसिला जारी किया और हमने उसे संसार में भी उसका अच्छा प्रतिदान प्रदान किया। और निश्चय ही वह आखिरत में अच्छे लोगों में से होगा।

28. और हमने लूत को भेजा, जबकि उसने अपनी क़ौम के लोगों से कहा, “तुम तो वह अश्लील कर्म करते हो, जिसे तुमसे पहले सारे संसार में किसी ने नहीं किया।

29. क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो और बटमारी करते हो<sup>1</sup>, और अपनी मजलिस में बुरा कर्म करते हो?” फिर उसकी क़ौम के लोगों का उत्तर बस यही था कि उन्होंने कहा, “ले आ हमपर अल्लाह की यातना, यदि तू सच्चा है।”

30. उसने कहा, “ऐ मेरे रब ! बिगाड़ पैदा करनेवाले लोगों के मुक्राबले में मेरी सहायता कर।”

31. हमारे भेजे हुए जब इबराहीम के पास शुभ सूचना लेकर आए तो उन्होंने कहा, “हम इस बस्ती के लोगों को विनष्ट करनेवाले हैं। निस्संदेह इस बस्ती के लोग ज़ालिम हैं।”

32. उसने कहा, “वहाँ तो लूत मौजूद है।” वे बोले, “जो कोई भी वहाँ है, हम भली-भाँति जानते हैं। हम उसको और उसके घरवालों को बचा लेंगे, सिवाय उसकी स्त्री के। वह पीछे रह जानेवालों में से है।”

النَّبِيُّونَ

النَّبِيُّونَ

فِي دُرِّيَّتِهِ النَّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَأَتَيْنَهُ أَجْرَهُ فِي  
الدُّنْيَا. وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝ وَ  
لَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ  
مَا سَبَّحْتُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ۝ أَفَبِعَيْنِكُمْ  
لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ ۚ وَتَأْتُونَ  
فِي نَادِيكُمُ الْمُنْكَرَ ۚ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ  
إِلَّا أَنْ قَالُوا اسْتِئْذِنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ  
الصَّادِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ  
الْمُفْسِدِينَ ۚ وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ  
بِالْبُشْرَىٰ قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ  
إِنَّ أَهْلَهَا كَانَ نُؤَافِكِينَ ۚ قَالَ إِنْ فِيهَا لَوْطَاءُ  
قَالُوا نَعْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا ۚ لَنُنَجِّيَنَّهُ وَأَهْلَهُ  
إِلَّا امْرَأَتَهُ وَكَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۝ وَلَمَّا أَنْ

مَذَلَّ

1. अर्थात् प्रकृति के मार्ग को छोड़ रहे हो। प्रकृति की मंशा के खिलाफ़ चलकर तुम तबाही से बच नहीं सकते।



33. जब यह हुआ कि हमारे भेजे हुए लूत के पास आए तो उनका आना उसे नागवार हुआ और उनके प्रति दिल को तंग पाया। किन्तु उन्होंने कहा, “डरो मत और न शोकाकुल हो। हम तुम्हें और तुम्हारे घरवालों को बचा लेंगे सिवाय तुम्हारी स्त्री के। वह पीछे रह जानेवालों में से है।

34. निश्चय ही हम इस बस्ती के लोगों पर आकाश से एक यातना उतारनेवाले हैं, इस कारण कि वे बंदगी की सीमा से निकलते रहे हैं।”

35. और हमने उस बस्ती से प्राप्त होनेवाली एक खुली निशानी उन लोगों के लिए छोड़ दी है, जो बुद्धि से काम लेना चाहें।

36. और मदयन की ओर उनके भाई शूऐब को भेजा। उसने कहा “ऐ मेरी क्रौम के लोगो, अल्लाह की बन्दगी करो। और अंतिम दिन की आशा रखो। और धरती में बिगाड़ फैलाते मत फिरो।”

37. किन्तु उन्होंने उसे झुठला दिया। अन्ततः भूकम्प ने उन्हें आ लिया। और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।

38. और आद और समूद को भी हमने विनष्ट किया। और उनके घरों और बस्तियों के अवशेषों से तुमपर स्पष्ट हो चुका है। शैतान ने उनके कर्मों को उनके लिए सुहाना बना दिया और उन्हें संमार्ग से रोक दिया। यद्यपि वे बड़े तीक्ष्ण दृष्टिवाले थे।

39. और क़ारून और फ़िरऔन और हामान को हमने विनष्ट किया। मूसा उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आया। किन्तु उन्होंने धरती में घमण्ड किया,

الأنكبوت

الأنكبوت

جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيقًا بِهِمْ وَصَاحِبِهِمْ ذُرِّيَّتًا  
قَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنْجُونَكَ وَأَهْلَكَ  
إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۝ إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَى  
أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا  
يَفْسُقُونَ ۝ وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ  
يَعْقِلُونَ ۝ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ  
فَقَالَ يَوْمَ اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْأْخِرَ وَلَا  
تَعْبُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ  
الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جُثَثِينَ ۝ وَعَادًا وَثمودًا  
وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِنْ مِّنْكَرِهِمْ وَزَيْنَ لَهُمُ  
الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَ  
كَانُوا مُصْتَبِرِينَ ۝ وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَ  
هَامَانَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُّوسَىٰ بِآلِيبَتِ

مَنْزِلَةٍ



हालाँकि वे हमसे निकल जानेवाले न थे।

40. अन्ततः हमने हरेक को उसके अपने गुनाह के कारण पकड़ लिया। फिर उनमें से कुछ पर तो हमने पथराव करनेवाली वायु भेजी और उनमें से कुछ को एक प्रचण्ड चीत्कार में आ लिया। और उनमें से कुछ को हमने धरती में धँसा दिया। और उनमें से कुछ को हमने डुबो दिया। अल्लाह तो ऐसा न था कि उनपर जुल्म करता, किन्तु वे स्वयं अपने आपपर जुल्म कर रहे थे।

41. जिन लोगों ने अल्लाह से हटकर अपने दूसरे संरक्षक बना लिए हैं उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है, जिसने अपना एक घर बनाया, और यह सच है कि सब घरों से कमजोर घर मकड़ी का घर ही होता है। क्या ही अच्छा होता कि वे जानते !

42. निस्संदेह अल्लाह उन चीज़ों को भली-भाँति जानता है जिन्हें ये उससे हटकर पुकारते हैं। वह तो अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

43. ये मिसालें हम लोगों के लिए पेश करते हैं, परन्तु इनको ज्ञानवान ही समझते हैं।

44. अल्लाह ने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया। निश्चय ही इसमें ईमानवालों के लिए एक बड़ी निशानी है।

الْعَنَكَبُوتُ

النَّحْلُ

فَأَسْكَبُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَابِقِينَ ۖ  
فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذُنُوبِهِمْ ۖ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ  
حَالِيبًا ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْطَةُ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ  
خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَغْرَقْنَا ۖ وَمَا  
كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ  
يُظْلِمُونَ ۝ مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ  
اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنَكَبُوتِ إِذَا أَخَذَتْ بِبَيْتِهَا  
وَأَنْ أَوْهِنَ الْيُوتُ لَبِيتُ الْعَنَكَبُوتِ مَكُونًا  
يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ  
دُونِهِ ۖ وَمَنْ شَقِيَ بِهِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝  
وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ لَضَرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا  
إِلَّا الْعَالِمُونَ ۝ خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ  
بِالْحَقِّ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

مَثَلُهُ



45. उस किताब को पढ़ो जो तुम्हारी ओर प्रकाशना के द्वारा भेजी गई है, और नमाज़ का आयोजन करो। निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुराई से रोकती है। और अल्लाह का याद करना तो बहुत बड़ी चीज़ है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम रचते और बनाते हो।

46. और किताबवालों से बस उत्तम रीति ही से वाद-विवाद करो— रहे वे लोग जो उनमें ज़ालिम हैं, उनकी बात दूसरी है—और कहो : “हम ईमान लाए उस चीज़ पर जो हमारी ओर

अवतरित हुई और तुम्हारी ओर भी अवतरित हुई। और हमारा पूज्य और तुम्हारा पूज्य अकेला ही है और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।”

47. इसी प्रकार हमने तुम्हारी ओर किताब अवतरित की है, तो जिन्हें हमने किताब प्रदान की है वे उसपर ईमान लाएँगे। उनमें से कुछ उसपर ईमान ला भी रहे हैं। हमारी आयतों का इनकार तो केवल न माननेवाले ही करते हैं।

48. इससे पहले तुम न कोई किताब पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिखते ही थे। ऐसा होता तो ये मिथ्यावादी संदेह में पड़ सकते थे।

49. नहीं, बल्कि वे तो उन लोगों के सीनों में विद्यमान खुली निशानियाँ हैं, जिन्हें ज्ञान प्रदान हुआ है। हमारी आयतों का इनकार तो केवल ज़ालिम ही करते हैं।

50. उनका कहना है कि : “उसपर उसके रब की ओर से निशानियाँ क्यों नहीं अवतरित हुई?” कह दो : “निशानियाँ तो अल्लाह ही के पास हैं। मैं तो

التَّائِبِينَ

الَّذِينَ

أَنزَلَ مَا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۚ إِنَّ  
الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۚ وَلَذِكْرُ اللَّهِ  
أَكْبَرُ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ۝ وَلَا تَجَادِلُوا أَهْلَ  
الْكِتَابِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا  
وَمِنْهُمْ وَقُولُوا أَمَّا بِالَّذِي أُنزِلَ إِلَيْنَا وَأُنزِلَ إِلَيْكُمْ  
وَالْهُدَىٰ وَالْهُكْمُ وَاحِدٌ ۚ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝ وَ  
كَذَلِكَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ ۚ فَالَّذِينَ آتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ  
يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَمَا يَجْحَدُ  
بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ ۚ وَمَا كُنْتَ تَشْلُو مِنْ قَبْلِهِ  
مِنْ كِتَابٍ وَلَا تَخُطُّهُ بِيَمِينِكَ إِذًا لِأَرْتَابِ الْمُبِطِلُونَ ۚ  
بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ  
وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الظَّالِمُونَ ۚ وَقَالُوا لَوْلَا  
أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ ۚ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ

مُزَكَّاةٌ



केवल स्पष्ट रूप से सचेत करनेवाला हूँ।”

51. क्या उनके लिए यह पर्याप्त नहीं कि हमने तुमपर किताब अवतरित की, जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है? निस्संदेह उसमें उन लोगों के लिए दयालुता और अनुस्मृति है जो ईमान लाएँ।

52. कह दो : “मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह के रूप में काफ़ी है।” वह जानता है जो कुछ आकाशों और धरती में है। जो लोग असत्य पर ईमान लाए और अल्लाह का इनकार किया वही हैं जो घाटे में हैं।

53. वे तुमसे यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं। यदि इसका एक नियत समय न होता तो उनपर अवश्य यातना आ जाती। वह तो अचानक उनपर आकर रहेगी कि उन्हें खबर भी न होगी।

54. वे तुमसे यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं, हालाँकि जहन्नम इनकार करनेवालों को अपने घेरे में लिए हुए है।

55. जिस दिन यातना उन्हें उनके ऊपर से ढाँक लेगी और उनके पाँव के नाचे से भी, और वह कहेगा : “चखो उसका मज़ा जो कुछ तुम करते रहे हो !”

56. ऐ मेरे बन्दो, जो ईमान लाए हो ! निस्संदेह मेरी धरती विशाल है। अतः तुम मेरी ही बन्दगी करो।

57. प्रत्येक जीव को मृत्यु का स्वाद चखना है। फिर तुम हमारी ओर वापस लौटोगे।

58. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें हम जन्नत की

عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا  
أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ  
لَرْحْمَةً وَذِكْرًا لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ  
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا ۖ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ  
وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ  
الْخَاسِرُونَ ۝ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۖ وَلَوْ لَا  
أَجَلَ مُتَعَتَّىٰ لَجَاءَهُمُ الْعَذَابُ ۖ وَلَيَأْتِيَنَّهُمْ بَغْضَةٌ  
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۖ وَإِنَّ  
جَهَنَّمَ لَهِيطَةٌ ۖ بِالْكَافِرِينَ ۝ يَوْمَ يَفْشُمُ الْعَذَابُ  
مِنْ قُوَّتِهِمْ ۖ وَمِنْ تَحْتِ أَعْيُنِهِمْ يَقُولُ ذُو قُوَّةٍ  
مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِمَّا يَدْعِي الَّذِينَ آمَنُوا وَإِنْ  
أَنفَىٰ وَاسْعَةً قَوَائِمَ ۖ فَاَعْبُدُونِ ۝ كُلُّ نَفْسٍ  
ذَٰقَةُ الْمَوْتِ ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا



ऊपरी मंजिल के कक्षों में जगह देंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वे उसमें सदैव रहेंगे। क्या ही अच्छा प्रतिदान है कर्म करनेवालों का !

59. जिन्होंने धैर्य से काम लिया और जो अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

60. कितने ही चलनेवाले जीवधारी हैं, जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते। अल्लाह ही उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी ! वह सब कुछ सुनता, जानता है।

61. और यदि तुम उनसे पूछो कि “किसने आकाशों और धरती को पैदा किया और सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगाया ?” तो वे बोल पड़ेंगे : “अल्लाह ने !” फिर वे किधर उलटे फिरे जाते हैं ?

62. अल्लाह अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है आजीविका विस्तीर्ण कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है। निस्संदेह अल्लाह हरेक चीज़ को भली-भाँति जानता है।

63. और यदि तुम उनसे पूछो कि “किसने आकाश से पानी बरसाया; फिर उसके द्वारा धरती को उसके मुर्दा हो जाने के पश्चात जीवित किया ?” तो वे बोल पड़ेंगे : “अल्लाह ने !” कहो : “सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है।” किन्तु उनमें से अधिकतर बुद्धि से काम नहीं लेते।

64. और यह सांसारिक जीवन तो केवल दिल का बहलावा और खेल है। निस्संदेह पश्चात्‌वर्ती घर<sup>1</sup> (का जीवन) ही वास्तविक जीवन है। क्या ही अच्छा होता कि वे जानते !

التَّائِبِينَ

أُولَئِكَ

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَتُبَوَّلَنَّ لَهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ عُرُفًا يَخْرُجُونَ مِنْ  
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نِعَمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ۝  
الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ وَكَانَ مِنْ  
مَنْ دَابَّتْ بِهِ لَا تَحْمِلُ يَرْفَعُهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا إِيَّاهُ كَمَا  
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَلَكِنْ مَّا لَكُمْ مِنْ خَلْقِ  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَحَصْرِ النُّجُومِ وَالْقَمَرِ لَيَقُولُنَّ  
إِنَّا قَانِعُونَ ۝ اللَّهُ يَبْطِشُ الزُّرْقَىٰ لِمَنْ  
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ  
عَلِيمٌ ۝ وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً  
فَأَخْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ  
قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا  
هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُوَ وَلَوْ كُوبُوا ۚ وَإِنَّ الدَّرْ  
الْآخِرَةَ لَهِیَ الْحَيَوَانُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

مَذَرَهُ







पश्चात शीघ्र ही कुछ वर्षों में प्रभावी हो जाएँगे। हुक्म तो अल्लाह ही का है पहले भी और उसके बाद भी। और उस दिन ईमानवाले अल्लाह की सहायता से प्रसन्न होंगे। वह जिसकी चाहता है, सहायता करता है। वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान है।

6. यह अल्लाह का वादा है! अल्लाह अपने वादे का उल्लंघन नहीं करता। किन्तु अधिकांश लोग जानते नहीं।

7. वे सांसारिक जीवन के केवल वाह्य रूप को जानते हैं। किन्तु आखिरत की ओर से वे बिलकुल असावधान हैं।

8. क्या उन्होंने अपने आप में सोच-विचार नहीं किया? अल्लाह ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है सत्य के साथ और एक नियत अवधि ही के लिए पैदा किया है। किन्तु बहुत-से लोग तो अपने प्रभु के मिलन का इनकार करते हैं।

9. क्या वे धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो उनसे पहले थे? वे शक्ति में उनसे अधिक बलवान थे और उन्होंने धरती को उपजाया और उससे कहीं अधिक उसे आबाद किया जितना उन्होंने उसे आबाद किया था। और उनके पास उनके रसूल प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर आए। फिर अल्लाह ऐसा न था कि उनपर जुल्म करता। किन्तु वे स्वयं ही अपने आपपर जुल्म करते थे।

10. फिर जिन लोगों ने बुरा किया था उनका परिणाम बुरा हुआ, क्योंकि

الزُّمَرُ

الزُّمَرُ

الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ، وَيَوْمَئِذٍ يَفِرُّ  
الْمُؤْمِنُونَ، يَنْصُرُ اللَّهُ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ، وَهُوَ الْعَزِيزُ  
الرَّحِيمُ ۚ وَعَدَ اللَّهُ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنْ  
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ  
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا، وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غٰفِلُونَ ۝ أَوَلَمْ  
يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ، مَا خَلَقَ اللَّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ  
وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَدَّدٍ ۚ إِنَّ  
كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِإِلْقَائِي رِسَالَتِهِمْ لَكٰفِرُونَ ۚ  
أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ  
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ، كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً  
وَآثَارُوا فِي الْأَرْضِ وَعَمَّوْهَا أَكْثَرُ مِمَّا عَمَّرُوهَا وَ  
جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنٰتِ، فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ  
وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۚ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَتُهُ

مَذٰلَہ



उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया और उनका उपहास करते रहे।

11. अल्लाह ही सृष्टि का आरंभ करता है। फिर वही उसकी पुनरावृत्ति करता है। फिर उसी की ओर तुम पलटोगे।

12. जिस दिन वह घड़ी आ खड़ी होगी, उस दिन अपराधी एकदम निराश होकर रह जाएँगे।

13. उनके ठहराए हुए साझीदारों में से कोई उनका सिफ़ारिश करनेवाला न होगा और वे स्वयं भी अपने साझीदारों का इनकार करेंगे।

14. और जिस दिन वह घड़ी आ खड़ी होगी, उस दिन वे सब अलग-अलग हो जाएँगे।

15. अतः जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे एक बाग़ में प्रसन्नतापूर्वक रखे जाएँगे।

16. किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों और आखिरत की मुलाक़ात को झुठलाया, वे लाकर यातनाग्रस्त किए जाएँगे।

17-18. अतः अब अल्लाह की तसबीह करो, जबकि तुम शाम करो और जब सुबह करो।—और उसी के लिए प्रशंसा है आकाशों और धरती में—और पिछले पहर और जब तुमपर दोपहर हो।

19. वह जीवित को मृत से निकालता है और मृत को जीवित से, और धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवन प्रदान करता है। इसी प्रकार तुम भी निकाले जाओगे।

20. और यह उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा

الزُّمَرِ

الَّذِينَ آمَنُوا

الَّذِينَ آمَنُوا وَالشُّرَكَاءُ أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَ  
كَانُوا بِهَا يَسْتَفْهِمُونَ ۖ وَاللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ  
ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ  
الْمُجْرِمُونَ ۖ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِّنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاؤُا  
وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كَافِرِينَ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ  
يَوْمَ يَفْعَلُ مَا يُفْعَلُونَ ۖ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا  
الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَبُونَ ۖ وَأَمَّا الَّذِينَ  
كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ فَأُولَٰئِكَ فِي  
الْعَذَابِ مُخَضَّرُونَ ۖ فَسَبِّحْ لِلَّهِ حِينَ تَقُومُ وَ  
حِينَ تَضِيحُونَ ۖ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ وَ  
الْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ۖ يُخْرِجُ اللَّيْلَ  
مِنَ النَّهَارِ وَيُخْرِجُ النَّهَارَ مِنَ اللَّيْلِ وَيُسَبِّحُ  
الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۖ وَمِنْ آيَاتِهِ

مَثَلُهُ



किया। फिर क्या देखते हैं कि तुम मानव हो, फैलते जा रहे हो।

21. और यह भी उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारी ही सहजाति से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो। और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा की। और निश्चय ही इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं।

22. और उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती का सृजन और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों की विविधता भी है।

निस्संदेह इसमें ज्ञानवानों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

23. और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन का सोना और तुम्हारा उसके अनुग्रह की तलाश करना भी है। निश्चय ही इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।

24. और उसकी निशानियों में से यह भी है कि वह तुम्हें बिजली की चमक भय और आशा उत्पन्न करने के लिए दिखाता है। और वह आकाश से पानी बरसाता है। फिर उसके द्वारा धरती को उसके निर्जीव हो जाने के पश्चात जीवन प्रदान करता है। निस्संदेह इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।

25. और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आकाश और धरती उसके आदेश से क्रायम हैं। फिर जब वह तुम्हें एक बार पुकारकर धरती में से बुलाएगा, तो क्या देखेंगे कि सहसा तुम निकल पड़े।

26. आकाशों और धरती में जो कोई भी है उसी का है। प्रत्येक उसी के

الزُّمَرِ

اَنْلَمَّا اُنْخَلَعْنَا

اَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَا اَنْتُمْ بِبَشَرٍ تَنْتَشِرُونَ ﴿١٠﴾  
وَمِنْ اٰيٰتِهٖ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا  
لِتَسْكُنُوْا اَلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۗ اِنَّ  
فِيْ ذٰلِكَ لَآٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿١١﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ  
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ السِّنِّكُمْ وَالْوَلٰدَةُ  
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَآٰيٰتٍ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَتَا مَكُمُ  
بَالِيْلٍ وَالتَّهٰرِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ اِنَّ فِيْ  
ذٰلِكَ لَآٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿١٣﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمْ  
الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُخْرِجُ  
بِهٖ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَآٰيٰتٍ  
لِّقَوْمٍ يَعْقِلُوْنَ ﴿١٤﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ اَنْ تَقُوْمَ السَّمٰوٰتُ وَ  
الْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ  
الْاَرْضِ اِذَا اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿١٥﴾ وَلَهُ مَنْ فِي

مَدَنٍ



निष्ठावान आज्ञाकारी हैं।

27. वही है जो सृष्टि का आरंभ करता है। फिर वही उसकी पुनरावृत्ति करेगा। और यह उसके लिए अधिक सरल है। आकाशों और धरती में उसी की मिसाल (गुण) सर्वोच्च है। और वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

28. उसने तुम्हारे लिए स्वयं तुम्हीं में से एक मिसाल पेश की है। क्या जो रोज़ी हमने तुम्हें दी है, उसमें तुम्हारे अधीनस्थों<sup>1</sup> में से, कुछ तुम्हारे साझीदार हैं कि तुम सब उसमें बराबर के हो, तुम उनका ऐसा डर रखते हो जैसा

अपने लोगों का डर रखते हो?— इस प्रकार हम उन लोगों के लिए आयतें खोल-खोलकर प्रस्तुत करते हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं।—

29. नहीं, बल्कि ये ज़ालिम तो बिना ज्ञान के अपनी इच्छाओं के पीछे चल पड़े।<sup>2</sup> तो अब कौन उसे मार्ग दिखाएगा जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो? ऐसे लोगों का तो कोई सहायक नहीं।

30-32. अतः एक ओर का होकर अपने रुख को 'दीन' (धर्म) की ओर जमा दो, अल्लाह की उस प्रकृति का अनुसरण करो जिसपर उसने लोगों को पैदा किया। अल्लाह की बनाई हुई संरचना बदली नहीं जा सकती। यही सीधा और ठीक धर्म है, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। उसकी ओर रुजू करनेवाले (प्रवृत्त होनेवाले) रहो। और उसका डर रखो और नमाज़ का आयोजन करो।

النَّاسُ أَكْثَرُ شَاكِرِينَ ۝  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَهٗ قَنِينٌ ۝ وَهُوَ الَّذِي  
يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۝ وَلَهُ  
الْمِثْلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝ وَهُوَ الْعَزِيزُ  
الْحَكِيمُ ۝ صَرَبَ لَكُمْ مَثَلًا مِّنَ الْأَنْفِ كَمْ ۝ هَلْ لَّكُمْ  
مِّن مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّن شُرَكَاءَ فِي مَا رَزَقْتُمْ  
قَائِمٌ فِيهِ سَوَاءٌ مَّخَافَتُهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ  
كَذَٰلِكَ تَفْصِلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ بَلِ اتَّبَعَ  
الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَهْدِي مَن  
أَضَلَّ اللَّهُ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّن نَّاصِرِينَ ۝ فَأَقِمْ وَجْهَكَ  
لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ  
عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ  
وَلَكِن أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ مِّنِّيَنِينَ ۚ إِلَيْهِ  
وَاتَّقُوا ۚ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

मन्ज़र

1. अर्थात् गुलाम, लौंडी।

2. अर्थात् इच्छा के अनुसरण ने इनको अंधा बना दिया है। इसलिए ये अपने ऊपर जुल्म ही ढाएंगे।



और (अल्लाह का) साझी ठहराने-वालों में से न होना, उन लोगों में से जिन्होंने अपने दीन (धर्म) को टुकड़े-टुकड़े कर डाला और गिरोहों में बँट गए। हर गिरोह के पास जो कुछ है, उसी में मग्न है।

33. और जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वे अपने रब को, उसकी ओर रुजू (प्रवृत्त) होकर पुकारते हैं। फिर जब वह उन्हें अपनी दयालुता का रसास्वादन करा देता है, तो क्या देखते हैं कि उनमें से कुछ लोग अपने रब का साझी ठहराने लगे;

34. ताकि इस प्रकार वे उसके प्रति अकृतज्ञता दिखलाएँ जो कुछ हमने उन्हें दिया है। “अच्छा तो मज़े उड़ा लो, शीघ्र ही तुम जान लोगे।”

35. (क्या उनके देवताओं ने उनकी सहायता की थी,) या हमने उनपर ऐसा कोई प्रमाण उतारा है कि वह उसके हक़ में बोलता हो, जो वे उसके साथ साझी ठहराते हैं।

36. और जब हम लोगों को दयालुता का रसास्वादन कराते हैं तो वे उसपर इतराने लगते हैं; परन्तु जो कुछ उनके हाथों ने आगे भेजा है यदि उसके कारण उनपर कोई विपत्ति आ जाए, तो क्या देखते हैं कि वे निराश हो रहे हैं।

37. क्या उन्होंने विचार नहीं किया कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है? निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो ईमान लाएँ।

38. अतः नातेदार को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को भी। यह अच्छा है उनके लिए जो अल्लाह की प्रसन्नता के इच्छुक हों और वही सफल हैं।

39. तुम जो कुछ ब्याज पर देते हो, ताकि वह लोगों के मालों में सम्मिलित

وَمِنَ الَّذِينَ فَرَقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا ۚ كُلُّ حِزْبٍ  
بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ۚ وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا  
رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَذَقْنَاهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً  
إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۚ لِيَكْفُرُوا بِمَا  
آتَيْنَاهُمْ ۖ فَتَمَتَّعُوا فَتُوفَّيْتُمْ ۖ ثُمَّ تَأْتِيهِمْ  
عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ۚ  
وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۚ وَإِن تُضِلَّهُمْ  
شَيْئَةً ۖ يَمَّا قَدَّامَتِ آيَاتُنَا لَهُمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ۚ  
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ  
ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۚ قَاتِلْ  
ذَاقُوا نَارَ حَقِّهِ وَالْمُسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ ذَاقُوا  
خَيْرَ الْبَلَاءِ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ  
الْمُفْلِحُونَ ۚ وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ رَبٍّ لَّا يُرْبُوا فِي أَصْوَالٍ  
مَّنْزِلًا



होकर बढ़ जाए, तो वह अल्लाह के यहाँ नहीं बढ़ता। किन्तु जो ज़कात तुमने अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए दी, तो ऐसे ही लोग (अल्लाह के यहाँ) अपना माल बढ़ाते हैं।

40. अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हें रोज़ी दी; फिर वह तुम्हें मृत्यु देता है; फिर तुम्हें जीवित करेगा। क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में भी कोई है, जो इन कामों में से कुछ कर सके? महान और उच्च है वह उससे जो साझी वे ठहराते हैं।

41. थल और जल में बिगाड़ फैल गया स्वयं लोगों ही के हाथों की कमाई के कारण, ताकि वह उन्हें उनकी कुछ करतूतों का मज़ा चखाए, कदाचित वे बाज़ आ जाएँ।

42. कहो : “धरती में चल-फिरकर देखो कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ है जो पहले गुज़रे हैं। उनमें अधिकतर बहुदेववादी ही थे।”

43. अतः तुम अपना रुख सीधे व ठीक धर्म की ओर जमा दो, इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए जिसके लिए वापसी नहीं। उस दिन लोग अलग-अलग हो जाएँगे।

44. जिस किसी ने इनकार किया तो उसका इनकार उसी के लिए घातक सिद्ध होगा, और जिन लोगों ने अच्छा कर्म किया वे अपने ही लिए आराम का साधन जुटा रहे हैं।

45. ताकि वह अपने उदार अनुग्रह से उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए

النَّاسِ فَلَا يَرْبُوا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ دُكُولِهِ  
تَرْيَدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُضْغِفُونَ وَاللَّهُ  
الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُعْيِنُكُمْ ثُمَّ يُخَيِّبُكُمْ  
هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَفْعَلُ مِنْ ذَلِكَ كُمْ وَمَنْ  
شَيْءٍ يُسْخِنُهُ وَيَطْعَمُ عَتَا يُشْرِكُونَ ۝ ظَهَرَ الْفَسَادُ  
فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ  
بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ قُلْ وَسَيُزْوَ  
فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ  
مِنْ قَبْلُ ۝ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ۝ قَاتِمٌ وَجْهَكَ  
لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدٍّ لَهُ  
مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ يُصَدِّعُونَ ۝ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ  
كَفْرُهُ ۝ وَمَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلَا نَفْسَ لَهُ يَمْهَدُونَ ۝  
لِيُخَيِّرَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۝



और उन्होंने अच्छे कर्म किए। निश्चय ही वह इनकार करनेवालों को पसन्द नहीं करता।—

46. और उसकी निशानियों में से यह भी है कि वह शुभ सूचना देनेवाली हवाएँ भेजता है (ताकि उनके द्वारा तुम्हें वर्षा की शुभ सूचना मिले) और ताकि वह तुम्हें अपनी दयालुता का रसास्वादन कराए और ताकि उसके आदेश से नौकाएँ चलें और ताकि तुम उसका अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो और कदाचित तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

47. हम तुमसे पहले कितने ही रसूलों को उनकी क़ौम की ओर भेज चुके हैं और वे उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए। फिर हम उन लोगों से बदला लेकर रहे जिन्होंने अपराध किया, और ईमानवालों की सहायता करना तो हमपर एक हक़ है।

48. अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। फिर वे बादलों को उठाती हैं; फिर जिस तरह चाहता है उन्हें आकाश में फैला देता है और उन्हें परतों और टुकड़ियों का रूप दे देता है। फिर तुम देखते हो कि उनके बीच से वर्षा की बूँदें टपकी चली आती हैं। फिर जब वह अपने बन्दों में से जिनपर चाहता है, उसे बरसाता है। तो क्या देखते हैं कि वे हर्षित हो उठे।

49. जबकि इससे पूर्व, इससे पहले कि वह उनपर उतरे, वे बिलकुल निराश थे।

50. अतः देखो अल्लाह की दयालुता के चिह्न! वह किस प्रकार धरती को उसके मृत हो जाने के पश्चात जीवन प्रदान करता है। निश्चय ही वह मुर्दों को जीवित करनेवाला है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

الرّؤوف

الرّؤوف

إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۚ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ  
الزِّيَادَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيُذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَبْخِرَ  
الْأَفْئَالُ بِأَمْرِهِ وَلِتَسْتَغْفِرُوا مِنْ قُضَلِهِ وَلَعَلَّكُمْ  
تَشْكُرُونَ ۖ وَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ  
فَجَاءَ وَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَأَنْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَخْرَجُوا ۚ  
وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ اللَّهُ الَّذِي  
يُرْسِلُ الزِّيَادَ فَتُشِيرُ سَحَابًا فَيَبْطِطُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ  
يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسْفًا فَتَكْرَى الْوَدَقُ يَخْرُجُ مِنْ  
جِلْدِهِ ۚ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادَةٍ  
إِذَا هُمْ يَنْسَبِرُونَ ۚ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ  
أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمُبْلِسِينَ ۚ فَانْظُرْ  
إِلَى أَثَرِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُغْنِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ  
إِنَّ ذَلِكَ لَمُعْجَى الْوَقْتِ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

مَدِينَةٍ



51. किन्तु यदि हम एक दूसरी हवा भेज दें, जिसके प्रभाव से वे उस (खेती) को पीली पड़ी हुई देखें तो इसके पश्चात वे कुफ़्र करने लग जाएँ।

52. अतः तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो, जबकि वे पीठ फेरे चले जा रहे हों।

53. और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से फेरकर मार्ग पर ला सकते हो। तुम तो केवल उन्हीं को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाएँ। तो वही आज्ञाकारी हैं।

الْمُؤْمِنِينَ

الْمُؤْمِنِينَ

وَلَمَّا أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفًى لَظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ  
يَكْفُرُونَ ۚ فَإِنَّكَ لَا تَسْمَعُ الْكَلِمَةَ وَلَا تَسْمَعُ الصَّمَّةَ  
الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۚ وَمَا أَنْتَ بِهَادٍ الْعَمَى  
عَنْ صَلَائِهِمْ ۚ إِنْ تَسْمَعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا  
فَهُمْ مُسْلِمُونَ ۚ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ صُغُرٍ  
ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ صُغُرٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ  
بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَكَيْبَةً ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَهُوَ  
الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ۚ وَيَوْمَ يَقُومُ السَّاعَةُ يُقَرِّمُ  
الْمُجْرِمُونَ ۚ مَا لَيْشُوا غَيْرَ سَاعَةٍ ۚ كَذَلِكَ كَانُوا  
يُؤْفَكُونَ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ  
لَبِئْسَ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ ۚ قُلْ هَذَا يَوْمُ  
الْبَعْثِ وَلَكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۚ فَيَوْمَئِذٍ  
لَا يُنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۚ

مِثْلُ

54. अल्लाह ही है जिसने तुम्हें निर्बल पैदा किया, फिर निर्बलता के पश्चात शक्ति प्रदान की; फिर शक्ति के पश्चात निर्बलता और बुढ़ापा दिया। वह जो कुछ चाहता है पैदा करता है। वह जाननेवाला, सामर्थ्यवान है।

55. जिस दिन वह घड़ी आ खड़ी होगी अपराधी क्रसम खाएँगे कि वे घड़ी भर से अधिक नहीं ठहरे। इसी प्रकार वे उलटे फिरे चले जाते थे।

56. किन्तु जिन लोगों को ज्ञान और ईमान प्रदान हुआ, वे कहेंगे : “अल्लाह के लेख में तो तुम जीवित होकर उठने के दिन तक ठहरे रहे हो। तो यही जीवित होकर उठने का दिन है। किन्तु तुम जानते न थे।”

57. अतः उस दिन ज़ुल्म करनेवालों को उनका कोई उज़्र (सफ़ाई पेश करना) काम न आएगा और न उनसे यह चाहा जाएगा कि वे किसी यत्न से (अल्लाह के) प्रकोप को टाल सकें।



58. हमने इस कुरआन में लोगों के लिए प्रत्येक मिसाल पेश कर दी है। यदि तुम कोई भी निशानी उनके पास ले आओ, जिन लोगों ने इनकार किया है, वे तो यही कहेंगे : “तुम तो बस झूठ घड़ते हो।”

59. इस प्रकार अल्लाह उन लोगों के दिलों पर ठप्पा लगा देता है जो अज्ञानी हैं।

60. अतः धैर्य से काम लो। निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है और जिन्हें विश्वास नहीं, वे तुम्हें कदापि हल्का न पाएँ।



## 31. लुक्रमान

(मक्का में उतरी— आयतें 34)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० मीम०।
2. (जो आयतें उतर रही हैं) वे तत्त्वज्ञान से परिपूर्ण किताब की आयतें हैं;
3. मार्गदर्शन और दयालुता उत्तमकारों के लिए;
4. जो नमाज़ का आयोजन करते हैं और ज़कात देते हैं और आखिरत पर विश्वास रखते हैं।
5. वही अपने रब की ओर से मार्ग पर हैं और वही सफल हैं।
6. लोगों में से कोई ऐसा भी है जो दिल को लुभानेवाली बातों का खरीदार बनता है, ताकि बिना किसी ज्ञान के अल्लाह के मार्ग से (दूसरों को) भटकाए



और उनका<sup>1</sup> परिहास करे। वही हैं जिनके लिए अपमानजनक यातना है।

7. जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह स्वयं को बड़ा समझता हुआ पीठ फेरकर चल देता है, मानो उसने उन्हें सुना ही नहीं, मानो उसके कान बहरे हैं। अच्छा तो उसे एक दुखद यातना की शुभ सूचना दे दो।

8-9. अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए नेमत भरी जन्नतें हैं, जिनमें वे सदैव रहेंगे। यह अल्लाह का सच्चा वादा है और वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

10. उसने आकाशों को पैदा किया, (जो थमे हुए हैं) बिना ऐसे स्तंभों के जो तुम्हें दिखाई दें। और उसने धरती में पहाड़ डाल दिए कि ऐसा न हो कि तुम्हें लेकर डाँवाडोल हो जाए और उसने उसमें हर प्रकार के जानवर फैला दिए। और हमने ही आकाश से पानी उतारा, फिर उसमें हर प्रकार की उत्तम चीज़ें उगाईं।

11. यह तो अल्लाह की संरचना है। अब तनिक मुझे दिखाओ कि उससे हटकर जो दूसरे हैं (तुम्हारे ठहराए हुए प्रभु) उन्होंने क्या पैदा किया है! नहीं, बल्कि ज़ालिम तो एक खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

12. निश्चय ही हमने लुक्रमान को तत्त्वदर्शिता प्रदान की थी कि अल्लाह के प्रति कृतज्ञता दिखलाओ और जो कोई कृतज्ञता दिखलाए, वह अपने ही भले के लिए कृतज्ञता दिखलाता है। और जिसने अकृतज्ञता दिखलाई तो अल्लाह वास्तव में निस्पृह, प्रशंसनीय है।

لَقَدْ

أَنشَأْنَاهُنَّ

وَيَتَّخِذَهَا هَٰزُواً أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝  
وَلَا تَأْتِنِي عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلِي مُّسْتَكْبِرٌ ۝  
يَسْمَعُهَا كَآَنَ فِي أَذْنِيهِ وَقَرَأَ فَبِثْرِهِ بَعْدَ الْبَاسِ ۝  
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ  
جَنَّاتُ النَّعِيمِ ۝ خَالِدِينَ فِيهَا وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا  
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ  
تَرَوْنَهَا وَالْأَرْضَ فِي أَرْبَعِ رَوَاسٍ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ  
وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۝ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ  
مَآءً فَأَنبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝ هَٰذَا خَلْقُ  
اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۝ بَلِ  
الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ  
الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ ۝ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّا نِشْكُرُ  
لِنَفْسِهِ ۝ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ وَلَا

مَنْعَهُ



13. याद करो जब लुक्रमान ने अपने बेटे से, उसे नसीहत करते हुए, कहा : “ऐ मेरे बेटे ! अल्लाह का साझी न ठहराना । निश्चय ही शिर्क (बहुदेववाद) बहुत बड़ा जुल्म है ।”——

14. और हमने मनुष्य को उसके अपने माँ-बाप के मामले में ताकीद की है—— उसकी माँ ने निंढाल पर निंढाल होकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष उसके दूध छूटने में लगे—— कि “मेरे प्रति कृतज्ञ हो और अपने माँ-बाप के प्रति भी । अंततः मेरी ही ओर आना है ।

15. किन्तु यदि वे तुझपर दबाव डालें कि तू किसी को मेरे साथ साझी ठहराए, जिसका तुझे ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मानना और दुनिया में उनके साथ भले तरीके से रहना । किन्तु अनुसरण उस व्यक्ति के मार्ग का करना जो मेरी ओर रुजू हो । फिर तुम सबको मेरी ही ओर पलटना है; फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे होगे ।”——

16. “ऐ मेरे बेटे ! इसमें संदेह नहीं कि यदि वह राई के दाने के बराबर भी हो, फिर वह किसी चट्टान के बीच हो या आकाशों में हो या धरती में हो, अल्लाह उसे ला उपस्थित करेगा । निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी, खबर रखनेवाला है ।

17. ऐ मेरे बेटे ! नमाज़ का आयोजन कर और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोक और जो मुसीबत भी तुझपर पड़े उसपर धैर्य से काम ले । निस्संदेह ये उन कामों में से हैं जो अनिवार्य और दृढ़संकल्प के काम हैं ।

18. और लोगों से अपना रुख न फेर और न धरती में इतराकर चल ।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتُ أَنَّهُ شَرٌّ لِّمَن يَشْرِكُ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ۝ وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ طَعْنَةً أُمُّهُ وَهْنًا عَلَىٰ وَهْنٍ وَفِضْلَةً فِي عَامَيْنِ ۚ إِنَّ الشُّكْرَ لِي وَلِوَالِدَيْكَ ۖ إِلَى الْمَصِيرِ ۝ وَإِنْ جَاهَدَكَ عَلَىٰ أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبِنَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۚ وَأَنْتُمْ سَيِّئِلٌ مِّنْ آثَابِ رَبِّكَ ۚ ثُمَّ رَأَىٰ مَرْجِعَكُمْ فَأْتَبَكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ يُبَيِّنُ لَهَا إِنْ تَكُ وَشَقَّالٌ حَبِطَ ۖ وَمِنْ خُرْدِلٍ تَمَكَّنُ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِي بِهَا اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۝ يُبَيِّنُ أَقِيمِ الصَّلَاةَ وَامْرُءًا بِالصَّلَاةِ وَإِنَّهُ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصِيرٌ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ ۖ إِنَّ ذَلِكَ مِّنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۖ وَلَا تُصَيِّرْ

مَزَلَةٌ



निश्चय ही अल्लाह किसी अहंकारी, डींग मारनेवाले को पसन्द नहीं करता।

19. और अपनी चाल में सहजता एवं संतुलन बनाए रख और अपनी आवाज़ धीमी रख। निस्संदेह आवाज़ों में सबसे बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ होती है।”

20. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने, जो कुछ आकाशों में और जो कुछ धरती में है, सबको तुम्हारे काम में लगा रखा है और उसने तुमपर अपनी प्रकट और अप्रकट अनुकम्पाएँ पूर्ण कर दी

हैं? इसपर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान, बिना किसी मार्गदर्शन और बिना किसी प्रकाशमान किताब के झगड़ते हैं।

21. अब जब उनसे कहा जाता है कि “उस चीज़ का अनुसरण करो जो अल्लाह ने उतारी है”, तो कहते हैं : “नहीं, बल्कि हम तो उस चीज़ का अनुसरण करेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है।” क्या यद्यपि शैतान उनको भड़कती आग की यातना की ओर बुला रहा हो तब भी?

22. जो कोई आज्ञाकारिता के साथ अपना रुख अल्लाह की ओर करे और वह उत्तमकार भी हो तो उसने मज़बूत सहारा थाम लिया। सारे मामलों की परिणति अल्लाह ही की ओर है।

23. और जिस किसी ने इनकार किया तो उसका इनकार तुम्हें शोकाकुल न

الناس

الانسان

خَدَكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَتَّشِ فِي الْأَرْضِ مَرْحَاءً  
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۚ وَاقْصِدْ  
فِي مَشْيِكَ وَاعْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۚ إِنَّ أَنْكَرَ  
الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ۚ أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ  
سَخَّرَ لَكُمْ مِمَّا فِي السَّمَوَاتِ وَمِمَّا فِي الْأَرْضِ  
وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۚ وَمِنَ  
النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى  
وَلَا كِتَابٍ مُنِيرٍ ۚ فَلَا ذَرْبَ لَهُمْ أَتَّبِعُوا مِمَّا  
أَنْزَلَ اللَّهُ ۚ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ  
آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَى عَذَابِ  
التَّعَذِيرِ ۚ وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ  
مُخْلٍ فَقَدْ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَى ۚ وَإِلَى  
اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ

سُورَةُ



करे। हमारी ही ओर तो उन्हें पलटकर आना है। फिर जो कुछ वे करते रहे होंगे, उससे हम उन्हें अवगत करा देंगे। निस्संदेह अल्लाह सीनों की बात तक जानता है।

24. हम उन्हें थोड़ा मज़ा उड़ाने देंगे। फिर उन्हें विवश करके एक कठोर यातना की ओर खींच ले जाएँगे।

25. यदि तुम उनसे पूछो कि "आकाशों और धरती को किसने पैदा किया?" तो वे अवश्य कहेंगे कि "अल्लाह ने।" कहो : "प्रशंसा भी अल्लाह के लिए है।" वरन् उनमें से अधिकांश जानते नहीं।

26. आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का है। निस्संदेह अल्लाह ही निस्पृह, स्वतः प्रशंसित है।

27. धरती में जितने वृक्ष हैं, यदि वे क़लम हो जाएँ और समुद्र उसकी स्याही हो जाए, उसके बाद सात और समुद्र हों तब भी अल्लाह के बोल समाप्त न हो सकेंगे। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

28. तुम सबका पैदा करना और तुम सबका जीवित करके पुनः उठाना तो बस ऐसा है, जैसे एक जीव का। अल्लाह तो सबकुछ सुनता, देखता है।

29. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है। उसने सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगा रखा है? प्रत्येक एक नियत समय तक चला जा रहा है और इसके साथ यह कि जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उसकी पूरी खबर रखता है।

30. यह सब कुछ इस कारण से हैं कि अल्लाह ही सत्य है और यह कि

الْحَمْدُ لِلَّهِ

أَقْلَمُ مَا أَفَعَلْنَا

كُفْرُهُ إِنَّا مَرَجَعُهُمْ فَتَنِّيهِمْ بِمَا عَمِلُوا وَإِنَّ اللَّهَ  
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ ثُمَّ لَنُحْضِرَهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ  
إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ  
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ اللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَ  
الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ وَلَوْ أَنَّ مَا  
فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمْدُهَا مِنْ  
بَعْدِهِ سَبْعَةُ آبِحَارٍ مَا تَفَدَّتْ كَلِمَتُ اللَّهِ عَمَّا  
إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ مَا خَلَقَكُمْ وَلَا يَغْنَثُكُمْ إِلَّا  
كُنُفُسٌ وَاحِدَةٌ إِنْ اللَّهَ بِصِيمٍ بَصِيرٌ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ  
اللَّهَ يُوَلِّجُ الْبَلَّ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَ  
سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى  
وَإِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ

مَدَن



उसे छोड़कर जिनको वे पुकारते हैं, वे असत्य हैं। और यह कि अल्लाह ही सर्वोच्च, महान है।

31. क्या तुमने देखा नहीं कि नौका समुद्र में अल्लाह के अनुग्रह से चलती है, ताकि वह तुम्हें अपनी कुछ निशानियाँ दिखाए। निस्संदेह इसमें प्रत्येक धैर्यवान, कृतज्ञ के लिए निशानियाँ हैं।

32. और जब कोई मौज छाया-छत्रों की तरह उन्हें ढाँक लेती है, तो वे अल्लाह को उसी के लिए अपने निष्ठाभाव को विशुद्ध करते हुए पुकारते हैं, फिर जब वह उन्हें बचाकर स्थल तक पहुँचा देता है, तो उनमें से कुछ ही लोग संतुलित मार्ग पर रहते हैं। (अधिकांश तो पुनः पथभ्रष्ट हो जाते हैं।) हमारी निशानियों का इनकार तो बस प्रत्येक वह व्यक्ति करता है जो विश्वासघाती, कृतघ्न हो।

33. ऐ लोगो ! अपने रब का डर रखो और उस दिन से डरो जब न कोई बाप अपनी औलाद की ओर से बदला देगा और न कोई औलाद ही अपने बाप की ओर से कोई बदला देनेवाली होगी। निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। अतः सांसारिक जीवन कदापि तुम्हें धोखे में न डाले। और न अल्लाह के विषय में वह धोखेबाज़ तुम्हें धोखे में डाले।

34. निस्संदेह उस घड़ी का ज्ञान अल्लाह ही के पास है। वही मेंह बरसाता है और जानता है जो कुछ गर्भाशयों में होता है। कोई व्यक्ति नहीं जानता कि

هُوَ الْحَقُّ وَأَنْ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوْجٌ كَالظُّلُمِ دَعَا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۚ يَأْتِيهَا النَّاسُ اتِّقَوَارَهُمْ وَآخْشَوَاتِيَوْمًا لَا يُجْزِيهِ وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ ۚ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَاهِلٌ عَنْ وَالِدِهِ شَيْئًا ۚ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَلَا يَغُرَّنَّكُمُ اللَّهُ الْعُرُورُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ ۚ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّا

مَذَلَهُ



कल वह क्या कमाएगा और कोई व्यक्ति नहीं जानता है कि किस भूभाग में उसकी मृत्यु होगी। निस्संदेह अल्लाह जाननेवाला, खबर रखनेवाला है।

### 32. अस-सजदा

(मक्का में उतरी—आयतें 30)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० मीम० ।  
2. इस किताब का अवतरण — इसमें सन्देह नहीं—सारे संसार के रब की ओर से है।

3. (क्या वे इसपर विश्वास नहीं रखते) या वे कहते हैं कि “इस व्यक्ति ने इसे स्वयं ही घड़ लिया है?” नहीं, बल्कि वह सत्य है तेरे रब की ओर से, ताकि तू उन लोगों को सावधान कर दे जिनके पास तुझसे पहले कोई सावधान करनेवाला नहीं आया। कदाचित वे मार्ग पाएँ।

4. अल्लाह ही है जिसने आकाशों और धरती को और जो कुछ दोनों के बीच है छह दिनों में पैदा किया। फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। उससे हटकर न तो तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र है और न उसके मुक्काबले में कोई सिफ़ारिश करनेवाला। फिर क्या तुम होश में न आओगे?

5. वह कार्य की व्यवस्था करता है आकाश से धरती तक—फिर सारे मामले उसी की तरफ़ लौटते हैं—एक दिन में, जिसकी माप तुम्हारी गणना के अनुसार एक हज़ार वर्ष है।





6. वही है परोक्ष और प्रत्यक्ष का जाननेवाला अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान ।

7. जिसने हरेक चीज़, जो बनाई खूब ही बनाई और उसने मनुष्य की संरचना का आरंभ गारे से किया ।

8. फिर उसकी सन्तति एक तुच्छ पानी के सत से चलाई ।

9. फिर उसे ठीक-ठीक किया और उसमें अपनी रूह (आत्मा) फूँकी । और तुम्हें कान और आँखें और दिल दिए । तुम आभारी थोड़े ही होते हो ।

10. और उन्होंने कहा : “जब

हम धरती में रल-मिल जाएँगे तो फिर क्या हम वास्तव में नवीन काय में जीवित होंगे ?” नहीं, बल्कि उन्हें अपने रब से मिलने का इनकार है ।

11. कहो : “मृत्यु का फ़रिश्ता जो तुमपर नियुक्त है, वह तुम्हें पूर्ण रूप से अपने कब्ज़े में ले लेता है । फिर तुम अपने रब की ओर वापस होगे ।”

12. और यदि कहीं तुम देखते जब वे अपराधी अपने रब के सामने अपने सिर झुकाए होंगे कि “हमारे रब ! हमने देख लिया और सुन लिया । अब हमें वापस भेज दे, ताकि हम अच्छे कर्म करें । निस्संदेह अब हमें विश्वास हो गया ।”

13. यदि हम चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति को उसका अपना संमार्ग दिखा देते, किन्तु मेरी ओर से बात सत्यापित हो चुकी है कि “मैं जहन्नम को जिन्यों और

الشَّهِيدِ

أَقْلَمَ مَا أَفَعَى

عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ الَّذِي  
أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ  
مِنْ طِينٍ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ مَاءٍ  
مَّهِينٍ ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُوحِهِ وَجَعَلَ  
لَكُمْ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ  
وَقَالُوا لِمَ أُمِرْنَا بِالْإِذْنِ خَلَقَ  
جَدِيدَهُ بَلْ هُمْ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ كَافِرُونَ قُلْ  
يَتَوَقَّعُكُمْ مَلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي نُكْوِيْكُمْ بِهِ ثُمَّ  
إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ السَّاعِدُونَ  
تَأْكُلُونَ رُءُوسَهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا  
وَسَمِعْنَا فَانْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ وَلَوْ  
شِئْنَا لَذُكِّرْنَا كُلُّ نَفْسٍ مِّمَّا نَهَا وَلَٰكِنْ حَقَّ  
الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

سُورَةُ



मनुष्यों, सबसे भरकर रहूँगा।”

14. अतः अब चखो मज़ा, इसका कि तुमने अपने इस दिन के मिलन को भुलाए रखा। तो हमने भी तुम्हें भुला दिया। शाश्वत यातना का रसास्वादन करो, उसके बदले में जो तुम करते रहे हो।

15. हमारी आयतों पर तो बस वही लोग ईमान लाते हैं जिन्हें उनके द्वारा जब याद दिलाया जाता है तो सजदे में गिर पड़ते हैं और अपने रब का गुणगान करते हैं और घमण्ड नहीं करते।

16. उनके पहलू बिस्तारों से अलग रहते हैं कि वे अपने रब को भय और लालसा के साथ पुकारते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं।

17. फिर कोई प्राणी नहीं जानता आँखों की जो ठंडक उसके लिए छिपा रखी गई है उसके बदले में देने के ध्येय से जो वे करते रहे होंगे।

18. भला जो व्यक्ति ईमानवाला हो वह उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जो अवज्ञाकारी हो? वे बराबर नहीं हो सकते।

19. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए जो कर्म वे करते रहे उसके बदले में आतिथ्य स्वरूप रहने के बाग़ हैं।

20. रहे वे लोग जिन्होंने सीमा का उल्लंघन किया, उनका ठिकाना आग है। जब कभी भी वे चाहेंगे कि उससे निकल जाएँ तो उसी में लौटा दिए जाएँगे और उनसे कहा जाएगा: “चखो उस आग की यातना का मज़ा, जिसे तुम झूट

كَتَبْنَا

أَنزَلْنَا

أَجْمَعِينَ ۖ فَذُوقُوا بِمَا كَسَبْتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ  
إِنَّا أَنزَلْنَاهُ ذُوقُوا عَذَابَ الْغُلَّةِ بِمَا كُنتُمْ  
تَعْمَلُونَ ۝ إِنشَاءُ يَوْمٍ بِأَيِّتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا  
بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا  
يَسْتَكْبِرُونَ ۝ تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ  
يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝  
فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ ۚ  
جَزَاءُ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا  
كَمَن كَانَ فَاسِقًا لَّا يَسْتَوُونَ ۚ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا  
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰءِ نُزُلًا بِمَا  
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ  
النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا  
وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُمْ فِيهَا

مَثَلًا



समझते थे।”

21. हम बड़ी यातना से इतर उन्हें छोटी यातना का मज़ा चखाएँगे, कदाचित वे पलट आएँ।

22. और उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के द्वारा याद दिलाया जाए, फिर वह उनसे मुँह फेर ले? निश्चय ही हम अपराधियों से बदला लेकर रहेंगे।

23. हमने मूसा को किताब प्रदान की थी—अतः उसके मिलने के प्रति तुम किसी संदेह में न रहना—और हमने इसराईल की संतान के लिए उस (किताब) को मार्गदर्शन बनाया था।

24. और जब वे जमे रहे और उन्हें हमारी आयतों पर विश्वास था, तो हमने उनमें ऐसे नायक बनाए जो हमारे आदेश से मार्ग दिखाते थे।

25. निश्चय ही तेरा रब ही क्रियामत के दिन उनके बीच उन बातों का फ़ैसला करेगा, जिनमें वे मतभेद करते रहे हैं।

26. क्या उनके लिए यह चीज़ भी मार्गदर्शक सिद्ध नहीं हुई कि उनसे पहले कितनी ही नस्लों को हम विनष्ट कर चुके हैं, जिनके रहने-बसने की जगहों में वे चलते-फिरते हैं? निस्संदेह इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं। फिर क्या वे सुनते नहीं?

27. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम सूखी पड़ी भूमि की ओर पानी ले जाते हैं। फिर उससे खेती उगाते हैं, जिसमें से उनके चौपाए भी खाते हैं और वे





स्वयं भी? तो क्या उन्हें सूझता नहीं?

28. वे कहते हैं कि “यह फ़ैसला कब होगा, यदि तुम सच्चे हो?”

29. कह दो कि “फ़ैसले के दिन इनकार करनेवालों का ईमान उनके लिए कुछ लाभदायक न होगा और न उन्हें ढील ही दी जाएगी।”

30. अच्छा, उन्हें उनके हाल पर छोड़ दो और प्रतीक्षा करो। वे भी प्रतीक्षारत हैं।

### 33. अल-अहज़ाब

(मदीना में उतरी— आयतें 73)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ नबी! अल्लाह का डर रखना और इनकार करनेवालों और कपटाचारियों का कहना न मानना। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।

2. और अनुसरण करना उस चीज़ का जो तुम्हारे रब की ओर से तुम्हें प्रकाशना की जा रही है। निश्चय ही अल्लाह उसकी खबर रखता है जो तुम करते हो।

3. और अल्लाह पर भरोसा रखो। और अल्लाह भरोसे के लिए काफ़ी है।

4. अल्लाह ने किसी व्यक्ति के सीने में दो दिल नहीं रखे। और न उसने तुम्हारी उन पत्नियों को जिनसे तुम ज़िहार कर बैठते हो<sup>1</sup>, वास्तव में तुम्हारी माँ



1. अज्ञानकाल में लोग अपनी पत्नियों से झगड़ते समय कभी यह कह बैठते थे कि अब तू मेरे लिए मेरी माँ की पीठ की तरह हराम है। इसे ज़िहार करना कहा जाता है। ज़िहार करने से पत्नी माँ नहीं हो सकती।



बनाया, और न उसने तुम्हारे मुँह बोले बेटों को तुम्हारे वास्तविक बेटे बनाए। ये तो तुम्हारे मुँह की बातें हैं। किन्तु अल्लाह सच्ची बात कहता है और वही मार्ग दिखाता है।

5. उन्हें<sup>1</sup> उनके बापों का बेटा कहकर पुकारो। अल्लाह के यहाँ यही अधिक न्यायसंगत बात है। और यदि तुम उनके बापों को न जानते हो, तो धर्म में वे तुम्हारे भाई तो हैं ही और तुम्हारे सहचर भी। इस सिलसिले में तुमसे जो ग़लती हुई हो उसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं, किन्तु जिसका संकल्प तुम्हारे दिलों ने कर लिया, उसकी बात और है।<sup>2</sup> वास्तव में अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

6. नबी का हक़ ईमानवालों पर स्वयं उनके अपने प्राणों से बढ़कर है। और उसकी पत्नियाँ उनकी माएँ हैं। और अल्लाह के विधान के अनुसार, सामान्य मोमिनों और मुहाजिरों की अपेक्षा नातेदार आपस में एक-दूसरे से अधिक निकट हैं। यह और बात है कि तुम अपने साथियों के साथ कोई भलाई करो। यह बात किताब में लिखी हुई है।

7-8. और याद करो जब हमने नबियों से उनका वचन लिया, तुमसे भी और नूह और इबराहीम और मूसा और मरयम के बेटे ईसा से भी। इन सबसे हमने दृढ़ वचन लिया, ताकि वह सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के बारे में पूछे। और

الْأَنْبِيَاءِ

أَنْزَلَ مَا أَنْزَلْنَا

بِأَفْوَاهِكُمْ وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ۝  
 أَدْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ فَإِنْ  
 لَمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ  
 وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ وَلَكِنْ  
 مَا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا  
 رَحِيمًا ۝ أَلَيْسَ أُولَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ  
 وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ  
 بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ  
 إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُمْ مَعْرُوفًا كَانَ ذَلِكَ  
 فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝ وَإِذَا أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ  
 مِنْ مِيثَاقِهِمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ  
 وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ بَيْعَاتًا عَلَىٰ لُطْفٍ ۝  
 لَيْسَ لِلضَّالِّقِينَ عَنْ صِدْقِهِمْ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ

مَنْزِلًا

1. अर्थात् मुँह बोले बेटों को।

2. अर्थात् उसपर पकड़ है।



इनकार करनेवालों के लिए तो उसने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

9. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह की उस अनुकम्पा को याद करो जो तुमपर हुई; जबकि सेनाएँ तुमपर चढ़ आई तो हमने उनपर एक हवा भेज दी और ऐसी सेनाएँ भी, जिनको तुमने देखा नहीं। और अल्लाह वह सब कुछ देखता है जो तुम करते हो।

10. याद करो जब वे तुम्हारे ऊपर की ओर से और तुम्हारे नीचे की ओर से भी तुमपर चढ़ आए, और जब निगाहें टेढ़ी-तिरछी हो गई और उर (हृदय) कण्ठ को आ लगे। और तुम अल्लाह के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे थे।

11. उस समय ईमानवाले आजमाए गए और पूरी तरह हिला दिए गए।

12. और जब कपटाचारी और वे लोग जिनके दिलों में रोग है कहने लगे : “अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे जो वादा किया था वह तो धोखा मात्र था।”

13. और जबकि उनमें से एक गिरोह ने कहा : “ऐ यसरिबवालो<sup>1</sup>, तुम्हारे लिए ठहरने का कोई मौक़ा नहीं। अतः लौट चलो।” और उनका एक गिरोह नबी से यह कहकर (वापस जाने की) अनुमति चाह रहा था कि “हमारे घर असुरक्षित हैं।” यद्यपि वे असुरक्षित न थे। वे तो बस भागना चाहते थे।

14. और यदि उसके चतुर्दिक से उनपर हमला हो जाता, फिर उस समय उनसे उपद्रव के लिए कहा जाता<sup>2</sup>, तो वे ऐसा कर डालते और इसमें विलम्ब

عَدَابًا أَلِيمًا ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۚ إِذْ جَاءَ قَوْمٌ مِنْ قُوقِلُمْ وَمِنْ أَنْفَلٍ مِنْكُمْ وَادُّوا رَأْعَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونًا ۚ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا ۚ وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ قَدْ وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۚ وَإِذْ قَالَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِنْهُمْ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ إِنْ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ۚ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سَبَلُوا فَتِنَّةً لَأَتَوْهَا

1. अर्थात् मदीनावालो।

2. अर्थात् यदि उनसे कहा जाता कि इस्लाम को त्यागकर इस्लाम विरोधियों का साथ दो, तो वे घरों में न ठहरते और अविलम्ब उनके साथ हो जाते।



थोड़े ही करते !

15. यद्यपि वे इससे पहले अल्लाह को वचन दे चुके थे कि वे पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह से की गई प्रतिज्ञा के विषय में तो पूछा जाना ही है ।

16. कह दो : “यदि तुम मृत्यु और मारे जाने से भागो भी तो यह भागना तुम्हारे लिए कदापि लाभप्रद न होगा । और इस हालत में भी तुम सुख थोड़े ही प्राप्त कर सकोगे ।”

17. कहो : “कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है, यदि वह तुम्हारी कोई बुराई चाहे या वह तुम्हारे प्रति दयालुता का इरादा करे (तो कौन है जो उसकी दयालुता को रोक सके) ?” वे अल्लाह के अलावा न अपना कोई निकटवर्ती समर्थक पाएँगे और न (दूर का) सहायक ।

18. अल्लाह तुममें से उन लोगों को भली-भाँति जानता है जो (युद्ध से) रोकते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं : “हमारे पास आ जाओ ।” और वे लड़ाई में थोड़े ही आते हैं, (क्योंकि वे)

19. तुम्हारे साथ कृपणता से काम लेते हैं । अतः जब भय का समय आ जाता है, तो तुम उन्हें देखते हो कि वे तुम्हारी ओर इस प्रकार ताक रहे हैं कि उनकी आँखें चक्कर खा रही हैं, जैसे किसी व्यक्ति पर मौत की बेहोशी छा रही हो । किन्तु जब भय जाता रहता है तो वे माल के लोभ में तेज़ ज़बानें तुमपर चलाते हैं । ऐसे लोग ईमान लाए ही नहीं । अतः अल्लाह ने उनके कर्म उनकी जान को लागू कर दिए । और यह अल्लाह के लिए बहुत सरल है ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ

أَمَّا بَعْدُ

وَمَا تَلَبَّثُوا فِيهَا إِلَّا بَيْتًا ۖ وَلَقَدْ كَانُوا عَاهِدُوا  
اللَّهُ مِنْ قَبْلُ لَا يُؤْلُونَ الْأَذْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ  
مَسْئُودًا ۚ قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمْ الْفِرَارُ إِنْ قَرَرْتُمْ مِنَ  
الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذَا لَا تُسْتَعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۚ  
قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ  
سُوءًا ۚ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۖ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ  
دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا يُصِيرُوا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ  
الْمُعَوِّضِينَ مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلْ هُمْ آيِسَاءُ  
وَلَا يَأْتُونَ الْبَاسَ إِلَّا قَلِيلًا ۚ أَشِئْتُمْ عَلَيْكُمْ ۚ  
فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتُمْ يُزْجَرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ  
أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَإِذَا  
ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُمْ بِالْحِنْوِ ۚ جَدَادِ أَشِئْتُمْ عَلَى  
الْحَيَاءِ أُولَئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ

مَزْلُومٌ



20. वे समझ रहे हैं कि (शत्रु के) सैन्य दल अभी गए नहीं हैं, और यदि वे गिरोह फिर आ जाएँ तो वे चाहेंगे कि किसी प्रकार बाहर (मरुस्थल में) बददुओं के साथ हो रहें और वहीं से तुम्हारे बारे में समाचार पूछते रहें। और यदि वे तुम्हारे साथ होते भी तो लड़ाई में हिस्सा थोड़े ही लेते।

21. निस्संदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श है अर्थात् उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे।

وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۚ يَخْبِتُونَ الْأَخْرَابَ لَمَّا يَأْتِ الْأَخْرَابَ ۚ يَوَدُّونَ أَنْ يَرْجِعُوا ۚ وَلَوْ يَدُورُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَاءِكُمْ ۚ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قُتِلُوا إِلَّا قَلِيلًا ۚ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَاليَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ۚ وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَخْرَابَ ۖ قَالُوا هَٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۖ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَمَا أَزَادُهُمْ إِلَّا إِيْمَانًا ۚ وَتَسْلِيْمًا ۚ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ جَلَّ صَلَواتُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ ۖ فَتَنَّهُمْ مِّنْ قَضَىٰ غَضَبِهِ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ۚ لِيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِمَا وَعَدَ ۖ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ ۚ إِنَّ شَرَّ الْأَوْثَانِ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۚ

22. और जब ईमानवालों ने सैन्य दलों को देखा तो वे पुकार उठे : “यह तो वही चीज़ है, जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था। और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा था।” इस चीज़ ने उनके ईमान और आज्ञाकारिता ही को बढ़ाया।

23. ईमानवालों के रूप में ऐसे पुरुष मौजूद हैं कि जो प्रतिज्ञा उन्होंने अल्लाह से की थी उसे उन्होंने सच्चा कर दिखाया। फिर उनमें से कुछ तो अपना प्रण पूरा कर चुके और उनमें से कुछ प्रतीक्षा में हैं। और उन्होंने अपनी बात तनिक भी नहीं बदली।

24. ताकि इसके परिणामस्वरूप अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और कपटाचारियों को चाहे तो यातना दे या उनकी तौबा क़बूल करे। निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।



25. अल्लाह ने इनकार करनेवालों को उनके अपने क्रोध के साथ फेर दिया। वे कोई भलाई प्राप्त न कर सके। अल्लाह ने मोमिनों को युद्ध करने से बचा लिया। अल्लाह तो है ही बड़ा शक्तिवान, प्रभुत्वशाली।

26. और किताबवालों में से जिन लोगों ने उनकी<sup>1</sup> सहायता की थी, उन्हें उनकी गढ़ियों से उतार लाया। और उनके दिलों में धाक बिठा दी कि तुम एक गिरोह को जान से मारने लगे और एक गिरोह को बन्दी बनाने लगे।

27. और उसने तुम्हें उनके भू-भाग और उनके घरों और उनके मालों का वारिस बना दिया और उस भू-भाग का भी जिसे तुमने पददलित नहीं किया। वास्तव में अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

28. ऐ नबी ! अपनी पत्नियों से कह दो कि “यदि तुम सांसारिक जीवन और उसकी शोभा चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ दे-दिलाकर भली रीति से विदा कर दूँ।

29. किन्तु यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल और आखिरत के घर को चाहती हो तो निश्चय ही अल्लाह ने तुममें से उत्तमकार स्त्रियों के लिए बड़ा प्रतिदान रख छोड़ा है।”

30. ऐ नबी की स्त्रियो ! तुममें से जो कोई प्रत्यक्ष अनुचित कर्म करे तो उसके लिए दोहरी यातना होगी। और यह अल्लाह के लिए बहुत सरल है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَلْعَذَابِ اَلْاٰخِرِ ۝  
وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَبْنَآ لَوْ اَخِيْرًا وَّو  
كَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ وَاَنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ اَعِيْزٌ ۝  
وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ  
صِيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ  
وَتَاٰسِرُوْنَ فَرِيْقًا ۝ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَاٰوِيَارَهُمْ  
وَاَمْوَالَهُمْ وَارْضًا لِّمَنْ تَطُوْهَا وَاَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ  
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ  
كُنْتُمْ تُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَمَعَالِيْنِ  
اُمْتِعْنَكُمْ وَاَسْرِحْنَكُمْ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝ وَاِنْ كُنْتُمْ  
تُرِيْدُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ  
اَعَدَّ لِلْمُحْسِنِيْنَ مِنْكُمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ يٰٓنِسَاۤءَ النَّبِيِّ  
مَنْ يَّاْتِ مِنْكُمْ بِفَاحِشَةٍ فَبِيْنَتِهٖ يُضْعَفُ لَهَا  
العَذَابُ جُنْعَيْنِ ۝ وَاَنَّ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝

1. अर्थात् ईमान लाने के लिए परोक्ष को देख लेने की शर्त वे नहीं लगाते।



31. किन्तु तुममें से जो अल्लाह और उसके रसूल के प्रति निष्ठापूर्वक आज्ञाकारिता की नीति अपनाए और अच्छा कर्म करे, उसे हम दोहरा प्रतिदान प्रदान करेंगे और उसके लिए हमने सम्मानपूर्ण आजीविका तैयार कर रखी है।

32. ऐ नबी की स्त्रियो! तुम सामान्य स्त्रियों में से किसी की तरह नहीं हो, यदि तुम अल्लाह का डर रखो। अतः तुम्हारी बातों में लोच न हो कि वह व्यक्ति जिसके दिल में रोग है, वह लालच में पड़ जाए। तुम सामान्य रूप से बात करो।

33. अपने घरों में टिककर रहो

और विगत अज्ञानकाल की-सी सज-धज न दिखाती फिरना। नमाज़ का आयोजन करो और ज़कात दो। और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो। अल्लाह तो बस यही चाहता है कि ऐ नबी के घरवालो, तुमसे गन्दगी को दूर रखे और तुम्हें पूरी तरह पाक-साफ़ रखे।

34. तुम्हारे घरों में अल्लाह की जो आयतें और तत्त्वदर्शिता की बातें<sup>1</sup> सुनाई जाती हैं उनकी चर्चा करती रहो। निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी, खबर रखनेवाला है।

35. मुस्लिम पुरुष और मुस्लिम स्त्रियाँ, ईमानवाले पुरुष और ईमानवाली स्त्रियाँ, निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करनेवाले पुरुष और निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करनेवाली स्त्रियाँ, सत्यवादी पुरुष और सत्यवादी स्त्रियाँ, धैर्यवान पुरुष और धैर्य रखनेवाली स्त्रियाँ, विनम्रता दिखानेवाले पुरुष और विनम्रता दिखानेवाली स्त्रियाँ, सदक्का (दान) देनेवाले पुरुष और सदक्का देनेवाली स्त्रियाँ, रोज़ा

الْأَنْبَاءِ

رَضَى عَنْكَ

وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَرْزُقْهَا كَرِيمًا

نُفْسًا أَجْرَهَا مَرْتَبَيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا

يُنِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِنَ النِّسَاءِ إِنَّ أُنْثَىٰ تَسُوْءَ

فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ

مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ

وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ

وَاتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنَّمَا يُرِيدُ

اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ

تُطَهِّرًا وَادْكُرْنَ مَا يُثَلَّىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ

آيَةِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

وَالْقَنَاتِ وَالْقَنَاتِ وَالصُّدُقِينَ وَالصُّدُقَاتِ وَ

الصُّبُرِينَ وَالصُّبُرَاتِ وَالْخُشُعِينَ وَالْخُشُعَاتِ وَ

مَرْكُ

1. यहाँ तत्त्वदर्शिता से अभिप्रेत सभ्यता और शिष्टाचार की उत्तम शिक्षाएँ हैं।



रखनेवाले पुरुष और रोज़ा रखनेवाली स्त्रियाँ, अपने गुप्तांगों की रक्षा करनेवाले पुरुष और रक्षा करनेवाली स्त्रियाँ और अल्लाह को अधिक याद करनेवाले पुरुष और याद करनेवाली स्त्रियाँ—इनके लिए अल्लाह ने क्षमा और बड़ा प्रतिदान तैयार कर रखा है।

36. न किसी ईमानवाले पुरुष और न किसी ईमानवाली स्त्री को यह अधिकार है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फ़ैसला कर दें, तो फिर उन्हें अपने मामले में कोई अधिकार शेष रहे। जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करे तो वह खुली गुमराही में पड़ गया।

37. याद करो (ऐ नबी), जबकि तुम उस व्यक्ति से कह रहे थे जिसपर अल्लाह ने अनुकम्पा की, और तुमने भी जिसपर अनुकम्पा की कि “अपनी पत्नी को अपने पास रोके रखो और अल्लाह का डर रखो, और तुम अपने जी में उस बात को छिपा रहे हो जिसको अल्लाह प्रकट करनेवाला है। तुम लोगों से डरते हो, जबकि अल्लाह इसका ज़्यादा हक़ रखता है कि तुम उससे डरो।” अतः जब ज़ैद उससे अपनी ज़रूरत पूरी कर चुका तो हमने उसका तुमसे विवाह कर दिया, ताकि ईमानवालों पर अपने मुँह बोले बेटों की पत्नियों के मामले में कोई तंगी न रहे जबकि वे उनसे अपनी ज़रूरत पूरी कर लें। अल्लाह का फ़ैसला तो पूरा होकर ही रहता है।

38. नबी पर उस काम में कोई तंगी नहीं जो अल्लाह ने उसके लिए ठहराया हो। यही अल्लाह का दस्तूर उन लोगों के मामले में भी रहा है जो पहले गुज़र

الْأَنْفُسُ

وَمِنْ ثَمَرَاتِهِ

الْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّالِحِينَ وَالصَّالِحَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝  
وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا لِمُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلًّا مُبِينًا ۝ وَإِذْ يَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْرٌكَ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ ۚ فَلَمَّا قَضَى زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاهَا لَكَ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۝ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ ۚ سُنَّةَ اللَّهِ

مَرْكُزٌ



चुके हैं— और अल्लाह का काम तो जँचा-तुला होता है।—

39. जो अल्लाह के संदेश पहुँचाते थे और उसी से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे। और हिसाब लेने के लिए अल्लाह काफ़ी है।—

40. मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के बाप नहीं हैं, बल्कि वे अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक<sup>1</sup> हैं। अल्लाह को हर चीज़ का पूरा ज्ञान है।

41. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह को अधिक याद करो।

42. और प्रातःकाल और संध्या समय उसकी तसबीह करते रहो—

43. वही है जो तुमपर रहमत भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी (दुआएँ करते हैं) — ताकि वह तुम्हें अँधेरो से प्रकाश की ओर निकाल लाए। वास्तव में, वह ईमानवालों पर बहुत दयालु है।

44. जिस दिन वे उससे मिलेंगे उनका अभिवादन होगा 'सलाम' और उनके लिए उसने प्रतिष्ठामय प्रतिदान तैयार कर रखा है।

45. ऐ नबी ! हमने तुमको साक्षी और शुभ सूचना देनेवाला और सचेत करनेवाला बनाकर भेजा है;

46. और अल्लाह की अनुज्ञा से उसकी ओर बुलानेवाला और प्रकाशमान प्रदीप बनाकर।

47. ईमानवालों को शुभ सूचना दे दो कि उनके लिए अल्लाह की ओर से बहुत बड़ा उदार अनुग्रह है।

فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَقْدُورًا ۝ الَّذِينَ يُبْتَغُونَ رِسَالَتَ اللَّهِ وَ يَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ وَكَفَى بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمُ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۝ وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝ هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ وَذَاعِبًا إِلَى اللَّهِ بِأَذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ۝ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّهُمْ مِنَ اللَّهِ فَضْلًا كَثِيرًا وَلَا



48. और इनकार करनेवालों और कपटाचारियों के कहने में न आना। उनकी पहुँचाई हुई तकलीफ़ का खयाल न करो। और अल्लाह पर भरोसा रखो। अल्लाह इसके लिए काफ़ी है कि अपने मामले में उसपर भरोसा किया जाए।

49. ऐ ईमान लानेवालो ! जब तुम ईमानवाली स्त्रियों से विवाह करो और फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो तो तुम्हारे लिए उनपर कोई इदत नहीं, जिसकी तुम गिनती करो। अतः उन्हें कुछ सामान दे दो और भली रीति से विदा कर दो।

وَمَنْ ثَلَاثًا مِّنَ الَّذِينَ يَدْعُوا إِلَى الْكُفْرِ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعَا أَذْلَهُمْ وَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَكَفَىٰ بِأَسْوَىٰ وَكَيْلًا ۖ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا فَمِنْهُمْ مَنْ سَرَّحُوهُنَّ سَرَّاحًا جَمِيلًا ۖ يَأْتِيهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَعْلَمْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي أَتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِنَّا أَتَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنِي عَمِكَ وَبَنِي عَمَتِكَ وَبَنِي خَالَكَ وَبَنِي خَلَّتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ ۚ وَامْرَأَةً مُّؤْمِنَةً إِن وَهَبْتَ نَفْسًا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ تَرْجَىٰ مِنْ تَشَاءَ مِنْهُنَّ وَتُوْىٰ إِلَيْكَ مَنْ

50. ऐ नबी ! हमने तुम्हारे लिए तुम्हारी वे पलियाँ वैध कर दी हैं जिनके महर तुम दे चुके हो, और उन स्त्रियों को भी जो तुम्हारी मिल्कियत में आईं, जिन्हें अल्लाह ने ग़नीमत के रूप में तुम्हें दी और तुम्हारी चचा की बेटियाँ और तुम्हारी फूफियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामुओं की बेटियाँ और तुम्हारी खालाओं की बेटियाँ जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की हैं और वह ईमानवाली स्त्री जो अपने आपको नबी के लिए दे दे, यदि नबी उससे विवाह करना चाहे। ईमानवालों से हटकर यह केवल तुम्हारे ही लिए है, हमें मालूम है जो कुछ हमने उनकी पलियों और उनकी लौंडियों के बारे में उनपर अनिवार्य किया है— ताकि तुमपर कोई तंगी न रहे। अल्लाह बहुत क्षमाशील, दयावान है।

51. तुम उनमें से जिसे चाहो अपने से अलग रखो और जिसे चाहो अपने



पास रखो, और जिनको तुमने अलग रखा हो उनमें से किसी के इच्छुक हो तो इसमें तुमपर कोई दोष नहीं, इससे इस बात की अधिक सम्भावना है कि उनकी आँखें ठण्डी रहें और वे शोकाकुल न हों और जो कुछ तुम उन्हें दो उसपर वे राज़ी रहें। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। अल्लाह सर्वज्ञ, बहुत सहनशील है।

52. इसके पश्चात तुम्हारे लिए दूसरी स्त्रियाँ वैध नहीं और न यह कि तुम उनकी जगह दूसरी पलियाँ ले आओ, यद्यपि उनका सौन्दर्य

तुम्हें कितना ही भाए। उनकी बात और है जो तुम्हारी लौण्डियाँ हों। वास्तव में अल्लाह की दृष्टि हर चीज़ पर है।

53. ऐ ईमान लानेवालो ! नबी के घरों में प्रवेश न करो, सिवाय इसके कि कभी तुम्हें खाने पर आने की अनुमति दी जाए। वह भी इस तरह कि उसकी (खाना पकने की) तैयारी की प्रतीक्षा में न रहो। अलबत्ता जब तुम्हें बुलाया जाए तो अन्दर जाओ, और जब तुम खा चुको तो उठकर चले जाओ, बातों में लगे न रहो। निश्चय ही तुम्हारी यह हरकत नबी को तकलीफ़ देती है। किन्तु उन्हें तुमसे लज्जा आती है। किन्तु अल्लाह सच्ची बात कहने से लज्जा नहीं करता। और जब तुम उनसे<sup>1</sup> कुछ माँगों तो उनसे परदे के पीछे से माँगो। यह अधिक शुद्धता की बात है तुम्हारे दिलों के लिए और उनके दिलों के लिए भी। तुम्हारे लिए वैध नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ पहुँचाओ

تَقْرِيبًا

تَقْرِيبًا

تَشَاءُ وَمِنْ أَتَعْتَبَتْ وَمَنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ  
ذَلِكَ أَذَى أَنْ تُقَرَّرَ آغِيثُهُنَّ وَلَا يَعْزُرَنَّ وَيَرْضَيْنَ  
بِمَا أَتَيْتَهُنَّ كُلَّهُنَّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ  
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ۝ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ  
بَعْدَ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ  
خُسْنُهُنَّ إِذَا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ  
شَيْءٍ رَقِيبًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ  
النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرِ نَبِيٍّ  
رِشَةٍ وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ  
فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ بِحَدِيثٍ إِنَّ ذَلِكَ كَانَ  
يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَنْجِي مِنْكُمْ وَاللَّهُ لَا يَسْتَنْجِي مِنَ  
الْحَقِّ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسَلُّوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ  
حِجَابٍ ذِكْرُكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ وَمَا كَانَ

مَبْرُورًا



और न यह कि उसके बाद कभी उसकी पत्नियों से विवाह करो। निश्चय ही अल्लाह की दृष्टि में यह बड़ी गंभीर बात है।

54. तुम चाहे किसी चीज़ को व्यक्त करो या उसे छिपाओ, अल्लाह को तो हर चीज़ का ज्ञान है।

55. न उनके लिए अपने बापों के सामने होने में कोई दोष है और न अपने बेटों, न अपने भाइयों, न अपने भतीजों, न अपने भाज्रों, न अपने मेल की स्त्रियों और न जिनपर उन्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो उनके सामने होने में।

अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ का साक्षी है।

56. निस्संदेह अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। ऐ ईमान लानेवालो, तुम भी उसपर रहमत भेजो और ख़ूब सलाम भेजो।

57. जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को दुख पहुँचाते हैं, अल्लाह ने उनपर दुनिया और आखिरत में लानत की है और उनके लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

58. और जो लोग ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को, बिना इसके कि उन्होंने कुछ किया हो (आरोप लगाकर), दुख पहुँचाते हैं, उन्होंने तो बड़े मिथ्यारोपण और प्रत्यक्ष गुनाह का बोझ अपने ऊपर उठा लिया।

59. ऐ नबी ! अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों और ईमानवाली स्त्रियों से

وَمَنْ لَّمْ يَفْعَلْ

وَمَنْ لَّمْ يَفْعَلْ

لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ  
مِنْ بَعْدِهِ أَبْدَاءً إِنَّ ذَلِكَ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۝  
إِنْ تَبَدَّلُوا شَيْئًا أَوْ خَفَوْهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ  
عَلِيمًا ۝ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ  
وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا بَنَاتِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءَ  
أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ  
وَاتَّقِينَ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝  
إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ  
آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ  
يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَ  
الْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا ۝ وَالَّذِينَ  
يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا  
 فَقَدْ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُبِينًا ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ

مَزَلَهُ



कह दो कि वे अपने ऊपर अपनी चादरों का कुछ हिस्सा लटका लिया करें। इससे इस बात की अधिक सम्भावना है कि वे पहचान ली जाएँ और सताई न जाएँ। अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

60. यदि कपटाचारी और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और मदीना में खलबली पैदा करनेवाली अफ़वाहें फैलानेवाले बाज़ न आएँ तो हम तुम्हें उनके विरुद्ध उभार खड़ा करेंगे। फिर वे उसमें तुम्हारे साथ थोड़ा ही रहने पाएँगे,

61. फिटकारे हुए होंगे। जहाँ कहीं पाए गए पकड़े जाएँगे और बुरी तरह जान से मारे जाएँगे।

62. यही अल्लाह की रीति रही है उन लोगों के विषय में भी जो पहले गुज़र चुके हैं। और तुम अल्लाह की रीति में कदापि परिवर्तन न पाओगे।

63. लोग तुमसे क्रियामत की घड़ी के बारे में पूछते हैं। कह दो : "उसका ज्ञान तो बस अल्लाह ही के पास है। तुम्हें क्या मालूम? कदाचित वह घड़ी निकट ही हो।"

64. निश्चय ही अल्लाह ने इनकार करनेवालों पर लानत की है और उनके लिए भड़कती आग तैयार कर रखी है,

65. जिसमें वे सदैव रहेंगे। न वे कोई निकटवर्ती समर्थक पाएँगे और न (दूर का) सहायक।

66. जिस दिन उनके चेहरे आग में उलटे-पलटे जाएँगे, वे कहेंगे : "क्या ही अच्छा होता कि हमने अल्लाह का आज्ञापालन किया होता और रसूल का आज्ञापालन किया होता!"

67. वे कहेंगे : "ऐ हमारे रब ! वास्तव में हमने अपने सरदारों और अपने

تَقْوَىٰ رَبِّكَ

تَقْوَىٰ رَبِّكَ

لَا زَوَاجَكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءَ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ  
مِنْ جَلَائِيَهُنَّ ذَلِكَ أَذَىٰ أَنْ يَعْرِفْنَ فَلََّا يُوْدِّينَ  
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا لَّيْنِ لِّلْمُتَّقِينَ الَّذِينَ  
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالْمُجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ  
لَنَعْرِفَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُحْيَا بَرْئُونَكِ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا  
مَّلْعُونِينَ إِنَّمَا تُقَفُّوهُمُ الْحَدُّ وَأَقْتُلُوا تَقْتِيلًا  
سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَلَكِنْ نَجِدَ لِسُنَّةِ  
اللَّهِ تَبْدِيلًا يَسْطَلِكُ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِنَّمَا  
عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ  
قَرِيبًا إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكُفْرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا  
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا يَوْمَ  
تُغْلَبُ وَجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَلَيْسَتْ أَطْعَمَنَا اللَّهُ  
وَأَطْعَمَنَا الرَّسُولُ وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطْعَمْنَا سَادَتَنَا

مَثَلَهُ



बड़ों की आज्ञा का पालन किया  
और उन्होंने हमें मार्ग से भटका  
दिया ।

68. ऐ हमारे रब ! उन्हें दोहरी यातना दे और उनपर बड़ी लानत कर !”

(७). ऐ ईमान लानेवालो ! उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने मूसा को दुख पहुँचाया, तो अल्लाह ने उससे जो कुछ उन्होंने कहा था उसे बरी कर दिया । वह अल्लाह के यहाँ बड़ा गरिमावान था ।

70. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह का डर रखो और बात कहो ठीक सधी हई ।

71. वह तुम्हारे कर्मों को सँवार देगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। और जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करे, उसने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली है।

72. हमने अमानत को आकाशों और धरती और पर्वतों के समक्ष प्रस्तुत किया, किन्तु उन्होंने उसके उठाने से इनकार कर दिया और उससे डर गए। लेकिन मनुष्य ने उसे उठा लिया। निश्चय ही वह बड़ा ज़ालिम, आवेश के वशीभूत हो जानेवाला है।

73. ताकि अल्लाह कपटाचारी पुरुषों और कपटाचारी स्त्रियों और बहुदेववादी पुरुषों और बहुदेववादी स्त्रियों को यातना दे, और ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों पर अल्लाह कृपा-दृष्टि करे। वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

وَكَبَرَاءَنَا فَاصْلُوا السَّيْلَ رَبَّنَا إِنَّهُمْ ضَعَفَيْنِ  
مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا يَا أَيُّهَا الَّذِينَ  
آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ أَذْهَبَ مُوسَى فَكَرَاهُ اللَّهُ  
مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِبْهًا يَا أَيُّهَا  
الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا  
يُضْلِلْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ  
وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا  
إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ  
وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا  
وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا  
لَيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ  
وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ  
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا







ख की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है वही सत्य है, और वह उसका मार्ग दिखाता है जो प्रभुत्वशाली, प्रशंसा का अधिकारी है।

7. जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं कि “क्या हम तुम्हें एक ऐसा आदमी बताएँ जो तुम्हें खबर देता है कि जब तुम बिलकुल चूर्ण-विचूर्ण हो जाओगे तो तुम नवीन काय में जीवित होगे?”

8. क्या उसने अल्लाह पर झूठ घड़कर थोपा है, या उसे कुछ उन्माद है? नहीं, बल्कि जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते वे यातना और परले दरजे की गुमराही में हैं।

9. क्या उन्होंने आकाश और धरती को नहीं देखा, जो उनके आगे भी हैं और उनके पीछे भी? यदि हम चाहें तो उन्हें धरती में धँसा दें या उनपर आकाश से कुछ टुकड़े गिरा दें। निश्चय ही इसमें एक निशानी है हर उस बन्दे के लिए जो रुजू करनेवाला हो।

10-11. हमने दाऊद को अपनी ओर से श्रेष्ठता प्रदान की थी : “ऐ पर्वतो ! उसके साथ तसबीह को प्रतिध्वनित करो, और पक्षियो तुम भी !” और हमने उसके लिए लोहे को नर्म कर दिया कि “पूरी कवचें बना और कड़ियों को ठीक अंदाज़े से जोड़।” — और तुम अच्छा कर्म करो। निस्संदेह जो कुछ तुम करते हो उसे मैं देखता हूँ।

12. और सुलैमान के लिए वायु को वशीभूत कर दिया था। प्रातः समय उसका चलना एक महीने की राह तक और सायंकाल को उसका चलना एक महीने की राह तक — और हमने उसके लिए पिघले हुए ताँबे का स्रोत बहा

سَبَا

وَمِنْ آيَاتِهِ

مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقُّ ۖ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ  
الْحَمِيدِ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَى  
رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا أُخْرِجْتُمْ كُلُّ مُمْرِقٍ ۖ إِنَّكُمْ لَفِي  
خَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ أَفَتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ ۚ  
بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ  
الْبَعِيدِ ۚ أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا يَبْرِءُ وَيَمَا خَلَقَهُمْ  
فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ تَشَاءُ نَحْنُفِ بِهِمُ الْأَرْضَ  
أَوْ نَسْقُطُ عَلَيْهِمْ كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ  
لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ۚ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا  
قُضَاةً يَسْجُدُ ۖ أَقْبَىٰ مَعَهُ وَالظَّالِمِينَ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ  
أَعْلِينَ ۚ إِنَّ أَعْمَلَ سَافِتٍ وَقَدَّرَ فِي السَّيِّدِ ۖ وَاعْمَلُوا  
صَالِحًا ۚ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ  
عُذُوها شَهْرٌ وَرَوَّاحُها شَهْرٌ ۖ وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ

مَدْيَنَ



दिया— और जिन्नों में से भी कुछ को (उसके वशीभूत कर दिया था) जो अपने रब की अनुज्ञा से उसके आगे काम करते थे। (हमारा आदेश था) : “उनमें से जो हमारे हुक्म से फिरेगा उसे हम भड़कती आग का मज़ा चखाएँगे।”

13. वे उसके लिए बनाते, जो कुछ वह चाहता—बड़े-बड़े भवन, प्रतिमाएँ, बड़े हौज़ जैसे थाल और जमी रहनेवाली देंगे—“ऐ दाऊद के लोगो ! कर्म करो, कृतज्ञता दिखाने के रूप में। मेरे बन्दों में कृतज्ञ थोड़े ही हैं।”

14. फिर जब हमने उसके लिए मौत का फ़ैसला लागू किया तो फिर उन जिन्नों को उसकी मौत का पता बस भूमि के उस कीड़े ने दिया जो उसकी लाठी को खा रहा था। फिर जब वह गिर पड़ा, तब जिन्नों पर प्रकट हुआ कि यदि वे परोक्ष के जाननेवाले होते तो इस अपमानजनक यातना में पड़े न रहते।

15. सबा के लिए उनके निवास-स्थान ही में एक निशानी थी—दाएँ और बाएँ दो बाग़ : “खाओ अपने रब की रोज़ी, और उसके प्रति आभार प्रकट करो। भूमि भी अच्छी-सी और रब भी क्षमाशील।”

16. किन्तु वे ध्यान में न लाए तो हमने उनपर बँध-तोड़ बाढ़ भेज दी और उनके दोनों बाग़ों के बदले में उन्हें दो दूसरे बाग़ दिए, जिनमें कड़वे-कसैले फल और झाऊ थे, और कुछ थोड़ी-सी झड़-बेरियाँ।

17. यह बदला हमने उन्हें इसलिए दिया कि उन्होंने कृतघ्नता दिखाई। ऐसा

سَبَا

وَمِنْ آيَاتِهِ

الْفُطَيْرُ وَمِنَ الْجِبْنِ مَنْ يَعْلَمُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ  
وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نَذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ۚ  
يَعْلَمُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِبَ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ  
كَالْجُحُوبِ وَقُدُورٍ رَاسِيَتٍ ۚ إِغْلُظْ آلَ دَاوُدَ شُكْرًا  
وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ۚ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ  
الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ  
بِنِسَائِهِ ۚ فَلَمَّا خُزِّيَتْ بِهِ الْجِنُّ أَن لَّوْكَانُوا يَعْلَمُونَ  
الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۚ لَقَدْ كَانَ  
إِسْبَاقًا فِي مَسْئَرِهِمْ آيَةً ۚ جَنَّاتٍ عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۚ  
كُلُوا مِن رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلَدَةٌ طَيِّبَةٌ ۚ  
وَرَبِّ عَفْوَورٍ ۚ فَأَعْرِضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ  
وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِ أُكُلٍ خَمْطٍ ۚ  
أَثَلٌ وَشَىٰ ۚ وَمِنْ سِدْرٍ قَلِيلٍ ۚ ذَلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِمَا كَفَرُوا

مَثَلًا



बदला तो हम कृतघ्न लोगों को ही देते हैं।

18. और हमने उनके और उन बस्तियों के बीच जिनमें हमने बरकत रखी थी प्रत्यक्ष बस्तियाँ बसाई और उनमें सफ़र की मंज़िलें खास अंदाज़े पर रखीं : “उनमें रात-दिन निश्चिन्त होकर चलो-फिरो !”

19. किन्तु उन्होंने कहा : “ऐ हमारे रब ! हमारी यात्राओं में दूरी कर दे।” उन्होंने स्वयं अपने ही ऊपर जुल्म किया। अन्ततः हम उन्हें (अतीत की) कहानियाँ बनाकर रहे, और उन्हें बिलकुल छिन्न-भिन्न कर डाला। निश्चय ही इसमें निशानियाँ हैं प्रत्येक बड़े धैर्यवान, कृतज्ञ के लिए।

20. इबलीस ने उनके विषय में अपना गुमान सत्य पाया और ईमानवालों के एक गिरोह के सिवा उन्होंने उसी का अनुसरण किया।

21. यद्यपि उसको उनपर कोई ज़ोर और अधिकार प्राप्त न था, किन्तु यह इसलिए कि हम उन लोगों को जो आखिरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों से अलग जान लें<sup>1</sup> जो उसकी ओर से किसी संदेह में पड़े हुए हैं। तुम्हारा रब हर चीज़ का अभिरक्षक है।

22. कह दो : “अल्लाह को छोड़कर जिनका तुम्हें (उपास्य होने का) दावा है, उन्हें पुकार कर देखो। वे न आकाशों में कणभर चीज़ के मालिक हैं और न धरती में और न उन दोनों में उनका कोई साझा है और न उनमें से कोई उसका सहायक है।”

23. और उसके यहाँ कोई सिफ़ारिश काम नहीं आएगी, किन्तु उसी की जिसे उसने (सिफ़ारिश करने की) अनुमति दी हो। यहाँ तक कि जब उनके

سَبَا

وَمِنْ مِّنْهُمْ

وَهَلْ نُجِزِي إِلَّا الْكَافِرَ ۚ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ  
الْقُرَى الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَقَدَّرْنَا فِيهَا  
السَّيْرَ سِيرُوا فِيهَا لِيَأْتِيَ أَيَّامًا أَمِينِينَ ۖ فَقَالُوا  
رَبَّنَا بَعُدْ بَيْنَ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فُجِعَ لَهُمْ  
أَعَادِيثٌ وَمَنْ قَنَهُمْ كُلُّ مُسْرِقٍ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ  
لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۖ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ  
ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا قَرِيضًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَمَا كَانَ  
لَهُ عَلَيْهِمْ مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ  
مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِي شَكٍّ ۚ وَرَبُّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَافِظٌ ۖ  
قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ رَعَيْتُمْ مِّن دُونِ اللَّهِ لَا يَنْبَلِكُوكُمْ  
وَشِقَالٌ ذَرَفُوا فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ  
فِيهَا مِنْ شَرْكَ ۖ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِّن ظَهِيرٍ ۖ وَلَا تَنْفَعُ  
الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَن أَذِنَ لَهُ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فُزِعَ عَنِ

مَذَلَةٍ

1. अर्थात् ईमानवालों को स्पष्टतः अलग कर दें।



दिलों से घबराहट दूर हो जाएगी, तो वे कहेंगे : “तुम्हारे रब ने क्या कहा ?” वे कहेंगे : “सर्वथा सत्य । और वह अत्यन्त उच्च, महान है ।”

24. कहो : “कौन तुम्हें आकाशों और धरती से रोज़ी देता है ?” कहो : “अल्लाह !” अब अवश्य ही हम हैं या तुम ही हो मार्ग पर, या खुली गुमराही में ।

25. कहो : “जो अपराध हमने किए, उसकी पूछ तुमसे न होगी और न उसकी पूछ हमसे होगी जो तुम कर रहे हो ।”

26. कह दो : “हमारा रब हम सबको इकट्ठा करेगा । फिर हमारे बीच ठीक-ठीक फ़ैसला कर देगा । वही ख़ूब फ़ैसला करनेवाला, अत्यन्त ज्ञानवान है ।”

27. कहो : “मुझे उनको दिखाओ तो, जिनको तुमने साझीदार बनाकर उसके साथ जोड़ रखा है । कुछ नहीं, बल्कि वही अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है ।”

28. हमने तो तुम्हें सारे ही मनुष्यों को शुभ-सूचना देनेवाला और सावधान करनेवाला बनाकर भेजा, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं ।

29. वे कहते हैं : “यह वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो ?”

30. कह दो : “तुम्हारे लिए एक विशेष दिन की अवधि नियत है, जिससे न एक घड़ी भर पीछे हटोगे और न आगे बढ़ोगे ।”

31. जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं : “हम इस कुरआन को कदापि न मानेंगे और न उसको जो इसके आगे है ।”<sup>1</sup> और यदि तुम देख पाते जब

وَمَنْ أَغْلِبُ  
قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقُّ وَهُوَ الْعَلِيُّ  
الْكَبِيرُ قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ قُلْ  
اللَّهُ وَإِنَّا أَتَاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ  
قُلْ لَا تَسْأَلُونَنَا عَنْ آجِرِ مَنَّا وَلَا نَسْأَلُ عَنْهَا ثَمَرًا  
قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ  
الْعَلِيمُ قُلْ أَرُونِي الَّذِينَ أَتَعْبُدُونَ بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا  
بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً  
لِلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ  
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ  
قُلْ لَكُمْ فِيهَا عِيشَادٌ يَوْمَ لَا تَسْتَأْجِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا  
تَسْتَقْدِمُونَ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِهَذَا  
الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ  
مَوْقُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ  
مَذَلَّةً



ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े कर दिए जाएँगे। वे आपस में एक-दूसरे पर इल्ज़ाम डाल रहे होंगे। जो लोग कमज़ोर समझे गए वे उन लोगों से जो बड़े बनते थे कहेंगे : “यदि तुम न होते तो हम अवश्य ही ईमानवाले होते।”

32. वे लोग जो बड़े बनते थे उन लोगों से जो कमज़ोर समझे गए थे, कहेंगे : “क्या हमने तुम्हें उस मार्गदर्शन से रोका था, जब वह तुम्हारे पास आया था? नहीं, बल्कि तुम स्वयं ही अपराधी हो।”

33. वे लोग जो कमज़ोर समझे गए थे बड़े बननेवालों से कहेंगे “नहीं, बल्कि रात-दिन की मक्कारी

थी जब तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़्र करें और दूसरों को उसका समकक्ष ठहराएँ।” जब वे यातना देखेंगे तो मन ही मन पछताएँगे और हम उन लोगों की गरदनोँ में जिन्होंने कुफ़्र की नीति अपनाई, तौक़ डाल देंगे। वे वही तो बदले में पाएँगे, जो वे करते रहे थे?

34. हमने जिस बस्ती में भी कोई सचेतकर्ता भेजा तो वहाँ के सम्पन्न लोगों ने यही कहा कि “जो कुछ देकर तुम्हें भेजा गया है<sup>1</sup>, हम तो उसको नहीं मानते।”

35. उन्होंने यह भी कहा कि “हम तो धन और संतान में तुमसे बढ़कर हैं और हम यातनाग्रस्त होनेवाले नहीं।”

36. कहो : “निस्संदेह मेरा रब जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसे चाहता है नपी-तुली देता है। किन्तु अधिकांश लोग जानते नहीं।”

37. वह चीज़ न तुम्हारे धन है और न तुम्हारी संतान, जो तुम्हें हमसे निकट

النَّاسُ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتَضَعُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا  
لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ۖ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا  
لِلَّذِينَ اسْتَضَعُوا أَنْهِيَ صَدَدَكُمْ عَنِ الْهُدَى  
بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ  
اسْتَضَعُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكَرَ الْيَلِيلِ وَالنَّهَارِ  
إِذْ كُنَّا مُرَوَّنًا أَنْ نَكْفُرَ بِاللهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَندَادًا ۖ وَ  
أَسْرَوْا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوْا الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَلَ  
فِي آغْثَاتِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ۖ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا قَالَ  
مُتْرَفُوهُمْ إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۖ وَقَالُوا نَحْنُ  
الْأَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِعُصَدِّينَ ۖ قُلْ إِنَّ رِجْئِي  
يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ  
لَا يَعْلَمُونَ ۖ وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِآلَتِي

مَذَل

1. अर्थात् तुम्हारे अपने दावे के अनुसार तुम्हें जो कुछ देकर भेजा गया है।



कर दे। अलबत्ता, जो कोई ईमान लाया और उसने अच्छा कर्म किया, तो ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए उसका कई गुना बदला है, जो उन्होंने किया। और वे ऊपरी मंज़िल के कक्षों में निश्चिन्तता-पूर्वक रहेंगे।

38. रहे वे लोग जो हमारी आयतों को मात करने के लिए प्रयासरत हैं, वे लाकर यातनाग्रस्त किए जाएँगे।

39. कह दो : “मेरा रब ही है जो अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है। और जो कुछ भी तुमने खर्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। वह सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है।”

40. याद करो जिस दिन वह उन सबको इकट्ठा करेगा, फिर फ़रिश्तों से कहेगा : “क्या तुम्हीं को ये पूजते रहे हैं?”

41. वे कहेंगे : “महान है तू, हमारा निकटता का मधुर संबंध तो तुझी से है, उनसे नहीं; बल्कि बात यह है कि वे जिन्नों को पूजते थे। उनमें से अधिकतर उन्हीं पर ईमान रखते थे।”

42. “अतः आज न तो तुम परस्पर एक-दूसरे के लाभ का अधिकार रखते हो और न हानि का।” और हम उन ज़ालिमों से कहेंगे : “अब उस आग की यातना का मज़ा चखो, जिसे तुम झुठलाते रहे हो।”

43. उन्हें जब हमारी स्पष्ट आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं : “यह तो बस ऐसा व्यक्ति है जो चाहता है कि तुम्हें उनसे रोक दे जिनको तुम्हारे बाप-दादा पूजते रहे हैं।” और कहते हैं : “यह तो एक घड़ा हुआ झूठ है।”

سَبَا

تَمَّتْ سُورَةُ

تَقَرَّبَكُمْ عِنْدَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنِ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا قَدْ وَلِيَكَ  
لَهُمْ جَزَاءُ الصَّغِيرِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ﴿٣٨﴾  
وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعْجِنِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ  
مُحْضَرُونَ ﴿٣٩﴾ قُلْ إِنْ رِزْقِي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ  
مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ  
يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٤٠﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا  
ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهَؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٤١﴾  
قَالُوا سُبْحَنَكَ أَنْتَ وَلَيْسَ مِنْ دُونِهِمْ ۖ بَلْ كَانُوا  
يَعْبُدُونَ الْجِنَّ، الْكُثْرَ هُمْ بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ﴿٤٢﴾ قَالِيَوْمَ لَا  
يَمْلِكُ بَعْضُكُم لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا ۚ وَقُولُوا لِلَّذِينَ  
ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٣﴾  
وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ  
يُرِيدُ أَنْ يَبْسُطَ كُمُومًا كَانَ يَعْبُدُ آبَاءَكُمْ ۚ وَقَالُوا

مَرْجُلٌ



जिन लोगों ने इनकार किया उन्होंने सत्य के विषय में, जबकि वह उनके पास आया, कह दिया : "यह तो बस एक प्रत्यक्ष जादू है।"

44. हमने उन्हें न तो किताबें दी थीं, जिनको वे पढ़ते हों और न तुमसे पहले उनकी ओर कोई सावधान करनेवाला ही भेजा था।

45. और झुठलाया उन लोगों ने भी जो उनसे पहले थे। और जो कुछ हमने उन्हें दिया था ये तो उसके दसवें भाग को भी नहीं पहुँचे हैं। तो उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया। तो फिर कैसी रही मेरी यातना !

46. कहो : "मैं तुम्हें बस एक बात की नसीहत करता हूँ कि अल्लाह के लिए दो-दो और एक-एक करके उठ खड़े हो; फिर विचार करो। तुम्हारे साथी को कोई उन्माद नहीं है।<sup>1</sup> वह तो एक कठोर यातना से पहले तुम्हें सचेत करनेवाला ही है।"

47. कहो : "मैं तुमसे कोई बदला नहीं माँगता वह तुम्हें ही मुबारक हो। मेरा बदला तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है और वह हर चीज़ का साक्षी है।"

48-49. कहो : "निश्चय ही मेरा रब सत्य को असत्य पर गालिब करता है। वह परोक्ष की बातें भली-भाँति जानता है।" कह दो : "सत्य आ गया (असत्य मिट गया) और असत्य न तो आरंभ करता है और न पुनरावृत्ति ही।"

50. कहो : "यदि मैं पथभ्रष्ट हो जाऊँ तो पथभ्रष्ट होकर मैं अपना ही बुरा करूँगा, और यदि मैं सीधे मार्ग पर हूँ, तो इसका कारण वह प्रकाशना है जो मेरा रब मेरी ओर करता है। निस्संदेह वह सबकुछ सुनता है, निकट है।"

سَبَا  
مَا هَذَا إِلَّا إِفْكٌ مُفْتَرًى وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ  
لَمَّا جَاءَهُمْ وَإِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ وَمَا أَتَيْنَهُمْ  
مِنْ كِتَابٍ يَذُرُّونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ  
نَذِيرٍ ۝ وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا كَفُّوا عَنْ شَأْنِ  
عَمَّا أَتَيْنَهُمْ فَكذبوا رُسُلِي كَذِيفٌ كَانَ تَكْذِيرُهُ قُلْ إِنَّمَا  
أَعِظُكُمْ بِوَحْدَةٍ ۝ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مَشْفًى وَقُرَادًى ثُمَّ  
تَتَفَكَّرُونَ ۝ إِنَّمَا بَصَاحِكُمْ مِنْ جَنَّةٍ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَكُمْ  
بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝ قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ  
فَهُوَ لَكُمْ ۝ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ  
شَهِيدٌ ۝ قُلْ إِنْ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَٰمُ الْغُيُوبِ ۝  
قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِي الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ۝ قُلْ إِنْ  
صَلَّيْتُ فَأَمَّا أَضِلُّ عَلَى نَفْسِي ۝ وَإِنْ اهْتَدَيْتُ فِيمَا  
يُوحَىٰ إِلَيَّ رَبِّي إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ۝ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فُرِغُوا

1. अर्थात् हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को कोई उन्माद नहीं है, बल्कि वे सच्चे पैग़म्बर हैं।



51. और यदि तुम देख लेते जब वे घबराए हुए होंगे; फिर बचकर भाग न सकेंगे और निकट स्थान ही से पकड़ लिए जाएँगे।

52. और कहेंगे : “हम उसपर ईमान ले आए।” हालाँकि उनके लिए कहाँ संभव है कि इतने दूरस्थ स्थान से उसको पा सकें।

53. इससे पहले तो उन्होंने उसका इनकार किया और दूरस्थ स्थान से बिन देखे तीर-तुक्के चलाते रहे।

54. उनके और उनकी चाहतों के बीच रोक लगा दी जाएगी; जिस प्रकार इससे पहले उनके सहमार्गी लोगों के साथ मामला किया गया। निश्चय ही वे डाँवाडोल कर देनेवाले संदेह में पड़े रहे हैं।



### 35. फ़ातिर

(मक्का में उतरी— आयतें 45)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो आकाशों और धरती का पैदा करनेवाला है। दो-दो, तीन-तीन और चार-चार फ़रिश्ते को बाज़ूओंवाले संदेशवाहक बनाकर नियुक्त करता है। वह संरचना में जैसी चाहता है, अभिवृद्धि करता है। निश्चय ही अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

2. अल्लाह जो दयालुता लोगों के लिए खोल दे उसे कोई रोकनेवाला नहीं और जिसे वह रोक ले तो उसके बाद उसे कोई जारी करनेवाला भी नहीं। वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

3. ऐ लोगो ! अल्लाह की तुमपर जो अनुकम्पा है, उसे याद करो। क्या



अल्लाह के सिवा कोई और पैदा करनेवाला है, जो तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी देता हो? उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। तो तुम कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हो?

4. और यदि वे तुम्हें झुठलाते हैं तो तुमसे पहले भी कितने ही रसूल झुठलाए जा चुके हैं। सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

5. ऐ लोगो! निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। अतः सांसारिक जीवन तुम्हें धोखे में न डाले और न वह धोखेबाज़ अल्लाह के विषय में तुम्हें धोखा दे।

6. निश्चय ही शैतान तुम्हारा शत्रु है। अतः तुम उसे शत्रु ही समझो। वह तो अपने गिरोह को केवल इसी लिए बुला रहा है कि वे दहकती आगवालों में सम्मिलित हो जाएँ।

7. वे लोग कि जिन्होंने इनकार किया उनके लिए कठोर यातना है। किन्तु जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिदान है।

8. फिर क्या वह व्यक्ति जिसके लिए उसका बुरा कर्म सुहाना बना दिया गया हो और वह उसे अच्छा दिख रहा हो (तो क्या वह बुराई को छोड़ेगा)? निश्चय ही अल्लाह जिसे चाहता है मार्ग से वंचित रखता है और जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखाता है। अतः उनपर अफ़सोस करते-करते तुम्हारी जान न जाती रहे। अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ वे रच रहे हैं।

9. अल्लाह ही तो है जिसने हवाएँ चलाई फिर वह बादलों को उभारती हैं, फिर हम उसे किसी शुष्क और निर्जीव भूभाग की ओर ले गए, और उसके

فَاتِيْرٌ

وَمِنْ آيَاتِهِ

خَالِقِ غَيْرِ اللَّهِ يُزِدُّكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَآتَىٰ تَوْفُوكُمْ ۖ وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَلَئِنْ اللَّهُ تُرِجَهُ الْأُمُورُ ۖ يَأْتِيهَا النَّاسُ إِنْ وَعَدَ اللَّهُ شَيْءً فَلَا تَعْرِضُ لَهُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَلَا يَعْزِزُكُمْ يَأْتِيهِ الْعَرْشُ ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا وَإِنَّمَا يَذْعُوكَ خِزْيَةً لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۚ الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ فَوَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۚ أَفَمَنْ رُبِّ لَهُ سُوءٌ عَلَيْهِ فَرَاةٌ حَسَنَاءُ ۚ فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِمْ بِمَا يَصْنَعُونَ ۖ وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُفِيرُ سَحَابًا ۖ فَتُقْنَطُهُ إِلَىٰ بَلَدٍ مَقِيتٍ ۖ فَآخِزْنَاهُ بِالْأَرْضِ

مِزْرَةٍ



द्वारा हमने धरती को उसके मुर्दा हो जाने के पश्चात जीवित कर दिया। इसी प्रकार (लोगों का नए सिरे से) जीवित होकर उठना भी है।

10. जो कोई प्रभुत्व चाहता हो तो प्रभुत्व तो सारा का सारा अल्लाह के लिए है। उसी की ओर अच्छा-पवित्र बोल चढ़ता है और अच्छा कर्म उसे ऊँचा उठाता है। रहे वे लोग जो बुरी चालें चलते हैं, उनके लिए कठोर यातना है और उनकी चालबाज़ी मलियामेट होकर रहेगी।

11. अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया। उसके ज्ञान के बिना न कोई स्त्री गर्भवती होती है और न जन्म देती है। और जो कोई आयु को प्राप्त करनेवाला आयु को प्राप्त करता है और जो कुछ उसकी आयु में कमी होती है अनिवार्यतः यह सब एक किताब में लिखा होता है। निश्चय ही यह सब अल्लाह के लिए अत्यन्त सरल है।

12. दोनों सागर समान नहीं, यह मीठा सुस्वादु है जिससे प्यास जाती रहे, पीने में रुचिकर। और यह खारा-कड़ुआ है। और तुम प्रत्येक में से तरोताज़ा माँस खाते हो और आभूषण निकालते हो, जिसे तुम पहनते हो। और तुम नौकाओं को देखते हो कि चीरती हुई उसमें चली जा रही हैं, ताकि तुम उसका उदार अनुग्रह तलाश करो और कदाचित्त तुम आभारी बनो।

13. वह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता

فَاتِرُ

وَمِنْ لَدُنْهِ

بَعْدَ مَوْتِهَا. كَذَلِكَ النُّشُورُ. مَنْ كَانَ يُرِيدُ  
الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا. إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ  
الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ. وَالَّذِينَ يَنْكُرُونَ  
السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ. وَمَكْرُ أُولَئِكَ هُوَ  
يُجُودُ. وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ  
جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا. وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَى وَلَا تَضَعُ إِلَّا  
بِعِلْمِهِ. وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُعَمَّرٍ وَلَا يُنْقَضُ مِنْ عُمرٍ إِلَّا  
فِي كِتَابٍ. إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ. وَمَا  
يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ. هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ  
وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ. وَمَنْ كُلٍ تَاكُلُونَ لَحْمًا طَرِيقًا. وَ  
تُسَخَّرُ جُنُودٌ جَلِيلَةٌ تَلْبَسُونَهَا. وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ  
مَوَاجِرَ لَتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ. وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ.  
يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ. وَ

مَرْكَبٌ



है। उसने सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगा रखा है। प्रत्येक एक नियत समय पूरी करने के लिए चल रहा है। वही अल्लाह तुम्हारा रब है। उसी की बादशाही है। उससे हटकर जिनको तुम पुकारते हो वे एक तिन्के के भी मालिक नहीं।

14. यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनेगे नहीं। और यदि वे सुनते तो भी तुम्हारी याचना स्वीकार न कर सकते और क्रियामत के दिन वे तुम्हारे साझी ठहराने का इनकार कर देंगे। पूरी खबर रखनेवाला (अल्लाह) की तरह तुम्हें कोई न बताएगा।

15. ऐ लोगो! तुम्हीं अल्लाह के मुहताज हो और अल्लाह तो निस्पृह, स्वप्रशंसित है।

16. यदि वह चाहे तो तुम्हें हटा दे और एक नई संसृति ले आए।

17. और यह अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं।

18. कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। और यदि कोई बोझ से दबा हुआ व्यक्ति अपना बोझ उठाने के लिए पुकारे तो उसमें से कुछ भी न उठाया जाएगा, यद्यपि वह निकट का संबंधी ही क्यों न हो। तुम तो केवल सावधान कर रहे हो। जो परोक्ष में रहते हुए अपने रब से डरते हैं और नमाज़ के पाबन्द हो चुके हैं (उनकी आत्मा का विकास हो गया)। और जिसने स्वयं को विकसित किया वह अपने ही भले के लिए अपने आपको विकसित करेगा। और पलटकर जाना तो अल्लाह ही की ओर है।

19. अंधा और आँखोंवाला बराबर नहीं,

سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى  
ذِكْرُكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ  
مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ إِنْ تَذْعُوهُمْ  
لَا يَسْمَعُوا دَعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ  
وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بَشْرِكِكُمْ وَلَا يُنَبِّئُكَ  
مِثْلُ خَمِيرٍ يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِنِّي  
أَسْأَلُ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ  
وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ  
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ  
إِلَى جُنْدٍ لَّا يُجْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَى  
إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا  
الصَّلَاةَ وَمَنْ تَرَكْنِي فَإِنَّا يَتَرَكْنِي لِنَفْسِهِ وَإِنِّي  
اللَّهُ الْبَصِيرُ



20-23. और न अँधेरे और प्रकाश, और न छाया और धूप और न जीवित और मृत बराबर हैं। निश्चय ही अल्लाह जिसे चाहता है सुनाता है। तुम उन लोगों को नहीं सुना सकते, जो क़ब्रों में हों। तुम तो बस एक सचेतकर्ता हो।

24. हमने तुम्हें सत्य के साथ भेजा है, शुभ-सूचना देनेवाला और सचेतकर्ता बनाकर। और जो भी समुदाय गुज़रा है, उसमें अनिवार्यतः एक सचेतकर्ता हुआ है।

25. यदि वे तुम्हें झुठलाते हैं तो जो उनसे पहले थे वे भी झुठला चुके हैं। उनके रसूल उनके पास स्पष्ट प्रमाण और ज़बूरें<sup>1</sup> और प्रकाशमान किताब लेकर आए थे।

26. फिर मैंने उन लोगों को, जिन्होंने इनकार किया, पकड़ लिया (तो फिर कैसा रहा मेरा इनकार !)

27. क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से पानी बरसाया, फिर उसके द्वारा हमने फल निकाले, जिनके रंग विभिन्न प्रकार के होते हैं? और पहाड़ों में भी श्वेत और लाल विभिन्न रंगों की धारियाँ पाई जाती हैं, और भुजंग काली भी।

28. और मनुष्यों और जानवरों और चौपायों के रंग भी इसी प्रकार भिन्न हैं। अल्लाह से डरते तो उसके वही बन्दे हैं, जो बाख़बर हैं। निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, क्षमाशील है।

الطّٰلُطّٰ

وَمِنْ ثَمَرَاتِهِ

وَلَا الظُّلُمُتُ وَلَا النُّورُ، وَلَا الظُّلُ وَلَا الْحَرُورُ،  
وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ، إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ  
مَنْ يَشَاءُ، وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَنْ فِي الْقُبُورِ، إِنْ أَنْتَ  
إِلَّا نَذِيرٌ، إِنْ أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا، وَإِنْ  
مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ، وَإِنْ يَكْفُرُوكَ فَقَدْ  
كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ، جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ  
وَبِالزَّبْرِ، وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ، ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ  
كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ، أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ  
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً، فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُخْتَلِفًا  
أَلْوَانُهَا، وَمِنْ الْجِبَالِ جُدَدٌ بَيْضٌ وَحُمْرٌ مُخْتَلِفٌ  
أَلْوَانُهَا، وَغَرَابِيبُ سُودٍ، وَمِنَ النَّاسِ وَالْدَّوَابِّ  
وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ، كَذَلِكَ، إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ  
مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ، إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ، إِنَّ

مِثْلِهِ

1. ज़बूरों से अभिप्राय वे ईश्वरीय ग्रंथ हैं, जिनमें अधिकतर उपदेश और तत्त्वज्ञान की बातें हृदयस्पर्शी और प्रभावकारी शैली में बयान हुई हैं।



29. निश्चय ही जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं, इस हाल में कि नमाज़ के पाबन्द हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से छिपे और खुले खर्च किया है, वे एक ऐसे व्यापार की आशा रखते हैं जो कभी तबाह न होगा।

30. परिणामस्वरूप वह उन्हें उनके प्रतिदान पूरे-पूरे दे और अपने उदार अनुग्रह से उन्हें और अधिक भी प्रदान करे। निस्सदेह वह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त गुणग्राहक है।

31. जो किताब हमने तुम्हारी ओर प्रकाशना द्वारा भेजी है, वही सत्य है। अपने से पहले (की किताबों) की पुष्टि में है। निश्चय ही अल्लाह अपने बन्दों की खबर पूरी रखनेवाला, देखनेवाला है।

32. फिर हमने इस किताब का उत्तराधिकारी उन लोगों को बनाया, जिन्हें हमने अपने बन्दों में से चुन लिया है। अब कोई तो उनमें से अपने आप पर जुल्म करता है और कोई उनमें से मध्य श्रेणी का है और कोई उनमें से अल्लाह के कृपायोग से भलाइयों में अग्रसर है। यही है बड़ी श्रेष्ठता।—

33. सदैव रहने के बाग़ हैं, जिनमें वे प्रवेश करेंगे। वहाँ उन्हें सोने के कंगनो और मोती से आभूषित किया जाएगा। और वहाँ उनका वस्त्र रेशम होगा।

34. और वे कहेंगे : “सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमसे ग़म दूर कर दिया। निश्चय ही हमारा रब अत्यन्त क्षमाशील, बड़ा गुणग्राहक है।

35. जिसने हमें अपने उदार अनुग्रह से रहने के ऐसे घर में उतारा जहाँ न हमें

नाज़म

तर्जुमा

الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوْا  
مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تَجَارَةً لَّنْ  
تَبُورًا ۚ لِيُؤْتِيَهُمْ أَجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۗ  
إِنَّهُ عَفُورٌ شَكُورٌ ۝ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ  
الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ  
يُعْبَادُ لِكَيْفٍ يُبْصَرُ ۝ ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ  
اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۖ وَمِنْهُمْ  
مُقْسِطٌ ۖ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ يُرِيدُ اللَّهُ ذَٰلِكَ  
هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝ جَثَّتْ عَدْنٌ يَدُهَا  
يَدُهَا حَرِيرٌ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا  
الْحَزْنَ ۖ إِنَّ رَبَّنَا لَعَفُورٌ شَكُورٌ ۝ الَّذِي أَحَلَّنَا  
دَارَ الْمَقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ ۖ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا

मज़ल



कोई मशक्कत उठानी पड़ती है और न हमें कोई थकान ही आती है।”

36. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया, उनके लिए जहन्नम की आग है, न उनका काम तमाम किया जाएगा कि मर जाएँ और न उनसे उसकी यातना ही कुछ हल्की की जाएगी। हम ऐसा ही बदला प्रत्येक अकृतज्ञ को देते हैं।

37. वे वहाँ चिल्लाएँगे कि “ऐ हमारे रब! हमें निकाल ले। हम अच्छा कर्म करेंगे, उससे भिन्न जो हम करते रहे।” “क्या हमने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी कि जिसमें कोई होश में आना चाहता तो होश में आ जाता? और तुम्हारे पास सचेतकर्ता भी आया था, तो अब मज़ा चखते रहो! ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं!”

38. निस्संदेह अल्लाह आकाशों और धरती की छिपी बात को जानता है। वह तो सीनों तक की बात जानता है।

39. वही तो है जिसने तुम्हें धरती में खलीफ़ा बनाया<sup>1</sup>। अब जो कोई इनकार करेगा, उसके इनकार का वबाल उसी पर है। इनकार करनेवालों का इनकार उनके रब के यहाँ केवल प्रकोप ही को बढ़ाता है, और इनकार करनेवालों का इनकार केवल घाटे में ही अभिवृद्धि करता है।

40. कहो: “क्या तुमने अपने ठहराए हुए साझीदारों का अवलोकन भी किया, जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्होंने धरती का कौन-सा भाग पैदा किया है या आकाशों में उनकी कोई भागीदारी है?” या

فَالْأُولَىٰ

وَمِنْ ثَمَرَاتِهِ

يَسْتَنَافِئُهَا الْفُجُورُ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۖ  
لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفَ عَنْهُمْ مِنْ  
عَذَابِهَا ۚ كَذَلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ۚ وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ  
فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا  
نَعْمَلُ ۚ أَوَلَمْ نَعْمَرْكُمْ مَا يُتَذَكَّرُ فِيهِ مِنْ تَذَكُّرٍ وَ  
جَاءَكُمْ التَّذَكُّرُ فَقَذَفْتُمْ فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ۚ  
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمُ  
رِذَاتِ الصُّدُورِ ۚ هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي  
الْأَرْضِ ۖ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۚ وَلَا يُزِيدُ الْكَافِرِينَ  
كَفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يُزِيدُ الْكَافِرِينَ  
كَفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ۚ قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَ الَّذِينَ  
تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ  
الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ ۚ أَمْ أُرْسِلْتُمْ كِتَابًا

مِثْلِهِ

1. अर्थात् उत्तराधिकारी। मानव धरती पर निरन्तर आबाद है। उसके लोग एक-दूसरे के उत्तराधिकारी होते चले आ रहे हैं।



हमने उन्हें कोई किताब दी है कि उसका कोई स्पष्ट प्रमाण उनके पक्ष में हो? नहीं, बल्कि वे ज़ालिम आपस में एक-दूसरे से केवल धोखे का वादा कर रहे हैं।

41. अल्लाह ही आकाशों और धरती को थामे हुए है कि वे टल न जाएँ और यदि वे टल जाएँ तो उसके पश्चात कोई भी नहीं जो उन्हें थाम सके। निस्संदेह, वह बहुत सहनशील, क्षमा करनेवाला है।

42-43. उन्होंने अल्लाह की कड़ी-कड़ी कसमें खाई थीं कि यदि उनके पास कोई सचेतकर्ता आए तो वे समुदायों में से प्रत्येक से बढ़कर सीधे मार्ग पर होंगे। किन्तु

जब उनके पास एक सचेतकर्ता आ गया तो इस चीज़ ने धरती में उनके घमंड और बुरी चालों के कारण उनकी नफ़रत हो में अभिवृद्धि की, हालाँकि बुरी चाल अपने ही लोगों को घेर लेती हैं। तो अब क्या जो रीति अगलों के सिलसिले में रही है वे बस उसी रीति की प्रतीक्षा कर रहे हैं? तो तुम अल्लाह की रीति में कदापि कोई परिवर्तन न पाओगे और न तुम अल्लाह की रीति को कभी टलते ही पाओगे।

44. क्या वे धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ है जो उनसे पहले गुज़रे हैं? हालाँकि वे शक्ति में उनसे कहीं बढ़-चढ़कर थे। अल्लाह ऐसा नहीं कि आकाशों में कोई चीज़ उसे मात कर सके और न धरती ही में। निस्संदेह वह सर्वज्ञ, सामर्थ्यवान है।

45. यदि अल्लाह लोगो को उनकी कमाई के कारण पकड़ने पर आ जाए तो इस धरती की पोठ पर किसी जीवधारी को भी न छोड़े। किन्तु वह उन्हें एक

وَمَنْ يَنْتَظِرْ  
فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَاتٍ مِّنْهُ، بَلْ إِن يَبْدُ الْظَالِمُونَ بَعْضُهُمْ  
بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا، إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ  
أَنْ تَزُولَا ذَٰلِكُنَّ زَالَتَانِ إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْ  
بَعْدِهِ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ  
أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِخْوَانِهِ  
الْأَوَّلِينَ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا تَفُورًا ۝  
اسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ وَلَا يَجِئُ الْمُنْكَرُ  
السَّيِّئِ إِلَّا بِأَهْلِهِ، فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ  
فَلَنْ يَجْعَلَ لَسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ذَٰلِكُمْ وَلَنْ يَجْعَلَ لِكَلِمَةِ اللَّهِ  
تَحْوِيلًا ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا فِي الْأَرْضِ قِيظُورًا كَيْفَ  
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ  
قُوَّةً، وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا  
فِي الْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ۝ وَلَوْ يُؤَاخِذُ



नियत समय तक ढील देता है, फिर जब उनका नियत समय आ जाता है तो निश्चय ही अल्लाह तो अपने बन्दों को देख ही रहा है ।

### 36. या०सीन०

(मक्का में उतरी—आयतें 83)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. या० सीन०

2-6. गवाह है हिकमतवालः कुरआन— कि तुम निश्चय ही रसूलों में से हो एक सीधे मार्ग पर—क्या ही खूब है प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान का

इसको अवतरित करना ! ताकि तुम ऐसे लोगों को सावधान करो, जिनके बाप-दादा को सावधान नहीं किया गया; इस कारण वे गफलत में पड़े हुए हैं ।

7-8. उनमें से अधिकतर लोगों पर बात सत्यापित हो चुकी है । अतः वे ईमान नहीं लाएँगे । हमने उनकी गर्दनो में तौक डाल दिए हैं जो उनकी ठोड़ियों से लगे हैं । अतः उनके सिर ऊपर को उचके हुए हैं ।

9. और हमने उनके आगे एक दीवार खड़ी कर दी है और एक दीवार उनके पीछे भी । इस तरह हमने उन्हें ढाँक दिया है । अतः उन्हें कुछ सुझाई नहीं देता ।

10. उनके लिए बराबर है तुमने उन्हें सचेत किया या उन्हें सचेत नहीं किया, वे ईमान नहीं लाएँगे ।

11. तुम तो बस सावधान कर रहे हो । जो कोई अनुस्मृति का अनुसरण करे



1. अर्थात् वह उनके साथ वही नीति अपनाएगा जिसके वे योग्य होंगे । इस समय यदि उनको वह गकट नहीं रहा है तो इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि वह उनकी करतूतों से बेखबर है । यह तो एक मुहलत दी गई है, ताकि संभलना चाहें तो संभल जाएं ।



और परोक्ष में रहते हुए रहमान से डरे, अतः उसे क्षमा और प्रतिष्ठामय बदले की शुभ सूचना दे दो।

12. निस्संदेह हम मुर्दों को जीवित करेंगे और हम लिखेंगे जो कुछ उन्होंने आगे के लिए भेजा और उनके चिह्नों को (जो पीछे रहा)। हर चीज़ हमने एक स्पष्ट किताब में गिन रखी है।

13. उनके लिए बस्तीवालों की एक मिसाल पेश करो, जबकि वहाँ भेजे हुए दूत आए।

14. जबकि हमने उनकी ओर दो दूत भेजे, तो उन्होंने उनको झूठला दिया। तब हमने एक तीसरे के

द्वारा शक्ति पहुँचाई, तो उन्होंने कहा : "हम तुम्हारी ओर भेजे गए हैं।"

15. वे बोले : "तुम तो बस हमारे ही जैसे मनुष्य हो। रहमान ने तो कोई भी चीज़ अवतरित नहीं की है। तुम केवल झूठ बोलते हो।"

16-17. उन्होंने कहा : "हमारा रब जानता है कि हम निश्चय ही तुम्हारी ओर भेजे गए हैं और हमारी ज़िम्मेदारी तो केवल स्पष्ट रूप से संदेश पहुँचा देने की है।"

18. वे बोले : "हम तो तुम्हें अपशकुन समझते हैं, यदि तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें पथराव करके मार डालेंगे और तुम्हें अवश्य हमारी ओर से दुखद यातना पहुँचेगी।"

19. उन्होंने कहा : "तुम्हारा अपशकुन तो तुम्हारे अपने ही साथ है। क्या यदि तुम्हें याददिहानी कराई जाए (तो यह कोई क्रुद्ध होने की बात है)? नहीं, बल्कि तुम मर्यादाहीन लोग हो।"

20-21. इतने में नगर के दूरवर्ती सिरे से एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया। उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! उनका अनुवर्तन करो, जो भेजे गए हैं। उनका अनुवर्तन करो जो तुमसे कोई बदला नहीं माँगते और वे सीधे मार्ग पर हैं।"

بِالْغَيْبِ قَبِيْرُهُ يَمْغْفِرُهَا وَآخِرُ كَرِيْمٍ ۝ اِنَّا نَخْنُ نَحْيِ  
السَّوْئِ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنَاهُ  
فِي اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا اَصْحَابَ الْقَرْيَةِ  
اِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝ اِذْ اَرْسَلْنَا اِلَيْهِمْ اِثْنَيْنِ  
فَكَذَّبُوهُمَا فَكَرَّرْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْا اِنَّا اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ۝  
قَالُوْا مَا اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَا اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ  
شَيْءٍ ۝ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا اَنْتُمْ اِذَا كُنْتُمْ بُرُوْنَ ۝ قَالُوْا رَبَّنَا عَلَّمْ  
اِنَّا اِلَيْكُمْ لَمْ نَسْلُوْكَ ۝ وَمَا عَلَّمْنَا اِلَّا الْبَلٰغَةَ الْمُبِيْنِ ۝  
قَالُوْا اِنَّا نَطَّيْرُ نَا يَكُ ۝ لٰمِنْ لَمْ تَنْهَهُوا لَنَرْجِسْكُمُ وَ  
لَيَحْسَبَنَّكُمْ مِّنْ اَعْدَابِ اٰلِهِيْكُمْ ۝ قَالُوْا طٰرِكُكُمْ مَّعَكُمْ ۝  
اِنْ دُكِّرْتُمْ ۝ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝ وَجَاءَ مِنْ  
اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْتَعْ قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ۝  
اتَّبِعُوا مَنِ اٰيَسَاكُمْ اَجْرًا وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝



22. "और मुझे क्या हुआ है कि मैं उसकी बन्दगी न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया और उसी की ओर तुम्हें लौटकर जाना है ?

23. क्या मैं उससे इतर दूसरे उपास्य बना लूँ ? यदि रहमान मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम नहीं आ सकती और न वे मुझे छुड़ा ही सकते हैं ।

24. तब तो मैं अवश्य स्पष्ट गुमराही में पड़ जाऊँगा ।

25. मैं तो तुम्हारे रब पर ईमान ले आया, अतः मेरी सुनो !"

26-27. कहा गया : "प्रवेश करो जन्नत में !" उसने कहा : "ऐ

काश ! मेरी क़ौम के लोग जानते कि मेरे रब ने मुझे क्षमा कर दिया और मुझे प्रतिष्ठित लोगों में सम्मिलित कर दिया ।"

28. उसके पश्चात उसकी क़ौम पर हमने आकाश से कोई सेना नहीं उतारी और हम इस तरह उतारा नहीं करते ।

29. वह तो केवल एक प्रचण्ड चीत्कार थी । तो सहसा क्या देखते हैं कि वे बुझकर रह गए ।

30. ऐ अफ़सोस बन्दों पर ! जो रसूल भी उनके पास आया, वे उसका परिहास ही करते रहे ।

31. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले कितनी ही नस्लों को हमने विनष्ट किया कि वे उनकी ओर पलटकर नहीं आएँगे ?

32. और जितने भी हैं, सबके सब हमारे ही सामने उपस्थित किए जाएँगे ।

33. और एक निशानी उनके लिए मृत भूमि है । हमने उसे जीवित किया और उससे अनाज निकाला, तो वे खाते हैं ।





34-35. और हमने उसमें खजूरों और अंगूरों के बाग लगाए और उसमें स्रोत प्रवाहित किए; ताकि वे उसके फल खाएँ—हालाँकि यह सब कुछ उनके हाथों का बनाया हुआ नहीं है।—तो क्या वे आभार नहीं प्रकट करते ?

36. महिमावान है वह जिसने सबके जोड़े पैदा किए धरती जो चीज़ें उगाती है उनमें से भी और स्वयं उनकी अपनी जाति में से भी और उन चीज़ों में से भी जिनको वे नहीं जानते ।

37. और एक निशानी उनके लिए रात है । हम उसपर से दिन को खींच लेते हैं । फिर क्या देखते हैं कि वे अँधेरे में रह गए ।

38. और सूर्य अपने नियत ठिकाने के लिए चला जा रहा है । यह बाँधा हुआ हिसाब है प्रभुत्वशाली, ज्ञानवान का ।

39. और रहा चन्द्रमा, तो उसकी नियति हमने मंज़िलों के क्रम में रखी, यहाँ तक कि वह फिर खजूर की पुरानी ट्रेढ़ी टहनी के सदृश हो जाता है ।

40. न सूर्य ही से हो सकता है कि चाँद को जा पकड़े और न रात दिन से आगे बढ़ सकती है । सब एक-एक कक्षा में तैर रहे हैं ।

41. और एक निशानी उनके लिए यह है कि हमने उनके अनुवर्तियों को भरी हुई नौका में सवार किया ।

42. और उनके लिए उसी के सदृश और भी ऐसी चीज़ें पैदा कीं, जिनपर वे सवार होते हैं ।

43. और यदि हम चाहें तो उन्हें डुबो दें । फिर न तो उनकी कोई चीख-पुकार हो और न उन्हें बचाया जा सके ।

44. यह तो बस हमारी दयालुता और एक नियत समय तक की सुख-सामग्री है ।

يَا كُلُّونَ ۖ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّنْ نَّجِيلٍ وَأَعْنَابٍ  
وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ۖ لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ  
وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۚ سُبْحَنَ الَّذِي  
خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُثْبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ  
وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ۚ وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ ۖ نَسْلُبُ مِنْهُ النَّهَارَ  
فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ ۚ وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۚ  
ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۚ وَالْقَمَرَ قَدَرْنَاهُ مَنَازِلَ  
حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ۚ لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا  
أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ  
فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۚ وَآيَةٌ لَهُمُ أَنَّا جَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ  
فِي الْفَلَكَ الْمَشْحُونِ ۚ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِن مِّثْلِهِ مَا  
يَرْكَبُونَ ۚ وَإِن نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيحَ لَهُمْ وَلَا  
هُمْ يُنْقَذُونَ ۚ إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۚ



45. और जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ का डर रखो, जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है, ताकि तुमपर दया की जाए ! (तो चुप्पी साध लेते हैं) ।

46. उनके पास उनके रब की आयतों में से जो आयत भी आती है, वे उससे कतराते ही हैं ।

47. और जब उनसे कहा जाता है कि "अल्लाह ने जो कुछ रोज़ी तुम्हें दी है उनमें से खर्च करो ।" तो जिन लोगों ने इनकार किया है, वे उन लोगों से, जो ईमान लाए हैं, कहते हैं : "क्या हम उसको खाना खिलाएँ जिसे यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं खिला देता ? तुम तो बस खुली गुमराही में पड़े हो ।"

48. और वे कहते हैं कि "यह वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो ?"

49. वे तो बस एक प्रचण्ड चीत्कार की प्रतीक्षा में हैं, जो उन्हें आ पकड़ेगी, जबकि वे झगड़ते होंगे ।

50. फिर न तो वे कोई वसीयत कर पाएँगे और न अपने घरवालों की ओर लौट ही सकेंगे ।

51. और नरसिंघा में फूँक मारी जाएगी । फिर क्या देखेंगे कि वे क़ब्रों से निकलकर अपने रब की ओर चल पड़े हैं ।

52. कहेंगे : "ऐ अफ़सोस हम पर ! किसने हमें सोते से जगा दिया ? यह वही चीज़ है जिसका रहमान ने वादा किया था और रसूलों ने सच कहा था ।"

53. बस एक ज़ोर की चिंघाड़ होगी । फिर क्या देखेंगे कि वे सबके-सब हमारे सामने उपस्थित कर दिए गए ।

وَاِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ اَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَمَا تَلْبِسُهُمْ مِنَ الْآيَةِ مِنْ آيَةٍ رَّبِّهِمْ ۝ اَلَا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ وَاِذَا قِيلَ لَهُمْ اَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمْ اللهُ ۖ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَنْفِقْ مِنْ لَّوِيْشًا ۖ اللهُ اَطْعَمَهُ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَهْذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاجِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ۝ فَلَا يَسْتَطِيعُوْنَ تَوْصِيَةً ۖ وَلَا اِلٰى اٰهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَنَفْعٌ فِى الصُّوْرِ ۖ وَاِذَا هُمْ مِنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ۝ قَالُوْا يُوَيْلَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِنْ مَرْقُوْدٍ ۙ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ۝ اِنْ كَاَنْتَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاجِدَةً ۖ فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُعْضُرُوْنَ ۝

مَرْقُوْدٌ



54. अब आज किसी जीव पर कुछ भी जुल्म न होगा और तुम्हें बदले में वही मिलेगा जो कुछ तुम करते रहे हो।

55. निश्चय ही जन्नतवाले आज किसी न किसी काम में व्यस्त आनन्द ले रहे हैं।

56. वे और उनकी पलियाँ छायाओं में मसहरियों पर तकिया लगाए हुए हैं,

57. उनके लिए वहाँ मेवे हैं। और उनके लिए वह सब कुछ मौजूद है, जिसकी वे माँग करें।

58. (उनपर) सलाम है, दयामय रब का उच्चारित किया हुआ।

59. "और ऐ अपराधियो ! आज तुम छँटकर अलग हो जाओ।

60. क्या मैंने तुम्हें ताकीद नहीं की थी, ऐ आदम के बेटो ! कि शैतान की बन्दगी न करो।—वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

61. और यह कि मेरी बन्दगी करो ? यही सीधा मार्ग है।

62. उसने तो तुममें से बहुत-से गिरोहों को पथभ्रष्ट कर दिया। तो क्या तुम बुद्धि नहीं रखते थे ?

63. यह वही जहन्नम है जिसकी तुम्हें धमकी दी जाती रही है।

64. जो इनकार तुम करते रहे हो, उसके बदले में आज इसमें प्रविष्ट हो जाओ।"

65. आज हम उनके मुँह पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बोलेंगे और जो कुछ वे कमाते रहे हैं, उनके पाँव उसकी गवाही देंगे।

66. यदि हम चाहें तो उनकी आँखें मेट दें। क्योंकि वे (अपने रूढ़) मार्ग की

وَمَالِي ۝۝  
فَالْيَوْمَ لَا تَنْظُمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝۝ إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ ۝۝ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَى الْأَرْبَابِ مُتَكُونَ ۝ لَهُمْ فِيهَا قَاقُتٌ وَلَهُمْ مَّا يَدْعُونَ ۝ سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ ۝ وَامْتَارُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا النُّجَيْرُونَ ۝ أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَبْنَئِ أَدْمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝ وَأَنْ اعْبُدُونِي ۝ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ وَلَقَدْ أَصَلَّ وَتَكَرَّرَ بِهَا كَثِيرًا ۝ أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ۝ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۝ إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَى



ओर लपके हुए हैं। फिर उन्हें सुझाई कहाँ से देगा ?

67-68. यदि हम चाहें तो उनकी जगह पर ही उनके रूप बिगाड़कर रख दें क्योंकि वे सत्य की ओर न चल सके और वे (गुमराही से) बाज़ नहीं आते। जिसको हम दीर्घायु देते हैं, उसको उसकी संरचना में उल्टा फेर देते हैं। तो क्या वे बुद्धि से काम नहीं लेते हैं ?

69. हमने उस (नबी) को कविता नहीं सिखाई और न वह उसके लिए शोभनीय है। वह तो केवल अनुस्मृति और स्पष्ट कुरआन है;

70. ताकि वह उसे सचेत कर दे जो जीवन्त हो और इनकार करनेवालों पर (यातना की) बात सत्यापित हो जाए।

71. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने उनके लिए अपने हाथों की बनाई हुई चीज़ों में से चौपाए पैदा किए और अब वे उनके मालिक हैं ?

72-73. और उन्हें उनके बस में कर दिया कि उनमें से कुछ तो उनकी सवारियाँ हैं और उनमें से कुछ को वे खाते हैं। और उनके लिए उनमें कितने ही लाभ हैं और पेय भी हैं। तो क्या वे कृतज्ञता नहीं दिखलाते ?

74-75. उन्होंने अल्लाह से इतर कितने ही उपास्य बना लिए हैं कि शायद उन्हें मदद पहुँचे। वे उनकी सहायता करने की सामर्थ्य नहीं रखते, हालाँकि वे (बहुदेववादियों की अपनी दृष्टि में) उनके लिए उपस्थित सेनाएँ हैं।<sup>1</sup>

76. अतः उनकी बात तुम्हें शोकाकुल न करे। हम जानते हैं जो कुछ वे छिपाते और जो कुछ व्यक्त करते हैं।

أَعْيُنُهُمْ فَاَتَتَّبَعُوا الضَّالَّاتِ يَبْصُرُونَ ۝ وَلَوْ  
نَشَاءُ لَمَمَسْنَاهُمْ عَلَى مَكَاتِرِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا  
مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ۝ وَمَنْ تَعْمِرُهُ تُنْكِرُهُ فِي  
الْخَلْقِ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي  
لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُبِينٌ ۝ لِيُذَكِّرَ  
مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ أَوَلَمْ  
يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا  
فَهُمْ لَهَا مَلِكُونَ ۝ وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ  
وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ۝ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۝  
أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً  
لَّهُمْ يُنْصَرُونَ ۝ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ  
لَهُمْ جُنُودٌ مُخَضَّرُونَ ۝ فَلَا يَحْزَنكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا  
نَعْلَمُ مَا يُرْسُونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا

1. अर्थात् जिन उपास्यों को बहुदेववादी अपनी सहायक सेना समझते हैं और यह विचार करते हैं कि संकट में वे सब हमारी मदद करेंगे, सर्वथा भ्रम है। ये उपास्य न संसार में उनके कुछ काम आएंगे और न परलोक में उनका कोई संकट दूर कर सकेंगे।



77. क्या (इनकार करनेवाले) मनुष्य ने देखा नहीं कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया? फिर क्या देखते हैं कि वह प्रत्यक्ष विरोधी झगड़ालू बन गया।

78. और उसने हमपर फबती कसी और अपनी पैदाइश को भूल गया। कहता है : “कौन हड्डियों में जान डालेगा, जबकि वे जीर्ण-शीर्ण हो चुकी होंगी?”

79. कह दो : “उनमें वही जान डालेगा जिसने उनको पहली बार पैदा किया। वह तो प्रत्येक संसृति को भली-भाँति जानता है।

80. वही है जिसने तुम्हारे लिए हरे-भरे वृक्ष से आग पैदा कर दी। तो लगे हो तुम उससे जलाने।”

81. क्या जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया उसे इसकी सामर्थ्य नहीं कि उन जैसों को पैदा कर दे? क्यों नहीं, जबकि वह महान स्रष्टा, अत्यन्त ज्ञानवान है।

82. उसका मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज़ (के पैदा करने) का इरादा करता है तो उससे कहता है, “हो जा!” और वह हो जाती है।

83. अतः महिमा है उसकी, जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा अधिकार है। और उसी की ओर तुम लौटकर जाओगे।



### 37. अस-साफ़फ़ात

(मक्का में उतरी — आयतें 182)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-5. गवाह हैं परा जमाकर पंक्तिबद्ध होनेवाले; फिर डाँटनेवाले; फिर यह ज़िक्र करनेवाले कि तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला है। वह आकाशों और धरती और जो



कुछ उनके बीच है सबका रब है और पूर्व दिशाओं का भी रब है ।

6-7. हमने दुनिया के आकाश को सजावट अर्थात् तारों से सुसज्जित किया, (रात में मुसाफ़ि़रों को मार्ग दिखाने) और प्रत्येक सरकश शैतान से सुरक्षित रखने के लिए ।

8-9. वे (शैतान) "मलए आला"<sup>1</sup> की ओर कान नहीं लगा पाते और हर ओर से फेंक मारे जाते हैं भगाने-धुतकारने के लिए । और उनके लिए अनवरत यातना है ।

10. किन्तु यह और बात है कि कोई कुछ उचक ले, इस दशा में एक तेज़ दहकती उल्का उसका पीछा करती है ।

11-12. अब उनसे पूछो कि उनके पैदा करने का काम अधिक कठिन है या उन चीज़ों का, जो हमने पैदा कर रखी हैं । निस्संदेह हमने उनको लेसदार मिट्टी से पैदा किया । बल्कि तुम तो आश्चर्य में हो और वे हैं कि परिहास कर रहे हैं ।

13. और जब उन्हें याद दिलाया जाता है, तो वे याद नहीं करते,

14. और जब कोई निशानी देखते हैं तो हँसी उड़ाते हैं ।

15. और कहते हैं : "यह तो बस एक प्रत्यक्ष जादू है ।

16-17. क्या जब हम मर चुके होंगे और मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जाएँगे, तो क्या फिर हम उठाए जाएँगे ? क्या और हमारे पहले के बाप-दादा भी ?"

18. कह दो : "हाँ ! और तुम अपमानित भी होगे ।"

19. वह तो बस एक झिड़की होगी । फिर क्या देखेंगे कि वे ताकने लगे हैं ।

20. और वे कहेंगे : "ऐ अफ़सोस हमपर ! यह तो बदले का दिन है ।"

21. यह वही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते रहे हो ।

وَمَا بَيْنَهُمَا رَبُّ الْمَشَارِقِ ۚ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا

وَمَا بَيْنَهُمَا رَبُّ الْمَشَارِقِ ۚ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا

بِزِينَتٍ ۚ الْكَوَكِبِ ۚ وَحِفْظًا ۖ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَارِدٍ ۚ

لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَى وَيَقْدِرُونَ مِنْ كُلِّ

جَانِبٍ ۚ دُخُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۚ إِلَّا مَنْ

خَلَفَ الْخَظْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شَهَابٌ ثَاقِبٌ ۚ فَاسْتَفْتِهِمْ

أَهُمْ أَسْخَدَ خَلْقًا أَمْ مَنْ خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ

لَازِبٍ ۚ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۚ وَإِذَا دُعُوا لَا

يَنذَرُونَ ۚ وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخَرُونَ ۚ وَقَالُوا إِنَّا

هَذَا إِلَّا سَحَابٌ مُمِيزٌ ۚ وَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا

إِنَّا لَنُنبَعُثُونَ ۚ أَوَإِنَّا الْأَوَّلُونَ ۚ قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ

دَاخِرُونَ ۚ فَأَمَّا هِيَ نَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۚ

وَقَالُوا يُؤْتِنَا هَذَا يَوْمُ الدِّينِ ۚ هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ

الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۚ أَخْشَرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا

مَزَل



22-23. (कहा जाएगा :) "एकत्र करो उन लोगों को जिन्होंने जुल्म किया और उनके जोड़ीदारों को भी और उनको भी जिनकी अल्लाह से हटकर वे बन्दगी करते रहे हैं। फिर उन सबको भड़कती हुई आग की राह दिखाओ !

24-25. और तनिक उन्हें ठहराओ, उनसे पूछना है : "तुम्हें क्या हो गया, जो तुम एक-दूसरे की सहायता नहीं कर रहे हो ?"

26. बल्कि वे तो आज बड़े आज्ञाकारी हो गए हैं।

27-28. वे एक-दूसरे की ओर रुख करके पूछते हुए कहेंगे : "तुम तो हमारे पास आते थे दाहिने से (और बाएँ से)।"

29. वे कहेंगे : "नहीं, बल्कि तुम स्वयं ही ईमानवाले न थे।

30. और हमारा तो तुमपर कोई ज़ोर न था; बल्कि तुम स्वयं ही सरकश लोग थे।

31. अन्ततः हमपर हमारे रब की बात सत्यापित होकर रही। निस्संदेह हमें (अपनी करतूत का) मज़ा चखना ही होगा।

32. सो हमने तुम्हें बहकाया। निश्चय ही हम स्वयं बहके हुए थे।"

33. अतः वे सब उस दिन यातना में एक-दूसरे के सह-भागी होंगे।

34. हम अपराधियों के साथ ऐसा ही किया करते हैं।

35-36. उनका हाल यह था कि जब उनसे कहा जाता कि "अल्लाह के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं है।" तो वे घमंड में आ जाते थे और कहते थे : "क्या हम एक उन्मादी कवि के लिए अपने उपास्यों को छोड़ दें ?"

37-38. "नहीं, बल्कि वह सत्य लेकर आया है और वह (पिछले) रसूलों की पुष्टि में है। निश्चय ही तुम दुखद यातना का मज़ा चखोगे।—

وَأَرْوَاهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۖ وَمِنْ دُونِ اللَّهِ  
فَأَهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ۖ وَقِفُوهُمْ إِنَّهُمْ  
مَسْئُولُونَ ۖ مَا لَكُمْ لَا تَنْصَرِفُونَ ۖ بَلْ هُمْ الْيَوْمَ  
مُسْتَلِمُونَ ۖ وَأَقْبَلْ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ  
قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَيْنَ الْيَمِينِ ۖ قَالُوا بَلْ  
لَكُمْ كُنُوتٌ مُؤْمِنِينَ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ  
سُلْطَانٍ ۖ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طَٰغِينَ ۖ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ  
رَبِّنَا ۖ إِنَّكَ لَذَٰبِقُونَ ۖ فَاعْوِزْكُمْ إِنَّا كُنَّا عَاوِينَ ۖ  
فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۖ إِنَّا كَذَبْنَا  
نَفْعِلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ  
إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ۖ وَيَقُولُونَ إِنَّا لَنَارِكُوا إِلَهَيْنَا  
إِشَاعِي مَجْنُونٍ ۖ بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ۖ  
إِنَّكُمْ لَذَٰبِقُوا الْعَذَابِ الْآلِيمِ ۖ وَمَا تُجْزَوْنَ



39. तुम बदला वही तो पाओगे जो तुम करते रहे हो।”——

40. अलबत्ता अल्लाह के उन बन्दों की बात और है, जिनको उसने चुन लिया है।

41-44. वही लोग हैं जिनके लिए जानी-बूझी नियत रोज़ी है, स्वादिष्ट फल। और वे नेमत भरी जन्नतों में सम्मानपूर्वक होंगे, तख्तों पर आमने-सामने विराजमान होंगे;

45-46 उनके बीच विशुद्ध पेय का पात्र फिराया जाएगा, बिलकुल साफ़, उज्ज्वल, पीनेवालों के लिए सर्वथा सुस्वादु।

47-49. न उसमें कोई ख़ुमार होगा और न वे उससे निढाल और मदहोश होंगे। और उनके पास निगाहें बचाए रखनेवाली, सुन्दर आँखोंवाली स्त्रियाँ होंगी, मानो वे सुरक्षित अंडे हैं।<sup>1</sup>

50. फिर वे एक-दूसरे की ओर रुख करके आपस में पूछेंगे।

51. उनमें से एक कहनेवाला कहेगा: “मेरा एक साथी था;

52. जो कहा करता था: ‘क्या तुम भी पुष्टि करनेवालों में से हो?’

53. क्या जब हम मर चुके होंगे और मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जाएँगे, तो क्या हम वास्तव में बदला पाएँगे?’”

54. वह कहेगा: “क्या तुम झाँककर देखोगे?”

55. फिर वह झाँकेगा तो उसे भड़कती हुई आग के बीच में देखेगा।

56. कहेगा: “अल्लाह की क़सम! तुम तो मुझे तबाह ही करने को थे।

57. यदि मेरे रब की अनुकम्पा न होती तो अवश्य ही मैं भी पकड़कर हाज़िर किए गए लोगों में से होता।

58-59. है ना अब ऐसा कि हम मरने के नहीं। हमें जो मृत्यु आनी थी वह बस

فَتَنَّا

فَتَنَّا

إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ  
أُولَٰئِكَ أَهْمُ رِزْقٍ مَّعْلُومٍ ۖ فَوَاكِهُ ۖ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ۖ  
فِي جَنَّاتٍ النَّعِيمِ ۖ عَلَى سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ۖ يُطَافُ  
عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۖ بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ۖ  
لَا فِيهَا غَوْلٌ ۚ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ۖ وَعِنْدَهُمْ  
فُضُوتُ الطَّرْفِ عَيْنٍ ۖ كَأَنَّهُمْ بِيضٌ مَّكْنُونٌ ۖ  
فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ قَالَ  
قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۖ يَقُولُ أَإِنَّكَ  
لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ۖ إِذَا امْتَنَّا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا  
مَا نَأْتِي لَمَدِينُونَ ۖ قَالَ هَلْ آنْتُمْ مَّظْلَعُونَ ۖ  
فَأَظْلَمَ قَرَاهُ فِي سَوَاءٍ أَعْبَاهِهِ ۖ قَالَ تَاللَّهِ إِن  
كَذَّبْتَ لَتُردِّينَ ۖ وَلَوْ لَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ  
الْمُخْضَرِّينَ ۖ أَفَمَا نَحْنُ بِمَبْتَلَيْنَ ۖ إِلَّا مَا مَوَّنتَنَا

مَدِين

1. पाकदामन और सुन्दर स्त्रियों के लिए यह मिसाल अरब में प्रसिद्ध थी।



पहले आ चुकी। और न हमें कोई यातना ही दी जाएगी।”

60. निश्चय ही यही बड़ी सफलता है।

61. ऐसी ही चीज़ के लिए कर्म करनेवालों को कर्म करना चाहिए।

62. क्या यह आतिथ्य अच्छा है या 'ज़क्कूम' का वृक्ष?

63. निश्चय ही हमने उस (वृक्ष) को ज़ालिमों के लिए परीक्षा बना दिया है।

64. वह एक वृक्ष है जो भड़कती हुई आग की तह से निकलता है।

65. उसके गांभे मानो शैतानों के सिर (साँपों के फन) हैं।

66. तो वे उसे खाएँगे और उसी से पेट भरेंगे।

67. फिर उनके लिए उसपर खौलते हुए पानी का मिश्रण होगा।

68. फिर उनकी वापसी भड़कती हुई आग की ओर होगी।

69-70. निश्चय ही उन्होंने अपने बाप-दादा को पथभ्रष्ट पाया। फिर वे उन्हीं के पद-चिह्नों पर दौड़ते रहे।

71. और उनसे पहले भी पूर्ववर्ती लोगों में अधिकांश पथभ्रष्ट हो चुके हैं,

72-73. हमने उनमें सचेत करनेवाले भेजे थे। तो अब देख लो उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ, जिन्हें सचेत किया गया था।

74. अलबत्ता अल्लाह के उन बन्दों की बात और है, जिनको उसने चुन लिया है।

75. नूह ने हमको पुकारा था, तो हम कैसे अच्छे हैं निवेदन स्वीकार करनेवाले!

76. हमने उसे और उसके लोगों को बड़ी घुटन और बेचैनी से छुटकारा दिया।

77. और हमने उसकी सतति (औलाद व अनुयायी) ही को बाक़ी रखा।

الْمَثَلَاتِ

وَمَنْ لَمْ يَرْحَمْ

الْأُولَى وَمَا تَعْنُ بِمَعْدِيَيْنِ ۖ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَوْمُ  
الْعَظِيمُ ۖ يُمِثِّلُ هَذَا قَلِيلُ الْعَمَلِ ۖ أَذَلِكَ  
خَيْرٌ نَزَلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقْوَمِ ۖ إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً  
لِّلْقَلِيلِينَ ۖ إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ۖ  
طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُؤُوسُ الشَّيَاطِينِ ۖ فَإِنَّهُمْ  
لَا كَلُومَ وَنُهَا قَمَالُونَ ۖ وَنُهَا الْبُطُونُ ۖ ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ  
عَلَيْهَا كُتُوبًا ۖ وَمِنْ حَيْثُ ۖ ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى  
الْجَحِيمِ ۖ إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ۖ فَهُمْ  
عَلَىٰ أَسْرِهِمْ يُهْرَعُونَ ۖ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ  
الْأَقْلَامِ ۖ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُّنْذِرِينَ ۖ فَانظُرْ  
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ۖ إِنَّا عِبَادَ اللَّهِ  
الْمُخْلِصِينَ ۖ وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوًّۥ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ۖ  
وَنَجَّيْنَاهُ وَآهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۖ وَجَعَلْنَا

مِنْ

بِ



78-79. और हमने पीछे आनेवाली नस्लों में उसका अच्छा ज़िक्र छोड़ा कि "सलाम है नूह पर संपूर्ण संसारवालों में !"

80. निस्संदेह हम उत्तमकारों को ऐसा ही बदला देते हैं।

81. निश्चय ही वह हमारे ईमानवाले बन्दों में से था।

82-84. फिर हमने दूसरों को डुबो दिया। और इबराहीम भी उसी के सहधर्मियों में से था। याद करो, जब वह अपने रब के समक्ष भला-चंगा हृदय लेकर आया;

85. जबकि उसने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा: "तुम किस चीज़ की पूजा करते हो ?

ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِيْنَ ۖ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ  
سَلَّمَ عَلَى نُوْحٍ فِي الْعَالَمِيْنَ ۖ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ  
اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ثُمَّ اَعْرَفْنَا  
الْآخِرِيْنَ ۖ وَاِنَّ مِنْ شِيعَتِهٖ لِبَرَهْمِيْمَ ۝ اِذْ جَاءَ  
رَبَّهٖ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝ اِذْ قَالَ لِأَبْنَيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ۝ اَيُّهَا الْهٖةُ دُوْنَ اللّٰهِ شَرِيْدُوْنَ ۝  
فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۖ فَتَطَّرَ نَظْرُهُ فِي السُّجُوْمِ ۖ  
فَقَالَ اِنِّیْ سَقِيْمٌ ۖ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ۖ فَرَاغَ اِلَیْ  
الْهٖتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۖ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ۖ  
فَرَاغَ عَلَيْهِمْ صَرْبًا بِالْیَمِیْنِ ۖ فَاَقْبَلُوْا اِلَیْهِ یَرْفُوْنَ ۖ  
قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تُصْنَعُوْنَ ۖ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ۖ قَالُوْا اَبْنَاؤُهٗ بُنِیَّانَا فَالْقُوْهُ فِی الْجَوْمِ ۖ  
فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فُجِعْنٰهُمْ اَسْفَلٰیْنَ ۖ وَقَالَ اِنِّیْ

86. क्या अल्लाह से हटकर मनघड़ंत उपास्यों को चाह रहे हो ?

87. आखिर सारे संसार के रब के विषय में तुम्हारा क्या गुमान है ?"

88-89. फिर उसने एक दृष्टि तारों पर डाली और कहा: "मैं तो निढाल हूँ।"

90. अतएव वे उसे छोड़कर चले गए पीठ फेरकर।

91-92. फिर वह आँख बचाकर उनके देवताओं की ओर गया और कहा: "क्या तुम खाते नहीं ? तुम्हें क्या हुआ है कि तुम बोलते नहीं ?"

93. फिर वह भरपूर हाथ मारते हुए उनपर पिल पड़ा।

94. फिर वे लोग झपटते हुए उसकी ओर आए।

95-96. उसने कहा: "क्या तुम उनको पूजते हो, जिन्हें स्वयं तराशते हो, जबकि अल्लाह ने तुम्हें भी पैदा किया है और उनको भी, जिन्हें तुम बनाते हो ?"

97-98. वे बोले: "उसके लिए एक मकान (अर्थात् अग्नि-कुण्ड) तैयार करके उसे भड़कती आग में डाल दो !" अतः उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही, किन्तु हमने उन्हीं को नीचा दिखा दिया।



99. उसने कहा : “मैं अपने रब की ओर जा रहा हूँ, वह मेरा मार्गदर्शन करेगा।

100. ऐ मेरे रब ! मुझे कोई नेक संतान प्रदान कर।”

101. तो हमने उसे एक सहनशील पुत्र की शुभ सूचना दी।

102. फिर जब वह उसके साथ दौड़-धूप करने की अवस्था को पहुँचा तो उसने कहा : “ऐ मेरे प्रिय बेटे ! मैं स्वप्न में देखता हूँ कि तुझे कुरबान कर रहा हूँ। तो अब देख, तेरा क्या विचार है ?” उसने कहा : “ऐ मेरे बाप ! जो कुछ आपको आदेश दिया जा रहा है उसे कर डालिए। अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्यवान पाएँगे।”

103-105. अन्ततः जब दोनों ने अपने आपको (अल्लाह के आगे) झुका दिया और उसने (इबराहीम ने) उसे कनपटी के बल लिटा दिया (तो उस समय क्या दृश्य रहा होगा, सोचो ! ) और हमने उसे पुकारा : “ऐ इबराहीम ! तूने स्वप्न को सच कर दिखाया। निस्संदेह हम उत्तमकारों को इसी प्रकार बदला देते हैं।”

106. निस्संदेह यह तो एक खुली हुई परीक्षा थी।

107. और हमने उसे (बेटे को) एक बड़ी कुरबानी के बदले में छुड़ा लिया।

108-109. और हमने पीछे आनेवाली नस्लों में उसका अच्छा ज़िक्र छोड़ा, कि “सलाम है इबराहीम पर।”

110. उत्तमकारों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

111. निश्चय ही वह हमारे ईमानवाले बन्दों में से था।

112. और हमने उसे इसहाक की शुभ सूचना दी, अच्छों में से एक नबी।

113. और हमने उसे और इसहाक को बरकत दी। और उन दोनों की संतति में कोई तो उत्तमकार है और कोई अपने आप पर खुला जुल्म करनेवाला।

الْحَمْدُ لِلَّهِ

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ

ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّهِ سَيِّدَيْنِ ۝ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ  
الصَّالِحِينَ ۝ فَبَشِّرْنَاهُ بِعِلْمٍ حَلِيمٍ ۝ فَلَمَّا بَلَغَ  
مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَبْنَؤُا إِنِّي أَنَا فِي الْمَتَامِ أَكْفَىٰ  
أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَٰأَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ  
سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ فَلَمَّا  
أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ۚ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَأْخُذْ بِهِمَا ۚ فَعَدَّ  
صَدَقَاتَ الزُّبْيَا ۚ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝  
إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝ وَقَدَيْنَاهُ بِذُبْحٍ  
عَظِيمٍ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ سَلَامًا ۚ عَلَىٰ  
إِبْرَاهِيمَ ۚ كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُ مِنْ  
عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَبَشِّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا ۚ وَ مِنَ  
الصَّالِحِينَ ۝ وَبَرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ۚ وَ مِنْ  
ذُرِّيَّتِهِمَا عِيسَىٰ وَطَالُوتَ ۚ إِنَّمَا جُعِلَ لِبَاسِهِمْ  
آيَاتٌ ۚ وَلَقَدْ مَنَّا

مَنْزِلٌ



114. और हम मूसा और हारून पर भी उपकार कर चुके हैं।

115. और हमने उन्हें और उनकी कौम को बड़ी घुटन और बेचैनी से छुटकारा दिया।

116. हमने उनकी सहायता की, तो वही प्रभावी रहे।

117-118. हमने उनको अत्यन्त स्पष्ट किताब प्रदान की। और उन्हें सीधा मार्ग दिखाया।

119-120. और हमने पीछे आनेवाली नस्लों में उसका अच्छा ज़िक्र छोड़ा कि "सलाम है मूसा और हारून पर!"

121. निस्संदेह हम उत्तमकारों को ऐसा ही बदला देते हैं।

122. निश्चय ही वे दोनों हमारे ईमानवाले बन्दों में से थे।

123-124. और निस्संदेह इलयास भी रसूलों में से था। याद करो, जब उसने अपनी कौम के लोगों से कहा: "क्या तुम डर नहीं रखते?"

125-126. क्या तुम 'बअल' (देवता) को पुकारते हो और सर्वोत्तम स्रष्टा को छोड़ देते हो; अपने रब और अपने अगले बाप-दादा के रब, अल्लाह को!"

127. किन्तु उन्होंने उसे झुठला दिया। सो वे निश्चय ही पकड़कर हाज़िर किए जाएँगे।

128. अल्लाह के उन बन्दों की बात और है, जिनको उसने चुन लिया है।

129-130. और हमने पीछे आनेवाली नस्लों में उसका अच्छा ज़िक्र छोड़ा कि "सलाम है इलयास पर!"

131. निस्संदेह हम उत्तमकारों को ऐसा ही बदला देते हैं।

132. निश्चय ही वह हमारे ईमानवाले बन्दों में से था।

133. और निश्चय ही लूत भी रसूलों में से था।

134-135. याद करो, जब हमने उसे और उसके सभी लोगों को बचा लिया

وَمَنْ لَّهُمْ

وَمَنْ لَّهُمْ

عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۖ وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ  
الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۚ وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ۖ وَ  
آتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ السَّمِيْنَ ۖ وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ  
الْمُسْتَقِيمَ ۖ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ۖ سَلَامٌ عَلَىٰ  
مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۖ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ  
إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنْ  
الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَكَلَا تَتَّقُونَ ۖ أَتَدْعُونَ  
بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۖ اللَّهُ رَبُّكُمْ وَ  
رَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۖ فَكَذَّبُوهُ فَأَنَّهُمْ لَمُخْضَرُونَ ۖ  
إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۖ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۖ  
سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۖ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ  
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ لُوطًا لَمِنْ  
الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۖ سَلَامٌ عَلَىٰ لُوطٍ



सिवाय एक बुढ़िया के, जो पीछे रह जानेवालों में से थी।

136. फिर दूसरों को हमने तहस-नहस करके रख दिया।

137-138. और निस्संदेह तुम उनपर (उनके क्षेत्र) से गुज़रते हो कभी प्रातः करते हुए और रात में भी। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

139. और निस्संदेह यूनस भी रसूलों में से था।

140-141. याद करो, जब वह भरी नौका की ओर भाग निकला, फिर पर्वी डालने में शामिल हुआ और उसमें मात खाई।

142-146. फिर उसे मछली ने निगल लिया और वह निन्दनीय दशा में ग्रस्त हो गया था। अब यदि वह तसबीह करनेवाला न होता तो उसी के भीतर उस दिन तक पड़ा रह जाता, जबकि लोग उठाए जाएँगे। अन्ततः हमने उसे इस दशा में कि वह निढाल था, साफ़ मैदान में डाल दिया। हमने उसपर बेलदार वृक्ष उगाया था।

147. और हमने उसे एक लाख या उससे अधिक (लोगों) की ओर भेजा।

148-149. फिर वे ईमान लाए तो हमने उन्हें एक अवधि तक सुख भोगने का अवसर दिया। अब उनसे पूछो : "क्या तुम्हारे रब के लिए तो बेटियाँ हों और उनके अपने लिए बेटे?"

150. क्या हमने फ़रिश्तों को औरतें बनाया और यह उनकी आँखों देखी बात है?"

151-154. सुन लो, निश्चय ही वे अपनी मनघड़ंत कहते हैं कि "अल्लाह के औलाद हुई है!" निश्चय ही वे झूठे हैं। क्या उसने बेटों की अपेक्षा बेटियाँ चुन ली हैं? तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा फ़ैसला करते हो?

155. तो क्या तुम होश से काम नहीं लेते?

فَتَنَّا فِي الْغَابِرِينَ ثُمَّ دَرَجْنَا الْأَخْيَرِينَ... وَإِنَّكُمْ لَتَمْكُرُونَ  
عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِينَ... وَمَا لَكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ... وَإِنَّ  
يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ... إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلِ الْمَشْحُونِ...  
فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ... فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ  
وَهُوَ مُلِيمٌ... فَلَوْ لَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ... لَكُنَّ  
فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ... فَابْتَدَأَهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ  
سَاقِطٌ... وَأَثْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِنْ يَقْطِينٍ... وَ  
أَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ... فَآمَنُوا  
فَمَنَعْنَاهُمُ الْبَنَاتِ... فَاسْتَفْتَيْهِمْ زَيْدُكَ الْبَنَاتِ  
وَلَهُمُ الْبَنُونَ... أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ  
شَاهِدُونَ... أَلَا إِنَّهُمْ مِنْ آفِكِهِمْ لَيَقُولُونَ...  
وَلَدَ اللَّهُ... وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ... أَطَّعَ الْبَنَاتِ  
عَلَى الْبَنِينَ... تَالْكُلْ... كَيْفَ تَعْلَمُونَ... أَفَلَا تَذَكَّرُونَ...



156-157. क्या तुम्हारे पास कोई स्पष्ट प्रमाण है ? तो लाओ अपनी किताब, यदि तुम सच्चे हो ।

158 उन्होंने अल्लाह और जिनों के बीच नाता जोड़ रखा है, हालाँकि जिनों को भली-भाँति मालूम है कि वे अवश्य पकड़कर हाज़िर किए जाएंगे —

159. महान और उच्च है अल्लाह उससे, जो वे बयान करते हैं ।—

160. अल्लाह के उन बन्दों की बात और है, जिन्हें उसने चुन लिया ।

161-162. अतः तुम और जिनको तुम पूजते हो वे, तुम सब अल्लाह के विरुद्ध किसी को बहका नहीं सकते,

كَتَبْنَا

وَمَا نَالُوا

أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ۚ فَاْتُوا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ  
وَجَعَلُوْا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نٰسِيًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتِ الْجِنَّةُ  
اِنَّهُمْ لَمُحْضِرُوْنَ ۙ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُصِفُوْنَ ۚ اِلَّا اَعْبَادُ  
اللّٰهِ الْمُخْلِصِيْنَ ۙ وَآلَاكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ۙ مَا اَنْتُمْ  
عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ۙ اِلَّا مَنْ هُوَ صٰلِ الْجَنِيْبِ ۚ وَمَا مِنَّا  
اِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ۙ وَاِنَّا لَنَعْنُ الصّٰفٰتُوْنَ ۙ وَاِنَّا  
لَنَعْنُ الْمُصْحِحُوْنَ ۙ وَاِنْ كَاٰنُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ۙ لَوْ اَنْ عِنْدَنَا  
فِيْ كُرٰسٍ اَوَّلِيْنَ ۙ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلِصِيْنَ ۙ  
فَلَمَّا وَاٰهُ فَوَفَّ يَعْلَمُوْنَ ۙ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كُرْسِيْنَا  
لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ۙ اِنَّهُمْ لَمَنْ نَنْصُوْرُوْنَ ۙ وَاِنْ  
جُنَدُنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۙ فَنُوَلِّ عَنْهُمْ حِجًّا مَّيْمِيْنًا ۙ وَ  
اَنْصُرُهُمْ فَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ۙ اَفَعِدَاۤءُنَا يَنْتَعِجِلُوْنَ ۙ  
فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءُ صَبَآءُ الْمُنٰدِيْنَ ۙ وَتَوَلّٰوْا

مِنْ

163. सिवाय उसके जो जहन्नम की भड़कती आग में पड़ने ही वाला हो ।

164. और हमारी ओर से उसके लिए अनिवार्यतः एक ज्ञात और नियत स्थान है ।

165-166. और हम ही पंक्तिबद्ध करते हैं । और हम ही महानता बयान करते हैं ।

167-169. वे तो कहा करते थे कि “यदि हमारे पास पिछलों की कोई शिक्षा होती तो हम अल्लाह के चुने हुए बन्दे होते ।”

170. किन्तु उन्होंने उसका इनकार कर दिया, तो अब जल्द ही वे जान लेंगे ।

171-173. और हमारे अपने उन बन्दों के हक़ में, जो रसूल बनाकर भेजे गए, हमारी बात पहले ही निश्चित हो चुकी है कि निश्चय ही उन्हीं की सहायता की जाएगी । और निश्चय ही हमारी सेना ही प्रभावी रहेगी ।

174-175. अतः एक अवधि तक के लिए उनसे रुख फेर लो और उन्हें देखते रहो । वे भी जल्द ही (अपना परिणाम) देख लेंगे ।

176. क्या वे हमारी यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं ?

177. तो जब वह उनके आँगन में उतरेगी तो बड़ी ही बुरी सुबह होगी उन लोगों की, जिन्हें सचेत किया जा चुका है !



178-179. एक अवधि तक के लिए उनसे रुख फेर लो और देखते रहो, वे जल्द ही देख लेंगे।

180. महान और उच्च है तुम्हारा रब, प्रताप का स्वामी, उन बातों से जो वे बताते हैं !

181. और सलाम है रसूलों पर;

182. और सब प्रशंसा अल्लाह, सारे संसार के रब के लिए है।

### 38. साद

(मक्का में उतरी— आयतें 88)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. साद। क्रसम है, याददिहानी-वाले कुरआन की (जिसमें कोई कमी नहीं कि धर्मविरोधी सत्य को न समझ सकें)।

2. बल्कि जिन्होंने इनकार किया वे गर्व और विरोध में पड़े हुए हैं।

3. उनसे पहले हमने कितनी ही पीढ़ियों को विनष्ट किया, तो वे लगे पुकारने। किन्तु वह समय हटने-बचने का न था।

4. उन्होंने आश्चर्य किया इसपर कि उनके पास उन्हीं में से एक सचेतकर्ता आया और इनकार करनेवाले कहने लगे : “यह जादूगर है बड़ा झूठा।

5. क्या उसने सारे उपास्यों को अकेला एक उपास्य ठहरा दिया ? निस्संदेह यह तो बहुत अचम्भेवाली चीज़ है !”

6. और उनके सरदार (यह कहते हुए) चल खड़े हुए कि “चलते रहो और अपने उपास्यों पर जमे रहो। निस्संदेह यह वांछित चीज़ है।

7. यह बात तो हमने पिछले धर्म में सुनी ही नहीं। यह तो बस मनघड़त है।

8. क्या हम सबमें से (चुनकर) इसी पर अनुस्मृति अवतरित हुई है ?” नहीं,





बल्कि वे मेरी अनुस्मृति के विषय में संदेह में हैं, बल्कि उन्होंने अभी तक मेरी यातना का मज़ा चखा ही नहीं है।

9. या, तेरे प्रभुत्वशाली, बड़े दाता रब की दयालुता के खज़ाने उनके पास हैं ?

10. या, आकाशों और धरती और जो कुछ उनके बीच है, उन सबकी बादशाही उन्हीं की है ? फिर तो चाहिए कि वे रस्सियों द्वारा ऊपर चढ़ जाएँ।

11. वह एक साधारण सेना है (विनष्ट होनेवाले) दलों में से, वहाँ मात खाना जिसकी नियति है।

12. उनसे पहले नूह की क़ौम और आद और मेखोंवाले फिरौन ने झुठलाया।

13. और समूद और लूत की क़ौम और 'ऐकावाले' भी, ये हैं वे दल।

14. उनमें से प्रत्येक ने रसूलों को झुठलाया, तो मेरी ओर से दण्ड अवश्यम्भावी होकर रहा।

15. इन्हें बस एक चीख की प्रतीक्षा है जिसमें तनिक भी अवकाश न होगा।

16. वे कहते हैं : "ऐ हमारे रब ! हिसाब के दिन से पहले ही शीघ्र हमारा हिस्सा दे दे।"

17. वे जो कुछ कहते हैं उसपर धैर्य से काम लो और ज़ोर व शक्तिवाले हमारे बन्दे दाऊद को याद करो। निश्चय ही वह (अल्लाह की ओर) बहुत रुजू करनेवाला था।

18-19. हमने पर्वतों को उसके साथ वशीभूत कर दिया था कि प्रातः काल और संध्या समय तसबीह करते रहे। और पक्षियों को भी, जो एकत्र हो जाते थे। प्रत्येक उसके आगे रुजू रहता।

20. हमने उसका राज्य सुदृढ़ कर दिया था और उसे तत्त्वदर्शिता प्रदान की

مَنْ

مَنْ

مِنْ بَيْنِنَا، بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْ ذِكْرِي، بَلْ لَنَا  
يَذُوقُوا عَذَابٍ ۝ أَمْعِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَتِي  
الرَّحِيمِ ۝ أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا  
بَيْنَهُمَا ۝ فَلْيَرْفَعُوا فِي الْأَسْبَابِ ۝ جُنُودًا هُنَالِكَ  
مَهْرُومِينَ ۝ الْأَخْرَابِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادُ  
وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ۝ وَثُودُ قَوْمِ لُوطٍ وَأَصْطَبِ  
لَيْكِهِ ۝ أُولَئِكَ الْأَخْرَابُ ۝ إِنَّ كُلَّ الْأَكْثَرِ  
الرُّسُلِ كُنَّ عِقَابٍ ۝ وَمَا يَنْظُرُ هَؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً  
وَاحِدَةً مِّنْ أَمْرٍ ۝ وَقَالُوا رَبَّنَا عَجَلْ لَّنَا  
قِطْعًا مِّنْ ثَمَرِ الْجَنَّةِ ۝ أَصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ  
وَاذْكُرْ عَبْدًا دَاوُدَ ذَا الْأَيْدِ ۝ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝ إِنَّا سَخَّرْنَا  
الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعُشِيِّ ۝ وَالطُّيُورُ  
مَحْشُورَةٌ ۝ كُلٌّ لَّهُ أَوَّابٌ ۝ وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَأَتَيْنَاهُ

مَنْ



थी और निर्णायक बात कहने की क्षमता प्रदान की थी।

21. और क्या तुम्हें उन विवादियों की खबर पहुँची है? जब वे दीवार पर चढ़कर मेहराब (एकांत कक्ष) में आ पहुँचे।

22. जब वे दाऊद के पास पहुँचे तो वह उनसे सहम गया। वे बोले कि “डरिए नहीं, हम दो विवादी हैं। हममें से एक ने दूसरे पर ज्यादाती की है; तो आप हमारे बीच ठीक-ठीक फ़ैसला कर दीजिए। और बात को दूर न डालिए और हमें ठीक मार्ग बता दीजिए।

23. यह मेरा भाई है। इसके पास निन्यानबे दुंबियाँ हैं और मेरे पास एक दुंबी है। अब इसका कहना है कि ‘इसे भी मुझे सौंप दे’ और बातचीत में इसने मुझे दबा लिया।”

24. उसने कहा : “इसने अपनी दुंबियों के साथ तेरी दुंबी को मिला लेने की माँग करके निश्चय ही तुझपर जुल्म किया है। और निस्संदेह ब्रह्म-से साथ मिलकर रहनेवाले एक-दूसरे पर ज्यादाती करते हैं, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए। किन्तु ऐसे लोग थोड़े ही हैं।” अब दाऊद समझ गया कि यह तो हमने उसे परीक्षा में डाला है। अतः उसने अपने रब से क्षमा-याचना की और झुककर (सीधे सजदे में) गिर पड़ा और रुजू हुआ।

25. तो हमने उसका वह क़सूर माफ़ कर दिया। और निश्चय ही हमारे यहाँ उसके लिए अनिवार्यतः सामीप्य और उत्तम ठिकाना है।

26. “ऐ दाऊद ! हमने धरती में तुझे खलीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया है। अतः तू लोगों के बीच हक़ के साथ फ़ैसला करना और अपनी इच्छा का अनुपालन न करना कि वह तुझे अल्लाह के मार्ग से भटका दे। जो लोग अल्लाह के मार्ग से

الْحِكْمَةَ وَقَصَلَ الْخِطَابَ ۝ وَهَلْ أَتَاكَ نَبِيُّ الْخَصَمِ إِذْ  
تَسَوَّرُوا الْحُرَابَ هَذَا دَخَلُوا عَلَى دَاوُدَ فَفَزِعَهُ مِنْهُمْ قَالُوا  
لَا تَخَفْ خَصْمَيْنِ بَعْضُنَا عَلَى بَعْضٍ قَالَتْ بَيْنَنَا  
بِالْحَقِّ وَلَا تُلْطِمْ وَاهِدًا إِلَى سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۝ إِنَّ هَذَا  
أَخِي عَلَيْهِ تَسَعُّ وَتَسْعُونَ نَجْهَةً وَلِي نَعْجَةً وَاحِدَةً ۝  
فَقَالَ الْكُوفِيُّهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ۝ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ  
يُسُوَالُ نَجْمَتِكَ إِلَى بَعَاثِهِمْ فَلَمَّ كَثِيرًا مِنْ الْخُلَطَاءِ  
لِيَبْنِي بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ  
وَقَلِيلٌ مِّنْهُمْ ۝ وَظَنَّ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ  
وَحَزَرَ كَيْدَهَا وَأَنَابَ ۝ فَفَقَرْنَا لَهُ ذَلِكَ ۝ وَلَئِنْ لَّهُ  
عِنْدَنَا لَكُرْكُورٌ وَحَسَنَ مَا يَ ۝ يُدَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ  
خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ قَالَتْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ  
الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ



भटकते हैं, निश्चय ही उनके लिए कठोर यातना है, क्योंकि वे हिसाब के दिन को भूले रहे।—

27. हमने आकाश और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, व्यर्थ नहीं पैदा किया। यह तो उन लोगों का गुमान है जिन्होंने इनकार किया। अतः आग में झोंके जाने के कारण इनकार करनेवालों की बड़ी दुर्गति है।

28-29. (क्या हम उनको जो समझते हैं कि जगत की संरचना व्यर्थ नहीं है, उनके समान कर देंगे जो जगत को निरर्थक मानते हैं।) या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके समान कर देंगे जो धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं; या डर रखनेवालों को हम दुराचारियों जैसा कर देंगे? यह एक बरकतवाली किताब है, जिसे हमने तुम्हारी ओर अवतरित किया है, ताकि वे लोग इसकी आयतों पर सोच-विचार करें और ताकि बुद्धि और समझवाले इससे शिक्षा ग्रहण करें।—

30-31. और हमने दाऊद को सुलैमान प्रदान किया। वह कितना अच्छा बन्दा था! निश्चय ही वह बहुत ही रुजू रहनेवाला था। याद करो, जबकि संध्या समय उसके सामने सधे हुए द्रुतगामी घोड़े हाज़िर किए गए।

32. तो उसने कहा: “मैंने इनके प्रति प्रेम अपने रब की याद के कारण अपनाया है।” यहाँ तक कि वे (घोड़े) ओट में छिप गए।

33. “उन्हें मेरे पास वापस लाओ!” फिर वह उनकी पिंडलियों और गरदनो पर हाथ फेरने लगा।

34. निश्चय ही हमने सुलैमान को भी परीक्षा में डाला। और हमने उसके तख्त पर एक धड़ डाल दिया। फिर वह रुजू हुआ।

35. उसने कहा: “ऐ मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और मुझे वह राज्य प्रदान कर, जो मेरे पश्चात किसी के लिए शोभनीय न हो। निश्चय ही तू बड़ा दाता है।”

عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ  
الْحِسَابِ ۚ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا  
بِاطِلًا ۚ ذَلِكَ ظُنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا  
مِنَ النَّارِ ۚ أَمْ تَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ  
كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ أَمْ تَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ۚ  
كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرُوا  
أَلْوَابِ ۚ وَوَهَبْنَا لِذَاوُدَ سُلَيْمَانَ ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۚ إِنَّهُ  
أَوَابٌ ۚ إِذَا دُعِيَ عَلَيْهِ بِالْعِشِيِّ الضُّفُفُتِ إِحْيَاوُ ۚ  
فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي ۚ حَتَّى  
تَوَارَتْ بِأُحْجَابٍ ۚ رَدُّوْهَا عَلَى قُطُوفٍ مُسْحًا بِالشَّوْقِ  
وَالْأَعْيَانِ ۚ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ ۚ وَالْقَيْنَا عَلَى كُرْسِيِّهِ  
جَسَدًا ۚ أَنْتَابٌ ۚ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَا  
يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَاقِبُ ۚ فَخَرْنَا



36. तब हमने वायु को उसके लिए वशीभूत कर दिया, जो उसके आदेश से, जहाँ वह पहुँचना चाहता, सरलतापूर्वक चलती थी।

37-38. और शैतानों को भी (वशीभूत कर दिया), प्रत्येक निर्माता और गोताखोर को और दूसरों को भी जो जंजीरों में जकड़े हुए रहते।

39. "यह हमारी बेहिसाब देन है। अब एहसान करो या रोको।"

40. और निश्चय ही हमारे यहाँ उसके लिए अनिवार्यतः सामीप्य और उत्तम ठिकाना है।

41. हमारे बन्दे अय्यूब को भी याद करो, जब उसने अपने रब को पुकारा कि "शैतान ने मुझे दुख और पीड़ा पहुँचा रखी है।"

42. "अपना पाँव (धरती पर) मार, यह है ठण्डा (पानी) नहाने को और पीने को।"

43-44. और हमने उसे उसके परिजन दिए और उनके साथ वैसे ही और भी; अपनी ओर से दयालुता के रूप में और बुद्धि और समझ रखनेवालों के लिए शिक्षा के रूप में। "और अपने हाथ में तिनकों का एक मुट्ठा ले और उससे मार और अपनी क्रसम न तोड़।" निश्चय ही हमने उसे धैर्यवान पाया, क्या ही अच्छा बन्दा ! निस्संदेह वह बड़ा ही रुजू रहनेवाला था।

45. हमारे बन्दों, इबराहीम और इसहाक और याकूब को भी याद करो, जो हाथों (शक्ति) और निगाहोंवाले (ज्ञान-चक्षुवाले) थे।

46. निस्संदेह हमने उन्हें एक विशिष्ट बात के लिए चुन लिया था और वह वास्तविक घर (आखिरत) की याद थी।

47. और निश्चय ही वे हमारे यहाँ चुने हुए नेक लोगों में से हैं।

48. इसमाईल और अल-यसअ और जुलकिफ़्ल को भी याद करो। इनमें से प्रत्येक ही अच्छा रहा है।

لَهُ الرِّيحُ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ۝ وَالشَّيْطَانُ كُلُّ بَنَاءٍ وَغَوَاصٍ ۝ وَالْخَيْرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝ هَذَا عَطَاؤُنَا قَائِمِينَ أَوْ أَمْرِكَ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَإِنَّا لَهُ عِنْدَنَا لَنَرْفَعِي وَحْشَنَ مَائِدٍ ۝ وَادْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ ۝ إِذْ نَادَى رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ۝ ارْكُضْ بِرِجْلِكَ هَذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ۝ وَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرَى لِبُؤْسِ الْأَلْبَابِ ۝ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْتًا قَاصِرَةً ۝ وَلَا تَحْنُتْ ۝ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا نِعْمَ الْعَبْدُ ۝ إِنَّهُ أَتَابَ ۝ وَادْكُرْ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ ۝ إِذْ نَادَى وَاسْمِعُوا لِي وَيَعْقُوبَ أُولِي الْأَيْدِي ۝ وَالْأَكْبَصَارِ ۝ إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ إِذْ كَرَّمَهُ الدَّارِ ۝ وَلَدْنَاهُمْ عِنْدَنَا لَيْنَ الْمُضْطَضِّينَ الْأَخْيَارِ ۝ وَادْكُرْ لَنَا عِيسَى وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِنَ الْأَخْيَارِ ۝

مَذَر



49. यह एक अनुस्मृति है। और निश्चय ही डर रखनेवालों के लिए अच्छा ठिकाना है।

50. सदैव रहने के बाग़ हैं, जिनके द्वार उनके लिए खुले होंगे।

51. उनमें वे तकिया लगाए हुए होंगे। वहाँ वे बहुत-से मेवे और पेय मँगवाते होंगे।

52. और उनके पास निगाहें बचाए रखनेवाली स्त्रियाँ होंगी, जो समान अवस्था की होंगी।

53. यह है वह चीज़, जिसका हिसाब के दिन के लिए तुमसे वादा किया जाता है।

54. यह हमारा दिया है, जो कभी समाप्त न होगा।

55. एक ओर यह है, किन्तु सरकशों के लिए बहुत बुरा ठिकाना है;

56. जहन्नम, जिसमें वे प्रवेश करेंगे। तो वह बहुत ही बुरा विश्राम-स्थल है!

57-58. यह है, अब उन्हें इसे चखना है— खौलता हुआ पानी और रक्तयुक्त पीप और इसी प्रकार की दूसरी और भी चीज़ें।

59. "यह एक भीड़ है जो तुम्हारे साथ घुसी चली आ रही है। कोई आवभगत उनके लिए नहीं। वे तो आग में पड़नेवाले हैं।"

60. वे कहेंगे: "नहीं, बल्कि तुम। तुम्हारे लिए कोई आवभगत नहीं। तुम्हीं यह हमारे आगे लाए हो। तो बहुत ही बुरी है यह ठहरने की जगह!"

61. वे कहेंगे: "ऐ हमारे रब! जो हमारे आगे यह (मुसीबत) लाया उसे आग में दोहरी यातना दे!"

62. और वे कहेंगे: "क्या बात है कि हम उन लोगों को नहीं देखते जिनकी गणना हम बुरों में करते थे?"

63. क्या हमने यूँ ही उनका मज़ाक़ बनाया था, या उनसे निगाहें चूक गई हैं?"

64. निस्संदेह आग में पड़नेवालों का यह आपस का झगड़ा तो अवश्य होना है।

هَذَا ذِكْرُهُ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ ۖ جَنَّاتٍ  
عُذْبٍ مُّفْتَحَةٍ لَهُمْ فِيهَا الْأَبْوَابُ ۖ مُتَجِدِّينَ فِيهَا يُدْعَوْنَ  
فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ۖ وَعِنْدَهُمْ قُصِرَتُ  
الْأَعْيُنُ ۖ أَنْزَابٌ ۖ هَذَا مَا تَدْعُونَ لِيَوْمٍ هَٰذَا هِيَ  
هَذِهِ لِرِزْقِنَا مَا لَهُ مِنْ تَفَافٍ ۚ هَٰذَا وَلَٰكِن لِّلظَّالِمِينَ  
لَشَرٌّ مَّآبٍ ۖ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْيِهَادُ ۖ هَٰذَا  
فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ۖ وَأَخْرَجْنَا مِنْ شَجَلِهِ أَرْوَاجَهُ ۖ  
هَٰذَا قَوْمٌ مُّفْتَحَتِ مَعَكُمْ ۖ لَا مَرْجِعَ لَهُمْ ۖ إِنَّهُمْ صَالُوا  
النَّارَ ۖ قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ لَا مَرْجِعَ لَكُمْ ۖ أَنْتُمْ قَدْ خَلَوْتُمْ  
لَنَا ۖ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ۖ قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا  
فَرِزْدَهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ۖ وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَهُ  
بِعِلَّا لَنَا نَعَذِّبُهُمْ مِنَ الْأَشْرَارِ ۖ اتَّخَذْتُمْ بِحُفْرَتِنَا  
أَمْزَاجَتِ عَنْهُمْ الْأَبْصَارُ ۖ إِنَّ ذَلِكَ لَعَنُ تَخَالُفُهُمْ

منطق



65. कह दो : "मैं तो बस एक सचेत करनेवाला हूँ। कोई पूज्य-प्रभु नहीं सिवाय अल्लाह के, जो अकेला है, सबपर क़ाबू रखनेवाला;

66. आकाशों और धरती का रब है, और जो कुछ इन दोनों के बीच है उसका भी, अत्यन्त प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील।"

67-68. कह दो : "वह एक बड़ी खबर है, जिसे तुम ध्यान में नहीं ला रहे हो।

69. मुझे 'मलए आला' (ऊपरी लोक के फ़रिश्तों) का कोई ज्ञान नहीं था, जब वे वाद-विवाद कर रहे थे।

70. मेरी ओर तो बस इसलिए प्रकाशना की जाती है कि मैं खुल्लम-खुल्ला सचेत करनेवाला हूँ।"

71. याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि "मैं मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करनेवाला हूँ।

72. तो जब मैं उसको ठीक-ठाक कर दूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ, तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना।"

73-74. तो सभी फ़रिश्तों ने सजदा किया, सिवाय इबलीस के। उसने घमंड किया और इनकार करनेवालों में से हो गया।

75. कहा : "ऐ इबलीस ! तुझे किस चीज़ ने उसको सजदा करने से रोका जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया ? क्या तूने घमण्ड किया, या तू कोई ऊँची हस्ती है ?"

76. उसने कहा : "मैं उससे उत्तम हूँ। तूने मुझे आग से पैदा किया और उसे मिट्टी से पैदा किया।"

77. कहा : "अच्छा, निकल जा यहाँ से, क्योंकि तू धुत्कारा हुआ है।

78. और निश्चय ही बदला दिए जाने के दिन तक तुझपर मेरी लानत है।"

أَهْلَ النَّارِ قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا  
اللهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا  
بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ قُلْ هُوَ بَوَّابُ عَظِيمٍ ۝ أَنْتُمْ  
عَنْهُ مُعْرِضُونَ ۝ مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَكِ الْأَعْلَى  
لَاذِ يَخْتَصِمُونَ ۝ إِنْ يُؤْمِنُ إِلَى إِلَّا أَنَا أَنَا نَذِيرٌ  
مُبِينٌ ۝ إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ  
طِينٍ ۝ وَإِذَا اسْتَوَيْتُهُ وَنَعَضْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَعَمُوا  
لَهُ لُحُودِينَ ۝ فَجَعَلَ الْمَلَكَةُ كُلُّهُمْ أَسْمُونَ ۝ إِلَّا  
إِبْلِسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ قَالَ يَا إِبْلِيسُ  
مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِإِيْدِي ۝ اسْكُنْ مِنْ  
أَمْكَانٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ۝ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ خَلَقَنِي مِنْ  
نَارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ۝ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَإِنَّكَ  
رَجِيمٌ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ۝



79. उसने कहा : “ऐ मेरे रब ! फिर तू मुझे उस दिन तक के लिए मुहलत दे, जबकि लोग (जीवित करके) उठाए जाएँगे।”

80-81. कहा : “अच्छा, तुझे ज्ञात एवं निश्चित समय तक मुहलत है।”

82-83. उसने कहा : “तेरे प्रताप की सौगन्ध ! मैं अवश्य उन सबको बहकाकर रहूँगा, सिवाय उनमें से तेरे उन बन्दों के, जो चुने हुए हैं।”

84-85. कहा : “तो यह सत्य है और मैं सत्य ही कहता हूँ कि मैं जहन्नम को तुझसे और उन सबसे भर दूँगा, जिन्होंने उनमें से तेरा अनुसरण किया होगा।”

86. कह दो : “मैं इसपर तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता और न मैं बनावट करनेवालों में से हूँ।”

87. वह तो एक अनुस्मृति है सारे संसारवालों के लिए।

88. और थोड़ी ही अवधि के पश्चात् उसकी दी हुई खबर तुम्हें मालूम हो जाएगी।



### 39. अज़-ज़ुमर

(यक्का में उतरी—आयतें 75)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. इस किताब का अवतरण अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी की ओर से है।

2. निस्संदेह हमने यह किताब तुम्हारी ओर सत्य के साथ अवतरित की है। अतः तुम अल्लाह ही की बन्दगी करो, धर्म को उसी के लिए विशुद्ध करते हुए।

3. जान रखो कि विशुद्ध धर्म अल्लाह ही के लिए है। रहे वे लोग जिन्होंने



उससे हटकर दूसरे समर्थक और संरक्षक बना रखे हैं (कहते हैं :) "हम तो उनकी बन्दगी इसी लिए करते हैं कि वे हमें अल्लाह का सामीप्य प्राप्त करा दें।" निश्चय ही अल्लाह उनके बीच उस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे विभेद कर रहे हैं। अल्लाह उसे मार्ग नहीं दिखाता जो झूठा और बड़ा अकृतज्ञ हो।

4. यदि अल्लाह अपनी कोई संतान बनाना चाहता तो वह उनमें से, जिन्हें वह पैदा कर रहा है, चुन लेता। महान और उच्च है वह! वह अल्लाह है अकेला, सब पर क़ाबू रखनेवाला।

5. उसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया। रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है। और उसने सूर्य और चन्द्रमा को वशीभूत कर रखा है। प्रत्येक एक नियत समय को पूरा करने के लिए चल रहा है। जान रखो, वही प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।

6. उसने तुम्हें अकेली जान पैदा किया; फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया और तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ नर-मादा उतारे। वह तुम्हारी माँओं के पेटों में तीन अँधेरों के भीतर तुम्हें एक सृजनरूप के पश्चात अन्य एक सृजनरूप देता चला जाता है। वही अल्लाह तुम्हारा रब है। बादशाही उसी की है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो?

7. यदि तुम इनकार करोगे तो अल्लाह तुमसे निस्पृह है। यद्यपि वह अपने बन्दों के लिए इनकार को पसन्द नहीं करता, किन्तु यदि तुम कृतज्ञता दिखाओगे,

الزّٰ

مَنَافِئِ

رَلُّوْا اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ؕ  
 اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفّٰرٌ ۝۱  
 اللّٰهُ اَنْ يَّشَآءْ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الصّٰدِقُ الْمُنِىْ ۝۲  
 سُبْحٰنَهُ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝۳ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ  
 وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۝۴ يَكُوْنُ اَتَمُّ عَلَى النَّهَارِ ۝۵ وَيَكُوْنُ  
 النَّهَارُ عَلَى الْاَيْلِ وَسَحَرُ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ ۝۶ كُلُّ  
 يَوْمٍ لِّاَجَلٍ مُّسَمًّى ۝۷ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝۸ خَلَقَكُمْ  
 مِنْ نَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ  
 لَكُمْ مِنْ اَلَنْعَامِ ثَمِيْنَةً ۝۹ اَزْوَاجًا ۝۱۰ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنٍ  
 اُمَهْتِكُمْ خَلْقًا مِّنْ بَعْدٍ خَلَقَ فِيْ ظُلُمٍ ثَلٰثًا ۝۱۱  
 ذٰلِكُمْ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۝۱۲ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۝۱۳ فَاَنَّى  
 تُصْرَفُوْنَ ۝۱۴ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَنِّيْ عَنكُمْ ۝۱۵  
 وَلَا يَرْضٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۝۱۶ اِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ۝۱۷

سَبَّ



तो उसे वह तुम्हारे लिए पसन्द करता है। कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। फिर तुम्हारी वापसी अपने रब ही की ओर है। और वह तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे होगे। निश्चय ही वह सीनों तक की बातें जानता है।

8. जब मनुष्य को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह अपने रब को उसी की ओर रुजू होकर पुकारने लगता है, फिर जब वह उसपर अपनी अनुकम्पा करता है, तो वह उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए पहले पुकार रहा था और (दूसरों को) अल्लाह के समकक्ष ठहराने लगता है, ताकि इसके परिणामस्वरूप वह उसकी राह से भटका दे। कह दो : “अपने इनकार का थोड़ा मज़ा ले लो। निस्संदेह तुम आगवालों में से हो।”

9. (क्या उक्त व्यक्ति अच्छा है) या वह व्यक्ति जो रात की घड़ियों में सजदा करता और खड़ा रहता है, आखिरत से डरता और अपने रब की दयालुता की आशा रखता हुआ विनयशीलता के साथ बन्दगी में लगा रहता है? कहो : “क्या वे लोग जो जानते हैं और वे लोग जो नहीं जानते दोनों समान होंगे? शिक्षा तो बुद्धि और समझवाले ही ग्रहण करते हैं।”

10. कह दो कि “ऐ मेरे बन्दो, जो ईमान लाए हो! अपने रब का डर रखो। जिन लोगों ने अच्छा कर दिखाया उनके लिए इस संसार में अच्छाई है, और अल्लाह की धरती विस्तृत है। जमे रहनेवालों को तो उनका बदला बेहिसाब मिलकर रहेगा।”

الزّمر

وَمَالِهِ

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم  
مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ  
بِدَاتِ الصُّدُورِ ۝ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ  
دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ  
نَبِيٍّ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ مِن قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ  
أُنْدَادًا لِّیُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ  
قَلِيلًا ۚ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۚ أَفَمَنْ هُوَ قَاتِلٌ  
أَنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُوا  
رَحْمَةَ رَبِّهِ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِی الذِّینَ یَعْلَمُونَ  
وَالَّذِینَ لَا یَعْلَمُونَ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰئِذَا بَآءَ ۚ  
قُلْ یَعْبَادِ الذِّینَ آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّکُمْ ۚ لِلَّذِینَ  
أَحْسَنُوا فِی هَذِهِ الدُّنْیَا حَسَنَةٌ ۚ وَآَرْضُ اللَّهِ  
وَاسِعَةٌ ۚ إِنَّمَا یُوَفَّى الصَّادِقُونَ أَجْرَهُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ ۝

مَذَل



11. कह दो : “मुझे तो आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की बन्दगी करूँ, धर्म (भक्तिभाव एवं निष्ठा) को उसी के लिए विशुद्ध करते हुए।

12. और मुझे आदेश दिया गया है कि सबसे बढ़कर मैं स्वयं आज्ञाकारी बनूँ।”

13. कहो : “यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ तो मुझे एक बड़े दिन की यातना का भय है।”

14. कहो : “मैं तो अल्लाह ही की बन्दगी करता हूँ, अपने धर्म को उसी के लिए विशुद्ध करते हुए।

الْأَمْرُ

قَمَالٌ

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ  
الدِّينَ ۖ وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ۚ  
قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّيَ عَذَابَ يَوْمٍ  
عَظِيمٍ ۚ قُلْ اللَّهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ۚ  
فَأَعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ ۚ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ  
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ  
أَلَا ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۚ لَهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ  
ظُلُكٌ مِنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ تَلْكُلُ ذَلِكَ يَخْوِفُ  
اللَّهُ بِهِ عِبَادَهُ يَعْبادُ قَاتِفُونَ ۚ وَالَّذِينَ  
اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى  
اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۚ الَّذِينَ  
يَسْمَعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ  
الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۚ

مَدَن

15. अब तुम उससे हटकर जिसकी चाहो बन्दगी करो।” कह दो : “वास्तव में घाटे में पड़नेवाले तो वही हैं, जिन्होंने अपने आपको और अपने लोगों को क्रियामत के दिन घाटे में डाल दिया। जान रखो, यही खुला घाटा है।

16. उनके लिए उनके ऊपर से भी आग की छतरियाँ होंगी और उनके नीचे से भी छतरियाँ होंगी। यही वह चीज़ है, जिससे अल्लाह अपने बन्दों को डराता है : “ऐ मेरे बन्दो ! अतः तुम मेरा डर रखो।”

17-18. रहे वे लोग जो इससे बचे कि वे तागूत (बढ़े हुए फ़सादी) की बन्दगी करते और अल्लाह की ओर रुजू हुए, उनके लिए शुभ सूचना है। अतः मेरे उन बन्दों को शुभ सूचना दे दो जो बात को ध्यान से सुनते हैं; फिर उस अच्छी से अच्छी बात का अनुपालन करते हैं। वही हैं, जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया है और वही बुद्धि और समझवाले हैं।



19. तो क्या वह व्यक्ति जिसपर यातना की बात सत्यापित हो चुकी है (यातना से बच सकता है)? तो क्या तुम छुड़ा लोगे उसको जो आग में है?

20. अलबत्ता जो लोग अपने रब से डरकर रहे उनके लिए ऊपरी मंज़िल पर कक्ष होंगे, जिनके ऊपर भी निर्मित कक्ष होंगे। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी। यह अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे का उल्लंघन नहीं करता।

21. क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से पानी उतारा, फिर धरती में उसके स्रोत प्रवाहित कर दिए; फिर उसके द्वारा खेती निकालता है, जिसके विभिन्न रंग होते हैं; फिर वह सूखने लगती है; फिर तुम देखते हो कि वह पीली पड़ गई; फिर वह उसे चूर्ण-विचूर्ण कर देता है? निस्संदेह इसमें बुद्धि और समझवालों के लिए बड़ी याददिहानी है।

22. अब क्या वह व्यक्ति जिसका सीना (हृदय) अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया, अतः वह अपने रब की ओर से प्रकाश पर है, (उस व्यक्ति के समान होगा जो कठोर हृदय और अल्लाह की याद से गाफ़िल है)? अतः तबाही है उन लोगों के लिए जिनके दिल कठोर हो चुके हैं, अल्लाह की याद से खाली होकर! वही खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

23. अल्लाह ने सर्वोत्तम वाणी अवतरित की, एक ऐसी किताब जिसके सभी भाग परस्पर मिलते-जुलते हैं, जो रुख फेर देनेवाली (क्रांतिकारी) है। उससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, जो अपने रब से डरते हैं। फिर उनकी खालें (शरीर) और उनके दिल नर्म होकर अल्लाह की याद की ओर झुक जाते हैं। वह अल्लाह का मार्गदर्शन है, उसके द्वारा वह सीधे मार्ग पर ले आता है, जिसे

الزُّمَرِ

مَعَالِي

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ  
مَنْ فِي النَّارِ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ  
مِنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَبْنِيَةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ  
وَعَدَ اللَّهُ لَا يَخْلِفُ اللَّهُ الْمِيعَادَ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ  
أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ  
يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيمُ ثَبَرَهُ  
مُضْغَةً ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرًا لِأُولِي  
الْأَلْبَابِ ۝ أَفَمَنْ شَرَعَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ  
فَهُوَ عَلَى ثَوَرٍ مِنْ رَبِّهِ قَوْلِيلٌ لِلْفَيِّسَةِ قُلُوبُهُمْ  
مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ أُولَئِكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ اللَّهُ  
نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُتَشَابِهًا مَثَابًا تَتَشَوَّعُ  
مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ  
وَقُلُوبُهُمْ إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ ذَلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ

مَعَالِي



चाहता है। और जिसको अल्लाह पथभ्रष्ट रहने दे, फिर उसके लिए कोई मार्गदर्शक नहीं।

24. अब क्या जो क्रियामत के दिन अपने चेहरे को बुरी यातना (से बचने) की ढाल बनाएगा वह (यातना से सुरक्षित लोगों जैसा होगा)? और ज़ालिमों से कहा जाएगा : “चखो मज़ा उस कमाई का, जो तुम करते रहे थे !”

25. जो लोग उनसे पहले थे उन्होंने भी झुठलाया। अन्ततः उनपर वहाँ से यातना आ पहुँची, जिसका उन्हें कोई पता न था।

26. फिर अल्लाह ने उन्हें सांसारिक जीवन में भी रुसवाई का मज़ा चखाया और आखिरत की यातना तो इससे भी बड़ी है। काश ! वे जानते।

27. हमने इस कुरआन में लोगों के लिए हर प्रकार की मिसालें पेश कर दी हैं, ताकि वे शिक्षा ग्रहण करें।

28. एक अरबी कुरआन के रूप में, जिसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि वे धर्मपरायणता अपनाएँ।

29. अल्लाह एक मिसाल पेश करता है कि एक व्यक्ति है, जिसके मालिक होने में कई व्यक्ति साझी हैं, आपस में खींचातानी करनेवाले, और एक व्यक्ति वह है जो पूरा का पूरा एक ही व्यक्ति का है। क्या दोनों का हाल एक जैसा होगा ? सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, किन्तु उनमें से अधिकांश लोग नहीं जानते।

30. तुम्हें भी मरना है और उन्हें भी मरना है।

31. फिर निश्चय ही तुम सब क्रियामत के दिन अपने रब के समक्ष झगड़ोगे।

وَمَنْ يَشَاءِ ۖ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۖ  
أَفَمَنْ يَتَّبِعِ يُوَفِّهِمْ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ  
وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۚ كَذَّبَ  
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا  
يَشْعُرُونَ ۚ فَإِذَا أَقَامَ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَوةِ الدُّنْيَا  
وَالْعَذَابِ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۚ وَلَقَدْ  
صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ  
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۚ قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي  
عِوَجٍ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۚ صَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلًا  
فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَكِّكُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِرَجُلٍ ۚ  
هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ  
لَا يَعْلَمُونَ ۚ إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ ۚ ثُمَّ  
إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَحْتَفِظُونَ ۚ



32. फिर उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा, जिसने झूठ घड़कर अल्लाह पर थोपा और सत्य को झुठला दिया जब वह उसके पास आया। क्या जहन्नम में इनकार करनेवालों का ठिकाना नहीं है ?

33. और जो व्यक्ति सच्चाई लेकर आया और उसने उसकी पुष्टि की, ऐसे ही लोग डर रखते हैं।

34. उनके लिए उनके रब के पास वह सब कुछ है, जो वे चाहेंगे। यह है उत्तमकारों का बदला।

35. ताकि जो निकृष्टतम कर्म उन्होंने किए अल्लाह उन (के बुरे प्रभाव) को उनसे दूर कर दे। और जो उत्तम कर्म वे करते रहे उसका उन्हें बदला प्रदान करे।

36. क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं है, यद्यपि वे तुम्हें उनसे डराते हैं, जो उसके सिवा (उन्होंने अपने सहायक बना रखे) हैं ? अल्लाह जिसे गुमराही में डाल दे उसे मार्ग दिखानेवाला कोई नहीं।

37. और जिसे अल्लाह मार्ग दिखाए उसे गुमराह करनेवाला भी कोई नहीं। क्या अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेनेवाला नहीं है ?

38. यदि तुम उनसे पूछो कि "आकाशों और धरती को किसने पैदा किया ?" तो वे अवश्य कहेंगे : "अल्लाह ने।" कहो : "तुम्हारा क्या विचार है ? यदि अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचानी चाहे तो क्या अल्लाह से हटकर जिनको तुम पुकारते हो वे उसकी पहुँचाई हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं ? या वह मुझपर कोई दयालुता दर्शानी चाहे तो क्या वे उसकी दयालुता को रोक सकते हैं ?" कह दो : "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है। भरोसा करनेवाले उसी पर भरोसा करते हैं।"

39-40. कह दो : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! तुम अपनी जगह काम करो। मैं

अज़-ज़ुमर

मन् अज़-ज़ुमर

لَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَبَ بِالْحَقِّ إِذْ  
جَاءَهُ الْبَيِّنَاتُ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۝ وَالَّذِي  
جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ بِهِ ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝  
لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ ۖ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاُ الْمُحْسِنِينَ ۖ  
رِيبُكُفَّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ ۖ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيهِمْ أَجْرَهُمْ  
بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ  
وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ  
مِنْ هَادٍ ۚ وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّضِلٍّ ۚ أَلَيْسَ  
اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۝ وَلَٰكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ  
مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ  
ضُرِّيهِ ۖ أَوْ أَرَادَنِيَ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ  
قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ قُلْ يَقُومُ

مَلَكٌ



भी (अपनी जगह) काम करता हूँ। तो शीघ्र ही तुम जान लोगे कि किसपर वह यातना आती है जो उसे रुसवा कर देगी और किसपर अटल यातना उतरती है।”

41. निश्चय ही हमने लोगों के लिए हक के साथ तुमपर किताब अवतरित की है। अतः जिसने सीधा मार्ग ग्रहण किया तो अपने ही लिए, और जो भटका, तो वह भटककर अपने ही को हानि पहुँचाता है। तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं हो।

42. अल्लाह ही प्राणों को उनकी मृत्यु के समय ग्रस्त कर लेता है और जिसकी मृत्यु नहीं आई उसे

उसकी निद्रा की अवस्था में (ग्रस्त कर लेता है)। फिर जिसकी मृत्यु का फ़ैसला कर दिया है उसे रोक रखता है। और दूसरों को एक नियत समय तक के लिए छोड़ देता है। निश्चय ही इसमें कितनी ही निशानियाँ हैं सोच-विचार करनेवालों के लिए।

43. (क्या उनके उपास्य प्रभुता में साझीदार हैं) या उन्होंने अल्लाह से हटकर दूसरों को सिफ़ारिशी बना रखा है? कहो : “क्या यद्यपि वे किसी चीज़ का अधिकार न रखते हों और न कुछ समझते ही हों तब भी?”

44. कहो : “सिफ़ारिश तो सारी की सारी अल्लाह के अधिकार में है। आकाशों और धरती की बादशाही उसी की है। फिर उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।”

45. जब अकेले अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल भिंचने लगते हैं, किन्तु जब उसके सिवा दूसरों का ज़िक्र होता है तो क्या देखते हैं कि वे खुशी से खिले जा रहे हैं।

46. कहो : “ऐ अल्लाह, आकाशों और धरती के पैदा करनेवाले; परोक्ष





और प्रत्यक्ष के जाननेवाले ! तू ही अपने बन्दों के बीच उस चीज़ का फ़ैसला करेगा, जिसमें वे विभेद कर रहे हैं ।”

47. जिन लोगों ने ज़ुल्म किया यदि उनके पास वह सब कुछ हो जो धरती में है और उसके साथ उतना ही और भी, तो वे क़ियामत के दिन बुरी यातना से बचने के लिए वह सब फ़िदया (प्राण-मुक्ति के बदले) में दे डालें । बात यह है कि अल्लाह की ओर से उनके सामने वह कुछ आ जाएगा जिसका वे गुमान तक न करते थे ।

48. और जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयाँ उनपर प्रकट हो जाएँगी । और वही चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसकी वे हँसी उड़ाया करते थे ।

49. अतः जब मनुष्य को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारने लगता है, फिर जब हमारी ओर से उसपर कोई अनुकम्पा होती है तो कहता है : “यह तो मुझे ज्ञान के कारण प्राप्त हुआ है ।” नहीं, बल्कि यह तो एक परीक्षा है, किन्तु उनमें से अधिकतर जानते नहीं ।

50. यही बात वे लोग भी कह चुके हैं, जो उनसे पहले गुज़रे हैं । किन्तु जो कुछ कमाई वे करते थे, वह उनके कुछ काम न आई ।

51. फिर जो कुछ उन्होंने कमाया, उसकी बुराइयाँ उनपर आ पड़ीं और इनमें से भी जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, उनपर भी जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयाँ जल्द ही आ पड़ेंगी । और वे क़ाबू से बाहर निकलनेवाले नहीं ।

52. क्या उन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है ? निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो ईमान लाएँ ।

وَالْأَرْضِ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۚ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَا فِتْنَةً لَهُ مِنَ سَيِّئِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ۚ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۚ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا ۖ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۖ قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَكِنَ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۚ قَدْ قَالُوا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَؤُلَاءِ سَيُجْزِيهِمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ۚ أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْطِشُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَعْدِي ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

مَذَن



53. कह दो : “ऐ मेरे बन्दो, जिन्होंने अपने आपपर ज्यादाती की है, अल्लाह की दयालुता से निराश न हो। निस्संदेह अल्लाह सारे ही गुनाहों को क्षमा कर देता है। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

54. रुजू हो अपने रब की ओर और उसके आज्ञाकारी बन जाओ, इससे पहले कि तुमपर यातना आ जाए। फिर तुम्हारी सहायता न की जाएगी।

55. और अनुसरण करो उस सर्वोत्तम चीज़ का जो तुम्हारे रब की ओर से अवतरित हुई है, इससे पहले कि तुमपर अचानक यातना आ जाए और तुम्हें पता भी न हो।”

56. कहीं ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति कहने लगे : “हाय, अफ़सोस उसपर ! जो कोताही अल्लाह के हक्क में मैंने की। और मैं तो परिहास करनेवालों में ही सम्मिलित रहा।”

57. या, कहने लगे कि “यदि अल्लाह मुझे मार्ग दिखाता तो अवश्य ही मैं डर रखनेवालों में से होता।”

58. या, जब वह यातना देखे तो कहने लगे : “काश ! मुझे एक बार फिर लौटकर जाना हो, तो मैं उत्तमकारों में सम्मिलित हो जाऊँ।”

59. “क्यों नहीं, मेरी आयतें तेरे पास आ चुकी थीं, किन्तु तूने उनको झुठलाया और घमण्ड किया और इनकार करनेवालों में सम्मिलित रहा।

60. और क्रियामत के दिन तुम उन लोगों को देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ घड़कर थोपा है कि उनके चेहरे स्याह हैं। क्या अहंकारियों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है ?”

61. इसके विपरीत अल्लाह उन लोगों को जिन्होंने डर रखा उन्हें उनकी

قُلْ يٰٓعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذَّنۜوۡبَ جَمِيْعًا ۚ وَارۜنَاہُ هُوَ الْعَفُوۡرُ الرَّحِيْمُ ۚ وَاٰیٰتِنَاۤ اِلٰی رَبِّکُمْ وَاَسۜلُوۡا لَہٗ مِنْ قَبْلِۢ اَنْ یَّآتِیَکُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنۜصَرُوۡنَ ۚ وَاَتَّبِعُوۡا اَحۜسَنَ مَاۤ اُنۜزِلَ اِلَیۡکُمْ ۚ مِنْ رَبِّکُمْ ۚ مِنْ قَبْلِۢ اَنْ یَّآتِیَکُمُ الْعَذَابُ بِغَتۜةٍ وَّاَنْتُمْ لَا تَشۜعُرُوۡنَ ۚ اَنْ تَقُوۡلَ نَفۜسُ یٰۤحَسۜرۜتِ عَلٰۤى مَا فَرَطۜتُ فِیۡ جَنۜبِ اللّٰهِ وَلَٰن کُنۜتُ مِنَ السَّٰخِرِیۡنَ ۙ اَوْ تَقُوۡلَ لَوۡ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰۤیۡنِیۡ لَکُنۜتُ مِنَ السَّٰقِیۡنَ ۙ اَوْ تَقُوۡلَ جِئۜنِیۡ تَرۜى الْعَذَابَ لَوۡ اَنَّ لِیۡ کَرۜمًا فَاَکُوۡنُ مِنَ الْمُخۜسِرِیۡنَ ۙ بَلٰۤی قَدْ جَآءَ تَکۜ اٰیٰتِیۡ فَلَکَذٰۤلِیۡتَ بِہَا وَاَسۜتَکۜبَرۜتَ وَکُنۜتَ مِنَ الْکٰفِرِیۡنَ ۙ وَیَوۜمَ الۡقِیٰمَةِ تَرۜى الَّذِیۡنَ کَذَبُوۡۤا عَلٰۤى اللّٰهِ وَجُوۡهُہُمۡ مُّسۜوۡدَۃٌ ۙ اَلِیۡسَ فِیۡ جَہَنَّمَ مَثۜوٰی لِّلۡمُتَکۜذِبِیۡنَ ۙ وَیُنۜجِی اللّٰهُ الَّذِیۡنَ



अपनी सफलता के साथ मुक्ति प्रदान करेगा। न तो उन्हें कोई अनिष्ट छू सकेगा और न वे शोकाकुल होंगे।

62. अल्लाह हर चीज़ का स्रष्टा है और वही हर चीज़ का ज़िम्मा लेता है।

63. उसी के पास आकाशों और धरती की कुँजियाँ हैं। और जिन लोगों ने हमारी आयतों का इनकार किया, वही हैं जो घाटे में हैं।

64. कहो : “क्या फिर भी तुम मुझसे कहते हो कि मैं अल्लाह के सिवा किसी और की बन्दगी करूँ, ऐ अज्ञानियो ?”

الْقَوَاعِدُ لَا يَسْتَنْمُ السُّودَ وَلَا هُمْ يَخْرُجُونَ ۝ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝ لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ قُلْ أَغْفِرُ اللَّهُ تَأْمُرُونِي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ ۝ وَلَقَدْ أَوْحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ ۖ لَئِنْ أَشْرَكَكَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ بَلِ اللَّهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۖ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ وَ السَّمَوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ ۖ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۖ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَوَّقَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۖ الْأَمِنْ شَاءَ اللَّهُ ۖ ثُمَّ نَفَخَ فِيهِ أُخْرَىٰ ۖ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ۖ وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجِئَتْ بِرُوحِ النَّبِيِّينَ وَالشُّهَدَاءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ

65. तुम्हारी ओर और जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनकी ओर भी वह्य की जा चुकी है कि “यदि तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया-धरा अनिवार्यतः अकारथ जाएगा और तुम अवश्य ही घाटे में पड़नेवालों में से हो जाओगे।”

66. नहीं, बल्कि अल्लाह ही की बन्दगी करो और कृतज्ञता दिखानेवालों में से हो जाओ।

67. उन्होंने अल्लाह की क़द्र न जानी, जैसी क़द्र उसकी जाननी चाहिए थी। हालाँकि क्रियामत के दिन सारी की सारी धरती उसकी मुट्ठी में होगी और आकाश उसके दाएँ हाथ में लिपटे हुए होंगे। महान और उच्च है वह उससे, जो वे साझी ठहराते हैं।

68. और सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, तो जो कोई आकाशों और जो कोई धरती में होगा वह अचेत हो जाएगा सिवाय उसके जिसको अल्लाह चाहे। फिर उसे दोबारा फूँका जाएगा, तो क्या देखेंगे कि सहसा वे खड़े देख रहे हैं।

69. और धरती अपने रब के प्रकाश से जगमगा उठेगी, और किताब रखी जाएगी



और नबियों और गवाहों को लाया जाएगा और लोगों के बीच हक के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा, और उनपर कोई ज़ुल्म न होगा।

70. और प्रत्येक व्यक्ति को उसका किया भरपूर दिया जाएगा। और वह भली-भाँति जानता है, जो कुछ वे करते हैं।

71. जिन लोगों ने इनकार किया, वे गिरोह के गिरोह जहन्नम की ओर ले जाए जाएँगे, यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उसके द्वार खोल दिए जाएँगे और उसके प्रहरी उनसे कहेंगे : “क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते रहे हों और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की मुलाक़ात से सचेत करते रहे हों?” वे कहेंगे : “क्यों नहीं। (वे तो आए थे,)” किन्तु इनकार करनेवालों पर यातना की बात सत्यापित होकर रही।

72. कहा जाएगा : “जहन्नम के द्वारों में प्रवेश करो। उसमें सदैव रहने के लिए।” तो बहुत ही बुरा ठिकाना है अहंकारियों का !

73. और जो लोग अपने रब का डर रखते थे, वे गिरोह के गिरोह जन्नत की ओर ले जाए जाएँगे, यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे इस हाल में कि उसके द्वार खुले होंगे। और उसके प्रहरी उनसे कहेंगे : “सलाम हो तुमपर ! बहुत अच्छे रहे ! अतः इसमें प्रवेश करो सदैव रहने के लिए तो (उनकी खुशियों का क्या हाल होगा !)

74. और वे कहेंगे : “प्रशंसा अल्लाह के लिए, जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया, और हमें इस भूमि का वारिस बनाया कि हम जन्नत में जहाँ चाहें वहाँ रहें-बसें।” अतः क्या ही अच्छा प्रतिदान है कर्म करनेवालों का !—

75. और तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि वे सिंहासन के गिर्द घेरा बाँधे हुए,

بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ. وَوَقَّيْتُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ  
وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ. وَسَيِّقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى  
جَهَنَّمَ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ وَهَّاءُ فَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ  
لَهُمْ حَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ  
آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا. قَالُوا  
بَلَىٰ وَلَكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ  
قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا. فَمِنْ  
مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ. وَسَيِّقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى  
الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ وَهَّاءُ وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ  
لَهُمْ حَزَنَتُهَا سَلِّمُوا عَلَيْكُمْ فَبَدَلُوا فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ  
وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا  
الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ. فَنِعْمَ أَجْرُ  
الْعَامِلِينَ. تَوَرَّى الْمَلَائِكَةُ خَائِفِينَ مِنْ حَوْلِ  
مَرْوَى







गुणगान करते हैं और उसपर ईमान रखते हैं और उन लोगों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं जो ईमान लाए, कि : “ऐ हमारे रब ! तू अपनी दयालुता और अपने ज्ञान से हर चीज़ को व्याप्त है । अतः जिन लोगों ने तौबा की और तेरे मार्ग का अनुसरण किया, उन्हें क्षमा कर दे और भड़कती हुई आग की यातना से उन्हें बचा ले ।

8. ऐ हमारे रब ! और उन्हें सदैव रहने के बागों में दाखिल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है और उनके बाप-दादा और उनकी पत्नियों और उनकी संततियों में से

الْعَرْشِ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ  
بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ  
رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ  
وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ  
الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَ  
ذُرِّيَّتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ  
وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ وَذَلِكَ هُوَ  
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُتْلَا ذُنُوبُهُمْ لَسَاقِطَةٌ  
أَكْبَرُ مِنْ مَقْتَبِكُمْ أَنْفُكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ  
فَتُكْفَرُونَ قَالُوا رَبَّنَا أَتَيْنَا ااثْنَيْنِ وَأَخْبَيْنَا  
ااثْنَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى خُرُوجٍ مِنْ  
سَبِيلٍ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ وَلَنْ  
يُشْرَكَ بِهِ تَوْمِنُوا فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ هُوَ

जो योग्य हुए उन्हें भी । निस्संदेह तू प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है ।

9. और उन्हें अनिष्टों से बचा । जिसे उस दिन तूने अनिष्टों से बचा लिया, तो निश्चय ही उसपर तूने दया की । और वही बड़ी सफलता है ।”

10. निश्चय ही जिन लोगों ने इनकार किया उन्हें पुकारकर कहा जाएगा कि “अपने आपसे जो तुम्हें विद्वेष एवं क्रोध है, तुम्हारे प्रति अल्लाह का क्रोध एवं द्वेष उससे कहीं बढ़कर है कि जब तुम्हें ईमान की ओर बुलाया जाता था तो तुम इनकार करते थे ।”

11. वे कहेंगे : “ऐ हमारे रब ! तूने हमें दो बार मृत रखा और दो बार जीवन प्रदान किया । अब हमने अपने गुनाहों को स्वीकार किया, तो क्या अब (यहाँ से) निकलने का भी कोई मार्ग है ?”

12. वह (बुरा परिणाम) तो इसलिए सामने आएगा कि जब अकेला अल्लाह को पुकारा जाता है तो तुम इनकार करते हो । किन्तु यदि उसके साथ साझी ठहराया जाए तो तुम मान लेते हो । तो अब फ़ैसला तो अल्लाह ही के हाथ में है, जो सर्वोच्च बड़ा महान है ।—



13. वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे लिए आकाश से रोज़ी उतारता है, किन्तु याददिहानी तो बस वही हासिल करता है जो (उसकी ओर) रुजू करे।

14. अतः तुम अल्लाह ही को, धर्म को उसी के लिए विशुद्ध करते हुए, पुकारो, यद्यपि इनकार करने-वालों को अप्रिय ही लगे।—

15. वह ऊँचे दर्जोंवाला, सिंहासनवाला है, अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है, अपने हुक्म से रूह उतारता है, ताकि वह मुलाक़ात के दिन से सावधान कर दे।

16. जिस दिन वे खुले रूप में सामने उपस्थित होंगे, उनकी कोई चीज़ अल्लाह से छिपी न रहेगी, "आज किसकी बादशाही है?" "अल्लाह की, जो अकेला सबपर क़ाबू रखनेवाला है।"

17. आज प्रत्येक व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला दिया जाएगा। आज कोई ज़ुल्म न होगा। निश्चय ही अल्लाह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है।

18. (उन्हें अल्लाह की ओर बुलाओ) और उन्हें निकट आ जानेवाले (क्रियामत के) दिन से सावधान कर दो, जबकि उर (हृदय) कंठ को आ लगे होंगे और वे दबा रहे होंगे। ज़ालिमों का न कोई घनिष्ट मित्र होगा और न ऐसा सिफ़ारिशी जिसकी बात मानी जाए।

19. वह निगाहों की चोरी तक को जानता है और उसे भी जो सीने छिपा रहे होते हैं।

20. अल्लाह ठीक-ठीक फ़ैसला कर देगा। रहे वे जिन्हें वे अल्लाह को छोड़कर पुकारते हैं, वे किसी चीज़ का भी फ़ैसला करनेवाले नहीं। निस्संदेह अल्लाह ही है जो सुनता, देखता है।

النّٰصِحِينَ

فَرِحَ الظّٰلِمِينَ

الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّل لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَرْفَاقًا  
وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُنِيبُ ۖ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ  
لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۖ ذَرِيعُ الدَّرَجَاتِ  
ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ  
عِبَادِهِ لِيُنْزِلَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۚ يَوْمَ هُمْ بَبْرُورُونَ ۚ  
كَأَيُّخَفَى عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ  
يَشَاءُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۚ الْيَوْمَ تُجْزَى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا  
كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۖ  
وَأَنذَرَهُمْ يَوْمَ الْأَرْزَاقِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ  
كَظِيمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ  
يُطَاعُ ۖ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ  
وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۚ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ  
لَا يَقْضُونَ شَيْئًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۚ

سَبَّحَ



21. क्या वे धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ, जो उनसे पहले गुजर चुके हैं? वे शक्ति और धरती में अपने चिह्नों की दृष्टि से उनसे कहीं बढ़-चढ़कर थे, फिर उनके गुनाहों के कारण अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। और अल्लाह से उन्हें बचानेवाला कोई न हुआ।

22. वह (बुरा परिणाम) तो इसलिए सामने आया कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आते रहे, किन्तु उन्होंने इनकार किया। अन्ततः अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। निश्चय ही वह बड़ी शक्तिवाला, सज़ा देने में अत्यधिक कठोर है।

23-24. और हमने मूसा को भी अपनी निशानियों और स्पष्ट प्रमाण के साथ फिरऔन और हामान और क़ारून की ओर भेजा था, किन्तु उन्होंने कहा : "यह तो जादूगर है, बड़ा झूठा !"

25. फिर जब वह उनके सामने हमारे पास से सत्य लेकर आया तो उन्होंने कहा : "जो लोग ईमान लाकर उसके साथ हैं, उनके बेटों को मार डालो और उनकी स्त्रियों को जीवित छोड़ दो।" किन्तु इनकार करनेवालों की चाल तो भटकने ही के लिए होती है।

26. फिरऔन ने कहा : "मुझे छोड़ो, मैं मूसा को मार डालूँ और उसे चाहिए कि वह अपने रब को (अपनी सहायता के लिए) पुकारे। मुझे डर है कि ऐसा न हो कि वह तुम्हारे धर्म को बदल डाले या यह कि वह देश में बिगाड़ पैदा करे।"

27. मूसा ने कहा : "मैंने हर अहंकारी के मुक़ाबले में, जो हिसाब के दिन पर

النّاس

قَتَلُوا

أَوَّلَهُمْ يَبْزُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ  
الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَ  
أَثَرًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ  
لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ  
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَاغْتَرَبُوا فَاتَّخَذَهُمُ اللَّهُ ۖ إِنَّهُ قَوِيٌّ  
شَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَ  
سُلْطَانٍ مُّبِينٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا  
سِحْرٌ كَذَّابٌ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمُ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا  
اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ  
وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۖ وَقَالَ فِرْعَوْنُ  
دَرُؤِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۚ إِنِّي أَخَافُ أَنْ  
يَبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ۖ  
وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ

مَعْل



ईमान नहीं रखता, अपने रब और तुम्हारे रब की शरण ले ली है।”

28. फिरऔन के लोगों में से एक ईमानवाले व्यक्ति ने, जो अपने ईमान को छिपा रहा था, कहा : “क्या तुम एक ऐसे व्यक्ति को इसलिए मार डालोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुले प्रमाण भी लेकर आया है ? यदि वह झूठा है तो उसके झूठ का वबाल उसी पर पड़ेगा। किन्तु यदि वह सच्चा है तो जिस चीज़ की वह तुम्हें धमकी दे रहा है, उसमें से कुछ न कुछ तो तुमपर पड़कर रहेगा। निश्चय ही अल्लाह उसको मार्ग नहीं दिखाता जो मर्यादाहीन, बड़ा झूठा हो।

29. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! आज तुम्हारी बादशाही है। धरती में प्रभावी हो। किन्तु अल्लाह की यातना के मुक़ाबले में कौन हमारी सहायता करेगा, यदि वह हमपर आ जाए ?” फिरऔन ने कहा : “मैं तो तुम्हें बस वही दिखा रहा हूँ जो मैं स्वयं देख रहा हूँ और मैं तुम्हें बस ठीक रास्ता दिखा रहा हूँ, जो बुद्धिसंगत भी है।”

30-31. उस व्यक्ति ने, जो ईमान ला चुका था, कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मुझे भय है कि तुमपर (विनाश का) ऐसा दिन न आ पड़े, जैसा दूसरे विगत समुदायों पर आ पड़ा था—जैसे नूह की क़ौम और आद और समूद और उनके पश्चातवर्ती लोगों का हाल हुआ। अल्लाह तो ऐसा नहीं कि बन्दों पर कोई ज़ुल्म करना चाहे।

32. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मुझे तुम्हारे बारे में चीख-पुकार के दिन का भय है,

33. जिस दिन तुम पीठ फेरकर भागोगे, तुम्हें अल्लाह से बचानेवाला कोई

لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۚ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ  
مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ  
يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ  
وَأَنْ يَّكَ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۚ فَمَنْ يَّكَ صَادِقًا  
يُضِلُّكُمْ بَعْضُ الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنْ اللَّهُ لَا يَهْدِي مَنْ  
هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۚ يَقَوْمُ مَكِّمُ الْمَلِكِ الْيَوْمَ  
ظَهْرَيْنَ فِي الْأَرْضِ ۚ كَمَنْ يَضُرُّنَا مِنْ بَاسِ اللَّهِ  
إِنْ جَاءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا  
أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ آمَنَ يَقَوْمُ  
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ الْأَحْزَابِ ۚ وَشَلَّ دَابِ  
قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا  
اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۚ وَيَقَوْمُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ  
يَوْمَ التَّنَادِ ۚ يَوْمَ تَوَلَّوْنَ مُدْبِرِينَ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ



न होगा—और जिसे अल्लाह ही भटका दे उसे मार्ग दिखानेवाला कोई नहीं।—

34. इससे पहले तुम्हारे पास यूसुफ़ खुले प्रमाण लेकर आ चुके हैं, किन्तु जो कुछ वे लेकर तुम्हारे पास आए थे, उसके बारे में तुम बराबर संदेह में पड़े रहे, यहाँ तक कि जब उनकी मृत्यु हो गई तो तुम कहने लगे : “अल्लाह उनके पश्चात कदापि कोई रसूल न भेजेगा।” इसी प्रकार अल्लाह उसे गुमराही में डाल देता है जो मर्यादाहीन, संदेहों में पड़नेवाला हो।—

35. ऐसे लोगों को (गुमराही में डालता है) जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं, बिना इसके कि उनके पास कोई प्रमाण आया हो, अल्लाह की दृष्टि में और उन लोगों की दृष्टि में जो ईमान लाए यह (बात) अत्यन्त अप्रिय है। इसी प्रकार अल्लाह हर अहंकारी, निर्दय-अत्याचारी के दिल पर मुहर लगा देता है।—

36. फिरऔन ने कहा : “ऐ हामान ! मेरे लिए एक उच्च भवन बना, ताकि मैं साधनों तक पहुँच सकूँ,

37. आकाशों के साधनों (और क्षेत्रों) तक। फिर मूसा के पूज्य को झाँककर देखूँ। मैं तो उसे झूठा ही समझता हूँ।” इस प्रकार फिरऔन के लिए उसका दुष्कर्म सुहाना बना दिया गया और उसे मार्ग<sup>1</sup> से रोक दिया गया। फिरऔन की चाल तो बस तबाही के सिलसिले में रही।

38. उस व्यक्ति ने, जो ईमान लाया था, कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मेरा अनुसरण करो, मैं तुम्हें भलाई का ठीक रास्ता दिखाऊँगा।

مِّن مَّا جَاءَكَ مِنْ قَبْلِ هَٰذَا ۖ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۖ  
وَلَقَدْ جَاءَكَ نُوحٌ مُّسَدِّدٌ مِّن قَبْلِ الْبَيْنَةِ فَمَا نَزَلْنَاهُ  
فِي شَيْءٍ مِّمَّا جَاءَكَ كَرِيهًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلُوبُهُمْ لَنَ  
يُبْعَثَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا ۚ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ  
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ۚ ۝ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي  
آيَاتِ اللَّهِ وَيُغَيِّرُونَ سُلْطٰنَ أَنفُسِهِمْ ۚ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ  
وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا كَذٰلِكَ يَظْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبٍ  
مُّتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهُمَا مَنِ ابْنٰ  
صَرَخًا عَلٰى أٰبِلَةِ الْأَسْبَابِ ۝ ۚ أَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ  
فَاطْلِعْ إِلَىٰ آلِ الْمَوْسٰى وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ كَاذِبًا ۚ وَكَذٰلِكَ  
رُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءُ عَمَلِهِ وَصَدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا  
كَانَ فِرْعَوْنُ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۝ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ  
يَقَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِيكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝ يَقَوْمِ إِنَّا



39. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! यह सांसारिक जीवन तो बस अस्थायी उपभोग है। निश्चय ही स्थायी रूप से ठहरने का घर तो आखिरत ही है।

40. जिस किसी ने बुराई की तो उसे वैसा ही बदला मिलेगा, किन्तु जिस किसी ने अच्छा कर्म किया, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, किन्तु हो वह मोमिन, तो ऐसे लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे। वहाँ उन्हें बेहिसाब दिया जाएगा।

41. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! यह मेरे साथ क्या मामला है कि मैं तो तुम्हें मुक्ति की ओर बुलाता हूँ और तुम मुझे आग की ओर बुला रहे हो ?

42. तुम मुझे बुला रहे हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र करूँ और उसके साथ उसे साझी ठहराऊँ जिसका मुझे कोई ज्ञान नहीं, जबकि मैं तुम्हें बुला रहा हूँ उसकी ओर जो प्रभुत्वशाली, अत्यन्त क्षमाशील है।

43. निस्संदेह तुम मुझे जिसकी ओर बुलाते हो उसके लिए न संसार में आमंत्रण है और न आखिरत (परलोक) में और यह कि हमें लौटना भी अल्लाह ही की ओर है और यह कि जो मर्यादाहीन हैं, वही आग (में पड़ने) वाले हैं।

44. अतः शीघ्र ही तुम याद करोगे, जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूँ। मैं तो अपना मामला अल्लाह को सौंपता हूँ। निस्संदेह अल्लाह की दृष्टि सब बन्दों पर है।

45. अन्ततः जो चाल वे चल रहे थे, उसकी बुराइयों से अल्लाह ने उसे बचा लिया और फिरौनियों<sup>1</sup> को बुरी यातना ने आ घेरा;

قَسَمًا

قَسَمًا

هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أَتَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ قُلْ لِّكَ يَذَّكَّرُونَ الْجَنَّةُ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۖ وَيَقُومُ مَا لِي أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجْوَىٰ وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَ أَشْرِكُ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْعَقَّارِ لَا جَرَمَ أَنَا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَن مَّردْنَا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ السُّرْفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ فَتَذَكَّرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ وَأَفِيضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۖ فَوَقِّمَهُ اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا مَكَرُوا وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ۖ

مَرَدْنَا

1. अर्थात् फिरौन के लोगों और उसके अनुयायियों।



46. अर्थात् आग ने; जिसके सामने वे प्रातःकाल और सायंकाल पेश किए जाते हैं। और जिस दिन क्रियामत की घड़ी घटित होगी (कहा जाएगा) : “फिरऔन के लोगों को निकृष्टतम यातना में प्रविष्ट कराओ !”

47. और सोचो जबकि वे आग के भीतर एक-दूसरे से झगड़ रहे होंगे, तो कमज़ोर लोग उन लोगों से, जो बड़े बनते थे, कहेंगे : “हम तो तुम्हारे पीछे चलनेवाले थे। अब क्या तुम हमपर से आग का कुछ भाग हटा सकते हो ?”

48. वे लोग, जो बड़े बनते थे, कहेंगे : “हममें से प्रत्येक इसी में पड़ा है। निश्चय ही अल्लाह बन्दों के बीच फ़ैसला कर चुका।”

49. जो लोग आग में होंगे वे जहन्नम के प्रहरियों से कहेंगे कि “अपने रब को पुकारो कि वह हमपर से एक दिन यातना कुछ हल्की कर दे !”

50. वे कहेंगे : “क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुले प्रमाण लेकर नहीं आते रहे ?” कहेंगे : “क्यों नहीं !” वे कहेंगे : “फिर तो तुम्हीं पुकारो।” किन्तु इनकार करनेवालों की पुकार तो बस भटककर ही रह जाती है।

51. निश्चय ही हम अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए अवश्य सहायता करते हैं, सांसारिक जीवन में भी और उस दिन भी, जबकि गवाह खड़े होंगे।

52. जिस दिन ज़ालिमों को उनका उज्र (सफ़ाई पेश करना) कुछ भी लाभ न पहुँचाएगा, बल्कि उनके लिए तो लानत है और उनके लिए बुरा घर है।

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ۚ وَإِذْ يَتَحَايَجُونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِنَ النَّارِ ۚ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَتِوْ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِنَ الْعَذَابِ ۖ قَالُوا أَوَلَمْ تَكُنَّا نَدْعُو تَائِبِينَ رُسُلًا بِالْبَيِّنَاتِ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۖ قَالُوا فَادْعُوا ۚ وَمَا دُعَاؤُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۚ إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ۚ يَوْمَ لَا يُنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعَذَرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۚ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ



53-54. मूसा को भी हम मार्ग दिखा चुके हैं और इसराईल की संतान को हमने किताब का उत्तराधिकारी बनाया, जो बुद्धि और समझवालों के लिए मार्गदर्शन और अनुस्मृति थी।

55. अतः धैर्य से काम लो। निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है और अपने क्रसूर की क्षमा चाहो और संध्या समय और प्रातः की घड़ियों में अपने रब की प्रशंसा की तसबीह करो।

56. जो लोग बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो उनके पास आया हो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं उनके सीनों में केवल अहंकार है जिस तक वे पहुँचनेवाले नहीं।<sup>1</sup> अतः अल्लाह की शरण लो। निश्चय ही वह सुनता, देखता है।

57. निस्संदेह, आकाशों और धरती को पैदा करना लोगों को पैदा करने की अपेक्षा अधिक बड़ा (कठिन) काम है। किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

58. अंधा और आँखोंवाला बराबर नहीं होते, और वे लोग भी परस्पर बराबर नहीं होते जिन्होंने ईमान लाकर अच्छे कर्म किए और न बुरे कर्म करनेवाले ही परस्पर बराबर हो सकते हैं। तुम होश से काम थोड़े ही लेते हो!

59. निश्चय ही क्रियामत की घड़ी आनेवाली है, इसमें कोई संदेह नहीं। किन्तु अधिकतर लोग मानते नहीं।

60. तुम्हारे रब ने कहा है कि “तुम मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी प्रार्थनाएँ स्वीकार करूँगा।” जो लोग मेरी बन्दगी के मामले में घमण्ड से काम लेते हैं निश्चय ही वे शीघ्र ही अपमानित होकर जहन्नम में प्रवेश करेंगे।

وَأَوْثَقْنَا بِبَنِي إِسْرَآءِيلَ الْكِتَابَ ۚ هُدًى وَ  
ذِكْرًا لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ  
وَأَسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعِشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ يَغَيِّرُ  
سُلْطَانَهُمْ إِنَّ فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرًا مَّا هُمْ  
بِالْغَيْثِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۚ  
لَخَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَ  
لَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۚ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَى  
وَالْبَصِيرُ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا  
الْمُسِيءُ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ۚ إِنَّ السَّاعَةَ لَا يَتَرُ  
لَا رَبِّ فِيهَا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ  
وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ  
يَسْكُرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دُخْرِينَ ۚ

1. अर्थात् अपने अभिमान में वे सफल होनेवाले नहीं हैं।



61. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात (अंधकारमय) बनाई, ताकि तुम उसमें शान्ति प्राप्त करो और दिन को प्रकाशमान बनाया (ताकि उसमें दौड़-धूप करो)। निस्संदेह अल्लाह लोगों के लिए बड़ा उदार अनुग्रहवाला है, किन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखाते।

62. वह है अल्लाह, तुम्हारा रब, हर चीज़ का पैदा करनेवाला ! उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। फिर तुम कहाँ उलटे फिरे जा रहे हो ?

63. इसी प्रकार वे भी उलटे फिरे जाते थे जो अल्लाह की निशानियों का इनकार करते थे।

64. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को ठहरने का स्थान बनाया और आकाश को एक भवन के रूप में बनाया, और तुम्हें रूप दिए तो क्या ही अच्छे रूप तुम्हें दिए, और तुम्हें अच्छी पाक चीज़ों की रोज़ी दी। वह है अल्लाह, तुम्हारा रब। तो बड़ी बरकतवाला है अल्लाह, सारे संसार का रब।

65. वह जीवन्त है। उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः उसी को पुकारो, धर्म को उसी के लिए विशुद्ध करके। सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो सारे संसार का रब है।

66. कह दो : “मुझे इससे रोक दिया गया है कि मैं उनकी बन्दगी करूँ जिन्हें तुम अल्लाह से हटकर पुकारते हो, जबकि मेरे पास मेरे रब की ओर से खुले प्रमाण आ चुके हैं। मुझे तो हुक्म हुआ है कि मैं सारे संसार के रब के आगे नतमस्तक हो जाऊँ।”—

67. वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के लोथड़े से; फिर वह तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकालता है, फिर (तुम्हें बढ़ाता

الْمُؤْمِنِينَ

مَنْ يَنْظُرْ

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْجِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَّا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَآفَ تُوَفِّكُونَ ۝ كَذَلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمُ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَتَبَرُّكُ اللَّهُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ هُوَ الَّذِي لَّا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۝ أَلَتَعْبُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نُهُيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ إِنَّمَا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَاتُ مِن رَّبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِّن تَرَابٍ ثُمَّ نُطَفَئْتُمْ ثُمَّ مِّن

مِنْهُ



है) ताकि अपनी प्रौढ़ता को प्राप्त हो, फिर मुहलत देता है कि तुम बुढ़ापे को पहुँचो—यद्यपि तुममें से कोई इससे पहले भी उठा लिया जाता है—और यह इसलिए करता है कि तुम एक नियत अवधि तक पहुँच जाओ और ऐसा इसलिए है कि तुम समझो।

68. वही है जो जीवन और मृत्यु देता है, और जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उसके लिए बस कह देता है कि 'हो जा' तो वह हो जाता है।

69. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों के बारे में झगड़ते हैं, वे कहाँ फिरे जाते हैं?

70. जिन लोगों ने किताब को झुठलाया और उसे भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा था। तो शीघ्र ही उन्हें मालूम हो जाएगा।

71-72. जबकि तौक़ उनकी गरदनो में होंगे और ज़ंजीरें (उनके पैरों में) वे खौलते हुए पानी में घसीटे जाएँगे, फिर आग में झोंक दिए जाएँगे।

73-74. फिर उनसे कहा जाएगा : "कहाँ हैं वे जिन्हें प्रभुत्व में साझी ठहराकर तुम अल्लाह के सिवा पूजते थे?" वे कहेंगे : "वे हमसे गुम होकर रह गए, बल्कि हम इससे पहले किसी चीज़ को नहीं पुकारते थे।" इसी प्रकार अल्लाह इनकार करनेवालों को भटकता छोड़ देता है।

75. "यह इसलिए कि तुम धरती में नाहक़ मग्न थे और इसलिए कि तुम इतराते रहे हो।

عَلَقَهُ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلاً ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشَدَّكُمْ  
ثُمَّ تَكُونُوا شِيوخًا وَمِنْكُمْ مَنْ يُتَوَفَّى مِنْ قَبْلُ  
وَلِتَبْلُغُوا أَجَلَ مَسَىٰ وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ هُوَ  
الَّذِي يُغْنِي وَيُيَسِّرُ ۖ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّا يَقُولُ  
لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ أَلَمْ تَرَأِ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ  
فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنَّهُ أَتَىٰ يَصْرِفُونَ ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا  
بِالْكِتَابِ وَمِمَّا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا فَتُوفَىٰ يُعْلَمُونَ ۚ  
إِذِ الْأَغْلُلُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ ۚ  
فِي الْجَحِيمِ ۚ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ۚ ثُمَّ قِيلَ  
لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ۚ مِنْ دُونِ اللَّهِ  
قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ نَدْعُوا مِنْ قَبْلُ شَيْئًا  
كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ۚ ذَلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ  
تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ



76. प्रवेश करो जहन्नम के द्वारों में, उसमें सदैव रहने के लिए।" अतः बहुत ही बुरा ठिकाना है अहंकारियों का !

77. अतः धैर्य से काम लो। निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। तो जिस चीज़ की हम उन्हें धमकी दे रहे हैं उसमें से कुछ यदि हम तुम्हें दिखा दें या हम तुम्हें उठा लें, हर हाल में उन्हें लौटना तो हमारी ही ओर है।

78. हम तुमसे पहले कितने ही रसूल भेज चुके हैं। उनमें से कुछ तो वे हैं जिनके वृत्तान्त का उल्लेख हमने तुमसे किया है और उनमें

ऐसे भी हैं जिनके वृत्तान्त का उल्लेख हमने तुमसे नहीं किया। किसी रसूल को भी यह सामर्थ्य प्राप्त न थी कि वह अल्लाह की अनुज्ञा के बिना कोई निशानी ले आए। फिर जब अल्लाह का आदेश आ जाता है तो ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जाता है। और उस समय झूठवाले घाटे में पड़ जाते हैं।

79. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए ताकि उनमें से कुछ पर तुम सवारी करो और उनमें से कुछ को तुम खाते भी हो।—

80. उनमें तुम्हारे लिए और भी फ़ायदे हैं—और ताकि उनके द्वारा तुम उस आवश्यकता की पूर्ति कर सको जो तुम्हारे सीनों में हो, और उनपर भी और नौकाओं पर भी तुम सवार होते हो।

81. और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है। आखिर तुम अल्लाह की कौन-सी निशानी को नहीं पहचानते ?

82. फिर क्या वे धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा

تَسْمِعُونَ ۖ اُدْخُلُواْ اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ فِئْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ۝ فَاُصْبِرْ ۚ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاَمَّا يُرِيَّتْكَ بَعْضُ الَّذِي نَعُدُّهُمْ اَوْ تَتَوَقَّيْتُكَ فَاَلَيْسَا يُزَجَّعُونَ ۝ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ اَنْ يَّاتِيَ بِآيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَاءَ اَمْرُ اللّٰهِ فَتُحْضَىٰ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوهَا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُونَ ۚ وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفَلَاحِ تَعْمَلُونَ ۚ وَرِيَّتْكُمْ آيَتِي ۚ فَآءِىَ آيَةِ اللّٰهِ تُنْكِرُونَ ۚ اَفَلَمْ يَرَوْاْ فِي الْاَرْضِ قَيْنَظُورًا



परिणाम हुआ, जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं। वे उनसे अधिक थे और शक्ति और अपनी छोड़ी हुई निशानियों की दृष्टि से भी बढ़-चढ़कर थे। किन्तु जो कुछ वे कमाते थे, वह उनके कुछ भी काम न आया।

83. फिर जब उनके रसूल उनके पास स्पष्ट प्रमाणों के साथ आए तो जो ज्ञान उनके अपने पास था वे उसी पर मग्न होते रहे और उनको उसी चीज़ ने आ घेरा जिसका व परिहास करते थे।

84. फिर जब उन्होंने हमारी यातना देखी तो कहने लगे : “हम ईमान लाए अल्लाह पर जो अकेला है और उसका इनकार किया जिसे हम उसका साझी ठहराते थे।”

85. किन्तु उनका ईमान उनको कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता था जबकि उन्होंने हमारी यातना को देख लिया—यही अल्लाह की रीति है, जो उसके बन्दों में पहले से चली आई है—और उस समय इनकार करनेवाले घाटे में पड़कर रहे।



## 41. हा०मीम०अस-सजदा

(मक्का में उतरी—आयतें 54)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हा० मीम०।
2. यह अवतरण है बड़े कृपाशील, अत्यन्त दयावान की ओर से,
3. एक किताब, जिसकी आयतें खोल-खोलकर बयान हुई हैं; अरबी कुरआन के रूप में, उन लोगों के लिए जो जानना चाहें;



4. शुभ सूचक एवं सचेतकर्ता । किन्तु उनमें से अधिकतर कतरा गए तो वे सुनते ही नहीं ।

5. और उनका कहना है कि “जिसकी ओर तुम हमें बुलाते हो उसके लिए तो हमारे दिल आवरणों में हैं । और हमारे कानों में बोझ है । और हमारे और तुम्हारे बीच एक ओट है; अतः तुम अपना काम करो, हम तो अपना काम करते हैं ।”

6-7. कह दो : “मैं तो तुम्हीं जैसा एक मनुष्य हूँ । मेरी ओर प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य-प्रभु बस अकेला पूज्य-प्रभु है । अतः तुम सीधे उसी का रुख करो और उसी से क्षमा-याचना करो— साझी ठहरानेवालों के लिए तो बड़ी तबाही है, जो ज़कात नहीं देते और वही हैं जो आखिरत का इनकार करते हैं ।—

8. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए ऐसा बदला है जिसका क्रम टूटनेवाला नहीं ।”

9. कहो : “क्या तुम उसका इनकार करते हो, जिसने धरती को दो दिनों (काल) में पैदा किया और तुम उसके समकक्ष ठहराते हो ? वह तो सारे संसार का रब है ।

10. और उसने उस (धरती) में उसके ऊपर से पहाड़ जमाए और उसमें बरकत रखी और उसमें उसकी खुराकों को ठीक अंदाज़े से रखा । माँग करनेवालों के लिए समान रूप से यह सब चार दिन में हुआ ।

بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝  
وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِي أَكِنَّةٍ مِمَّا نَدْعُونَ إِلَيْهِ ۖ  
فَإِذَا دُعِينَا وَقُرْ وَمِنْ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ  
فَاعْمَلْ إِنشَاءً عَمِلُونَا ۝ قُلْ إِنشَاءً أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ  
يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنشَاءُ إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَاسْتَقِيمُوا  
إِلَيْهِ ۖ وَاسْتَغْفِرُوا ۚ وَوَيْلٌ لِلْمُشْرِكِينَ ۝  
الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ يَاذًا خَدَرُوا ۖ هُمْ  
كَافِرُونَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ  
لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝ قُلْ أَبُغْضُكُمْ لَكَفَرُونَ  
بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ  
أَنْدَادًا ۚ ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ وَجَعَلَ فِيهَا  
رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبَرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا  
أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِّلنَّاسِ بِلَدَيْنِ ۝

سَبَّحْ



11. फिर उसने आकाश की ओर रुख किया, जबकि वह मात्र धुआँ था— और उसने उससे और धरती से कहा : 'आओ, स्वेच्छा के साथ या अनिच्छा के साथ।' उन्होंने कहा : 'हम स्वेच्छा के साथ आए।'—

12. फिर दो दिनों में उनको अर्थात् सात आकाशों को बनाकर पूरा किया और प्रत्येक आकाश में उससे संबंधित आदेश की प्रकाशना कर दी और दुनिया के (निकटवर्ती) आकाश को हमने दीपों से सजाया (रात में यात्रियों के दिशा-निर्देश आदि के लिए) और सुरक्षित करने के उद्देश्य से। यह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ का ठहराया हुआ है।"

13. अब यदि वे लोग ध्यान में न लाएँ तो कह दो : "मैं तुम्हें उसी तरह के कड़का (वज्रपात) से डराता हूँ, जैसा कड़का आद और समुद्र पर हुआ था।"

14. जब उनके पास रसूल उनके आगे और उनके पीछे से आए कि "अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो।" तो उन्होंने कहा : "यदि हमारा रब चाहता तो फ़रिश्तों को उतार देता। अतः जिस चीज़ के साथ तुम्हें भेजा गया है, हम उसे नहीं मानते।"

15. रहे आद, तो उन्होंने नाहक धरती में घमण्ड किया और कहा : "कौन हमसे शक्ति में बढ़कर है?" क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिसने उन्हें पैदा किया, वह उनसे शक्ति में बढ़कर है? वे तो हमारी आयतों का इनकार

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۖ قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ۝ فَفَضَّلَهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۚ وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِبَصَائِرٍ ۖ وَحِفْظٍ ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَإِن أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنَذَرْتُكُمْ صُفْعَةً ۚ مِثْلَ صُفْعَةِ عَادَ ۚ وَتَمُودَ ۚ إِذْ جَاءَهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۚ قَالُوا نَوْشَاءُ رَبِّنَا لَا تَنْزِلُ مَلَائِكَةٌ فَاِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۝ فَأَمَّا عَادُ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۚ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَكَانُوا



ही करते रहे।

16. अन्ततः हमने कुछ अशुभ दिनों में उनपर एक शीत-झंझावात न्चलाई, ताकि हम उन्हें सांसारिक जीवन में अपमान और रुसवाई की यातना का मज़ा चखा दें। और आखिरत की यातना तो इससे कहीं बढ़कर रुसवा करनेवाली है। और उनको कोई सहायता भी न मिल सकेगी।

17. और रहे समूद, तो हमने उनके सामने सीधा मार्ग दिखाया, किन्तु मार्गदर्शन के मुक़ाबले में उन्होंने अन्धा रहना ही पसन्द किया। परिणामतः जो कुछ वे कमाई करते रहे थे उसके बदले में अपमानजनक यातना के कड़के ने उन्हें आ पकड़ा।

18. और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए थे और डर रखते थे।

19-20. और विचार करो जिस दिन अल्लाह के शत्रु आग की ओर एकत्र करके लाए जाएँगे, फिर उन्हें श्रेणियों में क्रमबद्ध किया जाएगा, यहाँ तक कि जब वे उसके पास पहुँच जाएँगे तो उनके कान और उनकी आँखें और उनकी खालें उनके विरुद्ध उन बातों की गवाही देंगी, जो कुछ वे करते रहे होंगे।

21. वे अपनी खालों से कहेंगे कि “तुमने हमारे विरुद्ध क्यों गवाही दी?” वे कहेंगी : “हमें उसी अल्लाह ने वाक्-शक्ति प्रदान की है, जिसने प्रत्येक चीज़ को वाक्-शक्ति प्रदान की।” — उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसी की ओर तुम्हें लौटना है।

22. तुम इस भय से छिपते न थे कि तुम्हारे कान तुम्हारे विरुद्ध गवाही देंगे, और न इसलिए कि तुम्हारी आँखें गवाही देंगी और न इस कारण से कि

مَنْ ظَنَّهُ

مَنْ ظَنَّهُ

بِأَيِّتِنَا يَجْعَدُونَ ۖ فَآرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا  
فِي أَيَّامٍ نَحْسَاتٍ لِنُذِيقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ  
فِي الْعَيْوَةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَعُ  
وَهُمْ لَا يَنْصَرِفُونَ ۖ وَأَنَّا نَسُودُ فَهَدَيْنَهُمْ فَاسْتَعَبُوا  
الْعَصَى عَلَى الْهُدَى ۖ فَأَخَذْتَهُمْ صَاعِقَةُ الْعَذَابِ  
الْهُوَ بَاسًا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۖ وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ  
آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۖ وَيَوْمَ يُخْشَرُ أَعْدَاءُ  
النَّارِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ۖ حَتَّىٰ إِذَا مَا  
جَاءَ وَهَامٌ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ  
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ وَقَالُوا لِمَ إِجْلُودُونَهُمْ وَلِمَ  
لَمْ تَشْهَدْتُمْ عَلَيْنَا ۖ قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ  
وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۖ وَمَا  
كُنْتُمْ تَسْتَرْوُونَ ۖ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا

مَنْ



तुम्हारी खालें गवाही देंगी, बल्कि तुमने तो यह समझ रखा था कि अल्लाह तुम्हारे बहुत-से कामों को जानता ही नहीं।

23. और तुम्हारे उस गुमान ने तुम्हें बरबाद किया जो तुमने अपने रब के साथ किया; अतः तुम घाटे में पड़कर रहे।

24. अब यदि वे धैर्य दिखाएँ तब भी आग ही उनका ठिकाना है। और यदि वे किसी प्रकार (उसके) क्रोध को दूर करना चाहें, तब भी वे ऐसे नहीं कि वे राजी कर सकें।

25. हमने उनके लिए कुछ साथी नियुक्त कर दिए थे। फिर उन्होंने उनके आगे और उनके पीछे जो कुछ था उसे सुहाना बनाकर उन्हें दिखाया। अंततः उनपर भी जिन्नों और मनुष्यों के उन गिरोहों के साथ फ़ैसला सत्यापित होकर रहा, जो उनसे पहले गुज़र चुके थे। निश्चय ही वे घाटा उठानेवाले थे।

26. जिन लोगों ने इनकार किया उन्होंने कहा : “इस कुरआन को सुनो ही मत और इसके बीच में शोर-गुल मचाओ, ताकि तुम प्रभावी रहो।”

27. अतः हम अवश्य ही उन लोगों को, जिन्होंने इनकार किया, कठोर यातना का मज़ा चखाएँगे, और हम अवश्य उन्हें उसका बदला देंगे जो निकृष्टतम कर्म वे करते रहे हैं।

28. वह है अल्लाह के शत्रुओं का बदला—आग। उसी में उनका सदा का घर है, उसके बदले में जो वे हमारी आयतों का इनकार करते रहे।

أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِّمَّا تَعْمَلُونَ ۚ وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۚ فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ۚ وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا فَمَا لَهُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ ۚ وَقَوَّضْنَا لَهُمْ قُرُونًا فَزَيَّنَّوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوَافِیُّوْا لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ۚ فَلَنُنَدِّیَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَثَوَالَهُمُ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ ذَلِكَ جَزَاءُ عِبَادِ اللَّهِ الشَّارِءِ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْغُلْدِ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَأْتِيَنَا

مَذْكُورٌ



29. और जिन लोगों ने इनकार किया वे कहेंगे : “ऐ हमारे रब ! हमें दिखा दे उन जिन्नों और मनुष्यों को, जिन्होंने हमको पथभ्रष्ट किया कि हम उन्हें अपने पैरों तले डाल दें ताकि वे सबसे नीचे जा पड़ें।”<sup>1</sup>

30. जिन लोगों ने कहा कि “हमारा रब अल्लाह है।” फिर इसपर दृढ़तापूर्वक जमे रहे, उनपर फरिश्ते उतरते हैं कि “न डरो और न शोकाकुल हो, और उस जन्नत की शुभ सूचना लो जिसका तुमसे वादा किया गया है।

31. हम सांसारिक जीवन में भी तुम्हारे सहचर मित्र हैं और आखिरत में भी। और वहाँ तुम्हारे लिए वह सब कुछ है, जिसकी इच्छा तुम्हारे जी को होगी। और वहाँ तुम्हारे लिए वह सब कुछ होगा, जिसकी तुम माँग करोगे।

32. आतिथ्य के रूप में क्षमाशील, दयावान सत्ता की ओर से।”

33. और उस व्यक्ति से बात में अच्छा कौन हो सकता है जो अल्लाह की ओर बुलाए और अच्छे कर्म करे और कहे : “निस्संदेह मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ ?”

34. भलाई और बुराई समान नहीं हैं। तुम (बुरे आचरण की बुराई को) अच्छे से अच्छे आचरण के द्वारा दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच वैर पड़ा हुआ था, जैसे वह कोई घनिष्ट मित्र है।

35. किन्तु यह चीज़ केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जो धैर्य से काम

سَمِيعُ السَّمْعِ

سَمِيعُ السَّمْعِ

يَعْبُدُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا  
الَّذِينَ أَصْلَلْنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ نَحْجِلُهُمَا ثَبَتَ  
أَقْدَامَنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ  
قَالُوا رَبَّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَفْأَمُوا تَنْزِيلَ عَلَيْهِمُ  
السَّكِينَةَ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ  
الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۝ نَحْنُ أَوْلَىٰ بِكُمُ فِي الْحَيَاةِ  
الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهُي  
أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدْعُونَ ۝ نَزَّلْنَا مِنْ عَقُوبِ  
رَجِيمِهِمْ وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَخَلَ إِلَى اللَّهِ وَ  
عَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَلَا تَتَّبِعُوا  
الْحَسَنَةَ وَلَا السَّيِّئَةَ إِذْ قَعُ بِاللَّهِ هِيَ أَحْسَنُ  
فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ  
حَمِيمٌ ۝ وَمَا يُلْقِهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا

سَمِيعُ السَّمْعِ



लेते हैं, और यह चीज़ केवल उसको प्राप्त होती है जो बड़ा भाग्यशाली होता है।

36. और यदि शैतान की ओर से कोई उकसाहट तुम्हें चुभे तो अल्लाह की शरण माँग लो। निश्चय ही वह सबकुछ सुनता, जानता है।

37. रात और दिन और सूर्य और चन्द्रमा उसकी निशानियों में से हैं। तुम न तो सूर्य को सजदा करो और न चन्द्रमा को, बल्कि अल्लाह को सजदा करो जिसने उन्हें पैदा किया, यदि तुम उसी की बन्दगी करनेवाले हो।

38. लेकिन यदि वे घमण्ड करें (और अल्लाह को याद न करें), तो जो फ़रिश्ते तुम्हारे रब के पास हैं वे तो रात और दिन उसकी तसबीह करते ही रहते हैं और वे उकताते नहीं।

39. और यह चीज़ भी उसकी निशानियों में से है कि तुम देखते हो कि धरती दबी पड़ी हुई है; फिर ज्यों ही हमने उसपर पानी बरसाया कि वह फबक उठी और फूल गई। निश्चय ही जिसने उसे जीवित किया, वही मुर्दों को जीवित करनेवाला है। निस्संदेह उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

40. जो लोग हमारी आयतों में कुटिलता की नीति अपनाते हैं वे हमसे छिपे हुए नहीं हैं, तो क्या जो व्यक्ति आग में डाला जाए वह अच्छा है या वह जो क़ियामत के दिन निश्चिन्त होकर आएगा? जो चाहो कर लो, तुम जो कुछ करते हो वह तो उसे देख ही रहा है।

مَنْ مِّنْكُمْ

مَنْ مِّنْكُمْ

يُلْقِمَهَا إِلَّا ذُو حِظٍّ عَظِيمٍ ۚ وَإِنَّمَا يَنزَعُكَ مِنَ  
الشَّيْطَانِ نَزْعٌ ۖ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ  
الْعَلِيمُ ۝ وَمِنَ آيَاتِهِ الْيَلَّ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ  
وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا  
لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝  
وَإِن اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ  
لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ۚ وَمِنَ آيَاتِهِ  
أَنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا  
الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَّتْ ۚ وَإِنِّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُخْيٍ  
الْمُوتَى ۚ إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ وَإِنِّ الَّذِينَ  
يُلْعَدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخَفُونَ ۚ عَلَيْنَا أَقْسَمُ  
يُلْقَى فِي النَّارِ خَبِيرٌ ۚ أَمْ مِّنْ يَّاتِي أَمَّا يَوْمَ الْقِيَامَةِ  
رَاعِلًا ۚ مَا يَسْأَلُهُمْ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ وَإِن

مَنْ



41. जिन लोगों ने अनुस्मृति का इनकार किया, जबकि वह उनके पास आई, हालाँकि वह एक प्रभुत्वशाली किताब है, (तो न पूछो कि उनका कितना बुरा परिणाम होगा) ।

42. असत्य उस तक न उसके आगे से आ सकता है और न उसके पीछे से; अवतरण है उसकी ओर से जो अत्यन्त तत्त्वदर्शी, प्रशंसा के योग्य है ।

43. तुम्हें बस वही कहा जा रहा है, जो उन रसूलों को कहा जा चुका है, जो तुमसे पहले गुजरे हैं । निस्संदेह तुम्हारा रब बड़ा क्षमाशील है और दुखद दण्ड देनेवाला भी ।

44. यदि हम उसे ग़ैर अरबी कुरआन बनाते तो वे कहते कि "उसकी आयतें क्यों नहीं (हमारी भाषा में) खोलकर बयान की गई? यह क्या कि वाणी तो ग़ैर अरबी है और व्यक्ति अरबी?" कहो : "वह उन लोगों के लिए जो ईमान लाए मार्गदर्शन और आरोग्य है, किन्तु जो लोग ईमान नहीं ला रहे हैं उनके कानों में बोझ है और वह (कुरआन) उनके लिए अन्धापन (सिद्ध हो रहा) है, वे ऐसे हैं जिनको किसी दूर के स्थान से पुकारा जा रहा हो ।"

45. हमने मूसा को भी किताब प्रदान की थी, फिर उसमें भी विभेद किया गया । यदि तुम्हारे रब की ओर से पहले ही से एक बात निश्चित न हो चुकी होती तो उनके बीच फ़ैसला चुका दिया जाता । हालाँकि वे उसकी ओर से उलझन में डाल देनेवाले संदेह में पड़े हुए हैं ।

46. जिस किसी ने अच्छा कर्म किया तो अपने ही लिए और जिस किसी ने बुराई की, तो उसका वबाल भी उसी पर पड़ेगा । वास्तव में तुम्हारा रब अपने बन्दों पर तनिक भी ज़ुल्म नहीं करता ।

سُورَةُ الْاِنشَارِ

سُورَةُ الْاِنشَارِ

الَّذِينَ كَفَرُوا بِالَّذِ كَرَلْنَا جَاءَهُمْ . وَانَّهُ لَكِتَابٌ  
عَزِيزٌ . لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ . وَلَا  
مِنْ خَلْفِهِ . تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ . مَا  
يُقَالُ لَكَ . اِلَّا مَا كُنَّا قَدَقِيلُ لِلرَّسُولِ مِنْ قَبْلِكَ . اِنْ  
رَبُّكَ لَدَا وَمَعْقُورَةٌ . وَذُو عَقَابٍ اَلِيْمٌ . وَلَوْ جَعَلْنَاهُ  
قُرْآنًا اَعْجَمِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيَاتُهُ . اَعْجَمِي  
وَعَرَبِي . قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ اٰمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ .  
وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِيْ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ  
عَمًى . اُولٰٓئِكَ يُنَادُوْنَ مِنْ مَّكَانٍ يَّعْوِيْدُ  
وَلَقَدْ اَتَيْنَا مُوسٰى الْكِتٰبَ فَاخْتَلَفَ فِيْهِ . وَلَوْلَا  
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ . وَارْتَهُمُ  
لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٌ . مَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ  
وَمَنْ اَسَاءَ فَعَلَيْهَا . وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعٰبِدِ .

سَلَامٌ



47. उस घड़ी का ज्ञान अल्लाह की ओर फिरता है। जो फल भी अपने कोषों से निकलते हैं और जो मादा भी गर्भवती होती है और बच्चा जनती है, अनिवार्यतः उसे इन सबका ज्ञान होता है। जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा : "कहाँ हैं मेरे साझीदार?" वे कहेंगे : "हम तेरे समक्ष खुल्लम-खुल्ला कह चुके हैं कि हममें से कोई भी इसका गवाह नहीं।"

48. और जिन्हें वे पहले पुकारा करते थे वे उनसे गुम हो जाएँगे। और वे समझ लेंगे कि उनके लिए कोई भी भागने की जगह नहीं है।

49. मनुष्य<sup>1</sup> भलाई माँगने से नहीं उकताता, किन्तु यदि उसे कोई तकलीफ़ छू जाती है तो वह निराश होकर आस छोड़ बैठता है।

50. और यदि उस तकलीफ़ के बाद, जो उसे पहुँची, हम उसे अपनी दयालुता का आस्वादन करा दें तो वह निश्चय ही कहेगा : "यह तो मेरा हक़ ही है। मैं तो यह नहीं समझता कि वह, क्रियामत की घड़ी, घटित होगी और यदि मैं अपने रब की ओर लौटाया भी गया तो अवश्य ही उसके पास मेरे लिए अच्छा पारितोषिक होगा।" फिर हम उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया, अवश्य बताकर रहेंगे, जो कुछ उन्होंने किया होगा। और हम उन्हें अवश्य ही कठोर यातना का मज़ा चखाएँगे।

51. जब हम मनुष्य पर अनुकम्पा करते हैं तो वह ध्यान में नहीं लाता और अपना पहलू फेर लेता है। किन्तु जब उसे तकलीफ़ छू जाती है, तो वह लम्बी-चौड़ी प्रार्थनाएँ करने लगता है।

مِنْ أَلْسِنَتِهِمْ وَمَا نَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا نَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِيَ ۖ قَالُوا أَدْنَاكَ ۖ مَا مَسَّا مِنْ شَيْءٍ ۚ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ وَظَلُّوا مَا لَهُمْ مِنْ مَّوْجِبٍ ۚ لَا يَسْتَمِ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمُ الشُّرْقِيُّوسُ قَنُوطٌ ۚ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ مِّنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَّتَشَهُ لَيَقُولُنَّ هَذَا لِي ۖ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ۚ وَلَٰكِنَّ رَجِيعَتِي لِي ۚ إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا ۚ وَكَانُوا يَفْنَوْنَ ۚ وَمِنْ عَذَابٍ عَلِيظٍ ۚ وَإِذَا أُنْعِمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأٰ بِجَانِبِهِ ۚ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذَا دُعَاءٍ غَرِيبٍ ۚ قُلْ

1. यहाँ संकेत उस मनुष्य की ओर है, जो सत्य का इनकार करनेवाला हो।



52. कह दो कि “क्या तुमने विचार किया, यदि वह (कुरआन) अल्लाह की ओर से ही हुआ और तुमने उसका इनकार किया तो उससे बढ़कर भटका हुआ और कौन होगा जो विरोध में बहुत दूर जा पड़ा हो?”

53. शीघ्र ही हम उन्हें अपनी निशानियाँ वाह्य क्षेत्रों में दिखाएँगे और स्वयं उनके अपने भीतर भी, यहाँ तक कि उनपर स्पष्ट हो जाएगा कि वह (कुरआन) सत्य है। क्या तुम्हारा रब इस दृष्टि से काफ़ी नहीं कि वह हर चीज़ का साक्षी है।

54. जान लो कि वे लोग अपने रब से मिलन के बारे में संदेह में पड़े हुए हैं। जान लो कि निश्चय ही वह हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है।



## 42. अश-शूरा

(मक्का में उतरी— आयतें 53)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हा० मीम० ।
2. ऐन० सीन० क्काफ़० ।
3. इसी प्रकार अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी तुम्हारी ओर और उन लोगों की ओर प्रकाशना (वाह्य) करता रहा है, जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं।
4. आकाशों और धरती में जो कुछ है उसी का है और वह सर्वोच्च महिमावान है।

5. लगता है कि आकाश स्वयं अपने ऊपर से फट पड़े। हाल यह है कि फ़रिश्ते अपने रब का गुणगान कर रहे हैं, और उन लोगों के लिए जो धरती



में हैं, क्षमा की प्रार्थना करते रहते हैं। सुन लो ! निश्चय ही अल्लाह ही क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

6. और जिन लोगों ने उससे हटकर अपने कुछ दूसरे संरक्षक बना रखे हैं, अल्लाह उनपर निगरानी रखे हुए है। तुम उनके कोई ज़िम्मेदार नहीं हो।

7. और (जैसे हम स्पष्ट आयतें उतारते हैं) उसी प्रकार हमने तुम्हारी ओर एक अरबी कुरआन की प्रकाशना की है, ताकि तुम बस्तियों के केन्द्र (मक्का) को और जो लोग उसके चतुर्दिक् हैं उनको सचेत कर दो और सचेत करो इकट्ठा होने के दिन से, जिसमें कोई संदेह नहीं। एक गिरोह खन्नत में होगा और एक गिरोह भड़कती आग में।

8. यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें एक ही समुदाय बना देता, किन्तु वह जिसे चाहता है अपनी दयालुता में दाखिल करता है। रहे ज़ालिम, तो उनका न तो कोई निकटवर्ती मित्र है और न कोई (दूर का) सहायक।

9. (क्या उन्होंने अल्लाह से हटकर दूसरे सहायक बना लिए हैं), या उन्होंने उससे हटकर दूसरे संरक्षक बना रखे हैं? संरक्षक तो अल्लाह ही है। वही मुर्दों को जीवित करता है और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

10. (रसूल ने कहा) "जिस चीज़ में तुमने विभेद किया है उसका फ़ैसला तो अल्लाह के हवाले है। वही अल्लाह मेरा रब है। उसी पर मैंने भरोसा किया है, और उसी की ओर मैं रुजू करता हूँ।

الْبُرْجِ

الْبُرْجِ

وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَن فِي الْأَرْضِ، أَلَا لَئِنِ اللَّهُ  
هُوَ الْعَفْوَ الرَّحِيمُ ۝ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن  
دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيفٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا أَنتَ  
عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝ وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ  
قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَن حَوْلَهَا  
وَتُنذِرَ يَوْمَ الْجَنَّةِ لَا رَيْبَ فِيهِ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ  
وَقَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ۝ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً  
وَاحِدَةً وَلَكِن يُدْخِلُ مَن يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ  
وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُم مِّن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ أَمْ  
اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ، قَالَ اللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ  
وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ، وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝  
وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِن شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ  
ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝

مَزْن



11. वह आकाशों और धरती का पैदा करनेवाला है। उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी अपनी ही सहजाति से जोड़े बनाए और चौपायों के जोड़े भी। फैला रहा है वह तुमको अपने में। उसके सदृश कोई चीज़ नहीं। वही सबकुछ सुनता, देखता है।

12. आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी के पास हैं। वह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है। निस्संदेह उसे हर चीज़ का ज्ञान है।

تَنْزِيلُ

النَّبِيِّ

فَاطُرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ، جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا، يَذُرُّوْكُمْ فِيهِ، لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ، وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝ لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ، يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ، إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وَضَعَهُ بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ، كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ، اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ ۝ وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَيْنَهُمْ، وَلَوْ لَا كَلِمَةُ سُبْحَتٍ مِنْ رَبِّكَ إِلَى أَجَلٍ مُّسَمًّى لَفُضِّتْ

سَبْحَةٍ

13. उसने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित किया जिसकी ताकीद उसने नूह को की थी।”

और वह (जीवन्त आदेश) जिसकी प्रकाशना हमने तुम्हारी ओर की है और वह जिसकी ताकीद हमने इबराहीम और मूसा और ईसा को की थी यह है कि “धर्म को क़ायम करो और उसके विषय में अलग-अलग न हो जाओ।” बहुदेववादियों को वह चीज़ बहुत अप्रिय है, जिसकी ओर तुम उन्हें बुलाते हो। अल्लाह जिसे चाहता है अपनी ओर छाँट लेता है और अपनी ओर का मार्ग उसी को दिखाता है जो उसकी ओर रुजू करता है।

14. उन्होंने तो परस्पर एक-दूसरे पर ज़्यादती करने के उद्देश्य से इसके पश्चात विभेद किया कि उनके पास ज्ञान आ चुका था। और यदि तुम्हारे रब की ओर से एक नियत अवधि तक के लिए बात पहले निश्चित न हो चुकी



होती तो उनके बीच फ़ैसला चुका दिया गया होता। किन्तु जो लोग उनके पश्चात किताब के वारिस हुए वे उसकी ओर से एक उलझन में डाल देनेवाले संदेह में पड़े हुए हैं।

15. अतः इसी लिए (उन्हें सत्य की ओर) बुलाओ, और जैसा कि तुम्हें हुक्म दिया गया है स्वयं क़ायम रहो, और उनकी इच्छाओं का पालन न करना और कह दो : “अल्लाह ने जो किताब अवतरित की है, मैं उसपर ईमान लाया। मुझे तो आदेश हुआ है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय करूँ। अल्लाह ही

हमारा भी रब है और तुम्हारा रब भी। हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। हममें और तुममें कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह हम सबको इकट्ठा करेगा और अन्ततः उसी की ओर जाना भी हैं।”

16. जो लोग अल्लाह के विषय में झगड़ते हैं, इसके पश्चात कि उसकी पुकार स्वीकार कर ली गई, उनका झगड़ना उनके रब की दृष्टि में बिलकुल न ठहरनेवाला (असत्य) है। प्रकोप है उनपर और उनके लिए कड़ी यातना है।

17. वह अल्लाह ही है जिसने हक़ के साथ किताब और तुला अवतरित की। और तुम्हें क्या मालूम कदाचित् क्रियामत की घड़ी निकट ही आ लगी हो।

18. उसकी जल्दी वे लोग मचाते हैं जो उसपर ईमान नहीं रखते, किन्तु जो ईमान रखते हैं वे तो उससे डरते हैं और जानते हैं कि वह सत्य है। जान लो,

بَيْنَهُمْ ۖ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِهِمْ  
لَنُفِيَنَّ مِنْكُمْ مُرِيبًا ۖ وَلَنَذْلِجَنَّ قُلُوبَكُمْ  
وَأَسْتَقِيمَ كَمَا أَمَرْتُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ هُمْ ۚ وَقُلْ  
أَمَرْتُ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ كِتَابٍ ۚ وَأَمَرْتُ  
لِعِبَادٍ بَيْنَكُمْ ۚ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ كُنَّا أَعْمَالُنَا  
وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۚ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۚ اللَّهُ  
يَجْمَعُ بَيْنَنَا وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ۚ وَالَّذِينَ يُعَاجِلُونَ  
فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ  
دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ  
شَدِيدٌ ۚ اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ  
وَالْمِيزَانَ ۚ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ  
قَرِيبٌ ۚ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۚ  
وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَأَوْيِعُونَ أَنَّهَا



जो लोग उस घड़ी के बारे में संदेह डालनेवाली बहसें करते हैं, वे परले दरजे की गुमराही में पड़े हुए हैं।

19. अल्लाह अपने बन्दों पर अत्यन्त दयालु है। वह जिसे चाहता है रोज़ी देता है। वह शक्तिमान, अत्यन्त प्रभुत्वशाली है।

20. जो कोई आखिरत की खेती चाहता है, हम उसके लिए उसकी खेती में बढ़ोत्तरी प्रदान करेंगे और जो कोई दुनिया की खेती चाहता है, हम उसमें से उसे कुछ दे देते हैं, किन्तु आखिरत में उसका कोई हिस्सा नहीं।

21. (क्या उन्हें समझ नहीं) या उनके कुछ ऐसे (ठहराए हुए) साझीदार हैं, जिन्होंने उनके लिए कोई ऐसा धर्म निर्धारित कर दिया है जिसकी अनुज्ञा अल्लाह ने नहीं दी? यदि फ़ैसले की बात निश्चित न हो गई होती तो उनके बीच फ़ैसला हो चुका होता। निश्चय ही ज़ालिमों के लिए दुखद यातना है।

22. तुम ज़ालिमों को देखोगे कि उन्होंने जो कुछ कमाया उससे डर रहे होंगे, किन्तु वह तो उनपर पड़कर रहेगा। किन्तु जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे जन्नतों की वाटिकाओं में होंगे। उनके लिए उनके रब के पास वह सब कुछ है जिसकी वे इच्छा करेंगे। वही तो बड़ा उदार अनुग्रह है।

23. उसी की शुभ सूचना अल्लाह अपने उन बन्दों को देता है जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए—कहो : "मैं इसका तुमसे कोई पारिश्रमिक

الْقَوْمِ

الْقَوْمِ

الْحَقُّ، أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ  
لَبِقَىٰ ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝ اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ  
مَنْ يَشَاءُ، وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝ مَنْ كَانَ  
يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ، وَمَنْ  
كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا، وَمَا لَهُ فِي  
الْآخِرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ۝ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا  
لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا كُرِيَ لَهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ  
الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ، وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ  
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا  
كُتِبَ لَهُمْ وَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا  
الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَاتِ الْجَنَّاتِ، لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ  
عِنْدَ رَبِّهِمْ، ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝ ذَلِكَ الَّذِي  
يُبَيِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

مَدَنِي



नहीं माँगता, बस निकटता का प्रेम-भाव चाहता हूँ, जो कोई नेकी कमाएगा हम उसके लिए उसमें अच्छाई की अभिवृद्धि करेंगे। निश्चय ही अल्लाह भ्रत्यन्त क्षमाशील, गुणग्राहक है।”

24. (क्या वे ईमान नहीं लाएँगे) या उनका कहना है कि “इस व्यक्ति ने अल्लाह पर मिथ्यारोपण किया है?” यदि अल्लाह चाहे तो तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे (जिस प्रकार उसने इनकार करनेवालों के दिल पर मुहर लगा दी है)। अल्लाह तो असत्य को मिटा रहा है और सत्य को अपने बोलों से सत्य सिद्ध कर रहा है। निश्चय ही वह सीनों तक की बात को भी भली-भाँति जानता है।

25. वही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और बुराइयों को माफ़ करता है, हालाँकि वह जानता है, जो कुछ तुम करते हो।

26. और वह उन लोगों की प्रार्थनाएँ स्वीकार करता है जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए। और अपने उदार अनुग्रह से उन्हें और अधिक प्रदान करता है। रहे इनकार करनेवाले, तो उनके लिए कड़ी यातना है।

27. यदि अल्लाह अपने बन्दों के लिए रोज़ी कुशादा कर देता तो वे धरती में सरकशी करने लगते। किन्तु वह एक अंदाज़े के साथ जो चाहता है, उतारता है। निस्संदेह वह अपने बन्दों की खबर रखनेवाला है। वह उनपर निगाह रखता है।

28. वही है जो इसके पश्चात कि लोग निराश हो चुके होते हैं, मेंह बरसाता है और अपनी दयालुता को फैला देता है। और वही है संरक्षक

الْأَنبِيَاءُ

الْأَنبِيَاءُ

قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ  
وَمَنْ يَغْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حُسْنًا إِنَّ اللَّهَ  
غَفُورٌ شَكُورٌ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا  
فَإِنْ يَشَأْ اللَّهُ يُخْزِمَهُ عَلَىٰ قَلِيلٍ ۝ وَيَسْأَلُ اللَّهُ  
الْبَاطِلَ وَيُجِيبُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتٍ ۝ إِنَّهُ عَلِيمٌ  
بِدَايِطِ الصُّدُورِ ۝ وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ  
عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا  
تَفْعَلُونَ ۝ وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا  
الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۝ وَالْكَافِرُونَ لَكُمْ  
عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝ وَلَوْ بَظَرَ اللَّهُ الزُّرْقَ لِعِبَادِهِ  
لَبَغَا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنْزِلُ بِقُدْرٍ مَا يَشَاءُ ۝  
إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝ وَهُوَ الَّذِي يُنْزِلُ  
الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ ۝ وَهُوَ

مَنَّانٌ



मित्र, प्रशंसनीय !

29. और उसकी निशानियों में से है आकाशों और धरती का पैदा करना, और वे जीवधारी भी जो उसने इन दोनों में<sup>1</sup> फैला रखे हैं। वह जब चाहे उन्हें इकट्ठा करने की सामर्थ्य भी रखता है।

30. जो मुसीबत तुम्हें पहुँची वह तो तुम्हारे अपने हाथों की कमाई से पहुँची और बहुत कुछ तो वह माफ़ कर देता है।

31. तुम धरती में क़ाबू से निकल जानेवाले नहीं हो, और न अल्लाह से हटकर तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र है और न सहायक ही।

32. उसकी निशानियों में से समुद्र में पहाड़ों के सदृश वलते जहाज़ भी हैं।

33. यदि वह चाहे तो वायु को ठहरा दे, तो वे समुद्र की पीठ पर ठहरे रह जाएँ—निश्चय ही इसमें कितनी ही निशानियाँ हैं हर उस व्यक्ति के लिए जो अत्यन्त धैर्यवान, कृतज्ञ हो।

34. या उनको<sup>2</sup> उनकी कमाई के कारण विनष्ट कर दे और बहुतों को माफ़ भी कर दे।

35. और परिणामतः वे लोग जान लें जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं कि उनके लिए भागने की कोई जगह नहीं।

36. तुम्हें जो चीज़ भी मिली है वह तो सांसारिक जीवन की अस्थायी सुख-सामग्री है। किन्तु जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम भी है और शेष रहनेवाला भी, वह उन्हीं के लिए है जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं;

الْوَلِيُّ الْعَمِيدُ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا مِنْ دَابَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ۚ وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فِيمَا كُتِبَتْ إِلَيْكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ۚ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ قَبْلِ وَلَا نَصِيرٍ ۚ وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۚ إِنْ يَشَاءْ يُبْرِئِ السَّيْلَانَ ۚ وَكَذَٰلِكَ لَا يَتَّخِذُ لِكُلِّ صَبَإٍ شُكْرًا ۚ أَوْ يُوقِفُهُمْ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ۚ وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ مِنْ مُجِيبٍ ۚ فَمَا أَوْتَيْنَاهُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَّاءُ الْحَيَوةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۚ وَالَّذِينَ يَحْتَسِبُونَ

1. अर्थात् आकाशों और धरती में।

2. अर्थात् जहाज़ों को।



37. जो बड़े-बड़े गुनाहों और अश्लील कर्मों से बचते हैं और जब उन्हें (किसी पर) क्रोध आता है तो वे क्षमा कर देते हैं;

38. और जिन्होंने अपने रब का हुक्म माना और नमाज़ कायम की, और उनका मामला उनके पारस्परिक परामर्श से चलता है, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं;

39. और जो ऐसे हैं कि जब उनपर ज्यादाती होती है तो वे प्रतिशोध करते हैं।

40. बुराई का बदला वैसी ही बुराई है किन्तु जो क्षमा कर दे और मुधार करे तो उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे है। निश्चय ही वह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता।

41. और जो कोई अपने ऊपर जुल्म होने के पश्चात बदला ले ले, तो ऐसे लोगों पर कोई इलज़ाम नहीं।

42. इलज़ाम तो केवल उनपर आता है जो लोगों पर जुल्म करते हैं और धरती में नाहक ज्यादाती करते हैं। ऐसे लोगों के लिए दुखद यातना है।

43. किन्तु जिसने धैर्य से काम लिया और क्षमा कर दिया तो निश्चय ही वह उन कामों में से है जो (सफलता के लिए) आवश्यक ठहरा दिए गए हैं।

44. जिस व्यक्ति को अल्लाह गुमराही में डाल दे, तो उसके पश्चात उसे संभालनेवाला कोई भी नहीं। तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वे यातना को देख लेंगे तो कह रहे होंगे : "क्या लौटने का भी कोई मार्ग है?"

45. और तुम उन्हें देखोगे कि वे उस (जहन्नम) पर इस दशा में लाए जा रहे हैं कि बेबसी और अपमान के कारण दबे हुए हैं। कनखियों से देख रहे हैं। जो

النَّاسِ

النَّاسِ

كَبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشِ وَإِذَا مَا عَصَبُوا لَهُمْ يَغْفِرُونَ ۖ  
وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ  
شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۖ وَالَّذِينَ  
إِذَا صَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ۖ وَجَزَا سَيِّئَةٍ  
سَيِّئَةٌ قَبْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى  
اللَّهِ إِنَّهُ لَا يَجِبُ الظَّالِمِينَ ۖ وَلَكِنَّ انْتَصَرَ بَعْدَ  
ظُلْمِهِ ۚ فَأُولَٰئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِنْ سَبِيلٍ ۚ إِنَّمَا السَّبِيلُ  
عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ  
بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ وَلَكِنْ صَبَرُوا  
وَعَفَوْا ۚ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۖ وَمَنْ يُضْلِلِ  
اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَاسِعَةٍ ۖ وَمَنْ يَزِدْهُ اللَّهُ الظَّالِمِينَ  
لَمَّا زَاوَا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَىٰ مَرَدٍّ مِنْ  
سَبِيلٍ ۖ وَتَرْهَقُهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خَشِيعَاتٍ مِنْ

مِنْ



लोग ईमान लाए, वे उस समय कहेंगे कि "निश्चय ही घाटे में पड़नेवाले वही हैं जिन्होंने क्रियामत के दिन अपने आपको और अपने लोगों को घाटे में डाल दिया। सावधान! निश्चय ही ज़ालिम स्थिर रहनेवाली यातना में होंगे।

46. और उनके कुछ संरक्षक भी न होंगे, जो सहायता करके उन्हें अल्लाह से बचा सकें। जिसे अल्लाह गुमराही में डाल दे तो उसके लिए फिर कोई मार्ग नहीं।"

47. अपने रब की बात मान लो इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए जो पलटने का नहीं। उस दिन तुम्हारे लिए न कोई शरण-स्थल होगा और न तुम किसी चीज़ को रद्द कर सकोगे।

48. अब यदि वे ध्यान में न लाएँ तो हमने तुम्हें उनपर कोई रक्षक बनाकर तो भेजा नहीं है। तुमपर तो केवल (संदेश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है। हाल यह है कि जब हम मनुष्य को अपनी ओर से किसी दयालुता का आस्वादन कराते हैं तो वह उसपर इतराने लगता है, किन्तु ऐसे लोगों के हाथों ने जो कुछ आगे भेजा है उसके कारण यदि उन्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो निश्चय ही वही मनुष्य बड़ा कृतघ्न बन जाता है।

49-50. अल्लाह ही की है आकाशों और धरती की बादशाही। वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसे चाहता है लड़कियाँ देता है और जिसे चाहता है

النَّارِ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ وَقَالَ الَّذِينَ  
أَمَنُوا إِنَّ الْخَيْرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَ  
أَهْلِيَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي  
عَذَابٍ مُّقْتَرِبٍ ۝ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ أَوْلِيَاءَ  
يَنْصُرُونَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ  
فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ۝ اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُمْ مِنْ  
قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ مَا لَكُمْ  
مِنْ مَلْجَأٍ يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُمْ مِنْ مُّكَبِّرٍ ۝ فَإِنْ  
أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا إِنْ عَلَيْكَ  
إِلَّا الْبَلَاءُ ۝ وَإِذَا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً  
فَرِحَ بِهَا ۝ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ مِمَّا قَدَّمَتْكَ آيَاتُنَا  
فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ۝ اللَّهُمَّكَ السُّلُوبُ وَ  
الْأَرْضُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنْ شَاءَ



लड़के देता है। या उन्हें लड़के और लड़कियाँ मिला-जुलाकर देता है और जिसे चाहता है निस्संतान रखता है। निश्चय ही वह सर्वज्ञ, सामर्थ्यवान है।

51. किसी मनुष्य की यह शान नहीं कि अल्लाह उससे बात करे, सिवाय इसके कि प्रकाशना के द्वारा या परदे के पीछे से (बात करे)। या यह कि वह एक रसूल (फ़रिश्ता) भेज दे, फिर वह उसकी अनुज्ञा से जो कुछ वह चाहता है प्रकाशना कर दे। निश्चय ही वह सर्वोच्च अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

52-53. और इसी प्रकार हमने अपने आदेश से एक रूह (कुरआन) की प्रकाशना तुम्हारी ओर की है। तुम नहीं जानते थे कि किताब क्या होती है और न ईमान को (जानते थे), किन्तु हमने इस (प्रकाशना) को एक प्रकाश बनाया, जिसके द्वारा हम अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं मार्ग दिखाते हैं। निश्चय ही तुम एक सीधे मार्ग की ओर पथप्रदर्शन कर रहे हो—उस अल्लाह के मार्ग की ओर जिसका वह सब कुछ है, जो आकाशों में है और जो धरती में है। सुन लो, सारे मामले अन्ततः अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।



### 43. अज़-ज़ुख़रुफ़

(मक्का में उतरी— आयतें 89)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हा० मीम० ।
2. गवाह है स्पष्ट किताब ।
3. हमने उसे अरबी कुरआन बनाया, ताकि तुम समझो ।



4. और निश्चय ही वह मूल किताब में अंकित है, हमारे यहाँ बहुत उच्च कोटि की, तत्त्वदर्शिता से परिपूर्ण है।

5. क्या इसलिए कि तुम मर्यादाहीन लोग हो, हम तुमपर से बिल्कुल ही नज़र फेर लेंगे?

6. हमने पहले के लोगों में कितने ही रसूल भेजे।

7. किन्तु जो भी नबी उनके पास आया, वे उसका उपहास ही करते रहे।

8. अन्ततः हमने उनको पकड़ में लेकर विनष्ट कर दिया जो उनसे कहीं अधिक बलशाली थे। और पहले के लोगों की मिसाल गुज़र-चुकी है।

9. यदि तुम उनसे पूछो कि "आकाशों और धरती को किसने पैदा किया?" तो वे अवश्य कहेंगे: "उन्हें अत्यन्त प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ सत्ता ने पैदा किया।"

10. जिसने तुम्हारे लिए धरती को गहवारा बनाया और उसमें तुम्हारे लिए मार्ग बना दिए, ताकि तुम्हें मार्गदर्शन प्राप्त हो।

11. और जिसने आकाश से एक अंदाज़े से पानी उतारा। और हमने उसके द्वारा मृत भूमि को जीवित कर दिया। इसी तरह तुम भी (जीवित करके) निकाले जाओगे।

12. और जिसने विभिन्न प्रकार की चीज़ें पैदा कीं, और तुम्हारे लिए वे नौकाएँ और जानवर बनाए जिनपर तुम सवार होते हो।

13. ताकि तुम उनकी पीठों पर जमकर बैठो, फिर याद करो अपने रब की अनुकम्पा को जब तुम उनपर बैठ जाओ और कहो: "कितना महिमावान है

الْأَخْرَجَ

يُنْفِثُ

عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۚ وَإِنَّ فِي أُمِّ الْكِتَابِ  
لَدَيْنَا لَعَلَّ حَكِيمٌ ۖ أَفَتَضْرِبُ عَنْكُمْ الذِّكْرَ صَفْحًا  
أَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ۖ وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَبِيٍّ  
فِي الْأَوَّلِينَ ۖ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ  
يَسْتَهْزِئُونَ ۖ فَاصْلَحْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَمَضَى  
مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ۖ وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ  
وَالْأَرْضَ كَيْفَ قَوْلُنَّ خَلَقْنَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۚ الَّذِي  
جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا  
لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۚ وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً  
بِقَدَرٍ فَأَنْشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَيِّتًا ۚ كَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ۚ  
وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ  
الْفَلَاحِ وَالْإِنْعَامِ مَا تَرْغَبُونَ ۚ لَيْسَ بِأَعْلَى طُغْيُورِهِ  
تُمْ تَذْكُرُوا ۚ نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَ



वह जिसने इसको हमारे वश में किया, अन्यथा हम तो इसे क़ाबू में कर सकनेवाले न थे।

14. और निश्चय ही हम अपने रब की ओर लौटनेवाले हैं।”

15. उन्होंने उसके बन्दों में से कुछ को उसका अंश ठहरा लिया ! निश्चय ही मनुष्य खुला कृतघ्न है।

16. (क्या किसी ने अल्लाह को इससे रोक दिया है कि वह अपने लिए बेटे चुनता) या जो कुछ वह पैदा करता है उसमें से उसने स्वयं ही अपने लिए तो बेटियाँ ली और तुम्हें चुन लिया बेटों के लिए ?

17. और हाल यह है कि जब उनमें से किसी को उसकी मंगल सूचना दी जाती है, जो वह रहमान के लिए बयान करता है, तो उसके मुँह पर कलौंस छा जाती है और वह ग़म के मारे घुटा-घुटा रहने लगता है।

18. और क्या वह जो आभूषणों में पले और वह जो वाद-विवाद और झगड़े में खुल न पाए (ऐसी अबला को अल्लाह की संतान घोषित करते हो) ?

19. उन्होंने फ़रिश्तों को, जो रहमान के बन्दे हैं, स्त्रियाँ ठहरा ली हैं। क्या वे उनकी संरचना के समय मौजूद थे ? उनकी गवाही लिख ली जाएगी और उनसे पूछ होगी।

20. वे कहते हैं कि “यदि रहमान चाहता तो हम उन्हें न पूजते।” उन्हें इसका कुछ ज्ञान नहीं। वे तो बस अटकल दौड़ाते हैं।

21. (क्या हमने इससे पहले उनके पास कोई रसूल भेजा है) या हमने इससे पहले उनको कोई किताब दी है तो वे उसे दृढ़तापूर्वक थामे हुए हैं ?

22. नहीं, बल्कि वे कहते हैं : “हमने तो अपने बाप-दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उन्हीं के पद-चिह्नों पर हैं, सीधे मार्ग पर चल रहे हैं।”

تَقُولُوا سُبْحَنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ  
مُقِرِّينَ ۖ لَوْلَا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ۚ وَجَعَلُوا لَهُ  
مِنْ عِبَادَةٍ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ۚ  
أَمْ اتَّخَذَ مِنَّا يَخْلُقُ بِنِيتٍ وَأَصْفَنَّاكَم بِالْبَيِّنَاتِ  
وَإِذَا بَشَّرَ أَحَدَهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلْأَحْزَانِ مَثَلًا ضَلَّ  
وَجْهَهُ مَسْوُودًا وَهُوَ كَظِيمٌ ۚ أَوْ مَن يَنْشَأُ فِي  
الْجَلْبَةِ وَهُوَ فِي الْغِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ۚ وَجَعَلُوا  
السَّيْلَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبْدُ الرَّحْمَنِ إِنَّا شَاءَ أَشْهَدُ  
حَلَفَهُمْ ۚ سَكَتَ شَهَادَتُهُمْ وَيَسْتَلُونَ ۚ وَكَانُوا  
لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ مَالَهُ ۚ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمِ  
إِنَّ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۚ أَمْ أَنْتِئْهُمُ كِتَابًا مِّن قَبْلِهِ  
فَهُمْ بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ۚ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا  
عَلَىٰ أَمَةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ أَسْرِهِمْ مُهْتَدُونَ ۚ وَكَذَلِكَ مَا



23. इसी प्रकार हमने जिस किसी बस्ती में तुमसे पहले कोई सावधान करनेवाला भेजा तो वहाँ के संपन्न लोगों ने बस यही कहा कि "हमने तो अपने बाप-दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उन्हीं के पद-चिह्नों पर हैं, उनका अनुसरण कर रहे हैं।"

24. उसने कहा : "क्या यदि मैं उससे उत्तम मार्गदर्शन लेकर आया हूँ, जिसपर तूने अपने बाप-दादा को पाया है, तब भी (तुम अपने बाप-दादा के पद-चिह्नों का ही अनुसरण करोगे)?" उन्होंने कहा : "तुम्हें जो कुछ देकर भेजा गया है, हम तो उसका इनकार करते हैं।"—

أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَذِيرٍ ۚ إِذَا قَالَ  
مُتَرَفُّوهُمْ إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أَمَةٍ وَّإِنَّا عَلَىٰ  
أَثَرِهِمْ مُقْتَدُونَ ۖ قُلْ أُولَٰئِكَ جُنُكُم بِأَهْدَىٰ مِنَّا  
وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ  
كَافِرُونَ ۖ فَاتَّبَعْنَاهُمْ مِنْهُمْ فَلَا نَنْظُرُ كَيْفَ كَانَ  
عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۚ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ  
وَقَوْمِهِ إِنِّي أَبْرَأُ مِنْكُمْ تَعْبُدُونَ ۖ إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي  
فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ۖ وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي  
عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۖ بَلْ مَشَتْ هَؤُلَاءِ وَ  
آبَاءُهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعَقَبُ وَرَسُولٌ مُبِينٌ ۖ وَلَمَّا  
جَاءَهُمُ الْعَقَبُ قَالُوا هَذَا إِسْعَرُ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ۖ  
وَقَالُوا لَوْلَا نَزَّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِنَ  
الْقَرِيبِينَ عَظِيمٍ ۖ أَهُمْ يَقْسُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ  
مَرْنِ

25. अन्ततः हमने उनसे बदला लिया। तो देख लो कि झूठलानेवालों का कैसा परिणाम हुआ ?

26-28. याद करो, जबकि इबराहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा : "तुम जिनको पूजते हो उनसे मेरा कोई संबंध नहीं, सिवाय उसके जिसने मुझे पैदा किया। अतः निश्चय ही वह मुझे मार्ग दिखाएगा।" और यही बात वह अपने पीछे (अपनी संतान में) बाक़ी छोड़ गया, ताकि वे रुजू करें।—

29. नहीं, बल्कि मैं उन्हें और उनके बाप-दादा को जीवन-सुख प्रदान करता रहा, यहाँ तक कि उनके पास सत्य और खोल-खोलकर बतानेवाला रसूल आ गया।

30. किन्तु जब वह हज़र लेकर उनके पास आया तो वे कहने लगे : "यह तो जादू है। और हम तो इसका इनकार करते हैं।"

31. वे कहते हैं : "यह कुरआन इन दो बस्तियों के किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं अवतरित हुआ ?"

32. क्या वे तुम्हारे रब की दयालुता को बाँटते हैं ? सांसारिक जीवन में उनके



जीवन-यापन के साधन हमने उनके बीच बाँटे हैं और हमने उनमें से कुछ लोगों को दूसरे कुछ लोगों से श्रेणियों की दृष्टि से उच्च रखा है, ताकि उनमें से वे एक-दूसरे से काम लें। और तुम्हारे रब की दयालुता उससे कहीं उत्तम है जिसे वे समेट रहे हैं।

33-35. यदि इस बात की संभावना न होती कि सब लोग एक ही समुदाय (अधर्मी) हो जाएँगे, तो जो लोग रहमान के साथ कुफ़्र करते हैं उनके लिए हम उनके घरों की छतें चाँदी की कर देते और सीढ़ियाँ भी जिनपर वे

الْأَشْرَارِ  
لَنَحْنُ قَسَمًا بِيَدِهِمْ مَّعِيَّتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَ  
رَافَعًا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ  
بَعْضًا مَّخْرُجًا ۖ وَرَحِمْتَ رِبِّكَ غَيْرَ تَمَّا يَجْحَدُونَ ۖ وَلَوْلَا  
أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ  
بِالرَّحْمَنِ لِيُؤْزِرَهُمْ سُقُطًا مِّنْ فَضَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا  
يَظْهَرُونَ ۖ وَلِبِئْسَ إِلَٰهًا تَسْرُرَ عَلَيْهَا  
يَتَّخِذُونَ ۖ وَزُخْرُقَاءَ ۖ وَإِن كُلُّ ذَٰلِكَ لَمَّا مَتَّامُ  
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ۖ وَمَن  
يَعِشْ عَنِ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نَقِيضٌ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ  
قَرِينٌ ۖ وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّونَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْضَبُونَ  
أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَلَيْتَ بَيْنِي  
وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَيَتَّخِذَ الْقَرِينُ ۖ وَلَن  
يَنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ إِذْ ظَلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ

चढ़ते। और उनके घरों के दरवाज़े भी और वे तख्त भी जिनपर वे टेक लगाते और सोने द्वारा सजावट का आयोजन भी कर देते। यह सब तो कुछ भी नहीं, बस सांसारिक जीवन की अस्थायी सुख-सामग्री है। और आखिरत तुम्हारे रब के यहाँ डर रखनेवालों के लिए है।

36. जो रहमान के स्मरण की ओर से अंधा बना रहता है, हम उसपर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं तो वही उसका साथी होता है।

37. और वे (शैतान) उन्हें मार्ग से रोकते हैं और वे (इनकार करनेवाले) यह समझते हैं कि वे मार्ग पर हैं।

38. यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आएगा तो (शैतान से) कहेगा : “ऐ काश, मेरे और तेरे बीच पूरब के दोनों किनारों की दूरी होती ! तू तो बहुत ही बुरा साथी निकला !”

39. और जबकि तुम ज़ालिम ठहरे तो आज यह बात तुम्हें कुछ लाभ न पहुँचा सकेगी कि यातना में तुम एक-दूसरे के साझी हो।



40. क्या तुम बहरों को सुनाओगे या अंधों को और जो खुली गुमराही में पड़ा हुआ हो उसको राह दिखाओगे ?

41-42. फिर यदि तुम्हें उठा भी लें तब भी हम उनसे बदला लेकर रहेंगे या हम तुम्हें वह चीज़ दिखा देंगे जिसका हमने उनसे वादा किया है। निस्संदेह हमें उनपर पूरी सामर्थ्य प्राप्त है।

43. अतः तुम उस चीज़ को मज़बूती से धामे रहो जिसकी तुम्हारी ओर प्रकाशना की गई। निश्चय ही तुम सीधे मार्ग पर हो।

44. निश्चय ही वह अनुस्मृति है तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए। शीघ्र ही तुम सबसे पूछा जाएगा।

45. तुम हमारे रसूलों से, जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा, पूछ लो कि क्या हमने रहमान के सिवा भी कुछ उपास्य ठहराए थे, जिनकी बन्दगी की जाए ?

46. और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा तो उसने कहा : "मैं सारे संसार के रब का रसूल हूँ।"

47. लेकिन जब वह उनके पास हमारी निशानियाँ लेकर आया तो क्या देखते हैं कि वे लगे उनकी हँसी उड़ाने।

48. और हम उन्हें जो निशानी भी दिखाते वह अपने प्रकार की पहली निशानी से बढ़-चढ़कर होती और हमने उन्हें यातना में ग्रस्त कर लिया, ताकि वे रुजू करें।

49. उनका कहना था : "ऐ जादूगर ! अपने रब से हमारे लिए प्रार्थना कर, उस प्रतिज्ञा के आधार पर जो उसने तुझसे कर रखी है। निश्चय ही हम सीधे मार्ग पर चलेंगे।"

50. फिर जब भी हम उनपर से यातना हटा देते, तो क्या देखते हैं कि वे

مُشْرِكُونَ ۖ أَكَانَتْ تَسْمِعُ الضُّمَمَ أَوْ تَهْدِي الْعُصَى  
وَمَنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۖ فَأَمَّا نَذْرُ هَبْنِ بِكَ  
فَأَنَّا مِنْهُمْ مُنْتَقِمُونَ ۖ أَوْ يُرِيكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ  
فَأَنَّا عَلَيْهِمْ مُقْتَدِرُونَ ۖ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ  
إِلَيْكَ ۚ إِنَّكَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ  
وَلِقَوْمِكَ ۖ وَسَوْفَ تُنْقَلُونَ ۖ وَنَزَّلَ مَنْ أَرْسَلْنَا  
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا ۖ أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ  
إِلَهَةً يُعْبَدُونَ ۖ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَى بِآيَاتِنَا إِلَى  
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ  
فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَضْحَكُونَ ۖ وَمَا يُؤْمِنُ  
مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۖ وَأَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ  
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۖ وَقَالُوا يَا أَيُّهُ الشُّجْرَاذِيُّ ۖ لَنَا رَبُّكَ  
بِمَا عَاهَدَ عِنْدَكَ ۖ إِنَّا لَمُهْتَدُونَ ۖ فَلَمَّا كَشَفْنَا



प्रतिज्ञा-भंग कर रहे हैं।

51. फिरऔन ने अपनी क़ौम के बीच पुकारकर कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! क्या मिस्र का राज्य मेरा नहीं और ये मेरे नीचे बहती नहरें ? तो क्या तुम देखते नहीं ?

52. (यह अच्छा है) या मैं इससे अच्छा हूँ जो तुच्छ है, और साफ़ बोल भी नहीं पाता ?

53. (यदि वह रसूल है तो) फिर ऐसा क्यों न हुआ कि उसके लिए ऊपर से सोने के कंगन डाले गए होते या उसके साथ पार्श्ववर्ती होकर फ़रिश्ते आए होते ?”

54. तो उसने अपनी क़ौम के लोगों को मूर्ख बनाया और उन्होंने उसकी बात मान ली। निश्चय ही वे अवज्ञाकारी लोग थे।

55. अन्ततः जब उन्होंने हमें अप्रसन्न कर दिया तो हमने उनसे बदला लिया और हमने उन सबको डुबो दिया।

56. अतः हमने उन्हें अग्रगामी और बादवालों के लिए शिक्षाप्रद उदाहरण बना दिया।

57. और जब मरयम के बेटे की मिसाल दी गई तो क्या देखते हैं कि उसपर तुम्हारी क़ौम के लोग लगे चिल्लाने।

58. और कहने लगे : “क्या हमारे उपास्य अच्छे हैं या वह (मसीह) ?” उन्होंने यह बात तुमसे केवल झगड़ने के लिए कही, बल्कि वे तो हैं ही झगड़ालू लोग।

59. वह (ईसा मसीह) तो बस एक बन्दा था, जिसपर हमने अनुकम्पा की और उसे हमने इसराईल की संतान के लिए एक आदर्श बनाया।

60. और यदि हम चाहते तो तुममें से फ़रिश्ते पैदा कर देते, जो धरती में

الْمُؤْمِنِينَ

الْمُؤْمِنِينَ

عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْتُحُونَ ۝ وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ  
فِي قَوْمِهِ قَالَ يَقَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ۚ وَهَٰذَا  
الْآنْهَرُ تُجْرِي مِن تَحْتِي ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝ أَمْ أَنَا  
خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مِثْلِي ۚ وَلَا يُكَادُ يُبِينُ ۝  
فَلَوْلَا أَلْقَىٰ عَلَيْهِ سُورَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ  
الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ۝ فَاسْتَفْتَىٰ قَوْمَهُ ۖ فَاطَاعُوهُ ۚ  
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ فَلَمَّا اسْتَفْتَوْا اسْتَفْتَيْنَا  
مِنْهُمْ فَأَعْرَفْتَهُم بِأَسْمَائِهِمْ ۖ فَجَعَلْنَاهُمْ سُلَاقًا وَمَثَلًا  
لِّلْآخَرِينَ ۝ وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ  
مِنْهُ يُصَدِّقُونَ ۝ وَقَالُوا ۙ الْهَٰؤُلَاءِ خَيْرٌ أَمْ هَٰؤُلَاءِ ۖ مَا  
ضُرِبُوا لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۖ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ۝  
إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ ۖ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي  
إِسْرَءِيلَ ۖ وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلَائِكَةً فِي

سَمَاءٍ



उत्तराधिकारी होते ।

61. निश्चय ही वह उस घड़ी (जिसका वादा किया गया है) के ज्ञान का साधन है । अतः तुम उसके बारे में संदेह न करो और मेरा अनुसरण करो । यही सीधा मार्ग है ।

62. और शैतान तुम्हें रोक न दे, निश्चय ही वह तुम्हारा खुला शत्रु है ।

63. जब ईसा स्पष्ट प्रमाणों के साथ आया तो उसने कहा : "मैं तुम्हारे पास तत्त्वदर्शिता लेकर आया हूँ (ताकि उसकी शिक्षा तुम्हें दूँ) और ताकि कुछ ऐसी बातें तुमपर खोल दूँ, जिनमें तुम मतभेद करते हो । अतः अल्लाह का डर रखो और मेरी बात मानो ।

64. वास्तव में अल्लाह ही मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, तो उसी की बन्दगी करो । यही सीधा मार्ग है ।"

65. किन्तु उनमें के कितने ही गिरोहों ने आपस में विभेद किया । अतः तबाही है एक दुखद दिन की यातना से, उन लोगों के लिए जिन्होंने ज़ुल्म किया ।

66. क्या वे बस उस (क्रियामत की) घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह सहसा उनपर आ पड़े और उन्हें खबर भी न हो ।

67. उस दिन सभी मित्र परस्पर एक-दूसरे के शत्रु होंगे सिवाय डर रखनेवालों के ।—

68. "ऐ मेरे बन्दो ! आज न तुम्हें कोई भय है और न तुम शोकाकुल होगे ।"—

69. वह जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और आज्ञाकारी रहे;

70. "प्रवेश करो जन्नत में, तुम भी और तुम्हारे जोड़े भी, हर्षित होकर ।"

71. उनके आगे सोने की तशतरियाँ और प्याले गर्दिश करेंगे और वहाँ वह

الْمُتَّقِينَ

الْمُتَّقِينَ

الْأَرْضِ يَخْلُقُونَ ۝ وَإِنَّ أَوَّلَ لَشَاَعٍ فَلَا تَحْزَنْ  
بِهَا وَاتَّبِعُونِ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ وَلَا يَصْطَنَكُمُ  
الشَّيْطَانُ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝ وَلَنَجْجَنَّ عَيْنِي  
بِالْبَيْتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِإِبْرَاهِيمَ لَكُمْ  
بَعْضُ الَّذِي تَخْتَلَفُونَ فِيهِ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا  
إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۝ هَذَا صِرَاطٌ  
مُسْتَقِيمٌ ۝ فَاجْتَنَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ  
قَوَائِلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابٍ يَوْمَ الْمُنِيرِ ۝ هَلْ  
يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا  
يَشْعُرُونَ ۝ الْأَخْلَاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ  
إِلَّا الْمُسْلِمِينَ ۝ يُعْبَادُوا لَا خَوْفَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ  
تَعَزَّوْنَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ۝  
أَدْخِلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ۝ يُطَافُ

مِنْ



सबकुछ होगा, जो दिलों को भाए  
और आँखें जिससे लज्जत पाएँ।  
“और तुम उसमें सदैव रहोगे।

72-73. यह वह जन्नत है  
जिसके तुम वारिस उसके बदले में  
हुए जो कर्म तुम करते रहे। तुम्हारे  
लिए वहाँ बहुत-से स्वादिष्ट फल हैं  
जिन्हें तुम खाओगे।”

74. निस्संदेह अपराधी लोग  
सदैव जहन्नम की यातना में रहेंगे।

75. वह (यातना) कभी उनपर से  
हल्की न होगी और वे उसी में  
निराश पड़े रहेंगे।

76. हमने उनपर जुल्म नहीं किया,  
परन्तु वे खुद ही ज़ालिम थे।

77. वे पुकारेंगे : “ऐ मालिक<sup>1</sup> ! तुम्हारा रब हमारा काम ही तमाम कर दे !”  
वह कहेगा : “तुम्हें तो इसी दशा में रहना है।”

78. “निश्चय ही हम तुम्हारे पास सत्य लेकर आए हैं, किन्तु तुममें से  
अधिकतर लोगों को सत्य प्रिय नहीं।

79. (क्या उन्होंने कुछ निश्चय नहीं किया है) या उन्होंने किसी बात का  
निश्चय कर लिया है ? अच्छा तो हमने भी निश्चय कर लिया है।

80. या वे समझते हैं कि हम उनकी छिपी बात और उनकी कानाफूसी को  
सुनते नहीं हैं ? क्यों नहीं, और हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनके समीप हैं, वे  
लिखते रहते हैं।”

81. कहो : “यदि रहमान की कोई संतान होती तो सबसे पहले मैं (उसे) पूजता।

82. आकाशों और धरती का रब, सिंहासन का स्वामी, उससे महान और  
उच्च है जो वे बयान करते हैं।”

عَلَيْهِمْ يَصْحَابُ مِنْ ذَهَبٍ وَ أَكْوَابُ ۖ وَ فِيهَا  
مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَ تَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنْتُمْ فِيهَا  
خَالِدُونَ ۖ وَ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ  
تَعْمَلُونَ ۖ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُلُونَ ۖ  
إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّهِينٍ ۖ خَالِدُونَ ۖ لَا  
يُفْتَرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۖ وَمَا ظَنَنْهُمْ  
وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ۖ وَنَادُوا يٰمَلِكُ ۖ لِيَقْضِ  
عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ مُّسْكِرُونَ ۖ لَقَدْ جِئْتَكُمْ  
بِالْحَقِّ وَلَكِنْ أَكْثَرُكُمْ لِلْحَقِّ كَرِهُونَ ۖ أَمْ أَبْرَمُوا  
أَمْرًا فَإِنَّا مُّنِيرُونَ ۖ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ  
وَنَجْوَاهُمْ ۖ بَلَىٰ ۖ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ۖ قُلْ إِن  
كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَكْدَةٌ فَإِنَّا أَوَّلُ الْعَامِدِينَ ۖ سُبْحَنَ  
رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۖ



83. अच्छा, छोड़ो उन्हें कि वे व्यर्थ की बहस में पड़े रहें और खेलों में लगे रहें। यहाँ तक कि उनकी भेंट अपने उस दिन से हो जिसका वादा उनसे किया जाता है।

84. वही है जो आकाशों में भी पूज्य है और धरती में भी पूज्य है और वह तत्त्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

85-86. बड़ी ही बरकतवाली है वह सत्ता, जिसके अधिकार में है आकाशों और धरती की बादशाही और जो कुछ उन दोनों के बीच है उसकी भी। और उसी के पास उस घड़ी का ज्ञान है, और उसी की ओर तुम लौटाये जाओगे। और जिन्हें वे उसके और अपने बीच माध्यम

ठहराकर पुकारते हैं, उन्हें सिफ़ारिश का कुछ भी अधिकार नहीं, बस उसे ही यह अधिकार प्राप्त है जो हक़ की गवाही दे, और ऐसे लोग जानते हैं।—

87. यदि तुम उनसे पूछो कि “उन्हें किसने पैदा किया?” तो वे अवश्य कहेंगे: “अल्लाह ने।” तो फिर वे कहाँ उलटे फिर जाते हैं?—

88. और उसका कहना हो कि “ऐ मेरे रब! निश्चय ही ये वे लोग हैं, जो ईमान नहीं रखते थे।”

89. अच्छा तो उनसे नज़र फेर लो और कह दो: “सलाम है तुम्हें!” अन्ततः शीघ्र ही वे स्वयं जान लेंगे।

الْأَنفَانِ

الْأَنفَانِ



## 44. अददुखान

(मक्का में उतरी— आयतें 59)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हा० मीम०।

2. गवाह है स्पष्ट किताब।



3-6. निस्संदेह हमने उसे एक बरकत भरी रात में अवतरित किया है।—निश्चय ही हम सावधान करनेवाले हैं।— उस (रात) में तमाम तत्त्वदर्शिता युक्त मामलों का फैसला किया जाता है, हमारे यहाँ से आदेश के रूप में। निस्संदेह रसूलों को भेजनेवाले हम ही हैं।— तुम्हारे रब की दयालुता के कारण।— निस्संदेह वही सब कुछ सुननेवाला, जाननेवाला है।

7. आकाशों और धरती का रब और जो कुछ उन दोनों के बीच है उसका भी, यदि तुम विश्वास रखनेवाले हो (तो विश्वास करो कि किताब का अवतरण अल्लाह की दयालुता है)।

8. उसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं; वही जीवित करता और मारता है; तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप-दादों का रब है।

9. बल्कि वे संदेह में पड़े खेल रहे हैं।

10-11. अच्छा तो तुम उस दिन की प्रतीक्षा करो, जब आकाश प्रत्यक्ष धुआँ लाएगा। वह लोगों को ढाँक लेगा। यह है दुखद यातना !

12. (वे कहेंगे :) “ऐ हमारे रब ! हमपर से यातना हटा दे। हम ईमान लाते हैं।”

13-14. अब उनके लिए होश में आने का मौक़ा कहाँ बाक़ी रहा। उनका हाल तो यह है कि उनके पास साफ़-साफ़ बतानेवाला एक रसूल आ चुका है। फिर उन्होंने उसकी ओर से मुँह मोड़ लिया और कहने लगे : “यह तो एक सिखाया- पढ़ाया दीवाना है।”

15-16. “हम यातना थोड़ा हटा देते हैं तो तुम पुनः फिर जाते हो। याद रखो, जिस दिन हम बड़ी पकड़ पकड़ेंगे, तो निश्चय ही हम बदला लेकर रहेंगे।

ثُمَّ بَرَكْنَا إِذَا كُنَّا مُنْذِرِينَ ۝ فِيهَا يُفْرَقُ  
كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ۝ أَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۝ إِذَا كُنَّا  
مُرْسِلِينَ ۝ رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ ۝ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ  
الْعَلِيمُ ۝ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۝  
إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ۝ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۝  
رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝ بَلْ هُمْ  
فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ۝ فَارْتَوِبْ تَائِبٍ إِلَى السَّمَاءِ  
يَدْخُلْنَ مُبِينٍ ۝ يُغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ  
الْبَعْرِ ۝ رَبَّنَا أَكْرِفْ عَنَّا الْعَذَابَ ۝ إِذَا مُؤْمِنُونَ ۝  
أَنَّى لَهُمُ الذِّكْرَى ۝ وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ۝  
ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ۝ إِذَا  
كَاشَفُوا الْعَذَابَ قَلِيلًا ۝ إِنَّكُمْ عَاثِدُونَ ۝  
يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى ۝ إِذَا مُتَّقُونَ ۝

منه



17-18. उनसे पहले हम फ़िरऔन की क़ौम के लोगों को परीक्षा में डाल चुके हैं, जबकि उनके पास एक अत्यन्त सज्जन रसूल आया कि "तुम अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले कर दो। निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय रसूल हूँ।

19. और अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो, मैं तुम्हारे पास एक स्पष्ट प्रमाण लेकर आया हूँ।

20. और मैं इससे अपने रब और तुम्हारे रब की शरण ले चुका हूँ कि तुम मुझ पर पथराव करके मार डालो।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ  
كَرِيمٌ ۚ أَنْ أَدَّأ إِلَيْنَا عِبَادَ اللَّهِ إِلَيْنَا لَكُمْ  
رَسُولٌ أَمِينٌ ۚ وَ أَنْ لَا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ ۚ إِلَيْنَا  
إِنِّي كُمْ سُلْطٰنٌ مُبِينٌ ۚ وَإِلَيْنَا عُذَّتْ بِرِئِي  
وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُوهُ ۚ وَإِنْ لَمْ تُؤْمِنُوا إِلَيْنَا  
فَاعْلَمُوا أَنَّهُ هُوَ الَّذِي أَنْ هُوَ الَّذِي قَوْمُ  
مُجْرِمُونَ ۚ فَاسْرِ بِعِبَادِي كَيْلًا إِنَّكُمْ تُشْجَعُونَ ۚ  
وَ اتَّخَذِ الْبَحْرُ رَهْوًا إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُغْرَقُونَ ۚ  
كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَنَّاتٍ وَ عُيُونٍ ۚ وَ زُرُوعٍ وَ  
مَقَامٍ كَرِيمٍ ۚ وَ نَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ۚ  
كَذٰلِكَ نَدْ وَ أَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخِرِينَ ۚ فَمَا  
بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَ الْأَرْضُ وَ مَا كَانُوا  
مُنظَرِينَ ۚ وَ لَقَدْ نَجَّيْنَا يُونَا إِسْرَآوِيلَ مِنْ

21. किन्तु यदि तुम मेरी बात नहीं मानते तो मुझसे अलग हो जाओ!"

22. अन्ततः उसने अपने रब को पुकारा कि "ये अपराधी लोग हैं।"

23. "अच्छा तुम रातों रात मेरे बन्दों को लेकर चले जाओ। निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जाएगा।

24. और सागर को स्थिर छोड़ दो। वे तो एक सेना दल हैं, डूब जानेवाले।"

25-27. वे छोड़ गए कितने ही बाग़ और स्रोत, और खेतियाँ और उत्तम आवास और सुख-सामग्री जिनमें वे मज़े कर रहे थे।

28. हम ऐसा ही मामला करते हैं, और उन चीज़ों का वारिस हमने दूसरे लोगों को बनाया।

29. फिर न तो आकाश और धरती ने उनपर विलाप किया और न उन्हें मुहलत ही मिली।



30-31. इस प्रकार हमने इसराईल की संतान को अपमानजनक यातना से अर्थात् फ़िरऔन से छुटकारा दिया। निश्चय ही वह मर्यादाहीन लोगों में से बड़ा ही सरकश था।

32. और हमने (उनकी स्थिति को) जानते हुए उन्हें सारे संसारवालों के मुक़ाबले में चुन लिया।

33. और हमने उन्हें निशानियों के द्वारा वह चीज़ दी जिसमें स्पष्ट परीक्षा थी।

34-35. ये लोग बड़ी दृढ़तापूर्वक कहते हैं : "बस यह हमारी पहली मृत्यु ही है, हम दोबारा उठाए जानेवाले नहीं हैं।

36. तो ले आओ हमारे बाप- दादा को, यदि तुम सच्चे हो !"

37. क्या वे अच्छे हैं या तुब्बा की क़ौम या वे लोग जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं ? हमने उन्हें विनष्ट कर दिया, निश्चय ही वे अपराधी थे।

38. हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है उन्हें खेल नहीं बनाया।

39. हमने उन्हें हक़ के साथ पैदा किया, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं।

40. निश्चय ही फ़ैसले का दिन उन सबका नियत समय है,

41-42. जिस दिन कोई अपना किसी अपने के कुछ काम न आएगा और न

النَّاسِ

النَّاسِ

الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝ مِنْ فِرْعَوْنَ ۝ إِنَّهُ كَانَ  
عَالِيًا مِّنَ السُّرِفِينَ ۝ وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ  
عِلْمِ عَلِيِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَآتَيْنَهُم مِّنَ الْآيَاتِ مَا  
فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ۝ إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۝  
إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعْشِرِينَ ۝  
فَاتُّوا بِآبَائِنَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝  
أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۚ وَالَّذِينَ مِّن قَبْلِهِمْ  
أَهْلَكْنَاهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝ وَمَا  
خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لِلْعَيْنِ ۝  
مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا  
يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِنِّيَّائِهِمْ أَجْمَعِينَ ۝  
يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْتٌ عَنْ مَوْتٍ شَيْئًا وَلَا هُمْ  
يُنصَرُونَ ۝ إِلَّا مَن رَّجِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ

مَدِينٌ



उन्हें कोई सहायता पहुँचेगी, सिवाय उस व्यक्ति के जिसपर अल्लाह दया करे। निश्चय ही वह प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

43-46. निस्संदेह ज़क्कूम का वृक्ष गुनहगार का भोजन होगा, तेल की तलछट जैसा, वह पेटों में खौलता होगा जैसे गर्म पानी खौलता है।

47. “पकड़ो उसे, और भड़कती हुई आग के बीच तक घसीट ले जाओ,

48. फिर उसके सिर पर खौलते हुए पानी की यातना उंडेल दो !”

49. “मज़ा चख, तू तो बड़ा बलशाली, सज्जन और आदरणीय है !

50. यही तो है, जिसके विषय में तुम संदेह करते थे।”

51. निस्संदेह डर रखनेवाले निश्चिन्तता की जगह होंगे,

52-53. बागों और स्रोतों में बारीक और गाढ़े रेशम के वस्त्र पहने हुए, एक-दूसरे के आमने-सामने उपस्थित होंगे।

54. ऐसा ही उनके साथ मामला होगा। और हम साफ़ गोरी, बड़ी नेत्रोंवाली स्त्रियों से उनका विवाह कर देंगे।

55. वे वहाँ निश्चिन्तता के साथ हर प्रकार के स्वादिष्ट फल मँगवाते होंगे।

56. वहाँ वे मृत्यु का मज़ा कभी न चखेंगे। बस पहली मृत्यु जो हुई, सो हुई। और उसने उन्हें भड़कती हुई आग की यातना से बचा लिया।

57. यह सब तुम्हारे रब के विशेष उदार अनुग्रह के कारण होगा, वही बड़ी सफलता है।

58. हमने तो इस (कुरआन) को बस तुम्हारी भाषा में सहज एवं सुगम

الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ اِنَّ شَجَرَتَ الرَّقْوْمِ طَعَامُ  
الرَّاحِثِينَ ۝ كَالْهَلِیْ ۝ یُعْطٰی فِی الْبُطُوْنِ ۝ كَعْلٰی  
الْحَمِیْمِ ۝ خُذُوْهُ فَاَعْلُوْهُ اِلٰی سَوَادِ الْجَعِیْمِ ۝  
ثُمَّ صَبُّوْهُ فَوْقَ رَاسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْعَمِیْمِ ۝  
ذُقْ ۝ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْكَرِیْمُ ۝ اِنَّ  
هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ ۝ اِنَّ الشَّقِیْنَ  
فِیْ مَقَامٍ اَمِیْنٍ ۝ فِیْ جَنَّتٍ وَغِیُوْنٍ ۝  
یَلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ ؕ اِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰیلِیْنَ ۝  
كَذٰلِكَ سَوَّرْنٰهُمْ یَخُوْرُوْنَ ۝ اِیْدَعُوْنَ  
فِیْهَا یَكْمُلُ فَاكِهَةً اَمِیْنٍ ۝ لَا یَذُقُوْنَ  
فِیْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُولٰٓءِ ۝ وَوَقَّعْنٰهُمْ  
عَذَابَ الْجَعِیْمِ ۝ فَضَلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۝ ذٰلِكَ  
هُوَ الْقُوْرُ الْعَظِیْمُ ۝ قٰتِلْنَا یَسْرَنَہٗ یٰلِیَّاۤیْكَ

مَدَن



बना दिया है ताकि वे याददिहानी प्राप्त करें।

59. अच्छा तुम भी प्रतीक्षा करो, वे भी प्रतीक्षा में हैं।

## 45. अल-जासिया

(मक्का में उतरी— आयतें 37)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हा० मीम० ।

2. इस किताब का अवतरण अल्लाह की ओर से है, जो अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।—

3. निस्संदेह आकाशों और धरती में ईमानवालों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

4. और तुम्हारी संरचना में, और उनकी भी जो जानवर वह फैलाता रहता है, निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो विश्वास करें।

5. और रात और दिन के उलट-फेर में भी, और उस रोज़ी (पानी) में भी जिसे अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर उसके द्वारा धरती को उसके मुर्दा हो जाने के पश्चात जीवित किया और हवाओं की गर्दिश में भी उन लोगों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लें।

6. ये अल्लाह की आयतें हैं, हम उन्हें हक़ के साथ तुमको सुना रहे हैं। अब आखिर अल्लाह और उसकी आयतों के पश्चात और कौन-सी बात है जिसपर वे ईमान लाएँगे?

7. तबाही है हर झूठ घड़नेवाले गुनहगार के लिए,

8. जो अल्लाह की उन आयतों को सुनता है जो उसे पढ़कर सुनाई जाती हैं। फिर घमंड के साथ अपनी (इनकार की) नीति पर अड़ा रहता है मानो





उसने उनको सुना ही नहीं। अतः उसको दुखद यातना की शुभ सूचना दे दो।

9. जब हमारी आयतों में से कोई बात वह जान लेता है तो वह उनका परिहास करता है, ऐसे लोगों के लिए रुसवा कर देनेवाली यातना है।

10. उनके आगे जहन्नम है, जो उन्होंने कमाया वह उनके कुछ काम न आएगा और न यही कि उन्होंने अल्लाह को छोड़कर अपने संरक्षक ठहरा रखे हैं। उनके लिए तो बड़ी यातना है।

11. यह सर्वथा मार्गदर्शन है।

और जिन लोगों ने अपने रब की आयतों का इनकार किया, उनके लिए हिला देनेवाली दुखद यातना है।

12. वह अल्लाह ही है जिसने समुद्र को तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया है, ताकि उसके आदेश से नौकाएँ उसमें चलें; और ताकि तुम उसका उदार अनुग्रह तलाश करो; और इसलिए कि तुम कृतज्ञता दिखाओ।

13. जो चीज़ें आकाशों में हैं और जो धरती में हैं, उसने उन सबको अपनी ओर से तुम्हारे काम में लगा रखा है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं।

14. जो लोग ईमान लाए उनसे कह दो कि “वे उन लोगों को क्षमा करें (उनकी करतूतों पर ध्यान न दें) जो अल्लाह के दिनों<sup>1</sup> की आशा नहीं रखते, ताकि वह

الْقَوْمُ الْمَذْمُومُونَ  
كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا، فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ  
وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا  
أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ  
وَلَا يَغْنِي عَنْهُمْ مَا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا  
مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ، وَلَهُمْ عَذَابٌ  
عَظِيمٌ  
هَذَا هُدًى، وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ  
رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رَبِّهِمْ أَلِيمٌ  
الَّذِينَ سَخَّرَ لَكُمْ الْبَحْرَ لَتَجْزِيَ الْفُلُكُ  
فِيهِ بِأَمْرِهِ، وَاسْتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ، وَلَعَلَّكُمْ  
تَشْكُرُونَ  
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِنْهُ، إِنَّ فِي ذَلِكَ لَكَلِمٍ  
لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ  
قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا  
لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا

1. 'अल्लाह के दिन' से अभिप्राय वे दिन हैं, जिनमें अल्लाह किसी क़ौम को तबाह करता है या किसी क़ौम को उन्नति प्रदान करता है।



इसके परिणामस्वरूप उन लोगों को उनकी अपनी कमाई का बदला दे।

15. जो कोई अच्छा कर्म करता है तो अपने ही लिए करेगा और जो कोई बुरा कर्म करता है तो उसका वबाल उसी पर होगा। फिर तुम अपने रब की ओर लौटाये जाओगे।

16. निश्चय ही हमने इसराईल की संतान को किताब और हुक्म<sup>1</sup> और पैगम्बरी प्रदान की थी। और हमने उन्हें पवित्र चीजों की रोज़ी दी और उन्हें सारे संसारवालों पर श्रेष्ठता प्रदान की।

17. और हमने उन्हें इस मामले<sup>2</sup> के विषय में स्पष्ट निशानियाँ प्रदान कीं। फिर जो भी विभेद उन्होंने किया, वह इसके पश्चात ही किया कि उनके पास ज्ञान आ चुका था और इस कारण कि वे परस्पर एक-दूसरे पर ज़्यादती करना चाहते थे। निश्चय ही तुम्हारा रब क्रियामत के दिन उनके बीच उन चीज़ों के बारे में फ़ैसला कर देगा, जिनमें वे परस्पर विभेद करते रहे हैं।

18. फिर हमने तुम्हें इस मामले में एक खुले मार्ग (शरीअत) पर कर दिया। अतः तुम उसी पर चलो और उन लोगों की इच्छाओं का अनपालन न करना जो जानते नहीं।

19. वे अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कदापि कुछ काम नहीं आ सकते। निश्चय ही ज़ालिम लोग एक-दूसरे के साथी हैं और डर रखनेवालों का साथी अल्लाह है।

20. यह लोगों के लिए सूझ के प्रकाशों का पुंज है, और मार्गदर्शन और

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَكْسِبُوْنَ ؕ مِّنْ عَمَلٍ صٰلِحٍ ۭ  
فَلَنُفِئَنَّهُمْ ؕ وَمِنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ  
تُرْجَعُوْنَ ؕ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرٰٓءِيْلَ  
الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَهُمْ مِّنَ  
الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنَهُمْ عَلٰى الْعٰلَمِيْنَ ؕ وَاٰتَيْنَهُمْ  
بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَمَا اخْتَلَفُوْا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ  
مَا جَآءَهُمُ الْوَلٰٓءُ بَغْيًاۙ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ  
يَقْضٰى بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَمَا كَانُوْا فِيْهِ  
يَخْتَلِفُوْنَ ؕ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ  
فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ  
اِنَّهُمْ كُنْ يُعْذِرُوْا عَنْكَ مِّنْ اِلٰهِ شَيْئًا ؕ وَاِلٰى  
الظَّٰلِمِيْنَۙ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَاللّٰهُ وَ عَلٰى  
الْمُتَّقِيْنَ ؕ هٰذَا بَصَآٓئِرُ لِلنَّاسِ وَ هُدًى

1. अर्थात् हुक्मत और निर्णय-शक्ति।

2. अर्थात् धर्म।



दयालुता है उन लोगों के लिए जो विश्वास करें।

21. (क्या मार्गदर्शन और पथभ्रष्टता समान हैं) या वे लोग, जिन्होंने बुराइयाँ कमाई हैं, यह समझ बैठे हैं कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए कि उनका जीना और मरना समान हो जाए? बहुत ही बुरा है जो निर्णय वे करते हैं!

22. अल्लाह ने आकाशों और धरती को हक के साथ पैदा किया और इसलिए कि प्रत्येक व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला दिया जाए और उनपर जुल्म न किया जाएगा।

23. क्या तुमने उस व्यक्ति को भी देखा जिसने अपनी इच्छा ही को अपना उपास्य बना लिया? अल्लाह ने (उसकी स्थिति) जानते हुए उसे गुमराही में डाल दिया, और उसके कान और उसके दिल पर ठप्पा लगा दिया और उसकी आँखों पर परदा डाल दिया। फिर अब अल्लाह के पश्चात कौन उसे मार्ग पर ला सकता है? तो क्या तुम शिक्षा नहीं ग्रहण करते?

24. वे कहते हैं: "वह तो बस हमारा सांसारिक जीवन ही है। हम मरते और जीते हैं। हमें तो बस काल (समय) ही विनष्ट करता है।" हालाँकि उनके पास इसका कोई ज्ञान नहीं। वे तो बस अटकलें ही दौड़ाते हैं।

25. और जब उनके सामने हमारी स्पष्ट आयतें पढ़ी जाती हैं, तो उनकी

الْجَانَّةِ

الْجَانَّةِ

وَرَجَعَهُ لِقَوْمٍ يُؤْفِكُونَ ۝ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ  
اجْتَرَعُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ تَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ  
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَخْلِيًّا لَهُمْ  
وَمِمَّا تَتْلُو سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝ وَخَلَقَ اللَّهُ  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْعَقْلِ وَلِتُحْزَنَ كُلُّ  
نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ أَفَرَأَيْتَ  
مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمِهِ  
وَحَشَرَهُ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَغُلُقَيْهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ  
غِشَاةً فَمَنْ يُهْدِيهِ مِنْ بَعْدِ اللَّهِ أَفَلَا  
تَذَكَّرُونَ ۝ وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا  
الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ  
وَمَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا  
يُظْلَمُونَ ۝ وَإِذَا ضَلَلْتَ عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا بَئِيتُ

مَنْ



हुज्जत इसके सिवा कुछ और नहीं होती कि वे कहते हैं : “यदि तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादा को ले आओ।”

26. कह दो : “अल्लाह ही तुम्हें जीवन प्रदान करता है। फिर वही तुम्हें मृत्यु देता है। फिर वही तुम्हें क़ियामत के दिन तक इकट्ठा कर रहा है, जिसमें कोई संदेह नहीं। किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।

27. आकाशों और धरती की बादशाही अल्लाह ही की है। और जिस दिन वह घड़ी घटित होगी उस दिन झूठवाले घाटे में होंगे।

28. और तुम प्रत्येक गिरोह को घुटनों के बल झुका हुआ देखोगे। प्रत्येक गिरोह अपनी किताब की ओर बुलाया जाएगा : “आज तुम्हें उसी का बदला दिया जाएगा, जो तुम करते थे।

29. यह हमारी किताब है, जो तुम्हारे मुक़ाबले में ठीक-ठीक बोल रही है। निश्चय ही हम लिखवाते रहे हैं जो कुछ तुम करते थे।”

30. अतः जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें उनका रब अपनी दयालुता में दाखिल करेगा, यही स्पष्ट सफलता है।

31. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया (उनसे कहा जाएगा :) “क्या तुम्हें

مَا كَانَ حُجَّتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا اسْتُوا  
بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ قُلِ اللَّهُ  
يُعَذِّبُكُمْ ثُمَّ يُعِيْتُكُمْ ثُمَّ يُجْزِعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ  
الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ  
لَا يَعْلَمُونَ ۚ وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِينَ  
وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُخْسِرُ الْبَاطِلُونَ ۚ  
وَنُزِّلَ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَاسِئِهِمْ أَمْةً تُدْعَىٰ  
إِلَىٰ كِتَابِهَا ۖ الْيَوْمَ تُحْجَرُونَ ۖ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ  
هَذَا كِتَابُنَا يُنْطَقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۖ إِنْ كُنَّا  
نَسْتَنِيْعُهُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ فَأَمَّا  
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ  
رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۚ  
وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ أَفَلَمْ تَكُنْ أَتَقَىٰ تَتْلُو



हमारी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं? किन्तु तुमने घमण्ड किया और तुम थे ही अपराधी लोग।

32. और जब कहा जाता था कि 'अल्लाह का वादा सच्चा है और (क्रियामत की) उस घड़ी में कोई संदेह नहीं है।' तो तुम कहते थे: 'हम नहीं जानते कि वह घड़ी क्या है? हमें तो बस एक अनुमान-सा प्रतीत होता है और हमें विश्वास नहीं होता।' "

33. और जो कुछ वे करते रहे उसकी बुराइयाँ उनपर प्रकट हो गईं और जिस चीज़ का वे परिहास करते थे उसी ने उन्हें आ घेरा।

34. और कह दिया जाएगा कि "आज हम तुम्हें भुला देते हैं जैसे तुमने इस दिन की भेंट को भुला रखा था। तुम्हारा ठिकाना अब आग है और तुम्हारा कोई सहायक नहीं।

35. यह इस कारण कि तुमने अल्लाह की आयतों की हँसी उड़ाई थी और सांसारिक जीवन ने तुम्हें धोखे में डाले रखा।" अतः आज वे न तो उससे निकाले जाएँगे और न उनसे यह चाहा जाएगा कि वे किसी उपाय से (अल्लाह के) प्रकोप को दूर कर सकें।

36. अतः सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो आकाशों का रब और धरती का रब, सारे संसार का रब है।

37. आकाशों और धरती में बड़ाई उसी के लिए है, और वही प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَلَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝  
وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَ السَّاعَةُ  
لَأَرِيبٌ فِيهَا قُلْتُمْ مَا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ ۝  
إِنْ نَظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُتَّبِعِينَ ۝  
وَبَدَّ اللَّهُ مَيَّاتٍ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا  
كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ وَقِيلَ الْيَوْمَ نُنْصِلُكُمْ  
كَمَا تَنْتَصِرُونَ الْيَوْمَ هَذَا وَمَا وَكُمُ النَّارُ  
وَمَا لَكُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝ ذَلِكَ بِمَا كُنتُمْ تَأْخُذْتُمْ  
آيَاتِ اللَّهِ هُزُورًا وَعَرَّضْتُمْ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا  
قَالِیَوْمَ لَا يُخْرِجُونَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْبَدُونَ ۝  
فَلِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ رَبِّ  
الْعَالَمِينَ ۝ وَلَهُ الْكِبَرِيَاءُ فِي السَّمَوَاتِ وَ  
الْأَرْضِ ۝ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝



## 46. अल-अहक्राफ़

(मक्का में उतरी— आयतें 35)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हा० मीम० ।

2. इस किताब का अवतरण  
अल्लाह की ओर से है, जो  
प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

3. हमने आकाशों और धरती  
को और जो कुछ उन दोनों के  
मध्य है उसे केवल हफ़ के साथ  
और एक नियत अवधि तक के  
लिए पैदा किया है। किन्तु जिन  
लोगों ने इनकार किया है, वे उस  
चीज़ को ध्यान में नहीं लाते हैं जिससे उन्हें सावधान किया गया है।

4. कहो : “क्या तुमने उनको देखा भी, जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर  
पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्होंने धरती की चीज़ों में से क्या पैदा किया है  
या आकाशों में उनकी कोई साझेदारी है? मेरे पास इससे पहले की कोई  
किताब ले आओ या ज्ञान की कोई अवशेष बात ही, यदि तुम सच्चे हो।”

5. आखिर उस व्यक्ति से बढ़कर पथभ्रष्ट और कौन होगा जो अल्लाह से  
हटकर उन्हें पुकारता हो जो क्रियामत के दिन तक उसकी पुकार को स्वीकार  
नहीं कर सकते, बल्कि वे तो उनकी पुकार से भी बेखबर हैं;

6. और जब लोग इकट्ठे किए जाएँगे तो वे उनके शत्रु होंगे और उनकी  
बन्दगी का इनकार करेंगे।





7. जब हमारी स्पष्ट आयतें उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे लोग जिन्होंने इनकार किया, सत्य के विषय में, जबकि वह उनके पास आ गया, कहते हैं कि "यह तो खुला जादू है।"

8. (क्या ईमान लाने से उन्हें कोई चीज़ रोक रही है) या वे कहते हैं : "उसने इसे स्वयं ही घड़ लिया है?" कहो : "यदि मैंने इसे स्वयं घड़ा है तो अल्लाह के विरुद्ध मेरे लिए तुम कुछ भी अधिकार नहीं रखते। जिसके विषय में तुम बातें बनाने में लगे हो, वह उसे भली-भाँति जानता है। और वह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह की हैसियत से काफ़ी है। और वही बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।"

9. कह दो : "मैं कोई पहला रसूल तो नहीं हूँ। और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और न यह कि तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा। मैं तो बस उसी का अनुगामी हूँ, जिसकी प्रकाशना मेरी ओर की जाती है और मैं तो केवल एक स्पष्ट सावधान करनेवाला हूँ।"

10. कहो : "क्या तुमने सोचा भी (कि तुम्हारा क्या परिणाम होगा)? यदि वह (कुरआन) अल्लाह के यहाँ से हुआ और तुमने उसका इनकार कर दिया, हालाँकि इसराईल की संतान में से एक गवाह ने उसके एक भाग की गवाही भी दी। सो वह ईमान ले आया और तुम घमण्ड में पड़े रहे। अल्लाह तो ज़ालिम लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।"

11. जिन लोगों ने इनकार किया, वे ईमान लानेवालों के बारे में कहते हैं : "यदि वह अच्छा होता तो वे उसकी ओर (बढ़ने में) हमसे अग्रसर न रहते।"

الْأَنْفُسُ

الْأَنْفُسُ

عَلَيْهِمْ أَيْنَتْنَا بَيِّنَاتٍ قَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ  
لَنَا جَاءَهُمْ هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ أَمْ يَقُولُونَ  
افْتَرَاهُ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ  
اللّٰهِ شَيْئًا هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۝ كَفَىٰ بِهِ  
شَهِيدًا بِبَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝  
قُلْ مَا كُنْتُ بِدَعَا مِنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرَىٰ مَا  
يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۖ إِنْ أَتَيْتُم إِلَّا مَا يَوْمَعِي  
إِلَىٰ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ  
كَانَ مِنَ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَٰهِدٌ  
مِّنْ بَنِي إِسْرَٰءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَمَأْنٍ وَ  
اسْتَكْبَرْتُمْ ۖ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّٰلِمِينَ ۝  
وَقَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا  
سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۖ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَيَقُولُونَ

سُورَةُ



और जब उन्होंने उससे मार्ग ग्रहण नहीं किया तो अब अवश्य कहेंगे :  
“यह तो पुराना झूठ है !”

12. हालाँकि इससे पहले मूसा की किताब पथप्रदर्शक और दयालुता रही है। और यह किताब, जो अरबी भाषा में है, उसकी पुष्टि में है, ताकि उन लोगों को सचेत कर दे जिन्होंने जुल्म किया और शुभ सूचना हो उत्तमकारों के लिए।

13. निश्चय ही जिन लोगों ने कहा : “हमारा रब अल्लाह है।” फिर वे उसपर जमे रहे, तो उन्हें न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

14. वही जन्मतवाले हैं, वहाँ वे सदैव रहेंगे उसके बदले में जो वे करते रहे हैं।

15. हमने मनुष्य को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की। उसकी माँ ने उसे (पेट में) तकलीफ़ के साथ उठाए रखा और उसे जना भी तकलीफ़ के साथ। और उसके गर्भ की अवस्था में रहने और दूध छुड़ाने की अवधि तीस माह है, यहाँ तक कि जब वह अपनी पूरी शक्ति को पहुँचा और चालीस वर्ष का हुआ तो उसने कहा : “ऐ मेरे रब ! मुझे संभाल कि मैं तेरी उस अनुकम्पा के प्रति कृतज्ञता दिखाऊँ, जो तूने मुझपर और मेरे माँ-बाप पर की है। और यह कि मैं ऐसा अच्छा कर्म करूँ जो तुझे प्रिय हो और मेरे लिए मेरी संतति में भलाई रख दे। मैं तेरे आगे तौबा करता हूँ और मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ।”

16. ऐसे ही लोग हैं जिनसे हम अच्छे कर्म, जो उन्होंने किए होंगे, स्वीकार

الْأَنْفُسَ

مَعْتَمِدِينَ

هَذَا لَأَنَّكَ قَدِيمٌ ۝ وَمِنْ قَبْلِهِ كُتِبَ مُوسَى  
إِمَامًا وَرَحْمَةً، وَهَذَا كُتِبَ مُصَدِّقٌ لِّسَانِ  
عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ۝  
إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ  
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ  
خَالِدِينَ فِيهَا، جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَ  
وَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا حَمَلَتْهُ  
أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا وَحَمَلُهُ وَفِصْلُهُ  
ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ  
سَنَةً ۖ قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي  
أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا  
تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي اتَّخِذْتُ  
لَكَ وَلِيًّا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ

سُورَةُ



कर लेंगे और उनकी बुराइयों को टाल जाएँगे। इस हाल में कि वे जन्नतवालों में होंगे, उस सच्चे वादे के अनुरूप जो उनसे किया जाता रहा है।

17. किन्तु वह व्यक्ति जिसने अपने माँ-बाप से कहा : “धिक् है तुम पर ! क्या तुम मुझे डराते हो कि मैं (क़ब्र से) निकाला जाऊँगा, हालाँकि मुझसे पहले कितनी ही नस्लें गुज़र चुकी हैं ?” और वे दोनों अल्लाह से फ़रियाद करते हैं— “अफ़सोस है तुझपर ! मान जा। निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है।” किन्तु वह कहता है : “ये तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।”

18. ऐसे ही लोग हैं जिनपर उन गिरोहों के साथ यातना की बात सत्यापित होकर रही<sup>1</sup> जो जिन्नों और मनुष्यों में से उनसे पहले गुज़र चुके हैं। निश्चय ही वे घाटे में रहे।

19. उनमें से प्रत्येक के दरजे उनके अपने किए हुए कर्मों के अनुसार होंगे (ताकि अल्लाह का वादा पूरा हो) और ताकि वह उन्हें उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला चुका दे और उनपर कदापि ज़ुल्म न होगा।

20. और याद करो जिस दिन वे लोग, जिन्होंने इनकार किया, आग के सामने पेश किए जाएँगे। (कहा जाएगा : ) “तुम अपने सांसारिक जीवन में अपनी अच्छी रुचिकर चीज़ें नष्ट कर बैठे और उनका मज़ा ले चुके। अतः आज तुम्हें अपमानजनक यातना दी जाएगी, क्योंकि तुम धरती में बिना किसी

تَقْبَلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَتَتَجَاوَرُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ  
فِي أَصْحَابِ الْجَنَّاتِ وَعَدَ الصّٰدِقِ الَّذِي كَا نُوا  
يُوعِدُونَ ۝ وَالَّذِي قَالَ لِبٰوَالِدَيْهِ أُتِيَ لَكُمْ  
اَتَعِدْنِي اَنْ اُخْرِمَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي ۝  
وَهَٰذَا يَسْتَفِئِفْنِ اللّٰهَ وَيَلِكْ اٰمِنْ ۝ اِنْ وَعَدَ اللّٰهُ  
حَقًّ ۙ فَيَقُولُ مَا هٰذَا اِلَّا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝  
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْ اٰمٍ قَدْ خَلَتْ  
مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنَّهُمْ كَانُوْا  
خٰسِرِيْنَ ۝ وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِّمَّا عَمِلُوْا وَرَٰيُوْنَ فِيْهِمْ  
اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ  
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلٰى النَّارِ اِذْ هَبَّتْ رُجُبُكَ ۙ فِى  
حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۙ فَالْيَوْمَ تُجْرَوْنَ  
عَذَابَ الْهُونِ ۙ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۙ فِى  
نَزَلٍ

1. अर्थात् यातना में ग्रस्त होने और नरक में डाले जाने की बात पूरी होकर रही।



हक़ के घमण्ड करते रहे और इसलिए कि तुम आज्ञा का उल्लंघन करते रहे।”

21. आद के भाई को याद करो, जबकि उसने अपनी क़ौम के लोगों को अहक़ाफ़ में सावधान किया—और उसके आगे और पीछे भी सावधान करनेवाले गुज़र चुके थे— कि : “अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो। मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन की यातना का भय है।”

22. उन्होंने कहा : “क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि झूठ बोलकर हमको हमारे अपने उपास्यों से विमुख कर दे? अच्छा, तो हमपर ले आ, जिसकी तू हमें धमकी देता है, यदि तू सच्चा है।”

23. उसने कहा : “ज्ञान तो अल्लाह ही के पास है (कि वह कब यातना लाएगा)। और मैं तो तुम्हें वह संदेश पहुँचा रहा हूँ जो मुझे देकर भेजा गया है। किन्तु मैं तुम्हें देख रहा हूँ कि तुम अज्ञानता से काम ले रहे हो।”

24. फिर जब उन्होंने उसे बादल के रूप में देखा, जिसका रुख उनकी घाटियों की ओर था, तो वे कहने लगे : “यह बादल है जो हमपर बरसनेवाला है !” “नहीं, बल्कि यह तो वही चीज़ है जिसके लिए तुमने जल्दी मचा रखी थी।—एक वायु है जिसमें दुखद यातना है।

25. हर चीज़ को अपने रब के आदेश से विनष्ट कर देगी।” अन्ततः वे ऐसे हो गए कि उनके रहने की जगहों के सिवा कुछ नज़र न आता था। अपराधी लोगों को हम इसी तरह बदला देते हैं।

26. हमने उन्हें उन चीज़ों में जमाव और सामर्थ्य प्रदान की थी, जिनमें तुम्हें जमाव और सामर्थ्य नहीं प्रदान की। और हमने उन्हें कान, आँखें और दिल

الْأَنْفُسَ

نَسَمَ

الْأَنْفُسَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ۖ وَادْكُرُوا  
آخَا عَادٍ إِذْ أُنْذِرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَّتِ  
النُّجُومُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا  
إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝  
قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَأْفِكَنَّ عَنْ إِلَهِتِنَا فَإِنَّا بِمَا تَعْبُدُنَا  
إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ  
اللّٰهِ وَأُبْلِغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَكِنِّي أَرِكُمْ قُوْمًا  
تُجْهَلُونَ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ  
قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُّمْطَرٌ ۖ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ  
رِيحٌ فِيْهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تَدْمُرُ كُلَّ شَيْءٍ ۖ بِأَمْرِ  
رَبِّهَا فَاصْبِرُوا لَا يَزِيْزُكُمُ الْكَذِبُ ۖ كَذٰلِكَ تَجْزِي  
الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيْهَا ۖ إِنَّ  
مَكَّنَّكُمْ فِيْهِ ۖ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَأَبْصَارًا وَ

مِيزَانٍ



दिए थे। किन्तु न तो उनके कान उनके कुछ काम आए और न उनकी आँखें और न उनके दिल ही। क्योंकि वे अल्लाह की आयतों का इनकार करते थे और जिस चीज़ की वे हँसी उड़ाते थे, उसी ने उन्हें आ घेरा।

27. हम तुम्हारे आस-पास की बस्तियों को विनष्ट कर चुके हैं, हालाँकि हमने तरह-तरह से आयतें पेश की थीं, ताकि वे रुजू करें।

28. फिर क्यों न उन हस्तियों ने उनकी सहायता की जिनको उन्होंने अपने और अल्लाह के बीच माध्यम ठहराकर सामीप्य प्राप्त

करने के लिए उपास्य बना लिया था? बल्कि वे उनसे गुम हो गए, और यह था उनका मिथ्यारोपण और वह कुछ जो वे घड़ते थे।

29. और याद करो (ऐ नबी) जब हमने कुछ जिनों को तुम्हारी ओर फेर दिया जो कुरआन सुनने लगे थे, तो जब वे वहाँ पहुँचे तो कहने लगे : “चुप हो जाओ !” फिर जब वह (कुरआन का पाठ) पूरा हुआ तो वे अपनी क़ौम की ओर सावधान करनेवाले होकर लौटे।

30. उन्होंने कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! हमने एक किताब सुनी है, जो मूसा के पश्चात अवतरित की गई है। उसकी पुष्टि में है जो उससे पहले से मौजूद है, सत्य की ओर और सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है।

31. ऐ हमारी क़ौम के लोगो ! अल्लाह के आमंत्रणकर्ता का आमंत्रण

أَفِدَّةٌ ۖ فَمَا آغَضَ عَنْهُمْ سَعَهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ  
وَلَا أَفِدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ إِذْ كَانُوا يَجْعَلُونَ بَيَاتٍ  
اللَّهُ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۚ وَلَقَدْ  
أَهْلَكْنَا مَا هَوَّلَكُمْ مِنَ الْقُرَىٰ وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ  
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۚ فَلَوْلَا نَصْرُهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا  
مِنْ دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً ۚ بَلْ ضَلُّوا عَنْهُمْ ۚ  
وَذَلِكَ لِأَفْكَهِمْ وَمَا كَانُوا يَفْقَهُونَ ۚ وَإِذْ  
صَرَّفْنَا إِلَيْكَ نَقْرًا مِنَ الْعِجْرِ يَسْمَعُونَ الْقُرْآنَ ۚ  
فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنْصِتُوا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا  
إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُّثْبِتِينَ ۚ قَالُوا يَقُومُونَ إِنْآ سَمِعْنَا  
كَذِبًا ۚ أَنْزَلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ  
يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ۚ  
يَقُومُونَ أَحْيِيُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ ۚ يَعْقِلْ لَكُمْ



स्वीकार करो और उसपर ईमान लाओ। अल्लाह तुम्हें क्षमा करके गुनाहों से तुम्हें पाक कर देगा और दुखद यातना से तुम्हें बचाएगा।

32. और जो कोई अल्लाह के आमंत्रणकर्ता का आमंत्रण स्वीकार नहीं करेगा तो वह धरती में क़ाबू से बच निकलनेवाला नहीं है और न अल्लाह से हटकर उसके संरक्षक होंगे। ऐसे ही लोग खुली गुमराही में हैं।”

33. क्या उन्होंने देखा नहीं कि जिस अल्लाह ने आकाशों और धरती को पैदा किया और उनके पैदा करने से थका नहीं; क्या ऐसा नहीं कि वह मुर्दों को जीवित कर दे? क्यों नहीं, निश्चय ही उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

34. और याद करो जिस दिन वे लोग, जिन्होंने इनकार किया, आग के सामने पेश किए जाएँगे; (कहा जाएगा:) “क्या यह सत्य नहीं है?” वे कहेंगे: “क्यों नहीं, हमारे रब की क़सम!” वह कहेगा: “तो अब यातना का मज़ा चखो, उस इनकार के बदले में जो तुम करते रहे थे।”

35. अतः धैर्य से काम लो, जिस प्रकार संकल्पवान रसूलों ने धैर्य से काम लिया। और उनके लिए जल्दी न करो। जिस दिन वे लोग उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है, तो वे महसूस करेंगे कि जैसे वे बस दिन की एक घड़ी भर ही ठहरे थे। यह (संदेश) साफ़-साफ़ पहुँचा देना है। अब क्या अवज्ञाकारी लोगों के अतिरिक्त कोई और विनष्ट होगा?

الْأَنفَاتِ

خُسْبَةٍ

مِنْ دُؤُوبِكُمْ وَيُجْزَكُمُ مِنْ عَذَابِ الْيَمِينِ ۚ وَمَنْ لَا يُجِيبِ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعِجِّزٍ فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءُ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۚ أُولَٰئِكَ يَدْرَأُ أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَتَّخِذْ يَخْلُقْهُنَّ بِقُدْرٍ عَلَىٰ أَنْ يُخْزِيَ النَّوْثَةَ ۚ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ ۚ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۚ فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعِزِّ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ ۚ كَانَتْهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ ۚ لَمْ يَلْبِسُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ بَلَاءً ۚ فَهَلْ يَمْلِكُ إِلَّا الْقَوْمُ الْفَاسِقُونَ ۚ

مَذَل



## 47. मुहम्मद

(मदीना में उतरी— आयतें 38)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. जिन लोगों ने इनकार किया  
और अल्लाह के मार्ग से रोका  
उनके कर्म उसने अकारध कर  
दिए।

2. रहे वे लोग जो ईमान लाए  
और उन्होंने अच्छे कर्म किए और  
उस चीज़ पर ईमान लाए जो  
मुहम्मद पर अवतरित किया  
गया— और वही सत्य है उनके  
रब की ओर से— उसने उनकी  
बुराइयाँ उनसे दूर कर दीं और उनका हाल ठीक कर दिया।

3. यह इसलिए कि जिन लोगों ने इनकार किया उन्होंने असत्य का  
अनुसरण किया और यह कि जो लोग ईमान लाए उन्होंने सत्य का अनुसरण  
किया, जो उनके रब की ओर से है। इस प्रकार अल्लाह लोगों के लिए उनकी  
मिसालें बयान करता है।

4. अतः जब इनकार करनेवालों से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो (उनकी) गरदन  
मारना है, यहाँ तक कि जब उन्हें अच्छी तरह कुचल दो तो बन्धनों में जकड़ो,  
फिर बाद में या तो एहसान करो या फ़िदया (अर्थ-दण्ड) का मामला करो, यहाँ  
तक कि युद्ध अपने बोझ उतारकर रख दे। यह भली-भाँति समझ लो, यदि  
अल्लाह चाहे तो स्वयं उनसे निपट ले। किन्तु (उसने यह आदेश इसलिए  
दिया), ताकि तुम्हारी एक-दूसरे के द्वारा परीक्षा ले। और जो लोग अल्लाह के





मार्ग में मारे जाते हैं उनके कर्म वह कदापि अकारथ न करेगा।

5. वह उनका मार्गदर्शन करेगा और उनका हाल ठीक कर देगा।

6. और उन्हें जन्नत में दाखिल करेगा, जिससे वह उन्हें परिचित करा चुका है।

7. ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो, यदि तुम अल्लाह की सहायता करोगे तो वह तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे क्रदम जमा देगा।

8. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया, तो उनके लिए तबाही है। और उनके कर्मों को अल्लाह ने अकारथ कर दिया।

مُحَمَّدٌ

مُحَمَّدٌ

يُضِلُّ أَعْمَالَهُمْ ۖ سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۖ وَ  
يُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَفَهَا لَهُمْ ۖ يَأْتِيهَا الَّذِينَ  
آمَنُوا إِنْ تَنَصَّرُوا لِلَّهِ يُنْصِرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ۖ  
وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَنَّا لَهُمْ وَأَصْلًا أَعْمَالَهُمْ ۖ  
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أُنْزِلَ اللَّهُ فَاحْبَطُ أَعْمَالَهُمْ ۖ  
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ  
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ دَعَا اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ  
أَمْثَالُهَا ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُ مَوَّلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ  
الْكَافِرِينَ لَا مَوَّلَى لَهُمْ ۖ إِنْ اللَّهُ يُدْخِلِ الَّذِينَ  
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا  
الْأَنْهَارُ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَحْتَمِلُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا  
تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَشْوَى لَهُمْ ۖ وَكَأَيِّنْ مِنْ  
قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجْتِكَ

9. यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ को नापसन्द किया जिसे अल्लाह ने अवतरित किया, तो उसने उनके कर्म अकारथ कर दिए।

10. क्या वे धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं? अल्लाह ने उन्हें तहस-नहस कर दिया, और इनकार करनेवालों के लिए ऐसे ही मामले होने हैं।

11. यह इसलिए कि जो लोग ईमान लाए उनका संरक्षक अल्लाह है और यह कि इनकार करनेवालों का कोई संरक्षक नहीं।

12. निश्चय ही अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया, वे कुछ दिनों का सुख भोग रहे हैं और खा रहे हैं, जिस तरह चौपाए खाते हैं। और आग उनका ठिकाना है।



13. कितनी ही बस्तियाँ थीं जो शक्ति में तुम्हारी उस बस्ती से, जिसने तुम्हें निकाल दिया, बढ़-चढ़कर थीं। हमने उन्हें विनष्ट कर दिया! फिर कोई उनका सहायक न हुआ।

14. तो क्या जो व्यक्ति अपने रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हो वह उन लोगों जैसा हो सकता है, जिन्हें उनका बुरा कर्म ही सुहाना लगता हो और वे अपनी इच्छाओं के पीछे ही चलने लग गए हों?

15. उस जन्नत की शान, जिसका वादा डर रखनेवालों से किया गया है, यह है कि उसमें ऐसे पानी की नहरें होंगी जो प्रदूषित नहीं होता।

और ऐसे दूध की नहरें होंगी जिसके स्वाद में तनिक भी अन्तर न आया होगा, और ऐसे पेय की नहरें होंगी जो पीनेवालों के लिए मज्जा ही मज्जा होंगी, और साफ़-सुथरे शहद की नहरें भी होंगी। और उनके लिए वहाँ हर प्रकार के फल होंगे और क्षमा उनके अपने रब की ओर से—क्या वे उन जैसे हो सकते हैं, जो सदैव आग में रहनेवाले हैं और जिन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, जो उनकी आँतों को टुकड़े-टुकड़े करके रख देगा?

16. और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उन लोगों से, जिन्हें ज्ञान प्रदान हुआ है, कहते हैं: "उन्होंने अभी-अभी क्या कहा?" वही वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने ठप्पा लगा दिया है और वे अपनी इच्छाओं के पीछे चले हैं।

17. रहे वे लोग जिन्होंने सीधा रास्ता अपनाया, (अल्लाह ने) उनके मार्गदर्शन में अभिवृद्धि कर दी और उन्हें उनकी परहेज़गारी प्रदान की।

18. अब क्या वे लोग बस उस घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह उनपर

مُحَمَّدٌ

نُحْمٌ

أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝ أَقْنَنَ كَانَ عَلَىٰ بَيْتِكَ  
مِنْ رَبِّهِ كَمَنْ زَيْنَ لَهُ سُوءَ عِلْمِهِ ۝ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۝  
مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ  
مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرَ طَعْمُهُ ۝  
وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلْبَشَرِ ۝ وَأَنْهَارٌ مِنْ  
عَسَلٍ مُّصَفًّى ۝ وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ  
وَمَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ ۝ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ ۝  
سَقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ  
يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا  
لِلَّذِينَ أُوتُوا الْوَحْيَ مَاذَا قَالَ أَنْفَاءٌ أُولَٰئِكَ  
الَّذِينَ كُتِبَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۝  
وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ تَقْوَاهُمْ ۝  
فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۝

مِثْلُ



अचानक आ जाए? उसके लक्षण तो सामने आ चुके हैं, जब वह स्वयं उनपर आ जाएगी तो फिर उनके लिए होश में आने का अवसर कहाँ शेष रहेगा?

19. अतः जान रखो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। और अपने गुनाहों के लिए क्षमा-याचना करो और मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों के लिए भी। अल्लाह तुम्हारी चलत-फिरत को भी जानता है और तुम्हारे ठिकाने को भी।

20. जो लोग ईमान लाए वे कहते हैं : “कोई सूरा क्यों नहीं उतरी?” किन्तु जब एक पक्की सूरा अवतरित की जाती है, जिसमें युद्ध का उल्लेख होता है, तो तुम उन लोगों को देखते हो जिनके दिलों में रोग है कि वे तुम्हारी ओर इस प्रकार देखते हैं जैसे किसी पर मृत्यु की बेहोशी छा गई हो। तो अफ़सोस है उनके हाल पर !

21. उनके लिए उचित है आज्ञापालन और अच्छी-भली बात। फिर जब (युद्ध की) बात पक्की हो जाए (तो युद्ध करना चाहिए) तो यदि वे अल्लाह के लिए सच्चे साबित होते तो उनके लिए ही अच्छा होता।

22. यदि तुम उल्टे फिर गए तो क्या तुम इससे निकट हो कि धरती में बिगाड़ पैदा करो और अपने नातों-रिश्तों को काट डालो ?

23. ये वे लोग हैं जिनपर अल्लाह ने लानत की और उन्हें बहरा और उनकी आँखों को अन्धा कर दिया।

24. तो क्या वे कुरआन में सोच-विचार नहीं करते या उनके दिलों पर ताले लगे हैं ?

25. वे लोग जो पीठ फेरकर पलट गए, इसके पश्चात कि उनपर मार्ग स्पष्ट

مُحَمَّدٌ

خَاتَمٌ

فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا، فَأَنَّى لَهُمْ إِذَا جَاءَهُمْ  
ذِكْرُهُمْ ۖ قَالُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرُوا  
لِدُنْيِهِمْ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ  
مَتَقَلِّبُكُمْ وَمَشَاوِكُمْ ۖ وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا تَوَلَّوْا  
نُزِلَتْ سُورَةٌ ۚ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مُّحْكَمَةٌ  
وَذَكِّرْ فِيهَا الْقِتَالَ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ  
مَّرَضٌ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ  
النُّبِيِّ ۚ قَالُوا لَهُمْ ۖ طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَعْرُوفٌ ۚ  
فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرَ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا  
لَّهُمْ ۖ فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي  
الْأَرْضِ وَتَقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ  
لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعَمَّى أَبْصَارَهُمْ ۚ أَقَلًّا  
يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْرًا عَلَى قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ۚ إِنَّ

مَزَلْ



हो चुका था, उन्हें शैतान ने बहका दिया और उसने उन्हें ढील दे दी।

26. यह इसलिए कि उन्होंने उन लोगों से, जिन्होंने उस चीज़ को नापसन्द किया जो कुछ अल्लाह ने उतारा है, कहा कि "हम कुछ मामलों में तुम्हारी बात मान लेंगे।" अल्लाह उनकी गुप्त बातों को भली-भाँति जानता है।

27. फिर उस समय क्या हाल होगा जब फ़रिश्ते उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते हुए उनकी रूहें क़ब्ज़ करेंगे?

28. यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ का अनुसरण किया जो अल्लाह को अप्रसन्न करनेवाली थी और उन्होंने उसकी खुशी को नापसन्द किया तो उसने उनके कर्मों को अकारथ कर दिया।

29. (क्या अल्लाह से कोई चीज़ छिपी है) या जिन लोगों के दिलों में रोग है वे यह समझ बैठे हैं कि अल्लाह उनके द्वेषों को कदापि प्रकट न करेगा?

30. यदि हम चाहें तो उन्हें तुम्हें दिखा दें, फिर तुम उन्हें उनके लक्षणों से पहचान लो; किन्तु तुम उन्हें उनकी बातचीत के ढब से अवश्य पहचान लो। अल्लाह तो तुम्हारे कर्मों को जानता ही है।

31. हम अवश्य तुम्हारी परीक्षा करेंगे, यहाँ तक कि हम तुममें से जो जिहाद करनेवाले हैं और जो दृढ़तापूर्वक जमे रहनेवाले हैं उनको जान लें<sup>1</sup> और तुम्हारी हालतों को जाँच लें।

32. जिन लोगों ने इसके पश्चात कि मार्ग उनपर स्पष्ट हो चुका था, इनकार

مَسَد

مَسَد

الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَأَ لَهُمْ ۖ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأُمُورِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ۚ فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّيْتُهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ ۚ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۚ أَمْرٌ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ أَن لَّنْ يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْعَافَهُمْ ۚ وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَتَعْرِفَهُمْ ۖ لَيْسَ لَهُمْ دَلِيلٌ فَتَعْرِفَهُمْ ۚ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ۚ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجْتَهِدِينَ مِنكُمُ وَالضَّالِّينَ ۚ وَنَبْلُوَنَّكُمْ ۖ وَنَبْلُوَنَّكُمْ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَتَأْتُوا

مَسَد



किया और अल्लाह के मार्ग से रोका और रसूल का विरोध किया, वे अल्लाह को कदापि कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे, बल्कि वही उनका सब किया-कराया उनकी जान को लागू कर देगा।

33. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो और अपने कर्मों को विनष्ट न करो।

34. निश्चय ही जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका और इनकार करनेवाले ही रहकर मर गए, अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा न करेगा।

الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۖ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۚ وَسَيُحِطُّ أَعْمَالُهُمْ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ فَلَا تَهْجُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلَامَةِ وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ ۗ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتْرُكَ أَعْمَالَكُمْ ۚ إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُوَ وَلِإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّبِعُوا يُؤْتِكُمْ أَجُورَكُمْ وَلَا يَسْتَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ۚ إِنَّ يَسْتَلْكُمْ بِهَا فَيُغْفِكُمْ بَخِلُوا وَ يَخْرُجْ أَضْعَافًا كَثِيرًا ۚ هَٰ أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخُلُ ۚ وَمَنْ يَبْخُلْ فَإِنَّمَا يَبْخُلُ عَنْ نَفْسِهِ ۚ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمْ الْفُقَرَاءُ ۚ

35. अतः ऐसा न हो कि तुम हिम्मत हार जाओ और सुलह का निमंत्रण देने लगे, जबकि तुम ही प्रभावी हो। अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह तुम्हारे कर्मों (के फल) में तुम्हें कदापि हानि न पहुँचाएगा।

36. सांसारिक जीवन तो बस एक खेल और तमाशा है। और यदि तुम ईमान लाओ और डर रखो तो वह तुम्हारे कर्मफल तुम्हें प्रदान करेगा— और तुम्हारे धन तुमसे नहीं माँगेगा।—

37. और यदि वह उनको तुमसे माँगे और समेटकर तुमसे माँगे तो तुम कंजूसी करोगे। और वह तुम्हारे द्वेष को निकाल बाहर कर देगा।

38. सुनो ! यह तुम्हीं लोग हो कि तुम्हें आमंत्रण दिया जा रहा है कि "अल्लाह के मार्ग में खर्च करो।" फिर तुममें कुछ लोग हैं जो कंजूसी करते हैं। हालाँकि जो कंजूसी करता है वह, वास्तव में अपने आप ही से कंजूसी



करता है। अल्लाह तो निस्पृह है, तुम्हीं मुहताज हो। और यदि तुम फिर जाओ तो वह तुम्हारी जगह अन्य लोगों को ले आएगा; फिर वे तुम जैसे न होंगे।

## 48. अल-फ़तह

(मदीना में उतरी— आयतें 29)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. निश्चय ही हमने तुम्हारे लिए एक खुली विजय प्रकट की,

2. ताकि अल्लाह तुम्हारे अगले और पिछले गुनाहों को क्षमा कर दे और तुमपर अपनी अनुकम्पा पूर्ण कर दे और तुम्हें सीधे मार्ग पर चलाए,

3. और अल्लाह तुम्हें प्रभावकारी सहायता प्रदान करे।

4. वही है जिसने ईमानवालों के दिलों में सकीना (प्रशान्ति) उतारी, ताकि अपने ईमान के साथ वे और ईमान की अभिवृद्धि करें—आकाशों और धरती की सभी सेनाएँ अल्लाह ही की हैं, और अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।—

5. ताकि वह मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को ऐसे बागों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी कि वे उनमें सदैव रहें और उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दे—यह अल्लाह के यहाँ बड़ी सफलता है।—

وَأِنْ تَسْأَلُوا بِسَبِيلِ قَوْمٍ غَيْرِكُمْ، ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُمْ ۖ

سُورَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ (19)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا ۚ لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۚ وَيَنْصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَظِيمًا ۚ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ الشَّكِيكَةَ ۚ تِلْكَ

الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَعَ إِيمَانِهِمْ ۚ وَاللَّهُ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۚ لِيَدْخُلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَ لَا يُكَفَّرُ عَنْهُمْ سَرِيرَاتُهُمْ ۚ وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ قَوْزًا



6. और कपटाचारी पुरुषों और कपटाचारी स्त्रियों और बहुदेववादी पुरुषों और बहुदेववादी स्त्रियों को, जो अल्लाह के बारे में बुरा गुमान रखते हैं, यातना दे। उन्हीं पर बुराई की गर्दिश है। उनपर अल्लाह का क्रोध हुआ और उसने उनपर लानत की, और उसने उनके लिए जहन्नम तैयार कर रखा है, और वह अत्यन्त बुरा ठिकाना है !

7. आकाशों और धरती की सब सेनाएँ अल्लाह ही की हैं। अल्लाह प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

8. निश्चय ही हमने तुम्हें गवाही देनेवाला और शुभ सूचना देनेवाला और सचेतकर्ता बनाकर भेजा,

9. ताकि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, उसे सहायता पहुँचाओ और उसका आदर करो, और प्रातःकाल और संध्या समय उसकी तसबीह करते रहो।

10. (ऐ नबी) वे लोग जो तुमसे बैअत करते हैं<sup>1</sup> वे तो वास्तव में अल्लाह ही से बैअत करते हैं। उनके हाथों के ऊपर अल्लाह का हाथ होता है। फिर जिस किसी ने वचन भंग किया तो वह वचन भंग करके उसका वबाल अपने ही सिर लेता है, किन्तु जिसने उस प्रतिज्ञा को पूरा किया जो उसने अल्लाह से की है, तो उसे वह बड़ा बदला प्रदान करेगा।

11. जो बददू पीछे रह गए थे, वे अब तुमसे कहेंगे : “हमारे माल और हमारे घरवालों ने हमें व्यस्त कर रखा था; तो आप हमारे लिए क्षमा की

عَظِيمًا ۖ وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّالِمِينَ بِمَا شَاءَ اللَّهُ الشُّرُوءَ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَكَفَّهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَسِيمًا ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۖ لِيُؤْمِنُوا بِمَا شَاءَ وَرَسُولِهِ وَلِيَعَزَّزُوا تَوَكُّدَهُ وَلِيُثَبِّتُوا بُكْرَتَهُ وَأُصِيلًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ ۖ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۖ فَمَنْ شَكَّ فَإِنَّا يَكْفُتُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۚ وَمَنْ أَرْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللَّهُ فَيَمُوتْ بِهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا

مَزِين

1. अर्थात् तुम्हारे हाथ पर अपना हाथ रखकर निष्ठा और आज्ञापालन की प्रतिज्ञा करते हैं।



प्रार्थना कीजिए !” वे अपनी ज़बानों से वे बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं। कहना कि “कौन है जो अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे लिए किसी चीज़ का अधिकार रखता है, यदि वह तुम्हें कोई हानि पहुँचानी चाहे या वह तुम्हें कोई लाभ पहुँचाने का इरादा करे? बल्कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी खबर रखता है।

12. नहीं, बल्कि तुमने यह समझा कि रसूल और ईमानवाले अपने घरवालों की ओर लौटकर कभी न आएँगे और यह तुम्हारे दिलों को अच्छा लगा। तुमने तो बहुत बुरे गुमान किए और तुम्हीं लोग हुए तबाही में पड़नेवाले।”

13. और जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान न लाया, तो हमने भी इनकार करनेवालों के लिए भड़कती आग तैयार कर रखी है।

14. अल्लाह ही की है आकाशों और धरती की बादशाही। वह जिसे चाहे क्षमा करे और जिसे चाहे यातना दे। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

15. जब तुम ग़नीमतों<sup>1</sup> को प्राप्त करने के लिए उनकी ओर चलोगे तो पीछे रहनेवाले कहेंगे : “हमें भी अनुमति दी जाए कि हम तुम्हारे साथ चलें।” वे चाहते हैं कि अल्लाह के कथन<sup>2</sup> को बदल दें। कह देना : “तुम हमारे साथ

وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۖ يَقُولُونَ بِإِذْنِهِمْ  
مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ  
مِنْ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ  
بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝  
بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَنْقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ  
إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا ۚ وَزَيْنَ ذَلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ  
وَلَقَدْ ظَنَنْتُمْ أَنْ السُّوءَ ۖ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ۝  
وَمَنْ لَّهُ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا  
لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۚ وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ  
يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَكَانَ اللَّهِ  
غُفُورًا رَحِيمًا ۚ سَيَقُولُ الْخَافُونَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ  
إِلَىٰ مَغَائِمٍ لَّنَا أَخْذُوهَا ذُرُوءًا نَتَّبِعْكُمْ  
يُرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلِمَ اللَّهِ قُلْ لَنْ تَتَّبِعُونَا

1. धर्म-युद्ध में प्राप्त होनेवाला माल।

2. अर्थात् अल्लाह के आदेश और फ़ैसले।



कदापि नहीं चल सकते। अल्लाह ने पहले ही ऐसा कह दिया है।" इसपर वे कहेंगे : "नहीं, बल्कि तुम हमसे ईर्ष्या कर रहे हो।" नहीं, बल्कि वे लोग समझते थोड़े ही हैं।

16. पीछे रह जानेवाले बददुओं से कहना : "शीघ्र ही तुम्हें ऐसे लोगों की ओर बुलाया जाएगा जो बड़े युद्धवीर हैं कि तुम उनसे लड़ो या वे आज्ञाकारी हो जाएँ। तो यदि तुम आज्ञापालन करोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा बदला प्रदान करेगा। किन्तु यदि तुम फिर गए, जैसे पहले फिर गए थे, तो वह तुम्हें दुखद यातना देगा।"

كَذَّبَكُمْ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلِ ۖ فَسَيَقُولُونَ بَلْ  
تَحْسُدُونَنَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝  
قُلْ يَلْعَنُ الْخَلْفَيْنِ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعُونَ إِلَى  
قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ۚ  
فَإِنْ تَطِيعُوا يُؤْخَذْكُمْ اللَّهُ بِأَجْرٍ حَسَنٍ ۚ وَإِنْ  
تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا  
أَلِيمًا ۝ كَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرِيمٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَى  
حَرِيمٌ وَلَا عَلَى الْمُرْئِضِ حَرِيمٌ ۚ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ  
وَرَسُولَهُ يَدْخُلْهُ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا  
الْأَنْهَارُ ۚ وَمَنْ يُتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۝  
لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُوكَ  
تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ  
السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ۝ وَمَغَانِمَ

مَبْرُورٍ

17. न अन्धे के लिए कोई हरज है, न लँगड़े के लिए कोई हरज है और न बीमार के लिए कोई हरज है। जो भी अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करेगा, उसे वह ऐसे बागों में दाखिल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, किन्तु जो मुँह फेरेंगे उसे वह दुखद यातना देगा।

18. निश्चय ही अल्लाह मोमिनों से प्रसन्न हुआ, जब वे वृक्ष के नीचे तुमसे बैअत कर रहे थे। उसने उसे जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था। अतः उनपर उसने सकीना (प्रशान्ति) उतारी और बदले में उन्हें शीघ्र मिलनेवाली विजय निश्चित कर दी;

19. और बहुत-सी ग़नीमतें भी, जिन्हें वे प्राप्त करेंगे। अल्लाह प्रभुत्वशाली,



तत्त्वदर्शी है।

20. अल्लाह ने तुमसे बहुत-सी ग़नीमतों का वादा किया है, जिन्हें तुम प्राप्त करोगे। यह विजय तो उसने तुम्हें तात्कालिक रूप से निश्चित कर दी। और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए (कि वे तुमपर आक्रमण करने का साहस न कर सकें) और ताकि ईमानवालों के लिए एक निशानी हो। और वह सीधे मार्ग की ओर तुम्हारा मार्गदर्शन करे।

21. इसके अतिरिक्त दूसरी और विजय का भी वादा है, जिसकी सामर्थ्य अभी तुम्हें प्राप्त नहीं, उन्हें अल्लाह ने घेर रखा है। अल्लाह को हर चीज की सामर्थ्य प्राप्त है।

22. यदि (मक्का के) इनकार करनेवाले तुमसे लड़ते तो अवश्य ही पीठ फेर जाते। फिर यह भी कि वे न तो कोई संरक्षक पाएँगे और न कोई सहायक।

23. यह अल्लाह की उस रीति के अनुकूल है जो पहले से चली आई है, और तुम अल्लाह की रीति में कदापि कोई परिवर्तन न पाओगे।

24. वही है जिसने उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे मक्के की घाटी में रोक दिए। इसके पश्चात कि वह तुम्हें उनपर प्रभावी कर चुका था। अल्लाह उसे देख रहा था जो कुछ तुम कर रहे थे।

25. ये वही लोग तो हैं जिन्होंने इनकार किया और तुम्हें मस्जिदे हराम (काबा) से रोक दिया और कुरबानी के बँधे हुए जानवरों को भी इससे रोके

كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝  
وَعَدَكُمْ اللَّهُ مَغَارِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَلَ  
لَكُمْ هَذِهِ ۚ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُونَ  
آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝  
وَأُخْرَى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ۚ  
وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝ وَلَوْ قَتَلَكُمْ  
الَّذِينَ كَفَرُوا لَکُلُوا الْأَذْهَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا  
وَلَا نَصِيرًا ۝ سُبْحَةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ  
قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝ وَهُوَ  
الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ  
بَبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ  
وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝ هُمُ الَّذِينَ  
كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ

مَذَلَّ



रखा कि वे अपने ठिकाने पर पहुँचें। यदि यह खयाल न होता कि बहुत-से मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियाँ (मक्का में) मौजूद हैं, जिन्हें तुम नहीं जानते, उन्हें कुचल दोगे, फिर उनके सिलसिले में अनजाने तुमपर इल्ज़ाम आएगा (तो युद्ध की अनुमति दे दी जाती, अनुमति इसलिए नहीं दी गई) ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी दयालुता में दाखिल कर ले। यदि वे ईमानवाले अलग हो गए होते तो उनमें से जिन लोगों ने इनकार किया उनको हम अवश्य दुखद यातना देते।

مَعَاوَا أَن يَبْلُغَ مَجْلَهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُونَ  
وَرِثَاءٌ مُّؤْمِنَاتٌ لَّهُمْ تَعْلَمُونَهُمْ أَن تَطَّوُّهُمْ  
تُصِيبِكُمْ وَنَهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ  
اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا  
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ إِذْ جَعَلَ  
الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ  
الْجَاهِلِيَّةِ ۚ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ  
وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالزَّمَهُمْ كَلِمَةً ۚ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا  
أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلُهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝  
لَقَدْ صَدَّقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الْوَيْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَمَّا خَلَّ  
الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِن شَاءَ اللَّهُ ۚ أُمِنِينَ مُّحَلِّقِينَ  
رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ ۚ لَا تَخَافُونَ ۚ فَعَلِمَ مَا لَمْ  
تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِن دُونِ ذَلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ۝

26. याद करो जब इनकार करनेवाले लोगों ने अपने दिलों में हठ को जगह दी, अज्ञानपूर्ण हठ को; तो अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमानवालों पर सकीना (प्रशान्ति) उतारी और उन्हें परहेज़गारी (धर्मपरायणता) की बात का पाबन्द रखा। वे इसके ज़्यादा हक़दार और इसके योग्य भी थे। अल्लाह तो हर चीज़ जानता है।

27. निश्चय ही अल्लाह ने अपने रसूल को हक़ के साथ सच्चा स्वप्न दिखाया : “यदि अल्लाह ने चाहा तो तुम अवश्य मस्जिदे हराम (काबा) में प्रवेश करोगे बेखटके, अपने सिर के बाल मुड़ाते और कतरवाते हुए, तुम्हें कोई भय न होगा।” हुआ यह कि उसने वह बात जान ली जो तुमने नहीं जानी। अतः इससे पहले उसने शीघ्र प्राप्त होनेवाली विजय तुम्हारे लिए निश्चित कर दी।



28. वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्यधर्म के साथ भेजा, ताकि उसे पूरे के पूरे धर्म पर प्रभुत्व प्रदान करे और गवाह की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है।

29. अल्लाह के रसूल मुहम्मद और जो लोग उनके साथ हैं, वे इनकार करनेवालों पर भारी हैं, आपस में दयालु हैं। तुम उन्हें रुकू में, सजदे में, अल्लाह का उदार अनुग्रह और उसकी प्रसन्नता चाहते हुए देखोगे। वे अपने चेहरों से पहचाने जाते हैं जिनपर सजदों का प्रभाव है। यही उनकी विशेषता तौरात में और उनकी विशेषता



इंजील में उस खेती की तरह उल्लिखित है जिसने अपना अंकुर निकाला; फिर उसे शक्ति पहुँचाई तो वह मोटा हुआ और वह अपने तने पर सीधा खड़ा हो गया। खेती करनेवालों को भा रहा है, ताकि उनसे<sup>1</sup> इनकार करनेवालों का जी जलाए। उनमें से<sup>2</sup> जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनसे अल्लाह ने क्षमा और बड़े बदले का वादा किया है।

## 49. अल-हुजुरात

(मदीने में उतरी—आयतें 18)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ ईमानवालो ! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह

1. 'उनसे' अर्थात् अल्लाह के रसूल के साथियों से।

2. अर्थात् इनकार करनेवालों में से।



का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह सुनता, जानता है।

2. ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो ! तुम अपनी आवाज़ों को नबी की आवाज़ से ऊँची न करो। और जिस तरह तुम आपस में एक-दूसरे से ज़ोर से बोलते हो, उनसे ऊँची आवाज़ से बात न करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म अकारथ हो जाएँ और तुम्हें ख़बर भी न हो।

3. वे लोग जो अल्लाह के रसूल के समक्ष अपनी आवाज़ों को दबी रखते हैं, वही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए जाँचकर चुन लिया है। उनके लिए क्षमा और बड़ा बदला है।

4. जो लोग (ऐ नबी) तुम्हें कमरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें से अधिकतर बुद्धि से काम नहीं लेते।

5. यदि वे धैर्य से काम लेते यहाँ तक कि तुम स्वयं निकलकर उनके पास आ जाते तो यह उनके लिए अच्छा होता। किन्तु अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

6. ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो ! यदि कोई अवज्ञाकारी<sup>1</sup> तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए तो उसकी छानबीन कर लिया करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को अनजाने में तकलीफ़ और नुक़सान पहुँचा बैठो, फिर अपने किए पर पछताओ।

الْمُنِزَات

ختم

وَرَسُولِهِ وَأَتَقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ  
صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ  
بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَن تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنتُمْ  
لَا تَشْعُرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَغُضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ  
عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْخَضَّ اللَّهُ  
قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝  
إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنَ الدُّرَىٰ الْعُجْرَةِ أَكْثَرُهُمْ  
لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ  
إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ  
فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْحَبُوا عَلَٰ  
مَا قَعَلْتُمْ نِدْمِينَ ۝ وَاعْلَمُوا أَن فِيكُمْ رَسُولٌ

مَنْ

1. अर्थात् वह व्यक्ति जो शरीअत के आदेशों को खुल्ला-खुल्ला तोड़ता हो।



7-8. जान लो कि तुम्हारे बीच अल्लाह का रसूल मौजूद है। बहुत-से मामलों में यदि वह तुम्हारी बात मान ले तो तुम कठिनाई में पड़ जाओ। किन्तु अल्लाह ने तुम्हारे लिए ईमान को प्रिय बना दिया और उसे तुम्हारे दिलों में सुन्दरता दे दी और इनकार, उल्लंघन और अवज्ञा को तुम्हारे लिए बहुत अप्रिय बना दिया। ऐसे ही लोग अल्लाह के उदार अनुग्रह और अनुकम्पा से सूझबूझवाले हैं। और अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

9. यदि मोमिनों में से दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर यदि उनमें से

एक गिरोह दूसरे पर ज्यादाती करे, तो जो गिरोह ज्यादाती कर रहा हो उससे लड़ो, यहाँ तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर पलट आए। फिर यदि वह पलट आए तो उनके बीच न्याय के साथ सुलह करा दो<sup>1</sup>, और इनसाफ़ करो। निश्चय ही अल्लाह इनसाफ़ करनेवालों को पसन्द करता है।

10. मोमिन तो भाई-भाई ही हैं। अतः अपने दो भाइयों के बीच सुलह करा दो और अल्लाह का डर रखो, ताकि तुमपर दया की जाए।

11. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! न पुरुषों का कोई गिरोह दूसरे पुरुषों की हँसी उड़ाए, संभव है वे उनसे अच्छे हों और न स्त्रियों की हँसी उड़ाएँ,

اللَّهُ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ  
وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي  
قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ  
أُولَٰئِكَ هُمُ الرَّشِدُونَ ۖ فَضَّلْنَا مَنَ اللَّهُ وَ  
نِعْمَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِن طَائِفَتَيْنِ  
مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلَحُوا بَيْنَهُمَا ۚ فَإِن  
بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي  
تَبَغَتْ حَتَّىٰ تَبْقَىٰ إِلَيْنَا أَمْرُ اللَّهِ ۚ فَإِن فَاءَتْ  
فَأَصْلَحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۚ إِنَّ  
اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ  
فَأَصْلَحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ  
تُرحَمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرَكُمُ  
مِّن قَوْمٍ عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِنْهُمْ وَلَا

1. अर्थात् इस बात को न भूलो कि लड़ाई के बावजूद दोनों गिरोह आपस में भाई-भाई हैं।



संभव है वे उनसे अच्छी हों, और न अपनों पर ताने कसो और न आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो। ईमान के पश्चात अवज्ञाकारी का नाम जुड़ना बहुत ही बुरा है। और जो व्यक्ति बाज़ न आए, तो ऐसे ही व्यक्ति ज़ालिम हैं।

12. ऐ ईमान लानेवालो ! बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कतिपय गुमान गुनाह होते हैं। और न टोह में पड़ो और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा करे—क्या तुममें से कोई इसको पसन्द करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का मांस खाए ? वह तो तुम्हें

अप्रिय होगा ही।—और अल्लाह का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

13. ऐ लोगो ! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक डर रखता है। निश्चय ही अल्लाह सबकुछ जाननेवाला, खबर रखनेवाला है।

14. बटुओं ने कहा कि “हम ईमान लाए।” कह दो : “तुम ईमान नहीं लाए। किन्तु यूँ कहो, ‘हम तो आज्ञाकारी हुए’ ईमान तो अभी तुम्हारे दिलों में

الْمُؤْمِنَاتِ

الْمُحْتَمَلِ

نِسَاءٌ مِنْ نِسَائِهِ عَلَى أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِنْهُنَّ ۚ  
وَلَا تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ ۚ  
بِئْسَ الْإِسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَنْ  
لَمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ يَٰٓأَيُّهَا  
الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ ۚ إِنَّ  
بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبِ  
بَعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ  
أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ  
اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ۝ يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ  
مِّن ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ  
لِّتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۚ  
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝ قَالَتِ الْأَعْرَابُ أَمَّا  
قُلُوبُنَا لَمْ تُوْحِّشْنَا وَلَٰكِن قَوْلُوا أَسْلَمْنَا وَلَكِنَّا

مَذْكُورٌ



दाखिल ही नहीं हुआ। यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो तो वह तुम्हारे कर्मों में से तुम्हारे लिए कुछ कम न करेगा। निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।”

15. मोमिन तो बस वही लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर उन्होंने कोई सन्देह नहीं किया और अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया। वही लोग सच्चे हैं।

16. कहो : “क्या तुम अल्लाह को अपने धर्म की सूचना दे रहे हो। हालाँकि जो कुछ आकाशों में और जो कुछ धरती में है, अल्लाह सब जानता है? अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।”

17. वे तुमपर एहसान जताते हैं कि उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया। कह दो : “मुझपर अपने इस्लाम का एहसान न रखो, बल्कि यदि तुम सच्चे हो तो अल्लाह ही तुमपर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें ईमान की राह दिखाई।

18. निश्चय ही अल्लाह आकाशों और धरती के अदृष्ट को जानता है। और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो।”

تَعْمَلُونَ

لَهُمْ

يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ وَإِنْ تُطِيعُوا  
 اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِفْكُمْ مِنْ أَعْيَالِكُمْ شَيْئًا  
 إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ إِنَّا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ  
 آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَهَدُوا  
 بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَئِكَ  
 هُمُ الصّٰدِقُونَ ۝ قُلْ أَتَعْبُدُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ  
 وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ  
 وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ يَسْتَوُونَ عَلَيْكَ  
 أَنْ أَسْكَنْتَهُمْ قُلْ لَا تَمْنُنُوا عَلَىٰ إِسْلَامِكُمْ  
 بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ  
 إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ  
 غَيْبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا  
 تَعْمَلُونَ ۝

مَنْ



## 50. क़ाफ़

(मक्का में उतरी— आयतें 45)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. क़ाफ़०; गवाह है क़ुरआन  
मजीद!— बल्कि उन्हें तो इस  
बात पर आश्चर्य हुआ कि उनके  
पास उन्हीं में से एक सावधान  
करनेवाला आ गया। फिर इनकार  
करनेवाले कहने लगे : “यह तो  
आश्चर्य की बात है।

3. क्या जब हम मर जाएँगे और  
मिट्टी हो जाएँगे (तो फिर हम  
जीवित होकर पलटेंगे)? यह  
पलटना तो बहुत दूर की बात है!”

4. हम जानते हैं धरती उनमें जो कुछ कमी करती है<sup>1</sup> और हमारे पास सुरक्षित  
रखनेवाली एक किताब<sup>2</sup> भी है।

5. बल्कि उन्होंने सत्य को झुठला दिया जब वह उनके पास आया। अतः वे  
एक उलझन भरी बात में पड़े हुए हैं।

6. अच्छा तो क्या उन्होंने अपने ऊपर आकाश को नहीं देखा, हमने उसे कैसा  
बनाया और उसे सजाया। और उसमें कोई दरार नहीं।

7-8. और धरती को हमने फैलाया और उसमें अटल पहाड़ डाल दिए। और  
हमने उसमें हर प्रकार की सुन्दर चीज़ें उगाई, आँखें खोलने और याद दिलाने के  
उद्देश्य से, हर उस बन्दे के लिए जो रुजू करनेवाला हो।



1. मनुष्य आत्मा भी है और शरीर भी। मरने के पश्चात धरती मात्र शरीर को नष्ट करती है, आत्मा को नहीं।
2. मनुष्य के कर्मों का लेखा-जोखा सुरक्षित रखनेवाली किताब।



9-11. और हमने आकाश से बरकतवाला पानी उतारा, फिर उससे बाग़ और फ़सल के अनाज। और ऊँचे-ऊँचे खजूर के वृक्ष उगाए जिनके गुच्छे तह पर तह होते हैं, बन्दों की रोज़ी के लिए। और हमने उस (पानी) के द्वारा निर्जीव धरती को जीवन प्रदान किया। इसी प्रकार निकलना<sup>1</sup> भी है।

12-14. उनसे पहले नूह की क़ौम, 'अर्-रस' वाले, समूद, आद, फ़िरऔन, लूत के भाई, 'अल-ऐका' वाले और तुब्बा के लोग भी झुठला चुके हैं। प्रत्येक ने रसूलों को झुठलाया। अन्ततः मेरी धमकी सत्यापित होकर रही।

الْحَصِيدِ ۝ وَالنَّخْلُ بَاقٍ لَهَا طَلْعُ تَضِيدِ ۝  
رَزَقًا لِّلْعِبَادِ ۝ وَأَخِينَا بِهِ بِلْدَةَ مَيْنًا ۝ كَذَلِكَ  
الْخُرُوجِ ۝ كَذَبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِ  
وَكُودُ ۝ وَعَادُ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۝ وَأَصْحَابُ  
الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۝ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ۝  
أَفَمَنِينَ بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ  
جَدِيدٍ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَتَعْلَمُ مَا تُوَسِّوُسُ  
بِهِ نَفْسُهُ ۚ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝  
إِذْ يَتَلَفَّى الشَّالِقِينَ عَيْنَ الْيَسِينِ وَعَيْنَ الشِّمَالِ  
قَعِيدٌ ۝ مَا يَلْفُظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ  
عَتِيدٌ ۝ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ  
مَا كُنْتُمْ مِنْهُ تَحِيدُونَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَٰلِكَ  
يَوْمُ الْوَعْدِ ۝ وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ

مِّنَ

15. क्या हम पहली बार पैदा करने से असमर्थ रहे? नहीं, बल्कि वे एक नई सृष्टि के विषय में सन्देह में पड़े हैं।

16. हमने मनुष्य को पैदा किया है और हम जानते हैं जो बातें उसके जी में आती हैं। और हम उससे उसकी गरदन की रग से भी अधिक निकट हैं।

17. जब दो प्राप्त करनेवाले (फ़रिश्ते) प्राप्त कर रहे होते हैं<sup>2</sup>, दाएँ से और बाएँ से वे लगे बैठे होते हैं।

18. कोई बात उसने कही नहीं कि उसके पास एक निरीक्षक तैयार रहता है।

19. और मौत की बेहोशी ले आई विश्वसनीय चीज़! यही वह चीज़ है जिससे तू कतराता था।

20. और नरसिंघा फूँक दिया गया। यही है वह दिन जिसकी धमकी दी गई थी।

21. हर व्यक्ति इस दशा में आ गया कि उसके साथ एक लानेवाला है

1. अर्थात् जीवित होकर क़ब्रों से निकलना।

2. मनुष्य के कथन और कर्म को फ़रिश्ते अंकित कर रहे होते हैं।



और एक गवाही देनेवाला ।

22. तू इस चीज़ की ओर से ग़फलत में था । अब हमने तुझसे तेरा परदा हटा दिया, तो आज तेरी निगाह बड़ी तेज़ है ।

23. उसके साथी ने कहा : “यह है (तेरी सज़ा) ! मेरे पास कुछ (सहायता के लिए) मौजूद नहीं ।”

24-26. “डाल दो, डाल दो, जहन्नम में ! हर अकृतज्ञ द्वेष रखनेवाले, भलाई से रोकनेवाले, सीमा का अतिक्रमण करनेवाले, सन्देहग्रस्त को जिसने अल्लाह के साथ किसी दूसरे को पूज्य-प्रभु ठहराया । तो डाल दो उसे कठोर यातना में ।”

وَشَهِيدٌ ۖ لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا فَكَشَفْنَا  
عَنكَ غِطَاءَكَ ۖ وَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۖ وَقَالَ  
قَرِينُهُ هَذَا مَا لَدَائِي عَتِيدٌ ۖ أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ  
كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ۖ مَّنَاءَ لِلْغَايِرِ مُعْتَدٍ مَّزِيدٌ ۖ  
الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَأَلْقِيَهُ فِي الْعَذَابِ  
الشَّدِيدِ ۖ قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْعَمْتُهُ وَلَكِنْ  
كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۖ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدُنِّي  
وَقَدْ قَدَّمْتُمْ إِلَيَّ الْكِتَابَ بِالْوَعِيدِ ۖ مَا بَيَّذَلُ الْقَوْلَ  
لَدُنِّي وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَالَمِينَ ۖ يَوْمَ نَقُولُ لِلْجَهَنَّمَ  
هَلْ أَمْتَلَاتِ ۖ وَنَقُولُ هَلْ مِنْ مَّزِيدٍ ۖ وَأَزَلَّ فِتْ  
الْجَنَّةُ لِلشَّاقِينَ غَيْرِ بَعِيدٍ ۖ هَذَا مَا تَوَعَّدُونَ  
لِكُلِّ أُوْبٍ حَفِيظٍ ۖ مِّنْ خَشْيِ الرَّحْمَنِ الْعَلِيِّ  
وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ۖ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ذَٰلِكَ يَوْمُ

27. उसका साथी बोला : “ऐ हमारे रब ! मैंने उसे सरकश नहीं बनाया, बल्कि वह स्वयं ही परले दरजे की गुमराही में था ।”

28. कहा : “मेरे सामने मत झगड़ो । मैं तो तुम्हें पहले ही अपनी धमकी से सावधान कर चुका था ।

29. मेरे यहाँ बात बदला नहीं करती और न मैं अपने बन्दों पर तनिक भी अत्याचार करता हूँ ।”

30. जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे : “क्या तू भर गई ?” और वह कहेगी : “क्या अभी और भी कुछ है ?”

31. और जन्नत डर रखनेवालों के निकट कर दी गई, कुछ भी दूर न रही ।

32. “यह है वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जाता था हर रुजू करनेवाले, बड़ी निगरानी रखनेवाले के लिए;

33. जो रहमान से डरा परोक्ष में और आया रुजू रहनेवाला हृदय लेकर ।

34. “प्रवेश करो उस (जन्नत) में सलामती के साथ ।” वह शाश्वत दिवस है ।



35. उनके लिए उसमें वह सबकुछ है जो वे चाहें और हमारे पास उससे अधिक भी है।

36. उनसे पहले हम कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर चुके हैं। वे लोग शक्ति में उनसे कहीं बढ़-चढ़कर थे। (पनाह की तलाश में) उन्होंने नगरों को छान मारा, कोई है भागने को ठिकाना?

37. निश्चय ही इसमें उस व्यक्ति के लिए शिक्षा-सामग्री है जिसके पास दिल हो या वह (दिल से) हाज़िर रहकर कान लगाए।

38. हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में पैदा कर दिया और हमें कोई थकान न छू सकी।

39-40. अतः जो कुछ वे कहते हैं उसपर धैर्य से काम लो और अपने रब की प्रशंसा की तसबीह करो; सूर्योदय से पूर्व और सूर्यास्त से पूर्व, और रात की घड़ियों में फिर उसकी तसबीह करो और सजदों के पश्चात भी।

41-42. और कान लगाकर सुन लेना जिस दिन पुकारनेवाला अत्यन्त निकट के स्थान से पुकारेगा, जिस दिन लोग भयंकर चीख को सत्यतः सुन रहे होंगे। वही दिन होगा निकलने का।—

43. हम ही जीवन प्रदान करते और मृत्यु देते हैं और हमारी ही ओर अन्ततः आना है।—

44. जिस दिन धरती उनपर से फट जाएगी और वे तेज़ी से निकल पड़ेंगे। यह इकट्ठा करना हमारे लिए अत्यन्त सरल है।

الْغُلُودِ ۖ لَهُمْ نَارٌ يَأْكُلُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝  
وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ  
بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ ۖ هَلْ مِنْ مَخْرُجٍ ۝ إِنَّ  
فِي ذَلِكَ لَذِكْرًا لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى  
السَّمْعَ ۖ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ  
وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۖ وَمَا مَسَّنَا  
مِنْ غُيُوبٍ ۖ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ  
رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۖ  
وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ النُّجُومِ ۝ وَاسْمَعْ  
يَوْمَ يَنَادِ الْمُنَادُ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۖ يَوْمَ يَسْمَعُونَ  
الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ۝ إِنَّا نَحْنُ  
نَحْنُ وَنَبِيِّنَا ۖ وَإِنَّا لَلْمُصْذِرُونَ ۖ يَوْمَ تَشَقُّقُ  
الْأَرْضُ عَنْهُمْ ۖ سِرَاعًا ۚ ذَلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ۝



45. हम जानते हैं जो कुछ वे कहते हैं : तुम उनपर कोई ज़बरदस्ती करनेवाले तो हो नहीं। अतः तुम कुरआन के द्वारा उसे नसीहत करो जो हमारी चेतावनी से डरे।

## 51. अज़-ज़ारियात

(मक्का में उतरी — आयतें 60)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. गवाह हैं (हवाएँ) जो गर्द-गुबार उड़ाती फिरती हैं;

2. फिर बोझ उठाती हैं;

3. फिर नरमी से चलती हैं;

4. फिर मामले को अलग-अलग करती हैं;<sup>1</sup>

5. निश्चय ही तुमसे जिस चीज़ का वादा किया जाता है, वह सत्य है;

6. और (कर्मों का) बदला अवश्य सामने आकर रहेगा।

7-8. गवाह है धारियोंवाला आकाश। निश्चय ही तुम उस बात में पड़े हुए हो जिनमें कथन भिन्न-भिन्न हैं।

9. इससे कोई सरफिरा ही विमुख होता है।

10-11. मारे जाएँ अटकल दौड़ानेवाले; जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं भूले हुए।

12. पूछते हैं: “बदले का दिन कब आएगा?”

13-14. जिस दिन वे आग पर तपाए जाएँगे: “चखो मज़ा, अपने फ़ितने (उपद्रव) का! यही है जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे थे।”

15. निश्चय ही डर रखनेवाले बाग़ों और स्रोतों में होंगे।

16. जो कुछ उनके रब ने उन्हें दिया, वे उसे ले रहे होंगे। निस्संदेह वे इससे



1. यहाँ हवाओं को एक बड़ी वास्तविकता अर्थात् आखिरत पर गवाह ठहराया गया है।



पहले उत्तमकारों में से थे ।

17. रातों को थोड़ा ही सोते थे,

18. और वही प्रातः की घड़ियों में क्षमा की प्रार्थना करते थे ।

19. और उनके मालों में माँगने-वाले और धनहीन का हक़ था ।

20-21. और धरती में विश्वास करनेवालों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं, और स्वयं तुम्हारे अपने आप में भी । तो क्या तुम देखते नहीं ?

22. और आकाश में ही तुम्हारी रोज़ी है और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है ।

23. अतः सौगन्ध है आकाश और धरती के रब की । निश्चय ही वह सत्य बात है ऐसे ही जैसे तुम बोलते हो ।

24. क्या इबराहीम के प्रतिष्ठित अतिथियों का वृत्तान्त तुम तक पहुँचा ?

25. जब वे उसके पास आए तो कहा : "सलाम है तुमपर !" उसने भी कहा : "सलाम है आप लोगों पर भी !" (और जी में कहा) : "ये तो अपरिचित लोग हैं ।"

26-27. फिर वह चुपके-से अपने घरवालों के पास गया और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा (का भूना हुआ मांस) ले आया और उसे उनके सामने पेश किया । कहा : "क्या आप खाते नहीं ?"

28. फिर उसने दिल में उनसे डर महसूस किया । उन्होंने कहा : "डरिए नहीं ।" और उन्होंने उसे एक ज्ञानवान लड़के की मंगल-सूचना दी ।

29. इसपर उसकी स्त्री (चकित होकर) आगे बढ़ी और उसने अपना मुँह पीट लिया और कहने लगी : "एक बूढ़ी बाँझ (के यहाँ बच्चा पैदा होगा) !"

30. उन्होंने कहा : "ऐसा ही तेरे रब ने कहा है । निश्चय ही वह बड़ा तत्त्वदर्शी, ज्ञानवान है ।"

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ النَّاسِ  
مَا يَنْجَمُونَ ۝ وَيَا لَأَسْعَدَهُمْ يُسْتَغْفِرُونَ ۝ وَفِي  
أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلنَّاسِ لِّلْأَرْضِ آيَاتٌ  
لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝ وَفِي  
النَّاسِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُؤْعَدُونَ ۝ قُورَيْبٍ السَّمَاءِ  
وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلُ مَا أَنَّكُمْ تَنْطِقُونَ ۝ هَلْ  
أَتَاكَ حَدِيثٌ ضَافٍ إِبْرَاهِيمَ الْمَكَرِمِينَ ۝ إِذْ دَخَلُوا  
عَلَيْهِ فَقَالُوا سُبْحَاءَ ۖ قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّنْكَرُونَ ۝  
فَرَأَىٰ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ۝ فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ  
قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۖ فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا  
تَخَفْ ۖ وَبَشْرُوهَ يُعْلِمُ عَلَيْهِمْ ۖ فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي  
صَرَاقَةٍ فَصَكَتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجْزٌ عَقِيمٌ ۖ قَالُوا  
كَذَلِكَ ۖ قَالَ رَبِّكَ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۖ







45. फिर वे न खड़े ही हो सके और न अपना बचाव ही कर सके।

46. और इससे पहले नूह की क़ौम को भी पकड़ा। निश्चय ही वे अवज्ञाकारी लोग थे।

47. आकाश को हमने अपने हाथ के बल से बनाया और हम बड़ी समाई रखनेवाले हैं।

48. और धरती को हमने बिछाया, तो हम क्या ही ख़ूब बिछानेवाले हैं।

49. और हमने हर चीज़ के जोड़े बनाए, ताकि तुम ध्यान दो।

50. अतः अल्लाह की ओर दौड़ो। मैं उसकी ओर से तुम्हारे लिए एक प्रत्यक्ष सावधान करनेवाला हूँ।

51. और अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य-प्रभु न ठहराओ। मैं उसकी ओर से तुम्हारे लिए एक प्रत्यक्ष सावधान करनेवाला हूँ।

52. इसी तरह उन लोगों के पास भी, जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं, जो भी रसूल आया तो उन्होंने बस यही कहा: "जादूगर है या दीवाना!"

53. क्या उन्होंने एक-दूसरे को इसकी वसीयत कर रखी है? नहीं, बल्कि वे हैं ही सरकश लोग।

54. अतः उनसे मुँह फेर लो, अब तुमपर कोई मलामत नहीं।

55. और याद दिलाते रहो, क्योंकि याद दिलाना ईमानवालों को लाभ पहुँचाता है।

56. मैंने तो जिन्नों और मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी बन्दगी करें।

57. मैं उनसे कोई रोज़ी नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाएँ।

58. निश्चय ही अल्लाह ही है रोज़ी देनेवाला, शक्तिशाली, दृढ़।

الذّٰرِیَّاتِ

قَالَ ذَا النّبَاتِ

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ۝  
وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝  
وَالنَّمْلَ بَنَيْنَهَا بَأْيْدِنَا لَنُوسِعُوْنَ ۝ وَالْأَرْضَ  
فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمُهَيَّوْنَ ۝ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ  
خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ فَفِرُّوْا إِلَى  
اللّٰهِ إِنِّي لَكُمْ فِيْهِ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ  
اللّٰهِ إِلَهًا آخَرَ إِنِّي لَكُمْ فِيْهِ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ كَذَلِكَ  
مَا آتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رُّسُلٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ  
أَوْ مَجْنُونٌ ۝ اتَّوَصَّوْا بِهِ ۝ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَٰغُونَ ۝  
فَقَوْلٌ عَنْهُمْ مِمَّا أَنْتَ بِمَلُومٌ ۝ وَذَكَرَ فَإِنَّ الذِّكْرَ  
تَنَفَّعَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لَعَلَّ  
لِيَعْبُدُونِ ۝ مَا أُرِيدُ مِنْكُمْ مِنْ رِّزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ  
يُطْعَمُونِ ۝ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ



59. अतः जिन लोगों ने जुल्म किया है उनके लिए एक नियत पैमाना है; जैसा उनके साथियों का नियत पैमाना<sup>1</sup> था। अतः वे मुझसे जल्दी न मचाएँ !

60. अतः इनकार करनेवालों के लिए बड़ी खराबी है उनके उस दिन के कारण जिसकी उन्हें धमकी दी जा रही है।

## 52. अत-तूर

(मक्का में उतरी — आयतें 49)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. गवाह है तूर पर्वत,
- 2-3. और फैले हुए झिल्ली के पन्ने में लिखी हुई किताब;
4. और बसा हुआ घर;
5. और ऊँची छत;
- 6-7. और उफनता समुद्र कि तेरे रब की यातना अवश्य घटित होकर रहेगी;
8. जिसे टालनेवाला कोई नहीं;
9. जिस दिन आकाश बुरी तरह डगमगाएगा;
10. और पहाड़ चलते-फिरते होंगे;
11. तो तबाही है उस दिन, झुठलानेवालों के लिए;
12. जो बात बनाने में लगे हुए खेल रहे हैं।
- 13-14. जिस दिन वे धक्के दे-देकर जहन्नम की ओर ढकेले जाएँगे (कहा जाएगा) : "यही है वह आग जिसे तुम झुठलाते थे।
15. अब भला (बताओ) यह कोई जादू है या तुम्हें सुझाई नहीं देता ?





16. जाओ, झुलसो उसमें ! अब धैर्य से काम लो या धैर्य से काम न लो; तुम्हारे लिए बराबर है। तुम वही बदला पा रहे हो, जो तुम करते रहे थे।”

17. निश्चय ही डर रखनेवाले बागों और नेमतों में होंगे।

18-20. जो कुछ उनके रब ने उन्हें दिया होगा, उसका आनन्द ले रहे होंगे और इस बात से कि उनके रब ने उन्हें भड़कती हुई आग से बचा लिया— “मज़े से खाओ और पियो उन कर्मों के बदले में जो तुम करते रहे हो।”—पंक्तिबद्ध तख्तों पर तकिया लगाए हुए होंगे

और हम बड़ी आँखोंवाली हूरों (परम रूपवती स्त्रियों) से उनका विवाह कर देंगे।

21. जो लोग ईमान लाए और उनकी सन्तान ने भी ईमान के साथ उनका अनुसरण किया, उनकी सन्तान को भी हम उनसे मिला देंगे, और उनके कर्म में से कुछ भी कम करके उन्हें नहीं देंगे। हर व्यक्ति अपनी कमाई के बदले में बन्धक है।

22. और हम उन्हें मेवे और मांस, जिसकी वे इच्छा करेंगे दिए चले जाएँगे।

23. वे वहाँ आपस में प्याले हाथोंहाथ ले रहे होंगे, जिसमें न कोई बेहूदगी होगी और न गुनाह पर उभारनेवाली कोई बात,

24. और उनकी सेवा में सुरक्षित मोतियों के सदृश किशोर दौड़ते फिरते होंगे, जो खास उन्हीं (की सेवा) के लिए होंगे।

25. उनमें से कुछ व्यक्ति कुछ व्यक्तियों की ओर हाल पूछते हुए रुख करेंगे,

26. कहेंगे : “निश्चय ही हम पहले अपने घरवालों में डरते रहे हैं,

27. अन्ततः अल्लाह ने हमपर एहसान किया और हमें गर्म विषैली वायु की

تَعْلَمُونَ

لَا تَسْتَعِينُونَ

إِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا إِنَّا تَعْلَمُونَ  
إِنَّا نَجْزِي مَنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ الشَّقِيقِينَ  
فِي جَحِيمٍ ۝ فَلْيَهِنِ بِمَا أَشْرَكُوا مِنْهُمْ ۝ وَوَقَدْ هَمَمْنَا  
رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا  
كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ مُشْكِينَ عَلَى سُرُرٍ مَصْفُوفَةٍ ۝ وَ  
رُكُودُهُمْ بِخَوَارِجٍ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ  
ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ  
مِنْ عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۝ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ۝  
وَأَمْدَدْنَاهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ وَمَا يَشْتَهُونَ ۝ يَتَنَزَّاعُونَ  
فِيهَا كَاشًا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَلَا تَأْثِيمٌ ۝ وَيُطُوفُ  
عَلَيْهِمْ غُلَامٌ لَهُمْ كُلَّ شَيْءٍ لَوْ لَوْ مَكْنُونٌ ۝ وَأَقْبَلَ  
بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّا كُنَّا  
قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ۝ فَمَنْ اللَّهُ عَلَيْنَا

مَنْ



यातना से बचा लिया।

28. इससे पहले हम उसे पुकारते रहे हैं। निश्चय ही वह सद्व्यवहार करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।”

29. अतः तुम याद दिलाते रहो। अपने रब की अनुकम्पा से न तुम काहिन (ढोंगी भविष्यवक्ता) हो और न दीवाना।

30. या वे कहते हैं : “वह कवि है जिसके लिए हम काल-चक्र की प्रतीक्षा कर रहे हैं?”

31. कह दो : “प्रतीक्षा करो ! मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।”

32. या उनकी बुद्धियाँ यही आदेश दे रही हैं, या वे हैं ही सरकश लोग ?

33. या वे कहते हैं : “उसने उस (कुरआन) को स्वयं ही कह लिया है ?” नहीं, बल्कि वे ईमान नहीं लाते।

34. अच्छा यदि वे सच्चे हैं तो उन्हें उस जैसी वाणी ले आनी चाहिए।

35. या वे बिना किसी चीज़ के पैदा हो गए ? या वे स्वयं ही अपने स्रष्टा हैं ?

36. या उन्होंने आकाशों और धरती को पैदा किया ? नहीं, बल्कि वे विश्वास नहीं रखते।

37. या उनके पास तुम्हारे रब के खज़ाने हैं ? या वही उनके परिरक्षक हैं ?

38. या उनके पास कोई सीढ़ी है जिसपर चढ़कर वे (कान लगाकर) सुन लेते हैं ? फिर उनमें से जिसने सुन लिया हो तो वह ले आए स्पष्ट प्रमाण।

39. या उस (अल्लाह) के लिए बेटियाँ हैं और तुम्हारे अपने लिए बेटे ?

40. या तुम उनसे कोई पारिश्रमिक माँगते हो कि वे तावान के बोझ से दबे जा रहे हैं ?

تُور

تُور

وَوَقْنَا عَذَابَ التَّمُورِ ۖ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ ۚ  
إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ۖ فَذَكَّرْنَا قَمًا أَنْتَ بِسَمْعَتِ  
رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ۖ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ  
تَتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ الْمُنُونِ ۖ قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي  
مَعَكُمْ مِنَ الْمُتَرَبِّصِينَ ۖ أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَخْلَاؤُهُمْ  
بِهَذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ۖ أَمْ يَقُولُونَ نَقُولُ  
بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ فليأتُوا بِعَدِيثٍ مِثْلِهِ إِن كَانُوا  
صَادِقِينَ ۖ أَمْ خَلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ۖ  
أَمْ خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ۖ بَلْ لَا يُؤْقِنُونَ ۖ  
أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصِيطِرُونَ ۖ  
أَمْ لَهُمْ سُلُمٌ نَسْمَعُونَ فِيهِ ۖ فليأتِ مُسْمِعُهُمْ  
بِسُلْطَنِ مَهِينٍ ۖ أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ۖ  
أَمْ نَشَاءُهُمْ آبَاءَ قَوْمٍ مَغْرَمٍ مُشَقَّلُونَ ۖ أَمْ

سَلَا



41. या उनके पास परोक्ष (स्पष्ट) है जिसके आधार पर वे लिख रहे हों ?

42. या वे कोई चाल चलना चाहते हैं ? तो जिन लोगों ने इनकार किया वही चाल की लपेट में आनेवाले हैं ।

43. या अल्लाह के अतिरिक्त उनका कोई और पूज्य-प्रभु है ? अल्लाह महान और उच्च है उससे जो वे साझी ठहराते हैं ।

44. यदि वे आकाश का कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो कहेंगे : "यह तो परत पर परत बादल है !"

45. अतः छोड़ो उन्हें, यहाँ तक कि वे अपने उस दिन का सामना करें जिसमें उनपर वज्रपात होगा;

46. जिस दिन उनकी चाल उनके कुछ भी काम न आएगी और न उन्हें कोई सहायता ही मिलेगी;

47. और निश्चय ही जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उनके लिए एक यातना है उससे हटकर भी, परन्तु उनमें से अधिकतर जानते नहीं ।

48. अपने रब का फ़ैसला आने तक धैर्य से काम लो, तुम तो हमारी आँखों में हो, और जब उठो तो अपने रब का गुणगान करो;

49. रात की कुछ घड़ियों में भी उसकी तसबीह करो, और सितारों के पीठ फेरने के समय (प्रातः काल) भी ।

### 53. अन-नज्म

(मक्का में उतरी— आयतें 62)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. गवाह है तारा, जब वह नीचे को आए ।

2. तुम्हारा साथी (मुहम्मद सल्ल०) न गुमराह हुआ और न बहका;





3-4. और न वह अपनी इच्छा से बोलता है; वह तो बस एक प्रकाशना है, जो की जा रही है।

5-7. उसे बड़ी शक्तियोंवाले ने सिखाया, स्थिर रीतिवाले ने। अतः वह भरपूर हुआ, इस हाल में कि वह क्षितिज के उच्चतम छोर पर है।

8. फिर वह निकट हुआ और उतर गया।

9. अब दो कमानों के बराबर या उससे भी अधिक निकट हो गया।

10-11. तब उसने अपने बन्दे की ओर प्रकाशना की, जो कुछ भी प्रकाशना की। दिल ने कोई धोखा नहीं दिया, जो कुछ उसने देखा;

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۚ  
عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ۖ ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ۖ وَهُوَ  
بِالْأَفْقِ الْأَعْلَىٰ ۚ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ۖ فَكَانَ قَابَ  
قَوْسَيْنِ ۖ أَوْ أَدْنَىٰ ۚ فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ ۖ مَا أَوْحَىٰ ۖ مَا  
كَذَّبَ الْقَوَادِمَ رَأَىٰ ۖ أَفْكَرُونَ ۚ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ۖ  
وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ۖ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ ۖ  
عِنْدَ مَا بَيْنَهُ السَّوَىٰ ۖ إِذْ يُغْشَىٰ الْغَشْدَةَ مَا يُغْشَىٰ ۖ  
مَآزَاءَ الْبَصَرِ ۖ وَمَا ظَنُّهُ ۖ لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ  
الْكُبْرَىٰ ۖ أَفَوَيْتُمْ لِلَّهِ وَالْعِزِّ ۖ وَمَنْوَةً الشَّالِثَةِ  
الْأُخْرَىٰ ۖ أَلَمْ تَذْكُرْ ۚ وَلَهُ الْأَنْثَىٰ ۖ تِلْكَ إِذَا قَسَمْتُ  
بِزَيْنِ ۖ إِنَّ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءُ سَمِيَّتُهَا أَنْتُمْ ۚ وَ  
أَبَاؤُكُمْ ۚ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ  
إِلَّا الظَّنَّ ۖ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ

12. अब क्या तुम उस चीज़ पर उससे झगड़ते हो, जिसे वह देख रहा है? —

13-14. और निश्चय ही वह उसे एक बार और 'सिदरतुल मुन्तहा' (परली सीमा की बेर) के पास उतरते देख चुका है।

15. उसी के निकट 'जन्नतुल मावा' (ठिकानेवाली जन्नत) है। —

16. जबकि छा रहा था उस बेर पर, जो कुछ छा रहा था।

17. निगाह न तो टेढ़ी हुई और न हद से आगे बढ़ी।

18. निश्चय ही उसने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं।

19-20. तो क्या तुमने लात और उज्ज़ा और तीसरी एक और (देवी) मनात पर विचार किया?

21. क्या तुम्हारे लिए तो बेटे हैं और उसके लिए बेटियाँ?

22. तब तो यह बहुत बेढंगा और अन्यायपूर्ण बँटवारा हुआ!

23. वे तो बस कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। अल्लाह ने उनके लिए कोई सनद नहीं उतारी। वे तो केवल अटकल के पीछे



चल रहे हैं और उसके पीछे जो उनके मन की इच्छा होती है। हालाँकि उनके पास उनके रब की ओर से मार्गदर्शन आ चुका है।

24. (क्या उनकी देवियाँ उन्हें लाभ पहुँचा सकती हैं) या मनुष्य वह कुछ पा लेगा, जिसकी वह कामना करता है ?

25. आखिरत और दुनिया का मालिक तो अल्लाह ही है।

26-29. आकाशों में कितने ही फ़रिश्ते हैं, उनकी सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आएगी; यदि काम आ सकती है तो इसके पश्चात ही कि अल्लाह अनुमति दे, जिसे चाहे और पसन्द करे। जो लोग आखिरत को नहीं मानते, वे फ़रिश्तों को देवियों के नाम से अभिहित करते हैं, हालाँकि इस विषय में उन्हें कोई ज्ञान नहीं। वे केवल अटकल के पीछे चलते हैं, हालाँकि सत्य से जो लाभ पहुँचता है वह अटकल से कदापि नहीं पहुँच सकता। अतः तुम उसको ध्यान में न लाओ जो हमारे ज़िक्र से मुँह मोड़ता है और सांसारिक जीवन के सिवा उसने कुछ नहीं चाहा।

30. ऐसे लोगों के ज्ञान की पहुँच बस यहीं तक है। निश्चय ही तुम्हारा रब ही उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया, और वही उसे भी भली-भाँति जानता है जिसने सीधा मार्ग अपनाया।

31. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, ताकि जिन लोगों ने बुराई की वह उन्हें उनके किए का बदला दे। और जिन लोगों ने भलाई की उन्हें अच्छा बदला दे;

32. वे लोग जो बड़े गुनाहों और अश्लील कर्मों से बचते हैं, यह और बात है कि संयोगवश कोई छोटी बुराई उनसे हो जाए। निश्चय ही तुम्हारा रब

فَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهَتِهِمْ  
تَرْغِبُونَ أُمْلُوا لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَسْتُمْ ۖ فَالَّذِينَ  
الْآخِرَةِ وَالْأُولَى ۚ وَكَرُمٌ مِّن مَّلَكٍ فِي السَّمَوَاتِ لَا  
تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مَن بَعَدَ ۚ أَن يَأْذَنَ اللَّهُ  
لِمَن يَشَاءُ وَيُرِيهِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ  
لَيَسْئُونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْيِيرَهُ الْأَنْثَى ۚ وَمَا لَهُمْ بِهِ  
مِنْ عِلْمٍ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۚ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا  
يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ فَأَعْرِضْ عَنْ مَن تَوَلَّى ۚ  
عَن ذِكْرِنَا وَلَوْ كَرِهَ ۚ إِنَّا الْعَايَةُ الدُّنْيَا ۚ ذَلِكَ  
مَبْلُغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ  
عَن سَبِيلِهِ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَن اهْتَدَى ۚ وَلِلَّهِ مَا  
فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ لَيَجْعِلَنَّ الَّذِينَ  
اسَاءُوا عِمَالًا غِلْمًا ۚ وَيَجْزِي الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى ۚ  
الَّذِينَ يَحْتَسِبُونَ كَلْبًا ۚ الْإِلَهِمَّ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّهُمَّ ۚ



क्षमाशीलता में बड़ा व्यापक है। वह तुम्हें उस समय से भली-भाँति जानता है, जबकि उसने तुम्हें धरती से पैदा किया और जबकि तुम अपनी माँओं के पेटों में भ्रूण अवस्था में थे। अतः अपने मन की पवित्रता और निखार का दावा न करो। वह उस व्यक्ति को भली-भाँति जानता है, जिसने डर रखा।

33-34. क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने मुँह फेरा, और थोड़ा-सा देकर रुक गया;

35. क्या उसके पास परोक्ष का ज्ञान है कि वह देख रहा है;

36-37. या उसको उन बातों की खबर नहीं पहुँची, जो मूसा की किताबों में है और इबराहीम की (किताबों में है), जिसने (अल्लाह की बन्दगी का) पूरा-पूरा हक़ अदा कर दिया?

38. यह कि कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा;

39. और यह कि मनुष्य के लिए बस वही है जिसके लिए उसने प्रयास किया;

40-42. और यह कि उसका प्रयास शीघ्र ही देखा जाएगा। फिर उसे पूरा बदला दिया जाएगा; और यह कि अंत में पहुँचना तुम्हारे रब ही की ओर है;

43. और यह कि वही है जो हँसाता और रुलाता है;

44. और यह कि वही है जो मारता और जिलाता है;

45-47. और यह कि वही है जिसने नर और मादा के जोड़े पैदा किए, एक बूँद से, जब वह टपकाई जाती है; और यह कि उसी के ज़िम्मे दोबारा उठाना भी है;

48. और यह कि वही है जिसने धनी और पूँजीपति बनाया;

49. और यह कि वही है जो शेअरा (नामक तारे) का रब है।

50. और यह कि उसी ने प्राचीन आद को विनष्ट किया;

الشَّمْسُ

فَلَا تَنفَعُكَ

إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ  
مِّنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجْنَةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۚ  
فَلَا تَزْكُوا أَنْفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَى ۚ أَفَرَأَيْتَ  
الَّذِي تَوَلَّى ۖ وَاعْطَى قَلِيلًا وَأَكْدَى ۖ أَعِنْدَهُ  
عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَى ۖ أَمْ لَمْ يُنَبِّأْ بِمَا فِي صُحُفِ  
مُوسَى ۖ وَلِإِبْرَاهِيمَ ۖ الَّذِي وَفَّى ۖ أَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ  
وِزْرَ أُخْرَى ۖ وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَى ۖ  
وَأَنْ سَعِيهِ سَوْفَ يُرَى ۖ ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءُ الْأَوْفَى ۖ  
وَأَنْ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَى ۖ وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَى ۖ  
وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ۖ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزُّوجَيْنِ  
الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ۖ مِنْ نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَى ۖ وَأَنْ عَلَيْهِ  
النَّشْأَةُ الْآخِرَى ۖ وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَى وَأَقْنَى ۖ وَأَنَّهُ  
هُوَ رَبُّ الشُّعْرَى ۖ وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَى ۖ

مَدَن



51-52. और समूद को भी । फिर किसी को बाक़ी न छोड़ा । और उससे पहले नूह की क़ौम को भी । बेशक वे ज़ालिम और सरकश थे ।

53-54. उलट जानेवाली बस्ती को भी फेंक दिया । तो ढँक लिया उसे जिस चीज़ ने ढँक लिया;

55-56. फिर तू अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस के विषय में संदेह करेगा ? यह पहले के सावधान-कर्ताओं के सदृश एक सावधान करनेवाला है ।

57. निकट आनेवाली (क्रियामत की घड़ी) निकट आ गई ।

58. अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो उसे प्रकट कर दे ।

59-61. अब क्या तुम इस वाणी पर आश्चर्य करते हो; और हँसते हो और रोते नहीं ? जबकि तुम घमण्डी और गाफ़िल हो ।

62. अतः अल्लाह को सजदा करो और बन्दगी करो ।

## 54. अल-क्रमर

(मक्का में उतरी—आयतें 55)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. वह घड़ी निकट आ लगी और चाँद फट गया;
2. किन्तु हाल यह है कि यदि वे कोई निशानी देख भी लें तो टाल जाएँगे और कहेंगे : “यह तो जादू है, पहले से चला आ रहा है !”
3. उन्होंने झुठलाया और अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया; किन्तु हर मामले के लिए एक नियत अवधि है ।
- 4-5. उनके पास अतीत की ऐसी खबरें आ चुकी हैं, जिनमें ताड़ना अर्थात्

وَسُودًا قَبْلَ أَنْ يَكُونَ ۚ وَقَوْمُ نُوحٍ مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ۚ وَأَنظِرْ ۚ وَأَنظِرْ ۚ وَالنُّوحِفَّةَ أَهْلُهَا ۚ فَغَشَاهَا مَا غَشَى ۚ فَجَاءَنِي الْآلَاءُ بِمَا تَمَارَى ۚ هَذَا نَذِيرٌ مِّنَ النَّذِيرِ الْأُولَى ۚ إِذْ قَتَلَتِ الْأَرْزَقَةُ ۚ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ۚ أَفَلَيْتَ هَذَا الْحَدِيثِ ۚ تَجِبُونَ ۚ وَتَضْحَكُونَ ۚ وَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۚ وَ أَنْتُمْ مُعْجِدُونَ ۚ فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۚ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِقْرَبَتِ السَّاعَةُ ۚ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۚ وَإِن يَرَوْا آيَةً يُعْرِضُوا وَيَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ۚ وَكَذَّبُوا وَاسْتَعْبُوا أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَكُلٌّ أُمَمٌ مَّتَدَتِ ۚ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۚ حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ ۚ فَمَا



पूर्णतः तत्त्वदर्शिता है। किन्तु चेतावनियाँ उनके कुछ काम नहीं आ रही हैं!—

6. अतः उनसे रुख फेर लो—

जिस दिन पुकारनेवाला एक अत्यन्त अप्रिय चीज़ की ओर पुकारेगा;

7. वे अपनी झुकी हुई निगाहों के साथ अपनी क़ब्रों से निकल रहे होंगे, मानो वे बिखरी हुई टिड्डियाँ हैं;

8. दौड़ पड़ने को पुकारनेवाले की ओर। इनकार करनेवाले कहेंगे : “यह तो एक कठिन दिन है !”

9. उनसे पहले नूह की क़ौम ने भी झुठलाया। उन्होंने हमारे बन्दे को झूठा ठहराया और कहा : “यह तो दीवाना है !” और वह बुरी तरह झिड़का गया।

10-11. अन्त में उसने अपने रब को पुकारा कि “मैं दबा हुआ हूँ। अब तू बदला ले।” तब हमने मूसलाधार बरसते हुए पानी से आकाश के द्वार खोल दिए;

12. और धरती को प्रवाहित स्रोतों में परिवर्तित कर दिया, और सारा पानी उस काम के लिए मिल गया जो नियत हो चुका था।

13-17. और हमने उसे एक तख्तों और कीलोंवाली (नौका) पर सवार किया, जो हमारी निगाहों के सामने चल रही थी—यह बदला था उस व्यक्ति के लिए जिसकी क़द्र नहीं की गई। हमने उसे एक निशानी बनाकर छोड़ दिया; फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करनेवाला? फिर कैसी रही मेरी यातना और मेरे डरावे? और हमने कुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करनेवाला?

18. आद ने भी झुठलाया, फिर कैसी रही मेरी यातना और मेरा डराना?

19-20. निश्चय ही हमने एक निरन्तर अशुभ दिन में तेज़ प्रचंड ठंडी हवा भेजी,

أَلْقَمُوا

فَالْمُتَلَكِّمِينَ

تَغْنِ التَّدْرُ قَتَلَ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاءُ إِلَى  
شَيْءٍ فُكِرَ خُشْعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنْ  
الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُنْتَشِرٌ مُهْطِعِينَ إِلَى  
الدَّاءِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَذَا يَوْمٌ عَسِرٌ كَذَّبَتْ  
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ  
وَأَزْدُجِدَ فَدَعَا رَبُّهُ إِنِّي مَغْلُوبٌ فَأَنْتَصِرْ  
فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَبٍ وَفَجَّرْنَا  
الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَفَتِ الْمَاءُ عَلَى أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ  
وَحَمَلْنَاهُ عَلَى ذَاتِ أَلْوَاهٍ فُتِحَتْ يَدَا عُيُنِنَا  
جَزَاءً لِمَنْ كَانَ كُفِرَ وَلَقَدْ شَرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ  
مِنْ مُدْكَرٍ فَلَئِمَ كَانَ عَذَابِي وَنَذِيرِي وَلَقَدْ  
يَتَرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدْكَرٍ كَذَّبَتْ  
عَادَ فَلَئِمَ كَانَ عَذَابِي وَنَذِيرِي إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ

مَدِينَةٍ



उसे उनपर मुसल्लत कर दिया, तो वह लोगों को उखाड़ फेंक रही थी मानो वे उखड़े खजूर के तने हों।

21. फिर कैसी रही मेरी यातना और मेरे डरावे ?

22. और हमने कुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करनेवाला ?

23-24. समुद्र ने चेतावनियों को झुठलाया; और कहने लगे : "एक अकेला आदमी, जो हम ही में से है, क्या हम उसके पीछे चलेंगे ? तब तो वास्तव में हम गुमराही और दीवानापन में पड़ गए !

25. क्या हमारे बीच उसी पर अनुस्मृति उतारी है ? नहीं, बल्कि वह तो परले दरजे का झूठा, बड़ा आत्मश्लाघी है।"——

26-27. "कल को ही वे जान लेंगे कि कौन परले दरजे का झूठा, बड़ा आत्मश्लाघी है। हम ऊँटनी को उनके लिए परीक्षा के रूप में भेज रहे हैं ! अतः तुम उन्हें देखते जाओ और धैर्य से काम लो।

28. और उन्हें सूचित कर दो कि पानी उनके बीच बाँट दिया गया है। हर एक पीने की बारी पर बारीवाला उपस्थित होगा।"

29. अन्ततः उन्होंने अपने साथी को पुकारा, तो उसने ज़िम्मा लिया फिर उसने उसकी कूचें काट दी।

30-31. फिर कैसी रही मेरी यातना और मेरे डरावे ? हमने उनपर एक धमाका छोड़ा, फिर वे बाड़ लगानेवाले की रौंदी हुई बाड़ की तरह चूरा होकर रह गए।

32. हमने कुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या कोई है नसीहत हासिल करनेवाला ?

33. लूत की क़ौम ने भी चेतावनियों को झुठलाया।

رَبِّمَا صَدَّهَا فِي يَوْمٍ نَحْسٍ مُسْتَجِرٍ تَنْزِيلُ النَّاسِ  
كَأَنَّهُمْ أَجْمَالُ تَغْلٍ مُنْقَعِرٍ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَ  
نُذْرِي وَلَقَدْ يَسْرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ  
مُذَكِّرٍ كَذَّبْتَ ثُمَّ نَذَرْتَهُ فَقَالُوا أَبَشَرًا مِمَّا  
وَاحِدًا تَنْبِئُهُ إِنَّا إِذَا لَفِيَ ضَلَلٍ وَسُعِيرٍ أَلْفَى  
الَّذِي عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرُّ  
سَيَعْلَمُونَ عَذَابَ الْكَذَّابِ الْأَشِرِّ إِنَّا مُرْسِلُوا  
النَّاقَةِ فِتْنَةً لَهُمْ فَارْتَبِعْهُمْ وَاضْطَبِّهِمْ وَبَيْنَهُمْ  
أَنَّ السَّاءَ قِتْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلٌّ يَرْجِئُ فَتَضَرُّ  
صَاحِبُهُمْ فَمَعَاظٍ فَعَقَرَهُ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَ  
نُذْرِي إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيَّعَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا  
كَهَشِيمِ الْمَعْظِيزِ وَلَقَدْ يَسْرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ  
فَهَلْ مِنْ مُذَكِّرٍ كَذَّبْتَ ثُمَّ نُذِرْتَهُ بِالنُّذْرِ



34-35. हमने लूत के घरवालों के सिवा उनपर पथराव करनेवाली तेज़ वायु भेजी। हमने अपनी विशेष अनुकम्पा से प्रातःकाल उन्हें बचा लिया। हम इसी तरह उस व्यक्ति को बदला देते हैं जो कृतज्ञता दिखाए।

36. उसने तो उन्हें हमारी पकड़ से सावधान कर दिया था। किन्तु वे चेतावनियों के विषय में संदेह करते रहे।

37. उन्होंने उसे फुसलाकर उसके पास से उसके अतिथियों को बलाना चाहा। अन्ततः हमने उनकी आँखें मेट दीं : “लो, अब चखो मज़ा मेरी यातना और चेतावनियों का !”

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ ۖ نَجَّيْنَاهُمْ  
سَحَرَةً نُّعَصِّقُ مِنْ عِندِنَا ۖ كَذَّبَكَ نَجْفُزِي مَنْ  
شَكَرَ ۖ وَلَقَدْ آتَيْنَاهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنَّدْرِ ۖ  
وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ صَغِيهِ ۖ فَطَسَّنَا أَعْيُنَهُمْ فَذَوْقُوا  
عَذَابِي وَنُذْرِي ۖ وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ  
مُتَقَرِّرٌ ۖ فَذَوْقُوا عَذَابِي وَنُذْرِي ۖ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا  
الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ۖ وَلَقَدْ  
جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النَّدْرُ ۖ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا  
فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُقْتَدِرٍ ۖ أَكْفَارَكُمْ خَيْرٌ مِنْ  
أُولَئِكَمْ أَمْ لَكُمْ بُرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۖ أَمْ يَقُولُونَ  
نَحْنُ جَمِيعٌ مُنْتَصِرُونَ ۖ سَيَهْرَمُ الْجَمْعُ وَيُولُونَ الذَّبْرُ ۖ  
بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَذًى وَآمْرٌ ۖ  
إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۖ يَوْمَ يُحْبَبُونَ

38-39. सुबह सवेरे ही एक अटल यातना उनपर आ पहुँची : “लो, अब चखो मज़ा मेरी यातना और चेतावनियों का !”

40. और हमने कुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करनेवाला ?

41. और फिर औनियों के पास चेतावनियाँ आईं;

42. उन्होंने हमारी मारी निशानियों को झुठला दिया। अन्ततः हमने उन्हें पकड़ लिया, जिस प्रकार एक ज़बरदस्त प्रभुत्वशाली पकड़ता है।

43. क्या तुम्हारे काफ़िर कुछ उन लोगों से अच्छे हैं या किताबों में तुम्हारे लिए कोई छुटकारा लिखा हुआ है ?

44. या वे कहते हैं : “और हम मुक्काबले की शक्ति रखनेवाले एक जत्था हैं ?”

45. शीघ्र ही वह जत्था पराजित होकर रहेगा और वे पीठ दिखा जाएँगे।

46. नहीं, बल्कि वह घड़ी है, जिसका समय उनके लिए नियत है और वह बड़ी आपदावाली और कटु घड़ी है !

47. निस्संदेह, अपराधी लोग गुमराही और दीवानेपन में पड़े हुए हैं।







11-12. उसमें स्वादिष्ट फल हैं और खजूर के वृक्ष हैं, जिनके फल आवरणों में लिपटे हुए हैं, और भुसवाले अनाज भी और सुगंधित बेल-बूटा भी।

13. तो तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

14. उसने मनुष्य को ठीकरी जैसी खनखनाती हुई मिट्टी से पैदा किया;

15. और जिन्न को उसने आग की लपट से पैदा किया।

16. फिर तुम दोनों अपने रब की सामर्थ्यों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِنْ نَّارٍ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ رَبُّ الشَّرِيقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ مَرْجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقَيْنِ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغَيْنِ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ كُلٌّ مِّنْ عَلَيْهَا فَانٍ وَ يَبْقَى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ يَنْفُلُهُ مَن فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

17-18. वह दो पूर्व का रब है और दो पश्चिम का रब भी।<sup>1</sup> अतः तुम दोनों अपने रब की महानताओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

19-20. उसने दो समुद्रों को प्रवाहित कर दिया, जो आपस में मिल रहे होते हैं। उन दोनों के बीच एक परदा बाधक होता है, जिसका वे अतिक्रमण नहीं करते।

21. तो तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

22-23. उन (समुद्रों) से मोती और मूँगा निकलता है। अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

24. उसी के बस में हैं समुद्र में पहाड़ों की तरह उठे हुए जहाज़।

25-26 तो तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ? प्रत्येक जो भी इस (धरती) पर है, नाशवान है।

27. किन्तु तुम्हारे रब का प्रतापवान और उदार स्वरूप शेष रहनेवाला है।

28. अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

1. अभिप्राय है उत्तरायण और दक्षिणायन में सूर्य के उदय एवं अस्त होने के स्थल।



29. आकाशों और धरती में जो भी है उसी से माँगता है। उसकी नित्य नई शान है।

30. अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

31. ऐ दोनों बोझों ! शीघ्र ही हम तुम्हारे लिए निवृत्त हुए जाते हैं।

32. तो तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

33. ऐ जिन्नों और मनुष्यों के गिरोह ! यदि तुमसे हो सके कि आकाशों और धरती की सीमाओं को पार कर सको, तो पार कर जाओ; तुम कदापि पार नहीं कर सकते बिना अधिकार-शक्ति के।

34. अतः तुम दोनों अपने रब की सामर्थ्यों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

35-38. तुम दोनों पर अग्नि-ज्वाला और धुएँवाला अंगारा (पिघला ताँबा) छोड़ दिया जाएगा, फिर तुम मुक्काबला न कर सकोगे। अतः तुम दोनों अपने रब की सामर्थ्यों में से किस-किस को झुठलाओगे ? फिर जब आकाश फट जाएगा और लाल चमड़े की तरह लाल हो जाएगा।— अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

39. फिर उस दिन न किसी मनुष्य से उसके गुनाह के विषय में पूछा जाएगा न किसी जिन से।

40. अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

41. अपराधी अपने चेहरों से पहचान लिए जाएँगे और उनके माथे के बालों और टाँगों द्वारा उन्हें पकड़ लिया जाएगा।

42. अतः तुम दोनों अपने रब की सामर्थ्यों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

مَنْ قَاتِلٌ

مَنْ قَاتِلٌ

كُلُّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۖ فَيَأْتِي آلَهُ رَبِّكُمْ يَكْذِبُونَ  
سَفَرُهُ لَكُمْ آيَةُ الثَّقَلَيْنِ ۖ فَيَأْتِي آلَهُ رَبِّكُمْ  
يَكْذِبُونَ ۖ يُعَشِّرُ الْجَنَّةَ وَالْإِنسَ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ  
أَنْ تَنْفِذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ  
فَأَنْفِذُوا لَا تَنْفِذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ۖ فَيَأْتِي آلَهُ  
رَبِّكُمْ يَكْذِبُونَ ۖ يُرْسِلُ عَلَيْكُمْ شَوَاطِلَ مِنْ  
ثَاقِبٍ ۖ وَنُحَاسٍ فَلَا تَنْتَجِرُونَ ۖ فَيَأْتِي آلَهُ رَبِّكُمْ  
يَكْذِبُونَ ۖ فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً  
كَالدِّهَانِ ۖ فَيَأْتِي آلَهُ رَبِّكُمْ يَكْذِبُونَ ۖ  
فَيَوْمَئِذٍ لَا يُنْزِلُ عَنْ ذِكْرِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ۖ  
فَيَأْتِي آلَهُ رَبِّكُمْ يَكْذِبُونَ ۖ يُعْرِفُ الْغُيُومُونَ بِبَيْنِهِمْ  
فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ۖ فَيَأْتِي آلَهُ  
رَبِّكُمْ يَكْذِبُونَ ۖ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا

مَنْ قَاتِلٌ



43. यही वह जहन्नम है जिसे अपराधी लोग झूठ ठहराते रहे हैं।

44. वे उसके और खौलते हुए पानी के बीच चक्कर लगा रहे होंगे।

45-46. फिर तुम दोनों अपने रब के सामर्थ्यों में से किस-किस को झुठलाओगे? किन्तु जो अपने रब के सामने खड़े होने का डर रखता होगा, उसके लिए दो बाग़ हैं।—

47. तो तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे?—

48. घनी डालियोंवाले;

49-51. अतः तुम दोनों अपने रब के उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे? उन दोनों (बाग़ों) में दो प्रवाहित स्रोत हैं। अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे?

52-53. उन दोनों (बाग़ों) में हर स्वादिष्ट फल की दो-दो क्रिस्में हैं; अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

54-55. वे ऐसे बिछौनों पर तकिया लगाए हुए होंगे जिनके अस्तर गाढ़े रेशम के होंगे, और दोनों बाग़ों के फल झुके हुए निकट ही होंगे। अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

56. उन (अनुकम्पाओं) में निगाह बचाए रखनेवाली (सुन्दर) स्त्रियाँ होंगी, जिन्हें उनसे पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिनने।

57. फिर तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे?

58-59. मानो वे लाल (याकूत) और प्रवाल (मूँगा) हैं। अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे?

60. अच्छाई का बदला अच्छाई के सिवा और क्या हो सकता है?





61. अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

62-63. उन दोनों से हटकर दो और बाग़ हैं। फिर तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

64-65. गहरे हरित; अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

66. उन दोनों (बाग़ों) में दो स्रोत हैं जोश मारते हुए।

67. अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

الْزَّاهِيْنَ

فَلَا تَسْتَفْتِيْهِمْ

اَلَاۤءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝ وَ مِنْ دُوْرِنِهَمَا  
جَنَّتِيْنَ ۝ فَيَاۤءِ اَلَاۤءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝  
مُذَهَّبَتَيْنِ ۝ فَيَاۤءِ اَلَاۤءَ رَبِّمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝  
فِيْهِمَا عَيْنِيْنَ نُّضَاجَتَيْنِ ۝ فَيَاۤءِ اَلَاۤءَ رَبِّكُمَا  
تُكَذِّبِيْنَ ۝ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَانٌ ۝  
فَيَاۤءِ اَلَاۤءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝ فِيْهُنَّ خَيْرٌ  
جَسَانٌ ۝ فَيَاۤءِ اَلَاۤءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝ حُورٌ  
مَّقْصُوْرَتٌ فِي الْغِيَامِ ۝ فَيَاۤءِ اَلَاۤءَ رَبِّكُمَا  
تُكَذِّبِيْنَ ۝ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌ ۝  
فَيَاۤءِ اَلَاۤءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝ مُتَشٰكِوْنَ عَلٰ  
رُقُرُقٍ خَضِرٍ وَغَبَقِرِيْنَ جَسَانٍ ۝ فَيَاۤءِ اَلَاۤءَ  
رَبِّكُمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝ تَبٰرَكَ اِسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ  
وَ الْاِكْرَامِ ۝

مَدَن

68-69. उनमें हैं स्वादिष्ट फल और खजूर और अनार; अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

70-71. उनमें भली और सुन्दर स्त्रियाँ होंगी। तो तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

72-73. हूरें (परम रूपवती स्त्रियाँ) खेमों में रहनेवालीं; अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

74-75. जिन्हें उनसे पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने। अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

76-77. वे हरे रेशमी गद्दों और उत्कृष्ट और असाधारण कालीनों पर तकिया लगाए होंगे; अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

78. बड़ा ही बरकतवाला नाम है तुम्हारे प्रतापवान और उदार रब का।







विकार आएगा।

20. और स्वादिष्ट फल जो वे पसन्द करें;

21. और पक्षी का मांस जो वे चाहें;

22-23. और बड़ी आँखोंवाली हूँ, मानो छिपाए हुए मोती हों।

24. यह सब उसके बदले में उन्हें प्राप्त होगा जो कुछ वे करते रहे।

25-26. उसमें वे न कोई व्यर्थ बात सुनेंगे और न गुनाह की बात; सिवाय इस बात के कि "सलाम हो, सलाम हो!"

27. रहे सौभाग्यशाली लोग, तो सौभाग्यशालियों का क्या कहना!

28-29. वे वहाँ होंगे जहाँ बिन काँटों के बेर होंगे; और गुच्छेदार केले;

30. दूर तक फैली हुई छाँव;

31. बहता हुआ पानी;

32-33. बहुत-सा स्वादिष्ट फल, जिसका सिलसिला टूटनेवाला न होगा और न उसपर कोई रोक-टोक होगी।

34. उच्चकोटि के बिछौने होंगे;

35. (और वहाँ उनकी पत्नियों को) निश्चय ही हमने एक विशेष उठान पर उठाया।

36. और हमने उन्हें कुँवारियाँ बनाया;

37. प्रेम दशनिवाली और समायु;

38. सौभाग्यशाली लोगों के लिए;

39-40. वे अगलों में से भी अधिक होंगे और पिछलों में से भी अधिक होंगे।

41. रहे दुर्भाग्यशाली लोग, तो कैसे होंगे दुर्भाग्यशाली लोग!

42. गर्म हवा और खौलते हुए पानी में होंगे;

الْوَاكِرِ

الْوَاكِرِ

عَنْهَا وَلَا يُنْفَوْنَ ۖ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ۖ  
وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۖ وَخُورٍ عَيْنٍ ۖ  
كَامُثَالِ الْوَلُؤِ الْمَكْنُونِ ۖ جَذَائِ بِمَا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ۖ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۖ  
إِذَا قِيلَ لَهُمْ سَلُّوا سُلُكًا ۖ وَأَصْحَبُ الِيمِينِ ۖ مَا  
أَصْحَبُ الِيمِينِ ۖ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ۖ وَطَلْحٍ  
مَّنْضُودٍ ۖ وَظِلٍّ مُّتَدُوِّدٍ ۖ وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ۖ وَ  
فَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ۖ لَّهِ مَقْطُوعَةٍ ۖ لَّهِ مَنُوعَةٍ ۖ  
وَقُورٍ مُّرْفُوعَةٍ ۖ إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنِشَاءً ۖ  
فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ۖ عُرُبًا أَتْرَابًا ۖ لِأَصْحَبِ  
الِيمِينِ ۖ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۖ وَثُلَّةٌ مِّنَ  
الْآخِرِينَ ۖ وَأَصْحَبُ الشِّمَالِ ۖ مَا أَصْحَبُ  
الشِّمَالِ ۖ فِي سُورٍ وَحِينٍ ۖ وَظِلٍّ مِّنَ

سِدْرٍ



43-44. और काले धुएँ की छाँव में,  
जो न ठंडी होगी और न उत्तम और  
लाभप्रद ।

45. वे इससे पहले सुख-सम्पन्न  
थे;

46. और बड़े गुनाह पर अड़े  
रहते थे ।

47. कहते थे : “क्या जब हम  
मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ  
होकर रह जाएँगे, तो क्या हम  
वास्तव में उठाए जाएँगे ?

48. और क्या हमारे पहले के  
बाप-दादा भी ?”

49-50. कह दो : “निश्चय ही  
अगले और पिछले भी एक नियत  
समय तक इंकट्टे कर दिए जाएँगे, जिसका दिन ज्ञात और नियत है ।

51-52. फिर तुम ऐ गुमराहो, झुठलानेवालो ! ज़क्कूम के वृक्ष में से खाओगे;

53. और उसी से पेट भरोगे;

54. और उसके ऊपर से खौलता हुआ पानी पीओगे;

55. और तौंस लगे ऊँट<sup>1</sup> की तरह पीओगे ।”

56. यह बदला दिए जाने के दिन उनका पहला सत्कार होगा ।

57. हमने तुम्हें पैदा किया; फिर तुम सच क्यों नहीं मानते ?

58. तो क्या तुमने विचार किया जो चीज़ तुम टपकाते हो ?

59. क्या तुम उसे आकार देते हो, या हम हैं आकार देनेवाले ?

60-61. हमने तुम्हारे बीच मृत्यु को नियत किया है और हमारे बस से यह  
बाहर नहीं है कि हम तुम्हारे जैसों को बदल दें और तुम्हें ऐसी हालत में उठा

الواقعة

قَالَ تَحَنُّنًا

يَحْصُمُونَ ۚ لَا بَارِدَ وَلَا كَرِيمٍ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا  
قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ۚ وَكَانُوا يُصِرُّونَ  
عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ۚ وَكَانُوا يَقُولُونَ ۚ أَإِذَا  
مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ۖ إِنَّا لَبُعْثُونَ ۚ  
أَوَإِذَا دُفِنَا ۖ الْآوَلُونَ ۚ قُلْ إِنَّا الْأَوَّلِينَ وَ  
الْآخِرِينَ ۚ لَنَجْئَنَّوَنَّهُ ۚ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ  
مَّعْلُومٍ ۚ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيْهَا الضَّالُّونَ لَتُكَذَّبُونَ ۚ  
لَا تَكُونُونَ مِنْ شَجَرٍ مِّن زُقُومٍ ۚ فَكَأَيُّونَ  
مِنْهَا الْبَاطُونَ ۚ فَشَرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ  
الْحَمِيمِ ۚ فَشَرِبُونَ شُرْبَ الْهَلِيمِ ۚ هَذَا  
نَزَّلْنَاهُ يَوْمَ الذِّكْرِ ۚ نَحْنُ خَلَقْنَاهُ فَلَوْلَا  
تُصَدِّقُونَ ۚ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُمْنُونَ ۚ ءَأَنْتُمْ  
تَخْلُقُونَهُ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ۚ نَحْنُ قَدَرْنَا

سَبْعًا



खड़ा करें जिसे तुम जानते नहीं।

62. तुम तो पहली पैदाइश को जान चुके हो, फिर तुम ध्यान क्यों नहीं देते ?

63 फिर क्या तुमने देखा जो कुछ तुम खेती करते हो ?

64. क्या उसे तुम उगाते हो या हम उसे उगाते हैं ?

65-67. यदि हम चाहें तो उसे चूर-चूर कर दें। फिर तुम बातें बनाते रह जाओ कि "हमपर उलटा डाँड़ पड़ गया, बल्कि हम वंचित होकर रह गए!"

68. फिर क्या तुमने उस पानी को देखा जिसे तुम पीते हो ?

69. क्या उसे बादलों से तुमने बरसाया या बरसानेवाले हम हैं ?

70. यदि हम चाहें तो उसे अत्यन्त खारा बनाकर रख दें। फिर तुम कृतज्ञता क्यों नहीं दिखाते ?

71. फिर क्या तुमने उस आग को देखा जिसे तुम सुलगाते हो ?

72. क्या तुमने उसके वृक्ष को पैदा किया है या पैदा करनेवाले हम हैं ?

73. हमने उसे एक अनुस्मृति और मरुभूमि के मुसाफ़िरो और ज़रूरतमन्दों के लिए लाभप्रद बनाया।

74. अतः तुम अपने महान रब के नाम की तसबीह करो।

75. अतः नहीं ! मैं क़सम खाता हूँ सितारों की स्थितियों की—

تِلْكَ آيَاتُ

الْقُرْآنِ

بَيْنَكُمْ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمُسْبِقِينَ ۖ عَلَّ أَنْ  
تُجَدَّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۖ  
وَلَقَدْ عَلَّمْتُمُ النَّشَأَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۖ  
أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ۖ أَأَنْتُمْ تَزْرَعُونَهَا أَمْ  
نَحْنُ الزَّارِعُونَ ۖ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا  
فَطَلَّغْتُمْ تِلْكَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ إِنَّا كَالْمُغْرَمُونَ ۖ بَلْ نَحْنُ  
مُخْرَجُونَ ۖ أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ۖ  
أَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ۖ  
لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ جُرَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۖ  
أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ۖ أَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمُ  
شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُونَ ۖ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا  
تَذْكِرَةً وَمَتَاعًا لِلْمُقْوِينَ ۖ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ  
رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۖ فَلَا أُقْسِمُ بِسَوَاقِعِ النُّجُومِ ۖ

رَبِّكَ



76-77. और यह बहुत बड़ी गवाही है, यदि तुम जानो—निश्चय ही यह प्रतिष्ठित कुरआन है।

78-79. एक सुरक्षित किताब में अंकित है। उसे केवल पाक-साफ़ व्यक्ति ही हाथ लगाते हैं।

80-82. उसका अवतरण सारे संसार के रब की ओर से है। फिर क्या तुम उस वाणी के प्रति उपेक्षा दशति हो? और तुम इसको अपनी वृत्ति बना रहे हो कि झुठलाते हो?

83-87. फिर ऐसा क्यों नहीं होता, जबकि प्राण कण्ठ को आ लगते हैं और उस समय तुम देख रहे होते हो—और हम तुम्हारी अपेक्षा

उससे अधिक निकट होते हैं। किन्तु तुम देखते नहीं—फिर ऐसा क्यों नहीं होता कि यदि तुम अधीन<sup>1</sup> नहीं हो तो उसे (प्राण को) लौटा लो, यदि तुम रुच्चे हो।

88. फिर यदि वह (अल्लाह के) निकटवर्तियों में से है;

89. तो (उसके लिए) आराम, सुख-सामग्री और सुगंध है, और नेमतवाला बाग़ है।

90-91. और यदि वह भाग्यशालियों में से है, तो “सलाम है तुम्हें कि तुम सौभाग्यशालियों में से हो।”

92. किन्तु यदि वह झुठलानेवालों, गुमराहों में से है;

93. तो उसका पहला सत्कार खौलते हुए पानी से होगा।

94. फिर भड़कती हुई आग में उन्हें झोंका जाना है।

الواقعة

قَالَ مَا خَلَقْتُمْ

وَأَنَّهُ لَقَدْ لَوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ۚ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ  
كَرِيمٌ ۚ فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ۚ لَا يَمَسُّهُ إِلَّا  
الْمُطَهَّرُونَ ۚ تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۚ  
أَفِيهِدَا الْحَدِيثَ أَنْتُمْ مُدْهِنُونَ ۚ وَتَجْعَلُونَ  
بِرِزْقِكُمْ أَشْكُم مَّنْكَدِبُونَ ۚ فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ  
الْحُلُقُومَ ۚ وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ۚ وَنَحْنُ  
أَقْرَبُ إِلَيْهِ وَشَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ۚ فَلَوْلَا  
إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۚ تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ  
صَادِقِينَ ۚ فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۚ  
فَرَوْهُ وَرَيْعَانٌ وَجَجْتُ نَعِيمٍ ۚ وَأَمَّا إِنْ  
كَانَ مِنَ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۚ فَسَلَّمُ لَكَ مِنْ  
أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۚ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمَكِيدِينَ  
الضَّالِّينَ ۚ فَتَزَلَّ مِنْ حَيْمٍ ۚ وَتَصْلِيَةٌ

مِنْ

1. अर्थात् यदि तुम स्वतंत्र हो और तुम्हारा आखिरत में कोई हिसाब-किताब होनेवाला नहीं है तो प्राण को क्यों जाने देते हो? उसे रोक रखो।



95. निस्संदेह यही विश्वसनीय सत्य है।

96. अतः तुम अपने महान रब की तसबीह करो।

## 57. अल-हदीद

(मदीना में उतरी—आयतें 29)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अल्लाह की तसबीह की हर उस चीज़ ने जो आकाशों और धरती में है। वही प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

2. आकाशों और धरती की बादशाही उसी की है। वही जीवन प्रदान करता है और मृत्यु देता है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

3. वही आदि है और अन्त भी और वही व्यक्त है और अव्यक्त भी। और वह हर चीज़ को जानता है।

4. वही है जिसने आकाशों और धरती को छह दिनों में पैदा किया; फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। वह जानता है जो कुछ धरती में प्रवेश करता है और जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आकाश से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है। और तुम जहाँ कहीं भी हो, वह तुम्हारे साथ है। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो।





5. आकाशों और धरती की बादशाही उसी की है और अल्लाह ही की ओर सारे मामले पलटते हैं।

6. वह रात को दिन में प्रविष्ट कराता है और दिन को रात में प्रविष्ट कराता है। वह सीनों में छिपी बात तक को जानता है।

7. ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और उसमें से खर्च करो जिसका उसने तुम्हें अधिकारी बनाया है। तो तुममें से जो लोग ईमान लाए और उन्होंने खर्च किया, उनके लिए बड़ा प्रतिदान है।

8. तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते; जबकि रसूल तुम्हें निमंत्रण दे रहा है कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और वह तुमसे दृढ़ वचन भी ले चुका है, यदि तुम मोमिन हो।

9. वही है जो अपने बन्दे पर स्पष्ट आयतें उतार रहा है, ताकि वह तुम्हें अंधकारों से प्रकाश की ओर ले आए। और वास्तविकता यह है कि अल्लाह तुमपर अत्यन्त करुणामय, दयावान है।

10. और तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह के मार्ग में खर्च न करो, हालाँकि आकाशों और धरती की विरासत अल्लाह ही के लिए है? तुममें से जिन लोगों ने विजय से पूर्व खर्च किया और लड़े वे परस्पर एक-दूसरे के समान नहीं हैं। वे तो दरजे में उनसे बढ़कर हैं जिन्होंने बाद में खर्च किया और लड़े। यद्यपि अल्लाह ने प्रत्येक से अच्छा वादा किया है। अल्लाह उसकी

الْحَمْدُ لِلَّهِ

قَالَ تَحْفِظُكُمْ

مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ. وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ  
الْأُمُورُ. يُؤَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ  
فِي اللَّيْلِ. وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ. أَمْثَلُوا  
بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُتَخَلِفِينَ  
فِيهِ. فَالَّذِينَ أَمْثَلُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ  
كَبِيرٌ. وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالرَّسُولِ  
يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِنْكُمْ  
إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ. هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى  
عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ  
إِلَى النُّورِ. وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَعَزِيزٌ نَجِيمٌ. وَمَا  
لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ. لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ  
مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلَ أَوْلِيكَ أَغْطُمُ دَرَجَةً

مَنْ



खबर रखता है, जो कुछ तुम करते हो।

11. कौन है जो अल्लाह को ऋण दे, अच्छा ऋण कि वह उसे उसके लिए कई गुना कर दे। और उसके लिए सम्मानित प्रतिदान है।

12. जिस दिन तुम मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को देखोगे कि उनका प्रकाश उनके आगे-आगे दौड़ रहा है और उनके दाएँ हाथ में है। (कहा जाएगा :) “आज शुभ सूचना है तुम्हारे लिए ऐसी जन्नतों की जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें सदैव रहना है। वही बड़ी सफलता है।”

قَالَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدُ وَقَتَلُوا، وَكُلًّا  
وَعَدَ اللَّهُ الْخُسْفَى، وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ  
مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَعِفَهُ  
لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ  
يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ  
بُشْرَىٰ لَكُمْ الْيَوْمَ جَنَّتْ تَجْعَلُ مِنْ تَفَعُّلِهَا لَا تَهْدِي  
خُلْدِيْنَ فِيْهَا، ذَٰلِكَ هُوَ الْقَوْزُ الْعَظِيمُ  
يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا  
انظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّورِكُمْ، قِيلَ ارْجِعُوا  
وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسْوا نُورًا فَضَرَبَ بَيْنَهُمْ سُوْرًا  
بَابٌ بَاطِنُهُ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ  
الْعَذَابُ  
يُنَادُوْنَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ، قَالُوا بَلَىٰ  
وَلَكِنْ كُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ

مَنْ

13. जिस दिन कपटाचारी पुरुष और कपटाचारी स्त्रियाँ मोमिनों से कहेंगी: “तनिक हमारी प्रतीक्षा करो। हम भी तुम्हारे प्रकाश में से कुछ प्रकाश ले लें!” कहा जाएगा: “अपने पीछे लौट जाओ। फिर प्रकाश तलाश करो!” इतने में उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, जिसमें एक द्वार होगा। उसके भीतर का हाल यह होगा कि उसमें दयालुता होगी और उसके बाहर का यह कि उस ओर से यातना होगी।

14. वे उन्हें पुकारकर कहेंगे: “क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे?” वे कहेंगे: “क्यों नहीं? किन्तु तुमने तो अपने आपको फ़ितने (गुमराही) में डाला और प्रतीक्षा करते रहे और संदेह में पड़े रहे और कामनाओं ने तुम्हें धोखे में डाले



रखा, यहाँ तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ गया और धोखेबाज़ (शैतान) ने तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखे में डाले रखा है।

15. अब आज न तुमसे कोई फ़िदया (मुक्ति-प्रतिदान) लिया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने इनकार किया। तुम्हारा ठिकाना आग है, और वही तुम्हारी संरक्षिका है। और बहुत ही बुरी जगह है अन्त में पहुँचने की।”

16. क्या उन लोगों के लिए, जो ईमान लाए, अभी वह समय नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिए और जो सत्य

अवतरित हुआ है उसके लिए झुक जाएँ? और वे उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिन्हें किताब दी गई थी, फिर उनपर दीर्घ समय बीत गया। अन्ततः उनके दिल कठोर हो गए और उनमें से अधिकांश अवज्ञाकारी ही रहे।

17. जान लो, अल्लाह धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवन प्रदान करता है। हमने तुम्हारे लिए आयतें खोल-खोलकर बयान कर दी हैं, ताकि तुम बुद्धि से काम लो।

18. निश्चय ही जो सदका देनेवाले पुरुष और सदका देनेवाली स्त्रियाँ हैं और उन्होंने अल्लाह को अच्छा ऋण दिया, उसे उनके लिए कई गुना कर दिया जाएगा। और उनके लिए सम्मानित प्रतिदान है।

19. जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए, वही अपने रब के यहाँ सिद्दीक और शहीद<sup>1</sup> हैं। उनके लिए उनका प्रतिदान और उनका प्रकाश

فَقَدْ بَيَّنَّا

قَالَ تِلْكَ

وَعَزَّزْنَاكُمْ الْإِمَانِ حَتَّى جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَعَزَّزْكُمُ  
بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۖ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ  
وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مَا أُولَئِكَ الشَّارِدُ ۚ هِيَ  
مَوْلَاكُمْ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۚ أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ  
آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ  
مِنَ الْحَقِّ ۖ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ  
مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ۖ  
وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۖ اِغْلِبُوا أَرْضَ اللَّهِ  
يُنْفِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمْ  
الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۖ إِنَّ الْمَصْدِرَيْنِ  
وَالْمَصْدِرَتَيْنِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يَضَعُفُ  
لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا  
بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ۖ وَالشَّهَدَاءُ



हैं। किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही भड़कती आगवाले हैं।

20. जान लो, सांसारिक जीवन तो बस एक खेल और तमाशा है और एक साज-सज्जा, और तुम्हारा आपस में एक-दूसरे पर बढ़ाई जताना, और धन और संतान में परस्पर एक-दूसरे से बढ़ा हुआ प्रदर्शित करना। वर्षा की मिसाल की तरह जिसकी वनस्पति ने किसान का दिल मोह लिया। फिर वह पक जाती है; फिर तुम उसे देखते हो कि वह पीली हो गई।

फिर वह चूर्ण-विचूर्ण होकर रह जाती है, जबकि आखिरत में कठोर यातना भी है और अल्लाह की क्षमा और प्रसन्नता भी। सांसारिक जीवन तो केवल धोखे की सुख-सामग्री है।

21. अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर अग्रसर होने में एक-दूसरे से बाज़ी ले जाओ, जिसका विस्तार आकाश और धरती के विस्तार जैसा है, जो उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए हों। यह अल्लाह का उदार अनुग्रह है, जिसे चाहता है प्रदान करता है। अल्लाह बड़े उदार अनुग्रह का मालिक है।

22-23. जो मुसीबत भी धरती में आती है और तुम्हारे अपने ऊपर, वह

الْحَمْدُ لِلَّهِ

قَالَ السَّيِّدُ

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ ۖ وَالَّذِينَ  
كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ  
الْجَحِيمِ ۖ يُغْلِقُونَ أَشْنَا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لَعِبٌ  
وَلَهُمْ وَزِينَةٌ ۖ وَتَفَاخُؤٌ بَيْنَهُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي  
الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَشَلِّ عَيْنٍ ۖ الْعَجَبُ الْكُفَّارُ  
نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيمُ ۖ فَتَرَاهُ مَمْضٍ ثُمَّ يَكُونُ  
حُطَامًا ۖ وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَمَغْفِرَةٌ  
مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ ۖ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا  
إِلَّا مَتَاعٌ الْعُرُودِ ۖ سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ  
مِّنَ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّاءِ  
وَالْأَرْضِ ۖ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللهِ وَ  
رُسُلِهِ ۖ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۖ  
وَاللهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۖ مَا أَصَابَ مِنْ

سَلْبٍ



अनिवार्यतः एक किताब में अंकित है, इससे पहले कि हम उसे अस्तित्व में लाएँ—निश्चय ही यह अल्लाह के लिए आसान है—(यह बात तुम्हें इसलिए बता दी गई) ताकि तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुमसे जाती रहे और न उसपर फूल जाओ जो उसने तुम्हें प्रदान की हो। अल्लाह किसी इतरानेवाले, बड़ाई जतानेवाले को पसन्द नहीं करता।

24. जो स्वयं कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी करने पर उकसाते हैं, और जो कोई मुँह मोड़े तो अल्लाह तो निस्पृह प्रशंसनीय है।

مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَن نَّبْرَأَهَا إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ لَّكِنَّا تَأْسَوْنَ عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُونَ بِمَا آتَاكُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝ الَّذِينَ يَجْعَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبَغْيِ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنْصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النَّبُوَّةَ وَالكِتَابَ

25. निश्चय ही हमने अपने रसूलों को स्पष्ट प्रमाणों के साथ भेजा और उनके साथ किताब और तुला उतारी, ताकि लोग इनसाफ़ पर क़ायम हों। और लोहा भी उतारा, जिसमें बड़ी दहशत है और लोगों के लिए कितने ही लाभ हैं, और (किताब एवं तुला इसलिए भी उतारी) ताकि अल्लाह जान ले<sup>1</sup> कि कौन परोक्ष में रहते हुए उसकी और उसके रसूलों की सहायता करता है। निश्चय ही अल्लाह शक्तिशाली, प्रभुत्वशाली है।

26. हमने नूह और इबराहीम को भेजा और उन दोनों की संतति में पैग़म्बरी और किताब रख दी। फिर उनमें से किसी ने तो सन्मार्ग अपनाया; किन्तु उनमें



से अधिकतर अवज्ञाकारी हैं।

27. फिर उनके पीछे उन्हीं के पद-चिह्नों पर हमने अपने दूसरे रसूलों को भेजा और हमने उनके पीछे मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उसे इंजील प्रदान की। और जिन लोगों ने उसका अनुसरण किया, उनके दिलों में हमने करुणा और दया रख दी। रहा संन्यास, तो उसे उन्होंने स्वयं घड़ा था। हमने उसे उनके लिए अनिवार्य नहीं किया था, यदि अनिवार्य किया था तो केवल अल्लाह की प्रसन्नता की चाहत। फिर वे उसका निर्वाह न कर सके, जैसा कि उनका निर्वाह करना

الْحَدِيثُ

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ

فَمِنْهُمْ مُهْتَدٍ، وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَافِقَةً ذُرِّيَّتَهُ وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانٍ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا، فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ، وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرُسُولِهِ يُؤْزِكُمْ كَافِلِينَ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ ثَوْرًا تَتَشَوَّنَ بِهٖ وَيَغْفِرَ لَكُمْ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ لَيْسَ لِيَعْلَمَ أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۝ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

चाहिए था। अतः उन लोगों को, जो उनमें से वास्तव में ईमान लाए थे, उनका बदला हमने (उन्हें) प्रदान किया। किन्तु उनमें से अधिकतर अवज्ञाकारी ही हैं।

28. ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का डर रखो और उसके रसूल पर ईमान लाओ। वह तुम्हें अपनी दयालुता का दोहरा हिस्सा प्रदान करेगा और तुम्हारे लिए एक प्रकाश कर देगा, जिसमें तुम चलोगे और तुम्हें क्षमा कर देगा। अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

29. ताकि किताबवाले यह न समझें कि अल्लाह के अनुग्रह में से वे<sup>1</sup> किसी चीज़ पर अधिकार न प्राप्त कर सकेंगे और यह कि अनुग्रह अल्लाह के हाथ में है, जिसे चाहता है प्रदान करता है।<sup>2</sup> अल्लाह बड़े अनुग्रह का मालिक है।

1. अर्थात् हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के अनुयायी।

2. अर्थात् अल्लाह के अनुग्रह पर उनका कोई अधिकार नहीं है। वह जिसे चाहता है, प्रदान करता है। अतएव यह वास्तविकता है कि उसने ईमानवालों पर अपना अनुग्रह किया है।



## 58. अल-मुजादला

(मदीना में उतरी — आयतें 22)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. अल्लाह ने उस स्त्री की बात  
सुन ली जो अपने पति के विषय में  
तुमसे झगड़ रही है और अल्लाह से  
शिकायत किए जाती है । अल्लाह  
तुम दोनों की बातचीत सुन रहा है ।  
निश्चय ही अल्लाह सब कुछ  
सुननेवाला, देखनेवाला है ।

2. तुममें से जो लोग अपनी स्त्रियों  
से ज़िहार<sup>1</sup> करते हैं, उनकी माएँ वे  
नहीं हैं, उनकी माएँ तो वही हैं  
जिन्होंने उनको जन्म दिया है । यह अवश्य है कि वे लोग एक अनुचित बात और  
झूठ कहते हैं । और निश्चय ही अल्लाह टाल जानेवाला अत्यन्त क्षमाशील है ।

3. जो लोग अपनी स्त्रियों से ज़िहार करते हैं; फिर जो बात उन्होंने कही थी  
उससे रुजू करते हैं, तो इससे पहले कि दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएँ एक  
गर्दन<sup>2</sup> आज़ाद करनी होगी । यह वह बात है जिसकी तुम्हें नसीहत की जाती  
है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसकी खबर रखता है ।

4. किन्तु जिस किसी को गुलाम प्राप्त न हो तो वह निरन्तर दो माह रोज़े रखे,  
इससे पहले कि वे दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएँ, और जिस किसी को इसकी भी  
सामर्थ्य न हो तो साठ मुहताजों को भोजन कराना होगा । यह इसलिए कि तुम



1. ज़िहार का अर्थ है किसी व्यक्ति का अपनी पत्नी से कह देना कि तू मेरे लिए ऐसी (हराम) है, जैसे मेरी माँ की पीठ ।

2. अर्थात् इसका प्रायश्चित्त यह है कि वह एक गुलाम आज़ाद करे ।



अल्लाह और उसके रसूल पर ईमानवाले सिद्ध हो सको। ये अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाएँ हैं। और इनकार करनेवालों के लिए दुखद यातना है।

5. जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं वे अपमानित और तिरस्कृत होकर रहेंगे, जैसे उनसे पहले के लोग अपमानित और तिरस्कृत हो चुके हैं। हमने स्पष्ट आयतें अवतरित कर दी हैं और इनकार करनेवालों के लिए अपमानजनक यातना है।

6. जिस दिन अल्लाह उन सबको उठा खड़ा करेगा और जो कुछ

उन्होंने किया होगा, उससे उन्हें अवगत करा देगा। अल्लाह ने उसकी गणना कर रखी है, और वे उसे भूले हुए हैं, और अल्लाह हर चीज़ का साक्षी है।

7. क्या तुमने इसको नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। कभी ऐसा नहीं होता कि तीन आदमियों की गुप्त वार्ता हो और उनके बीच चौथा वह (अल्लाह) न हो। और न पाँच आदमियों की होती है जिसमें छठा वह न होता हो। और न इससे कम की कोई होती है और न इससे अधिक की भी, किन्तु वह उनके साथ होता है जहाँ कहीं भी वे हों; फिर जो कुछ भी उन्होंने किया होगा क्रियामत के दिन उससे वह उन्हें अवगत करा देगा। निश्चय ही अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।

8. क्या तुमने उन्हें नहीं देखा जिन्हें कानाफूसी से रोका गया था, फिर वे वही करते रहे जिससे उन्हें रोका गया था। वे आपस में गुनाह और ज़्यादती और रसूल की अवज्ञा की कानाफूसी करते हैं। और जब तुम्हारे पास आते हैं तो तुम्हारे प्रति अभिवादन के ऐसे शब्द प्रयोग में लाते हैं जो शब्द अल्लाह ने तुम्हारे लिए अभिवादन के लिए नहीं कहे। और अपने जी में कहते हैं : “जो

اَشْهَدُ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ اَلِيمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَادِّثُوْنَ  
اَللهَ وَرَسُوْلَهُ كُتُوْبًا كَانَتْ اِلَيْهِ مِنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَذٰ  
اَنْزَلْنَا اٰیٰتٍ بَيِّنٰتٍ ۝ وَلِلْكَافِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝  
يَوْمَ يَنْعَشُهُمُ اللّٰهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۝  
اَخْصَصَهُ اللّٰهُ وَلَوْهٖ ۝ وَاللّٰهُ عَلٰۤى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝  
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۝  
مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلَاثَةٍ اِلَّا هُوَ رَايَهُمْ وَلَا خَشَفَتْ  
اِلَّا هُوَ سَلٰوِسُهُمْ وَلَا اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَا اَكْثَرُ ۝ اَلَا هُوَ  
مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ثُمَّ يَنْتَبِهُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ  
اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَهَوْا  
عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نَهَوْا عَنْهُ وَيَتَنَبَّجُوْنَ  
بِالْاِثْمِ وَالْعُدُوٰنِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُوْلِ ۝ وَاِذَا جَاؤُوكَ  
حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ وَيَقُوْلُوْنَ فِىْ اَنْفُسِهِمْ



कुछ हम कहते हैं उसपर अल्लाह हमें यातना क्यों नहीं देता ? " उनके लिए जहन्नम ही काफ़ी है जिसमें वे प्रविष्ट होंगे। वह तो बहुत बुरी जगह है, अन्त में पहुँचने की !

9. ऐ ईमान लानेवालो ! जब तुम आपस में गुप्त वार्ता करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की अवज्ञा की गुप्त वार्ता न करो, बल्कि नेकी और परहेज़गारी के विषय में आपस में एकान्त वार्ता करो। और अल्लाह का डर रखो, जिसके पास तुम इकट्ठे होगे।

10. वह कानाफूसी तो केवल शैतान की ओर से है<sup>1</sup>, ताकि वह उन्हें ग़म में डाले जो ईमान लाए

हैं। हालाँकि अल्लाह की अनुज्ञा के बिना उसे कुछ भी हानि पहुँचाने की सामर्थ्य प्राप्त नहीं। और ईमानवालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

11. ऐ ईमान लानेवालो ! जब तुमसे कहा जाए कि मजलिसों में जगह कुशादा कर दो, तो कुशादगी पैदा कर दो। अल्लाह तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा करेगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ, तो उठ जाया करो। तुममें से जो लोग ईमान लाए हैं और जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है, अल्लाह उनके दरजों को उच्चता प्रदान करेगा। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी खबर रखता है।

12. ऐ ईमान लानेवालो ! जब तुम रसूल से अकेले में बात करो तो अपनी गुप्त वार्ता से पहले सदका दो। यह तुम्हारे लिए अच्छा और अधिक पवित्र है। फिर यदि तुम अपने को इसमें असमर्थ पाओ, तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा

تَكْوِيْنًا

تَكْوِيْنًا

لَوْلَا يَعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ حَبِيبُ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا،  
فِيئْسَ الْمَصِيرُ. يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا  
تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ  
وَتَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَى. وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ  
تُحْشَرُونَ. إِنَّمَا النَّجْوَى مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزَنَ  
الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَرَرِهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ.  
وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ. يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا  
إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفْتَحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَأَفْشُوا يَفْسَحِ  
اللَّهُ لَكُمْ. وَإِذَا قِيلَ انْشُرُوا فَانْشُرُوا يَرْفَعِ اللَّهُ  
الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ.  
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ. يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا  
إِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْهِ تَجَوُّدًا  
صَدَقَةً ذَلِكَ خَيْرٌ لَكُمْ وَأَطْهَرُ. فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا

مَنْ

1. अर्थात् गुनाह, ज़्यादती और रसूल की अवज्ञा के लिए की जानेवाली कानाफूसी।



क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है ।

13. क्या तुम इससे डर गए कि अपनी गुप्त वार्ता से पहले सदक्रे दो ? तो जब तुमने यह न किया और अल्लाह ने तुम्हें क्षमा कर दिया, तो नमाज़ क़ायम करो, ज़कात देते रहो और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो । और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है ।

14. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने ऐसे लोगों को मित्र बनाया जिनपर अल्लाह का प्रकोप हुआ है ? वे न तुममें से हैं और न उनमें से । और वे जानते-बूझते झूठी बात पर क़सम खाते हैं ।

15. अल्लाह ने उनके लिए कठोर यातना तैयार कर रखी है । निश्चय ही बुरा है जो वे कर रहे हैं ।

16. उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है । अतः वे अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोकते हैं । तो उनके लिए रुसवा करनेवाली यातना है ।

17. अल्लाह से बचाने के लिए न उनके माल उनके कुछ काम आएँगे और न उनकी संतान । वे आगवाले हैं । उसी में वे सदैव रहेंगे ।

18. जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उसके सामने भी इसी तरह क़समें खाएँगे, जिस तरह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं और समझते हैं कि वे किसी बुनियाद पर हैं । सावधान रहो, निश्चय ही वही झूठे हैं !

الْمُؤْمِنُونَ

قَدْ جَاءَكُمْ

قَالَ اللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ أَشَقَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوا بَيْنَ  
يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقْتُمْ ۖ وَآذَلْتُمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ اللَّهُ  
عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا اللَّهَ  
وَرَسُولَهُ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۚ أَلَمْ تَرَ إِلَى  
الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِمَّا هُمْ مِنْكُمْ  
وَلَا مِنْهُمْ وَيَخْلِفُونَ عَلَى الْكُذُوبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۚ  
أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ۚ إِنَّ خُذْلًا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةٌ فَصَدُّوا عَنْ  
سَبِيلِ اللَّهِ فَكُفُّوا عَذَابَ مُهِينٍ ۚ كُنْ تَغْنِي  
عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ  
أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۚ يَوْمَ  
يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُخْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَخْلِفُونَ لَكُمْ  
وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَى شَيْءٍ ۚ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۚ

مَنْ

1. अर्थात् इसके बावजूद कि निर्धन लोगों को सदक़ा देने से माफ़ रखा गया, तुमने तनहाई में वार्ता करने से परहेज़ किया, तो फिर अल्लाह भी तुम पर मेहरबान हो गया । अब तुम ठचित- अनुचित का ध्यान रखो ।



19. उनपर शैतान ने पूरी तरह अपना प्रभाव जमा लिया है। अतः उसने अल्लाह की याद को उनसे भुला दिया। वे शैतान की पार्टीवाले हैं। सावधान रहो शैतान की पार्टीवाले ही घाटे में रहनेवाले हैं !

20. निश्चय ही जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं वे अत्यन्त अपमानित लोगों में से हैं।

21. अल्लाह ने लिख दिया है : "मैं और मेरे रसूल ही विजयी होकर रहेंगे।" निस्संदेह अल्लाह शक्तिमान, प्रभुत्वशाली है।

22. तुम उन लोगों को ऐसा कभी नहीं पाओगे जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं कि वे उन लोगो से प्रेम करते हों जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया, यद्यपि वे उनके अपने बाप हों या उनके अपने बेटे हों या उनके अपने भाई या उनके अपने परिवारवाले ही हों। वही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान को अंकित कर दिया है और अपनी ओर से एक आत्मा के द्वारा उन्हें शक्ति दी है। और उन्हें वह ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी; जहाँ वे सदैव रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे भी उससे राज़ी हुए। वे अल्लाह की पार्टी के लोग हैं। सावधान रहो, निश्चय ही अल्लाह की पार्टीवाले ही सफल हैं।



## 59. अल-हज़्र

(मदीना में उतरी— आयतें 24)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अल्लाह की तसबीह की है हर उस चीज़ ने जो आकाशों और धरती में है,



और वही प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है ।

2. वही है जिसने किताबवालों में से उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया, उनके घरों से पहले ही जमावड़े में निकाल बाहर किया। तुम्हें गुमान न था कि वे निकलेंगे और वे समझते थे कि उनकी गढ़ियाँ अल्लाह से उन्हें बचा लेंगी। किन्तु अल्लाह उनपर वहाँ से आया जिसका उन्हें गुमान भी न था। और उसने उनके दिलों में रोब डाल दिया कि वे अपने घरों को स्वयं अपने हाथों और ईमानवालों के हाथों भी उजाड़ने लगे। अतः शिक्षा ग्रहण करो, ऐ दृष्टि रखनेवालो !

قَدْ جَاءَ اللَّهُ  
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ  
أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ  
يَخْرُجُوا وَظَنُّوا أَنْهُمْ مَا بَعَثَهُمْ صُورُهُمْ مِنْ اللَّهِ فَأَسْفَهُمُ  
اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَدْ فِي قُلُوبِهِمُ  
الرُّعْبَ يُخْرَجُونَ بَيِّنَاتٍ بِيَدِيهِمْ وَأَيُّدِي الْمُؤْمِنِينَ ۝  
فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ ۝ وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ  
الْجَلَائِلَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ  
الْعَذَابِ ۝ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۝ وَمَنْ  
يُشَاقِقِ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ مَا قُطِعَ لَكُمْ  
مِنْ لَيْلَةٍ أَوْ نَوْمٍ فَأَرَمْتُمْ عَلَىٰ أَعْصَابِكُمْ فَلَوْلَا  
اللَّهُ وَلِيُخْرِجَ الْفَاسِقِينَ ۝ وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ  
مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ  
وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ

3. यदि अल्लाह ने उनके लिए देश निकाला न लिख दिया होता तो दुनिया में ही वह उन्हें अवश्य यातना दे देता, और आखिरत में तो उनके लिए आग की यातना है ही ।

4. यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का मुक़ाबला करने की कोशिश की। और जो कोई अल्लाह का मुक़ाबला करता है तो निश्चय ही अल्लाह की यातना बहुत कठोर है।

5. तुमने खजूर के जो वृक्ष काटे या उन्हें उनकी जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया तो यह अल्लाह ही की अनुज्ञा से हुआ (ताकि ईमानवालों के लिए आसानी पैदा करे) और इसलिए कि वह अवज्ञाकारियों को रुसवा करे।

6. और अल्लाह ने उनसे लेकर अपने रसूल की ओर जो कुछ पलटाया, उसके लिए न तो तुमने घोड़े दौड़ाए और न ऊँट ।<sup>1</sup> किन्तु अल्लाह अपने रसूलों को जिसपर चाहता है प्रभुत्व प्रदान कर देता है । अल्लाह को तो हर चीज़ की

1. अर्थात् उनका जो माल तुम्हारे हाथ लगा उसके लिए तुम्हें कोई युद्ध नहीं करना पडा।



सामर्थ्य प्राप्त है।

7. जो कुछ अल्लाह ने अपने रसूल की ओर बस्तियोंवालों से लेकर पलटाय़ा वह अल्लाह और रसूल और (मुहताज) नातेदार और अनाथों और मुहताजों और मुसाफ़िर के लिए है, ताकि वह (माल) तुम्हारे मालदारों ही के बीच चक्कर न लगाता रहे—रसूल जो कुछ तुम्हें दे उसे ले लो और जिस चीज़ से तुम्हें रोक दे उससे रुक जाओ, और अल्लाह का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह की यातना बहुत कठोर है।—

8. वह ग़रीब मुहाजिरों के लिए है, जो अपने घरों और अपने मालों से इस हालत में निकाल बाहर किए गए हैं कि वे अल्लाह का उदार अनुग्रह और उसकी प्रसन्नता की तलाश में हैं और अल्लाह और उसके रसूल की सहायता कर रहे हैं, और वही वास्तव में सच्चे हैं।

9. और उनके लिए जो उनसे पहले ही से हिजरत के घर (मदीना) में ठिकाना बनाए हुए हैं और ईमान पर जमे हुए हैं, वे उनसे प्रेम करते हैं जो हिजरत करके उनके यहाँ आए हैं और जो कुछ भी उन्हें दिया गया उससे वे अपने सीनों में कोई खटक नहीं पाते और वे उन्हें अपने मुक़ाबले में प्राथमिकता देते हैं, यद्यपि अपनी जगह वे स्वयं मुहताज ही हों। और जो अपने मन के लोभ और कृपणता से बचा लिया जाए ऐसे ही लोग सफल हैं।

10. और (इस माल में उनका भी हिस्सा है) जो उनके बाद आए, वे कहते

النّٰسُ

النّٰسُ

كُلِّى ۖ قَدِيرٌ ۖ مَا آفَأَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ  
الْقَرْيَةِ قَبْلِهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَ  
السَّكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ كَيْ لَا يَكُونَ دُولُهُمْ بَيْنَ  
الْأَعْيُنِ مِنْكُمْ ۚ وَمَا أَتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ ۚ وَمَا  
نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ  
الْعِقَابِ ۚ ۝ لِلْفُقَرَاءِ الْمُحْجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا  
مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ  
وَرِضْوَانًا وَيَتَّصِرُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ  
الصَّادِقُونَ ۚ ۝ وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ  
مِنْ قَبْلِهِمْ يَجْعَلُونَ مِنْ هَاجِرِهِمْ وَلَا يَجْعِدُونَ  
فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ  
أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوقِ شَعْرَهُ  
نَفْسَهُ فَلَوْلِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۚ ۝ وَالَّذِينَ جَاءُوا

مَذَلَّةً



हैं : “ऐ हमारे रब ! हमें क्षमा कर दे और हमारे उन भाइयों को भी जो ईमानलाने में हमसे अग्रसर रहे और हमारे दिलों में ईमानवालों के लिए कोई विद्वेष न रख । ऐ हमारे रब ! तू निश्चय ही बड़ा करुणामय, अत्यन्त दयावान है ।”

11. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने कपटाचार की नीति अपनाई है, वे अपने किताबवाले उन भाइयों से, जो इनकार की नीति अपनाए हुए हैं, कहते हैं : “यदि तुम्हें निकाला गया तो हम भी अवश्य ही तुम्हारे साथ निकल जाएँगे और तुम्हारे मामले में किसी की बात कभी भी नहीं मानेंगे । और यदि तुमसे युद्ध किया गया तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे ।” किन्तु अल्लाह गवाही देता है कि वे बिल्कुल झूठे हैं ।

12. यदि वे निकाले गए तो वे उनके साथ नहीं निकलेंगे और यदि उनसे युद्ध हुआ तो वे उनकी सहायता कदापि न करेंगे और यदि उनकी सहायता करें भी तो पीठ फेर जाएँगे । फिर उन्हें कोई सहायता प्राप्त न होगी ।

13. उनके दिलों में अल्लाह से बढ़कर तुम्हारा भय समाया हुआ है । यह इसलिए कि वे ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं ।

14. वे इकट्ठे होकर भी तुमसे (खुले मैदान में) नहीं लड़ेंगे, क़िलाबन्द बस्तियों या दीवारों के पीछे हों तो यह और बात है । उनकी आपस में सख्त लड़ाई है । तुम उन्हें इकट्ठा समझते हो ! हालाँकि उनके दिल फटे हुए हैं । यह

الْحَمْدُ لِلَّهِ

قُلُوبُهُمْ

مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا  
الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا  
غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ ۝ أَلَمْ  
تَر إِلَى الَّذِينَ تَأْفَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ  
كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَیْنٌ أَخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ  
مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِیكُمْ أَحَدًا أَبَدًا ۝ وَإِن  
قُوּیْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۝ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝  
لَیْنٌ أَخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ ۝ وَلَیْنٌ قُوּیْتُوا لَا  
يَنْصُرُوهُمْ ۝ وَلَیْنٌ نَّصْرُوهُمْ يُبْلِغُوا الْأَذْبَارَ ثُمَّ لَا  
يُنصُرُونَ ۝ لَا أَتَنَبَّأُ أَشَدَّ رَهْبَةً فِی صُدُورِهِمْ  
مِنَ اللَّهِ ذَٰلِكُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝ لَا  
يُقَاتِلُونَكُم بَیِّنًا إِلَّا فِی قُرَىٰ مُّحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ  
وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْشَبُهُمْ جَمِيعًا

سَبَّحَ



इसलिए कि वे ऐसे लोग हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते।

15. उनकी हालत उन्हीं लोगों जैसी है जो उनसे पहले निकट काल में अपने किए के वबाल का मज़ा चख चुके हैं, और उनके लिए दुखद यातना भी है।

16. इनकी मिसाल शैतान जैसी है कि जब उसने मनुष्य से कहा : “कुफ़्र कर !” फिर जब वह कुफ़्र कर बैठा तो कहने लगा : “मैं तुम्हारी ज़िम्मेदारी से बरी हूँ। मैं तो सारे संसार के रब अल्लाह से डरता हूँ।”

17. फिर उन दोनों का परिणाम यह हुआ कि दोनों आग में गए, जहाँ सदैव रहेंगे। और ज़ाहि मों का यही बदला है।

18. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह का डर रखो। और प्रत्येक व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह का डर रखो। जो कुछ भी तुम करते हो निश्चय ही अल्लाह उसकी पूरी खबर रखता है।

19. और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया। तो उसने भी ऐसा किया कि वे स्वयं अपने आपको भूल बैठे। वही अवज्ञाकारी हैं।

20. आगवाले और बागवाले (जहन्नमवाले और जन्नतवाले) कभी समान नहीं हो सकते। बागवाले ही सफल हैं।

21. यदि हमने इस कुरआन को किसी पर्वत पर भी उतार दिया होता तो तुम अवश्य देखते कि अल्लाह के भय से वह दबा हुआ और फटा जाता है।

الْحٰكِمُ

قُلُوبُهُمْ

وَقُلُوبُهُمْ شَقِيَّةٌ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝  
كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا دَاخُوْا وَّبَالَ اٰمِرِهِمْ ۚ  
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ  
لِلْاِنْسٰنِ اْكْفِرْ فَلَنتَا اَنْفَرًا ۖ قَالَ اِنِّىْۤ اَبْرِيْءٌ مِّنْكَ اِنِّىْ  
اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا اَنَّهُمَا فِى  
النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ۚ وَذٰلِكَ جَزَاُ الظّٰلِمِيْنَ ۝  
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ  
مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا  
تَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَسٰوَاللّٰهَ فَاَنۡسَهُمْ  
اَنْفُسَهُمْ ۚ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ لَا يَسْتَوِيْ  
اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ  
الْقٰاِيْرُوْنَ ۝ لَوْ اَنۡزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ  
لَّرَاٰيْتَهُ خٰشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنۡ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۚ

مَرَّةً







उसका वे इनकार कर चुके हैं। वे रसूल को और तुम्हें इसलिए निर्वासित करते हैं कि तुम अपने रब—अल्लाह पर ईमान लाए हो। तुम गुप्त रूप से उनसे मित्रता की बातें करते हो। हालाँकि मैं भली-भाँति जानता हूँ जो कुछ तुम छिपाते हो और व्यक्त करते हो। और जो कोई भी तुममें से ऐसा करेगा वह संमार्ग से भटक गया।

2. यदि वे तुम्हें पा जाएँ तो तुम्हारे शत्रु हो जाएँ और कष्ट पहुँचाने के लिए तुमपर हाथ और ज़बान चलाएँ। वे तो चाहते हैं कि काश! तुम भी इनकार करनेवाले हो जाओ।

3. क्रियामत के दिन तुम्हारी नातेदारियाँ कदापि तुम्हें लाभ न पहुँचाएँगी और न तुम्हारी सन्तान ही। उस दिन वह (अल्लाह) तुम्हारे बीच जुदाई डाल देगा। जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा होता है।

4. तुम लोगों के लिए इबराहीम में और उन लोगों में जो उसके साथ थे अच्छा आदर्श है, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम के लोगों से कह दिया कि “हम तुमसे और अल्लाह से हटकर जिन्हें तुम पूजते हो उनसे विरक्त हैं। हमने तुम्हारा इनकार किया और हमारे और तुम्हारे बीच सदैव के लिए वैर और विद्वेष प्रकट हो चुका, जब तक अकेले अल्लाह पर तुम ईमान न लाओ।” इबराहीम का अपने बाप से यह कहना अपवाद है कि “मैं आपके लिए क्षमा की

أَنْ تُوْمِنُوا بِاللهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُسِرُّونَ إِلَيْهِمْ بِالْوُدَّةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ صَلَّى سَوَاءَ السَّبِيلِ ۚ إِنْ يَشَقَقُوا كُفْرَكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْطُلُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَالسِّنَنُومُ بِالْأَسْوَاءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ۚ لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامَكُمْ وَلَا أَوْلَادَكُمْ يُغْمِزُ الْقِيَمَةُ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءُكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَغُرَّتَاكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللهِ وَخَدَّكَ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَا تُشْفِقْ عَلَيَّ لَكَ وَمَا

وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءُكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَغُرَّتَاكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللهِ وَخَدَّكَ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَا تُشْفِقْ عَلَيَّ لَكَ وَمَا



प्रार्थना अवश्य करूँगा, यद्यपि अल्लाह के मुकाबले में आपके लिए मैं किसी चीज़ पर अधिकार नहीं रखता।" "ऐ हमारे रब ! हमने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही ओर रुजू हुए और तेरी ही ओर अन्त में लौटना है।

5. ऐ हमारे रब ! हमें इनकार करनेवालों के लिए फ़ितना न बना और ऐ हमारे रब ! हमें क्षमा कर दे। निश्चय ही तू प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।"

6. निश्चय ही तुम्हारे लिए उनमें अच्छा आदर्श है और हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो। और जो कोई मुँह फेरे तो अल्लाह तो निस्पृह, अपने आप में स्वयं प्रशंसित है।

7. आशा है कि अल्लाह तुम्हारे और उनके बीच, जिनसे तुमने शत्रुता मोल ली है, प्रेम-भाव उत्पन्न कर दे। अल्लाह बड़ी सामर्थ्य रखता है और अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

8. अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करो और उनके साथ न्याय करो, जिन्होंने तुमसे धर्म के मामले में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे अपने घरों से निकाला। निस्संदेह अल्लाह न्याय करनेवालों को पसन्द करता है।

9. अल्लाह तो तुम्हें केवल उन लोगों से मित्रता करने से रोकता है जिन्होंने धर्म के मामले में तुमसे युद्ध किया और तुम्हें तुम्हारे अपने घरों से निकाला और तुम्हारे निकाले जाने के सम्बन्ध में सहायता की। जो लोग उनसे मित्रता

الْمُؤْمِنِينَ

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ

أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ. رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا  
وَدَالِيكَ أَتَيْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ. رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا  
فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْفُوكُنَا رَبَّنَا. إِنَّكَ أَنتَ  
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ. لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ  
لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَهُوَ يُتَوَلَّى  
وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ. عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ  
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مُودَّةً. وَاللَّهُ  
قَدِيرٌ. وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ. لَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ  
الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ  
مِّنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ. إِنَّ  
اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ. إِنَّمَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ  
الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ مِّنْ  
دِيَارِكُمْ وَظَهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ.

بَيْنَ



करें वही ज़ालिम हैं।

10. ऐ ईमान लानेवालो ! जब तुम्हारे पास ईमान की दावेदार स्त्रियाँ हिजरत करके आएँ तो तुम उन्हें जाँच लिया करो। यूँ तो अल्लाह उनके ईमान से भली-भाँति परिचित है। फिर यदि वे तुम्हें ईमानवाली मालूम हों, तो उन्हें इनकार करनेवालों (अधर्मियों) की ओर न लौटाओ। न तो वे स्त्रियाँ उनके लिए वैध हैं और न वे उन स्त्रियों के लिए वैध हैं। और जो कुछ उन्होंने खर्च किया हो तुम उन्हें दे दो<sup>1</sup> और इसमें तुम्हारे लिए कोई गुनाह नहीं कि तुम उनसे विवाह कर लो, जबकि तुम उन्हें उनके महर

وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَاُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ يٰٓاَيُّهَا  
الَّذِينَ اٰمَنُوْا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ  
فَاَمْتَحِنُوهُنَّ ۚ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ اِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ  
مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ لَا هُنَّ  
لَهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۚ وَاَتُوهُنَّ مِمَّا اَنْفَقُوْا  
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوهُنَّ اِذَا اتَّيَسَّرُوهُنَّ  
اُجُوْرُهُنَّ ۚ وَلَا تَسِيْكُوْا بِعَصِمِ الْكُوْفِرِ وَنَسَلُوْا مِمَّا  
اَنْفَقْتُمْ وَلَيْسَلُوْا مِمَّا اَنْفَقُوْا ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ  
يُحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَاِنْ قَا تَكُمُ  
شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَا قِبْتُمْ فَاَتُوْا  
الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ بِمَثَلِ مِمَّا اَنْفَقُوْا وَاتَّقُوا  
اللّٰهَ الَّذِيْ اَنْتُمْ بِهٖ مُّؤْمِنُونَ ۚ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا  
جَآءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَا يُشْرِكْنَ

अदा कर दो। और तुम स्वयं भी इनकार करनेवाली स्त्रियों के सतीत्व को अपने अधिकार में न रखो।<sup>2</sup> और जो कुछ तुमने खर्च किया हो माँग लो। और उन्हें भी चाहिए कि जो कुछ उन्होंने खर्च किया हो माँग लें। यह अल्लाह का आदेश है। वह तुम्हारे बीच फ़ैसला करता है। अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।

11. और यदि तुम्हारी पत्नियों (के महरो) में से कुछ तुम्हारे हाथ से निकल जाए और इनकार करनेवालों (अधर्मियों) की ओर रह जाए, फिर तुम्हारी नौबत आए<sup>3</sup> तो जिन लोगों की पत्नियाँ चली गई हैं, उन्हें जितना उन्होंने खर्च किया हो दे दो। और अल्लाह का डर रखो, जिसपर तुम ईमान रखते हो।

12. ऐ नबी ! जब तुम्हारे पास ईमानवाली स्त्रियाँ आकर तुमसे इसपर 'बैअत' करें कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज़ को साझी नहीं ठहराएँगी और न चोरी

1. अर्थात् उन स्त्रियों पर उनके अधर्मी पतियों ने जो खर्च किया हो तुम उन्हें लौटा दो।

2. अर्थात् उन्हें अपने विवाह-संबंध में न रखो।

3. अर्थात् जब हमले के परिणामस्वरूप तुम्हें उनपर प्रभुत्व प्राप्त हो।



करेंगी और न व्यभिचार करेंगी, और न अपनी औलाद की हत्या करेंगी और न अपने हाथों और पैरों के बीच कोई आरोप घड़कर लाएँगी, और न किसी भले काम में तुम्हारी अवज्ञा करेंगी, तो उनसे 'बैअत' ले लो और उनके लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। निश्चय ही अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

13. ऐ ईमान लानेवालो ! ऐसे लोगों से मित्रता न करो जिनपर अल्लाह का प्रकोप हुआ, वे आखिरत से निराश हो चुके हैं, जिस प्रकार इनकार करनेवाले क़ब्रवालों से निराश हो चुके हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِاسْمِهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ  
أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ  
وَأَرْجُلِهِمْ وَلَا يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ قَبَائِعُهُنَّ وَ  
اسْتَغْفِرُ لَهُنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَأَيُّهَا  
الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَسُؤُوا  
مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَبْغِ الْكَافِرُونَ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ  
الْحَكِيمُ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا  
تَفْعَلُونَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا  
تَفْعَلُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي  
سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَرْصُورٌ ۝ وَإِذْ

## 61. अस-सफ़फ़

(मदीना में उतरी—आयतें 14)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अल्लाह की तसबीह की हर उस चीज़ ने जो आकाशों और धरती में है। वही प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

2. ऐ ईमान लानेवालो ! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं ?

3. अल्लाह के यहाँ यह अत्यन्त अप्रिय बात है कि तुम वह बात कहो, जो करो नहीं।

4. अल्लाह तो उन लोगों से प्रेम रखता है जो उसके मार्ग में पंक्तिबद्ध होकर लड़ते हैं मानो वे सीसा पिलाई हुई दीवार हैं।

5. और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा : “ऐ मेरी



क़ौम के लोगो। तुम मुझे क्यों दुख देते हो, हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी ओर भेजा हुआ अल्लाह का रसूल हूँ?" फिर जब उन्होंने टेढ़ा अपनाई तो अल्लाह ने भी उनके दिल टेढ़े कर दिए। अल्लाह अवज्ञाकारियों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।

6. और याद करो जबकि मरयम के बेटे ईसा ने कहा : "ऐ इसराईल की संतान ! मैं तुम्हारी ओर भेजा हुआ अल्लाह का रसूल हूँ। मैं तौरात की (उस भविष्यवाणी की) पुष्टि करता हूँ जो मुझसे पहले से विद्यमान है और एक रसूल की शुभ सूचना देता हूँ जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा।" किन्तु वह जब उनके पास स्पष्ट प्रमाणों के साथ आया तो उन्होंने कहा : "यह तो खुला जादू है।"

7. अब उस व्यक्ति से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर थोपकर झूठ घड़े जबकि उसे इस्लाम (अल्लाह के आगे समर्पण करने) की ओर बुलाया जा रहा हो? अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाया करता।

8. वे चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपने मुँह की फूँक से बुझा दें किन्तु अल्लाह अपने प्रकाश को पूर्ण करके ही रहेगा, यद्यपि इनकार करनेवालों को अप्रिय ही लगे।

9. वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्यधर्म के साथ भेजा, ताकि उसे पूरे के पूरे धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे, यद्यपि बहुदेववादियों को अप्रिय ही लगे।

10. ऐ ईमान लानेवालो। क्या मैं तुम्हें एक ऐसा व्यापार बताऊँ जो तुम्हें

قَالَ مُؤْمِنِي لِقَوْمِهِ يَقَوْمِ لِمَ تُوذُونَنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ  
أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَلَمَّا زَاغُوا أَزْغَا اللَّهُ  
قُلُوبَهُمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝ وَإِذْ  
قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ بَيْنِي وَبَيْنَ إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ  
اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ  
وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ ۝  
فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ وَمَنْ  
أَظْلَمُ مِنْ أَفْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَى  
إِلَى الْإِسْلَامِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝  
يُرِيدُونَ لِيُظْفَرُوا بِزُورٍ اللَّهُ بِأَفْوَاهِهِمْ ۝ وَاللَّهُ  
مُسْتَمِعٌ ذُو بَرْكَاتٍ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ  
رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينٍ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى  
الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝ يَأْتِيهَا الَّذِينَ



दुखद यातना से बचा ले ?

11. तुम्हें ईमान लाना है अल्लाह और उसके रसूल पर, और जिहाद करना है अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों से। यही तुम्हारे लिए उत्तम है, यदि तुम जानो।

12. वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और तुम्हें ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और उन अच्छे घरों में भी जो सदाबहार बागों में होंगे। यही बड़ी सफलता है।

13. और दूसरी चीज़ भी जो तुम्हें प्रिय है (प्रदान करेगा) :

“अल्लाह की ओर से सहायता और निकट प्राप्त होनेवाली विजय ;” ईमानवालों को शुभसूचना दे दो !

14. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह के सहायक बनो, जैसा कि मरयम के बेटे ईसा ने हवारियों (साधियों) से कहा था : “कौन हैं अल्लाह की ओर (बुलाने में) मेरे सहायक ?” हवारियों ने कहा : “हम हैं अल्लाह के सहायक।” फिर इसराईल की संतान में से एक गिरोह ईमान ले आया और एक गिरोह ने इनकार किया। अतः हमने उन लोगों को, जो ईमान लाए थे, उनके अपने शत्रुओं के मुक्काबले में शक्ति प्रदान की, तो वे छाकर रहे।

قَدْ نَعْلَمُ ۖ  
أَمْتُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تَجَارِقٍ تُصَيِّعُكُمْ مِّنْ عَذَابِ  
الْآلِيمِ ۖ تَفُوتُونَ بِاللهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ  
فِي سَبِيلِ اللهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ  
لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ يَغْفِرَ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ  
وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَ  
مَسْكِنٍ ظَنَبَةٍ فِي جَنَّاتٍ عَذْيٍ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ  
الْعَظِيمُ ۖ وَأُخْرَىٰ يُحِبُّونَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللهِ وَفَتْحٌ  
قَرِيبٌ ۚ وَيُشِيرُ الْمُؤْمِنِينَ ۖ يَٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا  
كُونُوا أَنْصَارَ اللهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ  
لِلْحَوَارِيِّينَ مَنِ أَنْصَارِي إِلَى اللهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ  
نَحْنُ أَنْصَارُ اللهِ فَأَمَّا تَلَافُةٌ مِّنْ بَنِي إِسْرَٰئِيلَ  
وَكُفَرَتْ تَلَافُةٌ ۚ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ  
عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ۖ

مَزَلْ



## 62. अल-जुमुआ

(मदीना में उतरी — आयतें 11)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. अल्लाह की तसबीह कर रही  
है हर वह चीज़ जो आकाशों में है  
और जो धरती में है, जो सम्राट है  
अत्यन्त पवित्र, प्रभुत्वशाली,  
तत्त्वदर्शी ।

2. वही है जिसने उम्मियों में  
उन्हीं में से एक रसूल उठाया जो  
उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता  
है, उन्हें निखारता है और उन्हें  
किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता)

की शिक्षा देता है, यद्यपि इससे पहले तो वे खुली हुई गुमराही में पड़े हुए थे,

3. और उन दूसरे लोगों को भी (किताब और हिकमत की शिक्षा दे) जो  
अभी उनसे मिले नहीं हैं, वे उन्हीं में से होंगे ।<sup>1</sup> और वही प्रभुत्वशाली,  
तत्त्वदर्शी है ।

4. यह अल्लाह का उदार अनुग्रह है, जिसको चाहता है उसे प्रदान करता है ।  
अल्लाह बड़े अनुग्रह का मालिक है ।

5. जिन लोगों पर तारात का बोझ डाला गया, किन्तु उन्होंने उसे न उठाया,  
उनकी मिसाल उस गधे की-सी है जो किताबें लादे हुए हो । बहुत ही बुरी  
मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठला दिया ।  
अल्लाह ज़ालिमों को सीधा मार्ग नहीं दिखाया करता ।

6. कह दो : "ऐ लोगो, जो यहूदी हुए हो ! यदि तुम्हें यह गुमान है कि



1. अर्थात् जो लोग सहाबा (रज़ि०) के बाद होंगे वे भी आप ही की शिक्षा से फ़ायदा  
उठाएँगे । आपके बाद कोई नबी नहीं होगा ।



सारे मनुष्यों को छोड़कर तुम ही अल्लाह के प्रेमपात्र हो तो मृत्यु की कामना करो, यदि तुम सच्चे हो।”

7. किन्तु वे कभी भी उसकी कामना न करेंगे, उस (कर्म) के कारण जो उनके हाथों ने आगे भेजा है। अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है।

8. कह दो : “मृत्यु जिससे तुम भागते हो, वह तो तुम्हें मिलकर रहेगी, फिर तुम उसकी ओर लौटाए जाओगे जो छिपे और खुले का जाननेवाला है। और वह तुम्हें उससे अवगत करा देगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।”——

9. ऐ ईमान लानेवालो, जब जुमा के दिन नमाज़ के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह की याद की ओर दौड़ पड़ो और क्रय-विक्रय छोड़ दो। यह तुम्हारे लिए अच्छा है, यदि तुम जानो।

10. फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह का उदार अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो, और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करते रहो, ताकि तुम सफल हो।——

11. किन्तु जब वे व्यापार और खेल-तमाशा देखते हैं तो उसकी ओर टूट पड़ते हैं और तुम्हें खड़ा छोड़ देते हैं। कह दो : “जो कुछ अल्लाह के पास है वह तमाशे और व्यापार से कहीं अच्छा है। और अल्लाह सबसे अच्छा आजीविका प्रदान करनेवाला है।”

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِذَا دُعِيَ لِلصَّلٰوةِ فَاٰمِنُوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوْا الْبَيْعَ ۚ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوْا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوًا اَنْفَضُوْا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْا مَقَامَ اللّٰهِ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِنَ اللّٰهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۚ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرَّٰزِقِيْنَ ۝



## 63. अल-मुनाफ़िक़ून

(मदीना में उतरी—आयतें 11)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील अत्यन्त दयावान है।

1. जब मुनाफ़िक़ (कपटाचारी)  
तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं  
“हम गवाही देते हैं कि निश्चय ही  
आप अल्लाह के रसूल हैं।”  
अल्लाह जानता है कि निस्संदेह  
तुम उसके रसूल हो, किन्तु अल्लाह  
गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़  
बिलकुल झूठे हैं।

2. उन्होंने अपनी कसमों को  
ढाल बना रखा है, इस प्रकार वे  
अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं। निश्चय ही बुरा है जो वे कर रहे हैं।

3. यह इस कारण कि वे ईमान लाए, फिर इनकार किया, अतः उनके दिलों  
पर मुहर लगा दी गई, अब वे कुछ नहीं समझते।

4. तुम उन्हें देखते हो तो उनके शरीर (बाह्य रूप) तुम्हें अच्छे लगते हैं, और  
यदि वे बात करें तो उनकी बात तुम सुनते रह जाओ। किन्तु यह ऐसा ही है  
मानो वे लकड़ी के कुंदे हैं, जिन्हें (दीवार के सहारे) खड़ा कर दिया गया हो।  
हर जोर की आवाज़ को वे अपने ही विरुद्ध समझते हैं। वही वास्तविक शत्रु  
है, अतः उनसे बचकर रहो। अल्लाह की मार उनपर। वे कहाँ उल्टे फिरे जा  
रहे हैं!

5. और जब उनसे कहा जाता है : “आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए  
क्षमा की प्रार्थना करे।” तो वे अपने सिर मटकाते हैं और तुम देखते हो कि  
घमण्ड के साथ खिंचे रहते हैं।





6. उनके लिए बराबर है चाहे तुम उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो या उनके लिए क्षमा की प्रार्थना न करो। अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा न करेगा। निश्चय ही अल्लाह अवज्ञाकारियों को सीधा मार्ग नहीं दिखाया करता।

7. वे वही लोग हैं जो कहते हैं : "उन लोगों पर खर्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास रहनेवाले हैं, ताकि वे तितर-बितर हो जाएँ।" हालाँकि आकाशों और धरती के खज़ाने अल्लाह ही के हैं, किन्तु वे मुनाफ़िक समझते नहीं।

8. वे कहते हैं : "यदि हम मदीना लौटकर गए तो जो अधिक शक्तिवाला है, वह हीनतर (व्यक्तियों) को वहाँ से निकाल बाहर करेगा।" हालाँकि शक्ति अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों के लिए है, किन्तु वे मुनाफ़िक जानते नहीं।

9. ऐ ईमान लानेवालो ! तुम्हारे माल तुम्हें अल्लाह की याद से गाफ़िल न कर दें और न तुम्हारी संतान ही। जो कोई ऐसा करे तो ऐसे ही लोग घाटे में रहनेवाले हैं।

10. हमने तुम्हें जो कुछ दिया है उसमें से खर्च करो इससे पहले कि तुममें से किसी की मृत्यु आ जाए और उस समय वह कहने लगे : "ऐ मेरे रब ! तूने मुझे कुछ थोड़े समय तक और मुहलत क्यों न दी कि मैं सदका (दान) करता (मुझे

الْمُفْسِقُونَ

قَدْ رَجَعُوا إِلَى اللَّهِ

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۚ كُنْ يُغْفِرُ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغْنِي عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝ هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُوا ۚ وَرَبُّوهُ خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ۝ يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنهَا الأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۚ وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ كُنَّا لَكُمْ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْقَرِيبُ ۚ فَاصْذَقْ وَ أَكُنْ مِنَ



मुहलत दे कि मैं सदका करूँ) और अच्छे लोगों में सम्मिलित हो जाऊँ।”

11. किन्तु अल्लाह, किसी व्यक्ति को जब उसका नियत समय आ जाता है, कदापि मुहलत नहीं देता। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी खबर रखता है।

## 64. अत-तगाबुन

(मदीना में उतरी— आयतें 18)

अल्लाह के नाम से, जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अल्लाह की तसबीह कर रही है हर वह चीज़ जो आकाशों में है और जो धरती में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए प्रशंसा है और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

2. वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुममें से कोई तो इनकार करनेवाला है और तुममें से कोई ईमानवाला है, और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे देख रहा होता है।

3. उसने आकाशों और धरती को हक के साथ पैदा किया और तुम्हारा रूप बनाया, तो बहुत ही अच्छे बनाए तुम्हारे रूप और उसी की ओर अन्ततः जाना है।

4. वह जानता है जो कुछ आकाशों और धरती में है और उसे भी जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम प्रकट करते हो। अल्लाह तो सीनों में छिपी बात तक को जानता है।

5. क्या तुम्हें उन लोगों की खबर नहीं पहुँची जिन्होंने इससे पहले इनकार किया था, फिर उन्होंने अपने कर्म के वबाल का मज़ा चखा और उनके लिए





एक दुखद यातना भी है।

6. यह इस कारण कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आते रहे, किन्तु उन्होंने कहा : "क्या मनुष्य हमें मार्ग दिखाएँगे?" इस प्रकार उन्होंने इनकार किया और नुँह फेर लिया, तब अल्लाह भी उनसे बेपरवाह हो गया। अल्लाह तो है ही निस्पृह, अपने आपमें स्वयं प्रशंसित।

7. जिन लोगों ने इनकार किया, उन्होंने दावा किया कि वे मरने के पश्चात कदापि न उठाए जाएँगे। कह दो : "क्यों नहीं, मेरे रब की क्रसम ! तुम अवश्य उठाए जाओगे, फिर जो कुछ तुमने किया है उससे तुम्हें अवगत करा दिया जाएगा। और अल्लाह के लिए यह अत्यन्त सरल है।"

8. अतः ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस प्रकाश पर जिसे हमने अवतरित किया है। तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसकी पूरी खबर रखता है।

9. इकट्ठा होने के दिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा, वह परस्पर लाभ-हानि का दिन होगा। जो भी अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा कर्म करे उसकी बुराइयाँ अल्लाह उससे दूर कर देगा और उसे ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे सदैव रहेंगे। यही बड़ी सफलता है।

10. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही आगवाले हैं जिसमें वे सदैव रहेंगे। अन्ततः लौटकर पहुँचने की वह बहुत ही बुरी जगह है।

11. अल्लाह की अनुज्ञा के बिना कोई भी मुसीबत नहीं आती। जो अल्लाह

طه

الْحَمْدُ لِلَّهِ

الَّذِينَ كَفَرُوا أَتَى اللَّهُ الْكَافِرِينَ  
بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا أَأَبْشَرُ نَحْنُ وَكَفَرُوا وَ  
تَوَلَّوْا وَاسْتَعْفَى اللَّهُ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ  
الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا قُلْ بَلْ وَرَبِّي  
لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتَأْتِيَنَّكُمْ بِمَا عَمِلْتُمْ وَ ذَلِكَ عَلَى  
أَشْوَى يَوْمٍ قَالُوا يَا شَاعِرٌ وَرَسُولٌ وَالنَّوَارِ الَّذِينَ  
أَنْزَلْنَا وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ يَوْمَ يُجْزَى  
لِكُلِّ نَفْسٍ بِمَا تَعْمَلُ ذَلِكَ يَوْمُ الْتَغَابُنِ وَمَنْ يُؤْمِنْ  
بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ  
وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ  
الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ  
النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا وَبِئْسَ الْمَصِيرُ مَا أَصَابَ

مَنْ



पर ईमान ले आए अल्लाह उसके दिल को मार्ग दिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ को भनी-भाँति जानता है।

12. अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और रसूल की आज्ञा का पालन करो, किन्तु यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो हमारे रसूल पर बस स्पष्ट रूप से (संदेश) पहुँचा देने ही की ज़िम्मेदारी है।

13. अल्लाह वह है जिसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः अल्लाह ही पर ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए।

14. ऐ ईमान लानेवालो, तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी संतान में से कुछ ऐसे भी हैं जो तुम्हारे शत्रु हैं। अतः उनसे होशियार रहो। और यदि तुम माफ़ कर दो और टाल जाओ और क्षमा कर दो तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

15. तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान तो केवल एक आजमाइश है, और अल्लाह ही है जिसके पास बड़ा प्रतिदान है।

16. अतः जहाँ तक तुम्हारे बस में हो अल्लाह का डर रखो और सुनो और आज्ञापालन करो और खर्च करो अपनी भलाई के लिए। और जो अपने मन के लोभ एवं कृपणता से सुरक्षित रहा तो ऐसे ही लोग सफल हैं।

17. यदि तुम अल्लाह को अच्छा ऋण दो तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना





बड़ा देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा। अल्लाह बड़ा गुणग्राहक और सहनशील है,

18. परोक्ष और प्रत्यक्ष को जानता है, प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

## 65. अत-तलाक़

(मदीना में उतरी—आयतें 12)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ नबी! जब तुम लोग स्त्रियों को तलाक़ दो तो उन्हें तलाक़ उनकी इदत के हिसाब से दो। और इदत की गणना करो और अल्लाह का डर रखो, जो

तुम्हारा रब है। उन्हें उनके घरों से न निकालो और न वे स्वयं निकलें, सिवाय इसके कि वे कोई स्पष्ट अशोभनीय कर्म कर बैठें। ये अल्लाह की नियत की हुई सीमाएँ हैं—और जो अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करे तो उसने स्वयं अपने आपपर ज़ुल्म किया—तुम नहीं जानते, कदाचित इस (तलाक़) के पश्चात अल्लाह कोई सूरत पैदा कर दे।<sup>1</sup>

2. फिर जब वे अपनी नियत इदत को पहुँचें तो या तो उन्हें भली रीति से रोक लो या भली रीति से अलग कर दो। और अपने में से दो न्यायप्रिय आदमियों को गवाह बना लो और अल्लाह के लिए गवाही को दुरुस्त रखो।



1. अर्थात् मेल-मिलाप की कोई सूरत पैदा कर दे।



इसकी नसीहत उस व्यक्ति को की जाती है जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखता हो। जो कोई अल्लाह का डर रखेगा उसके लिए वह (परेशानी से) निकलने की राह पैदा कर देगा।

3. और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जिसका उसे गुमान भी न होगा। जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसके लिए काफ़ी है। निश्चय ही अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है। अल्लाह ने हर चीज़ का एक अंदाज़ा नियत कर रखा है।

4. और तुम्हारी स्त्रियों में से जो मासिक धर्म से निराश हो चुकी हों, यदि तुम्हें संदेह हो तो उनकी इद्दत तीन मास है और इसी प्रकार उनकी भी जो अभी रजस्वला नहीं हुई। और जो गर्भवती स्त्रियाँ हों उनकी इद्दत उनके शिशु-प्रसव तक है। जो कोई अल्लाह का डर रखेगा उसके मामले में वह आसानी पैदा कर देगा।

5. यह अल्लाह का आदेश है जो उसने तुम्हारी ओर उतारा है। और जो कोई अल्लाह का डर रखेगा उससे वह उसकी बुराइयाँ दूर कर देगा और उसके प्रतिदान को बड़ा कर देगा।

6. अपनी हैसियत के अनुसार जहाँ तुम स्वयं रहते हो उन्हें भी उसी जगह रखो। और उन्हें तंग करने के लिए उन्हें हानि न पहुँचाओ। और यदि वे

التَّلَاقُ

قَدْ جَمَعَهُ

الشَّهَادَةُ لِلَّهِ، ذَلِكَ يُوعِظُ بِهِ مَنْ كَانَ  
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ  
يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا، وَيُزِدْهُ مِنْ حَيْثُ لَا  
يَحْتَسِبُ، وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ،  
إِنَّ اللَّهَ بِأَلْفِ أَمْرٍ، قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ  
قَدْرًا، وَالَّذِي يُنْفِقْ مِنَ الْغَيْبِ مِنْ نَاسِائِهِمْ  
إِنْ أَرَبْتُمْ قَعْدَتَهُمْ ثَلَاثَةَ أَشْهُرٍ، وَالَّذِي لَمْ  
يَحْضُرْ، وَأُولَا الْأَحْصَالِ أَجْلُهُمْ أَنْ  
يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ، وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ  
مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا، ذَلِكَ آخِرُ الَّذِي أُنْزِلَهُ  
إِلَيْكُمْ، وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَكْفُرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ  
وَيُعْظِمَ لَهُ أَجْرًا، أَنْتُمْ وَهْنٌ مِنْ حَيْثُ  
سَكَنْتُمْ مِنْ وَجْدِكُمْ وَلَا تَضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا

مَنْ



गर्भवती हों तो उनपर खर्च करते रहो जब तक कि उनका शिशु-प्रसव न हो जाए। फिर यदि वे तुम्हारे लिए (शिशु को) दूध पिलाएँ तो तुम उन्हें उनका पारिश्रमिक दो और आपस में भली रीति से परस्पर बातचीत के द्वारा कोई बात तय कर लो। और यदि तुम दोनों में कोई कठिनाई हो तो फिर कोई दूसरी स्त्री उसके लिए दूध पिला देगी।

7. चाहिए कि समाई (सामर्थ्य) वाला अपनी समाई के अनुसार खर्च करे और जिसे उसकी रोज़ी नपी-तुली मिली हो तो उसे चाहिए

कि अल्लाह ने उसे जो कुछ भी दिया है उसी में से वह खर्च करे। जितना कुछ दिया है उससे बढ़कर अल्लाह किसी व्यक्ति पर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता। जल्द ही अल्लाह कठिनाई के बाद आसानी पैदा कर देगा।

8. कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्होंने अपने रब और उसके रसूलों के आदेश के मुक़ाबले में सरकशी की, तो हमने उनकी सख़्त पकड़ की और उन्हें बुरी यातना दी।

9. अतः उन्होंने अपने किए के वबाल का मज़ा चख लिया और उनकी कार्य-नीति का परिणाम घाटा ही रहा।

10. अल्लाह ने उनके लिए कठोर यातना तैयार कर रखी है। अतः ऐ बुद्धि और समझवालो जो ईमान लाए हो! अल्लाह का डर रखो। अल्लाह ने तुम्हारी ओर एक याददिहानी उतार दी है।

11. (अर्थात्) एक रसूल, जो तुम्हें अल्लाह की स्पष्ट आयतें पढ़कर सुनाता

فَالْمُتَّقِينَ

فَالْمُتَّقِينَ

عَلَيْهِمْ ۚ وَإِنْ كُنْ أُولَاتٍ حَنِلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ  
حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ  
أُجُورَهُنَّ ۚ وَاتِمُّوا بَيْنَكُمْ بِسَعْرٍ ۚ وَإِنْ  
تَعَاَسَرْتُمْ فَتَرَضَّعْ لَهُ ۚ أُخْرَىٰ ۚ لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ  
مِّنْ سَعَتِهِ ۚ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ  
مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يَكْلِفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ  
سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۚ وَكَأَيُّنَ مِّنْ قُرْبَىٰ  
عَسَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ ۚ فَمَا سُبْنَهَا حَسَابًا  
شَدِيدًا وَعَدَّ بِهَا عَذَابًا ۚ تُكْرَأُ ۚ فَذَاقَتْ  
وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ۚ  
أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۚ فَاتَّقُوا  
اللَّهَ يَأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ  
قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۚ رَسُولًا يَتْلُو

مَثَلًا

فَالْمُتَّقِينَ

فَالْمُتَّقِينَ



है, ताकि वह उन लोगों को, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, अँधेरो से निकालकर प्रकाश की ओर ले आए। जो कोई अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा कर्म करे, उसे वह ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी—ऐसे लोग उनमें सदैव रहेंगे—अल्लाह ने उनके लिए उत्तम रोज़ी रखी है।

12. अल्लाह ही है जिसने सात आकाश बनाए और उन्ही के सदृश धरती से भी।<sup>1</sup> उनके बीच (उसका) आदेश उतरता रहता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है और यह कि अल्लाह हर चीज़ को अपनी ज्ञान-परिधि में लिए हुए है



## 66. अत-तहरीम

(मदीना में उतरी— आयतें 12)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ नबी ! जिस चीज़ को अल्लाह ने तुम्हारे लिए वैध ठहराया है उसे



तुम अपनी पत्नियों की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए क्यों अवैध करते हो? अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

2. अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी अपनी कसमों की पाबंदी से निकलने का उपाय निश्चित कर दिया है। अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है और वही सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

3. जब नबी ने अपनी पत्नियों में से किसी से एक गोपनीय बात कही, फिर जब उसने उसकी खबर कर दी और अल्लाह ने उसे उसपर<sup>1</sup> ज़ाहिर कर दिया, तो उसने उसे किसी हद तक बता दिया और किसी हद तक उसे टाल गया। फिर जब उसने उसकी उसे खबर की तो वह बोली : “आपको इसकी खबर किसने दी?” उसने कहा : “मुझे उसने खबर दी जो सब कुछ जाननेवाला, खबर रखनेवाला है।”

4. यदि तुम दोनों<sup>2</sup> अल्लाह की ओर रुजू हो तो तुम्हारे दिल तो झुक ही चुके हैं, किन्तु यदि तुम उसके विरुद्ध एक-दूसरे की सहायता करोगी तो अल्लाह उसका संरक्षक है, और ज़िबरील और नेक ईमानवाले भी, और इसके बाद फ़रिश्ते भी उसके सहायक हैं।

5. इसकी बहुत संभावना है कि यदि वह तुम्हें तलाक़ दे दे तो उसका रब तुम्हारे बदले में तुमसे अच्छी पत्नियाँ उसे प्रदान करे— मुस्लिम, ईमानवाली, आज्ञाकारिणी, तौबा करनेवाली, इबादत करनेवाली, (अल्लाह के मार्ग में) सफ़र

تَبَيَّنَ مَرْصَاتَ أَزْوَاجِكُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ وَإِذْ أَسْرَأَ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا ۚ فَلَمَّا نَبَيَّاتُ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضُهُ ۖ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَيَّاهَا بِهِ ۖ قَالَ أَيْنَ كَانَ الْعَلِيمُ الْعَمِيذُ ۚ إِنَّ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۚ وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۚ عَنْهُ رُبُّهُ إِنْ طَلَفْتُمْ أَنْ تُبِدُوا لَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُمْ مَّسْلُوبٍ ۖ مُّؤْمِنَةٍ قَدْ نَبِئْتُكُمْ ۖ عَمِلْتُمْ سَيِّئَاتٍ

1. अर्थात् अपने नबी पर।

2. संकेत नबी (सल्ल०) की दो पत्नियों की ओर है।



करनेवाली, विवाहिता और कुँवारियाँ भी ।

6. ऐ ईमान लानेवालो ! अपने आपको और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर होंगे, जिसपर कठोर स्वभाव के ऐसे बलशाली फ़रिश्ते नियुक्त होंगे जो अल्लाह की अवज्ञा उसमें नहीं करेंगे जो आदेश भी वह उन्हें देगा, और वे वही करेंगे जिसका उन्हें आदेश दिया जाएगा ।

7. ऐ इनकार करनेवालो ! आज उज्र पेश न करो । तुम्हें बदले में वही तो दिया जा रहा है जो कुछ तुम करते रहे हो ।

8. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह के आगे तौबा करो, विशुद्ध तौबा । बहुत संभव है कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराइयाँ तुमसे दूर कर दे और तुम्हें ऐसे बागों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिस दिन अल्लाह नबी को और उनको जो ईमान लाकर उसके साथ हुए, रुसवा न करेगा । उनका प्रकाश उनके आगे-आगे दौड़ रहा होगा और उनके दाहिने हाथ में होगा । वे कह रहे होंगे : “ऐ हमारे रब ! हमारे लिए हमारे प्रकाश को पूर्ण कर दे और हमें क्षमा कर । निश्चय ही तू हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है ।”

التَّائِبِينَ

قُلُوبِهِمْ مَغْفُورٌ

تَتَبَتِ وَأَنكَارًا ۚ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا  
قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ  
وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ  
لَّا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا  
يُؤْمَرُونَ ۚ يَأَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا  
الْيَوْمَ ۚ إِنَّمَا تَجْعَلُونَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ  
يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً  
نَّصُوحًا ۚ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنْكُمْ  
سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ  
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ  
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ ۚ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ  
أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتَيْمُ لَنَا  
نُورًا وَاعْفُ لَنَا ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

سَبَّحَ



9. ऐ नबी ! इनकार करनेवालों और कपटाचारियों से जिहाद करो और उनके साथ सख्ती से पेश आओ। उनका ठिकाना जहन्नम है और वह अन्ततः पहुँचने की बहुत बुरी जगह है।

10. अल्लाह ने इनकार करनेवालों के लिए नूह की स्त्री और लूत की स्त्री की मिसाल पेश की है। वे हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों के अधीन थीं। किन्तु उन दोनों स्त्रियों ने उनसे विश्वासघात किया<sup>1</sup> तो वे अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ काम न आ सके और कह दिया गया :

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ  
وَاعْلِظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِجَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ  
الْمُصِيرُ ۖ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتَ  
نُوحٍ وَامْرَأَتَ لُوطَ ۚ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ  
عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَغَاوْتَهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا  
عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ  
مَعَ الدَّٰخِلِينَ ۖ وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ  
آمَنُوا امْرَأَتَ فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ  
لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنَ  
فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝  
وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا  
فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَاتِ  
رَبِّهَا وَكُتِبَ لَهَا فَتْحٌ مِّنَ الْقَبْرِ ۚ

“प्रवेश करनेवालों के साथ दोनों आग में प्रविष्ट हो जाओ।”

11. और ईमान लानेवालों के लिए अल्लाह ने फ़िरऔन की स्त्री की मिसाल पेश की है, जबकि उसने कहा : “ऐ मेरे रब ! तू मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना और मुझे फ़िरऔन और उसके कर्म से छुटकारा दे और छुटकारा दे मुझे ज़ालिम लोगों से।”

12. और इमरान की बेटी मरयम की मिसाल पेश की है जिसने अपने सतीत्व की रक्षा की थी, फिर हमने उस स्त्री के भीतर अपनी रूह फूँक दी और उसने अपने रब के बोलों और उसकी किताबों की पुष्टि की और वह भक्ति-प्रवृत्त आज्ञाकारियों में से थी।

1. अर्थात् धर्म के मामले में उनका साथ न दिया।



## 67. अल-मुल्क

(मक्का में उतरी—आयतें 30)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. बड़ा बरकतवाला है वह  
जिसके हाथ में सारी बादशाही है  
और वह हर चीज़ की सामर्थ्य  
रखता है।—

2. जिसने पैदा किया मृत्यु और  
जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करे  
कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन  
सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली,  
बड़ा क्षमाशील है।—

3. जिसने ऊपर-तले सात  
आकाश बनाए। तुम रहमान की रचना में कोई असंगति और विषमता न  
देखोगे। फिर नज़र डालो : “क्या तुम्हें कोई बिगाड़ दिखाई देता है ?”

4. फिर दोबारा नज़र डालो। निगाह रद्द होकर और थक-हारकर तुम्हारी  
ओर पलट आएगी।

5. हमने निकटवर्ती आकाश को दीपों से सजाया और उन्हें शैतानों के मार  
भगाने का साधन बनाया और उनके लिए हमने भड़कती आग की यातना  
तैयार कर रखी है।

6. जिन लोगों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया उनके लिए जहन्नम की  
यातना है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

7-8. जब वे उसमें डाले जाएँगे तो उसकी दहाड़ने की भयानक आवाज़ सुनेंगे  
और वह प्रकोप से बिफर रही होगी। ऐसा प्रतीत होगा कि प्रकोप के कारण





अभी फट पड़ेगी। हर बार जब भी कोई समूह उसमें डाला जाएगा तो उसके कार्यकर्ता उनसे पूछेंगे : “क्या तुम्हारे पास कोई सावधान करनेवाला नहीं आया?”

9. वे कहेंगे : “क्यों नहीं, अवश्य हमारे पास सावधान करनेवाला आया था, किन्तु हमने झुठला दिया और कहा कि अल्लाह ने कुछ भी नहीं अवतरित किया। तुम तो बस एक बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो।”

10. और वे कहेंगे : “यदि हम सुनते या बुद्धि से काम लेते तो हम दहकती आग में पड़नेवालों में सम्मिलित न होते।”

11. इस प्रकार वे अपने गुनाहों को स्वीकार करेंगे, तो धिक्कार हो दहकती आगवालों पर !

12. जो लोग परोक्ष में रहते हुए अपने रब से डरते हैं, उनके लिए क्षमा और बड़ा बदला है।

13. तुम अपनी बात छिपाओ या उसे व्यक्त करो, वह तो सीनों में छिपी बातों तक को जानता है।

14. क्या वह नहीं जानेगा जिसने पैदा किया? वह सूक्ष्मदर्शी, खबर रखनेवाला है।

15. वही तो है जिसने तुम्हारे लिए धरती को वशीभूत किया। अतः तुम उसके (धरती के) कंधों पर चलो और उसकी रोज़ी में से खाओ, उसी की ओर दोबारा उठकर (जीवित होकर) जाना है।

16. क्या तुम उससे निश्चिन्त हो जो आकाश में है कि वह तुम्हें धरती में धँसा दे, फिर क्या देखोगे कि वह डौंवाडोल हो रही है?

الملك

سورة الملك

كُلَّمَا أَلْقَىٰ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ  
نَذِيرٌ ۚ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ ۚ فَكَذَّبْنَا  
وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ ؕ إِن أَنُتُمْ إِلَّا فِي  
صَلَٰلٍ كَبِيرٍ ۝ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا  
كُنَّا فِي أَصْحَابِ التَّوِينِ ۝ فَاعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ ۚ  
فَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ لَآصْحَابِ التَّوِينِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ  
رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَأَمَّا  
بِقَوْلِكُمْ أَوْاجِهُهُذَا إِلَهُ رَبِّنَا عَلَىٰ عِلْمٍ يُدَارِ السُّدُورِ ۚ  
أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۚ هُوَ  
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا  
وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ ۚ ذُلِيلٌ الشُّورُ ۚ ؕ أَمِنتُمْ مِّنْ  
فِي السَّمَاءِ أَن يَخِفَّفَ بِكُمْ ۚ فَأَزِذًا هِيَ  
تَمُورٌ ۚ أَمْ أَمِنتُمْ مِّنْ فِي السَّمَاءِ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ

سَلَامًا



17. या तुम उससे निश्चिन्त हो जो आकाश में है कि वह तुमपर पथराव करनेवाली वायु भेज दे? फिर तुम जान लोगे कि मेरी चेतावनी कैसी होती है।

18. उन लोगों ने भी झुठलाया जो उनसे पहले थे, फिर कैसा रहा मेरा इनकार!

19. क्या उन्होंने अपने ऊपर पक्षियों को पंक्तिबद्ध, पंख फैलाए और उन्हें समेटते नहीं देखा? उन्हें रहमान के सिवा कोई और नहीं थामे रहता।<sup>1</sup> निश्चय ही वह हर चीज़ को देखता है।

20. या वह कौन है जो तुम्हारी सेना बनकर रहमान के मुक़ाबले में तुम्हारी सहायता करे। इनकार करनेवाले तो बस धोखे में पड़े हुए हैं।

21. या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए हैं।

22. तो क्या वह व्यक्ति जो अपने मुँह के बल औंधा चलता हो वह अधिक सीधे मार्ग पर है या वह जो सीधा होकर सीधे मार्ग पर चल रहा है?

23. कह दो: "वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए। तुम कृतज्ञता थोड़े ही दिखाते हो।"

24. कह दो: "वही है जिसने तुम्हें धरती में फैलाया और उसी की ओर तुम एकत्र किए जा रहे हो।"

25. वे कहते हैं: "यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?"

حَاصِبًا ۖ فَتَتَعَلَّمُونَ كَيْفَ تَنْذِرُ ۚ وَلَقَدْ كَذَّبَ  
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۚ أَوَلَمْ يَرَوْا  
إِلَى الظُّلُمِ فَوْقَهُمْ صَفًى وَيَقْبِضُنَّ ۚ مَا يَمْسِكُهُنَّ  
إِلَّا الرَّحْمَنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ۚ أَمَّنْ هَٰذَا  
الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِمَّنْ دُونِ الرَّحْمَنِ ۚ  
إِنَّ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ۚ أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي  
يُرْزَقُكُمْ إِنَّ أَمْسَكَ يَرْزُقُهُ ۚ بَلْ لَجُّوا فِي عُتُوٍّ وَ  
نُفُورٍ ۚ أَمَّنْ يَنْشِئُ مَكِينًا ۚ ذَرْبَهُ أَهْدَتْ  
لَهُ ۚ أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ قُلْ هُوَ  
الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ  
وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۚ قُلْ هُوَ الَّذِي  
ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُخْشَرُونَ ۚ وَيَقُولُونَ  
مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ قُلْ

1. अर्थात् रहमान ही है जिसने उनको पंख आदि देकर ऐसी व्यवस्था कर दी है कि वे वायुमंडल में अपने को रोक सकें।



26. कह दो : “इसका ज्ञान तो बस अल्लाह ही के पास है और मैं तो एक स्पष्ट सचेत करनेवाला हूँ।”

27. फिर जब वे उसे निकट देखेंगे तो उन लोगों के चेहरे बिगड़ जाएंगे जिन्होंने इनकार की नीति अपनाई; और कहा जाएगा : “यही है वह चीज़ जिसकी तुम माँग कर रहे थे।”

28. कहो : “क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि अल्लाह मुझे और उन्हें भी, जो मेरे साथ हैं, विनष्ट ही कर दे या वह हमपर दया करे, आखिर इनकार करनेवालों को दुखद यातना से कौन पनाह देगा?”

29. कह दो : “वह रहमान है। उसी पर हम ईमान लाए हैं और उसी पर हमने भरोसा किया। तो शीघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि खुली गुमराही में कौन पड़ा हुआ है।”

30. कहो : “क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि तुम्हारा पानी (धरती में) नीचे उतर जाए तो फिर कौन तुम्हें लाकर देगा निर्मल प्रवाहित जल ?

## 68. अल-क़लम

(मक्का में उतरी— आयतें 52)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. नून०। गवाह है क़लम और वह चीज़ जो वे लिखते हैं, तुम अपने रब की अनुकम्पा से कोई दीवाने नहीं हो।

3. निश्चय ही तुम्हारे लिए ऐसा प्रतिदान है जिसका क्रम कभी टूटनेवाला नहीं।

4. निस्संदेह तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो।

5-6. अतः शीघ्र ही तुम भी देख लोगे और वे भी देख लेंगे कि तुममें से

الْقَلَمِ

الْقَلَمِ





कौन विभ्रमित है।

7. निस्संदेह तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया है, और वही उन लोगों को भी जानता है जो सीधे मार्ग पर हैं।

8. अतः तुम झुठलानेवालों का कहना न मानना।

9. वे चाहते हैं कि तुम ढीले पड़ो, इस कारण वे चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं।

10. तुम किसी भी ऐसे व्यक्ति की बात न मानना जो बहुत क्रसमें खानेवाला, हीन है,

11. कचोके लगाता, चुगालियाँ खाता फिरता है,

12. भलाई से रोकता है, सीमा का उल्लंघन करनेवाला, हक़ मारनेवाला है,

13-14. क्रूर है फिर अधम भी। इस कारण कि वह धन और बेटोंवाला है।

15. जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो कहता है : “ये तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं !”

16. शीघ्र ही हम उसकी सूँड पर दाग लगाएँगे।

17-18. हमने उन्हें परीक्षा में डाला है जैसे बाग़वालों को परीक्षा में डाला था, जबकि उन्होंने क्रसम खाई कि वे प्रातःकाल अवश्य उस (बाग़) के फल तोड़ लेंगे और वे इसमें छूट की कोई गुंजाइश नहीं रख रहे थे।

19. अभी वे सो ही रहे थे कि तुम्हारे रब की ओर से गर्दिश का एक झोंका आया।

20. और वह ऐसा हो गया जैसे कटी हुई फ़सल।

21-22. फिर प्रातःकाल होते ही उन्होंने एक-दूसरे को आवाज़ दी कि “यदि तुम्हें फल तोड़ना है तो अपनी खेती पर सवेरे ही पहुँचो।”

23-24. अतएव वे चुपके-चुपके बातें करते हुए चल पड़े कि आज वहाँ कोई

بِأَنفُسِكُمْ التَّفْتُونُ ۖ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِسَرِّ مَقَلٍّ  
عَنِ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۖ فَلَا تُطْمِرِ  
السُّكُورِينَ ۖ وَذُلًّا لَوْ تَذَرُهُنَّ فَيَذَرُوهُنَّ ۖ وَلَا  
تُطْمِرِ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ ۖ هَتَّاءِ مَشَّاءٍ بِنَمِيمٍ ۖ  
مَتَّاءٍ يَلْعَابِ مُنْعَدٍ ۖ آثِيمٍ ۖ عُتْلٍ بَعْدَ ذَاكَ  
رَزِيمٍ ۖ أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَكِينٍ ۖ إِذَا نُظِيَ عَلَيْهِ  
أَيْتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۖ سَرْمَةٌ عَلَى  
الْخُرْطُومِ ۖ إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ  
إِذْ أَقْبَمُوا لِيَصْرِفُنَّهَا مُصْبِحِينَ ۖ وَلَا يَسْتَشْنُونَ ۖ  
فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِنْ رَبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ۖ  
فَأَصْبَحَتْ كَالضَّرِيمِ ۖ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ۖ  
أَبِنَا أَعْدُوا عَلَى حَدِيثِكُمْ ۖ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ  
فَانْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ ۖ أَنْ لَا يَدَّخُلَهَا  
سَمَاءٌ



मुहताज तुम्हारे पास न पहुँचने पाए।

25. और वे आज तेज़ी के साथ चले मानो (मुहताजों को) रोक देने की उन्हें सामर्थ्य प्राप्त है।

26-27. किन्तु जब उन्होंने उसको देखा, कहने लगे : “निश्चय ही हम भटक गए हैं। नहीं, बल्कि हम वंचित होकर रह गए।”

28. उनमें जो सबसे अच्छा था कहने लगा : “क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था? तुम तसबीह क्यों नहीं करते?”

29. वे पुकार उठे : “महान और उच्च है हमारा रब! निश्चय ही हम ज़ालिम थे।”

30-31. फिर वे परस्पर एक-दूसरे की ओर रुख करके लगे एक-दूसरे को मलामत करने। उन्होंने कहा : “अफ़सोस हम पर! निश्चय ही हम सरकश थे।

32. आशा है कि हमारा रब बदले में हमें इससे अच्छा प्रदान करे। हम अपने रब की ओर उन्मुख हैं।”

33. यातना ऐसी ही होती है, और आखिरत की यातना तो निश्चय ही इससे भी बड़ी है, काश वे जानते!

34. निश्चय ही डर रखनेवालों के लिए उनके रब के यहाँ नेमत भरी जन्नतें हैं।

35. तो क्या हम मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) को अपराधियों जैसा कर देंगे?

36. तुम्हें क्या हो गया है, कैसा फ़ैसला करते हो?

37-38. क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो कि उसमें तुम्हारे लिए वह कुछ है जो तुम पसन्द करो?

39. या तुमने हमसे क़समें ले रखी हैं जो क़ियामत के दिन तक बाक़ी

النَّيْمَةُ عَلَيْكُمْ وَمُسْكِينٌ ۖ وَغَدَا عَلَى حَرِمٍ مُّذِيرِينَ ۖ  
فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَصَّالُونَ ۖ بَلْ نَحْنُ  
مَغْرُومُونَ ۖ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا  
تَسْتَعِينُونَ ۖ قَالُوا سُبْحَنَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۖ  
فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَلَّلُونَ ۖ قَالُوا  
يُؤْيَلْنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۖ عَنِ رَبِّنَا إِن يَجِدُ لَنَا  
خَيْرًا مِنْهَا إِنَّا إِلَى رَبِّنَا مُرْغَبُونَ ۖ كَذَلِكَ  
الْعَذَابُ ۖ وَلِلْعَذَابِ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۖ لَوْ كَانُوا  
يَعْلَمُونَ ۖ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٍ  
الْنَّعِيمِ ۖ أَفَنَجْعَلُ السَّالِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ۖ  
مَا تَكْفُرُونَ ۖ كَيْفَ تَعْلَمُونَ ۖ أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ  
تُذَرِّسُونَ ۖ إِنْ لَكُمْ فِيهِ لَمَّا تَخَيَّرُونَ ۖ أَمْ لَكُمْ  
أَيَّامٌ عَلَيْنَا بِالْعَقَّةِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ إِنَّ لَكُمْ



रहनेवाली हैं कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम फ़ैसला करो !

40. उनसे पूछो : "उनमें से कौन इसकी ज़मानत लेता है !

41. या उनके ठहराए हुए कुछ साझीदार हैं ? फिर तो यह चाहिए कि वे अपने साझीदारों को ले आएँ, यदि वे सच्चे हैं ।

42. जिस दिन पिंडली खुल जाएगी<sup>1</sup> और वे सजदे के लिए बुलाए जाएँगे, तो वे (सजदा) न कर सकेंगे ।

43. उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, ज़िल्लत (अपमान) उनपर छा रही होगी । उन्हें उस समय भी सजदा करने के लिए बुलाया जाता था जब वे भले-चंगे थे ।

44. अतः तुम मुझे छोड़ दो और उसको जो इस वाणी को झुठलाता है । हम ऐसों को क्रमशः (विनाश की ओर) ले जाएँगे, ऐसे तरीके से कि वे नहीं जानते ।

45. मैं उन्हें ढील दे रहा हूँ । निश्चय ही मेरी चाल बड़ी मज़बूत है ।

46. (क्या वे यातना ही चाहते हैं) या तुम उनसे कोई बदला माँग रहे हो कि वे तावान के बोझ से दबे जाते हों ?

47. या उनके पास परोक्ष का ज्ञान है तो वे लिख रहे हैं ?

48-50. तो अपने रब के आदेश हेतु धैर्य से काम लो और मछलीवाले (यूनुस अलै०) की तरह न हो जाना, जबकि उसने पुकारा था इस दशा में कि वह ग़म में घुट रहा था । यदि उसके रब की अनुकम्पा उसके साथ न हो जाती तो वह अवश्य ही चटियल मैदान में बुरे हाल में डाल दिया जाता । अन्ततः उसके रब ने उसे चुन लिया और उसे अच्छे लोगों में सम्मिलित कर दिया ।

لَا تَعْلَمُونَ ۖ سَلَّمْنَا لَهُمْ بِذَلِكَ رَيْبًا ۖ  
أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِنْ كَانُوا  
صَادِقِينَ ۖ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ  
إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ۖ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ  
تَرْهَقُهُمْ ذُلُّهُمْ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ  
وَهُمْ سَالِكُونَ ۖ فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبْ بِهَذَا  
الْحَدِيثِ ۖ سَتَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۖ وَ  
أُمِلَّ لَهُمْ ۖ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ۖ أَمْ تَتْلُوهُمْ أَجْرًا  
فَهُمْ مِنْ مَّغْرَمٍ مُثْقَلُونَ ۖ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ  
فَهُمْ يَكْتُمُونَ ۖ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ  
كَصَاحِبِ الْحُوتِ ۖ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ۖ لَوْلَا  
أَنْ تَذَرُكَ نِعْمَةٌ مِنْ رَبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ  
مَذْمُومٌ ۖ فَاجْتَبِهْ رَبَّهُ فَقَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۖ



51. जब वे लोग, जिन्होंने इनकार किया, ज़िक्र (कुरआन) सुनते हैं और कहते हैं : “वह तो दीवाना है !” तो ऐसा लगता है कि वे अपनी निगाहों के ज़ोर से तुम्हें फिसला देंगे ।

52. हालाँकि वह सारे संसार के लिए एक अनुस्मृति है ।

### 69. अल-हाव्रक़ा

(मक्का में उतरी—आयतें 52)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1-3. होकर रहनेवाली ! क्या है वह होकर रहनेवाली ? और तुम क्या जानो कि क्या है वह होकर रहनेवाली ?

4. समूद और आद ने उस खड़खड़ा देनेवाली (घटना) को झूठलाया,

5. फिर समुद्र तो एक हद से बढ़ जानेवाली आपदा से विनष्ट किए गए।

6. और रहे आद, तो वे एक अनियंत्रित प्रचण्ड वायु से विनष्ट कर दिए गए।

7. अल्लाह ने उसको सात रात और आठ दिन तक उन्मूलन के उद्देश्य से उनपर लगाए रखा। तो लोगों को तुम देखते कि वे उसमें पछाड़े हुए ऐसे पड़े हैं मानो वे खजूर के जर्जर तने हों।

8. अब क्या तुम्हें उनमें से कोई शेष दिखाई देता है ?

9. और फिरऔन ने और उससे पहले के लोगों ने और तलपट हो जानेवाली बस्तियों ने यह खता की ।

10. उन्होंने अपने रब के रसूल की अवज्ञा की तो उसने उन्हें ऐसी पकड़ में





ले लिया जो बड़ी कठोर थी ।

11. जब पानी उमड़ आया तो हमने तुम्हें प्रवाहित नौका में सवार किया;

12. ताकि उसे तुम्हारे लिए हम शिक्षाप्रद यादगार बनाएँ और याद रखनेवाले कान उसे सुरक्षित रखें ।

13. तो याद रखो जब सूर (नरसिंघा) में एक फूँक मारी जाएगी,

14. और धरती और पहाड़ों को उठाकर एक ही बार में चूर्ण-विचूर्ण कर दिया जाएगा ।

15. तो उस दिन घटित होनेवाली घटना घटित हो जाएगी,

16. और आकाश फट जाएगा और उस दिन उसका बंधन ढीला पड़ जाएगा,

17. और फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे और उस दिन तुम्हारे रब के सिंहासन को आठ<sup>1</sup> अपने ऊपर उठाए हुए होंगे ।

18. उस दिन तुम लोग पेश किए जाओगे, तुम्हारी कोई छिपी बात छिपी न रहेगी ।

19. फिर जिस किसी को उसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया, तो वह कहेगा : "लो पढ़ो, मेरा कर्म-पत्र !

20. मैं तो समझता ही था कि मुझे अपना हिसाब मिलनेवाला है ।"

21-22. अतः वह सुख और आनन्दमय जीवन में होगा; उच्च जन्नत में,

23. जिसके फलों के गुच्छे झुके हुए होंगे ।

24. मज़े से खाओ और पियो उन कर्मों के बदले में जो तुमने बीते दिनों में किए हैं ।

25-26. और रहा वह व्यक्ति जिसका कर्म-पत्र उसके बाएँ हाथ में दिया

النّازعة

النّازعة

رَبِّيَّةٌ ۖ وَإِنَّا نَاطِقًا الْمَاءَ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۖ  
لِنَجْمَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ۖ  
فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفَعَةٌ وَاجِدَةٌ ۖ وَحُمِلَتِ  
الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاجِدَةً ۖ  
فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۖ وَانْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ  
يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۖ وَاللَّهُ عَلَى أَرْجَائِكُمْ وَيَخُولُ  
عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَةٌ ۖ يَوْمَئِذٍ  
تُغْرَضُونَ لَا تَخْفَ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۖ فَأَمَّا مَنْ أَوْفَى  
كِتَابَهُ بِإِيمَانِهِ فَيَقُولُ هَآؤُمُ اقْرَءُوا كِتَابِيهِ ۖ  
إِنِّي كُنْتُ مِنَ الْمُلُوقِ حَسَابِيهِ ۖ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ  
رَاضِيَةٍ ۖ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۖ قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ۖ  
كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ  
الْعَالِيَةِ ۖ وَأَمَّا مَنْ أَوْفَى كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ ۖ

سَبِيلِ



गया, वह कहेगा : “काश, मेरा कर्म-पत्र मुझे न दिया जाता और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है !

27. ऐ काश, वह (मृत्यु) समाप्त करनेवाली होती !

28. मेरा माल मेरे कुछ काम न आया,

29. मेरा ज़ोर (सत्ता) मुझसे जाता रहा !”

30. “पकड़ो उसे और उसकी गरदन में तौक़ डाल दो,

31. फिर उसे भड़कती हुई आग में झोंक दो,

32. फिर उसे एक ऐसी ज़ंजीर में जकड़ दो जिसकी माप सत्तर हाथ है ।

33-34. वह न तो महिमावान अल्लाह पर ईमान रखता था और न मुहताज को खाना खिलाने पर उभारता था ।

35-36. अतः आज उसका यहाँ कोई घनिष्ट मित्र नहीं, और न ही धोवन<sup>1</sup> के सिवा कोई भोजन है,

37. उसे खताकारों (अपराधियों) के अतिरिक्त कोई नहीं खाता ।”

38-39. अतः कुछ नहीं ! मैं क्रसम खाता हूँ उन चीज़ों की जो तुम देखते हो और उन चीज़ों की भी जो तुम नहीं देखते,

40. निश्चय ही वह एक प्रतिष्ठित रसूल की लाई हुई वाणी है ।

41. वह किसी कवि की वाणी नहीं । तुम ईमान थोड़े ही लाते हो ।

42. और न तब किसी काहिन की वाणी है । तुम होश से थोड़े ही काम लेते हो ।

43. अवतरण है सारे संसार के रब की ओर से,

قَيِّقُولُ يَلِيَّتَنِي لَمْ أَوْتِ كِتَابِيهِ ۖ وَلَمْ أَدْرِ مَا  
جَسَابِيهِ ۖ يَلِيَّتَهَا كَانَتْ الْقَاضِيَةُ ۖ مَا  
أَغْنَى عَنِّي مَالِيهِ ۖ هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيهِ ۖ  
خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ۖ ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۖ ثُمَّ فِي  
سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۖ  
إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِ الْعَظِيمِ ۖ وَلَا يَحْصُ  
عَلَى طَعَامِ السَّكِينِ ۖ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُنَا  
حَمِيمٌ ۖ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غَدِينِ ۖ لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا  
الْغَاطُّونَ ۖ فَلَآ أَفْئِمُّ بِمَا تُبْصِرُونَ ۖ وَمَا لَا  
تُبْصِرُونَ ۖ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۖ وَمَا هُوَ  
بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۖ قَلِيلًا مَّا تُوَفَّوْنَهُ ۖ وَلَا يَقُولُ  
كَاهِنٌ ۖ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۖ صَٰدِقُ  
مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۖ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ

سورة



44-46. यदि वह (नबी) हमपर थोपकर कुछ बातें घड़ता, तो अवश्य हम उसका दाहिना हाथ पकड़ लेते, फिर उसकी गर्दन की रग काट देते,

47. और तुममें से कोई भी इससे रोकनेवाला न होता ।

48. और निश्चय ही वह एक अनुस्मृति है डर रखनेवालों के लिए ।

49. और निश्चय ही हम जानते हैं कि तुममें कितने ही ऐसे हैं जो झुठलाते हैं ।

50. निश्चय ही वह इनकार करनेवालों के लिए सर्वथा पछतावा है,

51-52. और वह बिलकुल

विश्वसनीय सत्य है । अतः तुम अपने महिमावान रब के नाम की तसबीह (गुणगान) करो ।

التَّائِبِينَ

بِذَلِكَ الْيَوْمِ

الْأَقْوَامِ ۚ لَا أَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۚ ثُمَّ

لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۚ فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ

عَنْهُ حَاجِزِينَ ۚ وَإِنَّهُ لَتَذَكَّرَةٌ لِلشَّاقِينَ ۚ

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُكَذِّبِينَ ۚ وَإِنَّهُ

لَعَذَابٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۚ وَإِنَّهُ لَعَنَ الْيَقِينِ ۚ

فَتَتَّبِعْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۚ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۚ لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ

لَهُ دَافِعٌ ۚ مِنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۚ تَعْرُجُ

الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مُقَدَّارُهُ

خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۚ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَوِيدًا ۚ

إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۚ وَتَرَاهُ قَرِيبًا ۚ يَوْمَ

مَذَل

## 70. अल-मआरिज

(मक्का में उतरी—आयतें 44)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1-2. एक माँगनेवाले ने घटित होनेवाली यातना माँगी, जो इनकार करनेवालों के लिए होगी, उसे कोई टालनेवाला नहीं,

3. वह अल्लाह की ओर से होगी, जो चढ़ाव के सोपानों का स्वामी है ।

4. फ़रिश्ते और रूह (जिबरील) उसकी ओर चढ़ते हैं—उस दिन में जिसकी अवधि पचास हजार वर्ष है ।

5. अतः धैर्य से काम लो, उत्तम धैर्य ।

6-7. वे उसे बहुत दूर देख रहे हैं, किन्तु हम उसे निकट देख रहे हैं ।



8. जिस दिन आकाश तेल की तलछट जैसा काला हो जाएगा,

9. और पर्वत रंग-बिरंगे ऊन के सदृश हो जाएँगे ।

10-14. कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा, हालाँकि वे एक-दूसरे को दिखाए जाएँगे । अपराधी चाहेगा कि किसी प्रकार वह उस दिन की यातना से छूटने के लिए अपने बेटों, अपनी पत्नी, अपने भाई, और अपने उस परिवार को जो उसको आश्रय देता है, और उन सभी लोगों को जो धरती में रहते हैं, फ़िदया (मुक्ति-प्रतिदान) के रूप में दे डाले फिर वह उसको छुटकारा दिला दे ।

تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْهَيْلِ ۖ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۖ  
وَلَا يَسْأَلُ حِمِيْرٌ حِمِيْرًا ۖ يَبْصُرُونَهُمْ يَوْمَ  
الْعَذَابِ كَوَيْفَتِلْكَ مِنَ الْعَذَابِ يَوْمَئِذٍ ۖ  
وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ۖ وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤَيِّنُهَا  
وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۖ ثُمَّ يُنْفِخُهُمْ ۖ كَلَّا ۖ  
إِنَّمَا لَطَفَ ۖ نَزَاعَةً لِّلشَّوْءِ ۖ تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ  
وَتَوَلَّى ۖ وَجَمَعَ فَأَوْعَى ۖ إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ  
هَلُوعًا ۖ إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۖ وَإِذَا مَسَّهُ  
الْحَيْرُ مَنُوعًا ۖ إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۖ الَّذِينَ هُمْ عَلَى  
صَلَاتِهِمْ دَائِبُونَ ۖ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ  
مِّمَّاؤُمُ ۖ لِلتَّائِبِينَ وَالْمُحْسِنِينَ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ  
بِيعُورِ الْيَدَيْنِ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ  
مُشْفِقُونَ ۖ إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ۖ

مَذَك

15. कदापि नहीं ! वह लपट मारती हुई आग है,

16. जो मांस और त्वचा को चाट जाएगी,

17. वह उस व्यक्ति को बुलाती है जिसने पीठ फेरी और मुँह मोड़ा,

18. और (धन) एकत्र किया और सैत कर रखा ।

19. निस्संदेह मनुष्य अधीर पैदा हुआ है ।

20. जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो घबरा उठता है,

21. किन्तु जब उसे सम्पन्नता प्राप्त होती है तो वह कृपणता दिखाता है ।

22. किन्तु नमाज़ अदा करनेवालों की बात और है,

23. जो अपनी नमाज़ पर सदैव जमे रहते हैं,

24-25. और जिनके मालों में माँगनेवालों और वंचित का एक ज्ञात और निश्चित हक़ होता है,

26. जो बदले के दिन को सत्य मानते हैं,

27. जो अपने रब की यातना से डरते हैं—

28. उनके रब की यातना है ही ऐसी जिससे निश्चिन्त न रहा जाए—



29-30. जो अपनी पत्नियों या जो उनकी मिल्क में हों<sup>1</sup> उनके अतिरिक्त दूसरों से अपने गुप्तांगों की रक्षा करते हैं। तो इस बात पर उनकी कोई भर्त्सना नहीं।—

31. किन्तु जिस किसी ने इसके अतिरिक्त कुछ और चाहा तो ऐसे ही लोग सीमा का उल्लंघन करनेवाले हैं।—

32. जो अपने पास रखी गई अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का निर्वाह करते हैं,

33. जो अपनी गवाहियों पर क्रायम रहते हैं,

34. और जो अपनी नमाज़ की रक्षा करते हैं।

35. वही लोग जन्नतों में सम्मानपूर्वक रहेगे।

36-37. फिर उन इनकार करनेवालों को क्या हुआ है कि वे दाएँ और बाएँ से गिरोह के गिरोह तुम्हारी ओर दौड़े चले आ रहे हैं?

38. क्या उनमें से प्रत्येक व्यक्ति इसकी लालसा रखता है कि वह अनुकम्पा से परिपूर्ण जन्नत में प्रविष्ट हो?

39. कदापि नहीं, हमने उन्हें उस चीज़ से पैदा किया है, जिसे वे भली-भाँति जानते हैं।

40-41. अतः कुछ नहीं, मैं क्रसम खाता हूँ पूर्वो और पश्चिमों के रब की, हमें इसकी सामर्थ्य प्राप्त है कि उनकी जगह उनसे अच्छे ले आएँ और हम पिछड़ जानेवाले नहीं हैं।

42. अतः उन्हें छोड़ो कि वे व्यर्थ बातों में पड़े रहें और खेलते रहें, यहाँ तक कि

المعارج

قوله الذين

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَفْوَاجِهِمْ حَافِظُونَ ۖ إِلَّا عَلَىٰ  
أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ  
مَلُومِينَ ۖ فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ  
الْعَادُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ  
رَءُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ۖ وَ  
الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۖ أُولَٰئِكَ  
فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ۖ فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا  
فَبَلَكَ مُهْطِعِينَ ۖ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ  
عِزِينَ ۖ أَيْضًا كُلُّ أَمْرٍ مِنْهُمْ أَنْ يَدْخُلُ جَنَّةَ  
نَعِيمٍ ۖ كَلَامًا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ۖ فَلَا  
أَقِيمُ رَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ إِنَّا الْقَدِيرُونَ ۖ عَلَىٰ  
أَنْ يُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۖ  
فَدَرَاهُمْ يَخْضَوْنَ وَيَلْعَبُونَ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ

مِنْ



वे अपने उस दिन से मिलें जिसका  
उनसे वादा किया जा रहा है,

43. जिस दिन वे क़ब्रों से तेज़ी  
के साथ निकलेंगे जैसे किसी  
निशान की ओर दौड़े जा रहे हैं,

44. उनकी निगाहें झुकी होंगी,  
ज़िल्लत उनपर छा रही होगी। यह  
है वह दिन जिससे वह डराए जाते  
रहे हैं।

## 71. नूह

(मक्का में उतरी—आयतें 28)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हमने नूह को उसकी क़ौम  
की ओर भेजा कि “अपनी क़ौम के  
लोगों को सावधान कर दो, इससे पहले कि उनपर कोई दुखद यातना आ  
जाए।”

2-3. उसने कहा : “ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मैं तुम्हारे लिए एक स्पष्ट  
सचेतकर्ता हूँ, कि ‘अल्लाह की बन्दगी करो और उसका डर रखो और मेरी  
आज्ञा मानो।’

4. वह तुम्हें क्षमा करके तुम्हारे गुनाहों से तुम्हें पाक कर देगा और एक  
निश्चित समय तक तुम्हें मुहलत देगा। निश्चय ही जब अल्लाह का निश्चित  
समय आ जाता है तो वह टलता नहीं, काश कि तुम जानते !”

5. उसने कहा : “ऐ मेरे रब ! मैंने अपनी क़ौम के लोगों को रात और दिन  
बुलाया,

6. किन्तु मेरी पुकार ने उनके पलायन को ही बढ़ाया।

لِذَلِكَ الْيَوْمِ

الَّذِي يُوعَدُونَ ۝ يَوْمَ يُخْرِجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ  
سِرَاقًا كَانَهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ ۝ خَاشِعَةً  
أَبْصَارُهُمْ تَرَاهُمْ ذَلِيلًا ۚ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي  
كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

(٦١) سُوْرَةُ النَّوْحِ مَكِّيَّةٌ (٦١)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ  
قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالَ يَبْقَوْمُ  
إِنِّي أَكُونُ تُنْذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَوْ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ  
وَاطِيعُونَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُخْرِجَكُمْ إِلَىٰ  
أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۚ  
لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي  
لَيْلًا وَنَهَارًا ۚ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَاوِي إِلَّا فِرَارًا ۝

سَبَّحْ



7. और जब भी मैंने उन्हें बुलाया, ताकि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो उन्होंने अपने कानों में अपनी उँगलियाँ दे लीं और अपने कपड़ों से स्वयं को ढाँक लिया और अपनी हठ पर अड़ गए और बड़ा ही घमण्ड किया।

8. फिर मैंने उन्हें खुल्लमखुल्ला बुलाया,

9. फिर मैंने उनसे खुले तौर पर भी बातें कीं और उनसे चुपके-चुपके भी बातें कीं।

10. और मैंने कहा : 'अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करो। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील है,

11. वह बादल भेजेगा तुमपर खूब बरसनेवाला,

12. और वह माल और बेटों से तुम्हें बढ़ोत्तरी प्रदान करेगा, और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा और तुम्हारे लिए नहरें प्रवाहित करेगा।

13. तुम्हें क्या हो गया है कि तुम (अपने दिलों में) अल्लाह के लिए किसी गौरव की आशा नहीं रखते ?

14. हालाँकि उसने तुम्हें विभिन्न अवस्थाओं से गुज़ारते हुए पैदा किया।

15. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस प्रकार ऊपर-तले सात आकाश बनाए,

16. और उनमें चन्द्रमा को प्रकाश और सूर्य को प्रदीप बनाया ?

17. और अल्लाह ने तुम्हें धरती से विशिष्ट प्रकार से विकसित किया,

18. फिर वह तुम्हें उसमें लौटाता है और तुम्हें बाहर निकालेगा भी।

19. और अल्लाह ने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया,

20. ताकि तुम उसके विस्तृत मार्गों पर चलो।' "

تُؤْمِرُ

تُؤْمِرُ الْقُلُوبَ

وَأَنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ  
فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَعْصَمُوا بِأَنفُسِهِمْ وَأَصْرُوا وَاسْتَكْبَرُوا  
اسْتِكْبَارًا ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهَارًا ثُمَّ إِنِّي  
أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا فَقُلْتُ  
اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا يُرْسِلُ السَّمَاءَ  
عَلَيْكُمْ قِطْرًا وَإِنَّكُمْ لَفِي قَوْمٍ يَأْمُرُكُمْ بِأَمْوَالٍ  
وَبَنِينَ وَبَنَاتٍ لَّكُمْ جُنُثٍ وَيَجْعَلُ لَكُمْ أَنْهَارًا مَا لَكُمْ  
لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا  
أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَوَاتٍ طِبَاقًا  
وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا  
وَاللَّهُ أَنْتَبَهُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ثُمَّ يُعِيدُكُمْ  
فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ  
الْأَرْضَ سَبَاطًا لَتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا

سَبِيلًا



21. नूह ने कहा : "ऐ मेरे रब ! उन्होंने मेरी अवज्ञा की, और उसका अनुसरण किया जिसके धन और जिसकी संतान ने उसके घाटे ही में अभिवृद्धि की।

22. और वे बहुत बड़ी चाल चले,

23. और उन्होंने कहा : 'अपने इष्ट-पूज्यों को कदापि न छोड़ो और न 'वद' को छोड़ो और न 'सुवा' को और न 'यगूस' और 'यऊक़' और 'नस्र' को।'

24. और उन्होंने बहुत-से लोगों को पथभ्रष्ट किया है (तो तू उन्हें मार्ग न दिखा) और अब, तू भी ज़ालिमों की पथभ्रष्टता ही में अभिवृद्धि कर।"

25. वे अपनी बड़ी ख़ताओं के कारण पानी में डुबो दिए गए, फिर आग में दाखिल कर दिए गए, फिर वे अपने और अल्लाह के बीच आड़ बननेवाले सहायक न पा सके।

26. और नूह ने कहा : "ऐ मेरे रब ! धरती पर इनकार करनेवालों में से किसी बसनेवाले को न छोड़।

27. यदि तू उन्हें छोड़ देगा तो वे तेरे बन्दों को पथभ्रष्ट कर देंगे और वे दुराचारियों और बड़े अधर्मियों को ही जन्म देंगे।

28. ऐ मेरे रब ! मुझे क्षमा कर दे और मेरे माँ-बाप को भी और हर उस व्यक्ति को भी जो मेरे घर में ईमानवाला बनकर दाखिल हुआ, और (सामान्य) ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को भी (क्षमा कर दे), और ज़ालिमों के विनाश को ही बढ़ा।"

نُوحٌ

نُوحٌ عَلَيْهِ السَّلَامُ

قَالَ نُوحٌ رَبِّ لَإِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَنْ لَمْ يَزِدْهُ مَالَهُ وَوَلَدَهُ إِلَّا خَسَارًا وَمَكَرُوا مَكْرًا كَبِيرًا وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا وَقَدْ أَصْلَوُا كَثِيرًا وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا مَتَّحِطِينَ لَهُمْ أَغْرِقُوا فَأَدْخَلُوا نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا إِنَّكَ إِن تَذَرَهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كُفَّارًا رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِي مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا

مِيز



## 72. अल-जिन

(मक्का में उतरी—आयतें 28)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. कह दो : “मेरी ओर प्रकाशना  
की गई है कि जिन्नों के एक गिरोह ने  
सुना, फिर उन्होंने कहा कि ‘हमने एक  
मनभाता कुरआन सुना,

2. जो भलाई और सूझ-बूझ का  
मार्ग दिखाता है, अतः हम उसपर  
ईमान ले आए, और अब हम  
कदापि किसी को अपने रब का  
साझी नहीं ठहराएँगे।

3. और यह कि हमारे रब का  
गौरव अत्यन्त उच्च है। उसने अपने लिए न तो कोई पत्नी बनाई और न संतान।

4. और यह कि हममें का मूर्ख व्यक्ति अल्लाह के विषय में सत्य से  
बिल्कुल हटी हुई बातें कहता रहा है।

5. और यह कि हमने समझ रखा था कि मनुष्य और जिन अल्लाह के  
विषय में कभी झूठ नहीं बोलते।

6. और यह कि मनुष्यों में से कितने ही पुरुष ऐसे थे जो जिन्नों में से कितने  
ही पुरुषों की शरण माँगा करते थे। इस प्रकार उन्होंने उन्हें (जिन्नों को) और  
चढ़ा दिया।

7. और यह कि उन्होंने गुमान किया जैसे कि तुमने गुमान किया कि  
अल्लाह किसी (नबी) को कदापि न उठाएगा।

8. और यह कि हमने आकाश को टटोला तो उसे सख्त पहरेदारों और  
उल्काओं से भरा हुआ पाया।

9. और यह कि हम उसमें बैठने के स्थानों में सुनने के लिए बैठा करते थे,

الجن

سُورَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ ٣٠





किन्तु अब कोई सुनना चाहे तो वह अपने लिए घात में लगा एक उल्का पाएगा।

10. और यह कि हम नहीं जानते कि उन लोगों के साथ जो धरती में हैं बुराई का इरादा किया गया है या उनके रब ने उनके लिए भलाई और मार्गदर्शन का इरादा किया है।

11. और यह कि हममें से कुछ लोग अच्छे हैं और कुछ लोग उससे निम्नतर हैं, हम विभिन्न मार्गों पर हैं।

12. और यह कि हमने समझ लिया कि हम न धरती में कहीं जाकर अल्लाह के क़ाबू से निकल सकते हैं, और न आकाश में कहीं भागकर उसके क़ाबू से निकल सकते हैं।

13. और यह कि जब हमने मार्गदर्शन की बात सुनी तो उसपर ईमान ले आए। अब जो कोई अपने रब पर ईमान लाएगा, उसे न तो किसी हक़ के मारे जाने का भय होगा और न किसी ज़ुल्म-ज़्यादती का।

14. और यह कि हममें से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं और हममें से कुछ हक़ से हटे हुए हैं। तो जिन्होंने आज्ञापालन का मार्ग ग्रहण कर लिया उन्होंने भलाई और सूझ-बूझ की राह ढूँढ़ ली।

15. रहे वे लोग जो हक़ से हटे हुए हैं, तो वे जहन्नम का ईंधन होकर रहे।”

16-17. और यह प्रकाशना की गई है कि यदि वे सीधे मार्ग पर धैर्यपूर्वक चलते तो हम उन्हें पर्याप्त जल से अभिषिक्त करते, ताकि हम उसमें उनकी परीक्षा करें। और जो कोई अपने रब की याद से कतराएगा, तो वह उसे कठोर यातना में डाल देगा।

18. और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं। अतः अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो।

19. और यह कि “जब अल्लाह का बन्दा उसे पुकारता हुआ खड़ा हुआ तो

الجن

تَبَارَكَ الَّذِي

يَسْمِعُ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شَهَابًا رَّصَدًا ۝ وَآتَاكَ  
تَذْرِيءَ شَرْ أُرِيدَ بِكَ فِي الْأَرْضِ أَمْرًا أَرَادَ بِهِمْ  
رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝ وَآتَاكَ مِنَّا الصُّلْحُونَ وَمِنَّا دُونَ  
ذَلِكَ كُنَّا طَرَائِقَ قَدَدًا ۝ وَآتَاكَ ظَنًّا أَن لَّنْ  
نُغَيِّرَ اللَّهُ فِي الْأَرْضِ وَلَن نُّغَيِّرَهُ هَرَبًا ۝ وَآتَاكَ  
لَقَاءَ سَمْعَانَ الْهُدَى أَمَّا بِهِ ۝ فَمَنْ يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ  
فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۝ وَآتَاكَ مِنَّا الْمُسْلِمُونَ  
وَمِنَّا الْقُرْطُونَ ۝ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَئِكَ تَحَرَّوْا  
رَشَدًا ۝ وَآتَاكَ الْقُرْطُونَ فَكَانُوا إِلَهُهُمْ حَطَبًا ۝  
وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقِينَهُمْ مَّاءً  
غَدَقًا ۝ لِنُقَاتِلَهُمْ فِيهِ ۝ وَمَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ  
يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝ وَأَنَّ الْمَسْجِدَ لِلَّهِ فَلَا  
تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۝ وَآلَهُ لَقَاءَ قَامَ عَبْدُ اللَّهِ

مَزَلْ



वे ऐसे लगते थे कि उसपर जत्थे बनकर टूट पड़ेंगे।”

20. कह दो : “मैं तो बस अपने रब ही को पुकारता हूँ, और उसके साथ किसी को साझी नहीं ठहराता।”

21. कह दो : “मैं तो तुम्हारे लिए न किसी हानि का अधिकार रखता हूँ और न किसी भलाई का।”——

22. कहो : “अल्लाह के मुक़ाबले में मुझे कोई पनाह नहीं दे सकता और न मैं उससे बचकर कतराने की कोई जगह पा सकता हूँ।——

23. सिवाय अल्लाह की ओर से पहुँचाने और उसके संदेश देने के। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा तो उसके लिए जहन्नम की आग है, जिसमें ऐसे लोग सदैव रहेंगे।”

24. यहाँ तक कि जब वे उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है तो वे जान लेंगे कि कौन अपने सहायक की दृष्टि से कमज़ोर और संख्या में न्यूनतर है।

25. कह दो : “मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है वह निकट है या मेरा रब उसके लिए कोई लम्बी अवधि ठहराता है।

26-28. परोक्ष का जाननेवाला वही है और वह अपने परोक्ष को किसी पर प्रकट नहीं करता, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे उसने रसूल की हैसियत से पसंद कर लिया हो तो उसके आगे से और उसके पीछे से निगरानी की पूर्ण व्यवस्था कर देता है, ताकि वह यक़ीनी बना दे कि उन्होंने अपने रब के सन्देश पहुँचा दिए और जो कुछ उनके पास है उसे वह घेरे हुए है और हर चीज़ को

الجن

تَذَكُّرُ الرِّبِّ

يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۖ قُلْ إِنَّمَا  
أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۖ قُلْ إِنِّي  
لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۖ قُلْ إِنِّي لَنْ  
يُجَنِّبَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ  
مُلْتَحَدًا ۖ إِلَّا بَلَاغًا مِنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ۚ وَمَنْ  
يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا  
أَبَدًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَيَعْلَمُونَ  
مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ۖ قُلْ إِنْ  
أَدْرِي أَقْرَبُ مِمَّا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ  
رَبِّي أَمَدًا ۖ عَلِيمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ  
أَحَدًا ۖ إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ  
يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ۖ  
لِيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا رِسَالَاتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ

مَعْرُوفٌ



उसने गिन रखा है ।”

### 73. अल-मुज़ज़म्मिल

(मक्का में उतरी—आयतें 20)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. ऐ कपड़े में लिपटनेवाले !
2. रात को उठकर (नमाज़ में)  
खड़े रहा करो—सिवाय थोड़ा  
हिस्सा—

3-4. आधी रात या उससे कुछ  
थोड़ा कम कर लो या उससे कुछ  
अधिक बढ़ा लो और कुरआन को  
भली-भाँति ठहर-ठहरकर पढ़ो ।—

5. निश्चय ही हम तुमपर एक  
भारी बात डालनेवाले हैं ।

6. निस्संदेह रात का उठना अत्यन्त अनुकूलता रखता है और बात भी उसमें  
अत्यन्त सधी हुई होती है ।

7. निश्चय ही तुम्हारे लिए दिन में भी (तसबीह की) बड़ी गुंजाइश है ।—

8-9. और अपने रब के नाम का ज़िक्र किया करो और सबसे कटकर उसी के  
हो रहो । वह पूर्व और पश्चिम का रब है, उसके सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं, अतः  
तुम उसी को अपना कार्यसाधक बना लो ।

10. और जो कुछ वे कहते हैं उसपर धैर्य से काम लो और भली रीति से  
उनसे अलग हो जाओ ।

11. और तुम मुझे और झुठलानेवाले सुख-सम्पन्न लोगों को छोड़ दो और  
उन्हें थोड़ी मुहलत दो ।

- 12-13. निश्चय ही हमारे पास बेड़ियाँ हैं और भड़कती हुई आग और गले में





अटकनेवाला भोजन है और दुखद यातना,

14. जिस दिन धरती और पहाड़ काँप उठेंगे और पहाड़ रेत के ऐसे ढेर होकर रह जाएँगे जो बिखरे जा रहे होंगे।

15. निश्चय ही हमने तुम्हारी ओर एक रसूल तुमपर गवाह बनाकर भेजा है, जिस प्रकार हमने फ़िरऔन की ओर एक रसूल भेजा था।

16. किन्तु फ़िरऔन ने रसूल की अवज्ञा की, तो हमने उसे पकड़ लिया और यह पकड़ सख्त वबाल थी।

17. यदि तुमने इनकार किया तो उस दिन से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा?

18. आकाश उसके कारण फटा पड़ रहा है, उसका वादा तो पूरा ही होना है।

19. निश्चय ही यह एक अनुस्मृति है। अब जो चाहे अपने रब की ओर मार्ग ग्रहण कर ले।

20. निस्संदेह तुम्हारा रब जानता है कि तुम लगभग दो तिहाई रात, आधी रात और एक तिहाई रात तक (नमाज़ में) खड़े रहते हो, और एक गिरोह उन लोगों में से भी जो तुम्हारे साथ है, खड़ा होता है। और अल्लाह रात और दिन की घट-बढ़ नियत करता है। उसे मालूम है कि तुम सब उसका निर्वाह न कर सकोगे, अतः उसने तुमपर दया-दृष्टि की। अब जितना कुरआन आसानी से हो सके पढ़ लिया करो। उसे मालूम है कि तुममें से कुछ बीमार भी होंगे, और कुछ दूसरे लोग अल्लाह के उदार अनुग्रह (रोज़ी) को ढूँढ़ते हुए धरती में यात्रा करेंगे, कुछ दूसरे लोग अल्लाह के मार्ग में युद्ध करेंगे। अतः उसमें से जितना आसानी से हो सके पढ़ लिया करो और नमाज़ कायम करो और ज़कात देते रहो, और

الْقُرْآنِ

تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ

أَلَيْسَ ۚ يَعْلَمُ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتْ  
الْجِبَالُ كَغَيْثًا مَّهِيلًا ۚ إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ  
رَسُولًا ۚ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ  
رَسُولًا ۚ فَعَصَىٰ فِرْعَوْنَ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا  
وَبُيْلًا ۚ فَكَيْفَ تُنْفِقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا  
يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۚ السَّمَاءُ مُنْقَطِرَةٌ بِهِمْ  
كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ۚ إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ  
شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ  
تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلَاثِي اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلَاثَهُ وَ  
طُلُوفَهُ مِنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يَقْدِرُ اللَّيْلَ وَ  
النَّهَارَ ۚ عَلِيمٌ أَن لَّنْ تَحْصُوهُ فَتَّابٌ عَلَيْكُمْ  
فَأَقْرءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ  
مِنْكُمْ مُّصْرِفٌ ۚ وَأَخْرَوْنَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ

سَبِيلًا



अल्लाह को ऋण दो, अच्छा ऋण।  
तुम जो भलाई भी अपने लिए  
(आगे) भेजोगे उसे अल्लाह के यहाँ  
अत्युत्तम और प्रतिदान की दृष्टि से  
बहुत बढ़कर पाओगे। और  
अल्लाह से माफ़ी माँगते रहो।  
बेशक अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील,  
दयावान है।

## 74. अल-मुद्स्सिर

(मक्का में उतरी—आयतें 56)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. ऐ ओढ़ने लपेटनेवाले ! उठो,  
और सावधान करने में लग जाओ।

3. और अपने रब की बड़ाई ही करो।

4-5. अपने दामन को पाक रखो और गन्दगी से दूर ही रहो।

6-7. अपनी कोशिशों को अधिक समझकर उसके क्रम को भंग न करो  
और अपने रब के लिए धैर्य ही से काम लो।

8. जब सूर में फूँक मारी जाएगी।<sup>1</sup>

9-10. तो जिस दिन ऐसा होगा, वह दिन बड़ा ही कठोर होगा, इनकार  
करनेवालों पर आसान न होगा।

11-12. छोड़ दो मुझे और उसको जिसे मैंने अकेला पैदा किया, और उसे माल

الْمُدَّثِّرُ

الْمُدَّثِّرُ

يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۖ وَاعْرَضُونَ يَقًا يَلُونَ  
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَأَقْرُهُ ۖ وَمَا يَتَسَّرُ مِنْهُ ۖ وَأَقِيمُوا  
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا  
وَمَا تُقَدِّمُوا وَلَا تُخْسِرُوا ۖ مِنْ خَيْرٍ تَعْدُوهُ ۖ عِنْدَ  
اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمُ ۖ أَجْرًا ۖ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۖ  
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۖ قُمْ فَأَنْذِرْ ۖ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۖ  
وَتِبَّكَ فَطَهِّرْ ۖ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۖ وَلَا تَسْنُنْ  
تَسْكَرُ ۖ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۖ فَإِذَا نُفِرَ فِي النَّاقُورِ ۖ  
فَذَلِكَ يَوْمٌ مَيِّدٌ ۖ يَوْمٌ غَيْرٌ ۖ عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ  
يَسِيرٍ ۖ ذُرِّي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۖ وَجَعَلْتُ

1. इस आयत का अनुवाद यह भी किया जाता है— अतः जब नाकूर (धरती) को कुरेद लिया जाएगा; नाकूर का अर्थ है, बहुत चोंच मारनेवाला। धरती एक ऐसे बड़े पक्षी की तरह है जो सभी को चोंच मारकर निगल जाती है। एक दिन आएगा, जब उसके निगले हुए प्रत्येक व्यक्ति को उसके भीतर से निकाल लिया जाएगा। — देखें : सूरा 82 आयत 4।



दिया दूर तक फैला हुआ,

13. और उसके पास उपस्थित रहनेवाले बटे दिए,

14. और मैंने उसके लिए अच्छी तरह जीवन-मार्ग समतल किया।

15. फिर वह लोभ रखता है कि मैं उसके लिए और अधिक दूँगा।

16. कदापि नहीं, वह हमारी आयतों का दुश्मन है,

17. शीघ्र ही मैं उसे घेरकर कठिन चढ़ाई चढ़वाऊँगा।

18. उसने सोचा और अटकल से एक बात बनाई।

19. तो विनष्ट हो, कैसी बात बनाई!

20. फिर विनष्ट हो, कैसी बात बनाई!

21-22. फिर नज़र दौड़ाई, फिर त्योरी चढ़ाई और मुँह बनाया,

23. फिर पीठ फेरी और घमंड किया।

24. अन्ततः बोला : "यह तो बस एक जादू है, जो पहले से चला आ रहा है।

25. यह तो मात्र मनुष्य की वाणी है।"

26. मैं शीघ्र ही उसे 'सक्रर' (जहन्न की आग) में झोंक दूँगा।

27. और तुम्हें क्या पता कि 'सक्रर' क्या है?

28-29. वह न तरस खाएगी और न छोड़ेगी, खाल को झुलसा देनेवाली है,

30. उसपर उन्नीस (कार्यकर्ता) नियुक्त हैं।

31. और हमने उस आग पर नियुक्त रहनेवालों को फ़रिश्ते ही बनाया है, और हमने उनकी संख्या को इनकार करनेवालों के लिए मुसीबत और आजमाइश ही बनाकर रखा है। ताकि वे लोग जिन्हें किताब प्रदान की गई थी पूर्ण विश्वास प्राप्त करें, और वे लोग जो ईमान ले आए वे ईमान में और आगे बढ़ जाएँ। और जिन लोगों को किताब प्रदान की गई वे और ईमानवाले किसी

الْمُدَّسِرِ

بِزَكَاةٍ

لَهُ مَالًا مَّمْدُومًا ۖ فَبَيْنَ يَدَيْهِ مُهُودًا ۖ وَمَهْدُوكَ لَهُ  
تَمْهِيدًا ۖ ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۖ كَلَّا ۚ إِنَّهُ  
كَانَ لِأَيَّتِنَا عَنِيدًا ۖ سَاهِقُهُ صَعُودًا ۖ إِنَّهُ  
فُتِّرَ وَقَدَّرَ ۖ فَقِيلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۖ ثُمَّ قِيلَ كَيْفَ  
قَدَّرَ ۖ ثُمَّ نَظَرَ ۖ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۖ ثُمَّ أَدْبَرَ وَ  
اسْتَكْبَرَ ۖ فَفَالَ إِنْ هَذَا إِلَّا يَحْمِرُ يُوْشِرُ ۖ إِنْ  
هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشِيرِ ۖ سَاصِلِينَ سَقَرًا ۖ وَمَا  
أَدْرَاكَ مَا سَقَرُهُ ۖ لَا تُبْقَى وَلَا تُدَّرُ ۖ لَوْ أَحَاطَ  
لِلْبَشِيرِ ۖ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۖ وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ  
النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۖ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا  
فِتْنَةً ۖ لِلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا  
الْكِتَابَ وَيَزِدَّادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا ۖ وَلَا يَرْتَابَ  
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ

سَمِعُوا



संशय में न पड़े, और ताकि जिनके दिलों में रोग है वे और इनकार करनेवाले कहें : “इस वर्णन से अल्लाह का क्या अभिप्राय है?” इस प्रकार अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट कर देता है और जिसे चाहता है संमार्ग प्रदान करता है। और तुम्हारे रब की सेनाओं को स्वयं उसके सिवा कोई नहीं जानता, और यह तो मनुष्य के लिए मात्र एक शिक्षा-सामग्री है।

32-35. कुछ नहीं, साक्षी है चाँद और साक्षी है रात जबकि वह पीठ फेर चुकी, और प्रातःकाल जबकि वह पूर्णरूपेण प्रकाशित हो जाए। निश्चय ही वह भारी (भयंकर) चीज़ों में से एक है,

تَبَيَّنَ الْآيَاتُ  
فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ  
بِهَذَا مَثَلًا ۖ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ ۖ وَ  
يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا  
هُوَ ۚ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْبَشِيرِ ۚ كُلَّا وَالْقُرْ  
آنَ وَاللَّيْلَ إِذَا دُخِرَ ۚ وَالضُّبْحَ إِذَا أُنْفِثَ ۚ إِنَّهَا لَآيَةٌ  
لِّلْكَافِرِ ۚ نَذِيرًا لِلْبَشِيرِ ۚ لِمَن شَاءَ مِنْكُمْ أَن  
يَتَّقِدَّمَ ۚ أَوْ يَتَّخِذَ ۚ كُلُّ نَفْسٍ عَمَّا كَسَبَتْ رَهِينٌ ۚ  
إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۚ فِي جَنَّاتٍ ذِي نَعْمَةٍ ۚ لَّوْنٌ  
الْمُغِيرِمِينَ ۚ مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرِهِ ۚ قَالَُوا لَمْ  
نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ۚ وَلَمْ نَكُ نَطْعُمُ الْمُسْكِينِ ۚ  
وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَاطِرِينَ ۚ وَكُنَّا نُكَذِّبُ  
بِيَوْمِ الدِّينِ ۚ حَتَّى أَتَيْنَا الْيَقِينَ ۚ فَمَا  
تَنْفَعُهُمْ شِقَاقَةُ الشُّوعِينَ ۚ فَمَا لَهُمْ عَيْن  
مَثَلٍ

36. मनुष्य के लिए सावधानकर्ता के रूप में,

37. तुममें से उस व्यक्ति के लिए जो आगे बढ़ना या पीछे हटना चाहे।

38. प्रत्येक व्यक्ति जो कुछ उसने कमाया उसके बदले रहन (गिरवी) है,

39. सिवाय दाएँवालों के।

40-41. वे बागों में होंगे, अपराधियों के विषय में पूछ-ताछ कर रहे होंगे।

42-44. “तुम्हें क्या चीज़ ‘सक्र’ (जहन्नम) में ले आई?” वे कहेंगे : “हम नमाज़ अदा करनेवालों में से न थे। और न हम मुहताज को खाना खिलाते थे।

45-46. और व्यर्थ बात और कठ-हुज्जती में पड़े रहनेवालों के साथ हम भी उसी में लगे रहते थे। और हम बदला दिए जाने के दिन को झुठलाते थे,

47. यहाँ तक कि विश्वसनीय चीज़ (प्रलय-दिवस) ने हमें आ लिया।”

48. अतः सिफ़ारिश करनेवालों की कोई सिफ़ारिश उनको कुछ लाभ न पहुँचा सकेगी।

49. आखिर उन्हें क्या हुआ है कि वे नसीहत से कतराते हैं,



50-51. मानो वे बिदके हुए जंगली गधे हैं जो शेर से (डरकर) भागे हैं ?

52. नहीं, बल्कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे खुली किताबें दी जाएँ।

53. कदापि नहीं, बल्कि वे आखिरत से डरते नहीं।

54. कुछ नहीं, वह तो एक अनुस्मृति है।

55. अब जो कोई चाहे इससे नसीहत हासिल करे,

56. और वे नसीहत हासिल नहीं करेंगे। यह और बात है कि अल्लाह ही ऐसा चाहे। वही इस योग्य है कि उसका डर रखा जाए और इस योग्य भी कि क्षमा करे।

الْقُرْآنِ

تَبَارَكَ الَّذِي

التَّذَكُّرَ مُعْرِضِينَ ۚ كَذَّبْتُمْ حَتَّىٰ مُسْتَفْرَّةً ۚ فَزَرْتُمْ

مِنْ قَسْرَةٍ ۚ بَلْ يَرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ

يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنشَرَةً ۚ كَلَّا بَلْ لَا يَخَافُونَ

الْآخِرَةَ ۚ كَلَّا إِنَّهُ تَذَكُّرٌ ۚ فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ۚ

وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ

وَأَهْلُ الْمَعْوَرَةِ ۚ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا أَقْسِمُ بِبُيُوتِ الْقِيَمَةِ ۚ وَلَا أَقْسِمُ بِاللُّغَمِ

الْوَامَةِ ۚ أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ نَجْمَعَهُ عِظَامَهُ ۚ

بَلَىٰ قَلِيلٌ عَلَىٰ أَنْ تَأْتِيَهُ بَنَاتُهُ ۚ بَلْ يَرِيدُ

الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۚ يَنْتَلِ أَيَّانَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ

فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۚ وَخَفَّ الْقَعَرُ ۚ وَجُمِعَ الشَّعْرُ ۚ

مِلًّا

## 75. अल-क्रियामह

(मक्का में उतरी— आयतें 40)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. नहीं ! मैं क्रसम खाता हूँ क्रियामत के दिन की,
2. और नहीं ! मैं क्रसम खाता हूँ मलामत करनेवाली आत्मा की।
3. क्या मनुष्य यह समझता है कि हम कदापि उसकी हड्डियों को एकत्र न करेंगे ?
4. क्यों नहीं, हम उसकी पोरों को ठीक-ठाक करने की सामर्थ्य रखते हैं।
5. बल्कि मनुष्य चाहता है कि अपने आगे ढिठाई करता रहे।
6. पूछता है : "आखिर क्रियामत का दिन कब आएगा ?"
7. तो जब निगाह चौंधिया जाएगी,
8. और चन्द्रमा को ग्रहण लग जाएगा,
9. और सूर्य और चन्द्रमा इकट्ठे कर दिए जाएँगे,



تَبَارَكَ الَّذِي

الْقُرْآنِ

10. उस दिन मनुष्य कहेगा :  
“कहाँ जाऊँ भागकर ?”

11-12. कुछ नहीं, कोई शरण-  
स्थल नहीं ! उस दिन तुम्हारे रब ही  
की ओर जाकर ठहरना है ।

13. उस दिन मनुष्य को बता  
दिया जाएगा जो कुछ उसने आगे  
बढ़ाया और पीछे टाला ।

14. नहीं, बल्कि मनुष्य स्वयं  
अपने हाल पर निगाह रखता है,

15. यद्यपि उसने अपने कितने  
ही बहाने पेश किए हों ।

16. तू उसे शीघ्र पाने के लिए  
उसके प्रति अपनी ज़बान को न चला ।

17-18. हमारे ज़िम्मे है उसे एकत्र

करना और उसका पढ़ाना, अतः जब हम उसे पढ़ें तो उसके पठन का अनुसरण कर,

19. फिर हमारे ज़िम्मे है उसका स्पष्टीकरण करना ।

20. कुछ नहीं, बल्कि तुम लोग शीघ्र मिलनेवाली चीज़ (दुनिया) से प्रेम रखते हो,

21. और आखिरत को छोड़ रहे हो ।

22-25. कितने ही चेहरे उस दिन तरो ताज़ा और प्रफुल्लित होंगे, अपने रब की  
ओर देख रहे होंगे । और कितने ही चेहरे उस दिन उदास और बिगड़े हुए होंगे,  
समझ रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देनेवाला मामला किया जाएगा ।

26-27. कुछ नहीं, जब प्राण कण्ठ को आ लगेंगे, और कहा जाएगा : “कौन है  
झाड़-फूँक करनेवाला ?”

28. और वह समझ लेगा कि वह जुदाई (का समय) है ।

29. और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी,

30. तुम्हारे रब की ओर उस दिन प्रस्थान होगा ।

31. किन्तु उसने न तो सत्य माना और न नमाज़ अदा की,

32. लेकिन झुठलाया और मुँह मोड़ा,

وَالْقُرْآنَ يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفْزُ ۖ  
كَلَّا لَا وَزَرَ ۖ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۖ  
يُنَبِّئُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۖ بَلِ  
الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۖ وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ۖ  
لَا تُعَذِّبُهُ بِمَا لَسَّكَ لِتُجْزَلَ بِهِ ۖ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ  
وَقُرْآنَهُ ۖ فَإِذَا قَرَأَهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ۖ ثُمَّ إِنَّ  
عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۖ كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۖ وَتَذْذُلُونَ  
الْآخِرَةَ ۖ وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۖ إِلَىٰ رَبِّهَا  
نَاطِرَةٌ ۖ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۖ تَظُنُّ أَنْ  
يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۖ كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ الشَّرَاقِيَ ۖ  
وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ۖ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ۖ وَ  
التَّغَىٰ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۖ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ  
السَّاقُ ۖ فَلَا صَلَاتَ وَلَا صِلَىٰ ۖ وَلَكِنَّ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۖ



33. फिर अकड़ता हुआ अपने लोगों की ओर चल दिया।

34-35. अफ़सोस है तुझपर और अफ़सोस है ! फिर अफ़सोस है तुझपर और अफ़सोस है !

36. क्या मनुष्य समझता है कि वह यूँ ही स्वतंत्र छोड़ दिया जाएगा ?

37. क्या वह केवल टपकाए हुए वीर्य की एक बूँद न था ?

38. फिर वह रक्त की एक फुटकी हुआ, फिर अल्लाह ने उसे रूप दिया और उसके अंग-प्रत्यंग ठीक-ठाक किए।

39. और उसकी दो जातियाँ बनाई—पुरुष और स्त्री।

40. क्या उसे यह सामर्थ्य प्राप्त नहीं कि मुर्दों को जीवित कर दे ?

الْقَوْمِ

تُتْرَكُ الْبَرِّ

ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَقُتِلُ ۚ أُولَٰئِكَ فَآوَىٰ ۖ ثُمَّ أُولَٰئِكَ فَآوَىٰ ۚ أَيْخَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى ۚ  
أَلَمْ يَكُنْ لَكُمْ نُطْفَةٌ مِنْ مِّمْقٍ يُثْنَىٰ ۚ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً  
فَخَلَقَ فَسُوَّىٰ ۚ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۚ أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقْدِرٍ عَلَيَّ أَنْ يُخَيَّرَ الْمَوْتَىٰ ۚ  
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَذْكُورًا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ ۚ أَمْشَاهُ ۚ وَنَبَتَلَيْنَاهُ ۚ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۚ إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ ۚ إِمَّا شَاكِرًا ۚ وَإِمَّا كَفُورًا ۚ إِنَّا آغْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلِيلًا ۚ وَأَغْلَلْنَا وَسَعِيرًا ۚ إِنَّ الْأَنْبَرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۚ عَيْنًا يَفْرُبُ

## 76. अद-दहर

(मक्का में उतरी— आयतें 31)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. क्या मनुष्य पर काल-खण्ड का ऐसा समय भी बीता है कि वह कोई ऐसी चीज़ न था जिसका उल्लेख किया जाता ?

2. हमने मनुष्य को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया, उसे उलटते-पलटते रहे, फिर हमने उसे सुनने और देखनेवाला बना दिया।

3. हमने उसे मार्ग दिखाया, अब चाहे वह कृतज्ञ बने या अकृतज्ञ।

4. हमने इनकार करनेवालों के लिए ज़ंजीरें और तौक और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।

5. निश्चय ही वफ़ादार लोग ऐसे जाम से पिएँगे जिसमें काफ़ूर का मिश्रण होगा,



6. उस स्रोत का क्या कहना !  
जिसपर बैठकर अल्लाह के बन्दे  
पिएँगे, इस तरह कि उसे बहा-  
बहाकर (जहाँ चाहेंगे) ले जाएँगे ।

7. वे नज़र (मन्नत) पूरी करते हैं  
और उस दिन से डरते हैं जिसकी  
आपदा व्यापक होगी,

8. और वे मुहताज, अनाथ और  
क़ैदी को खाना उसकी चाहत रखते  
हुए खिलाते हैं :

9. "हम तो केवल अल्लाह की  
प्रसन्नता के लिए तुम्हें खिलाते हैं,  
तुमसे न कोई बदला चाहते हैं और  
न कृतज्ञता ज्ञापन ।

10. हमें तो अपने रब की ओर  
से एक ऐसे दिन का भय है जो त्योरी पर बल डाले हुए अत्यन्त क्रूर होगा ।"

11. अतः अल्लाह ने उन्हें उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें  
ताज़गी और खुशी प्रदान की,

12. और जो उन्होंने धैर्य से काम लिया, उसके बदले में उन्हें जन्नत और  
रेशमी वस्त्र प्रदान किया ।

13. उसमें वे तख्तों पर टेक लगाए होंगे, वे उसमें न तो सख्त धूप देखेंगे  
और न सख्त ठंड ।

14. और उस (बाग़) के साए उनपर झुके होंगे और उसके फलों के गुच्छे  
बिलकुल उनके वश में होंगे ।

15-16. और उनके पास चाँदी के बरतन गर्दिश में होंगे और प्याले जो  
बिलकुल शीशे हो रहे होंगे, शीशे भी चाँदी के जो ठीक अन्दाज़े करके रखे  
गए होंगे ।

17. और वहाँ वे एक और जाम पिएँगे जिसमें सोंठ का मिश्रण होगा ।

الذّहर

تَبَارَكَ الَّذِي

بِهَآءِ عِبَادِ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۝ يُوقُونَ  
بِالنَّذِيرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ كَثُرُهُ مُسْتَظِيرًا ۝ وَ  
يُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ مَشْكُونًا ۝ وَبَيِّنَاتٍ  
وَّآسِيرًا ۝ إِنَّا نَنْظُرُكُمْ لَوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ  
جَزَاءً وَلَا شُكْرًا ۝ إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا  
عَبُوسًا مُّصْطَرِيرًا ۝ قَوْلُهُمْ اللَّهُ شَرُّ ذَلِكَ الْيَوْمِ  
وَلَقَدْ هَمُّوا نَصْرَةَ وَرُودًا ۝ وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا  
جَنَّةً وَخَزِيرًا ۝ مُتَشَكِّينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ ۝ لَا  
يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ۝ وَدَائِيَةً  
عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا ۝ وَذَلَّلَتْ فَجْوَها تَذَلِيلًا ۝ وَ  
يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِآيِنَةٍ مِنْ فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ  
كَانَتْ قَوَائِمًا ۝ قَوَائِمًا مِنْ فِضَّةٍ قَدَرُوهَا  
تَقْدِيرًا ۝ وَيَسْقُونَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا

سَمَاءٌ

وَيَسْقُونَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا



18. क्या कहना उस स्रोत का जो उसमें होगा, जिसका नाम सल-सबील है।

19. उनकी सेवा में ऐसे किशोर दौड़ते फिर रहे होंगे जो सदैव किशोर ही रहेंगे। जब तुम उन्हें देखोगे तो उन्हें समझोगे कि बिखरे हुए मोती हैं।

20. जब तुम वहाँ देखोगे तो तुम्हें बड़ी नेमत और विशाल राज्य दिखाई देगा।

21. उनके ऊपर हरे बारीक रेशमी वस्त्र और गाढ़े रेशमी कपड़े होंगे, और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उनका रब उन्हें पवित्र पेय पिलाएगा।

الْقُرْآنُ

تَنْزِيلُهُ

نَنْجِيئًا ۖ عَيْنًا فِيهَا تُسْقَىٰ سَلِيلًا ۖ وَ  
يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۖ إِذَا رَأَيْتَهُمْ  
حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ۖ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ  
نَعِيمًا وَمَلَكًا كَافِيًا ۖ عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُدُودٌ  
خَضِرٌ ۖ ذَاتَ بَهْرٍ ۖ وَهُمْ فِيهَا سَالُونَ ۖ وَفَضْلًا  
وَسَقْنًا ۖ رَبُّهُمْ شَرِيبًا ۖ إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَ  
كَانَ سَعْيُكُمْ مُّشْكُورًا ۖ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ  
الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ۖ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ  
مِنْهُمْ إِنَّمَا أَوْكُفُّورًا ۖ وَادْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً  
وَأَصِيلًا ۖ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَاسْتَغْلِ  
لَيْلًا طَوِيلًا ۖ إِنَّ هَؤُلَاءِ يُجِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۖ وَ  
يَذُرُونَ ۖ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَوِيلًا ۖ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ  
وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَلَهُمْ

مِثْلًا

22. "यह है तुम्हारा बदला और तुम्हारा प्रयास कद्र करने के योग्य है।" 1

23. निश्चय ही हमने अत्यन्त व्यवस्थित ढंग से तुमपर कुरआन अवतरित किया है;

24. अतः अपने रब के हुक्म और फ़ैसले के लिए धैर्य से काम लो और उनमें से किसी पापी या कृतघ्न का आज्ञापालन न करना।

25. और प्रातःकाल और संध्या समय अपने रब के नाम का स्मरण करो।

26. और रात के कुछ हिस्से में भी उसे सजदा करो, लम्बी-लम्बी रात तक उसकी तसबीह करते रहो।

27. निस्संदेह ये लोग शीघ्र प्राप्त होनेवाली चीज़ (संसार) से प्रेम रखते हैं और एक भारी दिन को अपने परे छोड़ रहे हैं।

28. हमने उन्हें पैदा किया और उनके जोड़-बन्द मज़बूत किए और हम जब चाहें उन जैसों को पूर्णतः बदल दें।



29. निश्चय ही यह एक अनुस्मृति है, अब जो चाहे अपने रब की ओर मार्ग ग्रहण कर ले।

30. और तुम नहीं चाह सकते सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।

31. वह जिसे चाहता है अपनी दयालुता में दाखिल करता है। रहे ज़ालिम, तो उनके लिए उसने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

## 77. अल-मुरसलात

(मक्का में उतरी—आयतें 50)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. साक्षी हैं वे (हवाएँ) जिनकी चोटी छोड़ दी जाती है।<sup>1</sup>

2-3. फिर ख़ूब तेज़ हो जाती हैं, और (बादलों को) उठाकर फैलाती हैं,

4. फिर मामला करती हैं अलग-अलग,

5-6. फिर पेश करती हैं याददिहानी इल्ज़ाम उतारने या चेतावनी देने के लिए,

7. निस्संदेह जिसका वादा तुमसे किया जा रहा है वह निश्चय ही घटित होकर रहेगा।

8-10. अतः जब तारे विलुप्त (प्रकाशहीन) हो जाएँगे, और जब आकाश फट जाएगा, और जब पहाड़ चूर्ण-विचूर्ण होकर बिखर जाएँगे;

11-12. और जब रसूलों का हाल यह होगा कि उनका समय नियत कर दिया गया होगा—किस दिन के लिए वे टाले गए ह?

1. हवाओं को गवाह के रूप में पेश किया गया है। हवाओं की उपमा छोड़े से और उनके चलने-रुकने की उपमा छोड़े की पेशानी के बाल पकड़ने और छोड़ने से दी गई है।

أَنزَلْنَاهُ

نَزَّلْنَاهُ

تَبَيَّنَلَا ۝ إِنَّ هَٰذَا تَذَكُّرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ

اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۖ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا

أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

يَدْخُلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمِينَ

أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ (٥٠) سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ بِكَتْمَةٍ

وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ۝ فَأَلْصَقْنَ عَضْفًا ۝

وَالنُّثْرَةِ نَشْرًا ۝ فَأَلْفِرْقَتِ فَرْقًا ۝

فَالْمُلْقِيَةِ ذِكْرًا ۝ عِذْرًا أَوْ تُنذِرًا ۝

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٌ ۝ فَإِذَا الْتَجْمَعُ طُيُوسٌ ۝

وَلِذَا السَّمَاءُ فُجِّجَتْ ۝ وَلِذَا الْجِبَالُ نُفِثَتْ ۝

وَلِذَا الزُّبُلُ اقْتَتَتْ ۝ لِأَيِّ يَوْمٍ أُخِّلَتْ ۝

مَنْزِلٌ



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْمُرْسَلَاتِ

13. फ़ैसले के दिन के लिए ।
14. और तुम्हें क्या मालूम कि वह फ़ैसले का दिन क्या है ?—
15. तबाही है उस दिन झुठलाने-वालों की !
16. क्या ऐसा नहीं हुआ कि हमने पहलों को विनष्ट किया ?
17. फिर उन्हीं के पीछे बादवालों को भी लगाते रहे ?
18. अपराधियों के साथ हम ऐसा ही करते हैं ।
19. तबाही है उस दिन झुठलाने-वालों की !
20. क्या ऐसा नहीं है कि हमने तुम्हें तुच्छ जल से पैदा किया,
21. फिर हमने उसे एक सुरक्षित टिकने की जगह में रखा,
22. एक ज्ञात और निश्चित अवधि तक ?
23. फिर हमने अंदाज़ा ठहराया, तो हम क्या ही अच्छा अंदाज़ा ठहरानेवाले हैं ।
24. तबाही है उस दिन झुठलानेवालों की !
- 25-26. क्या ऐसा नहीं है कि हमने धरती को समेट रखनेवाली बनाया, ज़िन्दों को भी और मुर्दों को भी,
27. और उसमें ऊँचे-ऊँचे पहाड़ जमाए और तुम्हें मीठा पानी पिलाया ?
28. तबाही है उस दिन झुठलानेवालों की !
29. चलो उस चीज़ की ओर जिसे तुम झुठलाते रहे हो !
30. चलो तीन शाखाओंवाली छाया की ओर,
31. जिसमें न छाँव है और न वह अग्नि-ज्वाला से बचा सकती है ।
- 32-33. निस्संदेह वे (ज्वालाएँ) महल जैसी (ऊँची) चिंगारियाँ फेंकती हैं मानो

لَيَوْمِ الْقَضَى ۚ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْقَضَى ۚ  
 وَيَلْ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ أَلَمْ نُهَمِّكُمُ الْأَوَّلِينَ ۚ  
 ثُمَّ نُنْفِخُهُمْ الْآخِرِينَ ۚ كَذَلِكَ نَفْعَلُ  
 بِالْجُورِمِينَ ۚ وَيَلْ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ أَلَمْ  
 نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ۚ فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ  
 مَّكِينٍ ۚ إِلَى قَدَرٍ مَعْلُومٍ ۚ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ  
 الْقَدِيرُونَ ۚ وَيَلْ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ أَلَمْ  
 نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۚ أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ۚ  
 وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَاخِصَةً وَأَسْقَيْنَكُم مَّاءً  
 فَرَاتًا ۚ وَيَلْ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ انْطَلِقُوا  
 إِلَى مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۚ انْطَلِقُوا إِلَى  
 ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ۚ لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي  
 مِنَ الْهَبِّ ۚ إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۚ

مَبْنُوعٍ



वे पीले ऊँट हैं !

34. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की !

35. यह सब दिन है कि वे कुछ बोल नहीं रहे हैं,

36. तो कोई उज्र पेश करें, (बात यह है कि) उन्हें बोलने की अनुमति नहीं दी जा रही है ।

37 तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की ।

38. "यह फ़ैसले का दिन है, हमने तुम्हें भी और पहलों को भी इकट्ठा कर दिया ।

39. अब यदि तुम्हारे पास कोई चाल है तो मेरे विरुद्ध चलो ।"

40. तबाही है उस दिन झुठलानेवालों की !

41. निस्संदेह डर रखनेवाले छाँवों और स्रोतों में हैं.

42. और उन फलों के बीच जो वे चाहें ।

43. "खाओ-पियो मज़े से, उन कर्मों के बदले में जो तुम करते रहे हो ।"

44. निश्चय ही उत्तमकारों को हम ऐसा ही बदला देते हैं ।

45. तबाही है उस दिन झुठलानेवालों की !

46. "खा लो और मज़े कर लो थोड़ा-सा, वास्तव में तुम अपराधी हो !"

47. तबाही है उस दिन झुठलानेवालों की !

48. जब उनसे कहा जाता है कि "झुको ! तो नहीं झुकते ।"

49. तबाही है उस दिन झुठलानेवालों की !

50. अब आखिर इसके पश्चात किस वाणी पर वे ईमान लाएँगे ?

الْمُكَذِّبِينَ

الْمُكَذِّبِينَ

كَانَ هَٰذَا يَوْمَ لَا يَنطِقُونَ ۚ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۚ  
وَيَلَّيْكَ يَوْمَئِذٍ الْمُكَذِّبِينَ ۚ هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ  
جَمَعْنَاهُمْ وَاٰلَآئِلَهُمْ ۚ فَاَن كَانَ لَكُم مِّنْ كَيْدٍ  
فَكِيدُوْنَ ۚ وَيَلَّيْكَ يَوْمَئِذٍ الْمُكَذِّبِينَ ۚ اِنَّ  
الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٍّ وَّاعْيُونٍ ۚ وَقَوَآكِهِ يَتَا  
يَسْتَهْوَوْنَ ۚ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيًْٓٔا بِمَا كُنْتُمْ  
تَعْمَلُوْنَ ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۚ  
وَيَلَّيْكَ يَوْمَئِذٍ الْمُكَذِّبِينَ ۚ كُلُوْا وَشَمِعُوْا  
قَلِيْلًا ۚ اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ۚ وَيَلَّيْكَ يَوْمَئِذٍ  
الْمُكَذِّبِينَ ۚ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ ارْكُعُوْا لَا  
يَرْكَعُوْنَ ۚ وَيَلَّيْكَ يَوْمَئِذٍ الْمُكَذِّبِينَ ۚ فَيَايَ  
حَدِيْثٍۭۤ اٰتٰهُ يَوْمَئِذٍ ۚ

سَبَّحْ







25. सिवाय खौलते पानी और बहती पीप-रक्त के ।

26. यह बदले के रूप में उनके कर्मों के ठीक अनुकूल होगा ।

27. वास्तव में वे किसी हिसाब की आशा न रखते थे,

28. और उन्होंने हमारी आयतों को खूब झुठलाया,

29. और हमने हर चीज़ लिखकर गिन रखी है ।

30. “अब चखो मज़ा कि यातना के अतिरिक्त हम तुम्हारे लिए किसी और चीज़ में बढ़ोत्तरी नहीं करेंगे ।”

31. निस्संदेह डर रखनेवालों के लिए एक बड़ी सफलता है,

32. बाग़ हैं और अंगूर,

33. और नवयौवना समान उम्रवाली,

34. और छलकता जाम ।

35. वे उसमें न तो कोई व्यर्थ बात सुनेंगे और न कोई झुठलाने की बात ।

36. यह तुम्हारे रब की ओर से बदला होगा, हिसाब के अनुसार प्रदत्त ।

37. वह आकाशों और धरती का और जो कुछ उनके बीच है सबका “रब” है, अत्यन्त कृपाशील है, उसके सामने बात करना उनके बस में नहीं होगा ।

38. जिस दिन रूह और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध खड़े होंगे, वे बोलेंगे नहीं, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे रहमान अनुमति दे और जो ठीक बात कहे ।

39. वह दिन सत्य है । अब जो कोई चाहे अपने रब की ओर रुजू करे ।

40. हमने तुम्हें निकट आ लगी यातना से सावधान कर दिया है । जिस दिन मनुष्य देख लेगा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा होगा, और इनकार करनेवाला कहेगा : “ऐ काश ! कि मैं मिट्टी होता !”

مَنْ

مَنْ

الْأَجْمِيْنَ اَوْ عَسَاقًا ۚ جَزَاءُ ۙ وَّفَاقًا ۙ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ  
حِسَابًا ۙ وَكَذَّبُوْا بِآيَاتِنَا كِذَابًا ۙ وَكُلَّ شَيْءٍ اَخْصَيْنَاهُ  
كِتٰبًا ۙ فَذُقُوْا اَلْعَذَابَ ۚ نَزِيْدُكُمْ اِلٰلْعَذَابَ ۙ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ  
مَغَازٍ اِلَىٰ حَضٰرَتِنَا ۙ وَغَنَابًا ۙ وَكَوَاعِبَ اَشْرَابًا ۙ وَكَاسًا  
وِهَاقًا ۙ لَا يَصْعَوْنَ فِيْهَا الْعَوْرَاتُ ۙ لَآ كِذْبًا ۙ جَزَاءُ ۙ فَمَنْ رَّبُّكَ عَطَا  
حِسَابًا ۙ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ مَا يَدْرِيْ مَا يَفْعَلُ الرَّحْمٰنُ ۙ لَا يَمْلِكُوْنَ  
مِنْهُ عِطَابًا ۙ يَوْمَ يَقُومُ الزُّبُرُ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَا يَسْكَتُوْنَ  
اِلَّا مَنۢ اِذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ ۙ قَالَ صَوَابًا ۙ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۙ فَمَنْ  
شَآءَ اَتَّخِذْ اِلٰى رَبِّهِ مَآبًا ۙ اِنَّا اَنْزَلْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۙ اِيَوْمَ يَنْظُرُ  
الرُّؤُودُ مَا قَدَّمْتُمْ يَدًا ۙ وَيَقُوْلُ الْكَفِرُ لِلْيَكِيْنِ ۙ كُنْتُ اَشْرَابًا ۙ

مَنْ







और पुकारकर कहा : "मैं तुम्हारा उच्चकोटि का स्वामी हूँ !"

25. अन्ततः अल्लाह ने उसे आखिरत और दुनिया की शिक्षाप्रद यातना में पकड़ लिया ।

26. निस्संदेह इसमें उस व्यक्ति के लिए बड़ी शिक्षा है जो डरे !

27-28. क्या तुम्हें पैदा करना अधिक कठिन कार्य है या आकाश को ? अल्लाह ने उसे बनाया, उसकी ऊँचाई को खूब ऊँचा करके उसे ठीक-ठाक किया;

29. और उसकी रात को अन्धकारमय बनाया और उसका दिवस-प्रकाश प्रकट किया ।

30. और धरती को देखो ! इसके पश्चात उसे फैलाया;

31. उसमें से उसका पानी और उसका चारा निकाला ।

32-33. और पहाड़ों को देखो ! उन्हें उस (धरती) में जमा दिया, तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए जीवन-सामग्री के रूप में ।

34. फिर जब वह महाविपदा आएगी,

35. उस दिन मनुष्य जो कुछ भी उसने प्रयास किया होगा उसे याद करेगा ।

36. और भड़कती आग (जहन्नम) देखनेवाले के लिए खोल दी जाएगी,

37-39. तो जिस किसी ने सरकशी की और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी होगी, तो निस्संदेह भड़कती आग ही उसका ठिकाना है ।

40-41. और रहा वह व्यक्ति जिसने अपने रब के सामने खड़े होने का भय रखा और अपने जी को बुरी इच्छा से रोका, तो जन्नत ही उसका ठिकाना है ।

42. वे तुमसे उस घड़ी के विषय में पूछते हैं कि वह कब आकर ठहरेगी ?

43. उसके बयान करने से तुम्हारा क्या संबंध ?

قُلُوبُهُمْ

عَمَهُمْ

فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَى ۚ فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْأَخْزَى ۚ  
وَالْأُولَى ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَى ۚ  
ءَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ بَنَاهَا ۚ رَفَعَ سَنَاهَا  
فَسَوَّيَهَا ۖ وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضَمْنَهَا ۚ وَالْأَرْضُ بَعْدَ  
ذَلِكَ دَحَاهَا ۚ أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ۚ وَالْجِبَالِ  
أَرْسَاهَا مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۚ فَلَمَّا جَاءَتِ الطَّائِفَةُ  
الْكُذِبَى ۖ يَوْمَ تَذُكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَى ۚ وَتَوَرَّى الْجَحِيمُ  
لَمَن يَرَى ۚ فَنَّا تَأْمَنُ طَغَى ۚ وَأَنزَلْنَا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۚ فَمَن  
الْجَحِيمِ هِيَ الْمَكْوَى ۚ وَأَمَّا مَن خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى  
النَّفْسَ عَنِ الْهَوَى ۚ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَى ۚ يُسَلُّونَكَ  
عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۚ فِيمَا أَنتَ مِن ذِكْرَاهَا ۚ

سَلِّ



44. उसकी अन्तिम पहुँच तो तेरे रब से ही संबंध रखती है।

45. तुम तो बस उस व्यक्ति को सावधान करनेवाले हो जो उससे डरे।

46. जिस दिन वे उसे देखेंगे तो (ऐसा लगेगा) मानो वे (दुनिया में) बस एक शाम या उसकी सुबह ही ठहरे हैं।

### 80. अ-ब-स

(मक्का में उतरी— आयतें 42)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-3. उसने त्थोरी चढ़ाई और

मुँह फेर लिया, इस कारण कि उसके पास अन्धा आ गया। और तुझे क्या मालूम शायद वह स्वयं को सँवारता-निखारता हो।

4. या नसीहत हासिल करता हो तो नसीहत उसके लिए लाभदायक हो ?

5-6. रहा वह व्यक्ति जो धनी हो गया है तू उसके पीछे पड़ा है—

7. हालाँकि वह अपने को न निखारे तो तुझपर कोई ज़िम्मेदारी नहीं आती—

8-10. और रहा वह व्यक्ति जो स्वयं तेरे पास दौड़ता हुआ आया, और वह डरता भी है, तो तू उससे बेपरवाई करता है।

11. कदापि नहीं, वे (आयतें) तो महत्वपूर्ण नसीहत हैं—

12. तो जो चाहे उसे याद कर ले—

13-16. प्रतिष्ठित, उच्च, पवित्र पन्नों में अंकित है, ऐसे कातिबों के हाथों में रहा करते हैं जो प्रतिष्ठित और नेक हैं।

17. विनष्ट हुआ मनुष्य ! कैसा अकृतज्ञ है !

18. उसको किस चीज़ से पैदा किया ?

19. तनिक-सी बूँद से उसको पैदा किया, तो उसके लिए एक अंदाज़ा ठहराया,





20. फिर मार्ग को देखो, उसे सुगम कर दिया,

21. फिर उसे मृत्यु दी और क़ब्र में उसे रखवाया,

22. फिर जब चाहेगा उसे (जीवित करके) उठा खड़ा करेगा।—

23. कदापि नहीं, उसने उसको पूरा नहीं किया जिसका आदेश अल्लाह ने उसे दिया है।

24. अतः मनुष्य को चाहिए कि अपने भोजन को देखे,

25. कि हमने ख़ूब पानी बरसाया,

26. फिर धरती को विशेष रूप से फाड़ा,

27. फिर हमने उसमें उगाए अनाज,

28. और अंगूर और तरकारी,

29. और ज़ैतून और खजूर,

30. और घने बाग़,

31. और मेवे और घास-चारा,

32. तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के लिए जीवन-सामग्री के रूप में।

33. फिर जब वह बहरा कर देनेवाली प्रचण्ड आवाज़ आएगी,

34. जिस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से,

35. और अपनी माँ और अपने बाप से,

36. और अपनी पत्नी और अपने बेटों से।

37. उनमें से प्रत्येक व्यक्ति को उस दिन ऐसी पड़ी होगी जो उसे दूसरों से बेपरवाह कर देगी।

38-39. कितने ही चेहरे उस दिन रौशन होंगे, हैंसते, प्रफुल्लित।





40. और कितने ही चेहरे होंगे  
जिनपर उस दिन धूल पड़ी होगी,  
41. उनपर कलौस छा रही होगी ।  
42. वही होंगे इनकार करनेवाले,  
दुराचारी लोग !

## 81. अत-तकवीर

(मक्का में उतरी—आयतें 29)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. जब सूर्य लपेट दिया जाएगा<sup>1</sup>,
2. जब तारे मैले हो जाएँगे,
3. जब पहाड़ चलाए जाएँगे,
4. जब दस मास की गाभिन ऊँटनियाँ आज़ाद छोड़ दी जाएँगी,
5. जब जंगली जानवर एकत्र किए जाएँगे,
6. जब समुद्र भड़का दिए जाएँगे,
7. जब लोग किस्म-किस्म कर दिए जाएँगे,
8. और जब जीवित गाड़ी गई लड़की से पूछा जाएगा
9. कि उसकी हत्या किस गुनाह के कारण की गई,
10. और जब कर्म-पत्र फैला दिए जाएँगे,
11. और जब आकाश की खाल उतार दी जाएगी<sup>2</sup>,
12. जब जहन्नम को दहकाया जाएगा,
- 13-14. और जब जन्नत निकट कर दी जाएगी, तो कोई भी व्यक्ति जान लेगा  
कि उसने क्या उपस्थित किया है ।



1. अर्थात्, उसकी धूप और उसके प्रकाश आदि सिमटकर रह जाएँगे ।

2. अर्थात् आकाश पूर्णतः रक्तिम या लाल हो जाएगा ।



15. अतः नहीं ! मैं कसम खाता हूँ पीछे हटनेवालों की,

16. चलनेवालों, छिपने-दुबकने-वालों की ।<sup>1</sup>

17. साक्षी है रात्रि जब वह प्रस्थान करे,

18. और साक्षी है प्रातः जब वह साँस ले ।

19. निश्चय ही वह एक आदरणीय संदेशवाहक की लाई हुई वाणी है,

20. जो शक्तिवाला है, सिंहासनवाले के यहाँ जिसकी पैठ है ।

21. उसका आदेश माना जाता है, वहाँ वह विश्वासपात्र है ।<sup>2</sup>

22. तुम्हारा साथी कोई दीवाना नहीं,

23. उसने तो (पराकाष्ठा के) प्रत्यक्ष क्षितिज पर होकर उस (फ़रिश्ते) को देखा है ।

24. और वह परोक्ष के मामले में कृपण नहीं है,

25. और वह (कुरआन) किसी धुतकारे हुए शैतान की लाई हुई वाणी नहीं है ।

26. फिर तुम किधर जा रहे हो ?

27. वह तो सारे संसार के लिए बस एक अनुस्मृति है,

28. उसके लिए जो तुममें से सीधे मार्ग पर चलना चाहे ।

29. और तुम नहीं चाह सकते सिवाय इसके कि सारे जहान का रब अल्लाह चाहे ।<sup>3</sup>



1. संकेत कुछ नक्षत्रों की ओर है ।

2. ये गुण अल्लाह के विशिष्ट फ़रिश्ते हज़रत जिबरील (अलै०) के बयान हुए हैं । जो नबी (सल्ल०) के पास अल्लाह का संदेश लाते थे ।

3. अर्थात् तुम सत्यमार्ग पर चलना नहीं चाहते, चाहते हो कि अल्लाह ही राह पर चलाए ।



## 82. अल-इनफ़ितार

(मक्का में उतरी—आयतें 19)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. जबकि आकाश फट जाएगा,
2. और जबकि तारे बिखर जाएँगे,
3. और जबकि समुद्र बह पड़ेंगे,
4. और जबकि क़ब्रें उखेड़ दी जाएँगी।

5. तब हर व्यक्ति जान लेगा  
जिसे उसने प्राथमिकता दी और  
पीछे डाला।

6. ऐ मनुष्य ! किस चीज़ ने तुझे अपने उदार प्रभु के विषय में धोखे में  
डाल रखा है ?

7. जिसने तेरा प्रारूप बनाया, फिर नख-शिख से तुझे दुरुस्त किया और  
तुझे संतुलन प्रदान किया।

8. जिस रूप में चाहा उसने तुझे जोड़कर तैयार किया।

9. कुछ नहीं, बल्कि तुम बदला दिए जाने को झुठलाते हो।

10. जबकि तुमपर निगरानी करनेवाले नियुक्त हैं,

11. प्रतिष्ठित लिपिक,

12. वे जान रहे होते हैं जो कुछ भी तुम करते हो।<sup>1</sup>

13. निस्संदेह वफ़ादार लोग नेमतों में होंगे।

14. और निश्चय ही दुराचारी भड़कती हुई आग में,



1. अर्थात् वे कोई ऐसी मशीन नहीं हैं जो रिकार्ड तो कर ले, परन्तु उसे यह खबर न हो कि उसने क्या रिकार्ड किया। फ़रिश्तों को तुम्हारे बुरे-भले सभी कर्मों की खबर होती है, इसलिए उनसे शर्म करनी चाहिए।







10. तबाही है उस दिन झुठलाने-  
वालों की,

11. जो बदले के दिन को  
झुठलाते हैं।

12. और उसे तो बस प्रत्येक वह  
व्यक्ति ही झुठलाता है जो सीमा का  
उल्लंघन करनेवाला, पापी है।

13. जब हमारी आयतें उसे  
सुनाई जाती हैं तो कहता है : “ये तो  
पहलों की कहानियाँ हैं।”

14. कुछ नहीं, बल्कि जो कुछ वे  
कमाते रहे हैं वह उनके दिलों पर चढ़ गया है।

15. कुछ नहीं, अवश्य ही वे उस दिन अपने रब से ओट में होंगे,

16. फिर वे भड़कती आग में जा पड़ेंगे।

17. फिर कहा जाएगा : “यह वही है जिसे तुम झुठलाते थे।”

18. कुछ नहीं, निस्संदेह वफ़ादार लोगों का कागज़ ‘इल्लीयीन’ (उच्च  
श्रेणी के लोगों) में है।<sup>1</sup>—

19. और तुम क्या जानो कि ‘इल्लीयीन’ क्या है?—

20. लिखा हुआ रजिस्टर।

21. जिसे देखने के लिए सामीप्य प्राप्त लोग उपस्थित होंगे,

22. निस्संदेह अच्छे लोग नेमतों में होंगे,

23. ऊँची मसनदों पर से देख रहे होंगे।

24. उनके चेहरों से तुम्हें नेमतों की ताज़गी और आभा का बोध हो रहा होगा,



1. अर्थात् उच्च श्रेणी के लोगों में उनका सम्मिलित होना निश्चित हो चुका है।



25. उन्हें मुहरबंद विशुद्ध पेय पिलाया जाएगा,

26. मुहर उसकी मुश्क की होगी  
—जो लोग दूसरों पर बाज़ी ले जाना चाहते हों वे इस चीज़ को प्राप्त करने में बाज़ी ले जाने का प्रयास करें—

27. और उसमें 'तसनीम' का मिश्रण होगा,

28. हाल यह है कि वह एक स्रोत है, जिसपर बैठकर सामीप्य प्राप्त लोग पिँएँगे।

29. जो अपराधी हैं वे ईमान लानेवालों पर हँसते थे,

30. और जब उनके पास से गुज़रते तो आपस में आँखों और भौंहों से इशारे करते थे,

31. और जब अपने लोगों की ओर पलटते तो चहकते, इतराते हुए पलटते थे,

32. और जब उन्हें देखते तो कहते : “ये तो भटके हुए हैं।”

33. हालाँकि वे उनपर कोई निगरानी करनेवाले बनाकर नहीं भेजे गए थे।

34. तो आज ईमान लानेवाले, इनकार करनेवालों पर हँस रहे हैं,

35. ऊँची मसनदों पर से देख रहे हैं।

36. क्या मिल गया बदला इनकार करनेवालों को उसका जो कुछ वे करते रहे हैं?



## 84. अल-इनाशिकाक़

(मक्का में उतरी— आयतें 25)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. जबकि आकाश फट जाएगा,

2. और वह अपने रब की सुनेगा<sup>1</sup>, और उसे यही चाहिए भी।

1. अर्थात् अपने रब के आदेश का पालन करेगा।



3. जब धरती फैला दी जाएगी,  
4. और जो कुछ उसके भीतर है  
उसे बाहर डालकर खाली हो  
जाएगी,

5. और वह अपने रब की सुनेगी,  
और उसे यही चाहिए भी ।

6. ऐ मनुष्य ! तू मशक्कत करता  
हुआ अपने रब ही की ओर खिँचा  
चला जा रहा है और अन्ततः उससे  
मिलनेवाला है ।

الْإِنشَاقِ  
مَعْمُومٌ  
الْأَرْضُ مُدَّتْ ۖ وَالْقَتْ مَا فِيهَا وَتَحَلَّتْ ۖ وَادْنَتْ  
لِرَبِّهَا وَحَقَّتْ ۖ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِمٌ إِلَىٰ رَبِّكَ  
كَذَّ حَافِلٌ قِيَوْمَهُ ۖ فَأَمَّا مَنْ أُوْفَىٰ كِتَابُهُ بِمِيزَانِهِ ۖ  
فَسَوْفَ يَحَاسِبُ حَسَابًا يَسِيرًا ۖ وَيُنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ  
مُسْرِعًا ۖ وَأَمَّا مَنْ أُوْفَىٰ كِتَابُهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۖ فَسَوْفَ  
يَدْعُوا ثُبُورًا ۖ وَيَصْطَلِي سَعِيرًا ۖ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ  
مُسْرِعًا ۖ إِنَّهُ ظَنَّ أَن لَّنْ يَحُورَ ۖ بَلَىٰ ۖ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ  
بِهِ بَصِيرًا ۖ فَلَا أُقِيمُ بِالشَّقِيقِ ۖ وَالنَّيْلِ وَمَا  
مَعَهُ

7. फिर जिस किसी को उसका  
कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया,  
8. तो उससे आसान, सरसरी हिसाब लिया जाएगा ।  
9. और वह अपने लोगों की ओर खुश-खुश पलटेगा ।  
10. और रहा वह व्यक्ति जिसका कर्म-पत्र (उसके बाएँ हाथ में) उसकी  
पीठ के पीछे से दिया गया,  
11. तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा,  
12. और दहकती आग में जा पड़ेगा ।  
13. वह अपने लोगों में मग्न था,  
14. उसने यह समझ रखा था कि उसे कभी पलटना नहीं है ।  
15. क्यों नहीं, निश्चय ही उसका रब तो उसे देख रहा था !  
16. अतः कुछ नहीं, मैं क्रसम खाता हूँ सांध्य-लालिमा की,  
17. और रात की और उसके समेट लेने की,



18. और चन्द्रमा की जबकि वह पूर्ण हो जाता है,

19. निश्चय ही तुम्हें मंज़िल पर मंज़िल चढ़ना है।

20. फिर उन्हें क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते ?

21. और जब उन्हें कुरआन पढ़कर सुनाया जाता है तो सजदे में नहीं गिर पड़ते ?

22. नहीं, बल्कि इनकार करनेवाले तो झुठलाते हैं,

23. हालाँकि जो कुछ वे अपने अन्दर एकत्र कर रहे हैं, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

24. अतः उन्हें दुखद यातना की मंगल सूचना दे दो।

25. अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए कभी न समाप्त होनेवाला प्रतिदान है।



## 85. अल-बुरूज

(मक्का में उतरी—आयतें 22)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. साक्षी है बुर्जोवाला आकाश,
2. और वह दिन जिसका वादा किया गया है,
3. और देखनेवाला और जो देखा गया।
4. विनष्ट हों खाईवाले,
5. ईधन भरी आगवाले,
6. जबकि वे वहाँ बैठे होंगे।
7. और वे जो कुछ ईमानवालों के साथ करते रहे, उसे देखेंगे।



8. उन्होंने उन (ईमानवालों) से केवल इस कारण बदला लिया और शत्रुता की कि वे उस अल्लाह पर ईमान रखते थे जो अत्यन्त प्रभुत्वशाली, प्रशंसनीय है,

9. जिसके लिए आकाशों और धरती की बादशाही है। और अल्लाह हर चीज़ का साक्षी है।

10. जिन लोगों ने ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को सताया और आज्रमाइश में डाला, फिर तौबा न की, निश्चय ही उनके लिए जहन्नम की यातना है और उनके लिए जलने की यातना है।

11. निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वही है बड़ी सफलता।

12. वास्तव में तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी ही सख्त है।

13. वही आरम्भ करता है और वही पुनरावृत्ति करता है,

14. वह बड़ा क्षमाशील, बहुत प्रेम करनेवाला है,

15. सिंहासन का स्वामी है, बड़ा गौरवशाली,

16. जो चाहे उसे कर डालनेवाला।

17. क्या तुम्हें उन सेनाओं की भी खबर पहुँची है :

18. फ़िरऔन और समूद की ?

19. नहीं, बल्कि जिन लोगों ने इनकार किया है, वे झुठलाने में लगे हुए हैं;

20. हालाँकि अल्लाह उन्हें घेरे हुए है, उनके आगे-पीछे से।

21. नहीं, बल्कि वह तो गौरवशाली कुरआन है,

22. सुरक्षित पट्टिका में अंकित है।





## 86. अत-तारिक़

(मक्का में उतरी— आयतें 17)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. साक्षी है आकाश, और रात  
में प्रकट होनेवाला—

2. और तुम क्या जानो कि रात  
में प्रकट होनेवाला क्या है ?

3. दमकता हुआ तारा !—

4. कि हर एक व्यक्ति पर एक  
निगरानी करनेवाला नियुक्त है।

5. अतः मनुष्य को चाहिए कि देखे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया  
है।

6. एक उछलते पानी से पैदा किया गया है,

7. जो पीठ और पसलियों के मध्य से निकलता है।

8. निश्चय ही वह उसके लौटा देने की सामर्थ्य रखता है।

9. जिस दिन छिपी चीज़ें परखी जाएँगी,

10. तो उस समय उसके पास न तो अपनी कोई शक्ति होगी और न कोई  
सहायक।

11. साक्षी है आवर्तन (उलट-फेर) वाला आकाश<sup>1</sup>,

12. और फट जानेवाली धरती।

13. वह दो-टूक बात है,

14. वह कोई हँसी-मज़ाक़ नहीं है।

15. वे एक चाल चल रहे हैं,





16. और मैं भी एक चाल चल रहा हूँ ।

17. अतः मुहलत दे दो उन इनकार करनेवालों को; मुहलत दे दो उन्हें थोड़ी-सी ।

## 87. अल-आला

(मक्का में उतरी— आयतें 19)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. तसबीह करो अपने सर्वोच्च रब के नाम की,

2. जिसने पैदा किया, फिर ठीक-ठाक किया,

3. जिसने निर्धारित किया, फिर मार्ग दिखाया,

4. जिसने वनस्पति उगाई,

5. फिर उसे खूब घना और हरा-भरा कर दिया ।

6. हम तुम्हें पढ़ा देंगे, फिर तुम भूलोगे नहीं ।

7. बात यह है कि अल्लाह की इच्छा ही क्रियान्वित है । निश्चय ही वह जानता है खुले को भी और उसे भी जो छिपा रहे ।

8. हम तुम्हें सहज ढंग से उस चीज़ का पात्र बना देंगे जो सहज एवं मृदुल (आरामदायक) है ।

9. अतः तुम नसीहत करो, यदि नसीहत लाभप्रद हो !

10. नसीहत हासिल कर लेगा जिसको डर होगा,

11. किन्तु उससे कतराएगा वह अत्यन्त दुर्भाग्यवाला,

12-13. जो बड़ी आग में पड़ेगा, फिर वह उसमें न मरेगा न जिएगा ।

14. सफल हो गया वह जिसने अपने आपको निखार लिया,

15. और अपने रब के नाम का स्मरण किया, अतः नमाज़ अदा की ।

16. नहीं, बल्कि तुम तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो,





17. हालाँकि आखिरत अधिक उत्तम और शेष रहनेवाली है।

18. निस्संदेह यही बात पहले की किताबों में भी है :

19. इबराहीम और मूसा की किताबों में।

## 88. अल-ग़ाशियह

(मक्का में उतरी—आयतें 26)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. क्या तुम्हें उस छा जानेवाली की खबर पहुँची है ?

2. उस दिन कितने ही चेहरे गिरे हुए होंगे,

3. कठिन परिश्रम में पड़े, थके-हारे,

4. दहकती आग में प्रवेश करेंगे।

5. खौलते हुए स्रोत से पिएँगे,

6. उनके लिए कोई खाना न होगा सिवाय एक प्रकार के ज़री<sup>1</sup> के,

7. जो न पुष्ट करे और न भूख मिटाए।

8. उस दिन कितने ही चेहरे प्रफुल्लित और सौम्य होंगे,

9. अपने प्रयास पर प्रसन्न,

10. उच्च जन्नत में,

11. जिसमें कोई व्यर्थ बात न सुनेंगे।

12. उसमें स्रोत प्रवाहित होगा,

13. उसमें ऊँची-ऊँची मसनदें होंगी,



1. एक प्रकार का ज़हरीला कांटेदार झाड़।



14. प्याले ढंग से रखे होंगे,  
15. क्रम से गाव तकिए लगे होंगे,  
16. और हर ओर क़ालीने बिछी होंगी ।

17. फिर क्या वे ऊँट की ओर नहीं देखते कि कैसा बनाया गया ?

18. और आकाश की ओर कि कैसा ऊँचा किया गया ?

19. और पहाड़ों की ओर कि कैसे खड़े किए गए ?

20. और धरती की ओर कि कैसी बिछाई गई ?

21. अच्छा तो नसीहत करो ! तुम तो बस एक नसीहत करनेवाले हो ।

22. तुम उनपर कोई दरोगा नहीं हो ।

23. किन्तु जिस किसी ने मुँह फेरा और इनकार किया,

24. तो अल्लाह उसे बड़ी यातना देगा ।

25. निस्संदेह हमारी ओर ही है उनका लौटना,

26. फिर हमारे ही ज़िम्मे है उनका हिसाब लेना ।

## 89. अल-फ़ज्र

(मक्का में उतरी— आयतें 30)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

- 1-2. साक्षी है उषाकाल, साक्षी है दस रातें,  
3. साक्षी है युग्म और अयुग्म<sup>1</sup>,  
4. साक्षी है रात जब वह विदा हो रही हो ।





5. क्या इसमें बुद्धिमान के लिए बड़ी गवाही है ?

6. क्या तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे रब ने क्या किया आद के साथ,

7. स्तम्भोंवाले 'इरम' के साथ ?

8. वे ऐसे थे जिनके सदृश बस्तियों में पैदा नहीं हुए ।

9. और समुद्र के साथ, जिन्होंने घाटी में चट्टानें तराशी थी,

10. और मेखोंवाले फ़िरऔन के साथ ?

11. वे लोग कि जिन्होंने देशों में सरकशी की,

12. और उनमें बहुत बिगाड़ पैदा किया ।

13. अंततः तुम्हारे रब ने उनपर यातना का कोड़ा बरसा दिया ।

14. निस्संदेह तुम्हारा रब घात में रहता है ।

15. किन्तु मनुष्य का हाल यह है कि जब उसका रब इस प्रकार उसकी परीक्षा करता है कि उसे प्रतिष्ठा और नेमत प्रदान करता है, तो वह कहता है : "मेरे रब ने मुझे प्रतिष्ठित किया ।"

16. किन्तु जब कभी वह उसकी परीक्षा इस प्रकार करता है कि उसकी रोज़ी नपी-तुली कर देता है, तो वह कहता है : "मेरे रब ने मेरा अपमान किया ।"

17. कदापि नहीं, बल्कि तुम अनाथ का सम्मान नहीं करते,

18. और न मुहताज को खिलाने पर एक-दूसरे को उभारते हो,

19. और सारी मीरास समेटकर खा जाते हो,

20. और धन से उत्कट प्रेम रखते हो ।

21. कुछ नहीं, जब धरती कूट-कूटकर चूर्ण-विचूर्ण कर दी जाएगी,

22. और तुम्हारा रब और फ़रिश्ता (बन्दों की) एक-एक पंक्ति के पास आएगा,

يَسِّرْ هَلْ فِي ذَلِكَ ثَمَمٌ لِّذِي حَجَرٍ ۚ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ  
فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۚ إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۚ الَّتِي لَمْ يَخْلُقْ  
مِثْلَهَا فِي الْعَالَمِ ۚ وَشُؤدَّ الَّذِينَ جَاءُوا الصَّخِرَ بِالْوَإِدِ ۚ  
وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۚ الَّذِينَ طَعَوْا فِي الْعَالَمِ ۚ  
فَاكْثُرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۚ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ  
عَذَابٍ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۚ فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا  
مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۚ  
وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي  
أَهَانَنِ ۚ كَلَّا بَلْ لَا تَكْرُمُونَ الْيَتِيمَ ۚ وَلَا تَحْضُونَ  
عَلَى طَعَامِ الْيَتِيمِ ۚ وَتَأْكُلُونَ الثَّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ۚ  
وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۚ كَلَّا إِذَا دُكِّي الْأَرْضُ دُكًّا  
دُكَّتْ ۚ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۚ وَجِئَتْ يَوْمَئِذٍ



23. और जहन्नम को उस दिन लाया जाएगा, उस दिन मनुष्य चेतनेगा, किन्तु कहाँ है उसके लिए लाभप्रद उस समय का चेतना ?

24. वह कहेगा : "ऐ काश ! मैंने अपने जीवन के लिए कुछ करके आगे भेजा होता ।"

25. फिर उस दिन कोई नहीं जो उसकी जैसी यातना दे,

26. और कोई नहीं जो उसकी जकड़बन्द की तरह बाँधे ।

27-28. "ऐ संतुष्टात्मा ! लौट अपने रब की ओर, इस तरह कि तू उससे राज़ी है वह तुझसे राज़ी है ।

29. अतः मेरे बन्दों में सम्मिलित हो जा ।

30. और प्रवेश कर मेरी जन्नत में ।"

## 90. अल-बलद

(मक्का में उतरी— आयतें 20)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. सुनो ! मैं क्रसम खाता हूँ इस नगर (मक्का) की—
2. हाल यह है कि तुम इसी नगर में रह रहे हो—
3. और बाप और उसकी संतान की,
4. निस्संदेह हमने मनुष्य को पूर्ण अनुकूलता और संतुलन के साथ पैदा किया ।<sup>1</sup>
5. क्या वह समझता है कि उसपर किसी का बस न चलेगा ?
6. कहता है कि "मैंने ढेरों माल उड़ा दिया ।"



1. इसका यह अर्थ भी है : "निश्चय ही हमने मनुष्य को मशक्कत में पैदा किया ।"



7. क्या वह समझता है कि किसी ने उसे देखा नहीं ?

8. क्या हमने उसे नहीं दीं दो आँखें,

9. और एक ज़बान और दो होंठ ?

10. और क्या ऐसा नहीं है कि हमने दिखाई उसे दो ऊँचाइयाँ ?

11. किन्तु वह तो हुमककर घाटी में से गुज़रा ही नहीं (और न उसने मुक्ति का मार्ग पाया) ।

12. और तुम्हें क्या मालूम कि वह घाटी क्या है !

13. किसी गरदन का छुड़ाना<sup>1</sup>

14. या भूख के दिन खाना खिलाना

15. किसी निकटवर्ती अनाथ को,

16. या धूल-धूसरित मुहताज को;

17. फिर यह कि वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाए और जिन्होंने एक-दूसरे को धैर्य की ताकीद की, और एक-दूसरे को दया की ताकीद की ।

18. वही लोग हैं सौभाग्यशाली ।

19. रहे वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया, वे दुर्भाग्यशाली लोग हैं ।

20. उनपर आग होगी, जिसे बंद कर दिया गया होगा ।

لَبَدًا ۖ أَيْحَسِبُ أَنْ لَمْ يَرَهُ أَحَدٌ ۚ أَلَمْ نَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ۚ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۚ وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۚ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۚ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۚ فَكُلْ رَقَبَةً ۚ أَوْ اطْعَمْ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۚ يَتَّبِعُنَا ذَامِعَرَبَةٍ ۚ ذَا مَعْرَبَةٍ ۚ ذَا مَعْرَبَةٍ ۚ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالضَّيْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَأْتِيَنَا هُمْ أَصْحَابُ الشِّمَاقَةِ ۚ عَلَيْهِمْ نَارُ مُؤَصَّدَةٍ ۚ

مَثَل



## 91. अश-शम्स

(मक्का में उतरी— आयतें 15)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. साक्षी है सूर्य और उसकी प्रभा,
2. और चन्द्रमा, जबकि वह उसके पीछे आए,

3. और दिन, जबकि वह उसे प्रकट कर दे,

4. और रात, जबकि वह उसको ढाँक ले।

5. और आकाश और जैसा कुछ उसे उठाया,

6. और धरती और जैसा कुछ उसे बिछाया।

7. और आत्मा और जैसा कुछ उसे सँवारा।

8. फिर उसके दिल में डाली उसकी बुराई और उसकी परहेज़गारी।

9. सफल हो गया जिसने उसे<sup>1</sup> विकसित किया।

10. और असफल हुआ जिसने उसे दबा दिया।

11. समूद ने अपनी सरकशी से झुठलाया,

12. जब उनमें का<sup>2</sup> सबसे बड़ा दुर्भाग्यशाली उठ खड़ा हुआ,

13. तो अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा : “सावधान, अल्लाह की ऊँटनी और उसके पिलाने (की बारी) से।”

14. किन्तु उन्होंने उसे झुठलाया और उस ऊँटनी की कूचें काट डालीं।



1. अर्थात् अपनी आत्मा और व्यक्तित्व को।

2. अर्थात् समूद कौम के लोगों का।



अन्ततः उनके रब ने उनके गुनाह के कारण उनपर तबाही डाल दी और उन्हें बराबर कर दिया।

15. और उसे उसके परिणाम का कोई भय नहीं।

## 92. अल-लैल

(मक्का में उतरी— आयतें 21)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. साक्षी है रात जबकि वह छा जाए,

2. और दिन जबकि वह प्रकाशमान हो,

3. और नर और मादा का पैदा करना,

4. कि तुम्हारा प्रयास भिन्न-भिन्न है।

5. तो जिस किसी ने दिया और डर रखा,

6. और अच्छी चीज़ की पुष्टि की,

7. हम उसे सहज ढंग से उस चीज़ का पात्र बना देंगे, जो सहज और मृदुल (सुख-साध्य) है।

8. रहा वह व्यक्ति जिसने कंजूसी की और बेपरवाही बरती,

9. और अच्छी चीज़ को झुठला दिया,

10. हम उसे सहज ढंग से उस चीज़ का पात्र बना देंगे, जो कठिन चीज़ (कष्ट-साध्य) है।

11. और उसका माल उसके कुछ काम न आएगा, जब वह (सिर के बल) खड्ड में गिरेगा।

12. निस्संदेह हमारे ज़िम्मे है मार्ग दिखाना।

13. और वास्तव में हमारे ही अधिकार में है आखिरत और दुनिया भी।





14. अतः मैंने तुम्हें दहकती आग से सावधान कर दिया ।

15. इसमें बस वही पड़ेगा जो बड़ा ही अभागा होगा,

16. जिसने झुठलाया और मुँह फेरा ।

17. और उससे बच जाएगा वह अत्यन्त परहेज़गार व्यक्ति,

18. जो अपना माल देकर अपने आपको निखारता है ।

19. और हाल यह है कि किसी का उसपर उपकार नहीं कि उसका बदला दिया जा रहा हो,

20. बल्कि इससे अभीष्ट केवल उसके अपने उच्च रब के मुख (प्रसन्नता) की चाह है ।

21. और वह शीघ्र ही राज़ी हो जाएगा ।



## 93. अज़-ज़ुहा

(मक्का में उतरी— आयतें 11)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. साक्षी है चढ़ता दिन,

2. और रात जबकि उसका सन्नाटा छ जाए ।

3. तुम्हारे रब ने तुम्हें न तो विदा किया<sup>1</sup> और न वह बेज़ार (अप्रसन्न) हुआ ।

4. और निश्चय ही बाद में आनेवाली (अवधि) तुम्हारे लिए पहलेवाली से उत्तम है ।

5. और शीघ्र ही तुम्हारा रब तुम्हें प्रदान करेगा कि तुम प्रसन्न हो जाओगे ।

1. अर्थात् उसने तुम्हें छोड़ा नहीं और तुमसे अपना संबंध तोड़ा नहीं ।



6. क्या ऐसा नहीं कि उसने तुम्हें अनाथ पाया तो ठिकाना दिया ?

7. और तुम्हें मार्ग से अपरिचित पाया तो मार्ग दिखाया ?

8. और तुम्हें निर्धन पाया तो समृद्ध कर दिया ?

9. अतः जो अनाथ हो उसे मत दबाना,

10. और जो माँगता हो उसे न झिड़कना,

11. और जो तुम्हारे रब की अनुकम्पा है, उसे बयान करते रहो ।



## 94. अल-इनशिराह

(मक्का में उतरी— आयतें 8)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. क्या ऐसा नहीं कि हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए खोल दिया ?
2. और तुमपर से तुम्हारा बोझ उतार दिया,
3. जो तुम्हारी कमर तोड़े डाल रहा था ?
4. और तुम्हारे लिए तुम्हारे ज़िक्र को ऊँचा कर दिया ?<sup>1</sup>
5. अतः निश्चय ही कठिनाई के साथ आसानी भी है ।
6. निस्संदेह कठिनाई के साथ आसानी भी है ।
7. अतः जब निवृत्त हो तो परिश्रम में लग जाओ,
8. और अपने रब से लौ लगाओ ।

1. अर्थात् तुम्हें नेकनामी और ख्याति प्रदान की ।



## 95. अत-तीन

(मक्का में उतरी—आयतें 8)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. साक्षी हैं तीन और ज़ैतून और तूर सीनीन<sup>1</sup>,

3. और यह शांतिपूर्ण भूमि (मक्का)<sup>2</sup>

4. निस्संदेह हमने मनुष्य को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया।

5. फिर हमने उसे निकृष्टतम दशा की ओर लौटा दिया, जबकि वह स्वयं गिरनेवाला बना।

6. सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे कर्म किए, तो उनके लिए कभी न समाप्त होनेवाला बदला है।

7. अब इसके बाद क्या है, जो बदले के विषय में तुम्हें झुठलाए?<sup>3</sup>

8. क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है?<sup>4</sup>



1. ये तीनों पहाड़ों के नाम हैं, जहाँ अल्लाह ने क्रौमों के बारे में महत्वपूर्ण फैसले किए।
2. यहाँ, जिन स्थानों को गवाह बनाया गया है उनका संबंध इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं से है, जिनके द्वारा अल्लाह ने एक क्रौम को नेतृत्व-पद से च्युत करके दूसरी क्रौम को उस पर आसीन किया। इसलिए पुरस्कार और दण्ड के बारे में किसी संदेह में कदापि नहीं पड़ना चाहिए।
3. इसका यह अर्थ भी लिया गया है : "अब इसके पश्चात क्या है, जो तुझे बदले के झुठलाने पर उभार रही है।"
4. अर्थात् अल्लाह से भी बढ़कर कोई फैसला करनेवाला है ?



## 96. अल-अलक़

(मक्का में उतरी—आयतें 19)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. पढ़ो, अपने रब के नाम के  
साथ जिसने पैदा किया,

2. पैदा किया मनुष्य को जमे  
हुए खून के एक लोथड़े से।

3. पढ़ो, हाल यह है कि तुम्हारा  
रब बड़ा ही उदार है,

4. जिसने क़लम के द्वारा शिक्षा  
दी,

5. मनुष्य को वह ज्ञान प्रदान किया जिसे वह न जानता था।

6. कदापि नहीं, मनुष्य सरकशी करता है,

7. इसलिए कि वह अपने आपको आत्मनिर्भर देखता है।

8. निश्चय ही तुम्हारे रब ही की ओर पलटना है।

9-10. क्या तुमने देखा उस व्यक्ति को जो एक बन्दे को रोकता है, जब वह नमाज़  
अदा करता है?—

11. तुम्हारा क्या विचार है? यदि वह सीधे मार्ग पर हो,

12. या परहेज़गारी का हुक्म दे (उसके अच्छा होने में क्या संदेह है)।

13. तुम्हारा क्या विचार है? यदि उस (रोकनेवाले) ने झुठलाया और मुँह  
मोड़ा (तो उसके बुरा होने में क्या संदेह है)।—

14. क्या उसने नहीं जाना कि अल्लाह देख रहा है?

15. कदापि नहीं, यदि वह बाज़ न आया तो हम चोटी पकड़कर घसीटेंगे,

16. झूठी, खताकार चोटी।

17. अब बुला ले वह अपनी मजलिस को!





18. हम भी बुलाए लेते हैं सिपाहियों को ।

19. कदापि नहीं, उसकी बात न मानो और सजदे करते और करीब होते रहो ।

## 97. अल-क्रद्र

(मक्का में उतरी— आयतें 5)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. हमने इसे<sup>1</sup> क्रद्र की रात<sup>2</sup> में अवतरित किया ।

2. और तुम्हें क्या मालूम कि क्रद्र की रात क्या है ?

3. क्रद्र की रात उत्तम है हज़ार महीनों से,

4. उसमें फ़रिश्ते और रूह हर महत्वपूर्ण मामले में अपने रब की अनुमति से उतरते हैं ।

5. वह रात पूर्णतः शांति और सलामती है, उषाकाल के उदय होने तक ।

## 98. अल-बैयिनह

(मक्का में उतरी— आयतें 8)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. किताबवालों और मुशरिकों (बहुदेववादियों) में से जिन लोगों ने इनकार किया वे कुफ़्र (इनकार) से अलग होनेवाले नहीं<sup>3</sup> जब तक कि उनके पास



1. अर्थात् कुरआन को ।

2. अर्थात् गौरव प्राप्त रात्रि ।

3. अर्थात् वे कुफ़्र और इनकार से बाज़ नहीं आने के । वे तो यही कहते आए हैं कि हम तो उस समय मानेंगे, जबकि हम स्पष्ट प्रमाण और चमत्कार देख लें ।



स्पष्ट प्रमाण न आ जाए;

2. अल्लाह की ओर से एक  
रसूल पवित्र पृष्ठों को पढ़ता हुआ;

3. जिनमें ठोस और ठीक आदेश  
अंकित हों,

4. हालाँकि जिन्हें किताब दी गई  
थी। वे इसके पश्चात फूट में पड़े  
कि उनके पास स्पष्ट प्रमाण आ  
चुका था।

5. और उन्हें आदेश भी बस यही  
दिया गया था कि वे अल्लाह की  
बन्दगी करें निष्ठा एवं विनयशीलता  
को उसके लिए विशिष्ट करके,  
बिलकुल एकाग्र होकर, और नमाज़  
की पाबन्दी करें और ज़कात दें। और  
यही है सत्यवादी समुदाय का धर्म।

6. निस्संदेह किताबवालों और मुशरिकों (बहुदेववादियों) में से जिन लोगों ने  
इनकार किया है, वे जहन्नम की आग में पड़ेगे; उसमें सदैव रहने के लिए। वही  
पैदा किए गए प्राणियों में सबसे बुरे हैं।

7. किन्तु निश्चय ही वे लोग, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए  
पैदा किए गए प्राणियों में सबसे अच्छे हैं।

8. उनका बदला उनके अपने रब के पास सदाबहार बाग़ है, जिनके नीचे नहरें  
बह रही होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे  
राज़ी हुए। यह कुछ उसके लिए है, जो अपने रब से डरा।

## 99. अज़-ज़िलज़ाल

(मक्का में उतरी— आयतें 8)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. जब धरती इस प्रकार हिला डाली जाएगी जैसा उसे हिलाया जाना है,
2. और धरती अपने बोझ बाहर निकाल देगी,





3. और मनुष्य कहेगा : “उसे क्या हो गया है ?”

4. उस दिन वह अपना वृत्तांत सुनाएगी,

5. इस कारण कि तुम्हारे रब ने उसे यही संकेत किया होगा।

6. उस दिन लोग अलग-अलग निकलेंगे, ताकि उन्हें उनके कर्म दिखाए जाएँ।

7. अतः जो कोई कणभर भी नेकी करेगा, वह उसे देख लेगा,

8. और जो कोई कणभर भी बुराई करेगा, वह भी उसे देख लेगा।

## 100. अल-आदियात

(मक्का में उतरी— आयतें 11)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. साक्षी है जो हाँफते-फुँकार मारते हुए दौड़ते हैं,<sup>1</sup>
2. फिर ठोकरों से चिनगारियाँ निकालते हैं,
3. फिर सुबह सवेरे धावा मारते होते हैं,
4. उसमें उठाया उन्होंने गर्द-गुबार।
5. और इसी हाल में वे दल में जा घुसे।
6. निस्संदेह मनुष्य अपने रब का बड़ा अकृतज्ञ है,
7. और निश्चय ही वह स्वयं इसपर गवाह है !
8. और निश्चय ही वह धन के मोह में बड़ा दृढ़ है।
9. तो क्या वह जानता नहीं जब उगलवा लिया जाएगा जो क़ब्रों में है।
10. और स्पष्ट अनावृत्त कर दिया जाएगा जो कुछ सीनों में है।
11. निस्संदेह उनका रब उस दिन उनकी पूरी खबर रखता होगा।

1. यहाँ घोड़ों की ओर संकेत है।





## 101. अल-क्रारियह

(मक्का में उतरी— आयतें 11)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. वह खड़खड़ानेवाली !
2. क्या है वह खड़खड़ाने वाली ?
3. और तुम्हें क्या मालूम कि  
क्या है वह खड़खड़ानेवाली ?
4. जिस दिन लोग बिखरे हुए  
पतंगों के सदृश हो जाएँगे,
5. और पहाड़ धुनके हुए रंग-  
बिरंग के ऊन जैसे हो जाएँगे।
6. फिर जिस किसी के वज़न<sup>1</sup> भारी होंगे,
7. वह मनभाते जीवन में रहेगा।
8. और रहा वह व्यक्ति जिसके वज़न हलके होंगे,
9. उसकी माँ होगी गहरा खड्ड।<sup>2</sup>
10. और तुम्हें क्या मालूम कि वह क्या है ?
11. आग है दहकती हुई।



## 102. अत-तकासुर

(मक्का में उतरी— आयतें 8)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. तुम्हें एक-दूसरे के मुक़ाबले में बहुतायत के प्रदर्शन और घमंड ने  
ग़फलत में डाल रखा है,
2. यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तानों में पहुँच गए।

1. अर्थात् अच्छे कर्म।

2. अर्थात् उसका ठिकाना गहरा गड्ढा होगा।



3. कुछ नहीं, तुम शीघ्र ही जान लोगे ।

4. फिर, कुछ नहीं, तुम्हें शीघ्र ही मालूम हो जाएगा—

5. कुछ नहीं, अगर तुम विश्वसनीय ज्ञान के रूप में जान लो ! (तो तुम धन- दौलत के पुजारी न बनो ।)——

6. अवश्य ही तुम भड़कती आग से दो-चार होगे ।

7. फिर सुनो, उसे अवश्य देखोगे इस दशा में कि वह यथावत विश्वास होगा ।

8. फिर निश्चय ही उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में पूछा जाएगा ।

### 103. अल-अस्र

(मक्का में उतरी— आयतें 3)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. गवाह है गुज़रता समय,
2. कि वास्तव में मनुष्य घाटे में है,
3. सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए और एक-दूसरे को हक़ की ताकीद की, और एक-दूसरे को धैर्य की ताकीद की ।

### 104. अल-हु-म-ज़ह

(मक्का में उतरी— आयतें 9)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. तबाही है हर कचोके लगानेवाले, ऐब निकालनेवाले के लिए,
2. जो माल इकट्ठा करता और उसे गिनता रहा ।<sup>1</sup>



1. या उसे काम आनेवाली चीज़ समझा ।



3. समझता है कि उसके माल ने उसे अमर कर दिया।

4. कदापि नहीं, वह चूर-चूर कर देनेवाली में फेंक दिया जाएगा,

5. और तुम्हें क्या मालूम कि वह चूर-चूर कर देनेवाली क्या है ?

6. वह अल्लाह की दहकाई हुई आग है,

7. जो झाँक लेती है दिलों को।

8. वह उनपर ढाँककर बन्द कर दी गई होगी,

9. लम्बे-लम्बे स्तम्भों में।

## 105. अल-फ़ील

(मक्का में उतरी— आयतें 5)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. क्या तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे रब ने हाथीवालों के साथ कैसा बरताव किया ?

2. क्या उसने उनकी चाल को अकारथ नहीं कर दिया ?

3. और उनपर नियुक्त होने को झुण्ड के झुण्ड पक्षी भेजे,

4. उनपर कंकरीले पत्थर मार रहे थे।

5. अन्ततः उन्हें ऐसा कर दिया, जैसे खाने का भूसा हो।

## 106. कुरैश

(मक्का में उतरी— आयतें 4)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. कितना है कुरैश को लगाए और परचाए रखना,

2. लगाए और परचाए रखना उन्हें जाड़े और गर्मी की यात्रा से।<sup>1</sup>

1. अर्थात् जाड़े और गर्मी की व्यापारिक यात्राओं का उन्हें अभ्यस्त बनाया है।





3. अतः उन्हें चाहिए कि इस घर (काबा) के रब की बन्दगी करें,

4. जिसने उन्हें खिलाकर भूख से बचाया और निश्चिन्तता प्रदान करके भय से बचाया।

### 107. अल-माऊन

(मक्का में उतरी— आयतें 7)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. क्या तुमने उसे देखा जो दीन को झुठलाता है?¹

2. वही तो है जो अनाथ को धक्के देता है,

3. और मुहताज के खिलाने पर नहीं उकसाता।

4. अतः तबाही है उन नमाज़ियों के लिए,

5. जो अपनी नमाज़ से² गाफ़िल (असावधान) हैं,

6. जो दिखावे के कार्य करते हैं,

7. और साधारण बरतने की चीज़ भी किसी को नहीं देते।

### 108. अल-कौसर

(मक्का में उतरी— आयतें 3)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. निश्चय ही हमने तुम्हें कौसर³ प्रदान किया,

2. अतः तुम अपने रब ही के लिए नमाज़ पढ़ो और (उसी के लिए) कुरबानी करो।



1. अर्थात् जो बदले के दिन और धर्म को झुठलाता है।

2. अर्थात् अपनी वास्तविक जीवनचर्या से।

3. अर्थात् दुनिया और आखिरत की अनगिनत भलाइयाँ और नेमते।



3. निस्संदेह तुम्हारा जो वैरी है वही जड़कटा है।

### 109. अल-काफ़िरून

(मक्का में उतरी— आयतें 6)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. कह दो : “ऐ इनकार करने-वालो !

2. मैं वैसी बन्दगी नहीं करूँगा जैसी बन्दगी तुम करते हो,

3. और न तुम वैसी बन्दगी करनेवाले हो जैसी बन्दगी मैं करता हूँ।

4. और न मैं वैसी बन्दगी करनेवाला हूँ जैसी बन्दगी तुमने की है।

5. और न तुम वैसी बन्दगी करनेवाले हुए जैसी बन्दगी मैं करता हूँ।

6. तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है और मेरे लिए मेरा धर्म !”



### 110. अन-नस्र

(मक्का में उतरी— आयतें 3)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. जब अल्लाह की सहायता आ जाए और विजय प्राप्त हो,

2. और तुम लोगों को देखो कि वे अल्लाह के दीन (धर्म) में गिरोह के गिरोह प्रवेश कर रहे हैं,

3. तो अपने रब की प्रशंसा करो और उससे क्षमा चाहो। निस्संदेह वह बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला है।



## 111. अल-लहब

(मक्का में उतरी— आयतें 5)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. टूट गए अबू लहब के दोनों हाथ और वह स्वयं भी विनष्ट हो गया !

2. न उसका माल उसके काम आया और न वह कुछ जो उसने कमाया।

3. वह शीघ्र ही प्रज्वलित भड़कती आग में पड़ेगा,

4. और उसकी स्त्री भी ईधन लादनेवाली,

5. उसकी गरदन में खजूर के रेशों की बटी हुई रस्सी पड़ी है।

## 112. अल-इखलास

(मक्का में उतरी— आयतें 4)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. कहो : “वह अल्लाह यकता है,

2. अल्लाह निरपेक्ष (और सर्वाधार) है,

3. न वह जनिता है और न जन्य<sup>1</sup>,

4. और न कोई उसका समकक्ष है।”



1. अर्थात् न वह किसी का बाप है और न बेटा।



### 113. अल-फलक़

(मक्का में उतरी— आयतें 5)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. कहो : "मैं शरण लेता हूँ  
प्रकट करनेवाले रब<sup>1</sup> की,

2. जो कुछ भी उसने पैदा किया  
उसकी बुराई से,

3. और अँधेरे की बुराई से  
जबकि वह घुस आए,

4. और गाँठों में फूँक मारने-  
वालों (या फूँक मारनेवालिओं) की  
बुराई से,



5. और ईर्ष्यालु की बुराई से,  
जब वह ईर्ष्या करे।"

1. अर्थात् उस रब की जो रात के परदे को फाड़कर सुबह को प्रकट करता है, गुठली से पौधा और दाने से अंकुर निकालता है। इत्यादि।



## 114. अन-नास

(मक्का में उतरी— आयतें 6)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा  
कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. कहो : "मैं शरण लेता हूँ  
मनुष्यों के रब की,
2. मनुष्यों के सम्राट की,
3. मनुष्यों के उपास्य की,
4. वसवसा डालनेवाले, खिसक जानेवाले की बुराई से,
5. जो मनुष्यों के सीनों (दिलों) में वसवसा डालता है,
6. जो जिनों में से भी होता है और मनुष्यों में से भी।"





## ❀ कुरआन पढ़ने के बाद की दुआ ❀

اللَّهُمَّ النَّسْرُ خَشْتِي فِي قَبْرِى اللَّهُمَّ ارْحَمْنِى بِالْقُرْآنِ الْعَظِيمِ وَاجْعَلْهُ لِىْ إِمَامًا وَنُورًا وَ  
هُدًى وَرَحْمَةً اللَّهُمَّ ذَكِّرْنِى مِنْ نَسِيتُ عَنْ نَفْسِى مِنْ فَجِهَتِى زُرْقِى تِلَاوَتَهُ إِنَّهُ  
الْيَلَّ وَإِنَّهُ النَّهَارُ وَاجْعَلْهُ لِىْ حُجَّةً نَارَ الْعَالَمِينَ

अल्ला हुम-म आनिस वहशति फ़ी क़बरी अल्ला हुम-मर-  
हमनी बिल कुरआनिल अज़ीम वज'अलहु ली इमामों व नूरों व  
हुदों व रहमतन अल्लाहुम-म जक्किरनी मिनहु मा नसीतु व 'अल्लिमनी  
मा जहिलतु वरजुक्नी तिलावतहु आना-अल्लैलि व आना-अन्नहारि  
वज 'अलहु ली हुज्जतै या रब्बल आलमीन।

हे अल्लाह ! मेरी क़ब्र की घबराहट को लगाव से बदल दे । हे अल्लाह !  
मुझ पर महान कुरआन के द्वारा दया कर और उसे मेरा नायक, प्रकाश,  
मार्गदर्शन एवं दयालुता बना । हे अल्लाह ! उसमें से जो मैं भूल गया हूँ मुझे  
याद दिला, जो नहीं जानता मुझे सिखा, और रात और दिन की घड़ियों में मुझे  
उसके पढ़ने का सौभाग्य प्रदान कर। हे अल्लाह ! सारे संसार के पालनकर्ता  
स्वामी, इसे मेरे लिए दलील बना।